BAL SAKHA

1944 G. K. U.

113481

COMPILED

Stock Verification-20[illegible]

COMPILED

बालसखा

[illegible]

सम्वत् [illegible] फाल्गुण १९९९, २००० पौष, फाल्गुन, वैशाख
सं. २००१ माघ, फाल्गुन, आश्विन सं. २००२
चैत्र

22-११-५४

नवम्बर १९५४

39

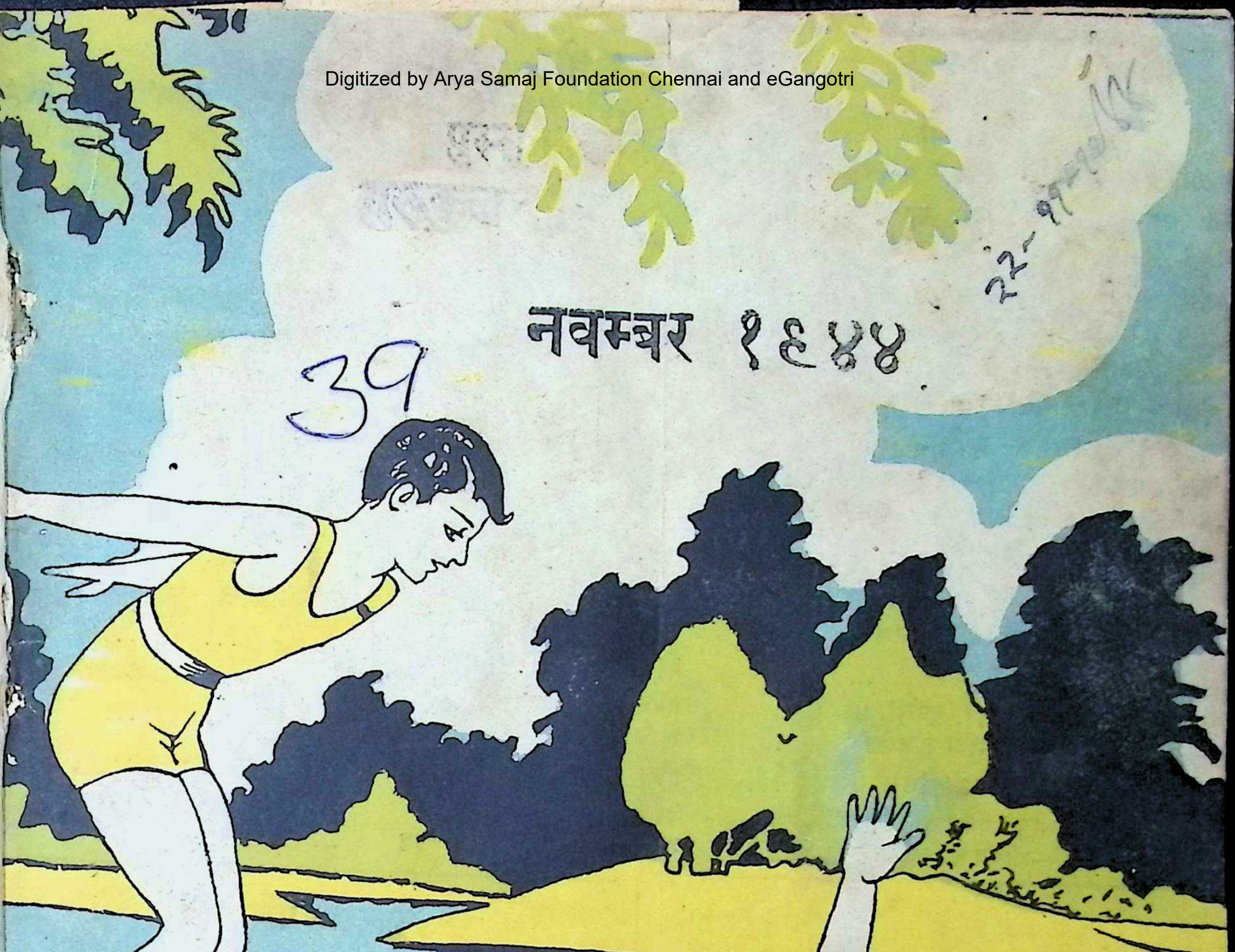

वार्षिक मूल्य २॥)

एक प्रति का ≡)॥

बालसखा

विषय-सूची

कहानी

—डाकियों की कहानी—श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य ३२४
—चिड़िया—श्रीयुत मनमोहन खण्डूरी ... ३३०
—चमेली और राजकुमार—श्रीमती विमलादेवी ३३४
—हीरों का द्वीप—श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ३३९
—एक कुत्ते की आत्म-कहानी—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० ... ... ३४३
—चूहे के बच्चे—श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए० ३४५

कविता

—जय जय—श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर' ... ३२३
—पोस्टमैन—श्रीयुत कुमारहृदय ... ३२८
—फूलों का गीत—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० ३३१
—मेरी गुड़िया—श्री० चन्द्रिका अशोक, बी० ए० ३३३
—सितारे—श्रीयुत पन्नालाल पेड़ीवाल ... ३३८
—मेरी बबुनी—श्रीयुत शुकदेव ३३८
—माँ मुझे बताओ—श्रीयुत 'सुधीर', बी० ए० ... ३४२
—हिमालय से—श्रीयुत श्रीवर कुलश्रेष्ठ ... ३४४
—गीत—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ... ३४४
—स्नान गीत—श्रीयुत 'विभूति' ... ३४६
—छुट्टी का घण्टा—श्रीयुत कान्तिकुमार ... ३४८
१२—बच्चों का गीत—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ३
१३—मेरी बिल्ली रानी—श्रीयुत राजेन्द्रसिंह लूयर ... ३
१४—मेरी पूसी—श्रीयुत ज्ञानभूषण चतुर्वेदी ... ३
१५—बाल-सखा—श्री मुरारिलाल माथुर ... ३

लेख

१—शहर के नीचे नदी—श्रीयुत दीनबन्धु पाठक ... ३
२—चीन के तीन बन्दर—श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे ३

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है ?—श्रीयुत ब्रजनन्दन शर्मा
२—बड़े लोगों का बचपन—आर्कमेदिस—श्रीयुत देवेन्द्र शर्मा, एम० एस-सी० ... ... ३
३—कुछ इधर-उधर की ३
४—छुट्टी का घण्टा ... ...
५—क्या तुम जानते हो ?—श्रीयुत देवेन्द्रकुमार ...
६—पाठकों के पत्र ३
७—अच्छी बातों का बगीचा ३
८ उत्तर दो इनाम लो ३
९—मनोविनोद ३
१०—प्रश्न-पहेली ३
११—सम्पादक का पृष्ठ ३

कमज़ोर और कृश बच्चे

डोंगरे बालामृत

के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट

"पारसी परिचय"

लेखक—पं० कृपानारायण पाठक, एम० ए०, एल० टी०

इस पुस्तक के सम्बन्ध में माननीय बा० सम्पूर्णानन्द भूतपू
शिक्षा-मन्त्री यू० पी० लिखते हैं—"यह पुस्तक उपादेय है
इसकी सहायता से थोड़े में अपने देश में रहनेवाले पारसी भा
का परिचय मिल जाता है और आर्य संस्कृति, धर्म और इ
के कुछ ऐसे अंशों पर प्रकाश पड़ जाता है जिनको
भूल गये हैं।" मूल्य ॥) आना

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रया

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी द्वारा लिखित पुस

आधुनिक हिन्दी साहित्यिकों में द्विवेदीजी का प्रमुख
है। आपकी लिखी हुई पुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध
तथा प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में इंटरमीडियट तथा बी
की कक्षाओं में पढ़ाई जाती हैं।

सञ्चारिणी मूल्य २) कवि और काव्य मूल्य
युग और साहित्य मूल्य २॥≡)

प्रकाशक

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इ

113481
113481

सम्पादक { लल्लीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

वर्ष २८] सितम्बर १९४४—आश्विन २००१ [संख्या ९

बालकों का गीत

लेखक, श्रीयुत निरङ्कार देव 'सेवक,' एम० ए०

अल्प आयु के बालक हैं हम,
रखते उच्च विचार।
तुम्हें देखने में लगते हैं,
हम भोले नादान।
समझ रहे हो तुम, न हमें है
कुछ दुनिया का ज्ञान॥
पर अवसर पा हमीं दिखाते,
विद्या बुद्धि अपार।
अल्प आयु के बालक हैं हम,
रखते उच्च विचार॥
ऊधम बहुत मचाते हैं हम,
कहते हैं सब लोग।
खूब खेलते खाते हैं हम,
नहीं सताते रोग॥
शैतानी के बदले में भी,
पाते हैं हम प्यार।
अल्प आयु के बालक हैं हम,
रखते उच्च विचार॥
एक हमारी टोली जिसमें,
राधे कृष्ण कुमार।
रग्घू, पाँड़े, रज्जन, मुल्लू,
चौबे, रामाधार।
हम सब के मन में रहता है,
भरा सदा उल्लास।
ऊँच-नीच का भाव हमारे,
कभी न आता पास॥
नहीं किसी का सेवक कोई,
हम सब हैं सरदार।
अल्प आयु के बालक हैं हम,
रखते उच्च विचार॥

पृथ्वी का जन्म और उसकी आयु

लेखक, श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल एम० एस-सी०

जितनी भी चीज़ें हैं उन्हें पृथ्वी अपने केन्द्र ो ओर खींचे रहती है जिससे वे गिरने नहीं पातीं। न्तु यह भी एक अच्छा प्रश्न है कि पृथ्वी स्वयं से टिकी रहती है, यह गिर क्यों नहीं पड़ती? त यह है कि पृथ्वी को सूर्य खींचे हुए है और नी शक्ति के साथ खींचे हुए है कि वह सूर्य के ारों ओर चक्कर तो लगाती रहती है किन्तु अलग कर भाग नहीं सकती। तो क्या पृथ्वी और सूर्य कोई सम्बन्ध है? पुराने काल के लोग तो यह नते थे कि पृथ्वी नहीं घूमती है बल्कि सूर्य उसके ारों ओर घूमता है जिससे रात और दिन होते हैं। रन्तु बाद में यह बात ग़लत सिद्ध कर दी गई। सकी कहानी बड़ी रोचक है जिसमें एक महापुरुष ा, जिसका नाम कोपर्नीकस था, अपने प्राण तक ने पड़े। अब हम लोग भली भाँति जानते हैं कि थ्वी ही सूर्य के चारों ओर घूमती है किन्तु तुमको ाश्चर्य होता होगा कि यह किस प्रकार घूमती हती है।

इस प्रश्न का उत्तर हमारे ध्यान को पृथ्वी के न्म की कहानी पर ले जाता है। अपनी दादी या ानी से पूछना कि पृथ्वी किस चीज़ पर खड़ी है। कहेंगी, गऊ के सींग पर। तुम पूछना, गाय किस र खड़ी है? तो कहेंगी कछुए पर। इस प्रकार यदि ुम अपने सवालों की शृङ्खला जारी रक्खो तो वे हेंगी शेषनाग पर। यदि तुम फिर पूछ बैठो कि षनाग किस पर खड़े हुए हैं, तो वे या तो तुम्हें त्कार देंगी या प्यार में लड्डू खाने को देंगी जिससे ुम सवाल भूल जाओ।

तुमको सुनकर आश्चर्य होगा कि आज विज्ञान ौर ज्योतिष ने इतनी काफ़ी उन्नति कर ली है परन्तु निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि इस धरती का जन्म कैसे हुआ। धरती के जन्म की कहानियाँ हैं जो सच्ची लगती हैं परन्तु थोड़ी ग़लती सब में है। हाँ, अभी कहानी कहते समय यह तो नहीं बताऊँगा कि ग़लती कहाँ है, क्योंकि इस विषय गूढ़ हो जायगा और तुम भी तङ्ग आ जाओ बड़े होने पर तुम अवश्य उन्हें जान सकते हो।

हाँ, धरती का जन्म कैसे हुआ? इस प्रश्न सब से पहला उत्तर हमें कोई डेढ़ सौ वर्ष पहले फ्रांसीसी आदमी लापलास ने दिया था। वे क हैं कि आरम्भ में केवल सूरज था। जब का सू आज वाले से कहीं ज़्यादा बड़ा और कहीं ज़्यादा ग था। धीरे-धीरे वह ठण्डा होने लगा। ठण्डा होने सिकुड़ा। इसमें उसके कुछ भाग कभी-कभी उससे पड़े। ये भाग छूट तो गये किन्तु सूरज का आक इतना ज़्यादा था कि वे उसके चारों ओर घूमते र हमारी पृथ्वी इन्हीं छूटे हुए भागों में से एक है।

धरती के जन्म की दूसरी कहानी और रोचक है। उसमें कहा गया है कि आरम्भ में बड़ा भारी पिण्ड था जो सारे आकाश में लगाया करता था। उसको अपने मोटापे का भारी गर्व था। अचानक एक बार जब वह ज़ोर चला जा रहा था तो एक दूसरे पिण्ड से टकरा ग इस टक्कर का फल यह हुआ कि उस पिण्ड के भाग छिन्न-भिन्न हो गये। परन्तु ये भाग उस के चारों ओर ही घूमते रह गये और बिल्कुल नहीं हुए। हमारी धरती भी इन्हीं भागों में से ए

ऊपर की दोनों कथायें देखने में तो जँचती हैं परन्तु इनमें भारी त्रुटियाँ हैं जो पढ़ने पर तुम बड़े होकर जान सकते हो। अब कथा जो कही गई है उसे आज कल के ज्यो सब से अधिक ठीक मानते हैं। हमारे ही

म्बई के निकट समुद्र है। इस समुद्र में प्रायः ज्वार-ाटा आया करता है। ज्वारभाटे के कारण समुद्री हाज़ बड़ी दूर तक आ जा ते हैं और नगर का कूड़ा-र्कट सब साफ़ हो जाता है। ज्वारभाटों का कारण चन्द्रमा । चन्द्रमा के आकर्षण से थ्वी का पानी अपने स्थान से ट कर दूर तक फैल जाता है। दि आकर्षण बढ़ जावे तब तो नी और भी करामात कर कता है।

धरती का जन्म भी ज्वार-ाटे के कारण कहा जाता है। सा कि ऊपर दोनों सिद्धान्तों माना गया है कि आरम्भ में रज आज से कहीं अधिक बड़ा और गरम था। ह घूमा करता था। इसी प्रकार आकाश में और ी लाखों और करोड़ों पिण्ड घूमा करते थे। एक र एक पिण्ड सूरज के क्षेत्र में आ गया। ऊपर हा जा चुका है कि संसार में हर वस्तु दूसरी को ींचती है। इस पिण्ड ने भी सूरज को अपनी तरफ़ ींचना शुरू किया। परन्तु वह पिण्ड सूरज की पेक्षा छोटा था, जिससे सूरज खिंच कर पास नहीं सका। साथ ही वह इतना छोटा भी नहीं था कि रज उसे अपने पास खींच सकता। बस, फल यह आ कि सूरज पर ज्वारभाटे आने लगे। सूरज पर माल-मसाला हटने लगा और आकर्षण इतने ज़ोर था कि सूरज से कई पिण्ड अलग हो गये। ना इतना काम करके वह पिण्ड जिसकी सूरज से हुई थी, अपने रास्ते चला गया और ये अलग पिण्ड सूरज के चारों ओर घूमने लगे। हमारी ती भी इन्हीं में से एक है। ठण्डी होने के बाद

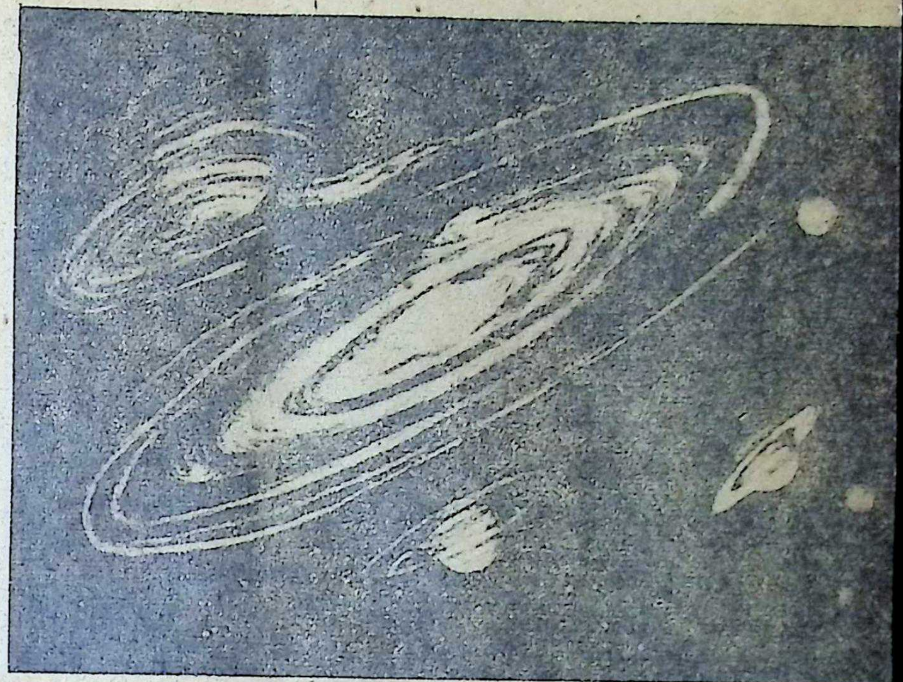

पृथ्वी और दूसरे ग्रहों की उत्पत्ति

अब तुम समझ गये होगे कि हमारी पृथ्वी जन्म कैसे हुआ। इसके बाद तुम जानना चाहोगे पृथ्वी की अवस्था क्या है। इस प्रश्न का उत्तर दे उतना ही कठिन है जितना पृथ्वी के जन्म का इसमें भी लोगों की अलग-अलग राय हैं। कोई ती सौ वर्ष हुए, एक अँग्रेज़ पादरी ने कहा कि पृथ महात्मा ईसा के ४००४ वर्ष पहले से है। इसे सु कर तुम्हें हँसी आ जायगी क्योंकि पिछले दस व में पता चला है कि भारतवर्ष में सिन्धु नदी की घा में सभ्यता अति प्राचीन काल—कम से कम ५०० साल से थी। जैसा आगे बताया जायगा, पादरी सा के बताये हुए साल में यदि छः शून्य लगा दिये ज तब कहीं ठीक अवस्था के निकट हम पहुँच पायेंगे

वास्तव में पृथ्वी की अवस्था का पता कई शा से चलाया गया है। ज्योतिष से, भूगर्भ से औ भौतिक से। बाद के दोनों शास्त्र और विशेष कर भौ वाला तो तुम्हें बिलकुल नया लगेगा। जैसा कि न से प्रकट है, भूगर्भशास्त्र हमें पृथ्वी के भीतर की बा बतलाता है। पृथ्वी की चट्टानों, चोटियों, उत

ज्योतिष के आधार पर हमारी पृथ्वी की अवस्था ।भग तीन करोड़ वर्ष कही जाती है। किन्तु भूगर्भ-त्र वाले इससे सन्तुष्ट नहीं होते। चट्टानों को देख-। वे कहते हैं कि शुरू में वे तीन लाख फ़ुट से कम ी नहीं रही होंगी और आज कल देखने से ज्ञात ा है कि एक फ़ुट मोटी चट्टान बनने के लिए सौ लगते हैं। तो इस आधार पर पृथ्वी कम से कम र करोड़ वर्ष पुरानी है। यह अवस्था फ़िलिप्स क एक भूगर्भवेत्ता ने निकाली थी। पेल्टन नाम के दूसरे महाशय के अनुसार पृथ्वी की उम्र पचास ोड़ वर्ष की होनी चाहिए।

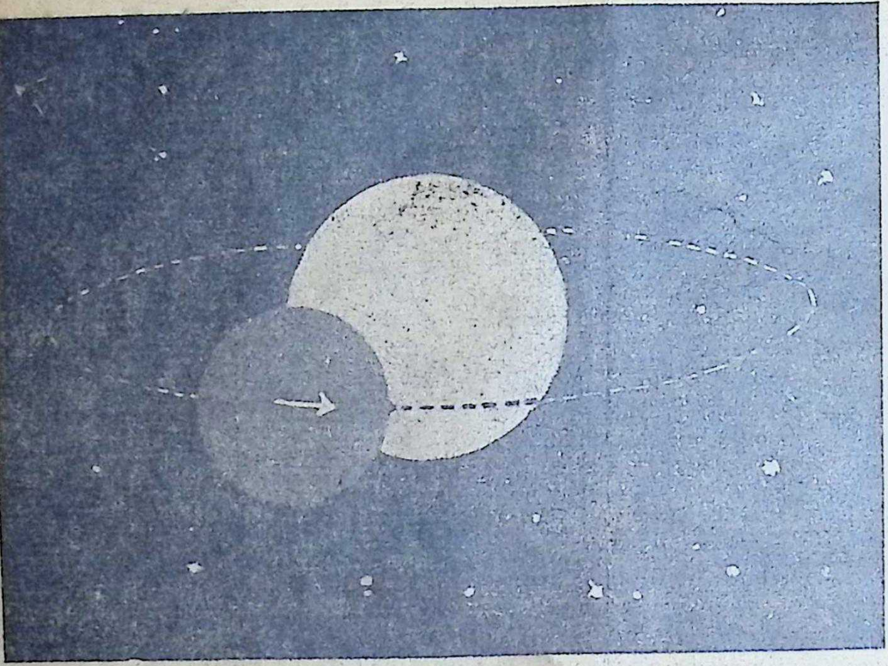

अस्थिर तारे

किन्तु भौतिक शास्त्र तो पृथ्वी को और भी ़या बताता है। लगभग चालीस वर्ष हुए 'रेडियम' नाम की एक धातु का आविष्कार हुआ था। इस ध से बड़ी तेज़ किरणें निकलती हैं जो शीघ्र ही कि भी पदार्थ को जला कर ख़ाक कर दे सकती हैं। बै आश्चर्य की बात है कि जिस वैज्ञानिक ने रेडि का आविष्कार किया था वही रेडियम का शिक होकर मरा। रेडियम का एक गुण यह भी कि यदि तुम रेडियम का टुक कहीं रख छोड़ो तो १६०० वर्ष बाद वह दो भागों में बँट जायग एक भाग तो रेडियम ही होग दूसरा एक अन्य धातु। अन्त यह धातु बदलते-बदलते 'सीस बन जाती है। संसार में सीसे खानों की खोज की गई है। उन सहारे यह पता चला है कि पृथ्वी डेढ़ अरब और पौने च अरब के बीच अवस्था वाली साधारण ढङ्ग से हम कह सव हैं कि धरती ढाई अरब पुरानी है।

हमारी धरती ढाई अरब वर्ष की बुढ़िया है इस धरती पर सभ्यता केवल पाँच-छः हज़ार पुरानी है और संसार में जीवित रहनेवाले मनुष्य औसत आयु ५० या ६० वर्ष भी नहीं है। तो व हम और कहाँ यह पृथ्वी! तभी तो हमारे यहाँ धरती माता कहा जाता है।

होस्टल का साथी

लेखक, श्रीयुत विभूति

इस होस्टल से अधिक शैतान लड़के मुझे कहीं हीं मिले। प्रोफ़ेसर सिनहा तो इनसे इतने परेशान जाते हैं कि बेचारे पढ़ाना भूल जाते हैं। उनकी ख चूकी और यहाँ शैतानी शुरू हुई। जब मैं पहले-हल आया तो इनकी शैतानी देख कर ङ्ग रह गया। मेरे कमरे में दो और द्यार्थी रहते हैं। एक का नाम चन्दन और दूसरे का भोलासिंह है।

चन्दन में अपने नाम का कोई गुण नहीं है। पतला-दुबला लम्बे द का लड़का है। पढ़ना कम पर तानी अधिक करना उसका काम । उसकी भूरी चमकीली आँखों से र समय शैतानी प्रकट होती रहती । शौक़ीनी का सारा सामान वह अपनी आलमारी में सजाये हुए है पर उनको काम में लाते उसे किसी ने भी नहीं देखा परन्तु इससे आप यह समझ लें कि वह इन चीज़ों का योग नहीं करता। जी नहीं, यह बात हीं है। करता तो वह है पर दूसरों का। जिस दिन मैं अपना सामान कर कमरे में पहुँचा उस दिन चन्दन मेरा बहुत स्वागत किया। मेरा सामान निकाल कर ठीक स्थान पर जा दिया। बक्स से कपड़े निकाल र खूँटियों पर टाँग दिये। चलते मय माँ ने लड्डू बना कर एक डिब्बे रख कर दिये थे। डिब्बा देख कर न्दन ने पूछा—इसमें क्या है भाई साहब!

'लड्डू हैं।' मैंने मुस्करा कर उत्तर दिया और डिब्बा खोलकर चार लड्डू निकाले। दो मैंने ले लि और दो उसको दिये। लड्डू खाते हुए उसने क भाई साहब, ये लड्डू बहुत ही स्वादिष्ठ बने हैं। लिए इन्हें अपनी आलमारी में बन्द करके रक्खें न

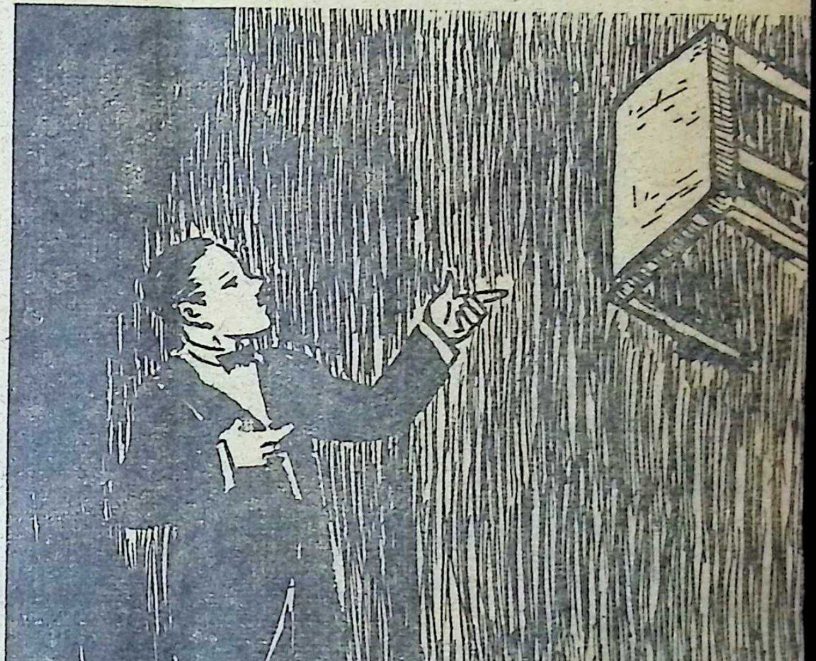

उनकी आँख चूकी और शैतानी शुरू हुई

किसी को पता लग जायगा तो आपकी नजर चू

हीं एक भशान्त का भेर महक,

मैंने उसकी इस राय के लिए धन्यवाद दिया और लड्डुओं का डिब्बा आलमारी में रख दिया।

चन्दन के लिए मेरे मन में बड़ा अपनापा हो गया। मैं भाग्य को सराह रहा था कि मुझे एक नई जगह में आने के साथ ही साथ एक सच्चा मित्र मिल गया।

दूसरे दिन जब मैं उठा तो मैंने देखा कि चन्दन सो रहा है, मेरी चादर उसके पास है। मैंने इस ओर ध्यान न दिया और बाहर चला गया। मैं प्रातःकाल टहलने जाता हूँ। जब मैं टहल कर लौटा तो देखा चन्दन नहा-धोकर आया है और मेरे तेल, स्नो आदि का इस तरह उपयोग कर रहा है जैसे कि उसकी ही सम्पत्ति हो। उसका यह क्रम बराबर चलता रहा परन्तु मैंने फिर इस ओर ध्यान न दिया।

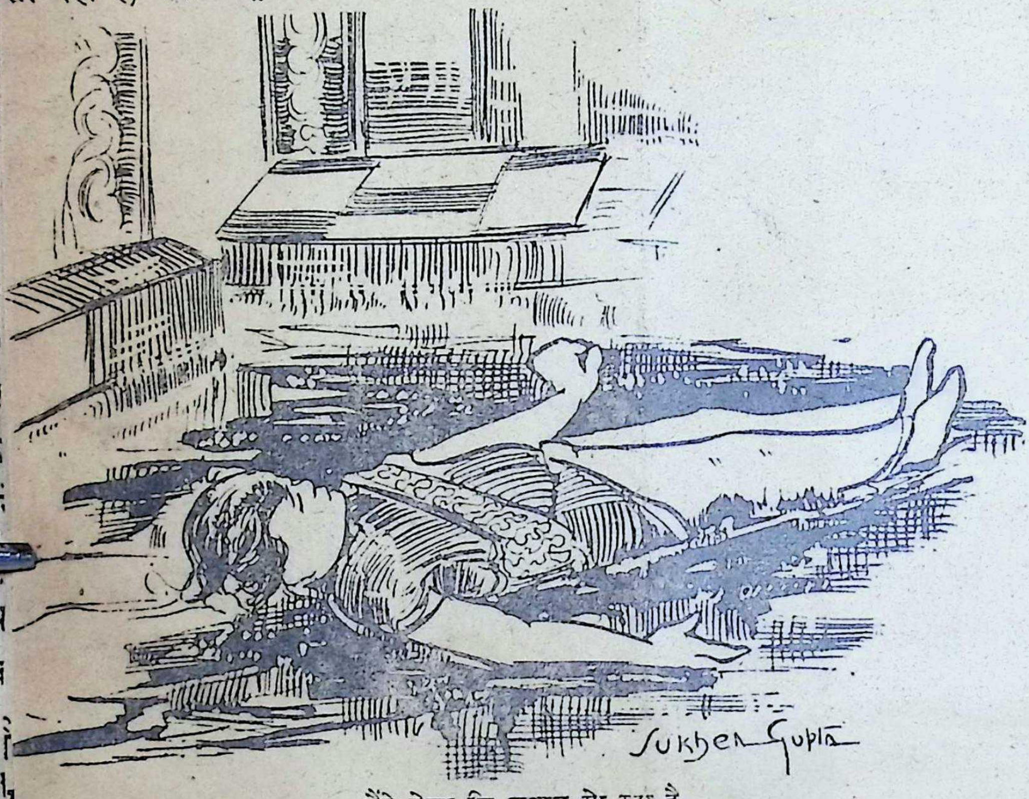

मैंने देखा कि चन्दन सो रहा है

इस बीच में मुझे आलमारी में बन्द लड्डुओं का बिल्कुल ध्यान नहीं रह गया था। उस दिन शाम को स्कूल से लौटने पर मैंने आलमारी खोल कर लड्डुओं- आश्चर्य का

था। भोलासिंह बैठे हुए कोई किताब पढ़ र हमारे होस्टल में सब से अधिक मोटे व्यक्ति वे ही मैंने उनसे पूछा तो वे बोले—तुम्हारे लड्डू चन्दन के और कौन खा सकता है। वह बड़ा ही है। तुम्हें अपना मित्र बनाकर वह तुम्हें इसी मूर्ख बनाया करेगा। अभी क्या है? आगे देख मैं जब पिछले साल यहाँ आया तो वह प्रकार मुझे बेवकूफ़ ब करता था।

सुनकर मैं चुप गया पर मैंने मन में लिया कि मैं अवश्य ही नीचा दिखाऊँगा। कोई तरकीब सूझ रही थी।

एक दिन चन्द घर के सम्बन्ध में बातें लगीं तो वह अपने वालों की बहुत प्रशंसा लगा। उसकी बा यही प्रकट होता था बहुत बड़े आदमी का है और उसके रिश्तेदार सभी बहुत धनी हैं। भो दूर पर बैठे उसकी बातें सुन रहे थे। बीच- मुस्करा कर मेरी ओर देख भी लेते।

जब चन्दन चला गया तो भोलासिंह ने क यह बड़ा ही झूठा है। कितनी बड़ी-बड़ी बातें कर एक दिन इसे छकाना चाहिए।

चन्दन कहा करता था कि नगर में उस चाचा रहते हैं। वे बड़े धनी हैं। शहर में उनका सम्मान है। भोलासिंह जानते थे कि यह सब की यों ही बातें हैं। इसलिए उसने मुझसे क एक दिन इसके चाचा के यहाँ चला जाय तब की बातों का भेद खुलेगा।

उस दिन शाम को चन्दन बाज़ार जा रहा था तो और भोलासिंह भी उसके साथ हो लिये। मार्ग में कहा—चन्दन, तुम कहते हो कि यहाँ तुम्हारे एक रहते हैं।

'हाँ रहते तो हैं।'

'तो चलो आज हम लोगों को भी वहाँ ले चलो।'

चन्दन सोच में पड़ गया, पर उसने तुरन्त ही र दिया—आंज नहीं, फिर किसी दिन चलना। ण यह है कि मेरी चाची बीमार हैं। उन्हीं को तो ने के लिए मैं जा रहा हूँ।

'ओह तो हम लोगों को अवश्य ही चलना चाहिए।' कहा।

'हाँ, चन्दन हमारे मित्र हैं और इनकी चाची र हैं।' भोलासिंह ने कहा।

'लेकिन चाचाजी तो बाहर गये हुए हैं।' न ने दूसरा बहाना किया।

पर हम लोग कब माननेवाले थे। आख़िर-चन्दन एक सुन्दर से मकान के सामने पहुँच कर —'यही मेरे चाचा का घर है।' तुम लोग चलो, मैं सामने की दूकान से दवा लेकर अभी आता हूँ।

हम लोगों ने मकान देख कर समझ लिया कि अवश्य ही चन्दन के चाचा कोई धनी व्यक्ति हैं। हम लोग सीढ़ी से ऊपर चढ़ गये। कमरे में हमें एक बूढ़े सज्जन मिले। यह सुनते ही कि हम अपने मित्र के घर आये हैं, उन्होंने हमारा बहुत स्वागत किया। बात यह थी कि उनके भी एक लड़का था जो उस समय कहीं गया हुआ था। उन्होंने समझा कि उसी के मित्र हैं। हम लोगों का .खूब आदर-सत्कार किया गया। अन्त में जब हमें बैठे हुए बहुत देर हो गई फिर भी चन्दन न आया तब हमें कुछ सन्देह हुआ और हम होस्टल लौट आये।

रास्ते में हम दोनों मित्र सोच रहे थे कि यदि कहीं इसी समय मकान मालिक का लड़का आ जाता तो वह हमें देख कर क्या कहता। अवश्य ही हमें बहुत अपमानित होना पड़ता।

तब से हमने चन्दन को छकाने की बात नहीं सोची और साथ ही चन्दन भी अब कभी हम लोगों के सामने बढ़-बढ़ कर बातें नहीं करता। उस दिन की घटना का भी किसी ने कुछ ज़िक्र नहीं किया।

पुष्प-हार

लेखक, श्रीयुत मधुरमोहन अवधिया 'विक्रम'

कितना प्यारा है पुष्प-हार,
यह देता है क्या ही बहार,
है हार पहननेवालों का,
पाता प्रतिक्षण यह मधुर प्यार।
इसमें लग बढ़िया फूल रहे,
जो मस्ती में हैं झूल रहे,
हैं अपनी मुक्त प्रशंसा में,
मानो, अपने को भूल रहे।
पतले धागे में फँसे हुए,
हैं फूल लबालब ठँसे हुए,
हैं श्वेत, गुलाबी, नील, पीत-
सब एक-एक से गसे हुए।
दिख रहा हार क्या सुन्दर तर,
निज पुष्पों में सुगन्ध भर-भर।
फैला कर मीठी मन्द महक,
देता है मन प्रसन्न कर-कर।
हम भी आपस में एक बनें,
मानवता की दृढ़ टेक बनें।
हम प्रेम, शान्ति की भरें महक,

वायुयान हवा में कैसे उड़ते हैं

लेखिका, श्री प्रेमलता वर्मा

तुमने संसार के नक़्शे में यूरोप देखा होगा। रोप बहुत बड़ा महाद्वीप है। इसमें बहुत-से देश हैं। ांस, जर्मनी, इटली, रूस आदि देशों का नाम तुम पने पिताजी के मुख से अख़बार पढ़ते समय रोज़ ो सुनते होगे। पिछले पाँच वर्षों से यूरोप में महायुद्ध ो रहा है। इस लड़ाई की बातें तुम रोज़ सुनते होगे र लड़ाई वास्तव में क्या है यह शायद तुम नहीं जानते ोगे। जिन देशों में लड़ाई हो रही है वहाँ के बच्चे ड़ाई की बहुत-सी बातें जानने लगे हैं।

अभी उस दिन मैं राजू के साथ छत पर बैठी थी। ाकाश में लाल, नीली तथा रङ्ग-बिरङ्गी तरह-तरह ी पतङ्गें उड़ रही थीं। राजू अभी पाँच-छः वर्ष ा है। वह पतङ्गों को बड़े ध्यान से देख रहा था कि तने में एक हवाई जहाज़ घर्र-घर्र करता हुआ हमारे ऊपर से उड़ गया। राजू ने उसे मुझे दिखाते हुए ूछा—"चाचीजी ? यह हवाई जहाज़ कैसे उड़ता है ?"

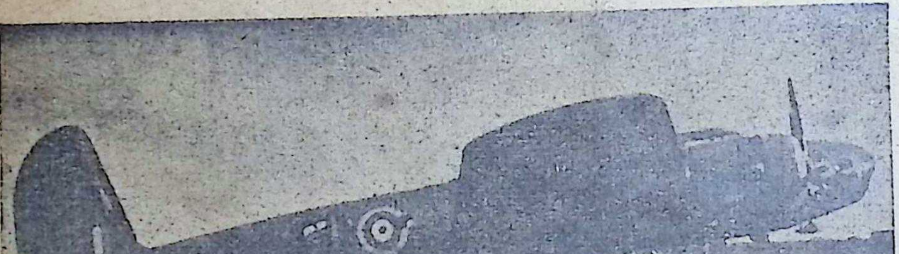

एक तरह का वायुयान

उस छोटे बच्चे का अनुमान था कि जैसे पतङ्ग को लोग उड़ाते हैं वैसे ही हवाई जहाज़ भी उड़ाये जाते हैं। किन्तु यदि तुम हवाई जहाज़ को पास से देखो तो तुम्हें मालूम पड़ेगा कि इसे पतङ्ग की तरह नहीं उड़ाया जा सकता। यह इतना भारी होता है

इतना ही नहीं इस युद्ध में इन हवाई जहाज़ों तरह-तरह के काम लिये जाने लगे हैं। सेना औ सामान ढोने, यात्रा करने आदि के अतिरिक्त हवाई जहाज़ों का एक काम बम बरसाना भी अलग-अलग कामों के लिए अलग-अलग तरह वायुयान होते हैं। बहुत-से वायुयान दुश्मन के श पर बम बरसा कर उन्हें नष्ट करते हैं। बहुत-से ह जहाज़ आसमान में दुश्मन के हवाई जहाज़ों से ल करते हैं। लेकिन सभी वायुयानों का उड़ने तरीक़ा एक ही होता है।

वायुयान दो तरह के होते हैं, एक तो हव भारी और दूसरे हवा से हलके। तुमने देखा कि गुब्बारे में दूकानदार गैस भर देता है जो से हलकी होती है। इसलिए गुब्बारा हवा से हो जाता है और फिर वह आसमान में उठने ल है। लगभग २५ साल हुए, यूरोप में पहले भी बार इसी तरह की लड़ा थी। उस समय एक जर्मन सर ने हवा से हलके हवाई बनाये थे। इस अफ़स नाम जेपलीन था, इसलिए बनाये हवाई जहाज़ों क जेपलीन कहते हैं।

जेपलीन हवाई ज एक गैस भरी जाती है जो हवा से हलकी हो लेकिन यह हवाई जहाज़ अधिक काम के नहीं

दूसरी तरह का वायुयान चिड़िया की तर फैलाये हुए होता है। इसे हम अक्सर आ उड़ते हुए देख सकते हैं। हवा से हल्के व में पङ्ख नहीं होते। किसी-किसी वायुयान में

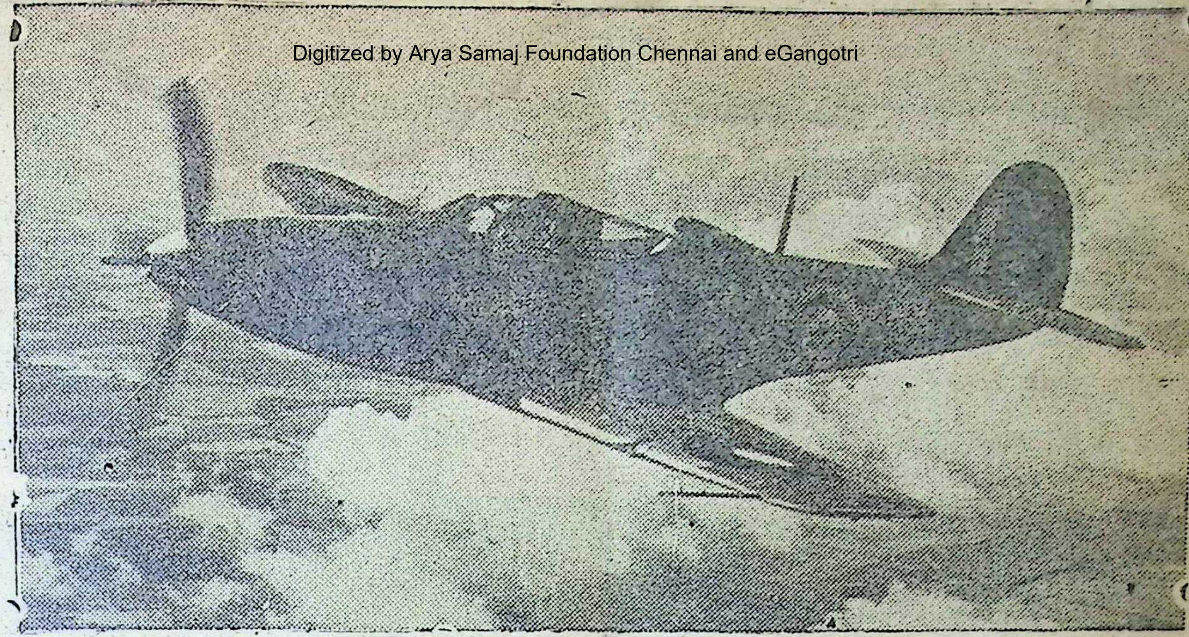

बादलों के ऊपर

और किसी-किसी में दुहरे पङ्ख होते हैं। हवाई जहाज़ के आगे का भाग नुकीला होता है। इसको 'नाक' और पीछे वाले हिस्से को 'पूँछ' कहते हैं। धड़ के नीचे दो और निकले होते हैं जिनमें मोटर के से पहिये लगे होते हैं। एक पहिया 'पूँछ' के नीचे भी लगा रहता है। इन्हीं तीनों पहियों पर हवाई जहाज़ धरती पर चलता है।

हवाई जहाज़ के बीच का भाग खोखला होता है। इसमें नाक के पास इञ्जिन लगा रहता है। यह इञ्जिन पेट्रोल से चलता है। मोटर-कार में जो इञ्जिन लगा रहता है उससे हवाई जहाज़ का इञ्जिन सौ गुनी ताक़त रखता है। इसी इञ्जिन से हवाई जहाज़ की 'नाक' पर लगा हुआ पङ्खा बड़ी तेज़ी से चलता है। उसी के चलने की घर्र-घर्र आवाज़ हमें सुनाई पड़ती है। किसी-किसी हवाई जहाज़ में दो या तीन पङ्खे

हवाई जहाज़ के इञ्जिन के पीछे चलानेवाले के ने की जगह होती है। उसके दायें-बायें बहुत-सी ञ्जियाँ लगी रहती हैं। इनसे वह हवाई जहाज़ को चे-ऊपर को चलाता, मोड़ता, उठाता या उतारता है।

धड़ के पीछे तेल की टङ्की होती है जिससे ती से तेल इञ्जिन में पहुँचता रहता है। बीच के स्से में बैठने का स्थान होता है।

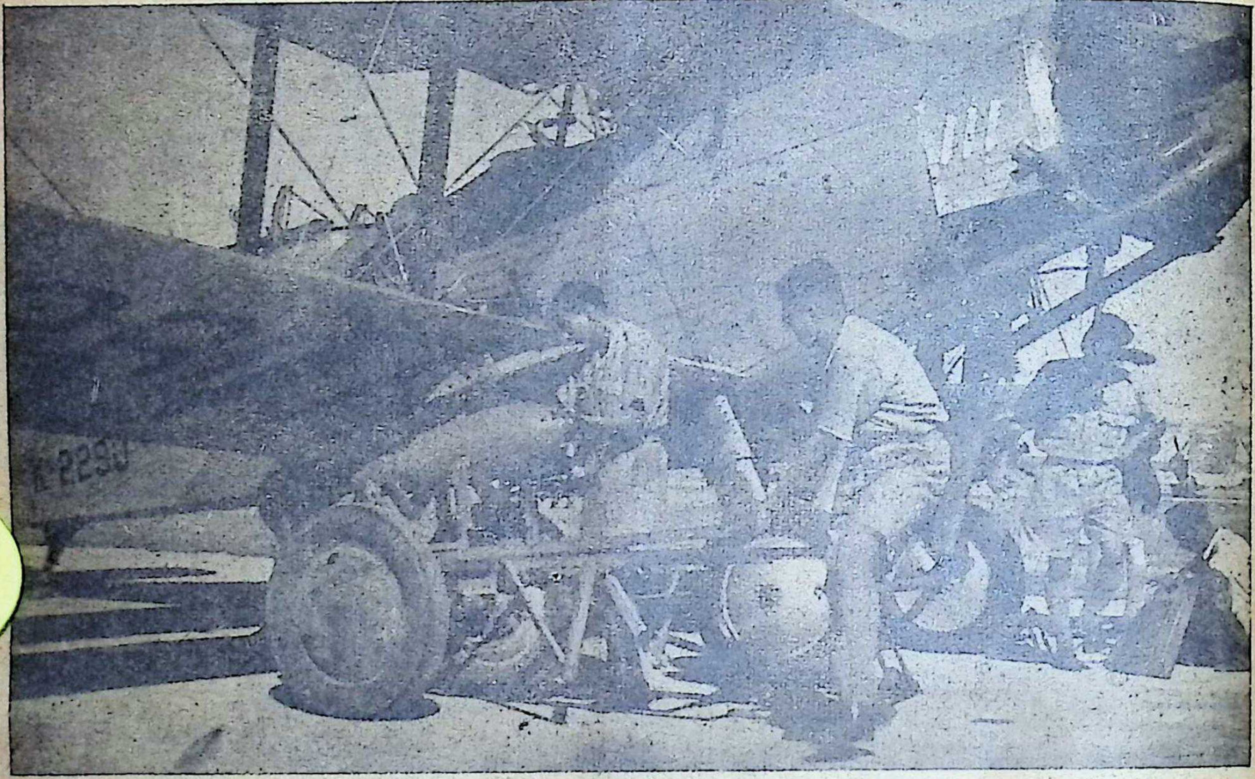

लड़ाई में काम आनेवाला एक जहाज़

हवाई जहाज़ अपने पङ्खे के बल पर उड़ता है। ञ्जन पङ्खों को बड़ी तेज़ी से घुमाता है जिससे युयान के सामने हवा नहीं रह जाती और शून्य जाता है। शून्य होने के कारण वायुयान ऊपर ने लगता है। आकाश में पङ्खों की चाल को घटा-बढ़ा कर वायुयान की चाल कम ज़्यादा जाती है।

हवाई जहाज़ को दाहने-बायें ले जाने के लि पूँछ के पास पतवार लगी रहती है। ऊपर उठाने लिए भी एक यन्त्र होता है।

अब तो वायुयान में बहुत तरह के यन्त्र होते हैं उसमें रेडियो लगा रहता है जिससे आसमान में उड़ते समय दुनिया के समाचार मिलते रहते हैं। लड़ वाले वायुयानों में तोपें, मशीनगनें आदि भी रहती हैं। इतना सब बोझ लेकर भी वायुयान तेज़ी से उड़ता है। इसकी चाल तीन-चार सौ घण्टे तक होती है।

* * *

बड़ों की छोटी बातें

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, वर्धा

कुछ वर्ष पहले मैं हिमालय घूमने गया था। काश्मीर की शोभा की सीमा ही नहीं है। वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य पर कौन मुग्ध न होगा? किन्तु एक दिन वह भूतल का स्वर्ग छोड़ना ही पड़ा।

वहाँ से चलते समय मैं सोच रहा था कि इतने बड़े हिमालय पर्वत से क्या ले चलूँ? ला भी क्या सकता था। क्या ही अच्छा होता यदि वहाँ की एक सुन्दर घाटी इधर ला पाता, एक सुन्दर झरना ही उठा लाता। पर यह भी क्या कभी हो सकता है। हिमालय की तुलना में मनुष्य की शक्ति ही कितनी?

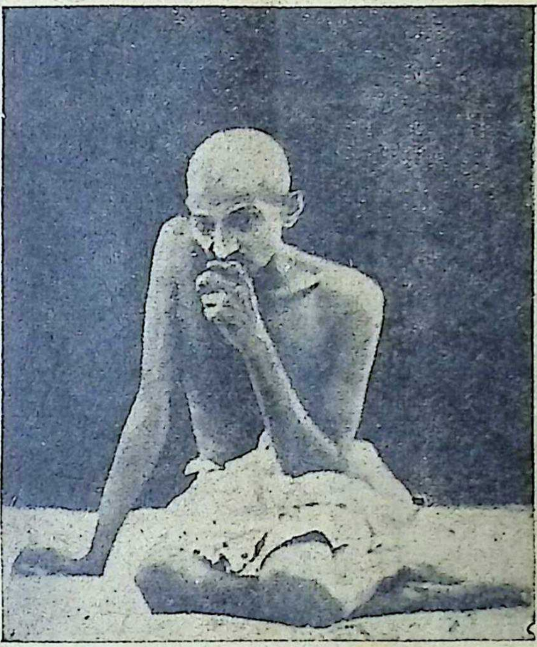

महात्मा गान्धी

फिर भी हिमालय से एक वस्तु मैं अवश्य लाया, जो अब भी सदा हिमालय की याद दिलाया करती है। एक तिकोना, काला, चिकना पत्थर, जिसके बीच में सङ्गमरमर जैसी सफ़ेद एक बिलकुल सीधी पतली रेखा बनी है। मेरी मेज़ पर यह 'पेपर वेट' का काम दे रहा है।

× × ×

बड़े लोगों के निकट पहुँचने पर हमें उनकी छोटी-छोटी बातों के देखने का मौक़ा मिला करता है। बड़ों की बड़ी बातों को समझना और उनका अनुकरण करना छोटों के लिए उतना ही कठिन होता है जितना हिमालय की एक घाटी को इधर ले आना। पर क्या इन बड़ों की छोटी बातों से हम कुछ नहीं सीख सकते।

बात साबरमती आश्रम की है और बिलकुल छोटी। जिन दिनों गान्धीजी साबरमती आश्रम में रहा करते थे, अनेक अतिथि आते ही रहते थे। जो अति आश्रम में ठहरते थे, उन्हें वहाँ का कार्य-क्रम बता दि जाता था। किस समय उठना है, किस समय प्राथ करनी है, क्या-क्या करना है, किस समय भो होगा, आदि-आदि। बेचारे अतिथि समय की पाब रखने की आदत तो रखते न थे, फिर भी प्र करते रहते थे।

एक दिन की घटना है। दो अतिथि एक क में ठहरे थे। बात-चीत में लगे रहने के कारण स का ध्यान ही न रहा। घड़ी की ओर निगाह गई देखा कि भोजन का समय रहा था। जल्दी से दोनों स करने गये। इधर भोजन घण्टी बजी। सभी आश्रमव एक साथ ही भोजन करते भोजन परोसा गया।

भोजन समाप्त होने गान्धीजी कुल्ला कर र कि वे दोनों अतिथि में थाली-कटोरी लिये भोज लय की ओर आये। गा जी विनोद-पटु तो हैं ही। कर दोनों अतिथियों से कहा—"अरे, अब किध गाड़ी तो निकल गई।"

"जी, आज कुछ देर हो गई," एक ने लजि होते हुए कहा। गान्धीजी ने कहा—"कोई नहीं। यह गाड़ी तो चली ही गई। अब शाम आवेगी। क्यों, ठीक है न?"

बेचारे अतिथियों के पास उत्तर ही क्या वे अपने कमरे को वापस चले गये।

दोपहर के बाद गान्धीजी ने उनके कमरे में छ फल भिजवा दिये। भोजन की गाड़ी तो फिर ाम को ही आई।

देखा, इस 'बड़े' की छोटी बात! बात यह है गान्धीजी अपने समय के एक-एक मिनट का याल रखते हैं और वे यही सब से चाहते हैं कि एक आदमी समय का मूल्य समझे और उसकी बन्दी करे।

ढाई वर्ष पहले की बात है। मैं अपने एक मित्र गान्धीजी से मिलाने के लिए सेवाग्राम गया । पाँच मिनट का समय पहले से ले रक्खा था। न्धीजी ने पाँच मिनट हमें दिये। पाँच मिनट बीतते ही हँसते हुए उन्होंने कहा—"अच्छा, तुम लोग भाग जाओ। समय हो गया। अब लिखना है।"

हम लोगों ने विदा ली। गान्धीजी की झोप से बाहर आने पर मैंने सुना, गान्धीजी कह थे—"अरे जल्दी करो। इन पत्रों पर पते लिखो भोजन की घण्टी भी तो बजनेवाली है।"

मैं सोचने लगा, विशाल हिमालय से एक छो पत्थर ले आया था। क्या इस महापुरुष से यह ए छोटी बात भी न ले सकूँगा कि 'समय की पाबन् करनी चाहिए।'

खोई गुड़िया

अनुवादिका, कुमारी पुष्पा हूजा

प्यारे, थी मेरी एक नन्हीं-सी गुड्डी,
जग में सुन्दरता की एक ही रानी।
ड़े ही सुन्दर कपोल लाल उसके थे,
कितने घुँघराले निराले बाल उसके थे।
लेकिन खो गई एक दिन मेरी गुड़िया,
खेल रही थी जब मैं दूर के वनों में।
उसके वियोग में ही रोती रही हफ़्तों में,
कुछ भी पता न चला किन्तु वह कहाँ थी॥

एक बार फिर जब वन में मैं पहुँची,
पता लगा तब उस नन्हीं ग़रीब का।
लोग कहें वह एकबारगी बदल गई,
क्योंकि रँग बह चुका उसका अजीब था॥
गायों ने उसकी सुडौल बाँह कुचली,
एक भी कुण्डल न उसका रहा था शेष।
किन्तु चाहे जितनी पुरानी हो प्रिय है,
अब भी वह मेरी सुन्दरता की रानी॥

आगर नदी

लेखक, श्रीयुत विपिनविहारी वाजपेयी

यह सुन्दर आगर नदी हमारी;
हरती मन की पीड़ा सारी!
इसके सुन्दर सुखमय तट पर,
इसके निर्मल जल के ऊपर;
खेल-खेल करके हम सब हैं,
मन का अपने दुःख भगाते!
इसके सुन्दर सुखमय तट पर,
रोज़ कबड्डी खेला करते;
इसके तट पर दौड़-धूप कर,
अपने मन के दुख को हरते।
गर्मी में हम ख़ूब नहाते;
तैर-तैरकर ख़ुश हो जाते;
जब डण्डा ले दादा आते,
दौड़-दौड़कर उन्हें छकाते।
हम सब को यह कितनी प्यारी!
यह सुन्दर आगर नदी हमारी!*

---

* स्थानीय आगर नदी पर लिखित।

खींचा-तानी

लेखक, श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जैन

एक रोज़ बोली यों नानी—इक लड़के की सुनो कहानी।
नाम था उसका खेंचा-तानी, सारे दिन करता शैतानी।
इक बिल्ली थी उसने पाली, सीधी-सादी भोली-भाली।
म्याऊँ-म्याऊँ करती फिरती, सब ही के मन को थी हरती।
तिस पर भी तो खेंचा-तानी, उसे छेड़ता कर शैतानी।
कभी खींच दुम उसकी लेता, कभी मार इक धक्का देता।
कान पकड़कर कभी हिलाता, पैर उठाकर उसे चलाता।
बिल्ली रोती औ' चिल्लाती, पर उसको थी दया न आती।
अम्मा दादा नाना नानी, कहते सब यह क्या शैतानी।
पर ज़िद्दी था खेंचा-तानी, करता था अपनी मनमानी।
पड़ा पलँग पर खेंचा-तानी, लगा सोचने कुछ शैतानी।
हुआ एकदम बड़ा उजाला, दीखा दानव काला-काला।
डरा बहुत ही खेंचा-तानी, भूल गया सारी शैतानी।
उसने उसको पकड़ हिलाया, खेंचा-तानी अति घबड़ाया।
बोला वह तुम हो शैतान, सबको करते हो हैरान।
अम्मा दादी नानी नाना, तुमने कहा न इनका माना।
जब जी में आया धर मारी, भोली-भाली बिल्ली प्यारी।
नित उसको तुम तँग करते हो, नहीं दया दिल में रखते हो।
इन सब की अब सुनो सज़ा, शैतानी का चखो मज़ा।
लो, अब बिल्ली बनकर रहना, बिल्ली की शैतानी सहना।
बिल्ली बनकर खेंचा-तानी, ख़ूब करेगा फिर शैतानी।
कभी खींच लेगी वह तुमको, कभी ठोंस देगी वह तुमको।
कान पकड़कर कभी हिलावे, पैर उठाकर तुम्हें चलावे।
तब छोड़ोगे तुम शैतानी, जब होगी तुमको हैरानी।
यह सुनकर लड़का घबड़ाया, बड़े ज़ोर से वह चिल्लाया।
सुनी चीख़ और दौड़ी अम्मा, उठा गोद में मुँह को चूमा।
उसने सारा हाल सुनाया, अपना सपना उन्हें सुनाया।
अम्मा दादी नाना नानी, ख़ूब हँसे जब सुनी कहानी।
उस दिन से फिर खेंचा-तानी, भूल गया सारी शैतानी।
बहुत प्यार से बिल्ली रखता, कभी न तँग था उसको करता।
सुना कहानी बोली नानी, बच्चो! मत करना शैतानी॥

प्रोफ़ेसर ड़िप्यु और प्राचीन मूर्ति

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबलीसिंह बी० ए०

प्रोफ़ेसर ड़िप्यु प्राचीन स्मारकों के प्रेमी थे। की सारी शक्ति और सम्पत्ति घूम-घूमकर देश-देश से प्राचीन स्मारकों को इकट्ठा करने में ख़र्च ती थी। इसी धुन में वे हिन्दुस्तान भी आये थे। के साथ उनका भानजा पीटर और भतीजी न भी थी। इन दोनों ने उनकी पूरी सेवा और -भाल की; क्योंकि प्रोफ़ेसर तो अपनी धुन में ल-से रहते थे। इन लोगों ने भारतवर्ष के उजाड़ से ड़ और प्राचीन से प्राचीन स्थानों की खोज की र वहाँ से बहुत-से प्राचीन स्मारक आदि पाये।

कई वर्षों की खोज के बाद प्रोफ़ेसर ड़िप्यु एक प्राचीन पत्थर की मूर्ति मिली। इसे पाकर सर बहुत ही प्रसन्न हुए और ख़ुर्दबीन द्वारा को देखने लगे। उनको इसे बार-बार देखने पर सन्तोष न होता था।

अब उन्होंने इँगलैंड वापस जाने की तैयारी की। र और जोन ने सारा सामान बाँध लिया। अब ज़ छुटने में थोड़ी ही देर थी।

उन्होंने प्रोफ़ेसर से भी तैयार होने को कहा, परन्तु सर को इसकी चिन्ता नहीं थी। वे बड़ी देर चित्त लगाकर इस मूर्ति के प्रत्येक हिस्से की करते रहे। अन्त में उनका ध्यान टूटा और ने कहा—“ठीक है। यह वही मूर्ति है जिसके बारे कतनी दन्तकथायें प्रचलित हैं। तुम लोग तैयारी और सामान लेकर बन्दरगाह पर चलो। हम मूर्ति को अच्छी तरह से रखकर आ रहे हैं। ना, सब सामान ठीक तरह से जहाज़ पर चढ़ जाय।”

पीटर जोन को लेकर चल पड़ा। जहाज़ पर वक्त़ पर सारा सामान पहुँच गया और जहाज़ होनेवाला ही था। पीटर और जोन ने बहुत तक इन्तज़ार किया, लेकिन प्रोफ़ेसर का पता न । आख़िर लाचार होकर वे दोनों भी जहाज़ से पड़े, क्योंकि उनका टिकट और सारा रुपया-पैसा सर के ही पास था।

जहाज़ से उतर कर दोनों बहुत घबड़ाये औ सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। अचानक उन रानी ने आकर सलाम किया। रानी उनके हिन्दु स्तानी नौकर का नाम था। रानी भारत की यात्रा क समय प्रोफ़ेसर के साथ था। पीटर को सहारा मिला उसने रानी को सारा क़िस्सा कह सुनाया। रानी ‘हूँ’ कह दिया और दोनों को लेकर एक पेड़ पर च गया। पीटर के पूछने पर कहा कि इस क़स्बे से बा आने का केवल एक ही रास्ता है। अगर जङ्गल जातियों ने प्रोफ़ेसर साहब को पकड़ लिया होगा वे इसी रास्ते से जायँगे। मैंने तो पहले ही उनसे क था कि इस मूर्ति को रखनेवाला सदा दुःख का भागी होता है। कुछ देर बैठने के बाद बहुत-से सौदाग ऊँट और घोड़े पर सवार उधर से निकले, लेकि रानी ने कुछ न किया। थोड़ी देर बाद हाथियों व सजा हुआ एक जलूस उधर आया। पीटर और जो को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्होंने बीचवा हाथी पर रक्खी हुई वही मूर्ति देखी। जैसे ही वह हा पेड़ के नीचे पहुँचा, रानी चीख़कर उस पर कूद प और महावत को मारकर गिरा दिया। बड़ा शो गुल हुआ। थोड़ी देर में पीटर और जोन ने दे कि सामने प्रोफ़ेसर एक अजीब पोशाक में खड़े हैं।

प्रोफ़ेसर ने बताया कि जब वे मूर्ति लेकर आ रहे थे तो रास्ते में उनको, जङ्गली जाति के सरदार ने पकड़ लिया और कहा कि वह मू उसके कबीलों की सम्पत्ति है। मैंने मूर्ति देने इनकार किया और उसने मुझे क़ैदी बना लिया औ इस वेष में इसलिए रक्खा कि कोई पहचान न सके

प्रोफ़ेसर ने रानी को बहुत धन्यवाद दिय उससे विदा लेकर वे पीटर तथा जोन के साथ इँगलै रवाना हो गये। रानी के कहने पर उन्होंने उस मू को भी जङ्गली जाति के उस सरदार को दे दिया

एक मनोरञ्जक कहानी

समय का फेर

लेखक, श्रीयुत बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'

प्राचीन काल में एक राजा रहता था जो ज्योतिष को बहुत मानता था और उसी पर निर्भर रहता था। इसलिए वह वर्ष-फल जानने के लिए सदैव लालायित रहता था। ज्योतिष-शास्त्र के पण्डित प्रति वर्ष आकर राजा को वर्ष-फल बतलाते थे और बहुत अधिक पारितोषिक पाते थे।

एक दिन किसी दीन-हीन ब्राह्मण ने सुना कि राजा के यहाँ पण्डितों की एक सभा होनेवाली है। उसने सोचा, मैं भी क्यों न उस सभा में सम्मिलित होऊँ। ऐसा सोचकर वह राज-दरबार की ओर चल पड़ा। ब्राह्मण देवता सोचते-विचारते किसी निर्जन स्थान को पार कर रहे थे कि सहसा एक बड़ा सर्प उनके सामने आकर खड़ा हो गया। सर्प बोला—"पण्डित जी, डरिए नहीं। मैं आपका शुभचिन्तक हूँ। पहले आप यह बतलाइए कि आप कहाँ जा रहे हैं।" पण्डितजी ने भय से काँपते हुए कहा—"महाराज, मैं एक ग़रीब ब्राह्मण हूँ। कुछ धन प्राप्त करने की आशा से राज-भवन को जाता हूँ।" सर्प ने कहा—"वहाँ

पर तो पण्डितों की सभा वर्ष-फल जानने के लि
बुलाई गई है। आप क्या बतलायेंगे?"

11348

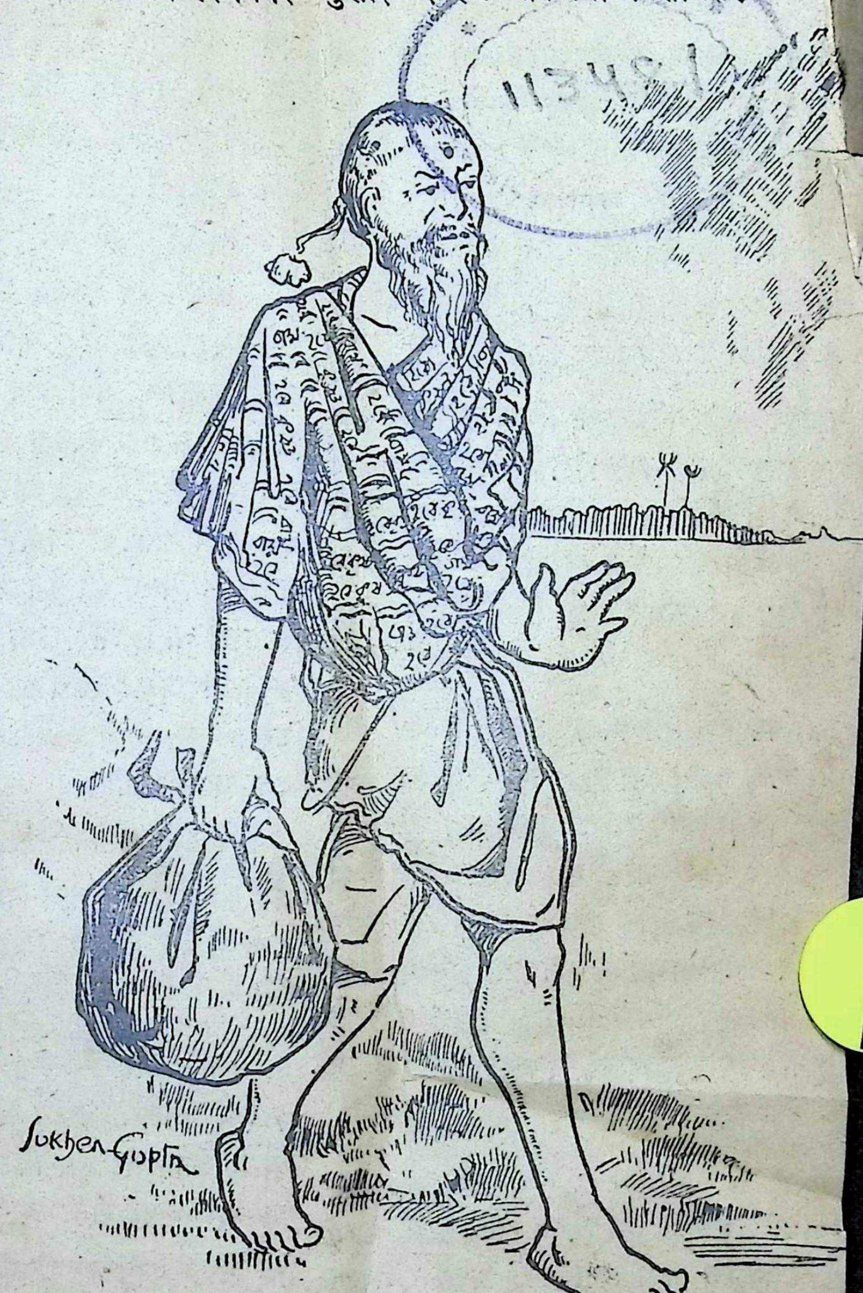

पण्डितजी राज-दरबार की ओर चले

पण्डित ने कहा—"आपकी जो आज्ञा हो
मैं राजा से कह दूँगा। इसके बदले में मैं इना

ाधा भाग आपको दूँगा।" सर्प ने कहा—"अच्छी त है। आप राजा से कह दीजिएगा कि इस साल गों में अनबन बहुत होगी।"

पण्डितजी प्रसन्न होकर राजभवन की ओर । राजा के पास पहुँचकर उन्होंने देखा कि बड़े विद्वान् वर्ष-फल बता रहे हैं। ब्राह्मण देवता सर्प से सुनी बात राजा से कह दी। राजा रानी में बहुत प्रेम था, परन्तु संयोग से उस दोनों में खटपट हो गई। अदालतों में भी लड़ाई- ड़े के बहुत-से मुक़दमे आये।

राजा ने जब देखा कि नये पण्डित का ही बताया वर्ष-फल ठीक निकला तो पण्डित को ५००) दिया। पण्डितजी मन में सोचने लगे कि यदि मैं से आधा सर्प को दे दूँगा तो मेरे पास केवल) रु० ही बच जायँगे। इसलिए वे दूसरे रास्ते र पहुँचे।

दूसरे वर्ष पण्डितजी वर्ष-फल बताने के लिए दूसरे से चले, परन्तु वह सर्प भी उसी रास्ते पर कर बैठ गया। पण्डितजी ने जब उसे देखा र के मारे उनकी जीभ तालू से सट गई। सर्प हा—"महाराज, मेरा हिस्सा आप कब देंगे?" जी ने कहा—"महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। अब आधा इस साल का और आधा उस साल का दूँगा। परन्तु यह तो बतलाइए इस बार मैं से क्या कहूँगा।"

सर्प ने पण्डितजी की बात मान ली और कहा प राजा से कह दीजिएगा कि इस साल का ऐसा है कि प्रत्येक मनुष्य का घर अवश्य । पण्डितजी ने जाकर वही बात राजा से कही। साल वर्ष-फल के अनुसार राजा का महल भी गा। प्रजा की बहुत हानि हुई। राजा बहुत चकित उन्होंने पण्डितजी को १०००) इनाम दिया।

पण्डितजी ने अपने मन में सोचा यदि मैं आधा इस साल का और आधा उस साल का सर्प को दे दूँ तो मेरे पास केवल २५०) ही बच जायँगे। इससे इस बार तो सर्प को मार ही डालना चाहिए यह सोच पण्डितजी सर्प के बिल के पास पहुँ उन्होंने एक घड़ा पानी उसके बिल में डाल दिया जब उनको विश्वास हो गया कि सर्प मर गया तो वे अपने घर चल दिये।

तीसरे वर्ष वे सर्प को मरा जान मन में प्रसन्न होते हुए चले जा रहे थे कि अचानक वही सर्प सामने आकर खड़ा हो गया। सर्प हँस रहा था। पण्डितजी ने हाथ जोड़कर विनती की और कहा—"महाराज मुझसे ग़लती हुई, आप मुझे क्षमा कीजिए। मैं इस साल आपका रुपया देकर ही जाऊँगा।" सर्प ने कहा—"चिन्ता की कोई बात नहीं है। आप प्रसन्नता से वहाँ जायँ और राजा से कहें कि इस साल का वर्ष-फल यह है कि जिसकी जिससे अनबन रहेगी उसका उससे मेल हो जायगा और हर प्रकार से प्रजा सुखी रहेगी।"

पण्डितजी ने राज-दरबार में जाकर राजा से सर्प की कही हुई बात कही। इस साल फिर राजा-रानी में मेल हो गया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और पण्डितजी को २०००) इनाम दिया।

पण्डितजी ने सोचा कि इस बार सर्प का रुपया दे देना चाहिए, जिससे अगले वर्षों के लिए आगम रहे। दूसरे यह सर्प बिना लिये हमारा पिण्ड छोड़ने का नहीं। यह सोच पण्डित सर्प के बिल के पास पहुँचा और उसको बुलाया।

सर्प बाहर निकल आया। पण्डित ने कहा—"तीनों साल का आप १७५०) ले लीजिए।" सर्प ने कहा—"महाराज, आप इसे ले जायँ। इसमें आपका कोई दोष नहीं, क्योंकि पहले वर्ष का वर्ष-फल यही था

कि मित्रों से बिगाड़ हो जाय। उसका प्रभाव तो सब पर एक-सा पड़ता है। हम और आप तो संसार से बाहर नहीं हैं। दूसरे वर्ष मेरे बिल में पानी नहीं या था, इसलिए आप ही ने उसमें पानी भर दिया। इस वर्ष का फल यह है कि आपस में मेल जाय। इसी के अनुसार आप मुझे रुपया देने आ हैं। यह रुपया आप ले जायँ। यह सब समय अनुसार होता है।"

प्रश्न

लेखक, श्री 'विद्यार्थी'

सोचा करता हूँ यह मन में—
शाम रोज़ जब आ जाती है,
कुछ धुँधली छवि छा जाती है,
दीपक करने लगते जगमग,
अन्धकार जब बढ़ता पग-पग।
कौन लगा जाता यह तारे,
आसमान के नीले तन में?
सोचा करता हूँ यह मन में।
चाँद किधर से है आ जाता,
और चाँदनी को छिटकाता।
छा जाती है छटा निराली,
नींद हमें आती मतवाली।
सन-सन करती हुई हवा तब,
दौड़-दौड़ कहती क्या वन में?
सोचा करता हूँ मैं मन में।
और प्रात जब हो जाता है,
चाँद कहीं तब खो जाता है।
फूल बिहँस उठते हैं प्यारे,
तितली-भौंरे आते न्यारे।
कौन छिपा है इन फूलों में,
उन्हें खिलाता जो उपवन में?
यही सोचता हूँ मैं मन में।

कैसी सुन्दर गाय हमारी

लेखक, श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव

घास और भूसा ही केवल,
प्रतिदिन यह खाया करती है।
साँझ-सवेरे पर तुम देखो,
डोल दूध से यह भरती है॥

मेरा छोटा भाई इसको,
रोज़ चराने ले जाता है।
और शाम तक ख़ूब खिलाकर,
धीरे-धीरे लौटाता है॥

आधा तन इसका भूरा है,
औ आधा चमकीला काला।
मतवाला मुन्ना है इसको,
पहनाता फूलों की माला॥

इसको मैं देता हूँ चारा,
गरमी में इसको नहलाता।
सुन्दर रूप देखकर इसका,
इस पर जी से बलि-बलि जाता॥

बैल गाड़ियों में जब इसके,
प्यारे बछड़े जोते जाते।
'करो दूसरों का हित ऐसे,
कष्ट सहन कर' सिखलाते हैं॥

दो मछुये

लेखक, श्रीयुत महेन्द्रनाथ 'मधुकर'

कई साल हुए, किसी देश में होरी और होदरी ो भाई रहा करते थे। होरी मछुआ था, होदरी ाकारी था। होरी का स्वभाव गम्भीर और होदरी ा हँसमुख था। होरी चाहता था कि सब दिन ाराम से रहें। होदरी को कठिन काम करने में ानन्द आता था। होदरी होरी को बहुत प्यार रता था।

एक दिन प्रातःकाल होदरी ने होरी से कहा—दोइया आओ, आज हम लोग एक दूसरे का काम करें।

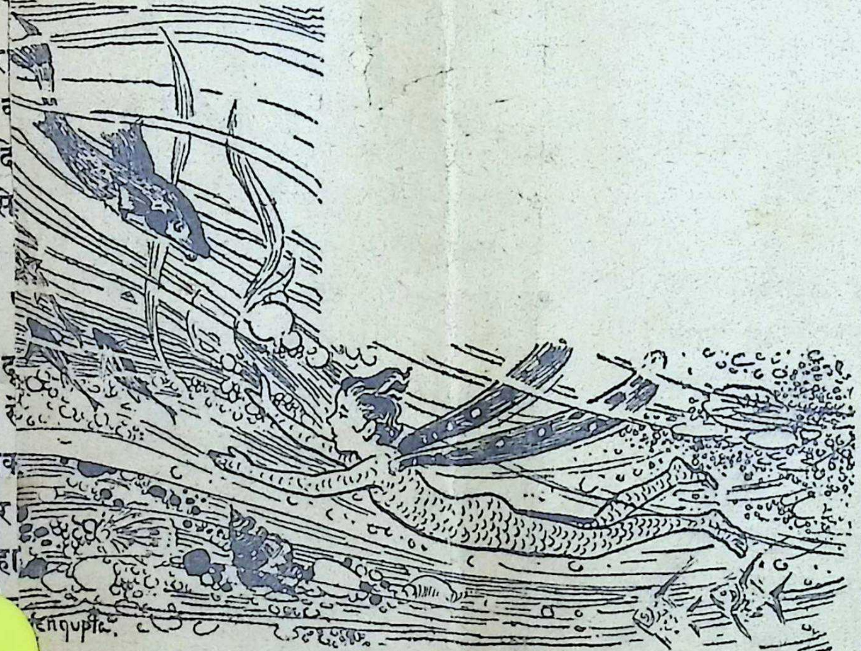

होदरी ने राजकुमारी को पानी के बाहर अपनी ओर आते देखा

शिकार के लिए जाओ और मैं मछली पकड़ने ”

होरी को यह बात पसन्द न आई, परन्तु होदरी त कहने पर वह मान गया। दोनों चल दिये। शिकार के लिए गया और होदरी मछली ने गया।

ोरी जङ्गल से ख़ाली हाथ लौट आया। होदरी होरी की मछली पकड़ने की कटिया समुद्र में खो आया। दोनों जैसे के तैसे निकले।

होरी को अपनी कटिया खो जाने के होदरी पर बहुत क्रोध आया। वह आग-बबूला उठा और उससे कहने लगा—"जब तक तुम मेरी कटिया नहीं लाओगे तब तक मैं तुमसे नहीं बोलूँगा।"

होरी को अपनी कटिया जान से भी ज़्याद प्यारी थी। होदरी ने उससे कहा कि मैं तुमके बहुत-सी नई कटियाँ ल दूँगा, परन्तु वह अपनी व कटिया चाहता था। अ में होदरी बहुत दुखी होकर घर से निकल पड़ा।

होदरी समुद्र के किनारे इधर-उधर घूमता रहा। वह अपने मन में कहने लगा—"मैं होरी को अवश्य शान्त करूँगा। वह उसी कटिया के मिलने पर शान्त हो सकेगा। यदि मैं डूब कर अपनी हत्या कर लूँ तो वह भी उसके क्रोध से कम ही दुखदायी होगी।" वह एक पहाड़ी चट्टान पर चढ़कर समुद्र में कूद पड़ा और समुद्र के भीतर घुसता चला गया। पहले तो उसे कुछ दिखाई न पड़ रहा था, किन्तु कुछ दूर और जाने पर उसे एक चमकती-सी कोई चीज़ दिखाई दी। दूर से वह किसी महल का गुम्बज जान पड़ता था। वह वहाँ जाकर फाटक पर खड़ा हो गया। उस महल का रङ्ग बिल्कुल सोने-जैसा था। चमक भी वैसी ही थी। उसी समय एक सुन्दर राजकुमारी फाटक पर

उन्होंने पण्डितजी को १०००) इनाम दिया।

ा खड़ी हुई। उसके हाथ में सुन्दर फूलों का च्छा था। उसने होंदरी की ओर पहले तो घृणा की ष्टि से देखा। किन्तु फिर उसके भोले मुख की ओर कर उसे विश्वास हो गया कि वह सच्चा और ानदार आदमी है।

राजकुमारी ने पूछा—"तुम यहाँ क्यों आये हो?"

होदरी ने सब कह सुनाया।

राजकुमारी ने कहा—"अच्छा, मेरे पिताजी के पास चलो।" होदरी उसके पीछे-पीछे चल दिया। महल के भीतर बड़े-बड़े कमरे थे, जिनकी ीवारों में मोती जड़े हुए थे। होदरी उन कमरों पार करता हुआ राजकुमारी के पिता के कमरे पहुँचा। उस कमरे में एक वृद्ध पुरुष, जिनके हरे पर तेज था, राजसी ठाठ से बैठे थे।

होदरी ने झुककर उनको नमस्कार किया। फिर उसने बहुत नम्रतापूर्वक अपनी सारी कहानी उन्हें कह सुनाई। समुद्र का राजा उससे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"तुम्हारी कटिया का पता लग जायगा। तब तक तुम हम लोगों के साथ खाना खाओ।"

समुद्र के राजा ने बहुत-से लोगों को भेजा। उनको हुक्म दिया कि समुद्र की सारी मछलियाँ उसके सामने लाई जायँ।

सब मछलियाँ आईं, पर किसके पास कटिया है इसका पता किसी को नहीं था। राजा के मन्त्री को एक मछली पर अचानक कुछ सन्देह हुआ और वह चिल्ला पड़ा—"अरे, इसको तो देखो। इसके गले में कुछ बीमारी हो गई है।"

राज-दरबार के वैद्य बुलाये गये। उन्होंने देखा कि उसके गले में कटिया फँसी थी। शीघ्र ही उसके गले से कटिया निकाली गई। होदरी को हो की प्यारी वस्तु मिल गई।

होदरी वहाँ कुछ समय तक और ठहरा। उस राजकुमारी को बहुत समझाया कि वह उसके सा चले, पर उसने कहा—"मैं समुद्र के बाहर बहु समय तक नहीं रह सकती। मैं विनती करती हूँ तुम यहीं रहो और समुद्र के राजकुमार बनो।" उ ऐसा मालूम हुआ कि आँधी और तूफ़ान में हो उसकी ओर उड़ा चला आ रहा है। आख़िरक होदरी ने चलने का निश्चय कर लिया। एक दिन ज वह चलने लगा तो राजकुमारी अश्रुभरे नेत्रों से उ पानी के ऊपर तक पहुँचाने आई।

होरी अपनी चीज़ पाकर बहुत ख़ुश हुआ औ उसने अपनी पुरानी मित्रता और प्रेम से उसे सन्तु करना चाहा, पर वह सफल न हो सका।

एक रात को बड़ा भयङ्कर तूफ़ान आया औ समुद्र की लहरें तट को तोड़कर बहुत दूर तक स्थ में चली आईं। होदरी को नींद न आई और समुद्र के किनारे पहुँचा। अचानक उसने राजकुम को पानी के बाहर अपनी ओर आते देखा।

राजकुमारी ने पास आकर कहा—"आख़िरक मैं आपके पास आ ही गई।"

होदरी अपने जीवन में कभी इतना ख़ुश हुआ था, जितना वह आज था। होदरी का वि राजकुमारी के साथ हो गया और तीनों—होरी, हो और राजकुमारी आनन्द के साथ रहने लगे।

एक दिन सन्ध्या समय तीनों समुद्र के कि टहल रहे थे। अचानक राजकुमारी चिल्लाकर पृ पर गिर पड़ी। देखते ही देखते वह सुन्दर र कुमारी साँप बन गई और समुद्र में चली गई।

उस दिन से होदरी ने उसे फिर कभी नहीं दे

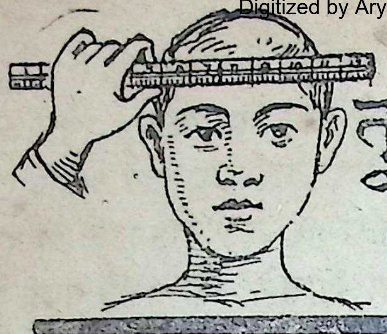

तुममें कितनी बुद्धि है?

नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके उत्तर सोचकर निकालिए और अगले अङ्क काशित होनेवाले उत्तर से अपने उत्तरों को मिलाइए। देखिए आपके कितने उत्त ीक हैं।

(१) ४५ को ४५ में से इस प्रकार घटाइए कि तर भी ४५ ही हो।

(२) दो देहाती एक घड़े में आठ सेर तेल लिये रहे थे। इस घड़े में आठ ही सेर तेल आता था। ते में दोनों में झगड़ा हो गया तो उन्होंने तेल ना चाहा। उनके पास दो ही बर्तन और थे, पाँच सेर का, दूसरा तीन सेर का। अब बताओ किस तरह चार-चार सेर तेल बाँट सकते हैं।

(३) एक आदमी ने एक आम के बाग़ से आम ा। रास्ते में तीन फाटक थे। पहले फाटक के दार से उसने कहा कि जितने आम मैंने तोड़े हैं में से आधे तुम्हें देता हूँ। उनमें से केवल एक लौटा देना। इसी प्रकार उसने तीनों फाटकों के दारों को आम दिये। जब वह बाहर आया तो के पास उतने ही आम थे जितने उसने तोड़े थे। ओ कितने आम उसने तोड़े थे।

(४) संसार में सब से मोटा और भारी आदमी हुआ है?

(५) संसार में सब से ऊँचा मनुष्य कौ हुआ है?

(६) रूस के महात्मा लेनिन और भारत गोपाल कृष्ण गोखले तथा विश्व-कवि रवीन्द्रना टैगोर के जन्म-दिवस बताइए।

—गुरुदयालसिंह 'दयाल'

(७) लोहे का असली रंग क्या है?

(८) फोटो खींचने के कैमरे का आविष्का किसने किया?

(९) पेड़ से फल गिरते देख कर किसको पृथ् की आकर्षण-शक्ति का ज्ञान हुआ?

(१०) तीनों कुओं से पानी खींचने के लिए कितनी लम्बी रस्सी की ज़रूरत पड़ेगी, अगर पहला कुआँ १६ .फुट गहरा, दूसरा १८ .फुट और तीसरा २० .फुट गहरा है।

—गुलाबसिंह राना

नागकन्या की अँगूठी

लेखक, श्रीयुत श्री कण्ठ गोपाल वैद्य

कलुआ और ललुआ दो भाई थे। दोनों ग़रीब थे। एक बार इनके गाँव में अकाल पड़ा। लोग खाने बिना भूखों ही मरने लगे।

कलुआ ललुआ से था तो छोटा, पर बुद्धिमान् अधिक था।

एक दिन कलुआ ने ललुआ से कहा—“भाई, अब तो नहीं रहा जाता। परदेश चलो। किसी जगह काम करके पेट तो भर लेंगे। भूखे रहते-रहते तो तबियत घबरा गई।”

ललुआ को यह राय ठीक जँची और दूसरे ही दिन वे चलने को तैयार हो गये। सबेरे ही दोनों भाई अपना-अपना बोरिया-बिस्तर सँभालकर चल पड़े। दोनों भाई रास्ते के नदी, पहाड़, कन्दरा पार करते-करते थक गये, फिर भी बेचारे बस्ती में नहीं पहुँचे। रात हो गई थी। जङ्गली जानवरों की गर्जना सुनकर वे लोग और भी घबराये। एकाएक कलुआ ने देखा कि सामने एक महल दिखलाई पड़ रहा है। दोनों ने वहीं चलकर रात काटने का विचार किया और आगे बढ़े। महल की चमक-दमक देखकर ये लोग डरे। चारों ओर पहरेदार हरा दे रहे थे। कलुआ ने एक पहरेदार से त भर रहने की आज्ञा चाही।

पहरेदार को इन लोगों पर दया आ गई। ने रात भर टिकने के लिए जगह दे दी।

वह महल नागकन्या का था।

दूसरे दिन जब दोनों उठे और चलने तैयार हुए तो पहरेदार ने पूछा—ाई, कहाँ जा रहे हो?”

कलुआ बोला—“परदेश नौकरी करने रहे हैं।”

पहरेदार बोला—“नौकरी करनी है तो यहीं क्यों न करो। परदेश जाकर क करोगे।”

उन दोनों ने नौकरी करना स्वीकार कर लिय पहरेदार ने दोनों को नागकन्या के सामने उपस्थि किया।

नागकन्या ने दोनों को विद्वान् समझकर अ मन्दिर की पूजा करने के लिए रख लिया। दरब से उन लोगों को रोज़ एक अशर्फ़ी दान में मिलती थ

थोड़े ही दिनों में दोनों भाई बहुत ही मालद हो गये। नागकन्या दोनों पुजारियों को ब मानती थी।

उन लोगों का दरबार में बहुत सम्मान हो थां। यह देखकर राज-दरबारी जलते थे। एक उन्होंने उनको बदनाम करने के लिए कलुआ जेब में नागकन्या की अँगूठी डाल दी।

दूसरे दिन सबेरे ही राजकुमारी ने देखा कि अँ नहीं है। राजकुमारी ने एक दासी को बुल अँगूठी खोजने की आज्ञा दी। दरबारियों ने जगह ढूँढ़ डाला, पर कहीं उस अँगूठी का पता न चला। एक दरबारी ने कहा कि पुजारियों के घर में तो देखा ही न

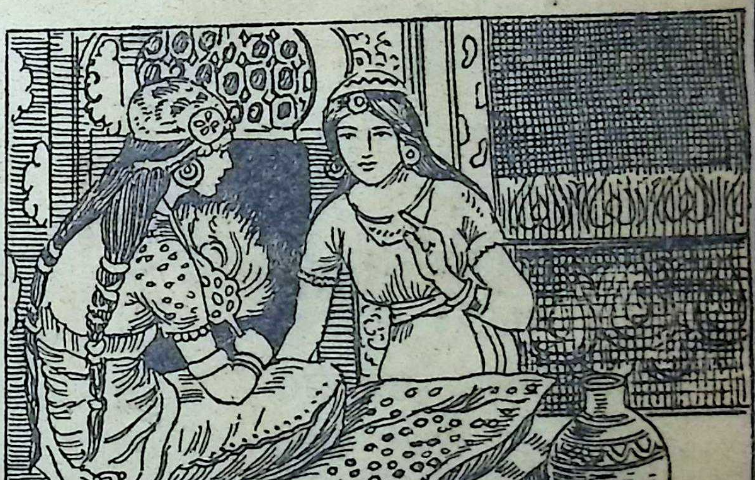

राजकुमारी ने एक दासी को अँगूठी खोजने की आज्ञा दी

दरबारी लोग वहाँ की तलाशी लेने गये। वहाँ र कलुआ की जेब से अँगूठी निकली। उसे दरबारी ोग पकड़कर राज-दरबार में ले चले। यह देखकर लुआ रोने लगा।

कलुआ ने कहा—"रोते क्यों हो भैया! हमने ाई चोरी तो की नहीं।"

नागकन्या के सामने कलुआ उपस्थित किया गया।

नागकन्या ने कलुआ को देखकर कहा—"पुजारी-ी, मुझको स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि आप तरह हमारे साथ विश्वास-घात करेंगे।"

कलुआ बोला—"रानीजी, आप विश्वास करें, ने चोरी नहीं की। अगर आपको विश्वास न हो तो प एक काम करें। एक बड़े भट्ठे पर कढ़ाई में तेल ौलावें, उसमें मैं अपना हाथ डालूँगा। अगर मैंने चोरी की होगी तो मेरा हाथ जल जायगा। तब आप मुझे प्राण-दण्ड दे सकती हैं।"

रानी ने यह बात स्वीकार कर ली। कढ़ाई तेल रखकर खौलाया जाने लगा। जिसने चोरी थी वह मारे डर के बेहोश हो गया।

नागकन्या ने उस बेहोश सिपाही को देखा बोली—"चोर पकड़ा गया। पुजारी को छोड़

पुजारीजी छोड़ दिये गये।

सिपाही के होश में आते ही रानी ने उ पूछा—"सब बातें सच्ची-सच्ची बताओ।"

सिपाही ने सब बातें बतला दीं।

जिस दरबारी ने पुजारी की जेब में अँ रखवाई थी, उसे रानी ने बहुत कड़ी सज़ा दी।

हमारी शान

लेखक, श्रीयुत हरप्रसाद टण्डन 'करुण'

बढ़ते जाना तान हमारी।
बढ़ते रहना शान हमारी॥
तुरत निराशा बिखरा देगी
सूरज-सी मुस्कान हमारी।
चढ़ जायेंगे हम पर्वत पर,
मर जायेंगे अपने व्रत पर।
ऊँचा मस्तक, हँसता चेहरा,
होगी यह पहचान हमारी।
बढ़ने में विश्वास अटल है,
मन में आशा, तन में बल है।
'बढ़े चलो' धुन यही हमारी,
चलते रहना बान हमारी।

मेरी कामना

लेखक, श्रीयुत सुरेशकुमार 'सुमन', डीडवाना

माँ! हमको दो यह वरदान।
विपदाओं में हँसना सीखें,
काँटों पर भी बढ़ना सीखें,
शुभ कामों पर अड़ना सीखें,
हों गम्भीर, बनें विद्वान्।
रोम-रोम में शौर्य जगाकर;
शान्ति, त्याग का पाठ पढ़ाकर,
सबको समता-मन्त्र सुनाकर—
पर-हित हो जावें बलिदान।
अन्धकार में राह दिखायें,
विपदा में धीरज बन जायें,
देश-प्रेम पर बलि हो जायें—
गावें माँ! तेरा गुण-गान।

राजा का चुनाव

लेखिका, कुमारी आशालता अग्निहोत्री, मैनपुरी

ी मित्र थे—पशुपति और सुमन। दोनों में बड़ा था। एक बार दोनों मित्र यात्रा को चले। ते-चलते वे एक स्थान पर पहुँचे, जहाँ घने पेड़ों छाया थी। पास ही नदी बह रही थी। दोनों त्र बहुत थक गये थे, अतः विश्राम करने को लेट ये। लेटते ही नींद ने धर दबाया और वे सो गये।

काफ़ी सो लेने के पश्चात् वे उठे। नदी शीतल जल में हाथ-मुँह धोया और चलने हुए। इतने में सुमन की दृष्टि पास ही पड़े ए एक पत्थर पर पड़ी, जिसमें लिखा था—ुसाफ़िरो, हमने तुम्हारे आराम का सभी सामान कट्ठा कर रक्खा है, पर वह तुम्हें तभी मिल कता है जब तुम बहादुर बनो। इस नदी की तेज़ ारा में कूद पड़ो; काफ़ी दूर जाने पर तुम्हें एक ङ्गल मिलेगा, वहीं तुम्हें रुक जाना होगा। तब तुम ागे बढ़ना। बीच जङ्गल में तुम्हें पत्थर का बना एक र मिलेगा; उसे उठाकर तुम सामनेवाली चोटी पर क ही साँस में चढ़ जाना, वहीं तुम्हारी इच्छा री होगी।”

सुमन ने कहा—“हमें ऐसा करना चाहिए”, पर शुपति खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला—यह किसी हँसोड़ ने यात्रियों को बेवकूफ़ बनाने के लिए किया है।” पर सुमन इस पर राज़ी न हुआ दोनों मित्रों ने बिदा ली और अपने-अपने रास्ते च दिये। पशुपति अपने घर चला गया।

इधर सुमन नदी की धारा में कूद पड़ा औ तैरते-तैरते जङ्गल में जाकर रुका। वहाँ वह नदी निकलकर ऊपर आया। बीच जङ्गल में पहुँचने उसे पत्थर का एक बड़ा शेर दिखाई दिया।

सुमन ने वह शेर उठा लिया और चोटी चढ़ने लगा। बीच में पहुँचने पर उसकी शक्ति जव देने लगी, वह बेहद थक गया था पर उसने हिम्म न हारी। आख़िर वह चोटी पर पहुँच गया।

ऊपर पहुँच कर ज्योंही उसने शेर को ज़मी पर रक्खा कि एक ज़ोर का धड़ाका हुआ। ब बजने लगे और आदमियों की भीड़ सुमन के च ओर जमा हो गई। सब ने सुमन का अभिवादन कि और फूल फेंके। उनमें से एक ने कहा—“मुसाफ़ि आज से हमने तुम्हें अपना राजा बनाया। हमारे रा का यही नियम है कि जब हमारा राजा मर जात तब हम पत्थर पर यही लिखकर वहाँ रख देते और इसी तरह अपना राजा चुनते हैं।” यह कह उस सरदार ने सुमन के सर पर मुकुट रख दि और घोड़े पर बिठा दिया। बाजे बजने लगे।

केमरे के सामने

लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी

कौन तमाशा यह आया है।
जो मुझको यों बिठलाया है॥
इस काले परदे के अन्दर,
क्या कोई रहता है बन्दर?
“गल इछने तछबील उताली,
जो दोत्ती तै लही अमाली;
लैमजूस का तुकला दूँगा,
औल केम्ला तलका दूँगा”॥

कुछ इधर उधर के
SUDHIR

हवा से बातें

हम .कुतुब मीनार को देखकर अचम्भा करते जो केवल २३८ .फुट ऊँची है। फ़्रांस की ईफ़िल वर नामक मीनार दुनिया की सबसे ऊँची मीनार है र इसकी ऊँचाई ९८४ .फुट है। परन्तु न्यूयार्क आकाश को छूनेवाली इमारतों ने इन सब को चे छोड़ दिया है। इनमें सब से ऊँची इमारत पायर स्टेट बिल्डिंग्स है जिसकी ऊँचाई १२४८ ट है। इनमें किसी-किसी में सब चीज़ों के ज़ार, उपवन, खेलने के मैदान आदि सभी सुभीते और मनुष्य को इनमें से कई-कई महीने निकलने आवश्यकता नहीं होती। वायु ऊपर से रासायक ढङ्ग से पहुँचाई जाती है।

मनुष्य के पंख

मनुष्य ने आकाश में ऊँचे से ऊँचे पहुँचने की चेष्टा की है। वायुयान से वह ६२,३२० ट (लगभग ९ या १० मील) की ऊँचाई तक ँचा है परन्तु गुब्बारे से वह ७२,३९५ .फुट १४ मील) तक पहुँच चुका है। और बिना मनुष्य बैठाये हुए गुब्बारे तो २५ मील की ऊँचाई तक चुके हैं। यह गुब्बारा रूस ने उड़ाया था।

—चन्द्रकुमार वर्मा

साँप खानेवाला आदमी

अभी कुछ दिन हुए आस्ट्रेलिया से एक व्यक्ति त में आये थे। वे दर्शकों के सामने ही ज़िन्दा प इस प्रकार खा जाते थे मानो मूली खा रहे हों। के अतिरिक्त आप लोहा, लकड़ी, काँच का चूर ई चीजें खाते थे।

मनुष्य जिसे पीड़ा का ज्ञान नहीं हो

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जानी कोरमैन न १८ वर्षीय एक युवक है जो ५ .फुट ४ इंच त और वज़न में १२८ पौंड है, फिर भी उसमें अ बल मौजूद है। दो-दो सौ पौंड वज़न के व्यक्तियों को वह अपने हाथ से ऊपर उछाल क पर ले सकता है। मोटर को रोक सकता है। के मोटे छड़ को आसानी से झुका कर टेढ़ा सकता है। इसके अलावा उसमें एक अद्भुत गुण है कि उसे चाहे जितना मारा-पीटा जाय, उसे पीड़ा अनुभव नहीं होता। आप उसके शरीर में कील दीजिए या हथौड़ा लेकर उसके शरीर में प्रहार की वह तनिक भी कष्ट न अनुभव करेगा, न रोयेगा न उसके शरीर से .खून ही बहेगा।

—बल्लभदास बिन्नानी

सबसे बड़े

संसार में—

सबसे बड़ा पर्वत हिमालय है।
सबसे ऊँचा पठार पामीर का है।
सबसे लम्बी नदी अमरीका की मिसीसिपी है।
सबसे अधिक चौड़ी नदी अफ़रीका की अमेजन है
सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा का है।
सबसे बड़ा देश रूस है।
सबसे बड़ा शहर लन्दन है।
सबसे मूल्यवान् वस्तु रेडियम है।
सबसे बड़ा दर्रा खैबर है।
सबसे बड़ा म्यूजियम लन्दन का ब्रिटिश म्यूजियम
सबसे पुराना अखबार पेकिन गज़ट है, जो १४ वर्ष से प्रकाशित हो रहा था।
आजकल यह बन्द हो गया है।

—विमला मिश्र विशारद

चतुर लड़की

लेखिका, श्रीमती विमलादेवी

मेरी प्यारी सहेलियो, हमारे देश भारतवर्ष के म में फ़ारस नाम का एक प्रसिद्ध देश है। बहुत नों की बात है कि वहाँ एक ख़लीफ़ा राज्य करता । उसके राज्य में सुलेमान नाम का एक किसान रहता । वह बहुत ग़रीब था, परन्तु उसकी एक लड़की जो बड़ी बुद्धिमती थी। उसकी बुद्धिमानी की हानियाँ दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गई थीं। ख़लीफ़ा भी इस लड़की की बुद्धिमानी की कहानियाँ सुनीं। सने सोचा, ऐसी बुद्धिमती स्त्री को तो अपनी रानी नाना चाहिए।

यह सोचकर उसने लड़की की परीक्षा लेनी चाही। सरे दिन उसने सुलेमान को अपने दरबार में बुलाया। चारा सुलेमान डरता-डरता दरबार में पहुँचा और लीफ़ा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। लीफ़ा ने पूछा—"सुलेमान, हमने सुना है कि तुम्हारी ड़की बड़ी बुद्धिमती है।"

सुलेमान ने उत्तर दिया—"हाँ हुज़ूर, है तो वश्य।"

"तो तुम इन अण्डों को उसके पास ले जाओ र कल तक इनमें से बच्चे निकालकर ले आओ। दि तुम्हारी लड़की ऐसा न कर सकी तो उसे सी की सज़ा दी जायगी।" कहकर ख़लीफ़ा सुलेमान को तीन उबाले हुए अण्डे दिये।

सुलेमान बहुत चिन्ता के साथ घर लौटा। सने अपनी लड़की को सारा समाचार कह ताया। लड़की ने कहा—"सब हो जायगा। समें डरने की क्या बात है।"

शाम को ख़लीफ़ा शिकार खेलने जाया ता था। लड़की ने अपने पिता को थोड़ी-सी ली हुई मटर देकर कहा—"जाओ, जिधर ख़लीफ़ा ार खेलने जाता है, वहीं तुम इन दानों को बोना और कहना भगवान् इन्हें जल्दी उगाना, जिससे ह फ़सल की उपज को बेंचकर धनी हो जायँ।"

ख़लीफ़ा ने जब सुलेमान को उबाली हुई मट बोते देखा तो कहा—"सुलेमान, तू क्या पागल गया है! कहीं उबाली मटर भी उग सकती है?"

सुलेमान ने कहा—"क्यों नहीं सरकार! ज उबाले अण्डे से बच्चे निकल सकते हैं तो फि उबाली मटर से पेड़ क्यों न उगेंगे?"

ख़लीफ़ा चुप हो गया।

दूसरी बार उसने सुलेमान को एक छोटी-स कटोरी देकर कहा—"जाओ, अपनी लड़की से कहना इससे समुद्र का सारा पानी निकाल कर फेंक दे।"

लड़की ने सुनकर कहा—"यह भी हो जायगा

उसने अपने पिता को थोड़ी रूई दी और कह "जाओ ख़लीफ़ा से कह देना कि समुद्र का पा निकालने का काम मैंने कर दिया है, पर नदियाँ ब सारा पानी लाकर समुद्र में गिराती रहती हैं जिस काम में बड़ी कठिनाई पड़ रही है। इसलिए इस से नदियों का पानी रोक दें।"

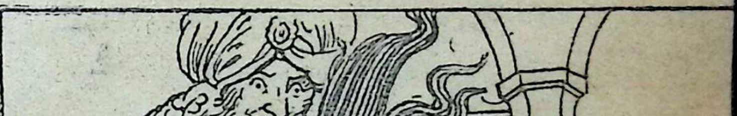

ख़लीफ़ा ने उससे विवाह कर लिया

यह उत्तर सुनकर ख़लीफ़ा बहुत प्रसन्न हुअ उसने किसान की लड़की से विवाह कर लिया।

र कुछ दिन बाद ख़लीफ़ा ने एक बार फिर ोकी की परीक्षा लेनी चाही। उसने उससे कहा—र हम तुम्हें अपनी रानी बनाना नहीं चाहते, इसलिए अपने घर जा सकती हो।"

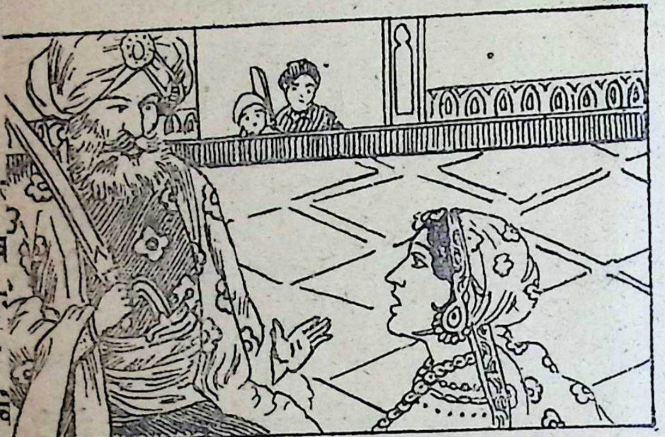

लीफ़ा ने रानी को अपने पिता के घर चले जाने की आज्ञा दी

यह सुनकर लड़की उदास हो गई। उसने पूछा—जैसे मैं आई थी "क्या वैसे ही मुझे जाना होगा या अपना सामान भी मैं लेती जाऊँ?"

ख़लीफ़ा ने कहा—"नहीं, तुम अपनी बहुमूल्य वस्तुयें भी ले जा सकती हो।"

उस दिन लड़की ने ख़लीफ़ा को ऐसी दवा खिला दी कि उसे बड़ी गहरी नींद आ गई। उसे लेकर वह अपने गाँव चली गई।

जब ख़लीफ़ा की नींद खुली तो उस अपने को एक झोपड़ी में पाया। ख़लीफ़ा पूछा—"तुम मुझे यहाँ क्यों लाई?"

लड़की ने उत्तर दिया—"आपने ही कहा था कि मैं अपनी बहुमूल्य चीज़ें अपने स ला सकती हूँ और मेरी सब से बहुमूल्य ची आप ही हैं।"

ख़लीफ़ा इस उत्तर पर बहुत प्रसन्न हु और उसे फिर रानी बना लिया।

नदी से

लेखिका, कुमारी प्रेमकुमारी मिश्र, जबलपुर

ल करती गीत सुनाती, कहो कहाँ तुम जाती हो ?
धुर स्वरों के कारण, किसे नहीं तुम भाती हो ॥
थिक पास आ करके, मीठा जल पी जाता है।
ुण गा-गा करके वह, अपने मन सुख पाता है ॥
उपकारिन होते भी, नीचे को तुम चलती हो।
जहाँ भी जाओ तुम, पर नहीं किसी को खलती हो ॥
स्वभाव आत्मसम्मानी, चूर गर्व निज करते हैं।
पूजनीय वे सब के, सदा शीश पर धरते हैं ॥
न्तु औ सभी व्यक्ति, आ तुमको नित अपनाते हैं।
काल के उष्ण दिनों में, तेरा ही यश गाते हैं ॥
पवन से बाहर आकर, पहुँची तू खेतों के पास।
देखकर हो जाते हैं, खेतिहर जन जो रहे उदास ॥
क़सबों में जब आई, मनुज हर्ष से फूल उठे।
शीतल जल मिलने से, दुःख-कष्ट सब भूल उठे ॥
गम्य सागर में जाकर, सुन्दरता से मुख मोड़ा।
[illegible] से उसने, तब यह शुभ नाता तोड़ा ॥

गीत लिख दूँ

लेखक, श्रीयुत गोपीकृष्ण शर्मा.

मैं तुम्हें गीत लिख दूँ ?
तुम गाली बकते हो प्रति क्षण,
तुम कभी नहीं करते हो प्रण।
'गन्दी बातों, गन्दे लड़कों से दूर सदा रक्खूँगा मन
मैं तुम्हें गीत लिख दूँ !

तुमको क़िस्सों से बहुत प्यार,
सब कुछ है नानी का दुलार।
तुम माँ को नित्य खिझाते हो, तुमने खाई थी सुबह मा
मैं तुम्हें गीत लिख दूँ !

जल्दी जागो, जल्दी सोओ,
उठकर मुँह, हाथ-पैर धोओ।
पढ़ने बैठो, न समय खोओ, पीछे काटो, पहले बोओ
मैं तुम्हें गीत लिख दूँ।

प्रश्नों का उत्तर

ीमान् सम्पादक जी,

'बड़े लोगों का बचपन' स्तम्भ में जो प्रश्न पूछे ये थे, उनके उत्तर इस प्रकार हैं :—

पहला—यदि शून्य को शून्य से भाग दिया ाय तो भजन-फल एक ही आवेगा। उत्तर सही है नहीं, यह जाँचने के लिए भजन-फल को भाजक गुणा करके भाज्य से मिलाना चाहिए। यदि दोनों ाबर हैं तो समझना चाहिए कि उत्तर ठीक है। ून्य को एक से गुणा करने से शून्य ही आवेगा।

दूसरा—दो तरह से दो वर्गों के जोड़ के बरा- र की संख्या ३४१ है—

३४१=६×६×६+५×५×५
=७×७×७+२×२×२

ध्रुवनारायण जौहरी, सिवनी

[आपने जो उत्तर सोचा है उससे इन उत्तरों को ला करके उनकी शुद्धता की जाँच कीजिए।—सं०]

हिन्दी कुमारसाहित्य-सम्मेलन

ीमान् सम्पादक जी,

उगती हुई उम्र के लेखकों का बाल-साहित्य के थ सदैव सम्बन्ध रहा है। उनमें बहुत-से कुमार खक ऐसे हैं कि यदि उन्हें उचित अवसर और र्ग-प्रदर्शन मिले तो वे बहुत कुछ कर सकेंगे। इसी श्य से हिन्दी भाषाप्रेमी बाल लेखकों का एक न्दी कुमारसाहित्य-सम्मेलन' होना चाहिए, जिसमें धिक से अधिक २० वर्ष तक के लेखक भाग लें। -लिखित मासिकों का एक प्रदर्शन भी कराया य। इससे बालकों को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा।

वीरेन्द्र अरोड़ा, पूना

ारी राय में भी यह सुझाव बहुत सुन्दर है।—सं०]

कहानी कैसे लिखे

श्रीमान् सम्पादक जी,

श्री किरण ने कहानी लिखने का उपाय है। यद्यपि इसका कोई खास उपाय नहीं बताया सकता, पर एक साधारण उपाय यह है कि अ मन में कोई बात ले लें और फिर उसके सम्बन्ध प्रश्न करें। मान लीजिए, आपने अपने मन में बात ली कि 'एक सन्तानहीन राजा था।' अपने में अब प्रश्न कीजिए—उसने सन्तान उत्पन्न करने लिए क्या उपाय किये ? उसके कितनी रानियाँ थ उसके सन्तान हुई कि नहीं ? क्या कोई होन राजकुमार हुआ ? उसने क्या किया ? विदेश या में शिकार खेलने जाने में उस पर कोई सङ्कट नहीं पड़ा ? उसका विवाह हुआ या नहीं। इसी त के सैकड़ों सवाल अपने मन से पूछ डालिए तो आप एक नई कहानी मिल जायगी।

ब्रजेश, सीसामऊ (कानपुर)

[कहानी लिखने के इस उपाय से आप बहुत- कहानियाँ लिख सकेंगे। प्रयत्न कीजिए।—सं०]

इनामी पहेलियाँ

श्रीमान् सम्पादकजी,

आप पहेलियों के उत्तर प्रकाशित कर देते इसलिए हमारे सभी साथी उनके उत्तर पढ़कर ज लेते हैं और बुद्धि की परीक्षा नहीं हो पाती। इसलि पहेलियों के उत्तर दूसरे महीने में छापा करें औ इनामी पहेलियाँ क्यों नहीं छापते ?

जयनन्दनप्रसाद, पटना

[श्री जयनन्दनप्रसाद की राय उचित जान पड़ है। आगामी अङ्क से ऐसा ही किया

संसार के सात आश्चर्य

लेखक, श्रीयुत गोविन्दप्रसाद गोयल

आओ प्यारे बालसखाओ, आज हम आपको दुनिया के सात आश्चर्यों की सैर करायें।

दुनिया के सात आश्चर्यों के नाम ये हैं—

१—मिस्र देश के "पिरामिड"।
२—बेबीलन का "झूलता हुआ बग़ीचा"।
३—ओलम्पिया में "जूपिटर की पत्थर-मूर्ति"।
४—"डायना का मन्दिर"।
५—रोडस का "कलोसस"।
६—राजा मसोलक का समाधि-मन्दिर।
७—अलेक्ज़ेंड्रिया का "लाईट-हाउस"।

अब हम लोग अपनी यात्रा शुरू करते हैं। सबसे पहले भारतवर्ष से चलकर हम मिस्र देश में पहुँचे। दुनिया के प्राचीन सात आश्चर्यों में से एक यहाँ के "पिरामिड" हैं। इनकी संख्या तीन है।

ये पिरामिड मिस्र देश के राजा तथा रानियों की क़ब्रें हैं। ये बहुत बड़े-बड़े पत्थरों की बनी हुई हैं तथा ये सब त्रिभुज की शक्ल की हैं। इनकी ऊँचाई लगभग ४६० फ़ुट है। इसकी भुजायें क़रीब २५५ फ़ुट लम्बी हैं। एक-एक "पिरामिड" क़रीब-क़रीब १५ एकड़ ज़मीन घेरता है। ये नील नदी के किनारे पर बने हैं।

जब ये बने थे तब बहुत सुन्दर-सुन्दर रँगों से रँगे हुए थे, लेकिन अब इनका रँग बिलकुल ख़तम हो गया है तथा पत्थरों पर दरारें बन गई हैं जिससे लोग आसानी से ऊपर चढ़ सकते हैं।

अन्दर जाने के लिए एक रास्ता बना हुआ है। अन्दर बीच में एक बहुत बड़ा कमरा बना हुआ है। उस कमरे में जगह-जगह बहुत-सी "ममियाँ" (सूखी हुई लाशें) रक्खी हुई हैं। हर एक "ममी" एक-एक सन्दूक़ में रक्खी है। सन्दूक़ के ऊपर उस मृतक-शरीर के बारे में कुछ लिखा हुआ है। उनके आस-पास कुछ खाने-पीने की चीज़ें, बहुमूल्य जवाहरात अन्य सुन्दर-सुन्दर सामान रक्खे हुए हैं।

चार या पाँच हज़ार वर्ष पुराने शरीर ज्यों त्यों रक्खे देखकर बहुत आश्चर्य होता है तथा प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता।

अब मिस्र देश को छोड़कर हम लोग को चलते हैं। यहाँ पर भी दुनिया के सात में से एक है, जिसका नाम है "बेबिलन का हुआ बग़ीचा"। इसके बनने के बारे में एक प्रसिद्ध है—

ईसा से क़रीब ६०५ वर्ष पूर्व बेबीलन "नेबूचडनैज़ार" नाम का राजा राज्य करत उसकी शादी मेडिया की राजकुमारी "ऐमिटि साथ हुई थी। राजा ने प्रजा की भलाई सुन्दर-सुन्दर चीज़ें बनवाईं जिससे प्रजा बहु तथा ख़ुश थी, लेकिन उसकी रानी उससे थी; क्योंकि बेबीलन में पहाड़ों के सुन्दर-सुन्द नहीं थे। जब वह उनका ख़्याल करती तब बहुत दुःख होता। यह बात देखकर राजा बहुत सुन्दर बग़ीचा पहाड़ियों की तरह जिसका नाम "बेबीलन का झूलता हुआ रक्खा।

अब इसके खँडहर ही शेष रह गये हैं। देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं।

यह बग़ीचा पोले-पोले खम्भों पर बन है। खम्भों पर सुन्दर-सुन्दर वृक्ष लगे हु झूलते हुए लगते थे। जगह-जगह पर सुन्द तालाब तथा फव्वारे बने होने के कारण दृश्य बहुत सुन्दर रहा होगा।

इस स्थान को भी छोड़कर हम आगे "इफिसस" पहुँचे। यहाँ पर भी दुनिया

ों में से एक है, जिसका नाम "डायना का " है।

डायना रोमवालों की एक देवी थी। वह चन्द्रमा ोशनी की देवी और सादगी की अवतार ाती थी। मन्दिर में वह धनुष तथा बाण हुए दिखाई गई है। कुत्ते और बारहसिङ्गा ी गाड़ी खींच रहे हैं। वह एक लम्बा अँगरखा हुए है तथा घूँघट काढ़े हुए है। उसका धनुष चन्द्रमा के समान सुन्दर है। यह मन्दिर बहुत ुन्दर महराबदार बना हुआ है।

दुनिया के इस आश्चर्य को भी छोड़कर हम बढ़े तथा रोडस के टापू पर पहुँचे। रोडस के गाह पर "कलोसस" है जो दुनिया के सात ों में से एक है। यह ओपोलो देवता की है। यह काँसे की बनी हुई १०० फ़ुट ऊँची है। इसको बनाने में बारह वर्ष लगे थे। इस की एक टाँग बन्दरगाह के एक सिरे पर तथा दूसरे सिरे पर थी। बीच से आसानी से गुज़र सकते थे। ईसा से २०० वर्ष पूर्व ाल में यह गिर पड़ी थी। फिर क़रीब ६७२ र्ष यह एक व्यापारी के हाथ बेच दी गई जो टुकड़े-टुकड़े करके ९०० ऊँटों पर लादकर सका था।

अब हम इस स्थान से भी चलकर यूनान के ंपया नामक स्थान में पहुँचे। यहाँ पर भी आश्चर्यों में से एक जूपिटर (इन्द्र) की प्रस्तर-मूर्ति ाजकल इसके भी बहुत थोड़े खँडहर शेष ये हैं, लेकिन तो भी देखने में बहुत सुन्दर हैं। भारतवासियों की तरह यूनानी लोग भी को सब देवताओं का राजा मानते थे तथा ही प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने यह मूर्ति बनाई यह इन्द्र की बैठी हुई मूर्ति क़रीब-क़रीब ६० ऊँची है।

इन्द्र के शरीर पर हाथी-दाँत का काम है, तथा इनका सिंहासन भी बहुमूल्य रत्नों से जड़ा हुआ है। भगवान् इन्द्र के दाहिने हाथ में विजय-लक्ष्मी की तस्वीर तथा बायें हाथ पर एक डण्डा दिखाया गया है, जिस पर एक चील बैठी हुई है।

यहाँ से भी हम चले तथा हालिक्यूसस पहुँचे। ईसा से ३५३ वर्ष पूर्व यहाँ पर राजा मसोलस राज्य करता था। उसके मरने पर उसकी रानी ने उसकी क़ब्र पर एक बहुत सुन्दर समाधि-मन्दिर बनवाया था। वह इतना सुन्दर था कि वह भी दुनिया के सात आश्चर्यों में गिना जाने लगा।

इसके भी कुछ भाग रह गये हैं तथा कुछ भाग इँगलैण्ड के म्यूजियम में है। उसी तरह का एक छोटा-सा समाधि-मन्दिर भी वहाँ पर रक्खा है जो देखने में बहुत सुन्दर है। राजा मसोलस का समाधि-मन्दिर इतना अच्छा बना है कि उसकी कारीगरी की तारीफ़ करनी पड़ती है।

हम घूम-फिर कर फिर उसी जगह आ गये जहाँ से चले थे। मिस्र देश का एक बहुत सुन्दर बन्दरगाह है जिसका नाम है "अलेक्ज़ेंड्रिया"। इसके निकट टापू पर एक बहुत सुन्दर "लाइट-हाउस" (प्रकाशगृह) बना था जो अपनी सुन्दरता के कारण दुनिया के आश्चर्यों में गिना जाता है।

यह सफ़ेद संगमरमर का बना हुआ था तथा इसकी ऊँचाई ५०० फ़ुट थी। इसके सिरे पर दिन-रात आग जलती रहती थी जो ३० मील दूर तक चारों तरफ़ दिखाई देती थी। ईसा से क़रीब २०० साल पूर्व भूचाल से यह भी गिर पड़ा। अब एक नया "लाइट-हाउस" उस जगह बना है।

दुनिया की प्राचीन चीज़ों को देखकर हमको दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है तथा प्राचीन लोगों की कारीगरी की तारीफ़ करनी पड़ती है।

बच्चों का कमरा

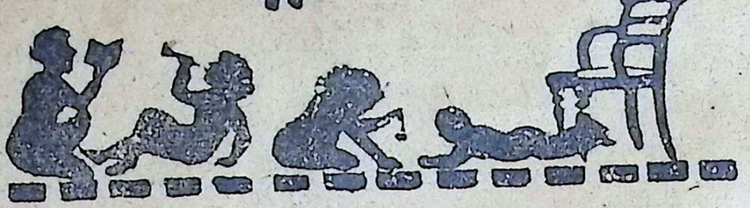

दो बहनें

लेखिका, कुमारी दमयन्तीदेवी जालान

सीता दम्मा हैं दो बहनें,
सीता लगी बहिन से कहने—
'चलो बाग़ में फूल सजायें;
सुन्दर बग़िया उसे बनायें।'
दोनों ने मिल बाग़ लगाया,
पानी लाकर उसे सिंचाया।
फूल उठी उनकी फुलवारी,
केशर जूही क़लम अनारी।
गईं बाग़ में दोनों मिलकर,
जहाँ फूल फूले थे सुन्दर;
एक दूसरी से वे बोलीं;
बात न उनने अपनी तोली।
'मेरे फूल अधिक सुन्दर हैं';
'तुमसे तो मेरे सुन्दर हैं';
दोनों में तब हुई लड़ाई;
ख़ासी जमकर मार पिटाई।
दोनों दो कोने जा बैठीं,
अपने में थीं दोनों ऐंठी।
शाम खेलना साथ विचारा,
भूल गईं वे ग़ुस्सा सारा।

क़िला

लेखक, श्रीयुत धर्मेन्द्रकुमार काँकरिया

आओ भाई क़िला बनावें।
ईंट जोड़कर बुर्ज़ उठावें॥
सब मित्रों ने किया विचार।
बनकर हुआ क़िला तैयार॥
फिर हमने सेना सजवाई
झूठ-मूठ की हुई लड़ाई।
होने लगे वार पर वार
ख़ूब मज़ा आया तब यार।

मेरा मुन्नू

मुन्नू मेरा छोटा भाई,
दिन भर है शैतानी करता।
हँसी-ख़ुशी से खेल-कूद कर,
घर भर के मन का दुख हरता।
पैसा पाकर चबोड़ा लाता,
कहता माँ से 'लो माँ, खाओ'
माँ कहती है बेटा तुम ही;
खाओ गाओ मौज उड़ाओ

धमकी

लेखिका, कुमारी ऋता

नहीं करूँगी तुमसे बात!
भैया बुरे हो गये अब तुम,
मुझसे करते बहुत लड़ाई,
शाला से अब कभी लौटते
समय न लाते मुझे मिठाई।
बहिन तुम्हारी मैं न बनूँगी
कहाँ बहिन तब तुम पाओगे
कौन तुम्हारे संग खेलने
दौड़ेगा जब घर आओगे
और कहानी तुमसे भैया,
कौन सुनेगा सारी रात!
नहीं करूँगी तुमसे बात!

मनो-विनोद

ास्टर साहब—क्यों रमेश, सवाल कर चुके ?

मेश –(खड़े होकर) जी हाँ।

ा० सा०—अच्छा, अपनी कॉपी इधर लाओ।

रमेश ने पण्डित जी को अपनी कॉपी दे दी।]

ा० सा०—पर यह तो सादी है !

मेश—नहीं मास्टरजी, हमने सफ़ेद स्याही से लिखा है।

—मोहनलाल नाथानी

× × × ×

ज—(अपराधी से) तुम्हें बार-बार अदालत में आते हीं आती ?

पराधी—इसमें शर्म कैसी ! मैं तो महीने में एक ही ाता हूँ, पर आप तो नित्यप्रति आते हैं।

× × × ×

ालिक—(नौकर से) तुम बिना धोये ही मछली नाते हो ?

ौकर—जो चीज़ सदा पानी में ही रहती है, उसे धोने ा आवश्यकता है ?

× × × ×

ोगी—डाक्टर साहब, अगर यह चीर-फाड़ सफल नहीं ?

ाक्टर—अगर सफल नहीं हुई तो तुम्हें मालूम ही ड़ेगी।

—रतनचन्द्र, मद्रास

× × × ×

ास्टर—प्रतुल ! क्या तुमको श्याम ने गाली दी है ?

तुल—जी हाँ।

ा० - तो तुमने क्या दिया ?

०—धन्यवाद।

ा०—क्यों ?

प्र०—मुझे गाली देनी आती ही नहीं।

× × × ×

प्रश्न—हिन्दुस्तान के किस प्रान्त में नाग अधिक पाये जाते हैं ?

उत्तर— नागपुर में।

—गुलाबसिंह 'राना'

× × × ×

एक लाला के सिर में दर्द हो रहा था। उन्होंने अपने नौकर से कहा कि मेरा सिर दबा दो तो चार पैसे इनाम दूँगा। नौकर ने सिर दबाया और दर्द अच्छा हो गया। अब नौकर ने इनाम के चार पैसे माँगे तो लालाजी ने कहा—"तुमने मेरा सिर दबाया—मैंने तुम्हारा पैसा दबाया—बराबर है सब।"

× × × ×

गप्पू –वकील साहब, अगर किसी के मोटर से मुर्ग़ी दब जाय तो क्या करना चाहिए ?

वकील साहब— पहले उससे मुर्ग़ी का दाम माँगो, अगर न दे तो मेरे पास आना। अदालत में मुक़दमा दायर कर देंगे।

गप्पू—अच्छा, कल आपके मोटर से मेरी मुर्ग़ी दबकर मर गई। उसके चार रुपये दीजिए, नहीं तो मुक़दमा चलाऊँगा।

वकील साहब—अच्छा, मैंने आप को राय बताई है उसके पाँच रुपये लाओ, नहीं तो अपनी मुर्ग़ी के चार रुपये काटकर एक ही रुपया लाओ।

—रूपकिशोर सेठ

× × × ×

श्याम—पिताजी, आज पण्डितजी ने हमें उल्लू कहा है।

पिता—अरे, उल्लू तो हो ही, नहीं तो इन छोटी-छोटी बातों की शिकायत न करते।

श्याम—तो क्या पिताजी, आप उल्लू के बाप हैं ?

—राजेन्द्रकुमार साबू

प्रश्न पहेली

तीन अक्षर का मेरा नाम।
करता हूँ सेवा का काम॥
आदि कटे तो हार हो जाती।
मध्य कटे तो कर रह जाता॥—(कहार)
—मोहनलाल नथानी

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम।
उल्टा सीधा एक समान॥
हूँ झगड़े में आता काम।
ज़रा बताओ मेरा नाम॥—(जज)
—रूपकिशोर सेठ

× × ×

आदि कटे से मल बनूँ
अन्त कटे कम होय।
आदि अन्त को जोड़िये
आगामी कल होय॥—(कमल)

× × ×

आदि कटे हाथी बनूँ
अन्त कटे तो काग।
तीनों अक्षर जोड़कर
लिखने का लो काम॥—(कागज)
—बालकृष्ण गुप्त

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
बतलाओ तो मिले इनाम॥
आदि कटे इन्द्रिय बन जाता।
मध्य कटे से हृदय कहाता॥ -(मकान)

× × ×

काग़ज़ की मैं बनती हूँ।
हवा से बातें करती हूँ॥
आदि कटे तो तङ्ग करूँगी।
मध्य कटे तो पाँव बनूँगी॥—(पतङ्ग)
—मुरारिलाल माथुर

चार अक्षर का मेरा नाम।
ात में हूँ आती मैं काम॥
पहले आधा रँग रहता हूँ।
पीछे आधे दस होता हूँ॥—(

× × ×

तीन अक्षरों का मम नाम।
लिखने-पढ़ने से है काम॥
आदि कटे तो बर बन जाता।
उलटा-सीधा एक कहाता॥—(
—केदारनाथ अ

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
डर से काँपे हाथी राम॥
आदि कटे राजा बन जाऊँ।
पुत्र रामजी का कहलाऊँ॥—(

× × ×

तीन अक्षरों का है नाम।
बच्चा-बच्चा जाने नाम॥
आदि कटे प्रचण्ड बन जाऊँ।
निरी-याद से भी डरवाऊँ॥
सावन भादौं खेल खिलाऊँ।
गाँव के गाँव बहा ले जाऊँ॥—
—बसन्तलाल अ

× × ×

देख सूर्य को खिल उठे,
पानी पर लहराय!
सब के मन को ख़ुश करे,
अपना यश फैलाय॥—
—निरङ्कारनाथ अ

× × ×

बत्तिस भेड़ें सँग चलीं,
चारा डाला पीस।
भरा पेट चुप हो गई,
निकल पड़ी यों खीस॥—(
—जयकिशोर श्री

पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ

भैरवी	२॥≡)
वासवदत्ता	२॥≡)
कुणाल	२)
विषपान	१)

वर्तमान युग के युवक कवियों में पं० सोहनलाल द्विवेदी का स्थान सर्व श्रेष्ठ है। इनकी कविता की एक-एक पंक्ति में मानव-हृदय को जाग्रत करने की भावना ठूँस ठूँस कर भरी होती है। यदि आप इस युग की सर्व श्रेष्ठ कविता पुस्तकें रखना चाहते हों तो इन चारों पुस्तकों को तुरन्त मँगवाइये।

मैनेजर बुकडिपो—इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

माधवी	२)
कादम्बिनी	२)
ज्योतिष्मती	२।-)
मानवी	२।-)
सुमना	२)
संचिता	१॥≡)

कविता-संग्रह

विद्वानों की सम्मति—

"ठाकुर साहब की सब से बड़ी विशेषता उनकी कविता का सरल और प्रसाद-गुण पूर्ण होना है। जो भी बात वह कहते हैं बिना प्रयास के स्वाभाविक शब्दों में व्यक्त करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि उनकी कविता में गम्भीर भावों का अभाव रहता है। सरलता में ही वे गम्भीरता को ऐसा मिला देते हैं कि वह गम्भीरता भी सरलता का रूप ले लेती है और हमको एक हलका-सा सुख स्पर्श देकर हृदय को गुदगुदा देती है।"

ठा० गोपालशरणसिंह

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

नटखट

बच्चे — अब माँ-बाप को दुःखदायी न होंगे, क्योंकि उन्हें हमा पुस्तकें पढ़ने में वही मज़ा आता है जो माँ को भुलावा मिठाई उड़ाने में आता है।

आज ही अपना आर्डर भेजिये

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी कृत बच्चों की कविताओं का यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक हैं, यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत ही कमनीय हैं। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

शिशु भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही रचनाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल कवितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

लन्दन की एक झलक—बालकों को लन्दन शहर का संक्षेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। आपके बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक संवाद रूप में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और मनोरञ्जक हुई है। मूल्य ।।) आठ आने।

फ्रांस—इस पुस्तक में फ्रांस देश का वर्णन किया गया है। भाषा बहुत ही सरल और मनोरञ्जक है। मूल्य ।) आठ आने।

आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्राप्त करने के लिए बालकों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो कोई अनावश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात छूटने पाई है। मूल्य ।।) आठ आने।

अमरीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं जानता। उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी गई है। अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए। मूल्य ।।) आठ आने।

जर्मनी—जर्मनी अपनी भयङ्कर कारनामों के कारण आज कुप्रसिद्ध हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं, उनकी क्या विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश डा है। मूल्य ।।) आठ आने।

चीन देश का हाल—भारत का चीन से सम्बन्ध है। उसी चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया है। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।) आ

ध्रुवप्रदेश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षि दिया गया है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पढ़ने से मनोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी। आठ आने।

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों महापुरुषों के संक्षेप में जीवन-चरित्र दिये गये हैं जो अ कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। मूल्य आने प्रति भाग।

रूस—देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना स्थान बना लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद इसमें वर्णन किया गया है। मूल्य ।।) आठ आने।

लामाओं के देश तिब्बत में—तिब्बत के रास्ते क्या कठिनाई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस किया गया है। मूल्य ।।) आठ आने।

च्यांगकाई शेक—इस पुस्तक में च्यांगकाई शेक चरित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के रा में नई जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।–) पाँच आने।

जोसेफ स्टालिन—अत्यन्त कठिन परिस्थिति साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रो होगी। मूल्य ।–) पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

र्की के वोर – इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवाले अतातुर्क का संक्षेप में जीवन-चरित्र का वर्णन है। बच्चों पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य |–) पाँच आने।

स्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विस्टन का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीत होगा। को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य |–) पाँच आने।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ को ना कर जाते हुएँ देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जहाज़ त्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह संक्षेप में लिखा है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। –) पाँच आने।

जानवरों की मजेदार कहानियाँ—इस छोटी-सी पुस्तक ठ मजेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। प्रत्येक जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। बालकों ए यह बहुत ही मजेदार है। मूल्य ||≡) ग्यारह आने।

बाघ और भालू की कहानी—इस पुस्तक में केवल दो नयाँ हैं। एक में बाघ और आदमी की लड़ाई और दूसरी लू का आदमी के साथ नाच कैसे हुआ, इसका वर्णन है। |–) पाँच आने.

बच्चों की बातें—यह पुस्तक इस ढङ्ग से लिखी गई है च्चों का मनोरञ्जक हो और साथ ही साथ उन्हें उपदेश त हो। खेलना, पढ़ना, सच बोलना आदि बातें समझाने लिए यह पुस्तक लिखी गई है कहानी के रूप में। |–) पाँच आने।

दो अवतार—इस पुस्तक में सातमार पहलवान और श्रेष्ठ नामक दो मजेदार कहानियाँ संगृहीत हैं। कहानियाँ सुन्दर हैं कि पुस्तके पूरी किये बग़ैर बच्चे पुस्तक छोड़ ही सकते। मूल्य ||) आठ आने।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता है कि कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहानी पढ़ते वही मजा आता है जो दूध और मलाई खाते समय। ||≡) ग्यारह आने।

दो मित्र—इसमें दो मित्र, विश्वामित्र का तप, विकट समस्या महासना का गीत, रमेश की वंशी, राजकुमारी का सत्य, जङ्गली चीते की लड़ाई—ये सात कहानियाँ सङ्कलित हैं। कहानियाँ एक से एक मजेदार हैं। मूल्य ||) आठ आने।

जान जोखिम की कहानियाँ—इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। कतिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षता और बढ़ गई है। मूल्य |||–) तेरह आने।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य सात कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि बच्चे पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा आकर्षक है। मूल्य |–) पाँच आने।

बाघ सिंह के मुख में—इसमें कतिपय भारतीय युवकों की यात्रा का विवरण है। जिन्हें भयानक जङ्गल, रेगिस्तान, पहाड़ी प्रान्त आदि भीषण स्थानों से ही गुजरना पड़ा। रास्ते में उन्हें जिस प्रकार के ख़ूँखार जानवरों का सामना करना पड़ा उसका वर्णन बहुत ही आकर्षक भाषा में किया गया है। मूल्य ||) आठ आने।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जिसे पढ़कर बच्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न समायेंगे। मूल्य |||–) तेरह आने।

वैज्ञानिक खेल-तमाशे—यह पुस्तक ऐसे ढङ्ग से लिखी गई है कि बच्चे खेल ही खेल से में कई आवश्यक बातें सीख लें। जैसे—रङ्गों के खेल, काँच पर चित्रकारी करना, दियासलाई के बक्स का खेल। पानी पीनेवाला मिट्टी का हाथी बनाना आदि। पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ||) आठ आने।

देवनागर वर्णमाला—बच्चा कैसा भी खिलाड़ी क्यों न हो पर इस पुस्तक को पाते ही वह खेल भूलकर आठ रङ्गों में छपी हुई पुस्तक की रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरें देखने में लग जायगा और साथ ही साथ अक्षर भी सीखेगा। मूल्य |||–) तेरह आने।

मेरे देश की कथा भारतीय इतिहास के कई मुख्य और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास जानने के लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलो में नहीं पढ़ाये जाते

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आदर्श मान बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक उसी कमी को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र का दर्शन कराती है। मूल्य ।||-) तेरह आने।

गुब्बारे में पाँच सप्ताह—इस पुस्तक में डाक्टर फर्ग्युसन नामक एक ऐसे साहसी अँगरेज की कहानी लिखी गई है जिसने गुब्बारे में उड़कर अफ़्रीका के विभिन्न प्रदेशों की सैर की थी, उसी का वर्णन है। पुस्तक की एक एक पंक्ति बहुत ही रोचक और ओजपूर्ण है। मूल्य ||) आठ आने।

पृथ्वी की परिक्रमा—इस पुस्तक में पृथ्वी के भिन्न-भिन्न देशों के मुख्य-मुख्य स्थानों का वर्णन बड़ी ही मनोरञ्जक भाषा में लिखा गया है। आर्ट पेपर पर छपे हुए कई पूरे पृष्ठ के चित्र भी हैं। मूल्य ||) आठ आने।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों की खोज करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइयाँ सही हैं वही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है। मूल्य ।||-) तेरह आने।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का एक प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिये। इसमें ध्रुवों में निवास करनेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल लिखा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही साथ ही मनोरञ्जन भी होगा। मूल्य ।||-) तेरह आने।

अन्वेषण यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य स्थान लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना भी सम्भव नहीं था। वास्कोडि गामा आदि कुछ अपूर्व साहसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर यात्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

अनजान देश में—(दो भाग) इस पुस्तक में एक ऐसे बुद्धिमान् तथा साहसी आदमी की कहानी लिखी गई है जो अत्यन्त ही शीतल, अन्धकारमय तथा निर्जन प्रदेश में भी अपने को जीवित रख सका। अन्त में एक देश का सर्वेसर्वा ब मूल्य ।।) आठ आने प्रति भाग।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा—इस पुस्तक में प्रसि यात्री फ़ाहियान से लेकर वर्तमान युग में एवरेस्ट की चढ़ाई करनेवालों तक कितने ही साहसी और वीर या कथा लिखी गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही स मधुर है। मूल्य ।||-) तेरह आने।

परीदेश—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आ जिसके समझने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। के व्यवहार की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी वे बच्चे उन्हें पढ़कर उछल पड़ेंगे। मूल्य ||) आठ आ

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए मजे की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के गद्य भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ मूल्य ।-) पाँच आने।

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें ल चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचन है। मूल्य ।-) पाँच आने।

बाल आख्योपन्यास—(चार भाग) संसार भ ऐसी पुस्तक नहीं जिसमें अरेबियननाइट्स की तरह सुन्द मोहक आश्चर्यमयी और चातुर्यसम्पन्न कहानियाँ हों। इ को बालकोपयोगी बनाने के लिए हमने इसमें अश्लील अलग करवा दी हैं। इस रूप में यह स्त्रियों और बाल काओं के हाथ में निःसङ्कोच दी जा सकती हैं। मू भाग का ।||-) तेरह आने।

बालगोपाल—बच्चों की रुचि का भली-भाँति करके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और मधुर भाष गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक और शिक्षा मूल्य ||) आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

Printed and Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

हमारा बाल-साहित्य

ये पुस्तकें बहुत ही लोकप्रिय हैं। इनकी एक-एक प्रति प्रत्येक परिवार के हर एक बच्चे के पास होनी चाहिए। ये जैसी मनोरञ्जक हैं वैसी ही शिक्षाप्रद भी हैं।

सचित्र वर्णमाला

देवनागर वर्णमाला—इसमें प्रत्येक अक्षर पर एक-एक मनोहर चित्र कई रंगों में छपा है। मूल्य ।।=) दस आने।

हिन्दी-चार्ट्स—अक्षरों को चित्रों के रूप में दिखलाकर बच्चों को मनोरंजन के साथ ही वर्णमाला सिखाने का सर्वोत्तम साधन।

चाट नं० १, २ प्रत्येक का मूल्य १।।) एक रुपये बार आने व नं० ३, ४ प्रत्येक का १) एक रुपया।

बच्चों के लिए मनोरंजक सचित्र पुस्तकें

(रंग-बिरंगी स्याही में छपी हुई)

अद्भुत कहानियाँ—इस पुस्तक में ऐतिहासिक काल की नौ कहानियाँ दी गई हैं, जिनमें एक से एक अद्भुत बातों का ज़िक्र आया है। पुस्तक बड़े आकार में, दो रंगों में छपी है और सचित्र है। मूल्य ।।) आठ आने।

गोबर गणेश—कविता में लिखी गई मनोरंजक और शिक्षाप्रद सचित्र कहानियाँ। मूल्य ।।=) दस आने।

लड़कों का खेल—इसमें लगभग ४८ चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक वर्ण को आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना की गई है। मूल्य ।) चार आने।

दूध-मलाई—बच्चों के मनोरंजन के लिए दूध-मलाई के समान मज़ेदार गद्य-पद्यमय तथा सचित्र कहानियों का संग्रह। मूल्य ।।) आठ आने।

परदेश—प्रतिदिन के व्यवहार में आनेवाली बातें इस पुस्तक में ऐसी मनोरंजक शैली में लिखी गई हैं कि इन्हें पढ़कर बच्चे ख़ुशी के मारे उछल पड़ेंगे। मूल्य ।=) छः आने

खेल-तमाशा—बालक-बालिकाओं को खेल-खेल में भाषा सिखानेवाल सचित्र पुस्तक का मूल्य ।) चार आने

नया खिलौना—इसमें बच्चों के जान लायक़ हर एक विषय का वर्णन रं चित्र देकर किया गया है। तारीफ़ कि इसमें एक भी मिलावट का नहीं आने पाया। मूल्य ।=) छः आ

ालखिलौना—बच्चों के सामने प्रतिदिन आनेवाले विषयों से संबंध

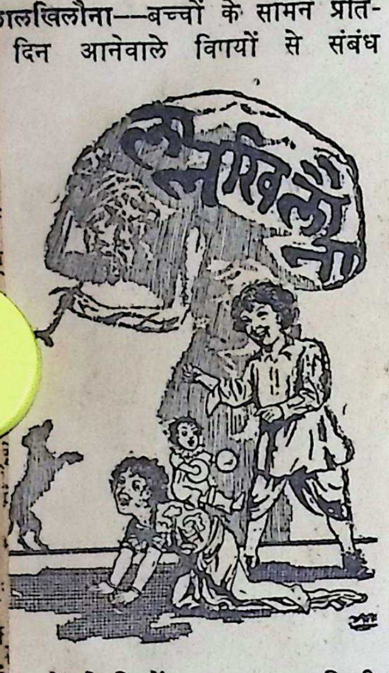

रखनेवाले चित्रों तथा उन पर लिखी गई सरल कविताओं का संग्रह। मूल्य ।।=) दस आने।

लौना—यह पुस्तक इतने आकर्षक ढंग से लिखी गई है कि बच्चे इसे बराबर खिलौने की तरह हाथ में लिये रहते हैं और पढ़ने की प्रवृत्ति उनमें अपने आप होती है। मूल्य ।≡) सात आने।

कथा-कहानी की पुस्तकें

ोटी अवस्था के बच्चों के लिए)

त जोखिम की कहानियाँ—प्राणों को हथेली पर लेकर संसार की कितनी ही अज्ञात बातों का पता लगाने के लिए उद्योग करनेवाले यक्तियों के संबंध की रोमांचकारी कहानियाँ। मूल्य ।।=) दस आने।

गोपाल तथा अन्य कहानियाँ—खक, पंडित देवीदत्त शुक्ल। इस स्तक की सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद । भाषा अत्यन्त मधुर, सरल तथा ली रोचक है। मूल्य केवल ।=) छः ाने।

ी के लाल—सरस्वती-संपादक डित देवीदत्त शुक्ल-द्वारा लिखी ई रोचक कहानियों का संग्रह। मूल्य =) छः आने।

ी का घोड़ा—बच्चों के मनोरंजन र चरित्र-सुधार को ध्यान में रखकर लिखी गई १० कहानियों का संग्रह। मूल्य ।।) आठ आने।

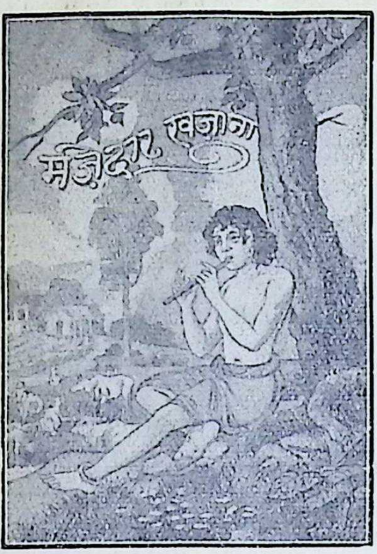

मजेदार ख़ज़ाना—इसमें संग्रह की गई कहानियों को पढ़कर बच्चे जहाँ हास्य, करुण तथा रौद्र आदि रसों का अनुभव करके आनन्द प्राप्त करते हैं; वहीं उन्हें विचारमग्न भी होना पड़ता है। मूल्य ।=) छः आने।

सोने का पेड़—कथा-कहानी के रूप में बच्चों के जानने लायक़, प्रकृति से संबंध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का वर्णन है। मूल्य ।।) आठ आने।

रसीली कहानियाँ—बच्चों को हँसानेवाली और शिक्षाप्रद सचित्र कहानियों का संग्रह। मूल्य ।।।) बारह आने।

पकौड़ीवाली—सरस्वती-संपादक पंडित देवीदत्त शुक्ल-द्वारा लिखित बालकोपयोगी मनोरंजक कहानियों का संग्रह मूल्य ।=) छः आने।

बाघ और भालू की कहानी—इस सचित्र और सजिल्द पुस्तक में बाघ और भालू की दो रोचक कहानियाँ दी गई हैं। मूल्य ।) चार आने।

बाघ-सिंह के मुँह में—इस पुस्तक में ऐसे साहसी यात्रियों का वृत्तान्त दिया गया है, जिन्होंने अफ़्रीका महाद्वीप के घने जंगलों में यात्रा करके बाघ, सिंह आदि हिंसक पशुओं के मुँह में जाते-जाते अपने को बचा लिया। मूल्य ।=) छः आने।

पोत की माला—अद्भुत और चातुर्यपूर्ण घटनाओं से संबंध रखनेवाली कहानियाँ। मूल्य ।।।) बारह आने।

कथा-कहानी की पुस्तकें

(दस वर्ष से अधिक अवस्था के बालकों के लिए)

ऐतिहासिक कहानियाँ—इस पुस्तक म भारतीय इतिहास से संबंध रखनेवाले वीरों तथा वीरांगनाओं की कहानियों के अतिरिक्त इतिहास पर स्थायी प्रभाव डालनेवाली घटनाओं का भी विवरण दिया गया है। मूल्य १।) सवा रुपया।

राज कहानी—राजपूत-काल के कुछ वीरों तथा वीरांगनाओं की जीवन-गाथाओं का संग्रह। मूल्य ।=) छः आने

कथा-सरित्सागर—नीति-शास्त्र-संबंधी संस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण। मूल्य २) दो रुपये।

अनजान देश में—(दो भागों में) इस बालको योगी उपन्यास में एक ऐसे साहसी युवक का चरित्र है, जिसने अनजान देश में भ्रमण करके तरह-तरह की विपत्तियों का सामना करते हुए बहुत-सी ज्ञातव्य बातों की जानकारी प्राप्त की। प्रत्येक भाग का मूल्य ।=) छः आने।

दो अवतार—इस पुस्तक में दो ऐसे साहसी बालकों की कहानी लिखी गई है, जो अपने भाग्य की परीक्षा के लिए घर से खाली हाथ निकले और अपनी अद्‌भुत करामातें दिखलाते हुए, राजसिंहासन के अधिकारी हो गये। मूल्य ।=) छः आने।

नाटच-सुधा (प्रथम और द्वितीय भाग) संस्कृत के प्रायः सभी प्रसिद्ध नाटकों के कथानक का संग्रह। मूल्य प्रत्येक भाग का ।।।) बारह आने।

सोने का झरना—बालोपयोगी सुन्दर कहानियों का संग्रह। मूल्य ।।।) बारह आने।

फूलवती—हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक श्रीयुत सुदर्शन जी का लिखा हुआ एक बालकोपयोगी उपन्यास, मूल्य ।।=) दस आने।

सोहराब-रुस्तम—सोहराब के जन्म से पहले ही उसका पिता सुप्रसिद्ध वीर रुस्तम विदेश चला गया था और पिता-पुत्र की भेंट हुई एक युद्ध में प्रतिद्वन्द्वी के रूप में और उसी युद्ध में उन दोनों की मृत्यु हुई। इस पुस्तक में वही करुण-कहानी है। मूल्य ।।=) दस आने।

फ़व्वारा—इस पुस्तक में बच्चों के उपयोग की कई सचित्र कहानियों का संग्रह किया गया है। पुस्तक रंग-बिरंगी स्याही से मोटे अक्षरों में छपी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

शंकर का दिग्विजय—यह शंकर नामक एक नटखट किन्तु साहसी और परिश्रमी बालक की सफलता की कहानी है। मूल्य ।) चार आने।

लाल बौना—बालकोपयोगी रोचक कहानियों का संग्रह। मूल्य ।) चार आने।

दो मित्र—इस पुस्तक में छोटी अवस्था के बालकों की रुचि के अनुकूल सात कहानियों का संग्रह किया गया है। मूल्य ।=) छः आने।

सचित्र बाल-आरव्योपन्यास—(चार भागों में) संसार की सब पुस्तकों से अधिक सुन्दर, मनमोहक, आश्चर्यमयी और चातुर्यपूर्ण कहानियाँ इस पुस्तक में हैं। इसे पढ़ने से दुनिया की सैर का-सा आनन्द मिलेगा। मूल्य प्रत्येक भाग का ।।=) दस आने।

अनोखी कहानियाँ—इस संग्रह में छोटी-बड़ी ग्यारह रोचक कहानियाँ सरल भाषा में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ सचित्र हैं। मूल्य ।) चार आने। इसका उर्दू संस्करण भी इसी मूल्य में मिलता है।

ईसप की सचित्र कहानियाँ—अँगरेजी की Æsop's-Fables नामक

बहुत ही लोकप्रिय पुस्तक का य
हिन्दी-अनुवाद है। इसकी कहानिय
अत्यन्त मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद हैं
मूल्य केवल २) दो रुपये।

शेख़चिल्ली की कहानियाँ—इन कह
नियों की प्रशंसा में इतना ही क
देना काफ़ी होगा कि ये शेख़चिल्ल
की कहे हुई हैं। मूल्य ।।=) दस आने

उपदेश तथा सदाचार-सम्बन्धी पुस्तकें

आत्मोद्धार—अमेरिका के हबशियों क
उत्थान करनेवाले महात्मा बुक
टी० वाशिंगटन के आत्मचरि
के आधार पर लिखित मनुष्य
हृदय में ओज, उत्साह और कर्तव
पथ की ओर तीव्रगति से अग्रस
होने की प्रेरणा उत्पन्न करनेवा
पुस्तक। मूल्य १।) सवा रुपया

आत्म-शिक्षण—सफलता की अ
समुचित रूप से अग्रसर होने
लिए जिन-जिन बातों का जान
मनुष्य के लिए आवश्यक है, विद्व
लेखकों—मिश्रबंधुओं—ने इस पुस्त
में उन सभी पर विशद रूप से प्रक
डाला है। मूल्य १।) सवा रुपय

बच्चों की बातें—इस पुस्तक में घ
स्वदेश-प्रेम, नीति, विद्याभ्यास त
अन्य उपयोगी विषयों का व
बहुत ही रोचक ढंग से किया ग
है। मूल्य ।) चार आने।

चरित्र-गठन—चरित्र-निर्माण के
जिन-जिन विषयों का ज्ञान
रूप से अपेक्षित है उन
इस पुस्तक में प्रकाश
है। मूल्य १) एक रुप

ृथ्वी की परिक्रमा—इस पुस्तक में पृथ्वी के भिन्न-भिन्न देशों के मुख्य-मुख्य स्थानों का रोचक वर्णन बड़ी ही मनोरंजक भाषा में लिखा गया है। आर्ट पेपर पर छपे हुए कई पूरे पृष्ठ के चित्र भी हैं। मूल्य ।=) छः आने।

ही-खाता—हिसाव-किताब रखने का नया से नया तरीक़ा। मूल्य ।≡) सात आने।

ल-कवितामाला—यह सरस्वती-संपादक पंडित देवीदत्त शुक्ल की

वालकोपयोगी कविताओं का संग्रह है। मूल्य ।=) छः आने।

ालकों के खेलने योग्य नाटक

लक अभिमन्यु—वाल्यकाल में ही अद्भुत वीरता प्रदर्शित करनेवाले अभिमन्यु का नाटक के रूप में लिखा गया चरित। मूल्य ।) चार आने।

कृष्ण और सुदामा—इस नाटक के द्वारा श्रीकृष्ण और सुदामा की अलौकिक मित्रता का चित्रण वड़े आकर्षक ढंग से किया गया है। मूल्य ।) चार आने।

लु दयानन्द—आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की जीवन-घटना के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। मूल्य ।) चार आने।

चा सेवक—सेवा धर्म का कितना महत्त्व है और सच्ची सेवा के लिए नुष्य का कितना आत्मत्याग करना हता है, इस बात पर इस नाटक विशेषरूप से प्रकाश डाला गया मूल्य ।) चार आने।

बालिकाओं के उपयोग की पुस्तकें

सावित्री—पतिव्रता-शिरोमणि सावित्री की दिव्य कथा इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढङ्ग से लिखी गई है। मूल्य ।) चार आने।

दमयन्ती—पतिव्रता-शिरोमणि महारानी दमयन्ती की उपदेशप्रद कथा रोचक भाषा में लिखी गई है। चार सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य ।) चार आने।

सती—इसमें दक्ष-सुता सती-शिरोमणि पार्वती के अवतार की कथा बड़ी ही सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-) पाँच आने।

बाला-बोधिनी—(पाँच भागों में) कन्याओं की प्रारम्भिक शिक्षा के लिए 'बाला-बोधिनी' बड़ी अच्छी पुस्तक है। इसमें गद्य तथा पद्य दोनों का समावेश है, जो बहुत ही उपयोगी और शिक्षाप्रद है। विषय और भाषा की गम्भीरता पहले भाग से पाँचवें भाग तक क्रमशः बढ़ती गई है। मूल्य पाँचों भागों का क्रमशः =), ।), ।-), ।=), ।।)।

बाला-पत्र-कौमुदी—इसमें भी चिट्ठी-पत्री लिखने के नियम और चिट्ठियों के नमूने आदि दिये गये हैं। मूल्य ।) चार आने।

सीता—लेखक, पंडित रामेश्वरप्रसाद पांडेय। सती साध्वी महारानी सीता जी का यह जीवन-चरित है। मूल्य ।) चार आने।

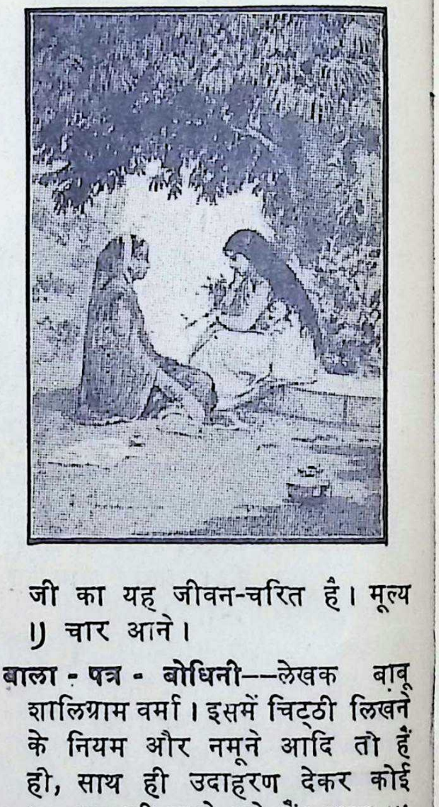

बाला-पत्र-बोधिनी—लेखक बाबू शालिग्राम वर्मा। इसमें चिट्ठी लिखने के नियम और नमूने आदि तो हैं ही, साथ ही उदाहरण देकर कोई ५० पत्र भी छापे गये हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

विचित्र-निबन्ध (प्रथम और द्वितीय भाग)—भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखी गई कितनी ही उपयोगी तथा ज्ञातव्य बातों से पूर्ण निबन्धों का संग्रह। साधारण पढ़े-लिखे भी इसे पढ़ तथा समझकर ज्ञान-वृद्धि कर सकते हैं। मूल्य प्रथम भाग का ।।) आठ आने, द्वितीय भाग का ।।-) नौ आने।

मनोरंजक कहानियाँ (प्रथम और द्वितीय भाग)—मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह। मूल्य प्रत्येक भाग का ।) चार आने।

देहाती बाज़ार का एक कोना

सम्पादक—**श्रीनाथसिंह**

वर्ष २६] १ ली फ़रवरी १९४२—माघ १९९८ [संख्या २

बढ़े चलो चढ़े चलो

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

बढ़े चलो चढ़े चलो।

नहीं किसी से हम डरें,
अनीति पर न पग धरें।
जो विघ्न आ के ही अड़ें,
तो प्राण होम हम लड़ें।
भरे उमंग अंग में।
बढ़े चलो चढ़े चलो॥

मार्ग है, तो फूल भी,
हमें मिलेंगे शूल भी।
अभी भले ही धूल ही,
कभी तो कीर्ति-कूल भी।
विजय-ध्वजा लिये सदा।
बढ़े चलो चढ़े चलो॥

न वीर कर्म छोड़ते,
न धीर धैर्य छोड़ते।
कभी न आन तोड़ते,
न पद कभी हैं मोड़ते।
विकास-मार्ग पर सदा।
बढ़े चलो चढ़े चलो॥

दुखी न हो अधीर मा!
न नेत्र हों सनीर मा!
विलम्ब अब नहीं है मा!
लिये हैं प्राण हाथ, मा!
महान् पुण्य पर्व है।
बढ़े चलो चढ़े चलो॥

हवाई हमले से डरे हुए एक इलाहाबादी की कहानी

भगदड़

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

पैदल घूमने की पुरानी आदत पड़ी है। न भी होती तो पेटरोल के काल की वजह से बनानी पड़ती। सरदी की वजह से मैं तेज़ क़दम बढ़ाये चला जाता था कि किसी की आवाज़ मेरे कान में पड़ी—'हेलो गेंदन'।

मैंने उधर देखा जिधर से ये शब्द आये थे। देखता हूँ कि मेरे कालेज के मित्र ईंधन रुई की दुलाई में लिपटे और कान तक कनटोप चढ़ाये अपने दफ़्तर में बैठे हैं। मैं भी उनकी दूकान पर रुक गया और बातचीत करने लगा।

मैंने कहा, "हेलो ईंधन! यार तुम्हारी कान लपेटने की आदत आज तक नहीं गई। सरदी दूर करनी है तो चलो मेरे साथ 'ब्रिस्कवौक' करो। कनटोप को चूल्हे में फेंक दो। क्या सुबह-सुबह सुस्त बैठे हो। मुझे देखो नहा-धोकर निकला हूँ।"

ईंधन ज़रा रूखी हँसी हँसकर बोला—"तभी तो नाक-कान नीले पड़े हैं, हाथ भी ओला हो रहे हैं। यार कुछ सुना!"

"क्या"?

"वोही एक परचा इलाहाबाद के कलक्टर साहब ने छापकर बाँटा है। जिसमें वे कहते हैं कि मौक़ा पा जाने पर दुश्मन तीन ही चार घण्टे के अन्दर हम पर बमवर्षा कर सकता है। भाई मैंने तो जब से पढ़ा मारे डर के जान निकली जाती है।"

मैंने कहा—"पागल हो गये हो। ऐसी बात मुँह से निकालते हो, कोई सुनेगा तो सीधे मलाका-जेल में चक्की पीसनी पड़ेगी।"

"नहीं मित्र, यह तो सरकारी परचे में छपा है। साहब कलक्टर के दस्तख़त हैं। वे ठीक न लिखेंगे तो कौन लिखेगा? देखोगे।"

"हाँ।"

ईंधन ने एक संदूक़चा खोला और मेरे हाथ में एक परचा दिया, जो हिन्दी में छपा था। मैंने उसे पढ़ा। उसमें ऐसे शब्द थे ज़रूर जिससे डरपोक आदमी को कुछ धक्का लगे मगर उससे बचने के उपाय बताये थे। मैंने कहा—"फिर डर की क्या बात है, इन बातों को याद रखो जो लिखी हैं। जान बच जावेगी, मगर दोस्त १,२०० मील बहुत होते हैं।"

ईंधन बोला—"मेरी तो जान निकली जाती है। जब से पढ़ा है तब से हर वक़्त मुझे हवाई जहाज़ की आवाज़ें सुनाई देती हैं। रात बुरी तरह कटी, कैसे भयानक स्वप्न देखता रहा।"

मैं बड़े ज़ोर से हँसा और पूछा—"क्या देखा?"

वह बोला—"मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैं रंगून में हूँ और जापानी हवाई जहाज़ों की बमवर्षा देख रहा हूँ। मैं बाहर ही खड़ा था जब उन्होंने मशीनगन चलाई और देखते ही देखते कितने आदमी मार गिराये। कुछ लोग भागे, उनमें मैं भी था। जापानी जहाज़ हमारा

पीछा कर रहे थे और हम सरपट भागे जा रहे थे। समुद्र बीच में था मगर इसपर भी वैसे ही भागे जैसे ज़मीन पर। कलकत्ता, पटना, और बनारस इत्यादि सब ही रास्ते में पड़े मगर वहाँ दम लेने की फ़ुरसत किसे थी। पैर जवाब दे रहे थे, साँस फूल रही थी, दिल इस ज़ोर से धड़क रहा था कि शायद रेल की घरघराहट भी उतना शब्द न करती हो। ऐसा मालूम हो रहा था कि मैं अब गिरा कि तब, मगर साथियों की हिम्मत देख मैं भी सरपट उड़ा जा रहा था और ये कम्बख़्त जापानी जहाज़ पीछा ही नहीं छोड़ते थे, हमारे सिर पर मानो सवार थे। आख़िर इलाहाबाद आ ही गया और मैं इस परचे के आदेशानुसार अपने घर में छिप रहा। यहाँ पहुँचकर बड़ा धड़ाका सुना और देखा कि म्योर कालेज का टावर गिर रहा है। तुम जानते हो मेरा घर सामने ही तो है। बाक़ी हिस्सा टावर का ज्यों ही गिरा मैं घबराकर उठ बैठा। मेरे घर में ऊपर पक्के छत के नीचे कपड़े का छत है, उसपर चूहे बड़ी ज़ोरों से दौड़ लगा रहे थे और छोटी-छोटी कंकड़ियाँ फटे छत से मेरे बिछौने पर गिर रही थीं।"

यह कहानी सुनाकर ईंधन ख़ुद भी हँस पड़ा।

मैंने कहा—"देखो शेक्सपीयर में हमने पढ़ा था कि नहीं कि डरपोक सौ मौतें मरता है और वीर एक ही दफ़ा।"

वरदान !

लेखक, "साहित्याचार्य—कविरत्न" श्री० सुन्दरलाल वर्मा "लाल," 'विशारद'
भूतपूर्व संपादक 'किशोर' और 'आलोक'।

(१)
नहीं माँगता तुमसे मैं प्रभु !
धन-दौलत या कुछ सन्मान !
नहीं माँगता राज-काज मैं—
दिल के हों पूरे अरमान !!

(२)
चाह नहीं जग की विभूति से
तीन लोक का पाऊँ मान!
चाह नहीं 'अमरत्वप्रेम' की—
अनगिनती होवें सन्तान !!

(३)
चाह यही है इस जीवन में —
कभी न हो मा का अपमान !
बस मेरा 'भारत' स्वतंत्र हो—
प्रभो ! यही दे दो 'वरदान' !!*

---

* लेखक के, 'नौनिहाल' शीर्षक शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले बालोपयोगी कविता-संग्रह से।

पहले और आज के युद्ध—अस्त्र-शस्त्र

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश', मिर्ज़ापुर

बालको ! आज का यह वैज्ञानिक युग है और हर एक काम में विज्ञान का हाथ है। इसकी सहायता से आज बड़े-बड़े असम्भव काम भी सम्भव हो गये हैं। यहाँ तक कि इसने अब ऐसे अस्त्र-शस्त्र बना डाले हैं जिनकी मदद से अब देश जीतना भी बहुत सरल कार्य हो गया है। कुछ ही वर्ष हुए इटली ने अबीसीनिया पर एक प्रकार की वैज्ञानिक (विषैली) गैस का प्रयोग कर, उसे जीतकर अपनी अमानुषिकता का परिचय दिया। लेकिन इससे यह न समझना चाहिए कि ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार अब ही हुआ। रामायण आदि पढ़ने से स्पष्ट जान पड़ता है कि पहले ऐसे-ऐसे वाण थे जो छोड़ते समय साँप, अग्निरूप इत्यादि होकर चलते थे और शत्रु को मार डालते थे। मेघनाद ने एक बार राम-लक्ष्मण को नागपाश वाणों से बाँध दिया था। राम ने रावण को मारने के लिए अग्निवाणों का प्रयोग किया था। रावण ने मायास्त्र चलाकर राम की सारी सेना को धोखे में डाल दिया था। इस अस्त्र के चलने से हज़ारों रावण पैदा हो गये। हर जगह रण-क्षेत्र में भूत, पिशाच, वैतालिनी इत्यादि पैदा हो गईं। तब रामचन्द्र जी ने एक वाण चलाकर उसकी सारी माया काट डाली थी। इसी तरह महाभारत में भी ऐसा ही वर्णन आता है जब कि राजा विराट की सेना पर अर्जुन ने सम्मोहन अस्त्र का प्रयोग कर उसे निद्रित कर दिया आदि-आदि। पर यह तो हुई पहले की बात। आज न तो ये मन्त्रोक्त

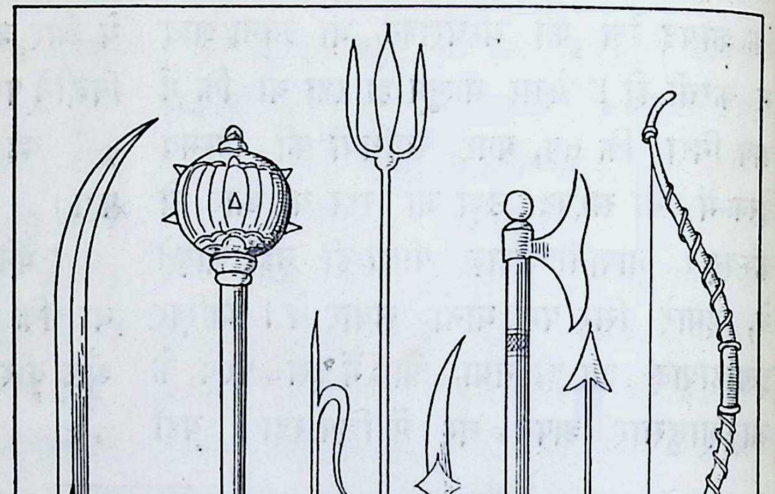

१—तलवार, २—गदा, ३—अंकुश, ४—त्रिशूल, ५—खड्ग, ६—फरसा, ७—वाण, ८—धनुष, ९—ढाल, १०—चक्र, ११—पाश।

अस्त्र-शस्त्र ही रहे और न इनके प्रयोग करनेवाले ही रहे। अब ये सब प्रायः लुप्त हो गये और अब वैज्ञानिक अस्त्र बने हैं। प्रस्तुत लेख में हम तुमको कुछ प्रमुख अस्त्र-शस्त्रों की जानकारी करायेंगे।

टैंक

वर्तमान युद्ध के क्षेत्र स्थल, जल तथा आकाश हैं। टैंक सड़क के अलावा टेढ़ी-मेढ़ी, उबड़-खाबड़ ज़मीन में बहुत मज़े से चल सकता है। इसकी चाल भी तेज़ होती है और इसका आविष्कार इँग्लैंडनिवासियों ने १९१६ में किया था। बड़े टैंक ६ मील प्रतिघंटे के हिसाब से चलते हैं और छोटे २० और ४०। इनके वज़नों के अनुसार इनपर भारी अथवा हलकी तोपें लगी रहती हैं।

पैराशूट

इसके द्वारा युद्धों में हवाई जहाज़ों से शत्रु-क्षेत्र में सैनिक उतारे जाते हैं। वायुयानों का शत्रु-स्थलों में उतरने से उनके प्रायः नष्ट हो जाने की सम्भावना रहती है। काफ़ी उँचाई से वायुयान सैनिकों को हवा में [illegible] देते हैं और वे छतरियों (पैराशूट) द्वारा धीरे-धीरे नीचे उतर आते हैं। पैराशूट एक प्रकार की छतरी का-सा होता है जिसके हर एक सिरे पर मज़बूत रस्सियाँ लगी रहती हैं। इन रस्सियों के सहारे मनुष्य बे-खटके आराम से उतर आता है। इसके द्वारा हमला भी होता है। आक्रमणकारी भी प्रायः उतरनेवाला होता है जिसके पास मशीनगन, साइकिल, दूरबीन, गैस मास्क, रेडियो सेट, खाई खोदने के लिए सामान इत्यादि बहुत-सा आवश्यक सामान रहता है जिससे वह हर एक परिस्थिति का सामना कर सकता है। ख़ासकर सैनिक ऐसे स्थान पर गिराये जाते हैं जो कि युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जैसे शत्रु का कारख़ाना, बिजलीघर, पुल, रेलवे व रेडियो स्टेशन आदि। ये सैनिक इन स्थानों को जाकर मशीनगनों इत्यादि से उनको नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। अब तो पैराशूट ऐसा बनाया गया है कि उससे उतरनेवाले को शायद ही कभी चोट आती हो।

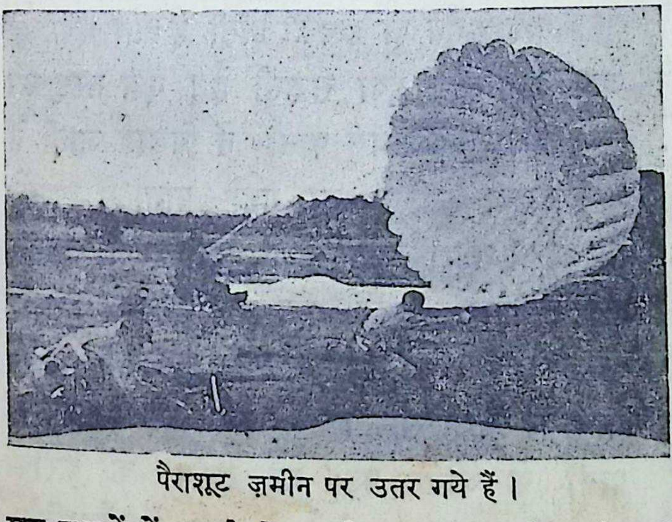

पैराशूट ज़मीन पर उतर गये हैं।

बम

यों तो देखने में यह सिगार की तरह हानिरहित-सा दीखता है पर यह जब किसी वायुयान से गिराया जाता है तो यह पलक मारते ही उस स्थान की ऊँची-ऊँची इमारतों व कारख़ानों इत्यादि को नष्ट कर देता है। कुछ आग लगानेवाले बम भी होते हैं जिनका वज़न एक सेर होता है। हवाई जहाज़ हर तरह के नाशक बमों को लादकर ले जाता है। कुछ बमों का वज़न प्रायः २५ सेर से लेकर २५

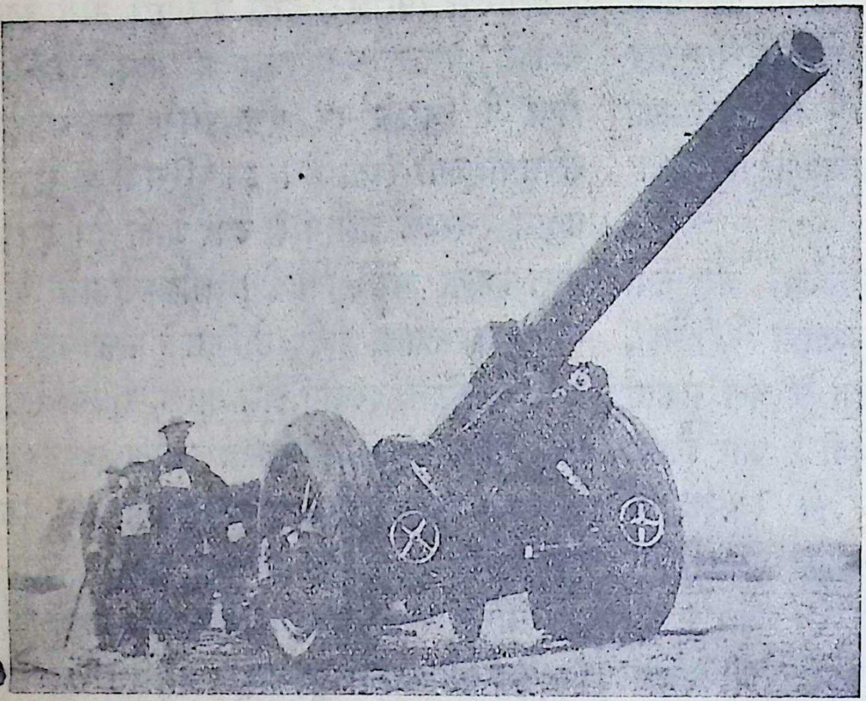

वायुयाननाशक एक तोप।

मन तक होता है व लम्बाई २ फ़ीट से लेकर १० फीट तक होती है। बम ज़मीन में भी बहुत गहरे घुसते हैं। कुछ बम ऐसे होते हैं जिनमें विषैली गैस भरी होती है और इनका इस्तेमाल लोगों में हाहाकार मचाने के लिए ही होता है।

विमानवेधी तोप

जब आक्रमणकारी हवाई जहाज़ बने तो उनकी विनाशक तोपें भी बन गईं। ये तोपें रात ें तेज़ सर्चलाइट की बैटरी से उड़ते हुए वायुानों को ढूँढ़ती हैं और उनमें निशाना लगाकर न्हें पृथ्वी पर पटक देती हैं और इस प्रकार ायुयान नष्ट हो जाता है। ये यन्त्र यह सब ी बतला देते हैं कि शत्रु का वायुयान किस दिशा आ रहा है, कितनी उँचाई पर है, कितनी दूर है। वायुयान जब नीचे उतर आते हैं तो तोपें इनको गिराने में 'असमर्थ होती हैं। हवाई आक्रमण को रोकने के लिए और भी विविध उपायें से काम लिये जाते हैं। ज़मीन से ग़ुब्बारों की एक साँकल भी उड़ाई जाती है। जब हवाई जहाज़ के पंख इनमें फँस जाते हैं तो वे नष्ट हो जाते हैं। एक ग़ुब्बारे में बम रख देते हैं और जब वायुयान ग़ुब्बारे के सम्पर्क में आता है तो बम फूटता है और हवाई जहाज़ नष्ट हो जाता है।

चुम्बकीय सुरंग या माइन

यह बहुत ही हलकी होती है और एक बड़े जहाज़ को शीघ्र डुबा सकती है। एक तरह की चुम्बकीय सुरंगें उथले पानी में बिछाई जाती हैं और दूसरी ऐसी हैं जो गहरे पानी में डालते ही काफ़ी गहराई तक चली जाती हैं। इनका पता लगाना कठिन है कि कहाँ छिपी हैं। एक हवाई जहाज़ एक बार में १५ चुम्बकीय सुरंगें पानी में बिछा सकता है। जब कोई भी जहाज़ पानी के भीतर पड़ी हुई सुरंग के क़रीब आध मील पास आता है तो सुरंग में वैज्ञानिक प्रतिक्रिया शुरू होती है। ज्यों-ज्यों जहाज़ उनके पास आता है त्यों-त्यों सुरंग उसकी ओर

खिंचती जाती है और जहाज़ की दशा में तिरछी होती जाती है। जहाँ मुड़ते-मुड़ते उसने ६५° का कोण बनाया कि उसकी वायु की नली खुल जाती है और वह ऊपर को उठने लगती हैं। उठते-उठते पानी की सतह पर आने के पहले एक ज़बर्दस्त धमाका होता है और जहाज़ नष्ट हो जाता है।

इसी तरह एक जहाज़ को डुबाने के लिए ३-४ टारपीडो काफ़ी हैं। टारपीडो एक तरह का बम है जो तीन मील की दूरी तक असर करता है और इतनी दूर जाने में इसे सिर्फ़ ५ मिनट लगते हैं। ये टारपीडो पनडुब्बों-द्वारा चलाये जाते हैं। यह सीधा, तिरछा और पानी की सतह के ऊपर-नीचे भी चलता है। यह जहाज़ों के लिए एक अत्यन्त घातक वस्तु है।

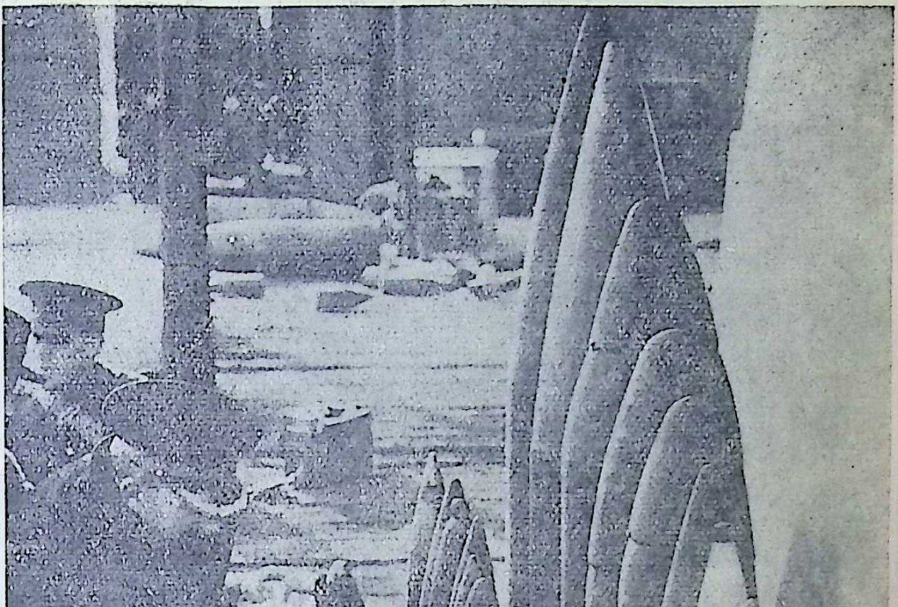

वर्तमान युद्ध में काम आनेवाले गोले

पनडुब्बे

आधुनिक महासमर में जहाज़ों को डुबाने का सबसे भयंकर कार्य पनडुब्बे कर रहे हैं। ये जहाज़ बिजली की मोटर से चलते हैं। इसमें एक ऐसा यन्त्र लगा रहता है जिससे पानी के अन्दर ही रास्ता देखा जा सकता है। इसमे एक ऐसी टंकी रहती है जिसमें कम या अधिक पानी भरने से वह कम या अधिक गहराई मे जा सकती है। इसमें प्राणदाता वायु भी भरी

होती है जिससे इसमें रहनेवाले लोग साँस लेते हैं। इसमें बेतार का यन्त्र रहता है जिससे ख़बरें भी भेजी जा सकती हैं। यह इच्छा व आवश्यकतानुसार पानी की सतह के ऊपर और नीचे चलता है और जैसा कि टारपीडो के बयान में कहा जा चुका है इसका सबसे अच्छा शस्त्र टारपीडो है।

वायुयान

जाड़े की जड़ता

लेखक, श्रीयुत बाबूराम द्विवेदी 'वारिद', कानपुर

जाड़े के मारे भैया अब तो नाक में दम आया।

हम थर थर थर डोलें,
और दाँत कटाकट बोलें।
पहने हैं दस-दस कपड़े,
पर फिर भी जाते अँकड़े॥

आगी के पास बैठने पर भी चैन नहीं पाया।
जाड़े के मारे……

कम्बल, लिहाफ़ अरु टोपे,
सर से पाँवों तक तोपे।
बग़लों में हाथ दबाये,
फिरते हैं जान लुकाये॥

भर-भर सिसकी दुख जाड़े का है आपस में रोया।
जाड़े के मारे……

यह काल है जाड़ा बेशक,
दिल होता डर से धक्-धक्।
इससे रक्षा प्रभु कीजै,
"वारिद" बिनती सुन लीजै॥

निर्धन भारत को जाड़ा है यह नेक नहीं भाया।
जाड़े के मारे भैया अब तो नाक में दम आया।

* * *

पाँच भाई

लेखिका, तारा बहन मोड़क—अनुवादक, श्रीयुत काशीनाथ त्रिवेदी

चीन की यह कहानी है।

पाँच भाई थे। चीन में रहते थे। पाँचों एक शकल-सूरत के। उनमें एक का नाम था, चिंगचैंग, दूसरे का पिंगपैंग, तीसरे का टिंगटैंग, चौथे का डिंगडैंग और पाँचवें का शिंगशैंग।

पाँचों बड़े होशियार थे।

चिंगचैंग समुद्र को पी सकता था।

पिंगपैंग अपने पैरों की लम्बाई बढ़ा सकता था।

टिंगटैंग गरदन पर कड़ी से कड़ी चोट झेल सकता था।

डिंगडैंग आग में कूदकर भी जलता न था।

और शिंगशैंग साँस रोकना जानता था।

सभी होशियार। सभी एक-सी सूरत-शकल के।

समुद्र-किनारे एक झोंपड़ी थी। पाँचों भाई उसी में रहते थे। चिंगचैंग रोज़ मछली पकड़कर लाता। सब हिल-मिलकर खाते और मिल-जुलकर अपना काम-धन्धा करते। सभी सुखी थे।

एक दिन की बात है। चिंगचैंग समुद्र में मछली पकड़ने गया। वहाँ उसे एक लड़का मिला। लड़के ने कहा—

"चिंगचैंग, मुझे कुछ काम दो।"

"मेरी सुनो तो मैं तुम्हें काम दूँ।"

"ज़रूर सुनूँगा।"

"देखो, भूलना नहीं; जो मैं कहूँ, वही करना; नहीं, तुम्हारी तुम जानो। देखो, मैं इस समुद्र को अभी पी जाता हूँ। तुम इसके सूखते ही अच्छी-अच्छी मछलियाँ झटपट पकड़ लेना और जैसे ही मैं इशारा करूँ, दौड़कर वापस आ जाना। समझे?"

"जी हाँ, ख़ूब समझा।"

चिंगचैंग समुद्र पीने लगा। वह पीता जाता था और पेट उसका फूलता जाता था; फूलते-फूलते पेट का पहाड़ बन गया और पहाड़ का भारी नक्कारा! उधर मुँह जो फूला, सो एक बड़ी-सी पखाल बनकर रह गया।

लड़के ने देखा, समुद्र सूखा पड़ा है। मछलियाँ तो वहाँ थी हीं। लेकिन मछलियों के अलावा शंख, सीप, मोती, मूँगा वग़ैरह अनगिनत चीज़ें वहाँ पड़ी थीं। लड़का फुर्ती के साथ उन्हें बीनने लगा।

इधर चिंगचैंग ने बहुतेरे इशारे किये, लेकिन लड़का लौटने का नाम न लेता था। व बराबर आगे बढ़ता और बीनता गया।

आख़िर चिंगचैंग थका। पानी उसके पे में टिक न सका। उसने ज़ोरों का कुल्ला किय और समुद्र फिर भर गया। लड़का लौट न सका—वह डूब गया।

दोपहर हुई। लड़के का बाप उसे ढूँढ़ने निकला। उसे पता चला कि लड़का मर गय है। बाप तिलमिला उठा—उसके दुःख का पा

न रहा। वह बोला—"चिंगचैंग, चल राजा के पास। तुझे फाँसी दिलाऊँगा।"

वह चिंगचैंग को राजा के पास ले गया।

"महाराज, इस चिंगचैंग ने मेरे लड़के को समुद्र में डुबो दिया।"

"सिपाही, जाओ चिंगचैंग को समुद्र में डुबो आओ।"

चिंगचैंग बोला—"महाराज, मरने से पहले मुझे अपने घर हो आने दीजिए। मुझे अपने भाइयों से एक बार मिल लेने दीजिए।"

राजा—"अच्छा, जाओ; लेकिन जल्दी वापस आ जाना।"

× × ×

चिंगचैंग अपने घर गया और जाकर पिंगपैंग को राजदरबार में भेज दिया। सिपाही पिंगपैंग को डोंगी में बैठाकर बीच समुद्र में ले चले। दूर जाकर एक जगह बहुत गहरे में उन्होंने उसे ढकेल दिया। समुद्र का पानी बढ़ने लगा—बढ़ते हुए ज्वार के साथ पानी ऊपर चढ़ने लगा। सिपाही देखने लगे कि चिंगचैंग मरा या नहीं!

लेकिन अरे, यह उन्होंने क्या देखा?

देखा कि चिंगचैंग पानी में खड़ा है।

पानी और ऊपर चढ़ा; फिर भी चिंगचैंग अपनी जगह खड़ा है।

पानी बहुत ही ऊपर चढ़ गया; मगर चिंगचैंग खड़ा का खड़ा नज़र आया।

सिपाही डरे। वे दौड़े राजा के पास गये। बोले—

"महाराज, चिंगचैंग अपनी लम्बी-लम्बी टाँगे लिये समुद्र में खड़ा है। वह तो डूबता ही नहीं।"

राजा को अचम्भा हुआ। वह ख़ुद देखने आया। देखकर दाँतों अँगुली दबा ली उसने। बोला—

"सिपाही, जाओ, उसे बाहर लाओ। अबकी उसकी गरदन पर हथौड़े चलाओ और गरदन तोड़ डालो।"

सिपाही पिंगपैंग को लेकर बाहर आये और गरदन पर हथौड़ा चलाने ले चले।

पिंगपैंग ने कहा—"महाराज, मुझे एक बार अपने घर हो आने दीजिए।"

"जा, जल्दी वापस आ जाना।"

× × ×

पिंगपैंग घर आया और टिंगटैंग को भेज दिया।

शहर के सैकड़ों लोग तमाशा देखने को आ जुटे।

सिपाही दो बड़े-बड़े हथौड़े लेकर आये।

टिंगटैंग गरदन झुकाये खड़ा रहा।

घन-घन, घन-घन!

हथौड़े पर हथौड़े पड़ने लगे।

चोट पर चोट लगने लगी।

टिंगटैंग खड़ा था—गरदन उसकी टूटती ही न थी।

सिपाही थक गये। उन्हें पसीना-पसीना हो आया। हाथ दुखने लगे। मगर गरदन न टूटी, सो न टूटी।

सिपाही राजा के पास दौड़े गये।

राजा ख़ुद देखने आया। सिपाहियों ने फिर हथौड़े तौले। बड़े से बड़े हथौड़े; कड़ी से कड़ी चोट। मगर गरदन पर कोई असर नहीं।

राजा ने कहा—"जाओ, इसे ले जाओ और आग में झोंक दो। मरेगा क्यों नहीं! कोई बात है?"

टिंगटैंग बोला—"महाराज, थोड़ी दया कीजिए—इजाज़त दीजिए कि मैं एक बार अपने घर जा सकूँ और वापस आ सकूँ।"

राजा—"जाओ, लेकिन जल्दी लौट आना।"

× × ×

टिंगटैंग ने घर जाकर डिंगडैंग को भेज दिया।

आज दल के दल लोग तमाशा देखने आये थे।

सिपाहियों ने एक बड़ा-सा लकड़ी का ढेर रचा; चारों तरफ़ उपले जमा दिये, कोयलों का भी ख़ूब उपयोग किया और ऊपर से कनस्तर भर किरासिन उँडेल दिया।

डिंगडैंग बीचोबीच खड़ा है। चारों ओर से भक-भक-भक आग भभकने लगी। धू-धू-धू चिता-सी धधक उठी।

लेकिन डिंगडैंग खड़ा है—मस्त खड़ा है! और कहता क्या है?

"अरे लाओ, और लकड़ी लाओ! थोड़े कोयले और डालो!! जल्दी करो!!! मुझे ज़ोरों की ठण्ढ लग रही है। अच्छी आग जलाओ, अरे, झटपट जलाओ।"

सिपाहियों के पास लकड़ी न रही, उपले न रहे, कोयले न रहे, तेल न रहा। जो कुछ था, जितना था, सब ख़तम हो गया!

सिपाही राजा के पास पहुँचे। बोले—

"महाराज, वह चिंगचैंग तो जलता भी नहीं। हम अपने पास का सारा ईंधन जला चुके।"

राजा ने जाकर देखा। डिंगडैंग आग की लपलपाती लपटों के बीच मस्त खड़ा था। वह चिल्ला-चिल्लाकर कहता था—"अरे मैं मारे सर्दी के ठिठुर रहा हूँ। और आग जलाओ; और ईंधन लाओ।"

राजा को ग़ुस्सा आगया। वह बोला—

"जाओ, इसे ले जाओ और एक सन्दूक़ में बन्द कर दो। अपने आप दम घुटकर मर जायगा।"

सिपाहियों ने डिंगडैंग को आग से बाहर निकाला।

उसने कहा—"महाराज, मुझे एक बार घर जाने की इजाज़त मिलनी चाहिए।"

राजा बोला—"जाओ, मगर फ़ौरन वापस आना।

× × ×

डिंगडैंग आया। शिंगशैंग गया।

सिपाहियों ने लकड़ी की एक छोटी-सी सन्दूक़ बनवाई। अन्दर उसे टिन से मढ़ दिया। हवा के सब रास्ते बंद कर दिये।

शिंगशैंग सन्दूक़ में उतारा गया। उसने पैर पेट से चिपका लिये; हाथों से पैर बाँध लिये

और सिकुड़कर बैठ गया। दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। ऊपर से मज़बूत कीलें ठोंक दी गईं। टिन जड़ दिया गया। हवा का नाम न रहने दिया।

सब कहने लगे—"अब चिंगचैंग नहीं बचेगा। सबेरा होते-होते मर जायगा बेचारा!"

दूसरे दिन सन्दूक़ खोली गई। राजा ने अपने सामने खुलवाई। ठट्ठ के ठट्ठ लोग तमाशा देखने आये थे।

शिंगशैंग भला-चंगा बाहर निकला। उसके चेहरे पर घबराहट का एक भी चिह्न न था।

सब दाँतों अँगुली दबाकर उसकी ओर देखने लगे!

राजा ने कहा—"चिंगचैंग, तुम बड़े बहादुर हो। जाओ, मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ। आज से तुम मेरे सेनापति हुए। तुम इस राज्य की रक्षा करो।"

शिंगशैंग बोला—"महाराज, क्या मैं इसे अभयदान समझूँ? सचमुच आप मुझे छोड़ चुके हैं? यह हुक्म बदलेगा तो नहीं?"

"नहीं, हरगिज़ नहीं। मैंने तुम्हें निश्चय ही छोड़ दिया है। अब तुम मेरे सेनापति हो।"

"महाराज, गुस्ताखी माफ़ हो! मैं अकेला नहीं हूँ। हम पाँच हैं और पाँचों सगे भाई हैं। पाँचों पराक्रमी हैं। आप हम पाँचों को अपनी फ़ौज में भर्ती कर लीजिए।"

पाँचों फ़ौज में भर्ती कर लिये गये।

पाँचों फ़ौजी अफ़सर बना दिये गये।

लोग बहुत ख़ुश हुए। राजा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

फूल हमेशा मुस्काता

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी

चाहे हवा बहे मतवाली,
फूल हमेशा मुस्काता।
चाहे हवा बहे लूवाली,
फूल हमेशा मुस्काता।
बरसे प्यारी ओस मनोहर,
फूल हमेशा मुस्काता।
चाहे ओले पड़ें शीश पर,
फूल हमेशा मुस्काता।
काँटों की नोकों को सहकर,
फूल हमेशा मुस्काता।
पत्ती की गोदी में रहकर,
फूल हमेशा मुस्काता।
ऊपर रह डाली में खिलकर,
फूल हमेशा मुस्काता।
नीचे टपके धूल में मिलकर,
फूल हमेशा मुस्काता।
रोना नहीं फूल को आता,
फूल हमेशा मुस्काता।
इसी लिए वह सबको भाता,
फूल हमेशा मुस्काता।

ऐण्टईटर

लेखक, श्रीयुत प्रह्लादनारायण रायज़ादा, एम० ए०, बी० टी०

दक्षिण-अमरीका में ऐण्टईटर नाम का एक विचित्र पशु होता है जो सदैव चींटियों को अपनी लम्बी ज़बान से चाटता रहता है। अँगरेज़ी में चींटी को ऐण्ट कहते हैं। ईटर शब्द भी अँगरेज़ी भाषा का है जिसका अर्थ है खानेवाला। चींटियों के खाने के कारण ही इस पशु का नाम ऐण्टईटर रक्खा गया। यह पशु दीमक को भी बड़े चाव से खाता है। ऐण्टईटर दो जाति के होते हैं। इनमें सबसे बड़ी जाति के पशु को ऐण्टबियर कहते हैं।

एक बार चिपेण्डेल नामक एक व्यक्ति ने ऐण्टईटर के एक ज़िन्दे बच्चे को पकड़ना चाहा। इस कार्य में उसने दक्षिण-अमरीका के मूल निवासियों की सहायता ली। एक नौजवान मूल निवासी ने प्रतिज्ञा की कि वह उन्हें एक बच्चा पकड़कर ला देगा।

एक दिन उस मूल निवासी ने एक मादा ऐण्टईटर की ओर अपना लासो फेंका। लासो इन लोगों का एक विचित्र शस्त्र होता है। यह एक प्रकार की रस्सी होती है जो शिकार के लगते ही चारों ओर लिपट जाती है और उसका छुटकारा होना बड़ा मुश्किल हो जाता है। जब ऐण्टईटर लासो-द्वारा जकड़ ली गई तो मूल निवासी ने चिपेण्डेल साहब से आकर कहा। साहब वहाँ पर पहुँचे। उन्होंने लासो से जकड़ी हुई मादा ऐण्टईटर को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए देखा। ऐण्टईटर का बच्चा उसकी पीठ पर चिपका हुआ था। एक मूल निवासी ने अपना अस्त्र फेंककर मारा तो वह गिर पड़ी। अब तो लोगों ने और बहुत-से अस्त्र उसकी ओर फेंककर मारे जिसके कारण वह अचेत-सी हो गई। अब एक साहसी मूल निवासी ने उसका बच्चा छीन लिया।

ऐण्टईटर का बच्चा इस प्रकार छीन लिया गया परन्तु वह बेचारी वहीं पड़ी थी। उसके पैर लासो से जकड़े हुए थे। किसी को उसके पास जाकर उसे बंधन से मुक्त करने का साहस नहीं होता था। निदान एक मूल निवासी ने एक लम्बे बाँस में एक छुरी बाँधी और उसको लेकर उस पेड़ पर चढ़ गया जिसके नीचे ऐण्टईटर पड़ी हुई थी। मनुष्य पेड़ पर चढ़ गया और ऊपर पेड़ पर बैठे-बैठे एक बाँस में बँधी हुई छुरी से लासो काट दिया। ज्यों ही लासो कटा, ऐण्टईटर जंगल की ओर बड़ी तेज़ी से भाग गई।

अब वह ऐण्टईटर का बच्चा चिपेण्डेल साहब ने अपने पास रख लिया। वे उसे दूध पिलाते थे परन्तु वह सदैव ज़मीन खोदकर चींटी व दीमक की तलाश किया करता था। कुछ समय पश्चात् साहब ने उसे लन्दन भेज दिया और वह वहाँ जानवरों की नुमाइश में रक्खा गया।

एक रूमानियन कहानी

मृत्यु की पुकार

लेखक, श्रीयुत विद्यार्थी सूर्यदेव वृ० कक्कड़

एक आदमी था। उसकी यह इच्छा थी कि वह बड़ा पैसेदार बने। रात-दिन वह इसी चिन्ता में रहा करता था। इसी चिन्ता में उसको न तो खाना अच्छा लगता था और न रात को नींद ही आती थी। वह यह समझता था कि संसार का सारा ऐश-आराम इसी पैसे में मौजूद है। उसकी यह प्रबल इच्छा आगे जाके सफल हुई और वह एक बड़ा भारी धनवान् बन गया। उसके पास अपार धन हो गया।

अब थोड़े दिन के बाद उसको दूसरी चिन्ता होने लगी कि मैं मर जाऊँगा तो यह सारा धन क्या होगा ? और सोचने लगा कि यह महल के समान मेरे मकान, स्वर्ग में भी न पाये जा सकेंगे, ऐसे बग़ीचे और इतना अपार धन मृत्यु के बाद मुझे यहीं छोड़ जाना पड़ेगा ? इसी चिन्ता में उसका सारा शरीर गलने लगा। वह सोचने लगा कि मैं ऐसे देश में जाऊँ जहाँ पर किसी आदमी की मृत्यु न होती हो। बस ऐसे देश की खोज में वह निकल पड़ा और अपना सारा धन अपनी स्त्री और नौकरों को सौंप गया।

उसने बहुत-से देश देखे लेकिन सभी जगह यह सुना कि यहाँ पर आदमी की मृत्यु होती है। पर उसको ऐसे देश में जाना था जहाँ पर कि किसी आदमी की मृत्यु न होती हो। अंत में वह एक ऐसे देश में पहुँचा जहाँ पर पूछने से मालूम हुआ कि "यहाँ पर कोई आदमी मरता नहीं है लेकिन जब आदमी के जीवन का अंतिम समय आता है तो उसको एक विचित्र प्रकार की आवाज़ सुनाई देती है। वह आदमी आवाज़ सुनते ही फ़ौरन उसके पीछे-पीछे जाता है। फिर वह बहुत कोशिश करने पर भी यहाँ ठहर नहीं सकता और जब जाता है तब वह फिर लौटकर नहीं आता।"

सेठ ने सोचा कि यहाँ के लोग बड़े मूर्ख हैं, क्योंकि ये लोग आवाज़ सुनकर उसके पीछे क्यों जाते हैं ? जब इस देश में किसी की मृत्यु नहीं होती, तब तो वे लोग अपने आप मरने को जाते हैं। मैं उन सब लोगों को समझा दूँगा कि तुमको आवाज़ सुनाई दे तो तुम उसके पीछे-पीछे मत जाओ।

सेठ अपने देश को लौटा और अपने बच्चे और स्त्री के साथ उस विचित्र देश में आया जहाँ किसी की मृत्यु न होती थी। वहाँ आकर सेठ अपने दिन सुख से बिताने लगा। उसने अपनी स्त्री से कहा—"तुम विचित्र प्रकार की कोई आवाज़ सुनो तो उसके पीछे-पीछे मत जाना और उसकी ओर ध्यान ही न देना।"

एक रोज़ सेठ अपनी स्त्री के साथ भोजन करके बैठा था और बातें कर रहा था कि उसकी स्त्री ने एक आवाज़ सुनी। वह आवाज़ की ओर देखने लगी। थोड़ी देर के बाद वह स्त्री

चिल्लाकर बोली— "मैं आती हूँ।" ऐसा कहकर वह स्त्री वह आवाज़ जिस ओर से आती थी, उस ओर चल दी। उसका स्वामी मतलब समझ गया। उसने अपनी स्त्री का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया जिससे वह कहीं भाग न जाय और कहा—"तुम जान-बूझकर पागल बनती हो। वह तुमको भले ही बुलावे लेकिन तुम मत जाओ।" ऐसा कहकर सेठ ने अपने घर के किवाड़ और खिड़कियाँ बंद कर दीं, ताले लगा दिये और उनकी चाभी अपने जेब में रख ली। तब स्त्री ने कहा कि "तुम्हारी इच्छा है कि मैं न जाऊँ। अच्छा, मैं नहीं जाऊँगी। अब तुम सब किवाड़ खोल दो।" सेठ ने सब किवाड़ खोल दिये और वह समझने लगा कि मैंने मृत्यु की आवाज़ को वापस भेज दिया। अभी सेठ यह सोच ही रहा था कि उसकी स्त्री एकदम घर से निकल के उस आवाज़ की ओर चल पड़ी और सेठ उसके पीछे दौड़ा। जब वह थक गया तो वापस लौट गया और बहुत ही पछताने लगा। सेठ ने मन ही मन कहा कि अच्छा बच्चू जी, तुम हमको लेने आना तब तुमको मालूम होगा कि यह बंदा दूसरा कोई है।

थोड़े दिन बाद की बात है। एक दिन सेठ हजामत बनवाने बैठा था। उसने अचानक एक विचित्र आवाज़ सुनी और उसे सुनकर कहने लगा कि "तू यहाँ से चली जा। तेरे जैसे बहुत देखे हैं।" थोड़ी देर बाद उसने फिर आवाज़ सुनी। अब तो वह बहुत ही ग़ुस्से में हो गया और नाई के हाथ में से अस्तुरा लेकर उसके पीछे दौड़ा। नाई अचंभे में पड़ गया और वह भी उसके पीछे-पीछे जाने लगा। वह सेठ तो पागल की तरह कुछ न कुछ बकता जाता था। उसके पीछे-पीछे नाई भी चला जा रहा था। इतने में सेठ को ठोकर लगी और वह गिर गया। नाई ने देखा तो वहाँ पर एक बड़ा भारी गढ़ा था। उसके अंदर इतना अँधेरा था कि कुछ भी नहीं दिखाई देता था। नाई गाँव को वापस लौट गया और उसने गाँव के सब लोगों से कहा कि जब मृत्यु की आवाज़ आती है, तो सब आदमी वहाँ पर जाते हैं। यह सुनकर गाँववाले वह जगह देखने गये किन्तु वहाँ पर उन्हें कोई गढ़ा न दिखाई दिया और सब लोग गाँव को वापस लौट गये।

मेरी कश्मीर-यात्रा

लेखिका, सौ० सुश्री शशिकलादेवी

बहुत दिनों से मेरी इच्छा कश्मीर जाने की थी। अगर मैं कहीं इस सुन्दर देश के सम्बन्ध में किताब पढ़ती या सुनती तो मेरा जी ललचा जाता। मेरे क्लास की काफ़ी लड़कियाँ वहाँ हो आई थीं। और कहती थीं कश्मीर स्वर्ग है। एक समय मैंने अपने पिता जी (पंडित दयाशंकर दुबे) से कश्मीर चलने के लिए कहा। उन्होंने उत्तर दिया 'मैं भी कश्मीर जाने को उत्सुक हूँ, सितम्बर में चलने का प्रयत्न करूँगा।'

दिन गुज़रने लगे। सितम्बर का माह आगया। संयोगवश पिता जी को युनिवर्सिटी से १४ लड़कों के साथ कश्मीर जाने की इजाज़त मिल गई। हम लोगों को भी जाने का अवसर मिल गया। पिता जी ने यहाँ से जम्मू तक का कनशेशन टिकट सबों का बनवा लिया। हमारे साथ कुल १४ लड़के गये थे जिसमें ९ एम० ए० द्वितीय वर्ष, ४ एम० ए० प्रथम वर्ष, १ बी० ए० द्वितीय वर्ष का, हम ४ भाई-बहन, पिता जी और १ नौकर था। हम लोग प्रयाग से ता० १३ सितम्बर को सुबह ८½ बजे पंजाब मेल से रवाना हुए। रेलगाड़ी पर मेरे मन में कई कल्पनायें उठा करती थीं। वे कल्पनायें कितनी सुखद थीं। वहाँ के लता-वितानों से सुशोभित, कुसमावली से सुरभित, नयनाभिराम वृक्ष-समूहों से आच्छादित, हिमगिरि श्रेणियों से वेष्टित हरितवसना वसुन्धरा की कल्पना मन में आती थी। यह सोचते-सोचते प्रातःकाल ६ बजे हम लोग अमृतसर पहुँच गये। वहाँ हम लोग स्टेशन के पास की धर्मशाला में ठहरे। वहाँ से हम लोग अमृतसर तालाब में नहाने गये और स्वर्णमन्दिर देखा। यह बहुत सुन्दर स्थान है और सिक्खों ने बनवाया है। मन्दिर पर सोने के पत्तरों में कारीगरी की गई है। थोड़ी दूर जाने पर जलियाँवाला बाग़ देखा जहाँ सैकड़ों भारतवासियों ने अपना बलिदान कर दिया था। उसके बाद हमें श्री लक्ष्मीनारायण-मन्दिर मिला। वहाँ से हम लोग क़रीब १ बजे स्यालकोट पैसेञ्जर से रवाना हुए और स्यालकोट से गाड़ी बदलकर सायंकाल ८ बजे जम्मू (तवी) पहुँचे। वहाँ हम लोग ब्राह्मण-सभा-भवन में ठहरे, ता० १५ को मात्रनवमी थी। उस दिन हम लोग वहाँ के मन्दिर देखने गये। वहाँ बनवीरेश्वर महादेव के मन्दिर में ११ स्फटिक मणि के महादेव और सादे तो सवालक्ष हैं। थोड़ी दूर जाने पर हमें रघुनाथ जी का मन्दिर मिला। वहाँ से क़रीब १ बजे हम लोग कार पर रवाना हुए।

दूसरे दिन ता० १६ को बनिहाल पहुँचे। वहाँ थोड़ी देर रहकर रवाना हुए। कार में जाते समय पहाड़ के ऊपर एक बोगदा मिला जो समुद्र की सतह से ७,९२० फ़ीट ऊँचा और ६६० फ़ीट लम्बा था। बनिहाल के बाद रास्ते में हमें वेरीनाग मिला उसमें एक कुण्ड है जिसमें से झेलम नदी निकली है। यह स्थान बड़ा ही चित्ताकर्षक है। जम्मू से २०५ मील चलकर हम लोग श्रीनगर पहुँचे। वहाँ हम लोग मेजेस्ट्रिक होटल में ठहरे। ता० १७ को हम लोग शंकरा-

नंगा पर्वत का सुन्दर दृश्य

चार्य की पहाड़ी पर गये। पहाड़ी पर शंकर जी की मूर्ति है और सारा श्रीनगर वहाँ से दीख पड़ता है। यह शहर बहुत गन्दा है, मकान भी छोटे-छोटे लकड़ी के हैं। यहाँ म्युनिसिपलटी भी है फिर भी न जाने ऐसी क्यों हालत है। पाँच-सात दूकानों के बाद एक दूकान अवश्य मांस की दीख पड़ती है। यह दृश्य देखकर निरामिषहारियों की तो जान आफ़त में आ जाती है। जहाँ ९० फ़ी सदी मुसलमान और ९५ फ़ी सदी मांसाहारी हैं, कहीं भी फल की दूकान पर जाइए अंडों की टोकनी अवश्य रक्खी मिलेगी। शहर के भीतरी स्थान में उस गन्दगी का सामना करना पड़ता है जो शहर के कोने-कोने में है। शहर के मध्यभाग में राजमहल अवश्य आकर्षक है। वहाँ भी झेलम में होकर जाना पड़ता है। झेलम-तट पर शहर के ऊपर की ओर लाल-मंडी नामक राज्य की ओर से बने हुए श्री प्रताप म्यूज़ियम और पुस्तकालय हैं। हम दूसरे दिन डल झील देखने गये। हम लोगों ने शिकारा किया। शिकारा पानी को चीरता हुआ आगे को बढ़ा। झेलम से डल तक एक नहर निकाली गई है जिसके दोनों ओर शिकारा और हाउस-बोट खड़े रहते हैं। इस नहर के किनारे चिनार बाग़ है। झील में बहुत-से शिकारे और हाउस-बोट स्थान-स्थान पर खड़े हैं। शिकारो और उनमें बैठा हुआ जन-समुदाय मनोविनोद का अच्छा साधन है। परन्तु उन सबको पार करके नीरवता मिलती है और धीरे-

धीरे शिकारा कमल-वन में प्रवेश करता है। कोमल किसलय और कुसमों से आच्छादित सरोवर का नाम ही सुन रक्खा था पर वहाँ जाने से प्रत्यक्ष हो गया। यद्यपि इस समय फूल खिले न थे फिर भी झील अत्यन्त सुन्दर लगती थी। बहुत दूर आगे बायें हाथ की ओर एक सुन्दर बग़ीचा है जिसमें महारानी साहबा स्नान करने और गर्मियों में सोने आती हैं। थोड़ी दूर जाकर हमें तैरते हुए खेत दिखाई पड़े। पहले तो हमें भ्रम था कि नाव पर खेती होती होगी, पर वहाँ जाकर देखने से ज्ञात हुआ कि पानी पर खेती करते हैं और उसमें शाक-सब्ज़ी बोई जाती है। घास-फूस का काम उसी झील के कमल-नाल तथा अन्य पौधों से लेते हैं। पौधों की जोड़ों को पानी में बिछाकर उसमें झील का कीचड़ बिछा देते हैं। ज़मीन के इन छोटे नक़ली टुकड़ों पर बीज बोये जाते हैं। यह एक अद्भुत तमाशा है।

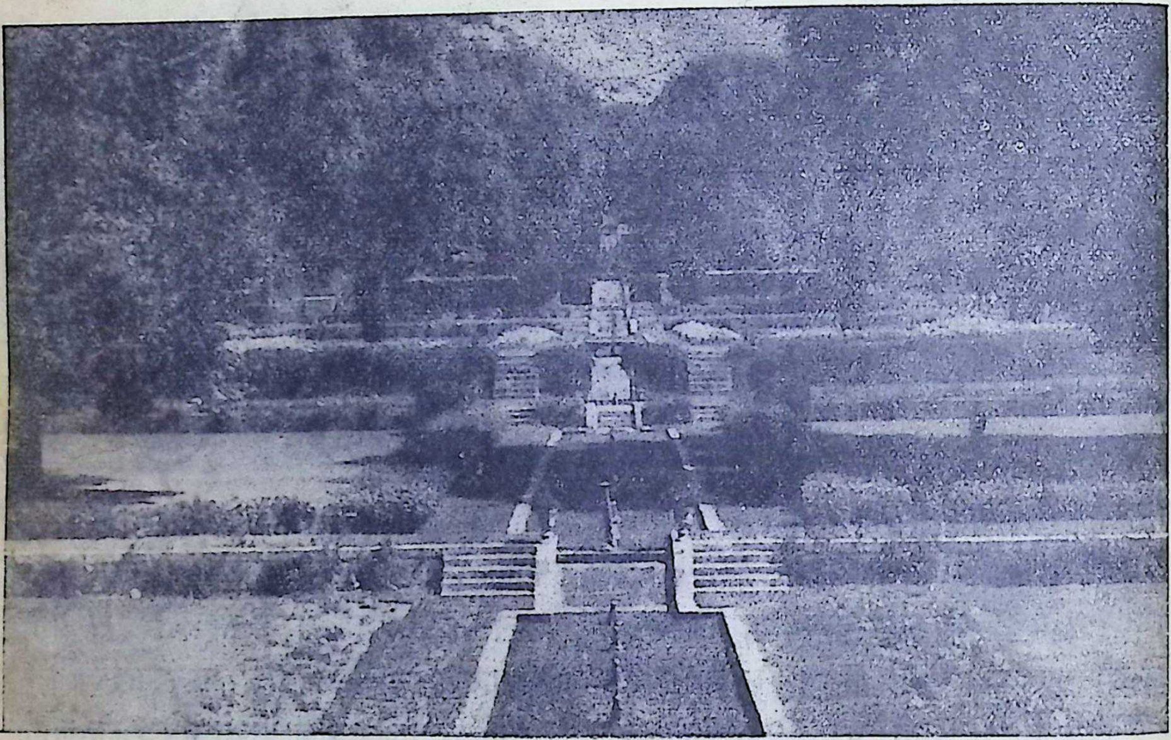

श्रीनगर का निशातबाग़

ता० १९ को प्रातःकाल हम लोग मोटर से मार्तण्ड के लिए रवाना हुए। हमारी मोटर अनन्तनाग (इस्लामाबाद) में ठहरी। वहाँ हमने गन्धक का झरना देखा। अनन्तनाग और श्री रामचन्द्र जी का मन्दिर देखकर फिर मोटर पर बैठे और मार्तण्ड पहुँचे। मोटर ने हमें सरोवर के किनारे ठहरा दिया। मोटर आते ही पंडों का जमघट आ डटा। हम लोगों ने श्री नन्दलाल को पंडा माना और कुण्ड में स्नान करने गये। कुण्ड का जल बहुत स्वच्छ था और उसमें हज़ारों मछलियाँ

थीं। नहाने के बाद कुछ जलपान किया और मनोरंजन करने के लिए रोटियाँ मँगवाईं। रोटी का टुकड़ा डालते ही मछलियों का जमघट आ गया। उस समय जो मछलियों में तनातनी थी वह बहुत मनोरंजक थी। यह सब करते-करते क़रीब १२ बज गये और हम लोगों को चार बजे जाना था। अतः हम लोग दर्शन करने गये। मार्तण्ड का भग्नावशेष देखकर हम लोग अत्यन्त दुखित हुए। वहाँ के चौकीदार से पूछने पर यह मालूम हुआ कि रामादित्य राजा ने इसका निर्माण किया और ८ वीं शताब्दी में ललितादित्य राजा ने और भी सुन्दर करवा दिया। उसने रहने के लिए मठ बनवा दिये। मार्तण्ड मन्दिर के ऊपर का भाग सोने से मढ़वा दिया। उस मन्दिर में एक हीरा था जो रात को प्रकाश करता था। १६ वीं शताब्दी में सिकन्दर लोदी ने उसको तुड़वा दिया। मन्दिर को देखकर हम लोग पंडे के यहाँ खाना खाकर और उसे कुछ भेंट देकर मोटर से रवाना हुए। दूसरे दिन हम लोगों ने झेलम के सात पुल शिकारे पर देखे।

ता० २१ को हम लोग मुग़लबाग़ देखने गये। सबसे पहले हम लोग चश्मशाही देखने गये। वहाँ बहुत ठण्डा जल और ख़ूबसूरत बाग़ है। निशातबाग़ में ११ प्रपात, सुन्दर फ़ौवारे और ख़ूबसूरत बाग़ हैं। वहाँ हम लोग एक घण्टे रहे। शालामार में ७ प्रपात और ख़ूबसूरत बाग़ हैं। ये स्थान कश्मीर में सबसे सुन्दर हैं। रविवार के दिन सब फ़ौवारे चलने लगते हैं, जिससे बड़ा आनन्द आता है। उस दिन हज़ारों नर-नारी वहाँ एकत्रित होते हैं।

ता० २५ को हम लोग रेशम का कारख़ाना देखने गये। यहाँ शहतूत पर कीड़े कैसे पाले जाते हैं, कीड़ों की मृत्यु, रेशम निकालना और साड़ी बनाने आदि का काम होता है।

आजकल कश्मीर के कारीगर बड़ी उन्नति कर रहे हैं। यहाँ तक कि वे हाउस-बोटों में भी कला-कौशल का परिचय देते हैं।

दूसरे दिन वहाँ की नुमाइश देखी और प्रताप-कालेज गये। वहाँ बच्चों के काम देखकर प्रसन्नता हुई।

ता० २७ को हम लोग मध्याह्नकाल में मोटर-द्वारा गन्धरवल गये। यह कश्मीर की अपेक्षा एकान्त है। यहाँ की जलवायु अच्छी है। यह छोटा-सा गाँव है। मानसबल तीन ओर विस्तृत पहाड़ों के बीच में एक तालाब है। इसके तट पर एक बहुत छोटी बस्ती है, वहाँ ३ शिकारे रहते हैं। हम लोग भी शिकारे से तालाब के दूसरे तट पर गये। सायंकाल के समय मानसबल का दृश्य अत्यन्त रमणीक होता है। लोगों के कहने से नूरजहाँ की गुफ़ा देखी। यहाँ से मोटर पर सवार होकर क्षीरभवानी पहुँचे। क्षीरभवानी के चारों ओर कुण्ड बना है। वह रंग बदलता है। कश्मीर के स्वर्गीय महाराजा की देवी जी में अटूट श्रद्धा थी। इसी से इसका महत्त्व बढ़ता जा रहा है। यह देखकर हम लोग घर चले आये।

ता० ३० को हम लोग दशहरा देखने गये। झेलम के पहले पुल से क़रीब १ मील

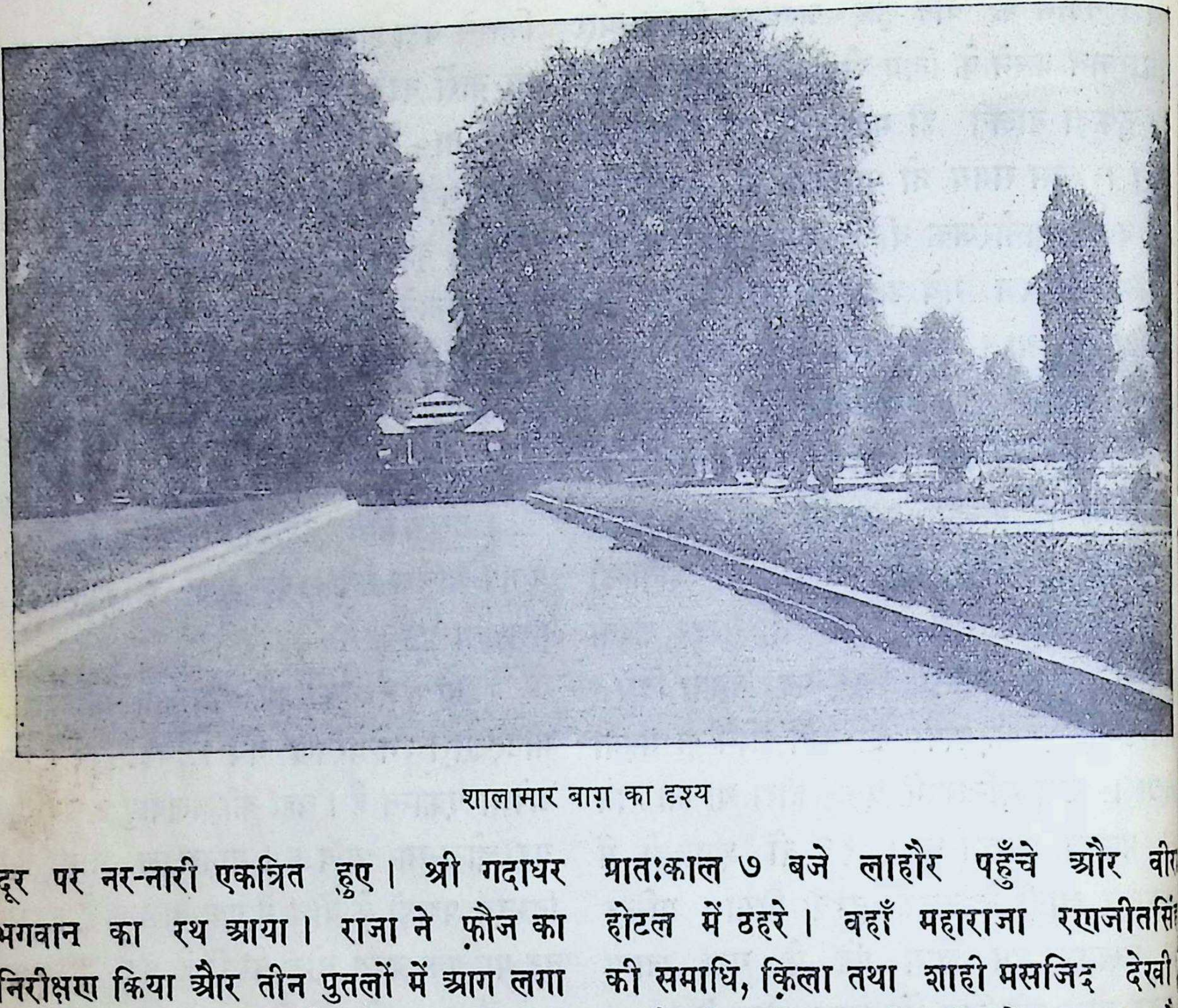

शालामार बाग़ का दृश्य

दूर पर नर-नारी एकत्रित हुए। श्री गदाधर भगवान का रथ आया। राजा ने फ़ौज का निरीक्षण किया और तीन पुतलों में आग लगा दी जो रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद थे। सायंकाल उत्सव समाप्त हो गया।

ता० २ को प्रातःकाल ६ बजे रायल मेल मोटर से रवाना होकर हम लोग ७ बजे सायंकाल रावलपिंडी पहुँचे। वहाँ हम लोग श्री ठाकुरदास की धर्मशाला (धर्मपुरा) में ठहरे। वहाँ सिर्फ़ सदर बाज़ार देखा। वहाँ से दूसरे दिन सायंकाल को ९॥ बजे लाहौर के लिए रवाना हुए। प्रातःकाल ७ बजे लाहौर पहुँचे और वी होटल में ठहरे। वहाँ महाराजा रणजीतसिं की समाधि, क़िला तथा शाही मसजिद देखी लाहौर से क़रीब ८ बजे रात्रि को रवाना हुए औ सुबह ८ बजे देहली पहुँचे। वहाँ लक्ष्मीनाराय धर्मशाला में ठहरे। सब बातों से निवृत्त होक हम ताँगे से बिड़लामन्दिर गये। मन्दिर देखक बड़ी प्रसन्नता हुई। कौंसिल-भवन, जामा मसजि जन्त्र-मन्त्र और क़िला आदि देखते हुए ४ ब तूफ़ान एक्सप्रेस में बैठकर सुबह ३ बजे इलाह बाद वापस आये।

राजकुमारी और नमक

लेखक, श्रीयुत वसन्तकुमार तिवारी

पुराने ज़माने में बुन्देलखण्ड में एक महा-प्रतापी राजा राज्य करता था। उसके कोई लड़का न था। बस तीन लड़कियाँ ही थीं। जब राजा बूढ़ा हुआ तो उसको चिन्ता हुई कि मेरे मरने के बाद मेरे राज्य का अधिकारी कौन होगा? इसी चिन्ता में वह दिन-प्रतिदिन दुबला होने लगा। उसके मंत्री ने जब देखा कि राजा दिन पर दिन कमज़ोर और दुबले होते जा रहे हैं तो एक दिन उसने साहस करके उनसे पूछा—"महाराज! क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप इतने चिन्तित क्यों हैं? क्या मैं आपकी कुछ सहायता नहीं कर सकता?" राजा साहब बोले—"हे मंत्री! चिन्ता का कारण पूछकर क्या करोगे? मुझे वह चिन्ता है जिसका दूर होना बहुत कठिन है। तुम मेरे सबसे प्यारे मंत्री हो, इसलिए मैं तुमको अपनी चिन्ता का कारण बतला देता हूँ। तुम जानते हो कि इन तीन लड़कियों के अतिरिक्त मेरे और कोई लड़का नहीं है। मैं अपनी इन तीनों पुत्रियों को बहुत प्यार करता हूँ। मैं इन्हीं तीन लड़कियों में से एक को अपने राज्य का अधिकारी बनाना चाहता हूँ। ये तीनों लड़कियाँ गुणवती हैं। परन्तु मैं चाहता हूँ कि जो सबसे अधिक चतुर हो उसी को अपना उत्तराधिकारी बनाऊँ लेकिन वे सब ऐसी गुणवती हैं कि मैं यह अन्दाज़ा नहीं लगा सकता कि कौन सबसे अधिक चतुर है। इसलिए मंत्री तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ?" इसके पश्चात् मंत्री ने राजा से कुछ बातें कीं और चला गया।

दूसरे दिन राजा जब अपने बैठकखाने में बैठा हुआ था तो उसने अपनी तीनों लड़कियों को बुलाया और कहा—"ऐ मेरी प्यारी बेटियो! मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि दुनिया में वह कौन-सी वस्तु है कि जिसके बिना भोजन फीका लगता है?" सबसे बड़ी लड़की ने जवाब दिया—"पिता जी, बिना चटनी के खाने में मज़ा नहीं आता। इसलिए वही सबसे आवश्यक वस्तु है।" मझली ने कहा—"मेरे विचार से मिठाई ही सबसे स्वादिष्ठ है।" तब सबसे छोटी ने जवाब दिया—"पिता जी, मैं तो समझती हूँ कि बिना नमक के सब भोजन व्यर्थ है।" नमक का नाम सुनना था कि राजा बिगड़ उठा और उसे उसने घर से निकाल दिया। राजा नमक के नाम से बहुत चिढ़ता था। अन्य दो पुत्रियों से उसने प्रश्न का अपनी इच्छानुसार उत्तर पाने पर उसने तय कर लिया कि मेरे मरने के बाद राज्य का आधा-आधा भाग इन दो लड़कियों को बाँट दिया जाय।

इधर तीसरी लड़की अपने दुर्भाग्य पर रोती हुई जंगल को भाग गई। भाग्यवश उसी जंगल में एक राजकुमार भी शिकार की खोज में आया हुआ था। इस लड़की को अकेला घूमती हुई देखकर उसने उससे पूछा—"ऐ सुन्दर लड़की! क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम कौन हो और क्यों

इस प्रकार जंगल में अकेली घूम रही हो?" लड़की ने अपनी सब बातें बतला दीं। राजकुमार उसकी बातों से पिघल गया। उसने कहा—"ऐ सुन्दर राजकुमारी! घबड़ाओ मत, मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा और तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा।" वह राज़ी हो गई। दोनों घर पहुँचे। महल में पहुँचने पर राजकुमार के पिता ने भी शादी के लिए अपनी अनुमति दे दी। शादी का दिन निश्चित किया गया। शादी के दिन सबको निमंत्रित किया गया। स्वयं राजकुमारी के पिता को भी निमंत्रित किया गया। शादी हुई। उसके पश्चात् भोज हुआ। भोज में उस राजकुमारी की दोनों बहनें भी सम्मिलित थीं। जब सब भोजन करने लगे तो उन्होंने नमक किसी में न पाया। यहाँ तक कि चटनी में भी नमक न था। सब लोग फीके रह गये। सब बाराती खिन्न हो गये। स्वयं राजकुमारी के पिता व उसकी बहनें कहने लगीं—"छिः छिः कितना अस्वादिष्ठ भोजन रहा। नमक का नाम नहीं।" इतने में वह राजकुमारी, जिसकी शादी थी, घूँघट काढ़े आई और अपने पिता व बहनों को नत-मस्तक करके प्रणाम किया और कहा—"पिता जी, आप मुझे शायद न पहचानें। मैं आपकी पुत्री हूँ। आप नमक से घृणा करते थे अतएव मैंने ही आपको सन्तुष्ट करने के लिए भोज्य-पदार्थों में नमक डालने को मना किया था।" उसका यह सुनना था कि वे आश्चर्यचकित रह गये और मन ही मन लड़की की चतुरता की प्रशंसा करने लगे। राज्य में लौटकर उन्होंने अपना सारा राज्य छोड़ दिया और अपनी सबसे छोटी लड़की को, जिसको कि उन्होंने घर से निकाल दिया था, दे दिया और अपनी दोनों बड़ी लड़कियों की किसी अन्य राजकुमारों से शादी कर दी।

चन्दा मामा

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मण भट्ट, भोपाल

देखो चन्दा मामा आये।
अपने साथ उजेला लाये॥
कैसे सुन्दर कैसे प्यारे।
चन्दा मामा सबसे न्यारे॥
मामा जी हैं बड़े सयाने।
घूमा करते हैं मनमाने॥
रात हुई चट से आ जाते।
पर दिन को न कभी दिखलाते॥

जितने ये नभ में हैं तारे।
मामा के साथी हैं सारे॥
मामा उन्हें खिलाते खेल।
उनसे ख़ूब बढ़ाते मेल॥
मामा जी हम भी आयेंगे।
चुन्नू को संग में लायेंगे॥
दूध मलाई हमें खिलाना।
और हमारा जी बहलाना॥

संख्याओं का चमत्कार

लेखक, श्रीयुत वंशीधर मिश्र, एम० एल० ए०

नित्यप्रति पाठशालाओं में बालक-बालिकाओं को इकाई, दहाई, सैकड़ा,....हज़ार....लाख.... करोड़....अरब....खरब....आदि पढ़ाया जाता है। पर बहुत थोड़े लोग ऐसे होंगे जो इन संख्याओं का ठीक अर्थ ग्रहण कर पाते हों। ज्योतिष-शास्त्र में तो बड़ी-बड़ी संख्याओं का ही वर्णन होता है पर लोग उनका यथार्थ अर्थ नहीं समझ पाते हैं।

लोग प्रायः करोड़ संख्या कहते सुने जाते हैं। पर करोड़ संख्या का स्पष्ट ज्ञान कम लोगों को ही होगा। यदि एक करोड़ रुपये एक व्यक्ति को गिनने को दिये जायँ और यदि वह एक मिनट में सौ रुपयों के हिसाब से गिनने लगे और वह दिन भर १२ घण्टे रुपयों को गिने तो उसे १३९ दिन से कुछ ही कम समय उन रुपयों के गिनने में लगेगा। यदि एक करोड़ सैनिक आगे-पीछे एक पंक्ति में खड़े हों तो उनकी पंक्ति साढ़े तीन हज़ार मील लम्बी होगी। यदि वे ही सैनिक एक मनुष्य के सामने से होकर गुज़रें और एक सैनिक को उस मनुष्य के सासने से होकर गुज़रने में एक सेकण्ड लगे तो एक करोड़ सैनिकों को उस मनुष्य के सामने से गुज़रने में २३० दिन लग जायँगे।

यदि खरब संख्या कही जाय, तो उसका यथार्थ ज्ञान और भी कठिन है। दस हज़ार करोड़ का एक खरब होता है। पृथ्वी भर पर जो सोना है वह ३ अरब पौंड अर्थात् पंतालीस अरब रुपयों का है और उसका वज़न १५ हज़ार टन (एक टन सत्ताईस मन से कुछ अधिक होता है) है। आधे खरब रुपयों से कम मूल्य का सोना सारी पृथ्वी भर में है।

बड़ी संख्याओं का ज़िक्र सुनने के लिए हमें ज्योतिष-शास्त्र देखना होता है। पृथ्वी और सूर्य के बीच का अन्तर १० करोड़ मील है। यदि रेलगाड़ी साठ मील प्रतिघंटा के हिसाब से निरन्तर दिन-रात चलती रहे, तो उसे पृथ्वी से सूर्य तक पहुँचने में १९० वर्ष लग जायँगे। सूर्य के अतिरिक्त दूसरा स्थिर नक्षत्र पृथ्वी से २ नील ५० खरब मील दूर है। रेलगाड़ी को ६० मील प्रतिघंटा के हिसाब से दिन-रात निरन्तर चलने पर ४ करोड़ ८२ लाख वर्ष के लगभग पृथ्वी से वहाँ तक पहुँचने में लग जायँगे। इसी हेतु ज्योतिष-शास्त्र में प्रकाश वर्ष (लाइट ईअर) से गणना की जाती है। एक वर्ष में प्रकाश ६० खरब मील के लगभग जाता है। मनुष्य की बुद्धि यह जानकर चकरा जाती है कि इस ब्रह्मांड में ऐसे भी नक्षत्र हैं जो पृथ्वी से अनेक दस करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी पर हैं अर्थात् उन नक्षत्रों से प्रकाश के पृथ्वी तक पहुँचने में अनेक दस करोड़ वर्ष लगते हैं और एक वर्ष में प्रकाश ६० खरब मील की यात्रा करता है। दूसरे शब्दों में प्रकाश की गति एक सेकण्ड में एक लाख छिहत्तर हज़ार मील है।

महाशंख संख्या तो और भी विकट है। एक खरब संख्या एक पर ग्यारह शून्य रखने से

बनती है पर महाशंख एक पर १८ शून्य रखने से बनता है। एक अरब को एक अरब से गुणा करने से यह महासंख्या आती है और एक खरब को एक करोड़ से गुणा करने से।

भारत की जन-संख्या ४० करोड़ से कुछ कम है। यदि भारतवासियों की गिनती की जाय और एक मिनट में सौ मनुष्य गिने जायँ तो प्रतिदिन सुबह ६ बजे से शाम के ६ बजे तक निरन्तर गिनती करने पर सारे भारतवासियों के गिनने में एक मनुष्य को पूरे १५ वर्ष लग जायँगे।

मेरी मिठाई

लेखक, श्रीयुत ज्ञानचन्द्र जी मिश्र

(१)

आनंदित हो घूमा करता,
ले मोदक की झोली ।
घंटी बजी दौड़ आई,
प्रमुदित बच्चों की टोली ॥

(२)

मुझे घेर लेते ग्राहक बन,
लल्ला, मुन्ना, माधव ।
सबसे पहले पैसे देते,
दिनकर, लीला, यादव ॥

(३)

कोई कहता वाह मिठाई,
कोई कहता बढ़िया ।
काकू मथुरावाले तुम तो,
बड़े चतुर औघड़िया ॥

(४)

सब मिलकर कहते ओ काकू,
जल्दी से तुम आना ।
दो-दो पैसे की हम लेंगे,
घंटी यहीं बजाना ॥

(५)

मैं हँसकर चल देता,
कहता अच्छा-अच्छा भाई ।
इसी समय पर कल आऊँगा,
दूँगा नई मिठाई ॥

(६)

इसी तरह हर रोज़ शहर में,
फिरता लेकर झोली ।
पैसा पाऊँ सुख भी पाऊँ,
चिर जीवे यह टोली ॥

"मैं"

लेखिका, श्री पुष्पलता हूजा "विदुषी"

प्रायः जब लड़के या लड़कियों की परीक्षायें पास आती हैं, उनके नाज़-नखरे और दिमाग़ सभी कुछ तो बढ़ जाते हैं। माता-पिता भी अपनी सन्तान को एक बड़े भारी बोझ के नीचे दबी समझकर उनके आराम का पूरा-पूरा प्रबन्ध करते हैं। खैर जो भी हो।

मेरी भी परीक्षा-काल की तरह मुँह बाये मेरी ही ओर लपकती चली आ रही थी। इसे दूर फेंकने के लिए मैंने हाथ-पाँव तो बहुत मारे परन्तु अन्त में इसकी ही विजय रही और इसका समय तो क्या तिथि भी नियत हो गई। काली-काली अँधेरी रात में एक लम्बे-चौड़े कमरे में टेबुल और कुर्सी पर टाँग पसारकर पढ़ने में आनन्द तो बहुत आता था परन्तु नींद भी आ ही जाती थी। मेरा कमरा बहुत अँधेरा था। केवल टेबुल-लैम्प की धुँधली रोशनी कहीं-कहीं बिखरी रहती थी। मेरे लिए यह सब वरदान था। माता, पिता, छोटे भाई, बहन किसी को भी इस कमरे में आने की आज्ञा न थी क्योंकि अपने राम की परीक्षा पास थी।

एक दिन की बात है। रात के आठ बजे थे। मैं अपने कमरे में ठाट से किताब खोले बैठी थी। बाहर से, ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंके आ रहे थे। मस्तिष्क में निद्रा-सी छा रही थी। सोचा, अजी परीक्षा की क्या बात है। अभी तो बहुत दूर है। क्यों न एक झपकी ले लूँ! परन्तु नहीं, कुछ पढ़ लूँ। इतिहास खोला।

अशोक अपनी लम्बी-चौड़ी, खूँख्वार सेनाओं से कलिङ्ग विजय कर रहा था और निद्रादेवी मेरी आँखों पर। मेरे हाथ ढीले पड़ गये। सिर टेबुल पर झुक गया और पुस्तक के पन्ने मुड़-तुड़कर मसल गये और मैं निद्रादेवी की गोद में जी भरकर खेलने लगी। हाँ, तो अशोक की सेनायें तीर मार रही थीं, शोर मचा रही थीं। युद्ध-स्थल एकदम लाल-लाल था परन्तु मैं निद्रा-निमग्न थी। एकाएक कुछ गड़बड़ हुई। सूने कमरे में खटर-खटर, घटर-घटर। अरे! कहीं अशोक तो नहीं आगया? मैं नींद में ही चिल्ला उठी।

आँख खुली तो देखा यह तो केवल छोटे-छोटे चूहों की गड़बड़ थी। धत् तेरे की! क्या मज़े की नींद थी। परन्तु सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा तो तब आया जब मा, बाप सभी बारी-बारी से आकर पूछने लगे—

"क्या हुआ पुष्पा?"

"कुछ नहीं मा।"

"तो चीखी क्यों थी?"

"कुछ नहीं मा, मोटा-सा चूहा पाँव पर बैठ गया था।"

जान बची लाखों पाये। सभी अपने-अपने कमरे में चले गये और सो भी गये।

रात का समय था। मैं जब उठी तो देखा टेबुल कुर्सी के साथ-साथ मैं भी वहाँ ही पड़ी थी। घड़ी १२ बजा रही थी। नींद की झोंक में उठी, सोचा क्यों न कुछ पढ़ लूँ। परीक्षा निकट है। कुछ पढ़ना ही चाहिए। परन्तु नींद

जो नहीं खुलती। जल्दी से उठकर मैंने मुँह धो लिया सोचा कुछ खा भी लूँ तो अच्छा हो। मा ने रात को कुछ मिठाई बनाई थी। दो-तीन टुकड़े बर्फी के उठाकर खा लिये।

सबेरे जब नींद खुली तो मा कह रही थी—"इन चूहों के मारे तो नाक में दम हो गया है। रात को पूजा की मिठाई भी ख़राब कर गये हैं। चूहे न हुए पक्के चोर हो गये। आज ही पिंजरे मँगाकर इनको पकड़ना चाहिए।"

नींद की झोंक और झिड़कियों के भय से मैं यह कहना भूल गई कि वह मिठाई मैंने खाई थी।

आज मेरे कमरे में भी चूहादान रखा गया। मैंने बड़े इतमीनान से रोटी लगाकर एक कोने में रख दिया, ठीक उसी स्थान पर जहाँ कल चूहे अपनी कसरत का खेल दिखा रहे थे। रात के दस बजे थे। ख़ूब गहरी रात थी। आज मैंने डेढ़ घण्टा पढ़ा था। अब सोचा कि क्यों न अख़बार पढ़ लूँ। मोटे-मोटे शब्दों में लिखा था "पोलैण्ड पर भारी बमवर्षा।" फिर मुझे पता नहीं। सम्भवतः मैं सो गई।

मेरे मस्तिष्क में बमों का खेल हो र था। "खट" की आवाज़ हुई, मैं चौंक उठी आँख मली तो देखा एक नन्हीं चूहिया पिंज में फँस गई थी। मैं उसे फेंकने ही वाली थी क्योंकि इस घोर रात्रि के अलावा म्युनिसिपैल से छिपकर चूहों के फेंकने का अन्य कोई सम ही न था। परन्तु मैंने सोचा कि जिस रोटी सूखे टुकड़े के लिए इस सुकोमल प्राणी चुहिया ने अपनी जान को मुसीबत में डाला उसका मज़ा तो इसे ले लेने दूँ। परन्तु मैंने दे वह रोटी नहीं खाती थी। वह जी-जान से अप नन्हें-नन्हें कमज़ोर पंजों से मज़बूत काली-का लोहे के सीकचों के तोड़ने की कोशिश रही थी। उसे ग़ुलामी का मीठा गेहूँ पसन्द था। वह स्वच्छन्द हो गन्दा सड़ा कूड़ा भी सकती थी। न जाने क्यों मुझे अपनी स हो आई। क्योंकि मैं भी तो एक मानवी ही मैं तो क्या समस्त भारत, मेरा देश और करोड़ भारतवासी भी तो अपने दायरे में हैं। वे भी क्या स्वाधीनता खो अपना खा पीना छोड़ते हैं। नहीं, कभी नहीं, हम आनन्द का उपयोग करते हैं।

मन से

लेखक, श्रीयुत सुकवि बलदेवप्रसाद श्रीवास्तव 'शेष', 'कामिल', परौरी—उन्नाव (यू० पी०)

सुनते हैं अजामिल औ' गणिका,
तरिगे हरि के गुन-गावन में।
प्रह्लाद व ध्रुव अह्लाद हुए,
गज हेत न बेर की आवन में॥

रज से, शिला, नारि भयो छन में,
शवरी तरी बेर चखावन में।
मन मूढ़ तू त्याग कुमारग को,
रख ध्यान उन्हीं पद पावन में॥

नंगा भूत

लेखिका, कुमारी निर्मला माथुर

अब से लगभग पचास वर्ष पहले की बात है । उस समय देहरादून की इस समय की-सी स्थिति न थी। अब तो बरसाती नदी 'रिस्पना', 'बिंदाल' आदि में तथा जङ्गलों के अन्दर तक मकान तथा आलीशान कोठियाँ बन ाई हैं, परन्तु जिस समय का यह क़िस्सा है उस समय लोग संध्या के समय भी परेड-ग्राउंड क आने में डरते थे । जहाँ आजकल लोग र्मियों में रात के बारह-एक बजे तक ठंडी-ठंडी वा का आनन्द लेते रहते हैं। कहीं-कहीं रात्रि के समय ग़रीब मनुष्यों की झोंपड़ियों में दीपक टिमटिमाते दिखाई पड़ते थे। शेर इत्यादि हिंसक जीव शहर के मध्य भाग तक आ पहुँचते थे। हुधा जाड़े में शाम को सात बजे के बाद एक थान से दूसरे स्थान पर मनुष्य बहुत कम आते-ाते थे। हाँ, कुछ पीने-पिलानेवाले लोग अवश्य कतनी ही बोतलों को ख़ाली करके दस-ग्यारह ने रात तक घर लौटते थे। उनको लौटते मय रास्ते में कभी-कभी भयानक शक्लें खाई पड़ जाती थीं।

ऐसे ही लोगों में थे एक बहादुरसिंह जी। होंने भूतों को वश में करने का विचार किया। स विषय में पूछ-ताछ करने के लिए आप ला मुसद्दीलाल के पास पहुँचे। इन्होंने भूतों पूरी तरह से विजय प्राप्त कर रखी थी। से बहादुरसिंह जी ने भूतों को वश में करने सारी युक्तियाँ मालूम कर लीं।

एक अमावस्या की रात्रि को दस बजे बहादुरसिंह जी अपने एक मित्र निर्भयसिंह को साथ लेकर लक्खीबाग़ 'की श्मशान-भूमि की ओर चले। इस समय पूर्ण निस्तब्धता छाई हुई थी, केवल बीच-बीच में गीदड़ बोलकर इस सन्नाटे को भंग कर देते थे। दोनों मित्र बहादुर तथा निर्भय होने पर भी भयभीत होकर जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते चले जा रहे थे। कुछ समय में वे श्मशान-भूमि में पहुँच गये। भूत सिद्ध करने के समय कोई दूसरा मनुष्य पास नहीं होना चाहिए, इसलिए बहादुरसिंह जी ने अपने मित्र को समझा दिया कि वे उनसे कुछ दूर इस प्रकार बैठें कि उनको दिखाई देते रहें।

निर्भयसिंह कुछ दूर जाकर बैठ गये तथा बहादुरसिंह ने अपना काम शुरू किया। उन्होंने तीन वृत्त एक के अन्दर एक खींचे, फिर उनके अन्दर आप बिलकुल नग्न होकर बैठ गये। नौ ईंटों का एक चूल्हा बनाया। एक मुर्दे की खोपड़ी में कुछ चावल तथा पानी लेकर उसे चूल्हे पर चढ़ा दिया। यह सब करते समय वे धड़कते हृदय से कभी इधर, कभी उधर तथा कभी मित्र की ओर देखते जाते थे। चारों ओर खड़े पेड़ उन्हें हज़ारों भूतों के समान जान पड़ते थे। जैसे ही वे चूल्हे में लकड़ियाँ सुलगाकर बैठे कि पेड़ के ऊपर से कोई चीज़ धमाके के साथ निर्भयसिंह से कुछ दूर तथा बहादुरसिंह की तरफ़ गिरी। इस आवाज़ के साथ ही निर्भयसिंह 'वह आया' कहकर भागे। उनका भागना था कि बहादुरसिंह के इतनी देर से

बटोरे हुए साहस का बाँध भी टूट गया। वे भी कपड़ों आदि को वहीं छोड़कर उनके पीछे भागे।

निर्भयसिंह जब काफ़ी दूर भागकर आगये तो उन्होंने ज़रा पीछे मुड़कर देखा। जो कुछ देखा उससे उनके हृदय की गति बन्द होते-होते रह गई। उन्होंने अपना पीछा एक नंग-धडंग भूत को करते पाया। यह देखना था कि वे जी तोड़कर भागे। निर्भयसिंह को और तेज़ भागते देखकर नंगे भूत बहादुरसिंह ने भी अपनी चाल बढ़ा दी। सड़क सीधी थी। निर्भयसिंह भागते-भागते बाज़ार में जाकर एक आबकारी में घुस गये। आबकारी में बैठे हुए लोग उनको इस बुरी दशा में देखकर इसका कारण पूछने लगे। इस घबराहट का कारण वे उन लोगों को बताने भी न पाये थे कि सबने एक काले तथा नंगे मनुष्य को उसी ओर भागकर आते हुए देखा। वह उनके पास आते ही निर्भयसिंह से चिपट गया। उसका चिपटना था कि दोनों बेहोश होकर गिर पड़े। यह देखकर सब लोग 'भूत', 'भूत' चिल्लाकर इधर-उधर भागे। इस भगदड़ में एक के पैर की ठोकर से लालटेन भी गिरकर बुझ गई औ बिलकुल अँधेरा हो गया। कुछ देर बाद लोग दूसरी लालटेन लेकर तथा पूरे साहस बटोरकर उनके पास आये। उन्होंने देखा वह काला भूत तो उन्हीं का साथी बहादुरसि है। ये लोग पानी के छींटें इत्यादि देकर दोनों को होश में लाने की कोशिश करने ला

निर्भयसिंह बेहोशी में भी कभी-कभी आया', 'वह आया' कहकर चिल्ला उठते। बड़ी देर के बाद दोनों होश में आये, तब ल को सारा क़िस्सा मालूम हुआ और सबने ज़ोर से क़हक़हा लगाया। दूसरे दिन सवे समय कुछ साहसी लोग इन दोनों मित्रों समझा-बुझाकर फिर श्मशान-भूमि ले देखा कि बहादुरसिंह के कपड़ों से कुछ दूर पेड़ की सूखी मोटी टहनी टूटी पड़ी है। शायद आँधी में टूटकर पेड़ में अटकी रह गई और उस समय किसी तरह गिर पड़ी। कुछ तक लाला बहादुरसिंह तथा निर्भयसिं काफ़ी मज़ाक़ बना। भविष्य में फिर कभी उ ऐसा करने का स्वप्न में भी विचार नहीं

सबेरा

लेखक, श्रीयुत मदन, तोषनीवाल

उठो बालको हुआ सबेरा।
चिड़ियों ने तज दिया बसेरा॥
इधर-उधर ये फुदक रही हैं।
मीठी वाणी बोल रही हैं॥

उठो बालको हुआ सबेरा।
भाग गया सारा अँधियारा॥
पूरब में है लाली छाई।
फिर देता सूरज दिखलाई॥

"कुम्हार का लड़का"

लेखक, श्रीयुत श्रीपालसिंह

उगांपुर नामक गाँव में एक ग़रीब कुम्हार रहता था। उसके परिवार में केवल उसकी औरत और इकलौता पुत्र शिवनाथ था। वह अपना जीवन बड़े दुख के साथ व्यतीत कर रहा था। दिन भर में वह केवल २-३ मटके बना पाता और उसी को बेच करके घर भर का पालन-पोषण करता था।

शिवनाथ जब कुछ बड़ा हुआ तो कुम्हार ने सोचा कि इसकी उम्र पढ़ने योग्य हो गई है और अब इसे स्कूल में जना चाहिए। परंतु स्कूल भेजने में ो पैसे लगेंगे, हाय! मेरे पास पैसे भो तो नहीं कि उसे स्कूल भेज सकूँ।

कुम्हार के हृदय में बच्चे को पढ़ाने की बल इच्छा थी। वह शिवनाथ को योग्य बनाना हता था, ताकि शिवनाथ अपने जीवन में वी रहे। यही विचार उसके हृदय में आ-जा थे। अंत में कुम्हार के मन में यह बात आई गाँव से थोड़ी दूर जहाँ पर गौरी महात्मा का म है क्यों न उनके हाथ बच्चे को सौंप दूँ। ों महात्मा जी इसे सिखा-पढ़ाकर कुछ योग्य अवश्य बना देंगे; जिससे शिवनाथ खाने-पीने य हो हीं जायगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल शिवनाथ को लेकर हार महात्मा जी के पास जा पहुँचा। उस य महात्मा जी स्नान करके पूजा में लीन थे। ी देर में महात्मा जी के नेत्र जब खुले तो ोंने सामने कुम्हार और उसके पुत्र को हाथ जोड़े खड़े देखा। महात्मा जी ने कुम्हार से पूछा, "आपकी क्या आज्ञा है?" कुम्हार ने रोते हुए कहा, "महात्मन्! मैं इस समय लहराते हुए दुःख के समुद्र में डूब रहा हूँ। इस समय आप ही मेरे रक्षक हैं। बचाइए! बचाइए!"

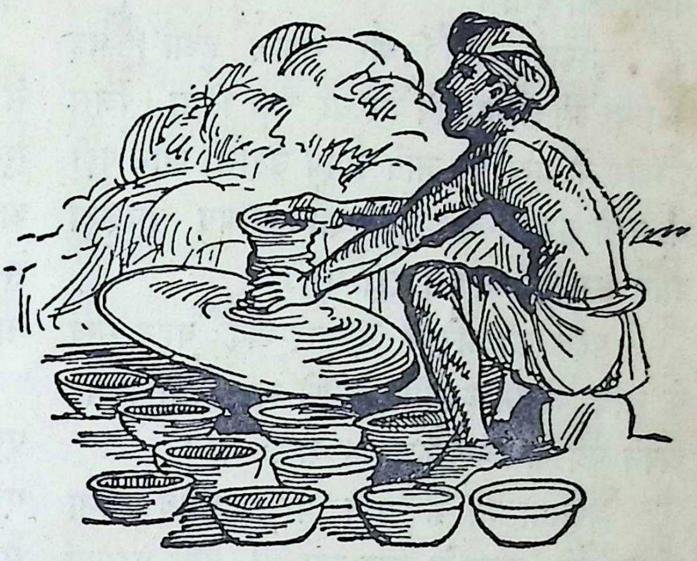

कुम्हार

महात्मा जी ने कुम्हार को धैर्य बँधाते हुए कहा, "कहो भी तो तुम्हें कौन ऐसा दुःख आ पड़ा है?" कुम्हार ने सिसकते हुए कहा, "महात्मन्! आपको मालूम होगा कि मैं कितना ग़रीब हूँ। हमारे केवल यही इकलौता पुत्र है जिसे मैं योग्य बनाना चाहता हूँ लेकिन मेरे पास एक टका भी नहीं है। इसलिए मैं शिवनाथ को आपके पास छोड़ जाना चाहता हूँ ताकि यह कुछ सिख-पढ़ जाय।"

यह सुनकर महात्मा जी प्रसन्न होकर बोले कि "शिवनाथ को हमारे पास रहने दो

और .ख़ुशीपूर्वक अपने घर जाओ। मैं इसे बहुत योग्य बना दूँगा।"

कुम्हार का विचार सफल हुआ। वह महात्मा जी को प्रणाम कर घर चल दिया। जिस कुम्हार के मुख पर जाते समय उदासी जान पड़ी थी उसी कुम्हार के मुख पर लौटते समय चंचलता और प्रसन्नता झलक रही थी।

पहले की अपेक्षा कुम्हार अब बहुत सुख के साथ जीवन व्यतीत करने लगा क्योंकि वह अपने पुत्र के लिए कुछ कर सका था।

महात्मा जी के धाम पर शिवनाथ अपना जीवन बड़े सुख से काट रहा था और महात्मा जी से उत्तम-उत्तम शिक्षा भी प्राप्त कर रहा था।

दस वर्ष के अन्दर शिवनाथ काफ़ी बड़ा हो गया। उसके चेहरे से उसकी वास्तविक जवानी प्रकट हो रही थी। साथ ही साथ जितनी भी विद्यायें महात्मा जी को मालूम थीं उन सभी विद्याओं को भी वह प्राप्त कर चुका था।

शिवनाथ का जी दस साल तक महात्मा जी के डेरे पर रहते-रहते ऊब-सा गया था। वह अब संसार-भ्रमण करने की इच्छा कर रहा था। वह एक दिन महात्मा जी से आज्ञा लेकर तड़के ही घोड़े पर रवाना हो गया।

मार्ग में जंगलों को पार करता हुआ बहुत दूर जाने पर वह एक ऐसे राज्य में पहुँचा जहाँ पर यह विज्ञप्ति फैली हुई थी कि इस राज्य के राजकुमारी का विवाह होनेवाला है। विवाह में यह शर्त है कि राजकुमारी उसी के साथ शादी करेंगी जो सज्जन राजकुमारी से शास्त्रार्थ में जीत जायेंगे और साथ ही उन्हें आधा रा भी मिलेगा।

राजकुमारी से शास्त्रार्थ करने के लिए ब से सज्जन नाम लिखा चुके थे। इस विज्ञप्ति सुनकर शिवनाथ ने भी सोचा, यह बहुत अच्छा अवसर है। अतः यह सोचकर राजकु से शास्त्रार्थ करने के लिए शिवनाथ ने भी अ नाम लिखा दिया।

स्वयंवर की तिथि नियत थी। वह ति एक दिन आ ही गई। राज-दरबार के सा एक विशाल शामियाना तना हुआ था और ब से क़ीमती ग़लीचे बिछे हुए थे। बीच में सुनहला सिंहासन रखा हुआ था। उ राजकुमारी बैठी थीं और ग़लीचों पर ओर शास्त्रार्थ करने के लिए सज्जन लोग हुए थे।

संध्या का समय था। घड़ी में टन-टन- टन चार का घंटा बोला। शास्त्रार्थ शुरू हु लोग एक-एक कर राजकुमारी के पास और शास्त्रार्थ करते लेकिन उनका भाग्य था, वे राजकुमारी से हार जाते तथा अपना मुँह लेकर अपने आसन पर सिर नीचा करके जाते। अंत में शिवनाथ को छोड़कर सज्जनों ने उससे शास्त्रार्थ किया और अ मुँह लेकर रह गये।

सबसे पीछे शिवनाथ ने राजकुमारी शास्त्रार्थ किया। शिवनाथ ने अपने महात्म स्मरण करके शास्त्रार्थ शुरू किया। शास्त्रा शिवनाथ की जीत और राजकुमारी की हार

यह विज्ञप्ति बिजली की भाँति नगर भर में फैल गई। शिवनाथ और राजकुमारी की शादी बड़े धूम-धाम से की गई। इस समय शिवनाथ आधे राज्य का स्वामी भी हो गया था।

कुछ समय बाद शिवनाथ ने अपने बुड्ढे मा-बाप को भी अपने पास बुला लिया और उसके मा-बाप के भी दिन सुख से कटने लगे।

धन्य है उस महात्मा को जिसने शिवनाथ को योग्य बनाया।

ईश्वर करे हमारे देश में ऐसे ही महात्मा पैदा हों और देश-वासियों को शिवनाथ ऐसा बुद्धिमान् बनावें।

भावी आशा

लेखिका, श्री शकुन्तला सिरोठिया

सच बोलना सीखो प्यारे रहना सदा झूठ से दूर।
अपने सत् पर टिकनेवाले ही फैलाते जग में नूर॥

हे बालक हो कोमल पौधे,
तुमको है यह तन पनपाना।
दुर्गुण रूपी कीड़ों से बच,
तुम्हें चाहिए गुण अपनाना॥

तुम ही भावी आशा हो प्रिय,
तुमसे है इस जग को आशा।
करना शुचितर कार्य अनोखे,
तुमसे होवे नहीं निराशा॥

तुममें वीर शिवा के गुण हों,
जिसको यह भारत अवलोके।
तुममें 'राणा' का प्रताप हो,
जिसे गर्व से देश विलोके॥

तुम्हीं ऋषि रवीन्द्र के शुचितर,
भावों को ले जग में आना।
तुम्ही 'मोती' और 'तिलक' के,
बचे कार्य को करते जाना॥

ऐसे सुन्दर भावों में हे भावी—
आशा बढ़ते जाना।
जग आलोकित होवे तुमसे,
वह प्रकाश फैलाते आना॥

कितने ही संकट हों मग में,
तुम्हें वीर है बढ़ते जाना।
मा को बंधन की वेणी से,
याद रखो है तुम्हें छुड़ाना॥

सबसे बड़ा कौन ?

लेखिका, श्रीमती सूर्यकुमारी जैन, खैरागढ़

एक थी राजकन्या। वह अत्यन्त रूपवती और गुणवती थी। उसके अद्वितीय रूप और गुण को देखकर राजा ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसका विवाह सर्वश्रेष्ठ राजकुमार से करूँगा। राजा की यह प्रतिज्ञा सुनकर कितने ही राजकुमार आये, पर कोई भी अपने को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित नहीं कर सका। अंत में तीन राजकुमार आये। राजा ने पहले राजकुमार से पूछा—तुम कौन हो? उसने उत्तर दिया—मैं संसार में सर्वश्रेष्ठ धनी राजकुमार हूँ। सम्पत्ति से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है, इसलिए मैं संसार में सर्वश्रेष्ठ हूँ। आप राजकन्या का विवाह मुझसे कीजिए। राजा ने दूसरे राजकुमार से पूछा—तुम कौन हो? उसने कहा—मैं संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली वीर हूँ। शक्ति के आगे सब नत हो जाते हैं, इसलिए मैं संसार में सर्वश्रेष्ठ हूँ। आप अपनी राजकन्या का विवाह मुझसे कीजिए। राजा ने तीसरे राजकुमार से पूछा—तुम कौन हो? उसने उत्तर दिया—मैं संसार में सबसे बड़ा विद्वान् हूँ। विद्या के आगे सम्पत्ति और शक्ति दोनों तुच्छ हैं। विद्या की महत्ता को कौन नहीं मानता, इसलिए संसार में मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। आप अपनी राजकन्या का विवाह मुझसे कीजिए।

राजा हतबुद्धि हो गया। वह यह निश्चय ही न कर सका कि इन तीनों में सर्वश्रेष्ठ कौन है। उसने मंत्री से सलाह ली। मंत्री ने कहा कि आप इन तीनों को कहिए कि साल भर भीतर वे लोग सर्वश्रेष्ठ काम करके अपनी स श्रेष्ठता का प्रमाण दें। जिसका काम स अच्छा होगा, वही सर्वश्रेष्ठ माना जायगा। द दिन राजा ने तीनों राजकुमारों से यही कही। तीनों राजकुमार तुरन्त ही सर्वश्रेष्ठ करने के लिए रवाना हुए।

धनी राजकुमार साल भर तक देश- घूमता रहा। उसने कितने ही दीन-दरिद्रों सेवा की, कितने ही मंदिरों और धर्मशाल का निर्माण किया। पर उसे संतोष नहीं हु अंत में वह हरिद्वार पहुँचा। वहाँ उसे संन्यासी मिला। संन्यासी ने कहा—मेरे एक ऐसा मृगचर्म है, जिसका मूल्य दस क रुपये है। राजकुमार ने पूछा—उसकी विशेषता है? संन्यासी ने कहा—उस मृग पर बैठकर आप पल भर में जहाँ चाहें सकते हैं। राजकुमार और संन्यासी दोनों चर्म पर बैठे और एक क्षण में राजकुमार राजधानी में पहुँच गये। राजकुमार ने तुर उसको दस करोड़ रुपये दे दिये। उसने में सोचा कि धन की सर्वश्रेष्ठता का यही है कि उससे ऐसी दुर्लभ वस्तु प्रा जा सकती है।

विद्वान् राजकुमार अपने घर में जाक भर तक वैज्ञानिक आविष्कार के काम में रहा। अंत में उसने एक ऐसे अद्भुत द

आविष्कार किया, जिसमें हम भूत, भविष्य और वर्तमान की किसी भी घटना को प्रत्यक्ष देख सकते हैं। वह मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि विद्या का परम फल यही है। उसी के द्वारा ऐसा अद्भुत आविष्कार किया जाता है।

वीर राजकुमार वर्ष भर तक देश-देश घूमता हा। उसने बड़े-बड़े अन्यायकारी दैत्यों और र-पिशाचों का संहार किया। अंत में वह एक से नगर में पहुँचा, जहाँ लोग एक बड़े भयानक क्षस के कारण बड़ा दुःख पा रहे थे। राज-मार ने जाकर उससे युद्ध किया और अंत में सका वध कर डाला। नगर के लोगों ने उसे यमाला पहनाई और अपने मंदिर की एक ऐसी लवार दी, जिसके आगे सब शस्त्र तुच्छ थे। ब तो राजपुत्र अजेय हो गया। वह भी मन ही न बहुत प्रसन्न हुआ और सोचा कि यह रता की सर्वश्रेष्ठता का सबसे अच्छा प्रमाण है।

कुछ दिनों के बाद तीनों राजकुमार एक ान में मिल गये। तीनों ने अपने-अपने कामों वर्णन किया। तीनों एक-दूसरे की बात नकर चकित रह गये। अंत में वीर राजकुमार कहा—भाई, उस राजकन्या को तो उस ण में देखो कि वह क्या कर रही है। विद्वान् जकुमार ने ज्यों ही दर्पण में देखा, त्यों ही वह हाकार करने लगा। दोनों राजकुमारों ने पूछा—क्या हाल है? उसने कहा—राजकुमारी को एक भयानक राक्षस लिये जा रहा है। वीर राजकुमार ने कहा—अगर मैं उसके पास पहुँच जाऊँ, तो अभी उसे मार डालूँ और राजकन्या को बचा लूँ। धनी राजकुमार ने कहा—बैठो इस मृगचर्म पर, मैं तुम्हें अभी पहुँचाये देता हूँ। तीनों मृगचर्म पर बैठकर उड़े। बात ही बात में वे उस राक्षस के पास पहुँच गये। वीर राजकुमार ने उसको पल भर में मार गिराया और फिर राजकन्या को लेकर तीनों राजा के पास पहुँचे।

वीर राजकुमार ने कहा—लीजिए, मैंने आपकी कन्या का उद्धार किया, यही मेरी सर्वश्रेष्ठता का प्रमाण है। राजा ने कहा—अवश्य। धनी राजकुमार ने कहा—वाह ! यह कैसे, अगर मैं इन्हें मृगचर्म पर बैठाकर न लाया होता, तो ये करते ही क्या, इसलिए मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। राजा ने कहा—अवश्य। विद्वान् राजकुमार ने कहा—वाह ! यह कैसी बात है, अगर मैं इन्हें दर्पण देखकर न बतलाता, तो ये लोग कर ही क्या सकते थे। राजा ने कहा—अवश्य। तब मंत्री बोला—विद्या के बिना धन व्यर्थ है और विद्या और धन के बिना शक्ति व्यर्थ है। इसलिए आप तीनों राजकुमारों का विवाह तीन राजकुमारियों से कीजिए और तीनों को एकत्र रखिए।

तब वैसा ही किया गया और वे तीनों एक ही साथ रहे।

समय का फेरफार

लेखिका, कुमारी ऊषा (गायतोण्डे) कैमोर

किसी नगर में एक राजा रहा करते थे। उनकी राजधानी भी ऐसी थी जैसे महाराज भोज की उज्जैन नगरी। राजधानी में सुदामा जैसे एक ग़रीब ब्राह्मणदेव भी सकुटुम्ब निवास करते थे। यद्यपि पहले वे धनी थे पर क्या किया जाय, "समय के फेर से सुवर्ण होत माटी है।" कालचक्र के प्रभाव से दरिद्रता ने आ घेरा था। जिस प्रकार सुदामा की पत्नी ने दरिद्रता को हटाने के लिए मुट्ठी भर चावलों के द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण से मिलने का पति को उपाय बताया था उसी तरह विप्रदेव की विदुषी भार्या ने भी एक युक्ति सोची और अपने पति से नम्रता के साथ बोली— स्वामी, जब कभी भी आप बाहर से घर आया करें तो ख़ाली हाथ न आया करें। कुछ लेकर आया करें। ब्राह्मण देव झुँझलाकर कह उठे—क्या ले आया,करूँ, "पत्थर ?" अरे "पास में तो पैसा नहीं चलें मिर्ज़ापुर के हाट को।" ख़ैर स्त्री ने सम्बोधन कर कहा कि आप पत्थर ही ले आया करें। अब तो ब्राह्मण देवता जब कभी बाहर से घर आया करते तो लौटते वक़्त एक-दो गिट्टी-जैसे पत्थर ले आया करते थे और स्त्री को दे दिया करते थे। स्त्री भी पतिदेव के लाये हुए पत्थरों को बड़े प्रेम से शालिग्राम की तरह हिफ़ाज़त से जहाँ-तहाँ रख दिया करती थी। पर कहाँ तक रक्खे। वहाँ तो थोड़े दिनों में ही घर शालिग्रामों से भर गया।

एक दिन ब्राह्मण को घर लौटते समय रास्ते में मरा हुआ सर्प दिखलाई पड़ा। पत्थरों बदले वे सर्प को ही उठा लाये और घर आ स्त्री से बोले—आज एक नई चीज़ लाया दीपावली का त्योहार नज़दीक था। स्त्री ने सो शायद कुछ खाने-पीने या रोशनी का सा लाये होंगे पर देखा तो सर्प! उसे भी स्त्री प्रेम से लेकर एक लकड़ी के सहारे छप्पर रख दिया तथा हाथ में झाड़ू लेकर आने त्योहार की तैयारी करने लगी।

रहिमन चुप है बैठिए, देखि दिनन को
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं दे

ठीक ऐसा ही हुआ। राजा की राजकु अपनी सहेलियों के साथ सरोवर में स्नान गई थी। उसने अपने कंठ का क़ीमती र उतारकर सरोवर-तट की एक शिला पर दिया था। एक चील आई और उसे उ ले गई। जब चील हार को चोंच से पक ब्राह्मण देव के मकान के ऊपर से जा र तो एकाएक उसकी दृष्टि छप्पर पर र मृतक सर्प पर पड़ी। अब चील ने हार तो पर ही छोड़ दिया और सर्प को अपना पदार्थ समझ ले उड़ी। निदान ब्राह्म दृष्टि छप्पर पर चमचमाते हुए हार पहुँची। स्त्री ने नागदेव का दिया हुआ समझकर रत्नहार को घर में सुरक्षित में रख दिया। थोड़ी ही देर बाद नगर की तरफ़ से ढिँढोरा पीटा गया कि राज

का रत्नहार गुम हो गया है। जो कोई लाकर रबार में दाखिल करेगा उसे पुरस्कार दिया जायगा। ढिँढोरा सुनते ही स्त्री ने कहा—स्वामी, यह रत्नहार राजकुमारी का है। आप लेजाकर रबार में दाख़िल कर आइए। ब्राह्मण डरा कि कहीं मैं चोरी के अपराध में न पकड़ा जाऊँ। आख़िरकार ब्राह्मणो को ही दरबार में हार लेकर उपस्थित होना पड़ा। हार को पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और बोले—देवी, हम तुम्हारी इस ईमानदारी के बदले पुरस्कार देना चाहते हैं। तुम्हारी क्या इच्छा है, बताओ। ब्राह्मणी ने युक्तिपूर्वक कहा—महाराज! मैं चाहती कि आप अपने राज्य भर में यह ऐलान करवा दें कि कल दीपावली की अमावास्या को रात्रि में कहीं भी दीपक न जलाये जावें सिवाय एक मेरे घर के। इससे राज्य में लाखों रुपये की बचत होगी। क्योंकि दीपावली के त्योहार में लोग आतिशबाज़ी, तैल आदि में बहुत-सा पैसा अनावश्यक ख़र्च कर डालते हैं। आपके राज्य में उसकी बचत हो जायगी। बस, यही मेरा पुरस्कार होगा। ऐसा कह वह अपने घर लौटी आई और राजा ने भी उसकी इच्छानुसार राज्य में ऐलान करा दिया। अमावास्या की रात्रि आ पहुँची। राज्य में घोर अंधकार का साम्राज्य है। रोशनी का कहीं नामोनिशान न था। सिवाय उस ब्राह्मण के घर के। सूर्यास्त ही स्त्री ने घर के अंदर एक घृत का दीपक जलाकर रख दिया था और खाना-पीना कर सोने की तैयारी में थीं। क्रमशः मध्य-रात्रि का समय हुआ। सम्पत्ति की देवी श्री महालक्ष्मी जी भ्रमण करने निकलीं। पर जहाँ जातीं वहाँ घोर अंधकार। कहीं भी विश्राम न मिला। ब्राह्मण के घर के टिमटिमाते हुए दीपक का प्रकाश क़िवाड़ों के बीच से निकल रहा था। महालक्ष्मी भी वहीं जा पहुँचीं। क़िवाड़ों को खटखटाया। ब्राह्मणी की निद्रा खुली। उसने पूछा, तुम कौन हो? उत्तर मिला, मैं महालक्ष्मी हूँ। धन की देवी हूँ। स्त्री ने कहा—तो देवि, यहाँ किसलिए पधारी हो? सुनते ही लक्ष्मी ने कहा—आज दिवाली अमावास्या की रात्रि है। राज्य भर में अँधेरा छाया हुआ है। घूमते-घूमते मैं थक गई हूँ। तुम्हारे घर के प्रकाश में थोड़ा विश्राम करूँगी। देवता लोग अँधेरे में नहीं रहा करते। ब्राह्मणी ने कहा—देवि! जब आप को थोड़ा ही विश्राम लेना है तो मुझे दरवाज़ा खोलने का कष्ट क्यों दे रही हैं? हाँ यदि स्थायी विश्राम लेना हो तो मैं अभी खोले देती हूँ। आख़िरकार महालक्ष्मी को अंधकार के भय से लाचार होना पड़ा तथा 'एवमस्तु' कहना पड़ा। पट खोल दिये गये। अब तो ब्राह्मण का घर विभूतियों का भंडार हो गया। ब्राह्मणी के प्रेम से रक्खे हुए पत्थर मानों मीरा के शालिग्राम बनकर महालक्ष्मी को भी अपने पास बुला लिया। तभी तो भारतीय कवियों ने कहा है कि स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं?

चिट्ठी-पत्री

श्रीमान्

सम्पादक जी !

हमारे यहाँ से एक हस्तलिखित मासिक पत्र निकलता है। उसके लिए "बाल-सखा" के प्रेमी पाठकों को निम्नलिखित पते पर लेख भेजना चाहिए। और मैं ऐसे बालकों से पत्र-व्यवहार करना चाहता हूँ जो निम्नलिखित बातों को काम में लाना चाहते हैं—

(१) देश का सुधार।

(२) सच्ची मित्रता।

(३) अहिंसा।

(४) फूट को दबाना।

चाहे हिन्दू हों या मुसलमान, इस पते पर पत्र भेजें।

—जेठमल बोथरा

हजारीमल रूपचन्द बोथरा,

सुजानगढ़ (बीकानेर)।

श्रीमान् सम्पादक जी महोदय

"बाल-सखा" !

मुझे डाकखाने के नये-पुराने टिकट, कई प्रकार के सिक्के, पुस्तकें व कलेण्डर आदि संग्रह करने का बड़ा शौक़ है। आपके ग्राहकों में से जो कोई भी महाशय टिकट, सि
किताबें व कलेण्डर बदलना चाहें तो नि
लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें। पत्रोत्त
लिए पोस्टेज स्टाम्प या जवाबी कार्ड
ज़रूरी हैं।

—ए० लालचन्द सोनी (जैन

c/o अचलदास जी मोहनलाल जी सो

पो० बीलाड़ा (मारवाड़)।

गत दिसम्बर १९४१ के "बाल-सखा
कुँवर सुरेन्द्रसिंह का जो चिट्ठी-पत्री स्तम
नोट छपा है उसमें उन्होंने दोनों प्रश्नों के
को अशुद्ध बतलाया है। पर ये दोनों छाप
भूलें हैं।

गत जून के "बाल-सखा" के अन्तर्गत
प्रश्न के उत्तर में कि साँप के पैर नहीं होते
था, कि सच। साँप के पैर नहीं होते। य
के बल इतना..........। यहाँ पैर की
पेट होना चाहिए।

सूर्य पृथ्वी से वास्तव में ३,३३,४३२
बड़ा है। १९३ हीं। ये दोनों ग़लतियाँ
की ग़लती से हो गई हैं अतः पाठक
भूल-सुधार कर लें।

—वल्लभदास बिन्ना

मिर्ज़ापुर।

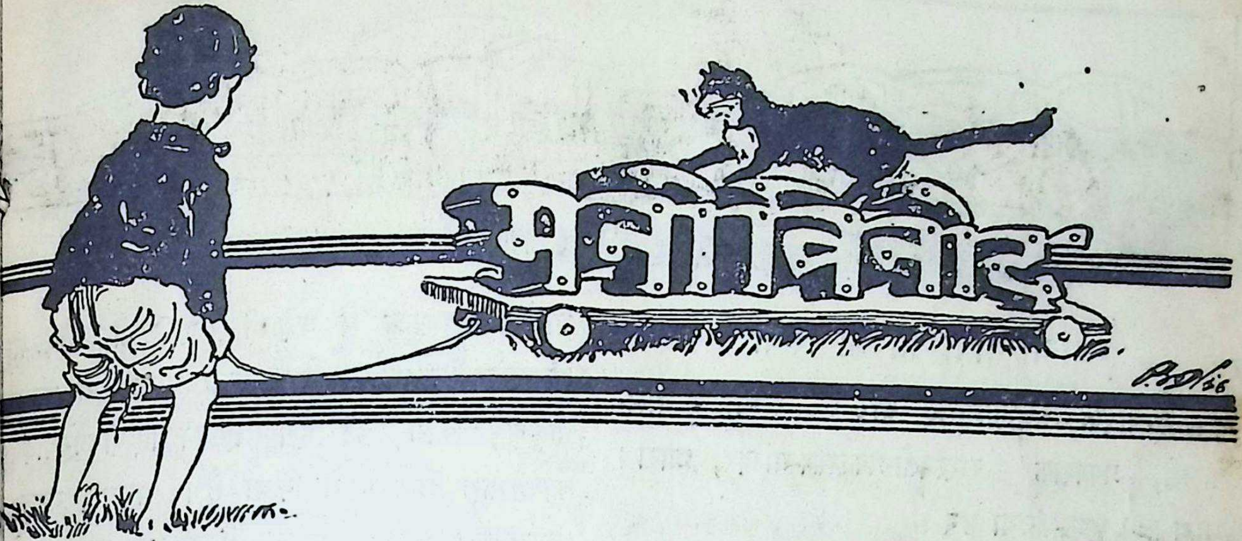

(१)

एक विद्यार्थी की हिन्दी की लिखावट ुत ख़राब थी। एक दिन मास्टर साहब ने सकी लिखी कापी फाड़कर फेंक दी और राज़ होकर बोले—ये टेढ़े-मेढ़े अक्षर कोई हीं पढ़ सकेगा। ठीक से लिखो।

संयोगवश मास्टर साहब थोड़ी देर बाद ू-भाषा में एक पत्र लिख रहे थे। तब उस द्यार्थी ने वह काग़ज़ फाड़कर फेंक दिया र कहा—ये अक्षर कोई नहीं पढ़ सकेगा, र पत्र लिखिए। ठीक से।

(२)

मास्टर साहब ने कहा—श्याम, देखो उस पर चार कापियाँ रक्खी हैं, उठा लाओ।

श्याम ने दो कापियाँ लाकर दे दीं। मास्टर हब ने पूछा—चारो कापियाँ क्यों नहीं लाये?

तब उसने उत्तर दिया—साहब मेरे हाथ चार नहीं हैं दो हाथ हैं, इसलिए दो कापियाँ या हूँ। चार होते तो चारों ले आता।

—कुमारी शकुन्तलादेवी मिश्रा।

१—मोहन—(सोहन से) अरे यार, मैंने तो एक बड़ा भारी एक्सिडेंट कर दिया।

सोहन—तो क्या पुलिस तुझको थाने में कर ले गई।

मोहन—नहीं यार, मैं जा रहा था त्योंही मेरे पैर के नीचे एक चींटी दब गई।

२—एक समय एक लड़का सड़क पर गाली देता हुआ जा रहा था। एक आदमी ने सुना और कहा कि किसको गाली दे रहा है। लड़के ने कहा, यदि आपको सुनाई देती हो तो कान बंद कर लीजिए।

३—एक लड़का कहीं जा रहा था। रास्ते में उसके एक मित्र ने पूछा—कहाँ जा रहा है? लड़के ने कहा, यहीं जा रहा हूँ। कोई दूसरी दुनिया में तो नहीं जा रहा हूँ। —श्री इन्द्रमल जौहरी।

(१)

मास्टर—ऐ मोहन तुम्हारी जाति क्या है?

मोहन—मेरी जाति वैश्य है।

मास्टर—तुमको इतनी भी अक़्ल नहीं है कि कुछ सफ़ाई से बात करो। तुमको श्रीमान् कहना चाहिए।

मोहन—श्रीमान मोहन की जाति वैश्य है।

(२)

सुदर्शन—रामसरन क्या तुम ड्राइंग खींच सकते हो?

रामसरन—हाँ, हाँ घोड़ा और कुत्ता मिलाकर खींच सकता हूँ।

—श्री सुदर्शनकुमार, उम्र १० वर्ष।

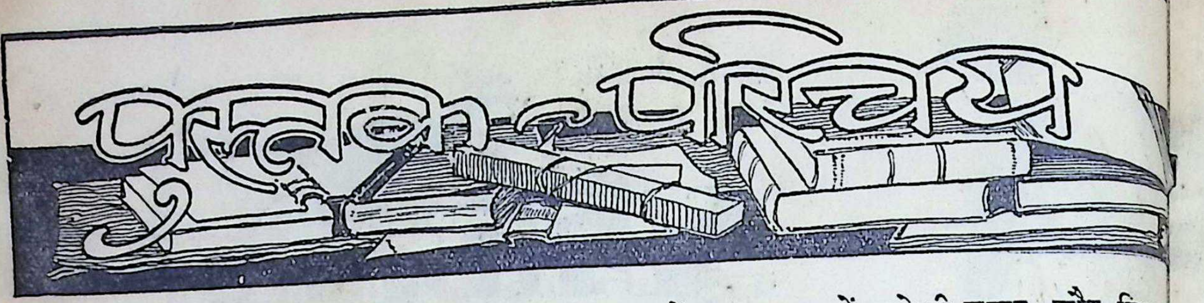

महात्मा गांधी की आत्मकथा

सम्पादक त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०, सम्पादक बाल-केसरी, प्रकाशक सरस्वती-प्रकाशन-मन्दिर, आरा। मूल्य ।≈), पृष्ठ-संख्या ४२।

यों तो महात्मा गांधी की बहुत-सी जीवनियाँ लिखी गई हैं परन्तु वे बालकोपयोगी नहीं हैं। प्रस्तुत पुस्तक में श्री त्रिवेणीप्रसाद जी ने महात्मा जी की जीवनी बहुत ही सरल और दिलचस्प भाषा में लिखी है। इसके द्वारा बच्चों को महात्मा जी के प्रारम्भ से आज तक के जीवन की एक सुन्दर झाँकी मिल जाती है। पुस्तक में महात्मा जी के सुन्दर और आकर्षक चित्र भी दिये गये हैं। यह पुस्तक वास्तव में बालकों के पढ़ने योग्य है। इसे पढ़कर बालक उचित लाभ उठा सकते हैं। आशा है अभिभावकगण अपने-अपने प्रिय बच्चों को इस पुस्तक की एक-एक प्रति अवश्य प्रदान करेंगे।

सयानी कन्याओं से

श्री नरहर परीक गुजराती के एक विचारशील लेखक हैं। यह पुस्तक उन्होंने पत्रों के रूप में सयानी लड़कियों के लिए लिखी है। गुजराती में इस पुस्तक का अच्छा स्वागत हुआ है। इस पुस्तक के कुछ अध्याय श्री महादेव देसाई के भी लिखे हुए हैं। सयानी कन्याओं को क्या-क्या जानना चाहिए इन सब बातों का पुस्तक में बड़े ही सुन्दर और शिष्ट में वर्णन किया गया है। पुस्तक वास्तव में क के बड़े काम की है। इसका हिन्दी-अनुवा काशीनाथ त्रिवेदी ने किया है। अनुवाद बहु सुन्दर बन पड़ा है। पुस्तक मिलने का पता यह श्री नवजीवन प्रकाशन-मन्दिर, अहमदाबाद। मूल्य

मेरा घर

श्री काशीनाथ त्रिवेदी की लिखी हुई यह पुस्तक है। यह पुस्तक उन्होंने बालक-बालिका लिए लिखी है। पुस्तक में २० अध्याय हैं। उसमें आँगन, कुआँ, बाग़, स्नानघर, गौशाला, रसोई, आदि का बड़े सुन्दर और मज़ेदार भाषा में वर्णन गया है। एक ही तरह के शब्द और वाक्य आये हैं। इस तरह यह किताब बहुत छोटे बाल काम की भी कही जा सकती है क्योंकि इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। भूमिका में श्री सि शरण गुप्त ने यह ठीक ही लिखा है, कि "हिन्दी अपने ढङ्ग की एक ही किताब है।" श्री तारा मोड़क ने भी इस पुस्तक का बड़े ही उत्साह-भरे में स्वागत किया है। पुस्तक बालक-बालिकाओं की है। "बाल-सखा" के पाठक इसे ज़रूर मँगाकर मूल्य सिर्फ़ ≈) है। पुस्तक मिलने का पता यह

श्री काशीनारायण त्रिवेदी, मडवानी, मध्यभा

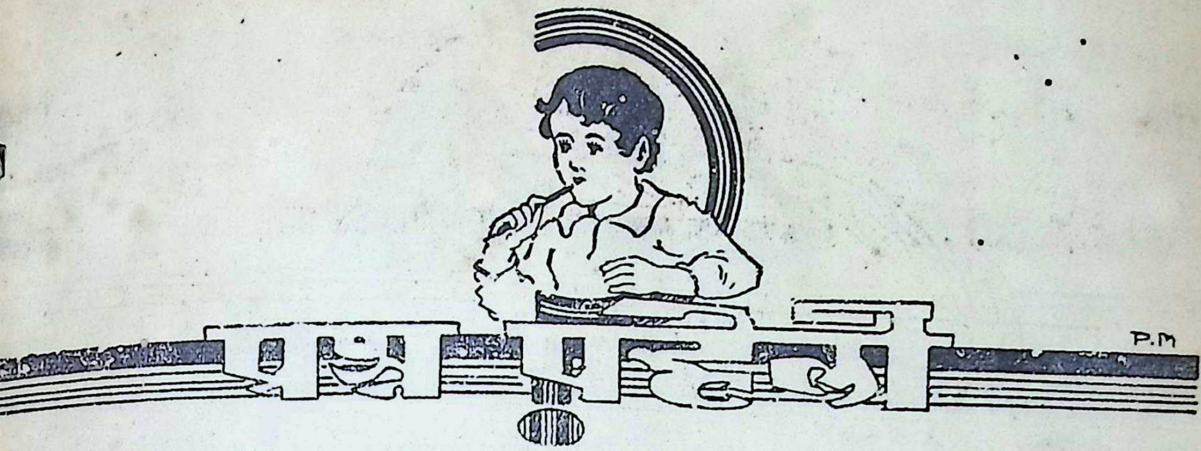

प्रश्न पहेली

बार-बार जो पैदा होता,
बार-बार मर जाय।
तीस दिनों तक ज़िंदा रहता,
फिर पैदा हो जाय॥

(महीना)

—श्री बासदेवप्रसाद, बढ़नी।

तीन अक्षरों की वह चीज़ बताओ जिसका
ा अक्षर काटने से भगवान् का नाम और
ा अक्षर काटने से फल का नाम और अंत
अक्षर काटने से हथियार और शहर का
होता है।

(आराम)

बाला पन गज तीस की,
तरुन भये गज चार।
वृद्ध भये गज साठ की,
युवा अन्त न पार॥

(छाया)

—श्री जगदीशनारायण ठाकुर।

वह चार अक्षरों की कौन-सी नदी है जिसका पहला एवं दूसरा अक्षर काटने से लड़के का बोध होता है और तीसरा एवं चौथा अक्षर काटने से परमात्मा का बोध होता है।

(ब्रह्मपुत्र)

श्री प्रवीणशंकर महता

(१)

पुरुब देस ते आवा केवा।
बिन पानी का करे गिलेवा॥

(दीमक)

(२)

उसके ज़ीन न उसके तंग।
घोड़े सवार का एकै रंग॥

(गिंजाई या घिनोहरी)

श्री देवकीनन्दन दुबे, सेवाड़ी (मारवाड़)

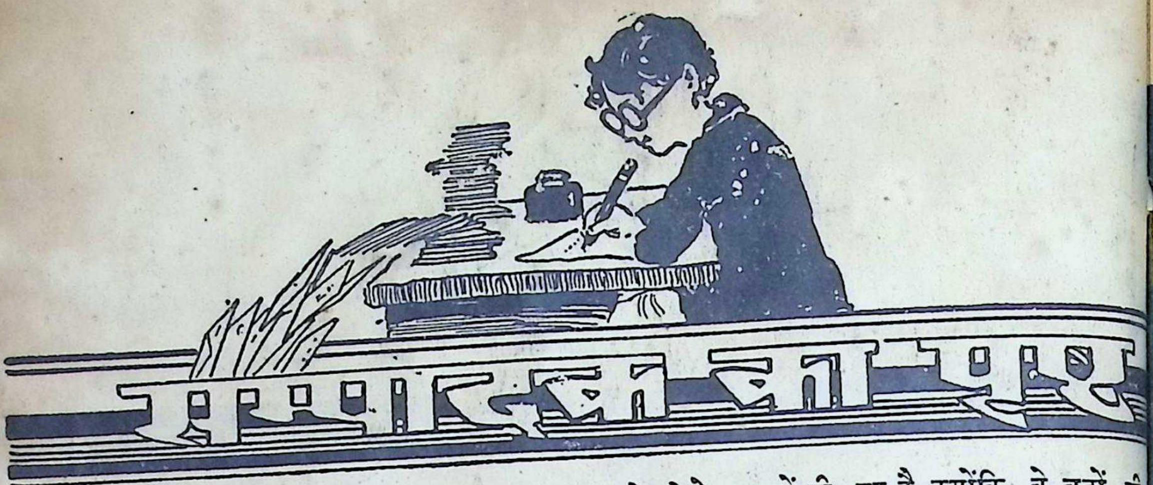

सम्पादक का पत्र

हवाई हमले से डर

हिन्दुस्तान में हवाई हमला अभी कहीं शुरू नहीं हुआ लेकिन कितने ही लोग मारे डर के मरे जा रहे हैं। एक ऐसे ही डरपोक इलाहाबादी की कहानी पंडित मोहनलाल नेहरू ने लिखी है। इसे हम इस अंक में ६६ पेज पर छाप रहे हैं। यदि आपके शहर में भी कोई ऐसा डरपोक हो तो उसे यह कहानी अवश्य सुना दीजिए।

श्री वंशीधर मिश्र का हिसाब

हमारे बहुत-से पाठक गिनतियों के खेल में बहुत मज़ा लेते हैं और कितने ही पाठक हर एक चीज़ गिनने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन अगर किसी के सुपुर्द हिन्दुस्तान के ४० करोड़ आदमियों के गिनने का काम सौंपा जाय और वह एक मिनट में १०० के हिसाब से रात दिन गिनता भी रहे तो उसे पूरे १५ साल लग जायेंगे। यह हिसाब श्रीयुत वंशीधर मिश्र ने लगाया है। इस सम्बन्ध में उनका रोचक लेख बाल-सखा के इस अंक में ८७ पेज पर छपा है। पाठक उसे अवश्य पढ़ें।

बूढ़ों के लेख क्यों छपते हैं ?

कुमारी शान्ता (ज़ूही) लिखती हैं—

लम्बोदर जी का क़लमदान लुट गया और क़लम लोग पा गये लिखने के लिए ! तो आप भी एक लम्बोदर प्रेस खोलिए लोगों की रचनायें छापने के लिए ! बाल-सखा तो बच्चों का है ! उनमें उन्हीं की रचनायें छापा कीजिएगा क्योंकि बाल-सखा बालकों का मित्र है। बूढ़ों का नहीं ! बूढ़ों का न छापने से तो कुछ हर्ज नहीं पर बच्चों का न छापने से तो वे निराश हो जाते हैं। और फिर बूढ़ों को सन्तोष होता है।

यह तो बहुत ठीक है लेकिन हम जो बूढ़ों की रचनायें अधिक छापते हैं इसकी जिम्मेदारी बाल-सखा के छोटे पाठकों ही पर है क्योंकि वे बूढ़ों की चीज़ें ज़्यादा पसन्द करते हैं। हर घर में य जाता है कि बूढ़ी नानी के मुख से कहानियाँ स सुनते हैं परन्तु अपने किसी हमजोली के कहानी सुनने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

क्या छपेंगे क्या नहीं

हमारे पास जो लेख आदि जमा हो गये हैं कुछ को हम १९४२ में क्रमशः छापेंगे। उनकी स आगामी मास में प्रकाशित कर देंगे। आशा है गण उस सूची को अच्छी तरह देख लेंगे। जिन उस सूची में नहीं आयेगा वे यह समझें कि उन इस वर्ष नहीं छप सकता है। अलग-अलग ले उत्तर देने से हमने यह तरीक़ा अच्छा समझा है शक्ति और डाकव्यय दोनों की बचत है।

नये लेखकों से निवेदन

'बाल-सखा' के लिए नये लेख, नई कवि पहेलियाँ आदि लिखनेवालों से निवेदन है कि चीज़ें लिखें जिनको कि वे समझें कि बालक को बहुत पसन्द आवेगी। साथ ही उनमें न हो। कहानियाँ, चुटकुले और कवितायें दिलचस्प होंगी तो जल्द छपेंगी।

सपने

अगले साल हम बाल-सखा के पाठकों के छापना चाहते हैं। उसके लिए आप यह करें रोज़ जो आप सपना देखें सबेरे उठने पर उन्हें इस तरह महीने भर का सपना लिखते रहें। मही में जिस सपने को देखें कि सबसे दिलचस्प है पास छपने के लिए भेज दें लेकिन एक बात रहे कि ये सपने असली होने चाहिए काल्पनि

१८-४-४४

बालसखा

अप्रैल

१९४४

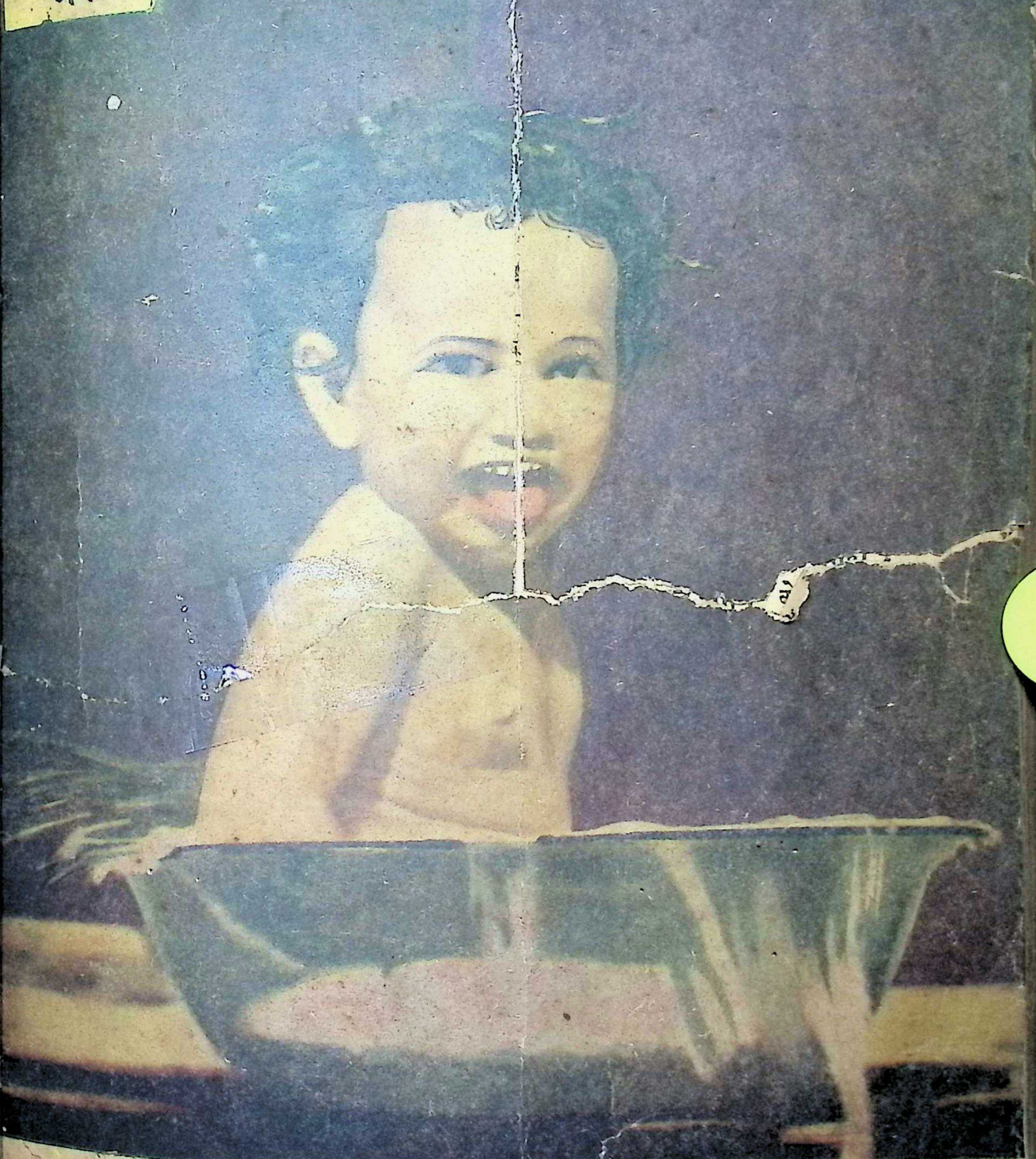

वार्षिक मूल्य २।।)

एक प्रति का ≡

विषय-सूची

कहानी

—देवताओं में झगड़ा—श्रीयुत मोहनलाल नेहरू १००
—विचित्र घेरा—श्रीयुत राजकुमार सिनहा ... १०२
—बेला और अलबेला—श्रीयुत कृष्ण सांडल १०४
—किये का फल—श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव १०९
—दानी अक्क़—श्रीयुत मनमोहन खँडूरी ... ११२
—परिमल के जीवन का पहला दिन—श्रीयुत 'शरद' ११८
—रमेश का भाग्य श्रीयुत ओमप्रकाश बंसल १२२
—जादू का शेर—कुमारी लीला श्रीवास्तव ... १२४

कविता

—हवा—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० ... ९७
—अलमस्त सिपाही—श्रीयुत 'सुधीर', बी० ए० ... "
—लीना—श्रीयुत मदनमूर्तिराय ९९
—चाँद—श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव 'प्रकाश' १०१
—मेरी पतङ्ग—श्रीयुत 'अशोक' ... ... "
—इञ्जन—श्रीयुत अमरनाथ 'महेन्द्र' १०७
—चन्दा—श्रीयुत कृष्णलाल वर्मा ... ... "
—पीसेगा कौन ?—श्रीयुत 'अनन्य' विशारद ... १११
—प्रार्थना—श्रीयुत मधुरमोहन अवधिया 'विक्रम' "
—विद्यालय को—श्रीयुत शान्तिनन्दन, एम० ए० ११६
—सोते फूल—श्रीयुत राधेश्याम अग्रवाल ... ११९
—मेरी मा—श्रीयुत देवीराम, जी० पी आर०, सिहावा "
—चिड़ियाँ—श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव ... १२१
—क्या ?—श्रीयुत निरङ्कारनाथ अग्रवाल ... "
१५—करेले-मूली का ब्याह—श्रीयुत गौरीशङ्कर मालवीय
श्री बालविनोदी ... ...
१६—अभिलाषा—कुमारी शैलबाला सकलानी ...

लेख

१—माता कस्तूर बा गांधी—श्रीयुत प्रभुदयाल विद्यार्थी
२—क्या कौवे भी मनुष्य को पहचानते हैं ?—श्रीयुत
ज्ञानचन्द्र जैन ... ...
३—सारनाथ की यात्रा—श्रीयुत चन्द्रबली सिंह, बी० ए०

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है ?—श्रीयुत वल्लभदास
बिन्नानी 'व्रजेश' ... ...
२—कुछ इधर-उधर की ... ...
३—बड़े लोगों का बचपन ... ...
गाउस—श्रीयुत देवेन्द्र शर्मा, एम० एस-सी०
४—बच्चों का कमरा ... ...
प्यारा भैया—श्री राजकुमारी सतसंगी ...
मेरा भाई—श्रीयुत तिलककुमार सिसौदिया
मेरी रेल—श्रीयुत ज्वालाप्रसाद खेतान ...
पतङ्ग—श्रीयुत रामावतार हुरकट "सुधीर"
मेरा मुन्नू—श्रीयुत छोटेलाल सरावगी ...
५—प्रश्न-पहेली ... ...
६—मनो-विनोद ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरेबालामृत
े इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट

शीघ्रातिशीघ्र रुपया वसूल करके
भेज देने के लिए
अपने बिल हमारे पास भेजें :—
कलकत्ता बैंकर्स लिमिटे
प्रधान कार्यालय :—
३८ स्ट्रैन्ड रोड, कलकत

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

गुरुकुल कांगड़ी

वर्ष २८] अप्रैल १९४४—वैशाख २००० [संख्या ४

हवा

लेखक, श्रीयुत निरंकारदेव सेवक, एम० ए०

यह वसन्त की मस्त हवा।
सब रोगों की एक दवा॥
निकलो कमरे से बाहर।
खेलो नाच कूद गाकर॥
रङ्ग-बिरङ्गे फूल खिले।
झूम रहे हैं हिले-मिले॥
क्या भीनी सुगन्धि आती।
मन में मस्ती भर जाती॥
दूर कभी चिड़ियाँ गातीं।
पास कभी चिड़ियाँ आतीं॥
मेरे भी यदि होते पर।
उड़ जाता मैं फर-फर-फर॥

अलमस्त सिपाही

लेखक, श्रीयुत 'सुधीर', बी० ए०

हम जग के अलमस्त सिपाही!
धूल धानि के क़िले बनाते,
अपनी-अपनी फ़ौज सजाते,
बढ़-बढ़कर फिर हाथ दिखाते,
बनकर सजग सिपाही।
लड़ना होता लड़कर रहते,
लाख कहो पर अड़कर रहते,
दुश्मन के सिर चढ़कर रहते,
हम राठौर सिपाही।
बोल बड़ा हम कभी न सहते,
ना तू सुनते, ना तू कहते,
रैयत नहीं किसी को रहते,
हम बिगड़ैल सिपाही।

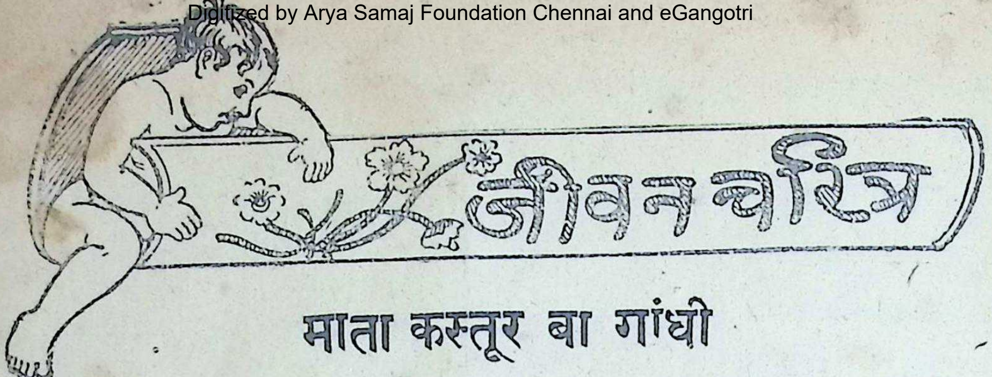

माता कस्तूर बा गांधी

लेखक, श्रीयुत प्रभुदयाल विद्यार्थी

माता कस्तूर बा गांधी का देहान्त पूना के आग़ा ख़ाँ महल में हो गया। आप मङ्गलवार को शिवरात्रि व्रत के दिन ७ बजे शाम को शिवलोक पुरी पहुँचीं। माता कस्तूर बा महात्मा गांधी की पत्नी थीं। उनकी उम्र महात्माजी के बराबर ही थी। वे ९ अगस्त सन् १९४२ को बिड़ला-हाउस बम्बई में गिरफ़्तार हुई थीं और महात्मा गांधी के पास आग़ा ख़ाँ महल भेज दी गई थीं। तब से वे वहीं थीं। पर साल फ़रवरी में महात्माजी ने २१ दिनों का उपवास व्रत किया और तब उनका ज़िन्दा रहना डाक्टरों ने असम्भव बतलाया था लेकिन परमात्मा ने उन्हें जीवित रक्खा। 'बा' उन दिनों बापू की सेवा में ही थीं। 'बा' और बापू को जिन्होंने निकट से देखा है उन्हें मानों स्वर्ग-लोक के देवताओं का दर्शन मिला है।

हम लोगों का कितना दुर्भाग्य है कि हमारी माता का देहान्त बन्दीगृह में हुआ। पारसाल फ़रवरी में बापू का जीवन संकट में पड़ गया था और अबकी ४४ की फ़रवरी में 'बा' परलोक सिधार गईं।

प्रातःकाल होते ही बा जब बापू के लिए थाली में दूध और कुछ फल लिये बिस्तर के निकट खड़ी होती थीं तब की शोभा बड़ी अनुपम लगती थी। बापू की सेवा सभी करना चाहते हैं लेकिन बापू के खाने-पीने का सारा प्रबन्ध 'बा' अपने ज़िम्मे रखती थीं। वे काफ़ी वृद्ध हो गई थीं लेकि भी वे बापू की सेवा में हमेशा तत्पर रहती

जेल में भी वे हमेशा बापू की सेवा रहती थीं। आराम करना उन्हें पसन्द न था

'बा' बालकों की देखभाल बड़ी अच्छी करती थीं। सभी के बालक उन्हें प्रिय थे। के सभी बालक उन्हें अक्सर उनकी कुटि घेरे रहते थे। अक्सर अपनी पसन्द के त्योहा अपने हाथ से मिठाइयाँ बनाकर बच्चों को करती थीं। दिवाली के त्योहार पर हम स मूँगफली खाने को देती थीं।

छोटे बच्चों को दूध आदि भी अपने पिलातीं थीं। भेंट में आये हुए फलों को बच्चों को बाँट दिया करती थीं। आश्र बच्चों की देख-भाल वे बड़ी होशियारी से थीं। हरएक की बीमारी में स्वयं 'नर्स' बन करती थीं।

एक ख़ास बात उनमें यह थी कि अप्रसन्नचित्त नहीं रहती थीं। दूसरी बा थी कि वे हमेशा गांधीजी की आज्ञाओं को विरोध करने पर भी मानकर हा रहती थीं। चरणों पर अपना मस्तक झुका देती थीं। कहने को उन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा। सब वस्तुओं तक का त्याग दिया था। उनका

न था। सिफ़ हाथ में कुछ शीशे की चूड़ियाँ ती थीं। मोटे-से-मोटा वस्त्र पहनती थीं। बापू हाथ-कते सूत की साड़ियाँ अपने लिए ही ाती थीं।

उन्होंने वस्तुओं को बटोरकर संग्रह नहीं ा। ज़मीन पर ही उनका सोना, उठना, बैठना अपने हाथ ही पानी भरकर स्नान करती थीं। घमण्ड तो उन्हें छू तक नहीं गया था, यद्यपि संसार के सबसे पवित्र महान् पुरुष की धर्मपत्नी। कभी किसी की शिकायत उन्होंने नहीं की। मुझे उन्हें बहुत निकट से देखने का सौभाग्य ा। उनकी सेवा में ७-८ साल से कम नहीं। इतने बड़े अर्से में कभी उन्हें क्रोधित होते नहीं ा। हम लोगों के साथ में बैठकर गेहूँ साफ़ ती थीं, रोटी बनाती थीं, फ़र्श साफ़ करती थीं, ा तैयार करती थीं। इन कामों को करने पना बड़प्पन मानती थीं। पश्चिमी रङ्ग-ढङ्ग वे न थीं।

आश्रम में बहिनों की देख-भाल वे ही करती। सारी बहिनें अपनी शिकायत उन्हीं के ज़रिये करती थीं। बहिनों का पक्ष वे बापू के सामने लेती थीं। बिना बापू की आज्ञा लिये हुए वे कभी कुछ हुक्म नहीं देती थीं। हर चीज़ और ह बात में वे बापू की सलाह लिया करती थीं। सभा सोसाइटियों में जाना वे बिल्कुल पसन्द नहीं करत थीं। हाथ जोड़कर मुस्कराते हुए कहतीं—"मैं कुछ पढ़ी-लिखी तो हूँ नहीं; मुझे ले चलकर क्या करेंगे बापू को ले जाइए; वे कुछ आप सबको बतावेंगे।"

बिना बापू की आज्ञा से वे अपना चित्र त नहीं देती थीं। हाँ, पढ़ी-लिखी तो कम थीं, लेकि हर बात की जानकारी रखती थीं। ये बातें वे ह जान सकते हैं जिन्होंने निकट से उन्हें देखा है।

हमसे अक्सर कहा करती थीं—"प्रभुदया हमें हिन्दी नहीं आती है; पढ़ा दो। बच्चों के लाय हिन्दी में कोई पत्र हो तो मँगा दो।" उनकी आज्ञ पाने पर मैंने भाई श्रीनाथसिंह को पत्र लिखक सेवाग्राम के पते से 'बाल-सखा' मँगवाने की बा लिखी थी। 'बाल-सखा' के बड़े अक्षरों को देखक हिन्दी पढ़ती थीं।

रामायण वे हमेशा पढ़ती थीं और गुजरात दैनिक पत्र हमेशा देखती और समाचार पढ़ती थीं ऐसी भोली-भाली माता का दर्शन अब हमें आश्र में कहाँ से होगा?

लीना

लेखक, श्रीयुत मदनमूर्तिराय

लीना मेरी है बङ्गाली।
इक दिन घर से गई निकाली॥
रूठ के बैठी पेड़ के नीचे।
रोते-रोते कपड़े सींचे॥
गर्दन रूँधी आँखें फूलीं।
लटकी टहनी से जा झूली॥

तब से उतरी एक गिलहरी।
लीना धक से डरकर सिहरी॥
रोती-धोती आँसू बहते।
भागी माँ-माँ गो-गो कहते॥
माँ ने झट से गोद लगाई।
लीना ने डरकर सुख पाई॥

देवताओं में झगड़ा

लेखक, श्रीयुत मोहनलाल नेहरू

महायज्ञ हो रहा था, ऋषि और देवताओं के झुण्ड जमा थे और आते-जाते थे। शिवजी भी बैठे थे। इतने में दक्ष प्रजापति आये। सब सभासद अपने-अपने स्थानों से उठ खड़े हुए और उनका स्वागत किया परन्तु शिवजी न उठे; दक्ष की बेटी सती शिवजी की पत्नी थीं। दक्ष क्रोधवश बोले—

हे सभासदो, सुनो। इस निर्लज्ज शिव ने मेरा तिरस्कार किया है। यह मेरे आने पर अपने स्थान से टला तक नहीं, यद्यपि यह मेरा दामाद है और शिष्य भाव को प्राप्त है। यह बन्दर की-सी आँखें करके मुझे देखता रहा। मुझे दुःख है कि मैंने क्यों ब्रह्मा के कहने में आकर इसे अपनी कन्या दी। मैं यह शाप देता हूँ कि इसे किसी सभा में न बुलाया जावे।

दक्ष के चले जाने पर शिव और दक्ष के अनुचरों में कहा-सुनी होती रही। भृगु ने कहा—"जो कोई शिव का व्रत करे वह पाखण्डी है।"

शिवजी कुछ न बोले और अपने अनुचरों सहित उठकर चले गये और कैलास पर्वत पर अपना काम-काज करने लगे।

कुछ दिन बाद दक्ष प्रजापति ने अपनी राजधानी में एक बड़ा यज्ञ रचा। उस यज्ञ की घोषणा बृहस्पति ने की। दूर-दूर से देवी-देवता बुलाये गये। परन्तु न सती को बुलाया न शिव को। सती ने जब यह सुना और कुछ को विमानों पर जाते देखा, उसने बड़े प्रेम से शिवजी से कहा—"अपने पिता के यज्ञ में, जहाँ ये सब देवता जा रहे हैं, मैं भी जाऊँगी। ये सब देवियाँ अपने पतियों के सङ्ग जा रही हैं, सो आप भी मेरे साथ चलें।"

शिव—मगर तुम्हें तो बुलाया नहीं है। हमसे तुम्हारे पिता द्वेष रखते हैं, इसी से नहीं बुलाया।

सती—पिता के घर का उत्सव सुनक का शरीर भला कैसे चञ्चल न हो। पिता बे बुलाये जाना बुरा भी नहीं है।

शिव—यह तो ठीक है मगर उस वक़ तुम्हें यह विश्वास हो कि वे तुम्हारा ति नहीं करेंगे। तुम्हारे पिता का चित्त ठीक नहीं हम तो कहते हैं कि ऐसे चित्तवाले सम्बन्धी की तरफ़ भूलकर भी न देखना चाहिए।

सती—मगर मैं तो जाना चाहती हूँ जो भी हो।

शिव—वहाँ तुम सम्मान न पाओगी इसका नतीजा अच्छा न होगा।

सती—मैं तो इस उत्सव को ज़रूर देख

शिव—अच्छी बात है, कुछ हमारे आ को लेकर चली जाओ।

सती के पहुँचने पर माँ-बहिनें उससे आ पर्वक मिलीं, और किसी ने उसका आदर न कि उसने देखा शिव का हिस्सा उस यज्ञ में नहीं गया है। इस पर वे क्रोध से लाल हो गईं बोलीं—"सभासदो तथा पिताजी! सारे सं शिवजी से कोई बड़ा नहीं है। भला उन वैर-रहित से तुम्हारे सिवा कौन वैर कर सक तुम लोग दूसरे के गुणों में बुराई देखते ह बहुत नीच बात है। जो शिव की निन्द उसका तो वध कर डालना ही ठीक है और सामर्थ्य न हो तो आत्मघात कर लेना चाहिए वास्ते मैं जीवित नहीं रह सकती। मेरे तन

उठावेंगे कि मैं शिवद्रोही की पुत्री हूँ। होने से मर जाना ही अच्छा। तना कहकर सती यज्ञ-कुण्ड में कूद पड़ीं ड़ी ही देर में जलकर राख हो गईं। यज्ञ- हाहाकार मच गया। शिव के गणों ने वीर-भद्र को नेता बनाकर यज्ञ को भङ्ग कर डाला। दक्ष प्रजापति और उसके पुरोहितों को मार डाला और न मालूम और क्या उपद्रव मचाते, मगर ब्रह्माजी ने शिवजी की स्तुति करके उन्हें अधिक उपद्रव करने से रोक दिया।

चाँद

लेखक, श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव 'प्रकाश'

यह देखो छोटा-सा चाँद।
न्हा-सा मुन्ना-सा चाँद।
कभी मेघ में छिप जाता है,
कौतुक कभी दिखाता चाँद।
कभी निकल मेघों से बाहर,
है प्रकाश फैलाता चाँद।
ाकर कभी धनुष-सा टेढ़ा,
फिर पूरा हो जाता चाँद।
क्या वह तब बच्चा रहता है,
ा घर में रहता वह चाँद?
इसको मामा क्यों हम कहते,
प्यार नहीं जब करता चाँद?
नहीं कहेंगे उसको अब हम,
मेरा प्यारा मुन्ना चाँद।
ध नहीं यह देता हमको,
किन्तु दूध-सा गोरा चाँद!
आसमान से लाकर दे दो,
झको माँ यह गोरा चाँद!!
इसे रखूँगा संग-संग में,
यह भैया-सा प्यारा चाँद!
आ जा मामा चन्दा क्यों तू,
रहा मेघ में है यों फाँद!!

मेरी पतंग

लेखक, श्रीयुत 'अशोक'

भैया ने ख़ुश होकर मुझको
ला दी एक पतङ्ग;
कितना मुझको प्यारा लगता
इसका नीला रङ्ग!
बीचो-बीच बना है इसके
पीले रँग का चाँद,
घने बादलों में ज्यों दिखता,
आसमान में चाँद!
शाम खड़े होकर के छत पर
इसे उड़ाऊँ आज,
ख़ुश होवेंगे सभी देखकर
इसका सुन्दर साज!
उड़ जाने दूँगा मैं इसको—
पल में चन्दा पास;
छू लूँगा मैं यों चन्दा को—
नहीं जो आता पास॥

विचित्र घेरा

लेखक, श्रीयुत राजकुमार सिनहा

अनूप महाराज हरिहरसिंह का पुत्र था। वह एक बलिष्ठ, सुन्दर और प्रसिद्ध तीरन्दाज़ है।

एक दिन वह वन में शिकार खेलने गया, खेलते-खेलते वह वन के बहुत घने भाग में पहुँच गया। शिकार की धुन में उसने इसका कोई विचार न किया। उसने अपने को एक विचित्र स्थान पर पाया। वह विचित्र स्थान एक गोल घेरा-सा था। उसके बाहर जाने का कोई रास्ता न था और न वहाँ कोई पदचिह्न था। अनूप बड़े चक्कर में पड़ा।

अनायास ही उसके कानों में एक मधुर सङ्गीत की ध्वनि सुनाई पड़ी। यह ध्वनि शायद आकाश की ओर से आ रही थी। समय सन्ध्या का था। ठण्डी व शीतल समीर चल रही थी। उसी वायु द्वारा उसे यह सङ्गीत मालूम हुआ। जब हवा के झोंके उसकी ओर आते थे तब उसे यह ध्वनि सुनाई पड़ती।

अनूप ने उत्सुकतापूर्ण अपनी आँखों को आकाश की ओर किया। उसे सुदूर नभ में एक काला-सा धुँधला धब्बा दिखाई दिया।

ज्यों-ज्यों यह काला धब्बा अधिक स्पष्ट होता जाता त्यों-त्यों सङ्गीत का स्वर भी बढ़ता जाता था।

थोड़े समय के बाद उसने एक गोल ग़लीचा तीन परियों से सुसज्जित पृथ्वी पर उतरते देखा। कुछ क्षण बाद ग़लीचा पृथ्वी पर आया।

अनूप तो वहाँ की घास में निःशब्द लेट गया जिसमें कि परियाँ उसे देख न पावें और वहाँ से बिना हिले-डुले ही उनकी कारगुज़ारियाँ देखने लगा।

परियाँ तीन थीं। एक सिर से पैर

लिबास में थीं। इसलिए उसका नाम '

था। दूसरी हरे लिबास में थी, इसलिए

नाम था 'सब्ज़ परी'। तीसरी, जो शायद

छोटी थी, नीली पोशाक में थी। इसलि

नाम 'नीलम परी' था।

परियाँ भूमि पर उतरीं और आपस

कूदने और नृत्य करने लगीं।

इधर अनूप भी मज़े में लेटे हुए सङ्गी

नृत्य का मज़ा ले रहा था। इस प्रकार

व्यतीत हो गया। उसको नीलम परी' बहुत

लगी।

घण्टा व्यतीत होते ही वे लोग ग़

बैठ गईं। नृत्य बन्द हो गया।

सङ्गीत के साथ ग़लीचा उठने लगा और

आँखों से ओझल हो गया।

अनूप के सुख-स्वप्न पर पर्दा पड़ गया

कार ने अपना साम्राज्य संसार पर

था। अनूप को होश-हवास नहीं था।

में नीलम परी ही नाच रही थी। वह

पागलों की तरह चल दिया।

"चाहे जो कुछ हो, नीलम मेरी

होगी।" यह बड़बड़ाता और सोचता

जा रहा था।

× × ×

गगन में प्रकाश फूटा। अनूप उठा

भर उसका मन किसी भी चीज़ में न

सन्ध्या के समय वह किसी अज्ञात शक्ति

होकर उसी घेरे की ओर चल पड़ा।

बाद वह उस घेरे के पास पहुँच गया।

छ मिनटों बाद ही उसे वह ग़लीचा दिखाई र वह लम्बी घासों में लेट गया।

लीचा भूमि से लगा। आज एक विचित्र था। आज तीन परियों के अलावा बारह और थीं जो कि बिल्कुल सफ़ेद पोशाक में र शायद उन परियों की मौसियाँ थीं।

त्य शुरू हो गया। अनूप के सौभाग्य से परी नाचती-नाचती उसके पास आ पहुँची। ने घास से निकलकर उसे पकड़ लिया। कार कि पृथ्वीराज ने संयोगिता-हरण किया सी प्रकार अनूप भी नीलम को घोड़े-ाकर अपने महल भाग आया। उस वक़्त ुशी के मारे पागल हो उठा था।

× × ×

ादी हो गई धूम-धाम से। जीवन बड़ी से व्यतीत हो रहा था। एक वर्ष पलक ही व्यतीत हो गया।

नीलिमा की गोद एक सुन्दर पुत्र से भर अनूप ने उसका नाम नील-मणि रक्खा। ड़े लाड़-प्यार से पलने लगा। उसे वीरता ानियाँ सुनने का बड़ा शौक़ था। अनूप पने शिकार की कथायें सुनाया करता था।

नीलिमा इस गृहस्थी में भूल गई थी कि वह ी है और उसका घर तारों में है। कभी-कभी हिनों और पिता की बड़ी याद आती थी।

एक दिन उसे अपने पिता को देखने की बड़ी हुई। उसने एक ग़लीचा तैयार किया। उसी घेरे में ले गई। उसके कण्ठ से ही सङ्गीत निकलने लगा। ग़लीचा ऊपर लगा और धीरे-धीरे आकाश से जा लगा। इस विचित्र तमाशे को देखकर बड़ा प्रसन्न हो रहा था और माँ की गोद में बैठा तालियाँ पीट रहा था।

संयोग से अनूप वन में शिकार खेलने आया था। एकाएक उसके कानों में सुपरिचित गाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। उसे असमय में गाना सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि समय मध्याह्न का था। वह घेरे की ओर दौड़ा पर वहाँ काले धब्बे के सिवा कुछ न था। वह घर गया, लेकिन नीलिमा को नहीं पाया।

उसे बहुत दुःख हुआ। जितना सुख उसे नीलिमा को पाकर नहीं हुआ उसका चौगुना दुःख नीलिमा को खोकर हुआ।

रञ्ज के कारण उसका खाना-पीना सब छूट गया। वह बीमार हो गया।

महीनों से वर्ष बनते गये और समाप्त होते गये। नीलिमा का कोई समाचार न मिला। वह घेरे में जाता, यह आशा लेकर कि उसकी नीलिमा लौटेगी, लेकिन उसे निराश होकर घर लौटना पड़ता।

नित्य के अनुसार वह आज भी घेरे में गया। उसे एक सङ्गीत सुनाई पड़ा। उसके हृदय में आशा का संचार हुआ कि उसकी नीलिमा आ रही है।

कुछ ही क्षणों बाद उसने एक ग़लीचे को भूमि पर उतरते देखा। उसपर उसकी नीलिमा बैठी हुई थी, साथ में नीलू भी था।

नीलू बड़ा हो गया था, उसकी उम्र ग्यारह-बारह वर्ष के क़रीब थी।

उन दोनों को देखते ही अनूप ने पागलों की भाँति दौड़कर नीलू को गोद में उठा लिया।

× × × ×

वे लोग घर लौट आये।

अनूप का जीवन एक बार फिर सुखमय और आनन्द से परिपूर्ण हो गया।

बेला और अलबेला

लेखक, श्रीयुत कृष्ण सांडल

आज राजकुमारी का जन्म-दिन है। सारे नगर में धूम मची हुई है। सड़कों पर गुलाब-जल का छिड़काव हुआ है। दुकानें सजी हुई हैं। बाजे बज रहे हैं।

राजकुमारी की सवारी निकली। रथ में चार लाल घोड़े जुते हुए थे। रथ पर लाल मखमल मढ़ी हुई थी और राजकुमारी की साड़ी का रङ्ग भी लाल ही था, चमकीला और सुन्दर।

जय की ध्वनि से आकाश गूँज उठा। राजकुमारी पर फूलों की वर्षा होने लगी। बेला, चमेली, गुलाब, जूही। अनेक रङ्ग और सैकड़ों प्रकार के सुन्दर-सुन्दर फूल बिखर गये।

रथ के चारों घोड़े झूमते हुए जा रहे थे, कुछ फूल मालायें एक घोड़े की गरदन पर पड़ीं। वह बिदक गया। सारथी चौंका। उसके हाथ से रास छूट गई। घोड़े बेतहाशा भागने लगे।

कोई घोड़ों को नहीं रोक सका। सिपाहियों के हाथ-पाँव फूल गये। भीड़ छँट गई। सबको अपने-अपने जीवन की चिन्ता थी।

राजकुमारी परेशान-सी रथ में बैठी रही। उसकी जन्म-दिन की उमङ्ग मिट्टी में मिल गई। वह पसीने से नहा उठी। घोड़े उड़े-से जा रहे थे, हवा से बातें करते हुए।

नगर पीछे छूट गया। चारों ओर वन था। सामने नदी आ गई। राजकुमारी का साहस टूट गया। वह चिल्ला उठी—"अरे! कोई बचाओ।"

निकट के पेड़ के पत्ते खड़खड़ा उठे। धड़ाम का शब्द हुआ। रथ रुक गया। राजकुमारी ने विस्मय से देखा, आगे के घोड़े पर एक युवक बैठा है।

राजकुमारी रथ से उतर पड़ी। वह बहुत थक गई थी। उसने युवक को सङ्केत किया। वह भी घोड़े से उतरा। दोनों नदी के किनारे पर जा बैठे।

"मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ।" राजकुमारी

"यह आपकी कृपा है।" युवक बोल

"आज तुमने मेरी जान बचाई।"

"मैंने केवल घोड़ों को रोका था।"

"बहस मत करो।" राजकुमारी ने तुमसे प्रसन्न हूँ; जो चाहो सो माँग लो।"

"जो मैं माँगू सो आप देंगी?" यु किया।

"हाँ, मैं कभी झूठ नहीं बोलती।" ने कहा।

युवक राजकुमारी के रूप पर मोहित था। "आप मुझसे विवाह कर लें।" उसने की।

"तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो कुमारी को आश्चर्य हुआ।

"हाँ।"

"क्या तुम मुझको ऐसे बढ़िया व को दे सकोगे?"

"बजाज़ों की दुकान पर वस्त्रों का नहीं है।"

"तुम मेरे बहुमूल्य गहने देख रहे हो

"राजकोषों में रत्नों की कमी नहीं

"मुझको रहने के लिए महल चाहिए

"महल बनाने के लिए बहुत मज़ सकते हैं।"

"ठीक।" राजकुमारी ने कहा— बेला है।"

"और मेरा अलबेला।" युवक ने

"मैं मायापुरी की राजकुमारी हूँ।

"और मैं डाकूपुरी का सरदार हूँ।"

राजकुमारी ने चौंककर युवक को देखा।

"क्या तुम्हीं प्रसिद्ध अलबेला डाकू हो?"

"हाँ, राजकुमारी।"

"लूटमार करना तुम्हारा पेशा है?"

"मैंने कभी किसी निर्धन को नहीं लूटा।"

"तुम हत्या भी करते हो?"

"केवल अत्याचारियों की। किसी निरपराध मैंने आज तक हाथ नहीं उठाया।"

"पर डाकू डाकू ही है।"

अलबेला चुप रहा।

"मायापुरी की राजकुमारी एक डाकू से विवाह कर सकती।"

"किन्तु आप कभी झूठ नहीं बोलतीं।"

"नीच डाकू! तू मत बक।"

"राजकुमारी, अभिमान का फल बुरा होता है।"

"राजकुमारी बेला नहीं डरती है चोर डाकुओं धमकी से।"

पत्ते चरमरा उठे। राजा के नौकर आ गये। बेला चुपके से खिसक गया। बेला की आँखें को ढूँढ़ती-सी रह गई। राजकुमारी को नौकरों र लिया। चार घोड़े जुते और लाल मखमल ढ़े रथ पर बैठकर राजकुमारी महल को वापस ।

दूसरे दिन की बात है। सारे नगर में कार मचा हुआ है। रात को राजकुमारी के में डाका पड़ा। डाकू सब लूटकर ले गये, ोती, वस्त्र, गहने। उन्होंने कुछ न छोड़ा। जा ने मंत्री को बुलाया। मंत्री ने कोतवाल । कोतवाल ने चारों ओर सिपाही दौड़ाये। का कहीं पता न चला।

ही लौटे, निराश और असफल। ला नहीं पकड़ा गया। कोतवाल ने मंत्री से कहा। मंत्री ने राजा को बताया। राज ने बीच दरबार में बीड़ा रक्खा। उसने घोषणा की-

"जो वीर अलबेला डाकू को पकड़ेगा उसको मैं आध राज्य पुरस्कार में दूँगा।"

अलबेला भयङ्कर डाकू था। उसका सामन कौन करता। किसी ने बीड़ा नहीं उठाया। स वीर चुप बैठे रहे, उदास और अनमने-से। बेल ने पुरुषों की कायरता देखी। उसको क्रोध आ गया। उसने कहा—"तुम लोग चूड़ियाँ पहन लो मैं पकड़ूँगी उस नीच डाकू को।"

राजा ने बेटी को मना किया। मन्त्री ने राज कुमारी को समझाया। बेला ने किसी की न सुनी उसने कमर में तलवार बाँधी, घोड़े की पीठ प बैठी और जङ्गल को चल दी। वह आज अवश डाकू को पकड़ेगी।

घोड़ा बेला को ले उड़ा। नगर पीछे छू गया। जङ्गल आ गया। बेला ने घोड़े को एक पे से बाँध दिया। कङ्कड़ और काँटों के बीच वह पैदल आगे बढ़ी।

सामने नदी आ गई। बेला ने देखा, ब पत्थर है। उस पर अलबेला बैठा है, बेसुध-सा वह कुछ सोच रहा है अपने विचारों में खोया-सा

बेला ने तलवार खींच ली। अलबेला को कु पता नहीं। बेला ने उसके कन्धे को तलवार छू दिया। अलबेला चौंक उठा। उसने देख सामने राजकुमारी खड़ी है।

"डाकू, अब तू मेरा बन्दी है," बेला ललकारा।

अलबेला ने सिर झुका दिया।

"चलो मेरे साथ," बेला ने आज्ञा दी। ब आगे-आगे चली और अलबेला उसके पीछे, जै पालतू शेर हो।

“दुष्ट चोर, तेरा बल चोरी करने में ही समाप्त गया।” बेला ने अलबेला को धिक्कारा। “अब झको लज्जा नहीं आई। एक लड़की के हाथ न्दी बना है।”

“आप मायापुरी की राजकुमारी हैं”, अलबेला कहा—“मैं डाकूपुरी का सरदार हूँ। आपके रता नगरों पर शासन करते हैं। मैं वनों का राजा। आप यहाँ अकेली हैं। क्या आप इन पेड़ों को गन सकती हैं। मेरे चार-चार आदमी छिपे हुए एक-एक वृक्ष के पीछे।”

“मत बको।” बेला ने डाँटा।

अलबेला चुप हो गया। दोनों राजसभा में हुँचे। राजा ने बेटी की सफलता देखी। वह हर्ष फूल उठा। राजकुमारी की वीरता देखकर वीरों ा सिर नीचा हो गया।

“क्या तुमने राजकुमारी के महल पर डाका ला था?” राजा ने अलबेला से प्रश्न किया।

“डाला था।”

“तुमको इसका दण्ड मिलेगा।”

अलबेला चुप खड़ा रहा।

“इसने अनेक हत्यायें भी की हैं।” मंत्री ने ताया।

“तुम्हारा अपराध भीषण है;” राजा ने कहा—‘तुमको मृत्युदण्ड दिया जाता है।”

अलबेला चुप रहा। वह एकटक बेला की ओर देख रहा था।

और बेला सोच रही थी, यदि अलबेला रथ न रोकता तो घोड़े नदी में कूद पड़ते। मैं मर जाती। अलबेला ने मुझको मरने से बचाया। अब अलबेला को मरना पड़ेगा। वह काँप उठी।

“सेनापति, ले जाओ इस डाकू को।” राजा ने आज्ञा दी—“कल सूर्योदय के समय इस दुष्ट को कर्मों का फल देना।”

“ठहरिए।” बेला ने कहा।

“क्यों?”

“उसको प्राण-दण्ड न दीजिए। उस जीवन-रक्षा की थी।”

“नहीं, इस दुष्ट डाकू को प्राण-दण्ड मिलेगा।”

“वह मेरा बन्दी है।”

“हाँ। तुमने उसको पकड़ा था।” रा स्वीकार किया।

“बन्दी, मैं तुमको मुक्त करती हूँ।” ने कहा।

“बेला, तेरा यह साहस!” राजा उबल पड़ा—“सेनापति, दोनों को पकड़ लो।”

अलबेला ने देखा, राजकुमारी का मुख से लाल है। अलबेला ने लपककर राजकुमा गोद में उठा लिया। सेनापति मूढ़-सा देखता बेला और अलबेला घोड़े पर बैठकर ग़ायब हो

मायापुरी में कोलाहल मच गया। बादल छा गये। बेला और अलबेला ड पहुँचे। वहाँ हर्ष का समुद्र उमड़ पड़ा।

“यही तुम्हारी गद्दी है?” बेला ने प्रश्न

“हाँ, राजकुमारी।” अलबेला ने कहा।

“मैं तुम पर प्रसन्न हूँ।”

“पर मैं डाकू हूँ।”

“कोई हानि नहीं।”

“मेरे पास बढ़िया वस्त्र नहीं हैं।”

“बजाज़ों की दूकान पर वस्त्रों का अभाव

“मेरे पास बहुमूल्य अलङ्कार नहीं हैं।

“राज-कोषों में रत्नों की कमी नहीं है

“मेरी गद्दी टूटी-फूटी है। यहाँ आप योग्य महल नहीं।”

“महल बनाने के लिए बहुत मे सकते हैं।”

"ठीक है। पर लूट-मार करना मेरा पेशा है।"

"तुम निर्धनों को नहीं लूटते हो।"

"मैं हत्यारा हूँ।"

"पर किसी निरपराध पर तुमने आज तक नहीं उठाया।"

"किन्तु डाकू डाकू ही है। मैं नीच, हत्यारा र दुष्ट हूँ।"

"बको मत। राजकुमारी बेला कभी झूठ ीं बोलती। मैं तुमसे विवाह करूँगी।"

अलबेला ने ताली बजाई। उसके अने अनुचर प्रकट हो गये। अनुचरों ने विवि सामान राजकुमारी के चरणों में बखेर दिय हीरे, मोती, वस्त्र, अलङ्कार। शादी के बा बज उठे।

अलबेला ने डाका डालना छोड़ दिया। अ डाकूपुरी का नाम है बेलापुरी। बेलापुरी की रा बेला है और राजा अलबेला।

इञ्जन

लेखक, श्रीयुत अमरनाथ 'महेन्द्र'

भक-भक करता इञ्जन आता।
धूएँ का बादल फैलाता॥
पानी पीता खाकर आग।
भाप बनी तब निकला भाग॥ १॥
डिब्बे बीस जुड़े हैं इसमें।
नर-नारी बैठे हैं जिसमें॥
बिस्तर बंडल ट्रङ्क अनेक।
भारी हैं सब एक से एक॥ २॥
सीटी गार्ड ने दी दो चार।
सभी मुसाफ़िर हुए सवार॥
सीटी इञ्जन ने तब दी।
भक-भक कर गाड़ी चल दी॥ ३॥
इञ्जन कितनी मेहनत करता।
देश-देश मुझको ले चलता॥
मैं भी मेहनत ख़ूब करूँगा।
जग की सेवा किया करूँगा॥ ४॥

चन्दा

लेखक, श्रीयुत कृष्णलाल वर्मा

अम्मा-अम्मा चन्दा आया।
तारों को पर सङ्ग न लाया॥
उजला-उजला दूध सरीखा।
मीठा होगा दूध सरीखा॥
चख लूँ ला दे थोड़ा मुझको।
कैसा मधुर बताऊँ तुझको॥
क्यों न शीघ्र ही तू है जाती?
बात समझ क्या तुझे न आती?
सीढ़ी रखकर ऊपर चढ़ जा।
एक कटोरा पूरा भर ला॥
यदि सीढ़ी छोटी है माता।
तो विमान क्या वहाँ न जाता॥
अगर न जाना तुझे सुहाता।
मैं भी तेरे पास न आता॥
बाबूजी से मँगवा लूँगा।
तुझे जरा सा भी ना दूँगा॥

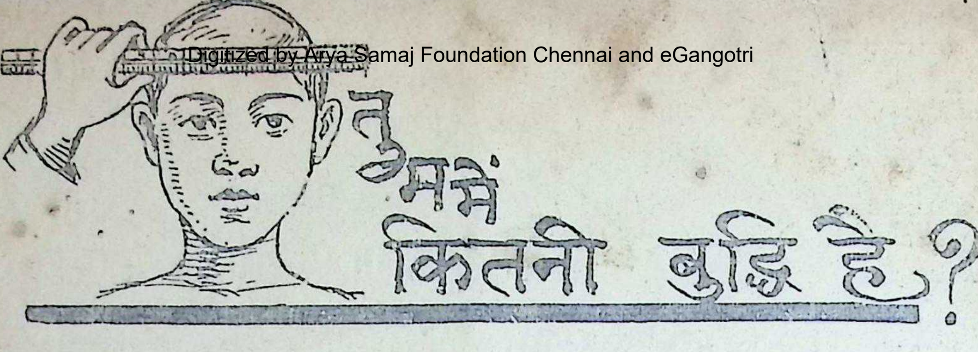

तुममें कितनी बुद्धि है?

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी "व्रजेश", मिर्ज़ापुर

नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके सही
त्तर निकालिए और अपने उत्तरों को अन्यत्र दिये
ए सही जवाबों से मिलाइए। सबका उत्तर निका-
ने का समय १० मिनट से १२ मिनट तक का है।

—(क) एक शिकारी ने एक पेड़ पर, जिस पर
स चिड़ियाँ बैठी थीं एक चिड़िया बन्दूक़ से मारी
बताओ अब उस पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ बचीं।

(ख) एक धोती को सूखने में बीस मिनट
गते हैं तो पाँच धोतियाँ अगर एक साथ फैला
जायँ तो कितना अर्सा लगेगा?

(ग) दो पेड़ों के बीच का फ़ासला २ फ़ुट
तो ५१ पेड़ों के बीच का फ़ासला कितना होगा?

(घ) चार ऐसे बटखरे बताओ जिससे एक
र सें लेकर एक मन (४० सेर) की तौल हो
य। तौल पूरी-पूरी होनी चाहिए।

—बतलाइए—

(क) भारत के क्रमवार पाँच बड़े शहरों के
म बताओ।

(ख) यहाँ किस शहर में सबसे अधिक
र्मी और किस जगह सबसे अधिक ठण्ड पड़ती है?

(ग) भारत का वह कौन-सा शासक हुआ
सने गद्दी पर बैठने के पूर्व अपने पिता को क़ैद
र लिया और अपने भाई को मरवा डाला?

(घ) अकबर के दरबार के नवरत्न कौन-
न थे? और उसका विवाह किसके साथ हुआ?

—नीचे कुछ सही व ग़लत बातें लिखी जाती
उनका ठीक-ठीक पता लगाओ—

(क) जब हम स्वप्न देखते हैं तो वह
देर तक मालूम होता है।

(ख) रेडियो में समाचार आने में
अर्सा लगता है।

(ग) भूकम्प शेषनाग के साँस लेने से आ

(घ) सूर्य चौबीस घण्टे घूमता है।

(ङ) पृथ्वी पर कहीं न कहीं बराबर
रहता है।

४—(अ) नीचे कुछ प्रश्न हैं। इनके कई उत्त
ठीक उत्तर बतावें—

जूता इसलिए पहना जाता है।

(क) कि वह पाँव की हर एक बात से
करता है।

(ख) क्योंकि आजकल का फ़ैशन है।

(ग) उससे पैर की शोभा बढ़ती है।

(आ) टहलने की आदत इसलिए डालनी चा

(क) क्योंकि इससे मनोरञ्जन होता है

(ख) बाहरी चीज़ें व भाँति-भाँति के
से मुलाक़ात होती है।

(ग) स्वास्थ्यप्रद होता है।

(इ) सुबह स्नान इसलिए करना चाहिए—

(क) क्योंकि सोकर उठने से शरीर
हो जाता है।

(ख) क्योंकि स्नान न करने से आल
निद्रा बनी रहती है।

(ग) शरीर में स्फूर्ति नहीं रहती।

(घ) शरीर व स्वास्थ्य के लिए हि
होता है।

किय का फल

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

एक गाँव में धनीराम नाम का एक काछी ा था। उसके खेत में खूब तरकारियाँ पैदा थीं। हर एक तरह की तरकारी उसने अपने में लगा रक्खी थी। उसी गाँव में एक कुम्हार ा था। उसका नाम शेखशाह था। धनी और शाह में बड़ी दोस्ती थी। शेखशाह मिट्टी के तन और खिलौने बड़े सुन्दर बनाया करता था। ों एक जगह उठते-बैठते थे। धनीराम का स्वभाव त सीधा था। उसके सीधेपन के ही कारण सर उसे लोग बनाया करते थे। लेकिन धनीराम का कभी बुरा न मानता था। वह बूढ़ों में बूढ़ों सा और लड़कों में लड़कों का-सा व्यवहार ता था।

एक दिन दोनों अपने-अपने काम-काज की बात- कर रहे थे। शेखशाह कहता था—"धनीराम, रे आजकल बरतन खिलौने कुछ बिकते नहीं" धनीराम भी यही कहता कि मेरे खेत में बहुत ारी पैदा होती है, पर गाँव में बिक्री नहीं होती। बिना घर का काम नहीं चलता।

कुछ सोचकर शेखशाह ने धनीराम से कहा— लो, एक दिन दोनों आदमी शहर चलकर अपनी- नी चीज़ें बेचें।" धनीराम ने शेखशाह की बातें मानते हुए कहा—"कहते तो तुम ठीक हो। र शहर चला जाय तो सचमुच बड़ा लाभ हो ता है।"

शेखशाह ने कहा—"हमारी बात में फ़ायदा नहीं हुआ? जब कभी तुमने हमारी बात मानी को फ़ायदा हुआ और जब मानोगे तब तुमको ा होगा।"

धनीराम ने कुछ हँसकर कहा—"हँसी की बात छोड़ो। अगर चलने का इरादा हो तो साफ़ साफ़ बताओ।"

शेखशाह ने ज़ोर से कहा—"क्या मैं हँसी करता हूँ और भी तुमसे कभी हँसी की है या आज ही करूँगा?"

धनीराम ने कहा—"तो फिर बताओ क चलोगे।"

शेखशाह—जब चलो, हमको क्या?

धनीराम—तो फिर तैयारी करनी चाहिए।

शेखशाह ने कहा—"तैयारी ही क्या करनी है घर में सामान सब तैयार है ही। किराये पर ए ऊँट कर लेंगे। उसी में हम और तुम दोनों अपना अपना सामान रख लेंगे और आधा-आधा किराय दे देंगे।"

धनीराम ने कहा—"तो फिर कहीं से एक ऊँ किराये पर ले आओ, उसी पर खुगीर लगाक उसमें एक तरफ़ मैं तरकारियाँ रख लूँगा औ दूसरी तरफ़ तुम्हारे बरतन और खिलौने र लूँगा।" दूसरे दिन शेखशाह एक ऊँट किराये प ले आया। उसके खुगीर बाँधी गई। एक तर धनीराम ने अपनी तरकारियाँ लादीं और दूस तरफ़ शेखशाह ने अपने मिट्टी के खिलौने बर्त भर लिये। धनीराम ऊँट की नकेल पकड़कर आगे आगे चला और शेखशाह ऊँट के पीछे-पीछे शेखशाह यह सोचता जाता था कि मेरे बर्तन बहु हैं, धनीराम की तरकारी से दुगुने दामों में मेरे बर्त बिकेंगे। यह सोच-सोचकर वह मन ही मन प्रस हो रहा था।

कुछ दूर चले जाने के बाद शेखशाह ने देख कि ऊँट अपनी गरदन मोड़-मोड़कर धनीराम क

रकारी खाता जा रहा है। वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसको खाते हुए हम क्यों रोकें, ायदा धनीराम का होगा और पाप हमको लगेगा। जसके भाग्य में जितना होता है उतना ही मिलता । धनीराम की तरकारी में जो ज़्यादा होगा और ो न बदा होगा वह न मेरी कोशिश से मिल कता है और न किसी के दिलाने से मिल सकता और जो उसको बदा होगा, जो उसका भाग्य ा होगा वह कहीं नहीं जाता।

शेखशाह खोटी तबीयत का आदमी था। वह नेक प्रकार की बातें सोचता जाता था और मन े मन कहता जाता था—"बेवकूफ़चन्द चले हैं माने। तरकारी सब ऊँट बीच में खाये जाता है।"

शेखशाह समझता था कि मैं मज़े में हूँ। धनी-ाम की तो तरकारी है, उसे ऊँट खा सकता है। रे तो बर्तन हैं उन्हें कैसे खायगा।

ऊँट ज्यों-ज्यों तरकारी खाता जाता था, नीचे की तरफ़ झुकते जाते थे। धीरे-धीरे त कारी कम हो गई तो दूसरा तरफ़ का हिस्सा दम भारी हो गया और धड़ाम से सड़क प जिससे शेखशाह के खिलौने और बर्तन स चूर हो गये।

यह देखकर शेखशाह को बड़ा क्रोध लेकिन वह करता ही क्या। अपने इस नुक़स लिए अफ़सोस करने लगा।

ऊँट के तरकारी खा जाने से यद्यपि ध का बहुत नुक़सान हो गया था, फिर भी बहुत तरकारी बच गई थी। शहर प धनीराम ने तरकारी बेच ली और कुछ दाम भी कर लिये, पर शेखशाह का तो एक भी समूचा न बचा था जिसे वह बेच लेता। वह हाथों घर लौटा।

पृष्ठ १०८ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

–(क) एक भी चिड़िया नहीं बची–क्योंकि बन्दूक़ ी आवाज़ सुनकर और सब चिड़ियाँ वहाँ से उड़ गईं।

(ख) बीस ही मिनट लगेगा।

(ग) १०० फ़ुट।

(घ) एक बटखरा एक सेर का, दूसरा तीन र का, तीसरा नौ सेर का और चौथा सत्ताइस र का होना चाहिए।

–(क) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, लाहौर।

(ख) जकोबाबाद व गुलमर्ग।

(ग) औरङ्गज़ेब।

(घ) बीरबल, टोडरमल, अबुलफ़ज़ल, फ़ैज़ी, तान-न, मानसिंह, अब्दुलरहीम खानखाना (रहीम कवि)।

अकबर का विवाह राजपूत राजा भगवानदास ी बेटी से हुआ।

—(क) झूठ। घटनाओं को देखते हुए तो म काफ़ी देर तक दिखते हुए मालूम पड़ते हैं— पर वास्तव में कोई भी स्वप्न एक-दो मिन अधिक नहीं रहता।

(ख) झूठ। रेडियो की तरङ्गें १८५०० प्रति सेकेंड चलती हैं अतः कुछ भी समय नहीं ल

(ग) झूठ। वैज्ञानिकों का यह कहना है ि पानी ज़मीन के अन्दर जाता है तो फिर वह पाकर नीचे की गर्मी से भाप होकर पृथ्वी को देकर ऊपर आता है। इसी से भूकम्प आता

(घ) झूठ। सूर्य अचल है।

(ङ) सच। चूँकि पृथ्वी घूमती है उसका जो भाग सूर्य के सामने आता है वह उजाला रहता ही है।

४—(अ) क्योंकि वह पाँव की हर एक व रक्षा करता है।

(आ) स्वास्थ्यप्रद होता है।

(इ) शरीर व स्वास्थ्य के लिए हितकर हो

पीसेगा कौन ?

लेखक, श्रीयुत 'अनन्य' विशारद

किसी ग्राम में रहता ठाकुर एक निठल्ला ।
धनाभाव के कारण घर नित होता हल्ला ॥
एक रोज़ ठकुराइन उसकी बोली झल्ला ।
"ज़ेवर सब बिक गये हाथ में रहा न छल्ला ।"
ठाकुर को चुभ गई बात यह ठकुराइन की ।
उसी रोज़ चल दिये कमाने पूरे पिनकी ।
चीज़ें ले लीं साथ ज़रूरत थी जिन-जिनकी ।
हुक्का, लोटा, डोर, अमल ले ली दो दिन की ।
साँझ हुई तब पास गाँव का नाम नहीं था ।
बरगद का इक पेड़ कुएँ के पास वहीं था ।
उसी पेड़ के तले डालकर झोली-झण्डा ।
जङ्गल में से बीन लिये कुछ लकड़ी-कण्डा ।
सुलगाई तब आँच, पिया कुछ पानी ठण्डा ।
ले अफ़ीम, भर चिलम, सँभल बैठे ले डण्डा ।
रात अँधेरी बादल छाये आसमान में ।
ठाकुर होकर मस्त लीन हो गये गान में ।
उस बरगद में रहता था इक दानव काना ।
अर्ध रात्रि को उतर लगा वह सुनने गाना ।
ठाकुर बोला 'कौन ?' मिला उत्तर 'मैं दाना' ।
ठाकुर ने भी कड़क कहा—"मैं तेरा नाना" ।
हाथ जोड़कर, दानव बोला "सेवक मैं तो ।
न पावें श्रीमान यहाँ ही यदि खोदें तो ।"
ठाकुर बोला अकड़ "कौन खोदेगा कह तो ।
या समझा है मुझे, ज़रा ठहरा तू रह तो" ।
"भूल हुई", दानव बोला—"खोदूँगा मैं ही ।
चलिए घर है कहाँ वहीं रख दूँगा मैं ही ।
भेजूँगा प्रति मास नाज भी अबसे मैं ही ।
धन भी दूँगा और, चार चरवे ये हैं ही ।"
मिला एक दिन उस दानव को उसका साला ।
पूछा—"क्यों है रङ्ग पड़ा चेहरे का काला ?"
भय से चारों ओर दनुज ने देखा भाला ।
कह डाला फिर सारा क़िस्सा नाना वाला ।
साले ने हँस कहा—"आप धोखे में आये ।
इक अफ़ीमची से ही तुम इतना डर खाये ।
मैं जाता हूँ मगर द्वार तो बन्द पड़े हैं ।
बिल्ली बनकर घुसूँ काम कब रुके अड़े हैं ।"
ठाकुर के घर उधर एक बिल्ली आती थी ।
दूध-दही वह नित्य सफ़ाचट कर जाती थी ।
ठीक जिस समय पहुँचा वह दानव का साला ।
खींचा फाँसा ठकुराइन ने उस पर डाला ।
डण्डे ताबड़तोड़ लगे, देखा ना भाला ।
चिल्लाया—"यह तो मैं हूँ काने का साला ।
दूँ अनाज या आटा, यही पूछने आया ।
जिसकी सज़ा अनेकों मैंने डण्डे पाया ।"
ठकुराइन ने भौंह चढ़ाकर ऐसा डाँटा ।
"पीसेगा रे कौन ? भेजना होगा आटा ।"
जीजा के जा पास काम को ऐसे बाँटा ।
"देना आप अनाज पिसा दूँगा मैं आटा ।"

प्रार्थना

लेखक, श्रीयुत मधुरमोहन अवधिया 'विक्रम'

सुनो प्रार्थना हे भगवान् ।
मुझे बना दो वीर महान् ॥
हो न भले विद्या, धन, मान ।
बनूँ देश की पर सन्तान ॥

भारत माँ की रक्खूँ शान ।
करूँ बड़ों का मैं सम्मान ॥
रक्खूँ देश का मैं नित ध्यान ।
यह हो पूजा, यह हो ध्यान ॥

दानी अक्ल

लेखक, श्रीयुत मनमोहन खडूरी

हमारे देश में रुपये-पैसे के विषय में अधिक तर्क, चालाक और जुगतनी आदि का ख़िताब ासकर एक ही जाति को विशेष प्राप्त है। उसे सभी ानते हैं। इन्हीं में से ला० चमनलाल पैदायशी , फिर पैसा इकट्ठा करने में उन्हें क्या देरी ? पर नके रुपये इकट्ठे करने का एक अजीब ही तरीक़ा ा जो उनकी विशेष बुद्धिमत्ता का परिचय था। ालाजी अभी अधेड़ भी नहीं हुए थे कि उनकी ूपवती लड़की 'शामी' ब्याहने योग्य हो गई। चिन्ता माता-पिता को होनी चाहिए। पर रोज़ रवाज़े पर एक से एक मेहमानों की भीड़, लड़की को देखने, ब्याहने को लगी रहती, जिससे लालाजी ी लड़की की शादी की फ़िक्र, पैसे कमाने की फ़िक्र में बदल गई। अब उन्हें सूझा—लड़की के रिए इन सब गंजों को लूटा जाय और जीवन र के लिए कमाया जाय। बस, यही काम शुरू ुआ। एक-दो महीने और तीन-चार साल बीते, ड़की की शादी न हुई और न जाने कितनों से पया ले शादी का ख़र्च जमाकर टाँवा दे भगा भी देया। काफ़ी रुपया जमा हो गया होगा।

बहुत दिनों से लालाजी की दृष्टि शहर के ड़े अमीर कलाल के लड़के पर लगी थी, जो हाल ी में बाहर किसी 'विश्वविद्यालय' से आया था। कलाल को भी लड़के की शादी की चिन्ता थी, फिर पढ़े-लिखे लड़के के लिए होनी भी उसी की योग्य और पसन्द की चाहिए। लड़के को भी 'शामी' युवती पसन्द आई। सचमुच वह सुन्दरी थी, पर लालाजी ने अपना अड़ङ्गा सामने रक्खा—रिश्तेदार मेरे राज़ी नहीं, पर यदि पहले शादी का पूरा ख़र्च और बारात के साथ न कम न ज़्यादे, ठीक सौ जवान हों, न बूढ़े न बच्चे, बस जवान। इस पर लोग कुछ घबड़ाये अवश्य, पर बूढ़े कलाल के कानों में जब बात पड़ी तो उसने सबको ललकारा—"बच्चो, कुछ दाल में ज़रूर काला है। ली जायगी, घबड़ाओ नहीं।"

शादी का दिन आया। सौ जवान तैया पूरे एक सौ। बूढ़े कलाल ने भी अपने को एक में छिपा उनका साथ दिया। वह भी चला लड़की के घर। बड़ी धूम-धाम थी के घर। अच्छा स्वागत हुआ बारात का। रा बजे ठीक मुहूर्त्त के वक़्त लालाजी ने बीच अपनी ख़ास शर्त रक्खी—आप जानते हैं रिश्तेदारों की इच्छा के विरुद्ध यह शुभ रहा हूँ, पर वे अब एक शर्त पर राज़ी हैं। पूरी हो सकेगी तभी मैं लड़की दूँगा और है—"हम सौ जवानों के लिए, सौ पसेरी भेजेंगे। उसे यहीं खाना होगा, नहीं तो—। जवान घबड़ाये हुए दौड़े सन्दूक़ के पास हाल बूढ़े कलाल को जा सुनाया। बूढ़े ने उन्हें दिया, और हँसा—"यही है लड़कों की बात ड़ाओ नहीं, सब ठीक होगा। हाँ, कह दो, अपने पास ले आना, सब बीच में आग चारों ओर बैठ जाना, और फिर मुझे पूछना

सौ जवानों के चेहरों पर ख़ुशी ना थी, और दुलहा बस, फूला नहीं समाया के कुप्पा बना जाता था। खाना आया; धूनी रमा चारों ओर सौ जवान बैठे, बूढ़े के पास चुपके दौड़ा। उत्तर मिला—" पसेरी की रोटी बनाओ, फिर उसको बाँटकर इसी तरह एक, दो, दस, बीस और पूरी ख़तम हो जायगी।" उन्होंने ऐसा ही किया सब साफ़। अब लाचार होकर बेचारे लाला चमनलाल को अपनी एकमात्र कन्या ' शादी बिरादरी को छोड़, जाति से बाहर कला के साथ करनी पड़ी। ख़ुद बिरादरी से अलग यह नफ़े की रही, और चालाकी का फल

क्या कौवे भी मनुष्य को पहचानते हैं?

लेखक, श्रीयुत ज्ञानचन्द्र जैन

जानवरों और पक्षियों के बारे में कोई बात नने का मुझे बड़ा शौक़ है। मैंने खरगोश, कबूतर, रण तथा तरह-तरह की रङ्ग-बिरङ्गी चिड़ियाँ—ता-मैना, बत्तख—और कुत्ते इत्यादि पाले हैं। नके बारे में अनेक नई बातें मालूम की हैं। पर बसे विचित्र बात मुझे कौवों में दीख पड़ी है। इससे हले मैंने किसी भी कौवे को किसी भी मनुष्य के स आते नहीं देखा। पर एक दिन मैं अपने मकान ी छत पर खड़ा था। प्रातःकाल कोई आठ जे का समय होगा। क्योंकि बम्बई में जाड़ा ल्कुल नहीं होता ौर सुबह की वायु हुत अच्छी लगती , इसलिए ऊपर ड़ा-खड़ा समुद्र का ज़ा भी ले रहा ा। मेरे घर के ामने पार्क है। ार्क में एक बड़ा ड़ है।

उस समय मैंने खा कि उस पेड़ र सैकड़ों कौवे बैठे हैं और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला हे हैं जैसे कि कोई किसी के आने की राह ख रहा हो।

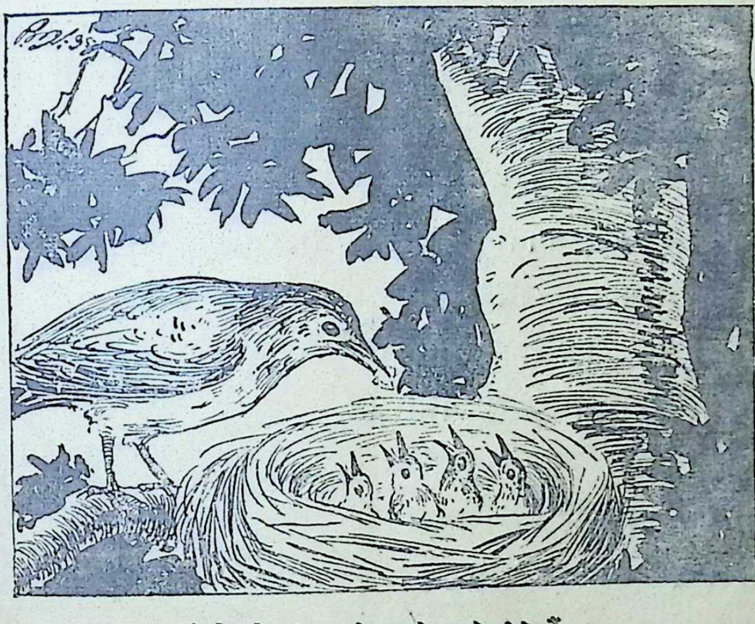

कौवों को भी अपने बच्चे प्यारे होते हैं।

पार्क के पास ही यहाँ का बन्दरगाह है। ुबह को हज़ारों की संख्या में मज़दूर वहाँ काम करने जाते हैं। उन मज़दूरों में से एक मज़दूर, जिसका नाम शंकर है, रोज़ उस पेड़ के नीचे से हो जाता है। वर्ष में या तो रविवार को या छुट्टी दिन और अगर कभी बीमार पड़ जाता तभी गैरहाज़िर होता था, नहीं तो रोज़ ही मैं उस देखता हूँ।

वह अपने साथ कागज़ में खाने की कोई च लाता है। उसको देखकर दूर से ही कौवे मचाना शुरू कर देते हैं और वह पेड़ के कोई आधा मिनट खड़ा होता है। चारों तरफ़ कौवे उसे घेर लेते हैं। कोई-कोई तो उसके पर भी बैठ ज है और वह मिनट के बाद ह वाली चीज़ गिरा देता है। फिर वहाँ रुकता और उस वस्तु को दम खा-पीकर जाते हैं। थोड़ी देर में फिर भी कौवा दिख नहीं पड़ता है।

इस मनुष्य से मिलने की मेरी बड़ी इच्छा उसने बताया कि मैं दस वर्ष से रोज़ ही इन्हें खि हूँ। मैंने कभी इन्हें हानि नहीं पहुँचाई। ये मु नहीं डरते, और मुझे पहचानते भी हैं। यह सुनक सोचने लगा कि क्या कौवे भी मनुष्य को पहचानते

सारनाथ की यात्रा

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबली सिंह, बी० ए०

'बाल-सखा' के अधिकांश पाठक सारनाथ के
म से परिचित होंगे। बहुतों ने सारनाथ की यात्रा
की होगी। सारनाथ भारतवर्ष का बहुत ही
चीन स्थान है। आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व
त्मा बुद्ध ने यहाँ आकर अपने मत का प्रचार
या था। क़रीब छः सौ वर्ष तक इस स्थान को
ग नहीं जानते थे। १८वीं सदी से यह स्थान
र दिन पर दिन अपनी प्राचीन मर्यादा को ग्रहण
ता जा रहा है।

सारनाथ नाम क्यों पड़ा? प्राचीन युग में
रनाथ को ऋषिपतन या मृगदाव नाम से पुकारा
ता है। फ़ाह्यान का कहना है कि एक भिक्षु ने
ँ निर्वाण पाया था। इसी से इसका नाम ऋषि-
न पड़ गया। दूसरी कहानी कुछ मज़ेदार-सी है।
ते हैं, अपने किसी जन्म में बुद्ध भगवान् मृगों
राजा थे। उनके मृग जङ्गल में इधर-उधर घूमा
ते थे। बनारस के राजा बड़े शिकारी थे और
मृगों का शिकार किया करते थे। यह बात
ों के राजा को अच्छी नहीं लगी। अतएव उन्होंने
ा से यह तै कर लिया कि वे मृगों का शिकार
करेंगे और उनकी सेवा में एक मृग रोज़ भेज
ा जायगा। राजा इस बात पर राज़ी हो गये
र उनके पास एक मृग रोज़ जाने लगा। एक
एक मृगी की बारी आई। वह गर्भवती थी।
ने मृगों के राजा से अपनी रामकहानी कह
ाई और कहा कि मुझे राजा के पास जाने में
ी भी डर नहीं है, किन्तु एक निरीह और अजात
ु की हत्या का पाप होगा। मृगों के राजा ने
बात को ध्यान से सुना और फिर प्रसन्नचित्त
शी के राजा के पास पहुँचे। राजा को बड़ा
चर्य हुआ। उन्होंने बोधिसत्त्व से उनके आने
का कारण पूछा। बोधिसत्त्व ने सारा
सुना दिया। यह सुनकर राजा को बड़ा
हुआ। उन्होंने तुरन्त ही कहा—"मनुष्य
में मैं मृग हूँ और मृग के भेस में आप मनु
मृग का शिकार उसी दिन से बन्द हो गया
मृग स्वछन्दतापूर्वक विहार करने लगे।
कहा जाता है कि सारनाथ सारङ्गनाथ से
जिसका अर्थ होता है 'मृगों के राजा'। सार
शिव को भी कहा जाता है। इसका प्रमाण
वहीं स्थित शिव का एक मन्दिर भी है।

सारनाथ पहुँचने के पहले ही एक ऊँचा
मिलता है जिसे चौखण्डी कहते हैं। इस चौ

सारनाथ का स्तूप

के ऊपर चढ़ जाने पर चारों तरफ़ का दृश्य
ही सुन्दर दिखाई देता है। बनारस में औरङ्ग
की बनाई मसजिद की दो मीनारें ऐसी सी
दिखाई पड़ती है मानो दोनों एक हों।

सारनाथ में जैन और बौद्ध मन्दिर भी बन गये जो बहुत ही सुन्दर हैं। वहाँ से बहुत-मूर्तियाँ वग़ैरह निकली हैं। किसी भी यात्री वहाँ जाने पर इन भग्नावशेषों को अवश्य खना चाहिए। इन्हें देखने से प्रत्यक्ष विदित होता है कि सारनाथ किसी समय एक सुन्दर स्थान। यह बौद्ध धर्म का केन्द्र था और अपनी शिक्षा सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था। अशोक की लाट अग्रभाग यहीं पड़ा हुआ है। पत्थर की ी-बड़ी चट्टानों से मालूम पड़ता है कि यह स्थान भा-मण्डप का काम देता था। कन्नौज की रानी ारदेवी का मठ अपने ढङ्ग का निराला ही बना आ है। एक मठ में तो सुरङ्ग का रास्ता बना या है। इसके अन्दर जाने से बड़ा आनन्द लता है।

चीनी यात्री फ़ाह्यान का कहना है कि उसके य में सारनाथ में दो मठ थे, जहाँ भिक्षु रहते । हेन-चाँग का कहना है कि उसके समय में डेढ़ हज़ार भिक्षु वहाँ रहते थे। उसका उल्लेख है—वहाँ एक सुन्दर मन्दिर भी था जिसमें बुद्ध भगवा

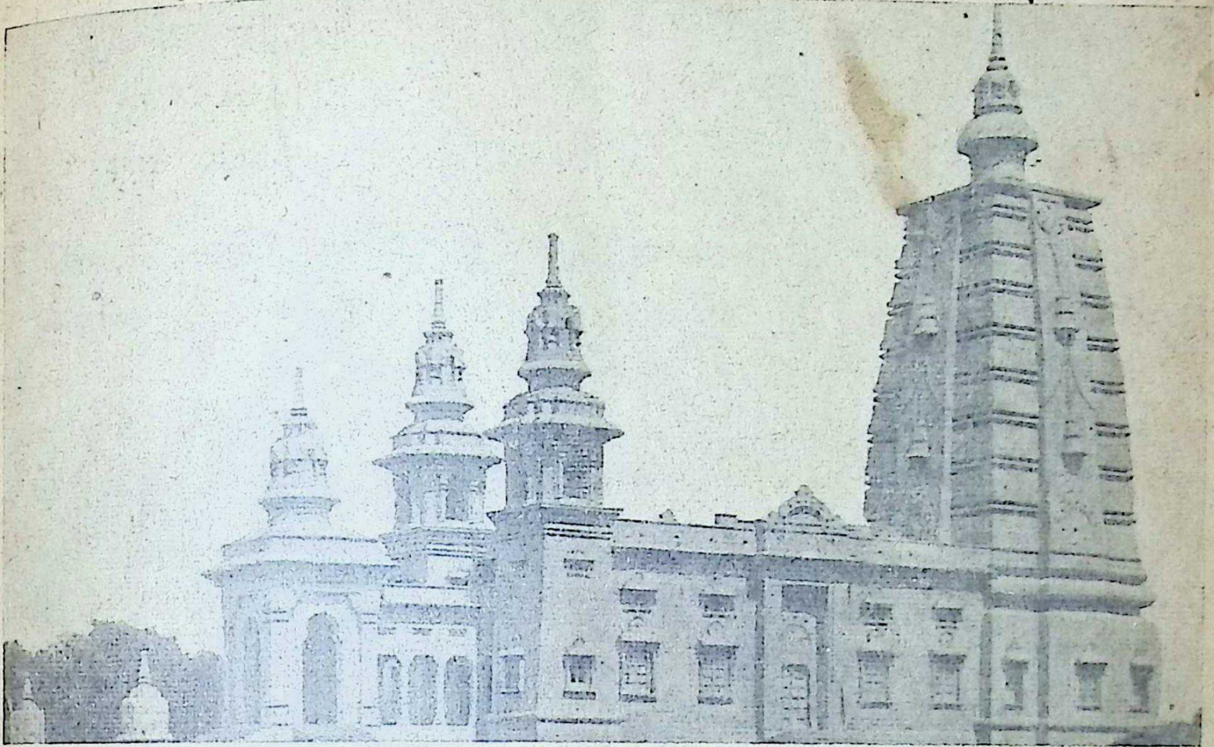

सारनाथ में मूलगन्ध कुटी विहार, बनारस

की एक बड़ी विशाल मूर्ति थी और वहाँ पर अशो का एक स्तम्भ भी था। इस वर्णन से साफ़ माल होता है कि बीचवाला मठ ही वह मठ है।

स्तूप उस समय की प्राचीन यादगार हैं मिस्र के पिरामिड की तरह ये स्तूप भी स्मृति में बनाये गये। धमेख स्तूप एक बहुत ही ऊँ स्तूप है। इसमें बुद्ध भगवान् की हड्डियाँ वग़ै रखकर बनाया गया है। स्तूप के ऊपर तर तरह की कारीगरी दिखाई गई है। उस पर भी बु भगवान् के जीवन-चरित्र का वर्णन बना है। ध चक्र का चलाना हर जगह दिखाया गया है।

सारनाथ की मूर्तियों और स्तूपों तथा अ भग्नावशेषों से यह विदित होता है कि भारत शिल्प-कला और पच्चीकारी कितनी उन्नति पर थी

सारनाथ की सारी वस्तुयें और वैभव अ ढङ्ग पर बराबर चला आया। समय काफ़ी बी

है फिर भी सारनाथ को देखने से मालूम है कि इसकी दुर्दशा समय के साथ-साथ

सारनाथ में अशोक के स्तम्भ का ऊपरी भाग

आक्रमणकारियों ने की। उन्होंने बहुत-से जला दिये और बहुत-सी मूर्तियाँ तोड़ डालीं।

बाल-सखाओं को चाहिए कि वे अपनी छु के अवसर पर सारनाथ अवश्य जायँ और जाकर उसके वर्तमान तथा प्राचीन स्मारकों देखें। यह भी देखें कि प्राचीन समय में की क्या दशा थी, अब क्या हो गई है। इति आप पढ़ते हैं। सारनाथ जाकर देखिए। आप

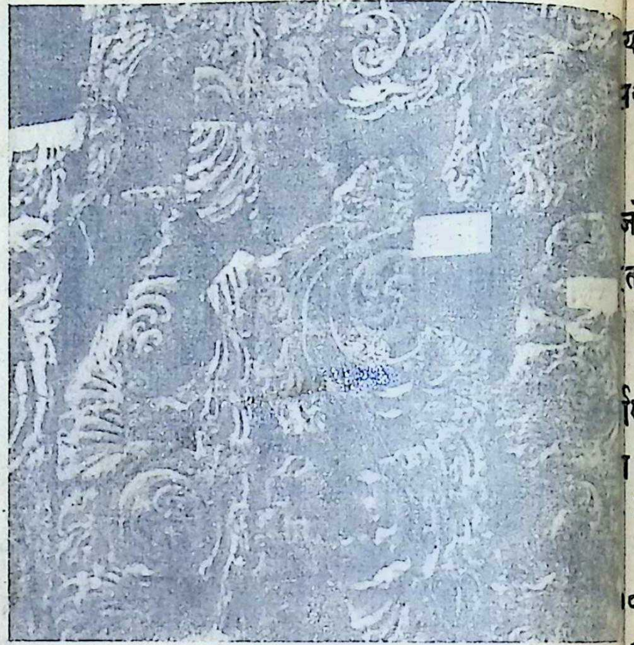

सारनाथ की पुरानी सङ्गतराशी का एक नमूना।

मानें, आपको सच्चा इतिहास पढ़ने को मिलेगा। पाठ को आप कभी भूल न सकेंगे। आपके हृद इसकी अमिट छाप पड़ जायगी। आपको यह हो जायगा कि जिस बौद्ध धर्म का अवशेष ऐसा है उसका जीवित रूप क्या रहा होगा!

विद्यालय को

लेखक, श्रीयुत शान्तिनन्दन, एम० ए०

हुआ सवेरा किरणें आईं।
पढ़ने की शुभ वेला आई॥
ख़ुश-ख़ुश लड़के दिये दिखाई।
पट्टी-पोथी सभी उठाई॥
कपड़े पहने सुन्दर उजले।
अपने-अपने घर से निकले॥

बड़ी ख़ुशी के साथ उछलते।
हिल-मिल बातें करते चलते॥
लो, विद्यालय वह अब आया।
शान्त भाव सबने दिखलाया॥
नाम ईश का सबने गाया।
तब गुरु का निज पाठ सुनाया॥

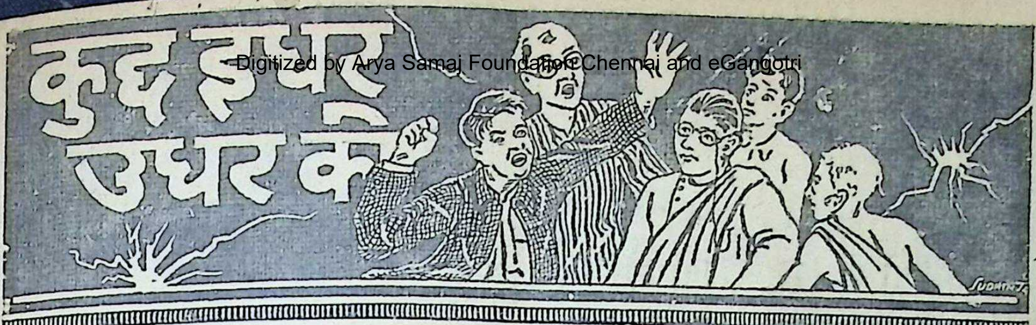

कुछ इधर उधर के

एक आविष्कारक ने ऐसा आविष्कार ईजाद या है कि एक केमरे से एक फोटो लेने पर की कई अवस्थाओं का फोटो आ जाता है।

× × × ×

एक वैज्ञानिक ने ऐसा आईना तैयार किया जो बोलता है। यह किसी चीज़ का विज्ञापन ता है।

× × × ×

एक विश्वविद्यालय के एक अध्यापक ने ऐसा मीटर बनाया है जो आनेवाले दिन का ताप सकता है।

× × × ×

संसार की कुल भाषायें ७२०० हैं जिनमें ०० भाषायें बोली जाती है। शेष मृत भाषायें २७०० में से अँगरेज़ी भाषा मुख्य है। अँगरेज़ी बाद चीनी भाषा सबसे ज़्यादा बोली जाती है।

× × × ×

रेवरेंड इरविन मून नामक उपदेशक जब ख्यान देता है तो अँगुलियों में ऐसे दस्ताने पहन है जिनसे व्याख्यान देते वक्त अँगुलियों में आग निकलती दिखाई पड़ती है।

× × × ×

मेडागास्कर के पास जुआनडीनोबा नामक में कुत्तों का राज्य है।

× × × ×

ब्रिटेन में पुलिस की टोपी पर वायरलेस सेट रहता है, जिससे पुलिस को बाहर की खबरें अफ़सरों की आज्ञा सुनने में आसानी हो गई है।

× × × ×

अमरीका के नेशनल पार्क में ३९ हज़ार साल पुराना वृक्ष है। उसकी जड़ों का व्यास ३५ फ़ीट व ऊँचाई २०० फ़ीट है। इसकी लकड़ी ३ रेल के डिब्बों में भरी जा सकती है।

× × × ×

फ़्रांस के एक वैज्ञानिक ने ऐसे नक़ली बाद बनाये हैं जो सारे पेरिस शहर को १५ मिनट ढक लेते हैं। हवाई आक्रमण होने पर सारे बादल द्वारा गगन को छा लेते हैं।

× × × ×

आजकल गाजर बहुत आ रहा है। जब ह गाजर खाते हैं तब जीभ और मुँह नीला प जाता है। हाथ भी नीले अथवा बैंगनी हो जा हैं। परन्तु यदि ऊपर से नीबू खाइए अथवा हा पर नीबू का रस लगाइए तो फ़ौरन् ही लाल-सा हे जायगा। तब फिर साबुन से हाथ धोने पर नीले नीले हो जायँगे। इसका कारण यह है कि क्षार स तो रस नीला और अम्ल से लाल हो जाता है पीली हल्दी साबुन लगाने पर लाल हो जाती है।

× × × ×

जाड़े में सर्द मुल्कों में पानी जम जाता है पर जीव-जन्तु क्यों नहीं मरते? इसका कारण यह कि पानी की केवल ऊपरी सतह ही जम पाती है बाक़ी पानी तरल ही रहता है। चाहे कितन ही सर्दी क्यों न पड़े, १४° सी० से कम ताप होने प ठण्डा पानी हल्का होता जाता है और हल्का पान नीचे नहीं जाता और ऊपर से ही जमकर रह जात है। इस लिए नीचे का पानी तरल ही रहता है।

बर्फ़ यद्यपि पानी से ठोस होता है पर पानी स हल्का होता है और यदि एक गिलास का पानी जम दिया जाय तो बर्फ़ गिलास से अधिक बनेगा औ यही कारण है कि बर्फ़ पानी पर तैरता है।

—देवेन्द्रकुमार

परिमल के जीवन का पहला दिन

लेखक, श्रीयुत 'शरद'

सुनहला प्रातःकाल था। पूरब में लाल द-सा सूरज निकल रहा था। रात की ओस री-हरी घास पर मोतियों-सी मालूम होती थी। वृक्ष या फूलों पर पड़ी ओस पर जब उगते सूर्य की रण पड़ती तो मालूम होता कि चाँदी का चमक-र वर्क़ लगा है। हर पेड़ से चिड़ियाँ फुदक-दककर चहचहा रही थीं। मक्खियाँ यहाँ-हाँ उड़कर भनभनाने लगी थीं। यह सब देखकर तली बेचारी से न रहा गया। वह भी उड़-उड़-र फूलों से खेलने लगी।

उसी बग़ीचे में एक बड़ी सुन्दर तितली रहती ी। उसके बड़े-बड़े काले पङ्खों पर कहीं-कहीं सफ़ेद हीं पीले-सुनहले निशान बने थे, जो देखने में ड़े सुन्दर लगते। वह बड़ी शान से उड़ती-उड़ती क नीले फूल के चारों ओर मँडराने लगी। उसका ाम परिमल था।

वह उसी नीले फूल पर बैठ गई। पर पीछे-से ानि कैसी? मालूम हुआ जैसे पीछे से कोई धीरे-धीरे ा रहा है। तितली ने मुड़कर देखा एक लड़का था। ह लड़का अवश्य ही उस बेचारी परिमल को तङ्ग रने आ रहा है। पाँव के नीचे पड़े हुए फूलों को ह लड़का बड़ी निर्दयता से कुचल देता था। उस ड़के को देखकर परिमल एकाएक डर गई। वह तो भाग सकी, न उड़ सकी। वह इतनी डर गई ी कि उसका शरीर जैसे अकड़ गया हो। परिमल मझ गई कि अब उसका जीवन बहुत थोड़ा है। ह अब मार डाली जायगी, क्योंकि वह लड़का सी ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उसके हाथ में क छड़ी थी जिसके एक सिरे पर एक जाल बँधा ा। जब लड़का बिल्कुल पास आ गया था तो रिमल ने समझ लिया कि अवश्य ही बालक उसे पकड़ने को आ रहा है। अन्त में उस बाल उसके ऊपर जाल रख ही दिया। वह जा फँस गई। वह रोती हुई बालक से बोल 'मुझे इतनी जल्दी मत मारो, मुझे छोड़ मैं आज पहली बार इस बग़ीचे में आई थी। आज बहुत ख़ुश थी। कृपा करके मुझे छोड़ तुम मुझे मारकर क्या पाओगे, बल्कि प्रकृति सुन्दरता ही नष्ट कर दोगे।

महेन्द्र ने परिमल को पकड़ लिया और अपने हाथों में दबा लिया। इस समय का चेहरा ख़ुशी से खिला हुआ था क्यों परिमल उन सभी तितलियों से अधिक सुन्दर जिन्हें उसने पहले पकड़ा है।

महेन्द्र ने उत्तर दिया—"तुमको मैंने अब लिया है। अब तुम्हें मैं अपने तितलियों के में पिन से जड़ दूँगा और सभी मित्रों को दिखाऊँगा।"

यह शब्द सुनकर परिमल काँप गई। होश उड़ गये। उसने भगवान् से मनाया कि विपत्ति के पहले ही वह मर जाय तो अच्छा उसने सोचा अवश्य ही पिन अब उसकी पीठ चुभाई जायगी।

"अरे भगवान," वह रोकर बोली—" मृत्यु दो; मेरे ऊपर दया करो।"

तभी ज़ोरों से जाल उसके ऊपर से उठा झट परिमल निकलकर भागी। बात यह थी महेन्द्र की छोटी बहन सरला दौड़ती हुई बा आई और बोली—"महेन्द्र, तुम यहाँ क्या कर हो—बाबू तुम्हें कितनी देर से ढूँढ़ रहे हैं। अभी चाय भी नहीं पी न।"

"अरे सरला," महेन्द्र चिल्लाया—"जल्दी आओ, खो मैंने क्या पकड़ा है।"

वह तेज़ी से दौड़कर वहाँ आई और देखा—री परिमल क़ैद थी। वह अपना पङ्ख फड़फड़ा थी।

"तुम बड़े ख़राब हो।" कहकर सरला महेन्द्र का हाथ हिला दिया और परिमल उड़ गई।

इस तरह परिमल वहाँ से भागकर एक वृ पर जा बैठी। वह महेन्द्र के जाल से छूटकर ब ख़ुश हुई।

सोते फूल

लेखक, श्रीयुत राधेश्याम अग्रवाल

हो जाती जब रात चाँदनी।
किरण फैल हैं जातीं॥
चाँदी की सी चादर को हैं।
धरती पर फैलाती॥
तब आता है मेरे जी में।
निकल बाग़ में जाऊँ॥
खेलूँ सोते फूलों के सँग।
पास में उन्हें जगाऊँ॥
पर माँ कहती, 'नहीं रात में।
फूलों के ढिग जाते॥
तुम तो दिन में सो सकते।
पर फूल न सोने पाते॥
बहुत थक गये हैं बेचारे।
दो उनको तुम सोने॥
जिससे वे खिल सकें सवेरे।
सुन्दर फूल सलोने॥'

मेरी मा

लेखक, श्रीयुत देवीराम, जी० पी० आर०, सिहावा

मुझको सब से बढ़कर माता।
मुझे झुलाती मुझे हँसाती।
मुझे छोड़ वह कहीं न जाती॥
देख उसे मैं नित हर्षाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
मुझे सुलाती मुझे जगाती।
गोदी में ले मुझे खिलाती॥
सभी तरह से मैं सुख पाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
रात और दिन एक बनाती।
दौड़-दौड़कर वैद्य बुलाती॥
रोग अगर हो मुझे सताता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
नये-नये कपड़े बनवाती।
खेल-खिलौने ख़ूब मँगाती॥
मेरा मन उनमें लग जाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
चाहे विपदो सिर पर आती।
मुझे देख वह ख़ुशी मनाती॥
मा-बेटे का प्यारा नाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥

बड़े लोगों का बचपन

गाउस

लेखक, श्रीयुत देवेन्द्र शर्मा, एम० एस-सी०

शनिवार की सन्ध्या थी। सूरज छिपने जा ा था। एक आदमी पेड़ के नीचे बैठा मज़दूरों हफ़्ते भर की मज़दूरी का हिसाब लगा रहा । उसे यह पता न था कि उसका ढाई-तीन वर्ष लड़का पास ही बैठा हुआ है। हिसाब कर ने पर पिता ने चकित होकर बच्चे को कहते ा—'पिताजी, हिसाब ग़लत है।' और जाँच ने पर मालूम हुआ कि बच्चे का कहना ठीक था।

मालूम है यह बच्चा कौन था? यह जर्मनी एक किसान का लड़का था, और आगे जाकर णित का एक बहुत बड़ा विद्वान् हुआ। इसका म गाउस था।

जब वह सात वर्ष का हुआ तो उसे पाठशाला ा गया। मास्टर साहब की मार से लड़के इतने ते थे कि कभी-कभी वे अपने नाम भी भूल जाते। ले दो वर्ष में बालक ने कोई विशेषता न दिखाई। वर्ष का होने पर उसने हिसाब् पढ़ना शुरू या। एक दिन मास्टर साहब ने एक लम्बा-जोड़ का सवाल दिया। वह कुछ इस तरह था।

२९३+८१४९१+८१६८९+···+१००८९५

सौ संख्याओं को जोड़ना है, और हर संख्या ने पहले वाली से १९८ अधिक है।

स्कूल का क़ायदा था कि सबसे पहले सवाल । नेवाला अपनी स्लेट को उलटकर मास्टर रिमल मेज़ पर रख देता था। दूसरा लड़का अपनी स्लेट पहली स्लेट के ऊपर रखता; और तीसरा, चौथा इत्यादि इसी तरह करता। मा साहब अभी सवाल को पूरा भी न कर पाये थे बालक गाउस स्लेट को मेज़ पर रखते हुए बोला 'यह लीजिए।' और लड़के घण्टे भर तक जो रहे। उधर मास्टर साहब बीच-बीच में इस स छोटे लड़के को घूर लेते थे। वे समझते थे सबसे मूर्ख है।

घण्टे के अन्त में जब स्लेटें देखी गईं गाउस की स्लेट पर केवल एक संख्या थी, वही सही उत्तर था और सब के उत्तर ग़लत इस तरह के जोड़ों के करने का एक ख़ास तरी है। एक बार जान लेने पर वह बहुत आसान जाता है। पर अभी तो मुझे वह तरीक़ा याद न आ रहा है। क्या कोई छोटा भाई पता लगा बतावेगा।

मास्टर साहब को अपने शिष्य की योग्य पर बड़ा अचरज हुआ, और ख़ुशी भी। बि किसी से सीखे हुए उसने वे संख्यायें जोड़ डाल अब मास्टर साहब कम से कम अपने एक शि पर दयालु हो गये, और उसकी आगे की पढ़ाई सहायता दी। बड़ा होने पर गाउस कहा कर था कि उसने बोलना सीखने से पहले हिसा सीखा था।

माँ को अपने लड़के से बहुत आशा थी।

वह १९ वर्ष का था तो एक दिन माँ ने उसके एक साथी से पूछा कि क्या उसका लड़का कुछ कर सकेगा। साथी ने उत्तर दिया—"योरप का सबसे बड़ा गणित का विद्वान् होगा।" और ख़ुशी के मारे माँ के आँसू निकल पड़े।

एक दिन बैरन हम्बोल्ट ने फ़्रेञ्च गणितज्ञ काउंट लाप्लास से पूछा—"जर्मनी का सबसे गणित का विद्वान् कौन है?"

लाप्लास ने उत्तर दिया—"फ़फ़।"

"और गाउस?" हम्बोल्ट ने पूछा।

"ओह," लाप्लास बोला—"वह तो संसा सबसे बड़ा गणितज्ञ है!"

चिड़ियाँ

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव

बहुत सबेरे उठकर चिड़ियाँ।
    अपना गीत सुनाने लगतीं॥
मेरे घर में आ-आ करके।
    वे हैं मुझे जगाने लगतीं॥
उनके मीठे गीतों को सुन।
    भला कौन फिर सो सकता है॥
उनकी चूँ-चूँ को सुन करके।
    सारा जग झट-पट जगता है॥
ये चिड़ियाँ हैं बड़ी सलोनी।
    सारे जग से ये न्यारी हैं॥
दिन भर घर में आती रहतीं।
    मुझे बहुत ही वे प्यारी हैं॥

क्या ?

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारनाथ अग्रवाल, प्रयाग

माँ कहती है रात जा चुकी।
    सोओ बेटे प्यारे॥
पर कहते हैं 'हमको देखो'।
    टिम-टिम करते तारे॥
सारी रात जागते रहते।
    नींद न इनको आती॥
इनकी माँ क्या नहीं इन्हें भी।
    सोने को कह जाती॥
क्या इनकी दुनिया में दिन है।
    बनता रात अँधेरी॥
जब ये नहीं दिखाई देते।
    करते नभ में फेरी॥

रमेश का भाग्य

लेखक, श्रीयुत ओमप्रकाश बंसल

रमेश की उम्र बारह साल की थी। उसके -पिता बहुत ग़रीब थे। उन लोगों को दोनों भरपेट भोजन भी प्राप्त न होता था।

एक बार रमेश अपने बाप के साथ रेलगाड़ी पने गाँव लौट रहा था तो उसे रेलगाड़ी द लगी और वह वहीं सो गया। एक स्टेशन ाड़ी रुकी और रमेश का बाप पानी लाने के नीचे उतर गया। रमेश का बाप पानी न ला था कि अचानक गाड़ी चल दी और रमेश ाप वहीं रह गया। थोड़ी देर बाद रमेश ींद खुली तो वह अपने बाप को न देख बका-सा रह गया। उसने पास बैठे मुसाफ़िरों से अपने बाप के बारे में पूछा तो ोले कि वे स्टेशन पर रह गये हैं। रमेश ससे बहुत दुःख हुआ परन्तु वह साहसी था ए रोया नहीं और हिम्मत करके तेज़ी से ो हुई गाड़ी से कूद पड़ा।

रेलगाड़ी से कूदते ही रमेश कुछ देर के लिए े में आ गया। थोड़ा देर बाद, जब उसे आई तो उसे एक धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी। ताज्जुब से चारों तरफ़ देखा तो थोड़ी दूर क सुनहला मेढक दिखाई पड़ा। रमेश मेढक स गया तो मेढक बोला—"प्यारे बच्चे! ओ नहीं, सुनो, मैं तुम्हारी ग़रीबी दूर का रास्ता बतलाता हूँ। यह लो मेरा और मुकुट और यहाँ से थोड़ी दूर जाओ मको एक साफ़ तालाब मिलेगा। तुम उसमें के नहाना तब एक सुनहली मछली तुम्हारा कड़ लेगी तब तुम उस मछली को ये मुकुट और पत्र दे देना। वह पत्र पढ़कर तुम्हें रास्ता बतला देगी। फिर तुम, वह जहाँ कहे वहीं चले जाना।"

मेढक की बात मानकर रमेश चल पड़ा। वह तालाब के पास जल्दी ही पहुँच गया। उस तालाब में स्नान किया तो एक सुनहली मछली उसका पाँव पकड़ लिया। तब रमेश ने उसे मेढक का मुकुट तथा पत्र दे दिया। पत्र पढ़क मछली बोली—"रमेश! तुम यहाँ से एक मील जा तब तुम्हें घास-फूस की एक कुटी मिलेगी। तुम उ कुटी के अन्दर निडर होकर चले जाना। वहाँ प एक जटाधारी बाबाजी समाधि लगाये ये बैठे होंगे तुम उनके पास जाकर धीरे से उनका शरीर लेना तो वे उठ पड़ेंगे। तब उन्हें तुम मेरा यह दे देना और वे तुम्हें रास्ता बता देंगे।"

रमेश को कुटी तक पहुँचने में आधा घण् लगा। वह कुटी के अन्दर धड़ाके से घुसा च गया और उसने बाबाजी को छू दिया। बाबाज उठ पड़े और उन्होंने लाल-लाल नेत्रों से रमेश घूरा। तब रमेश ने बाबाजी को मछली का दे दिया और भोजन के वास्ते प्रार्थना की। सुनह मछली का पत्र पढ़कर बाबाजी को रमेश पर द आई और उन्होंने रमेश को कुछ कन्द मूल खाने को दिये, जिन्हें खाकर रमेश तृप्त हुआ थोड़ा सुस्ता लेने के बाद बाबाजी ने रमेश को से की गुफा का रास्ता बतलाया जो उनके आस के नीचे ही था।

रमेश गुफा के अन्दर गया और उसने अपन धोती में जितना सोना आ सकता था उतना भरा जब वह गुफा से लौट रहा था तो अचानक

पत्थर गुफा की ऊपरी दीवार से रमेश के ऊपर गिरा जिसकी चोट से रमेश बेहोश हो गया। पत्थर गिरने की आवाज़ सुनकर बाबाजी गुफा के अन्दर गये तो उन्होंने रमेश की दीन दशा देखी। बाबाजी को रमेश की दीन दशा पर दया आई और उन्होंने रमेश को सोने की गठरी के साथ अपने जादू के बल से उसके घर पहुँचा दिया।

जब रमेश की नींद खुली तो उसने को घर में पाया जिससे उसे बहुत आश्चर्य परन्तु वह बाबाजी की कृपा समझ गया। रमेश ने यह सब हाल अपने माता-पिता को सु तो वे बहुत ख़ुश हुए। उस दिन से रमे घरवालों की ग़रीबी दूर हो गई और रमेश बा को कभी न भूला।

करेले-मूली का ब्याह

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर मालवीय श्री बालविनोदी

शकरकन्द न्योते में आई।
मूली का है ब्याह॥
दूल्हा बना करेलामल है।
और धरे सिर बाह॥

लौकी ले तुरही झट आई।
धुतू तुतू की ज़ोर॥
ढम्म-ढमा-ढम बजा नगाड़ा।
कटहलमल का घोर॥

टिम्मिक-टिम्मिक बजा मजीरा।
खीरामल का ख़ूब॥
पी, पी, पी, शहनाई करते।
मियाँ चुक़न्दर फूँक॥

भाटा, आलू और टमाटर।
बने बराती ठेठ॥
चले शान से चढ़ घोड़ों पर।
बरातें भर पेट॥

कुम्हड़ामल चढ़ बैठे हाथी।
मटका-सा ले पेट॥
समधी थे, वे लड़केवाले।
भारी-भरकम सेठ॥

बिगड़ा तभी बरात का हाथी।
मारी एक चपेट॥
बोला एक पड़ाका ऐसा।
कुम्हड़[illegible] का पेट॥

[illegible] तितर-बितर बारात हो गई।
भागा चारों ओर॥
बिन ब्याहे रह गये करेला।
किया सभी ने शोर॥

जादू का शर

लेखिका, कुमारी लीला श्रीवास्तव

महेन्द्रपुरी नामक नगरी में एक राजा राज्य था। उसका नाम था चन्द्रसेन। चन्द्रसेन ज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी। महेन्द्रपुरी में ल नामक एक गाँव था। उस गाँव में एक रहता था। वह धोबी एक बहुत निपुण र समझा जाता था। उसने बङ्गाल जाकर री की कला सीखी थी। लोगों को वह अपने खेल दिखाकर अपनी जीविका निर्वाह था। उसका नाम बहुत दूर-दूर तक फैला लेकिन उसकी स्त्री धोबिन को उसकी जादू- के ऊपर विश्वास नहीं होता था।

एक दिन धोबी तमाशे दिखाकर जल्दी घर आया। धोबिन ने सोचा कि आज का अच्छा है। आज धोबी की जादूगरी देखनी ए। ऐसा सोचकर वह धोबी से बोली— तो तुम्हें अवकाश है; ज़रा हमें भी अपनी त दिखाओ। सब लोग तो तुम्हारी बड़ी करते हैं। ज़रा हम भी देखें उसमें क्या सच झूठ।"

धोबी ने अपने मन में सोचा कि यह धोबिन मेरे ऊपर विश्वास नहीं करती और मेरे खेल हमेशा झूठा समझती है। [illegible] इसे ऐसी देनी चाहिए कि भविष्य में [illegible] कभी उसे पर अविश्वास करने का मौका न मिले। सोच वह धोबिन से बोला—[illegible], आज हैं अपना खेल तो दिखाऊँगा ही लेकिन पहले तुम अच्छी तरह सोच-समझ लो तो फ़िर पछताओगी। मैं जैसा कहूँ ठीक ही करना होगा। और हाँ, तुम घबड़ाना भी नहीं। नहीं तो जहाँ तुमने कुछ भी की तो सब की जान का ख़तरा हो जायगा।"

धोबिन ने अपने पति की सभी बातों मंज़ूर कर लिया और यह भी कहा कि वह डरे नहीं। फिर धोबी ने उसे एक मुट्ठी सरसों ला की आज्ञा दी। जब सरसों आ गई तो धोबी उसके दो हिस्से किये। फिर उसने सरसों हा में लेकर कुछ मन्त्र पढ़ा। पढ़ने के बाद उस सरसों के दोनों हिस्सों को अपनी स्त्री के दोनों हा में रख दिया और उससे कहा कि पहले वह दाहि हाथ का सरसों उसके ऊपर छिड़के। तत्पश्चा पाँच मिनट के अन्तर में वह बायें हाथ का सरसों भी उसके ऊपर छिड़क दे। धोबी ने अपनी स्त्री को अच्छी तरह समझा दिया कि वह डरक भागेगी नहीं, अन्यथा सब गड़बड़ हो जायगा।

फिर धोबी ने पूछा—"तैयार।" धोबिन ने उत्त दिया—"हाँ।" और कहने के साथ ही अपने दाहि हाथ का सरसों धोबी के ऊपर फेंक दिया। सरसों के पड़ते ही धोबी एक बड़े भयङ्कर सिंह के रूप बदल गया। पहले तो धोबिन नहीं डरी किन्तु जब सिंह ने बड़े ज़ोर की दहाड़ मारी तो वह भय भीत होकर ज़ोरों से भागी। सरसों उसके हाथ से रास्ते में ही गिर गये। फिर क्या था, व सिंह घर से निकलकर बाहर घूमने लगा। कोई भी उसे रास्ते में मिलता उसे फाड़कर जाता। उसकी दहाड़ सुनकर सब लोग थर- काँपने लगते थे। इस तरह से वह गाँववा को बहुत तङ्ग करने लगा। लेकिन किसी इतनी हिम्मत न थी कि वह उससे मुक़ाबला करे

गाँववाले उससे बहुत तङ्ग आ गये। को परिवार ऐसा न बचा जिसके व्यक्ति को सिंह न मार डाला हो। होते-होते यह उपद्रव यहाँ बढ़ा कि उसकी ख़बर राजा के पास पहुँची। रा

अपने सिपाहियों को उस सिंह को मारने की ाज्ञा दी, किन्तु कोई राज़ी न हुआ। अन्त में राजा अपने राज्य भर में यह घोषणा करवा दी कि कोई वीर उस सिंह को मारेगा उसे मैं इनाम में हुत-सा धन और अपनी राजकुमारी को दे दूँगा। हुत-से वीर इस कार्य में तत्पर हुए किन्तु स महावीर सिंह ने सबको मृत्यु के घाट तार दिया।

राजा की घोषणा की ख़बर चन्द्रनगर के एक ाजकुमार को लगी जो राजा चन्द्रसेन की लड़की विवाह करना चाहता था। उसने सिंह से मुक़ा-ला करने का निश्चय किया और उस सिंह की ज में हथियारों से सुसज्जित होकर निकल ड़ा। चलते-चलते वह एक वन में पहुँचा। वहाँ से एक आदमी मिला। उसने राजकुमार से पूछा कहाँ जाते हो? राजकुमार ने उसे सब हाल ता दिया। उस आदमी ने राजकुमार से कहा क यदि तुम मुझे बहुत-सा धन दो तो मैं तुम्हें स सिंह को मारने का उपाय बता दूँ। राजकुमार ज़ी हो गया। तब उस आदमी ने राजकुमार को क मोती दिया और कहा कि जब सिंह सामने आवे तुम इस मोती को अपने मुँह में रखकर तब उस र वार करना। ऐसा करने से सिंह तुम्हारा भी न कर सकेगा।

राजकुमार ने बहुत-सा धन देकर उस आद को बिदा कर दिया और मोती लेकर आगे बढ़ा

दूसरे दिन राजकुमार उस जङ्गल को पार क एक दूसरे घने जङ्गल में पहुँचा। थोड़ी दूर चलने प उसे एक भयङ्कर सिंह दहाड़ता हुआ आता दिख दिया। राजकुमार पहचान गया कि यही वह सिं जिसे मारने के लिए घोषणा की गई है। उस मोती को मुँह में रख लिया और आगे बढ़ा राजकुमार को देखकर ज्योंही सिंह उसके ऊ झपटा कि राजकुमार ने खींचकर तलवार वार किया। सिंह घायल होकर पृथ्वी पर गि पड़ा। राजकुमार ने जब तलवार का दूसरा हा चलाया तो सिंह का काम तमाम हो गया।

सिंह को मारकर राजकुमार राजा चन्द्रसे के दरबार में पहुँचा और उसे सब हाल सुनाया। सिंह के मरने की ख़बर पा राजा ख़ुश हुआ। जब उसे मालूम हुआ कि सिंह का करनेवाला चन्द्रनगर का राजकुमार है तो और भी प्रसन्नता हुई। उसने बड़ी धूम-धाम राजकुमार के साथ अपनी राजकुमारी का विव कर दिया। राजकुमार जब चलने लगा तो राजा बहुत-सा धन देकर दोनों को बिदा किया। अप देश में आकर राजकुमार राजकुमारी के साथ सु से रहने लगा।

अभिलाषा

लेखिका, कुमारी शैलबाला सकलानी

निज पथ पर मैं चलती जाऊँ!
चाहे कितनी बाधा आयें॥
मुझको आ-आ अरे सतायें।
कभी न विचलित मग से होऊँ॥
और कभी ना मैं घबराऊँ।
उत्साही वीरों से अपनी॥
मुर्दों में जीवन भर लाऊँ।
मानवता की रक्षा के हित॥
हँसते-हँसते बलि-बलि जाऊँ।
निज पथ पर मैं, चलती जाऊँ॥

बच्चों का कमरा

प्यारा भइया

लेखिका, श्रीयुत राजकुमारी सत्संगी

भइया मेरा प्यारा है।
आँखों का यह तारा है॥
भइया ने है पहनी टोपी।
जिसमें टँका है सुन्दर मोती॥
भइया की जब चली बरात।
बाजा बजता सारी रात॥

मेरा भाई

लेखक, श्रीयुत तिलककुमार सिसौदिया

कमल मेरा छोटा भाई।
दूध-जलेबी खाता है॥
उसका प्यारा तुतलाना भी।
मेरे मन को भाता है॥

मेरी रेल

लेखक, श्रीयुत ज्वालाप्रसाद खेतान

धर धर ईंट
बनाई रेल;
हमने रचा
अनोखा खेल

ए[illegible] में
मारा धक्का,
सब ईंटों का
छूटा छक्का !

खड़ खड़ खड़ खड़
छूटी रेल,
ईंट गिर गईं
टूटी रेल।

पतङ्ग

लेखक, श्रीयुत रामावतार हुरकट "सुधीर"

सर सर सर करता जाता।
नभ की सैर तुरत कर आता॥
कई रँगों का मैं हूँ आता।
सब बच्चों का मन बहलाता॥
लेने को सब दौड़े आते।
चीड़-फाड़कर मुझे गँवाते॥
उड़ा न तब वे मुझको पाते।
थककर तभी बैठ हैं जाते॥
कट जाता तो शोर मचाते।
छोटे बच्चे दौड़ न पाते॥

मेरा मुन्नू

लेखक, श्रीयुत छोटेलाल सरावगी

मुन्नू मेरा छोटा भाई,
बड़ा ऊधमी बड़ा उपाई।
कहीं बैठ मैं पुस्तक पढ़ता,
तो मुन्नू भी झट आ अड़ता।
शाला से जब पढ़कर आता,
भैया कह वह मुझे बुलाता।
जब मैं कहीं घूमने जाता,
वह भी पीछे है लग जाता।

प्रश्नपहेली

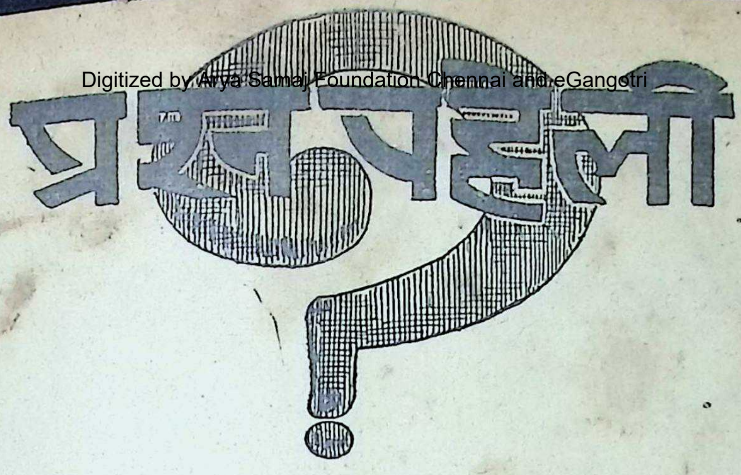

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान।
आदि कटे तो बीन बन जाता,
मध्य कटे तो नन कहलाता ॥
(नवीन)—रूपकिशोर सेठ

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
आती हूँ छात्रों के काम ॥
मध्य कटे कम बन जाती।
अन्त कटे समय बतलाती ॥ (क़लम)

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
स्वच्छ बनाना मेरा काम ॥
आदि कटे बुन बन जाता।
अन्त कटे अनाज कहलाता ॥
(साबुन)—मुरलीधर 'गुप्त'

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
आता हूँ मैं सबके काम ॥
सिर कटे तो दर्ज़ी के पास।
धड़ कटे तो सबके पास ॥
पैर कटे तो बनूँ मैं पक्षी।
अब बतलाओ मेरा नाम ॥
(काग़ज़)—रामावतार हुरकट

× × ×

धूप लगे सूखे नहीं, छाँह लगे कुम्हलाय।
कहो कौन वह चीज़ है, पवन लगे मर जाय ॥
(पसीना)

× × ×

उज्ज्वल वर्ण अधीन गत, एक चरण दो ध्यान।
दौलत है तो साधु-सा, निरी कपट की खान ॥
(बगुला)
—[illegible] तोमर

तीन अक्षर का मेरा नाम।
बतलाओ तो मिले इनाम ॥
अन्त बिना मैं लगा रह जाता।
आदि कटे से गाम कहाता ॥ (लगाम

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम
पेट में जाना मेरा काम ॥
मेरे बिना न कोई जीता।
अन्त कटे से तुम्हें रुलाता ॥
(रोटी)—वासुदेव गु

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
ताल में रहना मेरा काम ॥
आदि कटे मैला बन जाऊँ।
मध्य कटे समय बताऊँ ॥
अन्त कटे थोड़ा हो जाऊँ।
(कमल)—एस० एन० जो

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
तीनों पर एक देश का नाम।
मध्य काटने से रुकता पानी,
गिरि चोर से यदि इसे न जानी ॥
अन्त कटे खाने को पाओ।
मेरा [illegible] सूरत बतलाओ ॥
(मेवाड़)—अमरनाथ श्रीवास्त

× × ×

चार वर्णों से बना हुआ मैं,
एक प्रसिद्ध शहर हूँ।
नारङ्गी विख्यात जहाँ की
भारत बीच नगर हूँ।
तीजा चौथा लुप्त किये से
सर्प जल्द बन जाता हूँ।
अक्षर दो मध्यम हटने से
मैं नारी बन जाता हूँ ॥
(नागपुर)—बनवारीलाल टंगाय

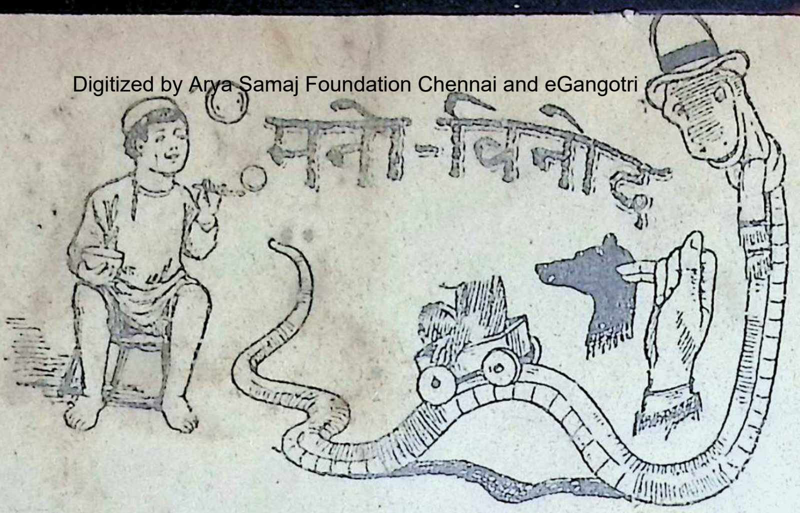

एक सज्जन को किसी भी सवारी से सख़्त घृणा थी। क दिन उनके एक मित्र ने कहा—"बुरा न मानिए, जब ापका देहान्त होगा तो आपको चार आदमियों के कन्धे र सवार होकर जाना पड़ेगा।" यह सुनकर वे सज्जन ोले—"इससे पहले कि मुझे लोगों के कन्धों पर सवार ोना पड़े मैं भगवान् के घर पहुँच जाऊँगा।"

—सागरमल मेहता

× × × ×

मास्टर साहब—क्यों रामू, ढाई तोले भङ्ग के छः आने ा पाँच तोले के क्या दाम हुए?

रामू—माफ़ कीजिए मास्टर साहब, पिताजी ने मुझे शीली चीज़ों के बारे में बात तक करने को मना कर या है।

—कृष्णकुमार मेहता

× × × ×

कक्षा में बैठे हुए लड़के शोर मचा रहे थे। मास्टर साहब झुँझलाकर कहा—"बैठे मत रहो, कुछ न कुछ काम रते रहो।"

सुरेश उठकर दीवाल पर स्याही से चित्र बनाने लगा।

मास्टर—सुरेश, क्या कर रहे हो?

सुरेश—आपही ने कहा था कि कुछ न कुछ करते रहो, ो वही 'कुछ' कर रहा हूँ।

—अवतार हुरकट

× × × ×

माँ—क्यों बेटा, मोज़ा पहनकर, पाँव धो रहे हो।

बेटा—लाचारी है माँ, जाड़े के मारे मोज़ा पहनना ही ड़ता है।

—ओम्प्रकाश खेतान

× × × ×

मास्टर साहब—क्यों नन्दन, शिवाजी कहाँ पैदा हुए थे?

नन्दन—हुए थे बम्बई में। अस्पताल के सिवा और कहाँ ो सकते हैं?

—अनिलकुमार

कवि-सम्मेलन हो रहा था। सभापति ने एक कविता पढ़ने के लिए कहा। उसने कहा कि मेरा गला बै है। पास में एक बेवकूफ़ गँवार खड़ा था। उसने गाय-भैंस है का जो बैठ गओ अगर ऐसा ही होय तो पकड़, पूँछ मड़ोर और दुइ-चार डण्डा मार के उठाइ

—आदित्यप्रकाश चतुर्वे

× × × ×

एक मियाँजी अपने बीमार दोस्त को देखने मियाँजी ने जाकर उनसे हाल पूछा। बीमार दोस्त वे तीन-चार घण्टे से बुख़ार तो टूट गया है, पर कमर बहुत है।

मियाँजी बोले—घबराइए नहीं, ख़ुदा ने चाहा तो भी टूट जायगी।

—व्रजभूषणसिं

× × × ×

दो अफ़ीमची अफ़ीम खाये हुए एक ही खाट पर ले थे। थोड़ी देर में उनमें से एक अफ़ीमची गाने लगा। ने जो उसकी आवाज़ सुनी तो बोला—वाह-वाह! गल है, अच्छी खासी सारङ्गी है। और उसको इतनी श दी कि वह छत पर से कूद पड़ा। जब महाशय 'धम्' से आवाज़ हुई और ज़ोर से चिल्लाकर बोले घिसुआ, देखना कि धम् से क्या गिरा है।

घिसुआ बोला—हजूर आप ही गिरे हैं।

तो यह सुनकर आप रोने लगे और कहने लगे तो चोट भी लगी होगी और घण्टों तक रोते रहे।

—रूपकिशोर

× × ×

एक किसान—अरे इतना दिन चढ़ आया और अपनी स्त्री को अभी तक जगाया भी नहीं?

दूसरा किसान—सोने भी दो।

पहला किसान—नहीं भाई, यदि कहीं बम गिरा तो भर उलहना देगी।

प्रश्न-पहेली

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ मैं सबके काम;
मध्य कटे जङ्गल बन जाऊँ,
अन्त कटें तो बुरा कहाऊँ, —(बदन)
—बदरीनारायण जांगिड

× × ×

तीन अक्षरों का मम नाम,
करता हूँ मैं सबके काम,
अन्त कटे तो कप हो जाता,
मध्य कटे से कड़ा कहाता ।—(कपड़ा)
—लाला शशिभूषण

× × ×

मध्य कटे जङ्गल हो जाऊँ,
आदि कटे से तौल कहाऊँ;
अन्त कटे से विटप कहाऊँ
अक्षर केवल तीन गिनाऊँ !—(बटन)

× × ×

नाज बनूँ बिन आदि के,
बनूँ अन्त बिन नाच;
नहीं आदि नहि अन्त है
कहता हूँ मैं साँच ।—(नाचना)
—ओमप्रकाश विद्यार्थी

× × ×

आलू के दो आगे आलू,
आलू के दो पीछे आलू;
आगे आलू पीछे आलू,
तो बतलाओ कितने आलू ।—(तीन आलू)
—हरिश्चन्द्र जैन

× × ×

तीन अक्षरों का है नाम,
आती मैं लड़ने के काम;
अन्त कटे तो कटा कहाऊँ,
मध्य कटे चुङ्गी बन जाऊँ ।—(कटार
—राजेश्वर सिंह

× × ×

काग़ज़ क़लम कबूतर काम,
इन सब में है मेरा धाम।
लकड़ी ककड़ी मकड़ी में भी
सोचो समझो मेरा नाम ।—(क)
—बाबूराम

× × ×

एक घर आग लगे, दूसरे घर धुँआ,
मध्य में लकड़ी, पुकार करे कुआँ ।—(हुक्का
— राधेश्याम अग्रवाल

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा सीधा एक समान।
देश-देश की यात्रा करता,
सात समुद्र पार ले जाता ।—(जहाज़
—कमलाशङ्कर शर्मा

× × ×

पत्र युक्त, पौधा नहीं,
ज्ञान युक्त बिन प्राण।
पण्डित से बातें करे,
अज्ञानी हैरान ।—(किताब)
—वंशीधर शर्मा 'अच्युत'

× × ×

खुलते ही मैं मुँह खोलूँ,
कैं, कैं, कैं कैं मैं बोलूँ ।—(क़ैंची)
—शान्तिदेवी थापा

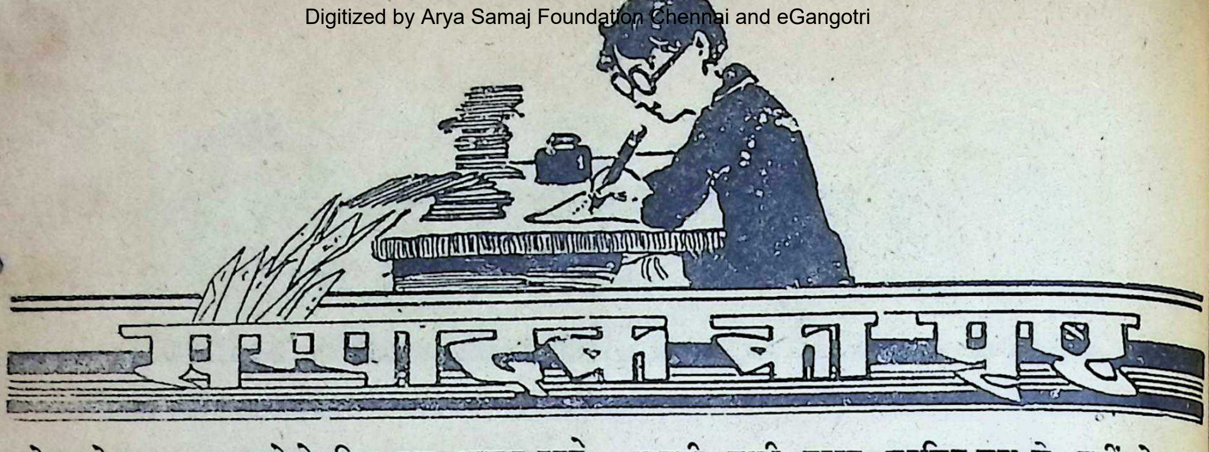

सम्पादक का पत्र

हमारे प्यारे बाल-सखा पढ़ने के लिए सदा इच्छुक रहते । जनवरी में नववर्षाङ्क की वे कितनी उत्सुकता से प्रतीक्षा ते हैं यह इसी से प्रकट है कि रोज़ हमारे पास उनकी बीसों ट्ठियाँ इस सम्बन्ध में आती हैं। बँगला आदि देशी पाओं अँगरेज़ी और में बाल-सखाओं के लिए जो पत्र कलते हैं उनमें बहुत से अपना वार्षिक अंक प्रकाशित ते हैं। बहुत-से बाल-सखाओं ने ऐसे वार्षिक अंकों देखा होगा। बहुत-से पाठकों ने हमसे इस प्रकार के र्षक अंक निकालने के लिए कहा। उनके इस विचार हम सराहना करते हैं। हमने अपने बहुत-से पाठकों ा प्रेमियों से पत्र लिखकर इसके बारे में राय ली। अब हमारे पास २३६१ पत्र आये हैं जिनमें 'बाल-सखा' की अच्छे वार्षिक अंक निकालने की योजना को बहुत पसन्द या गया है। अपने बालसखाओं तथा सहयोगियों की नी प्रबल इच्छा देखकर हमने जनवरी में 'बाल-सखा' का र्षक अंक निकालने का निश्चय किया है। यद्यपि इस य कागज़ की समस्या बहुत जटिल हो रही है और अनेक ह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है फिर भी रा प्रयत्न है कि हम प्राप्त साधनों में अधिक से अधिक ों का सुन्दर और उपयोगी वार्षिक [illegible] पाठकों को भेंट सकें।

यह वार्षिक अंक लगभग ३०० पृष्ठों का होगा। इसमें ड़ों सुन्दर कवितायें, कहानियाँ, लम्बी कहानियाँ, खेल-ाशे और मनोरंजक लेख होंगे। चित्रों से यह अंक भरपूर ा हुआ होगा। इस प्रकार का सुन्दर और बड़ा विशेषांक दी में अपने ढंग का पहला ही होगा और बालकों को त प्रिय होगा। इसका मूल्य भी लागत मात्र दो रुपया ा पर ग्राहकों को यह केवल १) में मिलेगा। यह सित संख्या ही में मुद्रित होगा इसलिए हर बाल-सखा को हिए कि वह इस अंक में लगे हुए आर्डर-फ़ार्म को भरकर अपनी कापी तुरन्त सुरक्षित करा ले, नहीं तो बाद अंक न मिल सकेगा और अपने साथियों के पास ऐसा अंक देखकर आपको अपनी भूल पर पछताना पड़ेगा।

जून मास के 'बाल-सखा' में 'बड़े लोगों का शीर्षक लेख में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर सितम्बर के सखा' में निकला है। उत्तरों में कुछ संशोधन की कता है। उस लेख के लेखक श्री देवेन्द्र शर्मा ने प्रश्नों के उत्तर के बारे में नीचे लिखे आशय का पत्र

“पहले प्रश्न के उत्तर में लिखा गया है कि शून्य से भाग देने पर भजनफल एक होगा। इसका दिया गया है कि भाजक और भजनफल का गुणन बराबर होना चाहिए, और शून्य (भाजक) तथा (भजनफल) का गुणनफल भाज्य (शून्य) के बराबर हो है। यह ठीक है, परन्तु शून्य में २, ३, ४, १०, २०.. किसी भी संख्या का गुणा करने पर गुणनफल शून्य (भा के बराबर ही रहता है। वास्तव में शून्य में शून्य भाग देने पर भजनफल कोई भी संख्या (असीम नहीं) सकती है।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में पाठकों के मनोरञ्जन के सब संख्यायें दी जाती हैं जो दो प्रकार से दो वर्गों के व्यक्त की जा सकती हैं। यदि नीचे के गुरु में 'क' के पर कोई ऋण या धन अङ्क (पूर्ण जैसे १, २ आदि, या $\frac{१}{२}$, $\frac{३}{५}$ आदि) रख दिया जाय तो वे सब संख्यायें मिल

$$५[(क+२)^२+१^२]=(५+२क)^२+क^२$$
$$=(३+२क)^२+(४+$$

इस प्रकार जब क = ०, तब संख्या २५ है

$$२५=५\times५+०=३\times३+४\times४$$

क = १, २, ३, ४, ५ के लिए संख्यायें क्रमशः ५०, १३०, १८५ और २५० हैं। पाठक स्वयं इसकी जाँच सकते हैं।”

अच्छी पुस्तकें मनुष्य को जितना ऊँचा उठा सकती हैं बुरी पुस्तकें उतना ही नीचे गिरा सकती हैं। अपने बच्चों को चरित्र की दृष्टि से ऊँचा उठाने के लिए पुस्तकों का चुनाव करते समय अत्यन्त सावधानी रखने की आवश्यकता है।

मूल्य एक रुपया

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी कृत बच्चों की कविताओं यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत कमनीय है।

शिशु भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही नाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल वितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके।

अन्वेषण-यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य न लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना सम्भव नहीं था। वास्को डि गामा आदि कुछ अपूर्व हसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाज़ी ाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर त्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है।

मूल्य तेरह आने

जान जोखिम की कहानियाँ—इस पुस्तक की विशेषता है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। तिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षकता और बढ़ ई है।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। इसमें ध्रुवों में निवास नेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल लिखा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, साथ मनोरञ्जन भी होगा।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा—इस पुस्तक में प्रसिद्ध बौ यात्री फ़ाहियान से लेकर वर्तमान युग में एवरेस्ट की चोटी चढ़ाई करनेवालों तक कितने ही साहसी और वीर यात्रियों कथा लिखी गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरल अ मधुर है।

बाल आरब्योपन्यास—(चार भाग) संसार भर में क ऐसी पुस्तक नहीं जिसमें अरेबियन नाइट्स की तरह सुन्दर म मोहक आश्चर्यमयी और चातुर्यसम्पन्न कहानियाँ हों। इस पुस को बालकोपयोगी बनाने के लिए हमने इसमें अश्लील कहानि अलग करवा दी हैं। इस रूप में यह स्त्रियों और बालक-बा काओं के हाथ में निःसङ्कोच दी जा सकती हैं। उल्लि मूल्य प्रत्येक भाग का है।

मेरे देश की कथा भारतीय इतिहास के कई सु और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास जानने लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं पढ़ाये जा इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आदर्श बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक उसी क को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र का द कराती है।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों की ख करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइयाँ सह यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

बालनीतिमाला—संस्कृत के नीतिविषयक ग्रन्थों का यह इन्दी अनुवाद है। नीति का ध्यान यदि बचपन से ही रक्खा ाय तो ज़िन्दगी बड़े आनन्द से कट सकती है।

देवनागर वर्णमाला—बच्चा कैसा भी खिलाड़ी क्यों न ो पर इस पुस्तक को पाते ही वह खेल भूलकर आठ रङ्गों में छपी ई पुस्तक की रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरें देखने में लग जायगा और ाथ ही साथ अक्षर भी सीखेगा।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस कविाओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जिसे पढ़कर च्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न समायेंगे।

मूल्य ग्यारह आने

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ—इस छोटी-सी पुस्तक आठ मज़ेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। प्रत्येक ानी जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। बालकों लिए यह बहुत ही मज़ेदार है।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता है कि तक कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहानी पढ़ते मय वही मज़ा आता है जो दूध और मलाई खाते समय।

मूल्य आठ आने

लन्दन की एक झलक—बालकों को लन्दन शहर का ेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। पके बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक ाद रूप में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और ोरञ्जक हुई है।

फ्रांस—इस पुस्तक में फ्रांस देश का वर्णन किया गया है। ा बहुत ही सरल और मनोरञ्जक है।

आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्राप्त करने के लिए लकों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो ई अनावश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात ने पाई है।

अमरीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं ता। उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी है। अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए।

जर्मनी—जर्मनी अपने भयङ्कर कारनामों के कारए कुप्रसिद्ध हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग र उनकी क्या विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश गया है।

चीन देश का हाल—भारत का चीन से प्रा सम्बन्ध है। उसी चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया ग बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

ध्रुवप्रदेश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षिप्त दिया गया है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पु पढ़ने से मनोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी।

रूस—देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना मह स्थान बना लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद इसमें वर्णन किया गया है।

लामाओं के देश तिब्बत में—तिब्बत के रास्ते में क्या कठिनाई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस पु किया गया है।

परीदेश—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने जिसके समझने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्र के व्यवहार की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी किं बच्चे उन्हें पढ़कर उछल पड़ेंगे।

बालगोपाल—बच्चों की रुचि का भली भाँति अ करके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और मधुर भाषा में गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद

दो अवतार—इस पुस्तक में सातमार पहलवान औ विद्या नामक दो मज़ेदार कहानियाँ संगृहीत हैं। क इतनी सुन्दर हैं कि पुस्तक पूरी किये बग़ैर बच्चे पुस्तक नहीं सकते।

गुब्बारे में पाँच सप्ताह—इस पुस्तक में डाक्टर नामक एक ऐसे साहसी अँगरेज़ की कहानी लिखी गई है गुब्बारे में उड़कर अफ़्रीका के विभिन्न प्रदेशों की सैर उसी का वर्णन है। पुस्तक की एक-एक पंक्ति बहुत ही और ओजपूर्ण है।

पृथ्वी की परिक्रमा—इस पुस्तक में पृथ्वी के भिन्न-भिन्न शों के मुख्य-मुख्य स्थानों का वर्णन बड़ी ही मनोरञ्जक भाषा लिखा गया है। आर्ट पेपर पर छपे हुए कई पूरे पृष्ठ के चित्र हैं।

बाघ सिंह के मुख में—इसमें कतिपय भारतीय युवकों ी यात्रा का विवरण है जिन्हें भयानक जङ्गल, रेगिस्तान, हाड़ी प्रान्त आदि भीषण स्थानों से ही गुज़रना पड़ा। रास्ते ं उन्हें जिस प्रकार के ख़ूँख़ार जानवरों का सामना करना पड़ा सका वर्णन बहुत ही आकर्षक भाषा में किया गया है।

वैज्ञानिक खेल-तमाशे—यह पुस्तक ऐसे ढङ्ग से लिखी ाई है कि बच्चे खेल ही खेल में कई आवश्यक बातें सीख ं। जैसे—रङ्गों के खेल, काँच पर चित्रकारी करना, दिया-लाई के बक्स का खेल। पानी पीनेवाला मिट्टी का हाथी बनाना आदि। पुस्तक बहुत ही उपयोगी है।

अनजान देश में—(दो भाग) इस पुस्तक में एक ऐसे बुद्धिमान् तथा साहसी आदमी की कहानी लिखी गई है जो अत्यन्त ही शीतल, अन्धकारमय तथा निर्जन प्रदेश में भी अपने को जीवित रख सका। अन्त में एक देश का सर्वेसर्वा बन बैठा। उल्लिखित मूल्य प्रत्येक भाग का है।

मूल्य पाँच आने

च्यांग काई शेक—इस पुस्तक में च्यांग काई शेक का जीवन-रित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के राष्ट्रीय जीवन नया जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी बच्चों को अवश्य पढ़नो चाहिए। मूल्य ।–) पाँच आने।

तुर्की के वीर—इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवाले कमाल अतातुर्क के जीवन-चरित्र का संक्षेप में वर्णन है। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मिस्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्टन चर्चिल का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीत होगा। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ भनभनाकर जाते हुए देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जह की उत्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह सक्षेप में लि गया है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहि

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए बड़े मज़े की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के साथ गद्य और भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ लेते

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के लिए परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें लगभग

चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्र वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना गई है।

बाघ और भालू की कहानी—इस पुस्तक में केवल कहानियाँ हैं। एक में बाघ और आदमी की लड़ाई और में भालू का आदमी के साथ नाच कैसे हुआ, इसका वर्णन

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों में महापुरुषों के जीवन-चरित्र संक्षेप में दिये गये हैं जो अपने कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। उल्लिखित प्रति भाग का है।

जोसेफ़ स्टालिन—अत्यन्त कठिन परिस्थिति मे साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष ने ज दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रोचक प्रतीत ह

वाल्मीकि—रामायण महाकाव्य की रचना करनेवाले कवि वाल्मीकि का यह जीवन वृत्तान्त है। भाषा अत्यन्त और रोचक है।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा र्षक है।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

Printed and Publi

HAMARA

HAMĀM

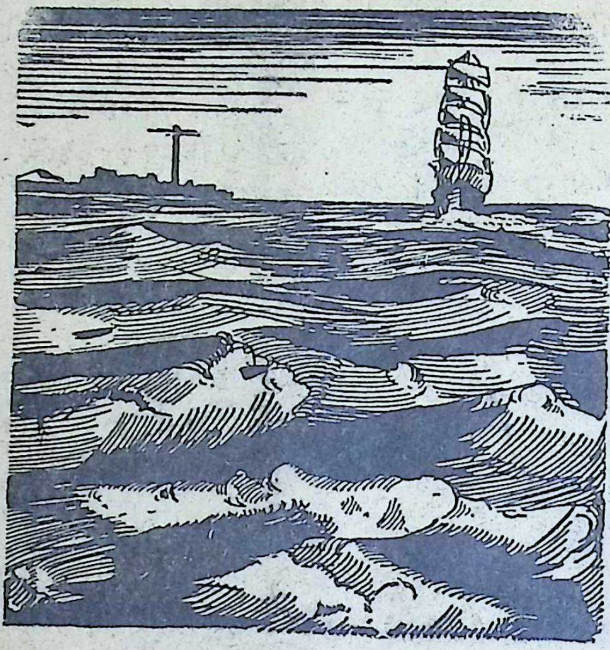

हमारा

हमाम

समुद्र के अनमोल रत्न

क्या आप जानते हैं कि समुद्र के पानी में अथाह दौलत भरी पड़ी है। एक मामूली चीज़ नमक, जिसके बिना जीवन दूभर हो जा सकता है, से लेकर उद्योग-जगत् में 'हेवी केमिकल्स' के नाम से प्रसिद्ध रासायनिक पदार्थ—जैसे कास्टिक सोडा, सोडा ऐश, खनिज ऐसिड तक पाये जाते हैं। फिर भी ये सब चीज़ें समुद्र पर से होकर हमारे यहाँ विदेशों से आती हैं जब कि इन सभी रत्नों के भण्डार समुद्र से हम घिरे हुए हैं।

आज भारत का रासायनिक उद्योग अपनी बाल्यावस्था में है। फिर भी यह बालक तगड़ा है और तेज़ी से बढ़ रहा है। अपने आधारभूत उद्योग—जैसे लोहा-स्पात, कोयला और हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर की उन्नति के साथ-साथ आप भारत की एक उद्योगी राष्ट्र के रूप में जागृति देख चुके हैं। केमिकल्स अब चौथा उद्योग है। इन चारों उद्योगों के बिना दूसरे उद्योग-धन्धे पनप नहीं सकते।

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

पिछले महीने हमने आपको यह बताया था कि वनस्पति तेल को कास्टिक सोडे के साथ उबालने के परिणाम-स्वरूप हमाम का जन्म हुआ। कास्टिक सोडा एक महत्त्वपूर्ण बेसिक केमिकल है। यह एक खार द्रव्य है जो समुद्र के पानी या नमक की चट्टान से निकाला जाता है और कपड़े, काग़ज़, चमड़े या रबड़ एवं साबुन के निर्माण में बहुत आवश्यक है।

इस कूपन को काटकर अपने पास रख लें। जब यह योजना पूरी हो जाय तब सब कूपन हमें भेज दें। हम आपको आपके उपयुक्त कोई चीज़ पुरस्कार-स्वरूप भेज देंगे।

१—इस विज्ञापनमाला को सम्हालकर रखें। जब यह पूरी हो जाय तो हमें सब कूपन भेज दें। हम आपको पुरस्कार में कोई चीज़ भेंट करेंगे।

कूपन अलग-अलग न भेजें

A TATA PRODUCT

वार्षिक 'बाल-सखा'

बच्चों को प्रसन्न रखिए

प्रत्येक माता-पिता अपने बचों को हमेशा प्रसन्न देखना चाहते हैं। इसका कारण केवल यही है कि खिलखिलाते हुए बच्चों को देखकर वे स्वयं प्रसन्न होते हैं। अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, खेलने के लिये पर्याप्त समय उन्हें अवश्य प्रसन्न रख सकता है। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। बचों की बौद्धिक जिज्ञासा जब तक तृप्त नहीं होती, तब तक उनकी वास्तविक प्रसन्नता की आशा दुर्लभ है।

अनोखा प्रकाशन

आगामी जनवरी में वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन हम इतनी सज-धज और सुन्दरता के साथ कर रहे हैं कि कोई भी बालक उसे पढ़कर फूला न समायेगा। बच्चों के मनोविज्ञान पर पर्याप्त अधिकार रखनेवाले प्रसिद्ध विद्वानों की सहायता से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। इस 'बाल-सखा' की छपाई और कवर ही सुन्दर न होगा बल्कि इसके ३०० पृष्ठों में कहानी, कविता तथा ज्ञान-विज्ञान की मनोरंजक और सरल सामग्री दी जायगी जिसे बच्चे एक वर्ष तक पढ़ते रहेंगे। दूसरी पुस्तकें ख़रीदने की आवश्यकता न होगी। १५० पृष्ठ केवल बालकोपयोगी सुन्दर मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियों के लिए ही सुरक्षित हैं। ५० पृष्ठों में कवितायें तथा १०० पृष्ठों में ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी मनोरंजक तथा सरल लेख दिये जायँगे। रंगीन और सादे चित्र भी पर्याप्त संख्या में दिये जा रहे हैं। सारांश यह कि इस वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन अपने ढंग का अनूठा और अनोखा होगा।

अपूर्व अवसर

इतना सुन्दर, आकर्षक और उपयोगी बालसखा कितने शीघ्र हाथों-हाथ बिक जायगा यह आपको बताने की आवश्यकता नहीं है। काग़ज़ की महँगी तथा उसके कम परिमाण में मिलने के कारण हम इसे केवल ५००० की संख्या में निकाल रहे हैं। यदि आप अपने वार्षिक 'बाल-सखा' की प्रति शीघ्र आर्डर भेजकर रिज़र्व नहीं करा लेंगे तो अत्यन्त खेद के साथ बाद में आये हुए आपके आर्डर को हमें लौटा देना पड़ेगा। हमें आशा है कि आप इस अपूर्व अवसर को न खोकर अपना आर्डर हमें शीघ्र भेज देंगे।

—मूल्य दो रुपये

मैनेजर :—

'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ

भैरवी	२॥≡)
वासवदत्ता	२॥≡)
कुणाल	२)
विषपान	१)

वर्तमान युग के युवक कवियों में पं० सोहनलाल द्विवेदी का स्थान सर्व श्रेष्ठ है। इनकी कविता की एक-एक पंक्ति में मानव-हृदय को जागृत करने की भावना ठूँस ठूँस कर भरी होती है। यदि आप इस युग की सर्व श्रेष्ठ कविता पुस्तकें रखना चाहते हों तो इन चारों पुस्तकों को तुरन्त मँगवाइये।

मैनेजर बुकडिपो—इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

कविता—संग्रह

ठा० गोपालशरण सिंह

माधवी	२)
कादम्बिनी	२)
ज्योतिष्मती	२।–)
मानवी	२।–)
सुमना	२)
संचिता	१॥≡)

विद्वानों की सम्मति—

"ठाकुर साहब की सब से बड़ी विशेषता उनकी कविता का सरल और प्रसाद गुण पूर्ण होना है। जो भी बात वह कहते हैं बिना प्रयास के स्वाभाविक शब्दों में व्यक्त करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि उनकी कविता में गम्भीर भावों का अभाव रहता है। सरलता में ही वे गम्भीरता को ऐसा मिला देते हैं कि वह गम्भीरता भी सरलता का रूप ले लेती है और हमको एक हलका-सा सुख स्पर्श देकर हृदय को गुदगुदा देती है।"

सम्पादक { लल्लीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

वर्ष २८] नवम्बर १९४४—मार्गशीर्ष २००१ [संख्या ११

जय जय !!

लेखक, श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर'

उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।
उगनेवाले सूरज ! आओ,
अपना उजियाला फैलाओ,
तुम अपने पथ पर बढ़ो, बढ़ो,
तुम ऊपर नभ में चढ़ो, चढ़ो,
तुम चमको, जग को चमकाओ ।
उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।
उगनेवाले चन्दा ! आओ ।
जग का मुँह उजला कर जाओ ।
तुम अन्धकार को हरो, हरो,
निशि में उजियाला भरो, भरो ।
तुम बढ़े चलो, तुम मुसकाओ ।
उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।
उगनेवाले तारे ! आओ ।
प्यारे वारे वारे ! आओ ।
तुम चमक उठो झिलमिल-झिलमिल,
खिल-खिल खिल-खिल, हिल-मिल हिल-मिल
तुम नभ का आँगन भर जाओ ।
उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।
उगनेवाले पौधे ! आओ ।
तुम नित नव हरियाली पाओ ।
जो बीते, हँसकर सहो, सहो,
तुम प्रण पर डटकर रहो, रहो ।
जग में नवजीवन सरसाओ ।
उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।
उगनेवाले बच्चे ! आओ ।
माँ के सपूत सच्चे ! आओ ।
तुम कठिनाई से लड़ो, लड़ो,
कर्तव्य-कर्म में अड़ो, अड़ो,
घर-घर खुशियाली बरसाओ ।
उगनेवाले ! तुम जय पाओ ।

डाकियों की कहानी

लेखक, श्रीयुत् भवानीचरण भट्टाचार्य।

सुनन्दा अपने घर में अकेली थी। माँ पड़ोस किसी के यहाँ गई हुई थी। वह अपने खिलौनों खेल रही थी कि बाहर किसी ने पुकारा—चिट्ठी जाओ।

वह तुरन्त ही बाहर आई और दरवाज़ा खोला। क आदमी एक थैला लटकाये खड़ा था। उसने ट्ठी सुनन्दा को दे दी और सड़क पर आगे की ओर गया। सुनन्दा खड़ी उस आदमी को देखती रही। रोज़ ही इस आदमी को अपने मुहल्ले में चिट्ठी टते देखती है। उसका पहनावा सुनन्दा को बड़ा चित्र लगता है। कैसी तो उसकी पगड़ी है। ट्ठियाँ लिये दिन भर वह फिरता रहता है। क्या थकान नहीं आती ?

सुनन्दा ने देखा है कभी-कभी वह लोगों के ए रुपये लाता है। पर उसने उसे कभी रुपये दिये। उसे इतने रुपये न जाने कहाँ से मिल जाते कि वह लोगों को बाँटता रहता है।

सुनन्दा के पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं। अभी ड़े ही दिन हुए, वे कहीं बाहर से आये हैं। के बच्चों से सुनन्दा की बहुत पटती है। एक दिन न्दा ने उनकी लड़की के पास एक मोटी सी ताब देखी जिसमें एक तसवीर छपी थी। सुनन्दा उससे पूछा कि यह किसकी तसवीर है। उस ड़की ने बताया कि यह डाकिया है। उस लड़की पिता भी उसी समय आ गये। उन्होंने बताया कि रे देश का नाम लङ्का है। वहाँ चिट्ठी बाँटनेवाले तरह के होते हैं।

सुनन्दा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी सहेली पिता ने यह भी बताया था कि हर देश में चिट्ठी नेवाले होते हैं लेकिन हर देश में वे एक ही तरह के ड़े नहीं पहनते। उस दिन उन्हें जल्दी थी इसलिए उन्होंने कहा था कि किसी दिन वे इन डाकिये बारे में बतायेंगे। सुनन्दा ने सोचा कि आज उनसे डाकियों के बारे में ज़रूर पूछेगी।

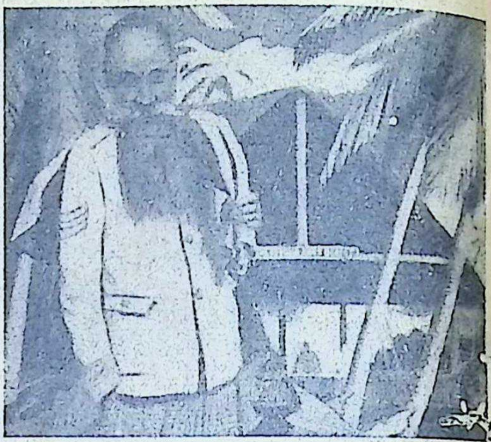

लङ्का का एक डाकिया

जब माँ आ गई तो उसने उन्हें चिट्ठी और तुरन्त ही अपनी सहेली के यहाँ चली सहेली के पिता अपने कमरे में बैठे चाय पी रहे सुनन्दा ने पहुँचते ही कहा—"आपने उस डाकियों के बारे में बताने को कहा था, बताइए।"

बाबू साहब ने हँसकर कहा—"अच्छी बात बैठो, चाय पी लो, फिर बताऊँगा।"

सब लोगों ने चाय पी, तब सुनन्दा उसकी सहेली डाकियों की कहानी सुनने के बैठ गई। बाबू साहब ने कहना शुरू किया— देश में चिट्ठी बाँटने का अलग-अलग तरीक़ा है। चिट्ठियाँ, जो तुम डाकिये को बाँटते देखती हो, इसके पास पहुँच जाती हैं यह तुम न जानती हो बहुत-सी चिट्ठियाँ बहुत दूर से आती हैं। इनके के लिए रेलगाड़ी, जहाज़ और हवाई जहाज़ को में लाया जाता है। सब चिट्ठियाँ एक स्थान इकट्ठी की जाती हैं। इस जगह को डाकखाना पोस्टआफ़िस कहते हैं। यहीं से ये चिट्ठियाँ डाकिया

ऊपर की ओर उठाकर हिलाते रहना ही एक दूसरे की जानकारी के लिए अच्छा उपाय था। आज भी शिकारी कुत्ते शिकार के समय अथवा यों भी अपनी पूँछ सदा ऊपर की ओर उठाये ही रखते हैं। अतः इनका पूँछ उठाये रखना भी भेद-[illegible] था।

बड़ी देर से रोतीं आप।

[illegible]

तितली के सँग खेला करते,
भौंरों के संग हो गाते;
मुझको आते देख किन्तु तुम
जाने क्यों चुप हो जाते!
हँस-हँस मुझसे बात करो तो
आऊँ अपनी गुड़ियाँ ले,
तितली भौंरों को भी कह दो
साथ-साथ हम खेलें।

—राजकुमारी अग्रवाल

गुड़िया देख हुईं चुपचाप।

आओ हम तुम खेलें खेल।

है अजीब ही इनका खेल।

डाकियों के

लेखक, श्रीयुत भवान

सुनन्दा अपने घर में अकेली थी। माँ पड़ोस किसी के यहाँ गई हुई थी। वह अपने खिलौनों खेल रही थी कि बाहर किसी ने पुकारा—चिट्ठी जाओ।

वह तुरन्त ही बाहर आई और दरवाज़ा खोला।

उन
बारे
उनसे

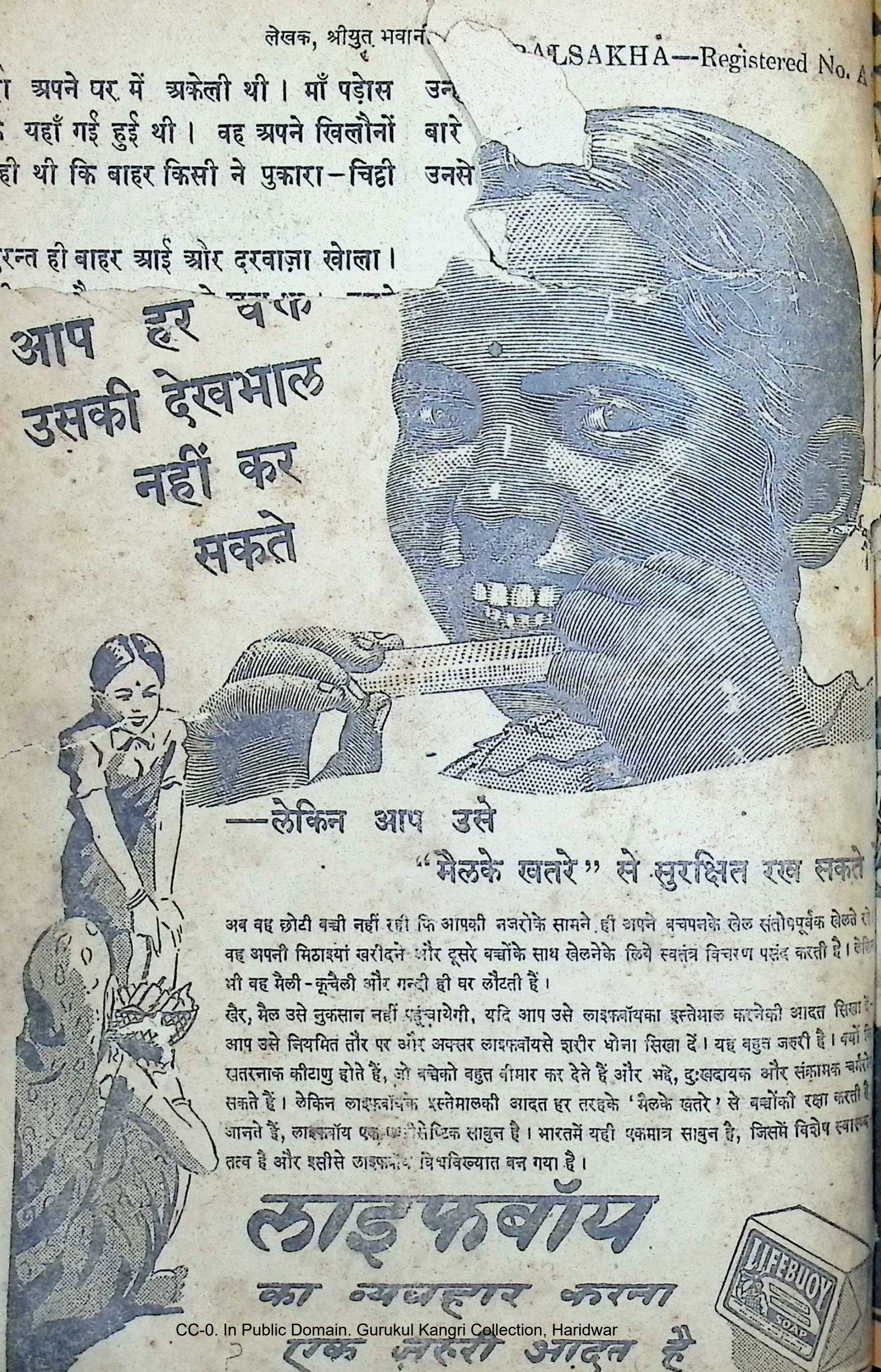

आप हर व
उसकी देखभाल
नहीं कर
सकते

—लेकिन आप उसे
"मैलके खतरे" से सुरक्षित रख सकते

अब वह छोटी बच्ची नहीं रही कि आपकी नजरोंके सामने ही अपने बचपनके खेल संतोषपूर्वक खेलते रह
वह अपनी मिठाइयां खरीदने और दूसरे बच्चोंके साथ खेलनेके लिये स्वतंत्र विचरण पसंद करती है। लेकि
भी वह मैली-कुचैली और गन्दी ही घर लौटती हैं।

खैर, मैल उसे नुकसान नहीं पहुंचायेगी, यदि आप उसे लाइफबॉयका इस्तेमाल करनेकी आदत सिखा दें
आप उसे नियमित तौर पर और अक्सर लाइफबॉयसे शरीर धोना सिखा दें। यह बहुत जरूरी है। क्यों
खतरनाक कीटाणु होते हैं, जो बच्चेको बहुत बीमार कर देते हैं और भद्दे, दुःखदायक और संक्रामक चर्मरो
सकते हैं। लेकिन लाइफबॉयके इस्तेमालकी आदत हर तरहके 'मैलके खतरे' से बच्चोंकी रक्षा करती है
जानते हैं, लाइफबॉय एक एन्टीसेप्टिक साबुन है। भारतमें यही एकमात्र साबुन है, जिसमें विशेष स्वास्थ्य
तत्व है और इसीसे लाइफबॉय विश्वविख्यात बन गया है।

लाइफबॉय
का व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

तोग किस
आसानी
ता सिर्फ़
ना होता
निकाली ।

ऊपर की ओर उठाकर हिलाते रहना ही एक दूसरे की जानकारी के लिए अच्छा उपाय था। आज भी शिकारी कुत्ते शिकार के समय अथवा यों भी अपनी पूँछ सदा ऊपर की ओर उठाये ही रखते हैं। अतः इनका पूँछ उठाये रखना भी भेद-भरा था।

28 2/44

झाँकियों क

लेखक, श्रीयुत भवानी

सुनन्दा अपने घर में अकेली थी। माँ पड़ोस किसी के यहाँ गई हुई थी। वह अपने खिलौनों खेल रही थी कि बाहर किसी ने पुकारा—चिट्ठी जाओ।

उन
बारे
उनसे

९—भेड़िया और ख़रगोश—श्रीयुत राजेन्द्रकुमार ...
१०—अँगूठेराम—श्रीयुत शिरीषकुमार ५८

कविता

१—नहीं पास क्यों मेरे आते?—श्रीयुत जयन्त ... २३
२—वसन्त—कुमारी प्रमीला श्रीवास्तव ३७
३—क्यों—श्रीयुत लालाराम जायसवाल २७
४—वसन्त—श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म' ... ३८
५—गुड़ियों का गीत—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० ४०
६—जागो—श्रीयुत आशाकान्त बी० आचार्य ... ४५
७—वसन्त [१]—श्रीयुत बलवीरसेन खन्ना ... ४७
 " [२]—कुमारी कुसुमकुमारी माथुर ... ४७
८—पूसी की माला—श्रीयुत अशोक ४९
९—याद—कुमारी शारदा गर्ग ५१
१०—घड़ी—श्रीयुत नन्दनगोपाल श्रीवास्तव ५३
११—टर्रखट्टू—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जैन, एम० ए० ... ५४
सपाही हम हम हम—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेव
ए० ... ...
ी गीत—कुमारी उर्मिला सिनहा
-श्रीयुत कमलेशकुमार गुप्त ...

लेख

भूँकते और पूँछ हिलाते क्यों हैं?—श्रीयुत
ी पाठक ... ...
यों का संसार—श्रीयुत बाफणा भँवरलाल
विशारद ... ...

जीवन-चरित्र

१—इमरसन—श्रीयुत गौरीशङ्कर कुरालिया

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है—श्रीयुत अशोककुमार,
 श्रीयुत वंशीधर शर्मा ... ...
२—कुछ इधर-उधर की ... ...
३—बच्चों का कमरा— ... ...
 फूल—कुमारी शोभादेवी मिश्र ...
 सवेरा—श्रीप्रकाश ... ...
 भारत—श्रीयुत हजारीसिंह मिण्डा
 जाड़े की आग—श्रीयुत गौरीशङ्कर पाण्डेय
४—प्रश्न-पहेली ... ...
५—मनो-विनोद ... ...
६—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

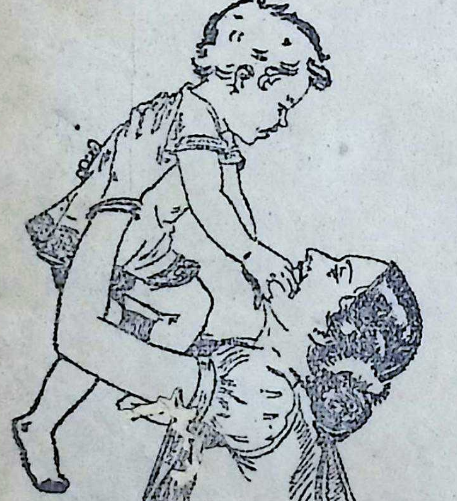

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरे-बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट

शीघ्रातिशीघ्र रुपया वसूल कर
भेज देने के लिए
अपने बिल हमारे पास भेजें :-
कलकत्ता बैंकर्स लि
प्रधान कार्यालय :—
३८ स्ट्रैन्ड रोड,

तोग किस ऊपर की ओर उठाकर हिलाते रहना ही एक दूसरे
आसानी की जानकारी के लिए अच्छा उपाय था। आज
ता सिर्फ़ भी शिकारी कुत्ते शिकार के समय अथवा यों भी
पा होता अपनी पूँछ सदा ऊपर की ओर उठाये ही रखते
निकाली। हैं। अतः इनका पूँछ उठाये रखना भी भेद-

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

र्ष २८] फ़रवरी १९४४—फाल्गुन २००० [संख्या २

नहीं पास क्यों मेरे आते?

लेखक, श्रीयुत जयन्त

चढ़ जाती हैं जब पेड़ों पर,
सूरज की किरणें चमकीली;
आने लगती रात अँधेली,
ओस-बूँद से गीली-गीली।
चिड़ियाँ उड़ना छोड़, लौटकर
अपने कोटर को आ जातीं;
चीं-चीं करते बच्चे को हैं
अपने पङ्खों बीच छिपातीं।
खिल जाता है चाँद उसी क्षण,
तारे टिम टिम करने लगते;
देखा करता हूँ मैं उनको
कितने हैं वे अच्छे लगते।
तभी जहाँ भी मैं जाता हूँ;
तारे मेरे सँग-सँग जाते;
घेर-घेर चन्दा को चुपके-
चुपके उससे करते बातें।
क्यों मेरे वे सँग-सँग रहते,
समझ नहीं यह मुझको आता;
नहीं पास क्यों मेरे आते,
जब मैं इनको पास बुलाता।

डाकियों को ... ते क्यों हैं?

लेखक, श्रीयुत भवानी ... ठक

सुनन्दा अपने पर में अकेली थी। माँ पड़ोस किसी के यहाँ गई हुई थी। वह अपने खिलौनों खेल रही थी कि बाहर किसी ने पुकारा—चिट्ठी जाओ।

उन
बारे
उनसे

शिकार की टोह में

साथ रहकर ख़ूँख़ार जङ्गली जानवर के रूप में पाये जाते हैं और वहाँ ये भेड़ियों के साथ-साथ ही रहकर शिकार की टोह में चक्कर लगाया करते हैं। ये दल बनाकर घूमते हैं और दल का अगुआ ही इनका सरदार होता है। इन्हीं कुत्तों को मनुष्यों ने पाला और धीरे-धीरे पालतू जानवर के रूप में बना लिया।

उस समय की बात है जब ये पालतू जानवर नहीं बनाये गये थे। ये ख़ूँख़ार जानवरों की तरह ही झुण्ड बाँधकर शिकार की टोह में घूमते थे और शिकार करके ही अपना बसर करते थे। अन्य जानवरों को—जैसे गाय, हिरन, भेड़, बकरी इत्यादि—जहाँ देख लेते तो फिर उनकी ख़ैर नहीं रहती। भूँक-भूँककर अपने अन्य साथियों को सूचना देने लग जाते। आवाज़ की सूचना पाकर अन्य कुत्ते—चाहे वे कहीं भी क्यों न हों—उस ओर दौड़कर शिकार पर टूट पड़ते थे।

आप पूछेंगे कि जङ्गलों में—जहाँ लम्बी-लम्बी घासें भरी रहती थीं—इन्हें कैसे पता मिलता

...क बड़ी तेज़ होती है। ये ज़मीन ...पने इष्ट स्थान का पता सहज ... इसी लिए यदि किसी कुत्ते को ...धकर दूर स्थान को छोड़ दिया तो वह फिर अपने स्थान पर शीघ्र ही आ... है। अतः भूँकना ही कुत्तों की बात... असली रूप था। आज भी कुछ भाव प्र...

एक अच्छी जाति का कुत्ता

के लिए ही ये भूँकते हैं और एक के भूँ... सभी कुत्ते भूँकने लग जाते हैं।

कभी-कभी कुत्त शिकार की टोह में ... से ही निकला करते थे। उस समय बोल... भूँकना ठीक नहीं होता था। ऐसी दशा में ... से या तो शिकार के निकल जाने की ... रहती थी अथवा ख़तरा उठाने या असफ... की। कभी-कभी इस मौक़े पर शिकार की ... ऐसा भी होता कि दल के तेज़ दौड़नेवा... बहुत आगे निकल जाते और कुछ एकदम ... छूट जाते थे। उनकी घ्राण-शक्ति भी का... घासों से भरे जङ्गलों में काम नहीं कर... ऐसी हालत में पिछड़ जानेवाला कुत्ता सिर्फ़ ... उधर देखकर ही अपने साथी का पता

करता कि उसके अन्य साथी लोग किस हैं। पर जङ्गल की लम्बी घासों में आसानी र निकल गये हुए साथी का पता सिर्फ़ ऊपर देखकर ही पा लेना कठिन-सा होता अतः उन्होंने एक तरकीब सोच निकाली। ौकों पर जब भूँकना ठीक नहीं होता था वे अपनी पूँछों को ऊपर की ओर उठाये रखकर हिलाते रहते थे। ऐसा करने से एक दूसरे से दूर रहने पर भी अपने साथी का पता आसानी से देखकर पा थे और भूँकना भी नहीं होता था। पूँछ ऊपर की ओर उठाकर हिलाते रहना ही एक दूसरे की जानकारी के लिए अच्छा उपाय था। आज भी शिकारी कुत्ते शिकार के समय अथवा यों भी अपनी पूँछ सदा ऊपर की ओर उठाये ही रखते हैं। अतः इनका पूँछ उठाये रखना भी भेद-भरा था।

स कुत्ते की गर्दन और पूँछ के बाल कैसे बड़े-बड़े हैं

कुत्ते शिकार पाकर उसकी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए अपनी पूँछ हिलाने का उपक्रम करते थे और आफ़त के समय अपनी पूँछ को पिछले दोनों पैरों के बीच डालकर छिपा लिया करते थे। हमें आज भी कुत्तों में ये स्वाभाविक आदतें देखने को मिलती हैं। ये ख़ुश होने पर पूँछ हिलाते, किसी बात को ज़ाहिर करने के लिए भूँकते तथा डर जाने पर पूँछ पैरों के बीच छिपा लेते हैं। इस प्रकार कुत्तों की ख़ास-ख़ास आदतों पर हम लोग विचार करें तो उनके कारणों का पता हम पा सकते हैं।

अभ्युदय
हिन्दी का एकमात्र
साप्ताहिक
कहानी पत्र
वार्षिक ७)
एक प्रति -)
आज ही ग्राहक बनिए
मैनेजर अभ्युदय
इण्डियन प्रेस, प्रयाग।

सच्चे प्रेम की परीक्षा

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

गड़बड़झाला नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा लालबहादुर था। वह अपनी प्रजा को पुत्र के समान मानता था। जब वह बूढ़ा हो चला तो उसने अपने मन में विचार किया कि मैं अब बूढ़ा हो चला हूँ अतः राज-पाट छोड़कर भगवान् का नाम जपने के लिए जङ्गल में चला जाऊँ। उस राजा के तीन राजकुमार थे। तीनों राजकुमार बड़े चतुर और योग्य थे। एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को अपने पास बुलाया और पूछा—तुम लोग मुझे कितना प्यार करते हो?

सबसे बड़ा राजकुमार बोला—मुझे जितना प्यारे आप हैं उतनी प्यारी दूसरी वस्तु इस संसार में नहीं है।

दूसरे राजकुमार ने कहा—मुझे जितना प्रेम आपसे है उसको मैं शब्दों में नहीं बतला सकता। परीक्षा होने पर ही उसका अन्दाज़ा भली भाँति हो सकता है।

तीसरे राजकुमार ने उत्तर दिया—"मैं बहुत कुछ नहीं कहना चाहता, इस कारण केवल इतना ही कहूँगा कि मेरे हृदय में भी आपके लिए प्रेम है।" राजकुमारों की बातों को सुनकर राजा ने सोचा कि किसी प्रकार से इन सभी राजकुमारों की परीक्षा होनी चाहिए। कुछ समय बाद उसने एक बड़ी सभा की और कहा कि मैं अकेले ही तीर्थ करने जाना चाहता हूँ। यदि मैं एक वर्ष के अन्दर न लौट आऊँ तो सब लोग यह निश्चय कर लें कि मैं मर गया। तब मेरे राजकुमार राज-काज का भार उठावें। राजा जब तीर्थ-यात्रा को चला गया तो राज-काज को राजकुमारों ने बड़ी योग्यता से सँभाला। जब राजा एक वर्ष के अन्दर तीर्थयात्रा [illegible] हुए। राज्य में चारों तरफ़ बड़ा कुहराम मच दो-चार दिनों तक कुछ आशा बँधी रही कि राजा आ ही जावे पर जब राजा न आया निराश हो गये। सबसे बड़ा राजकुमार रा रोने-पीटने में ही रहने लगा। लोगों ने बहुतेरा झाया किन्तु उसने राज-काज की ओर तनि ध्यान न दिया। दूसरे ने भी कुछ दिनों त प्रकट किया, परन्तु थोड़े ही दिनों बाद उसका शिकार खेलने की ओर अधिक रहने लगा वह अपना दुःख भूल गया। इन दोनों के तीसरे ने भी शोक किया किन्तु कुछ दिनों जब उसने देखा कि सबसे बड़ा भाई शोक में ही घुला जा रहा है और दूसरा भी की ओर ध्यान नहीं देता, बराबर शिकार ही दीवाना रहता है तो उसने राज-कार्यों ध्यान दिया। राज्य की सारी गड़बड़ियों किया और बड़ी चतुराई और सावधानी से राज्य का काम करने लगा। कई वर्षों बूढ़ा राजा एक फ़क़ीर का रूप धारण करके और महल के फाटक के पास खड़ा हो उसके बाल बहुत बढ़ गये थे, नाख़ून भी वह नङ्गे पाँव गेरुआ कपड़े पहने, हाथ में लिये हुए था। उसकी दशा ऐसी बदली हुई पुराने नौकर-चाकर भी न पहचान सके। देर बाद राजमहल से सबसे बड़ा राजकुमार वह शोक में रो-पीट रहा था। उसको फ़क़ीर ने उसका हाल पूछा—उसने अपना और दोनों भाइयों का सारा हाल कह सुनाया फ़कीर से पूछा कि क्या करें? फ़क़ीर ने दिया कि यदि तुम मुझे अपने भाई के रा [illegible]

पहर का समय था। सबसे छोटा राजकुमार राजा ा हुआ सिंहासन पर बैठा राज का काम कर था। फ़क़ीर को लेकर सबसे बड़ा राजकुमार हासन के पास पहुँचा। सब लोग सम्मान के ए खड़े हो गये परन्तु किसी ने भी बूढ़े बादशाह न पहचाना। फिर फ़क़ीर ने लोगों को सम्बोधन रके कहा—"मैं तुम्हारा राजा हूँ जिसको कि आज म लोग फ़क़ीर के भेस में देख रहे हो। मेरे भेस कारण ही तुम लोगों में से किसी ने मुझे नहीं हचाना, किन्तु मेरी बोली से तुमने अवश्य मुझे ान लिया होगा। मैंने तुम लोगों से कहा था मैं एक वर्ष के अन्दर वापस न आ जाऊँ तो तुम लोग मुझे मर गया समझना। मैं मरा नहीं बलि जान-बूझकर एक वर्ष के अन्दर नहीं आया औ आज कई वर्षों के बाद आया हूँ। कारण यह है ि मैं अपने राजकुमारों के प्रेम की परीक्षा करना चाहत था। मेरे प्रति सबसे अधिक प्रेम सबसे छोटे राजकुमार को है, जिसने मेरे बाद राज्य को भल भाँति सँभाला है और जिस कार्य से मैं स्नेह रखत था उसी के साथ इसने भी स्नेह किया, इसलिए मे प्रति सच्चा प्रेम इसी के हृदय में है। मैं इससे बहुत प्रसन हुआ हूँ और जिन्होंने रोने-पीटने को मेरे लिए सच प्रेम समझा है वे वास्तव में मेरे ऊपर प्रेम न रखते। ऐसा कहकर बूढ़ा बादशाह चल खड़ा हुआ

वसन्त

लेखिका, कुमारी प्रमीला श्रीवास्तव

पीत गया दुखदायी जाड़ा,
आया सुन्दर काल वसन्त।
ठण्डी हवा नहीं अब बहती,
हुआ शीत का है अब अन्त।
खिले फूल हैं पीले-पीले,
हरे खेत फैले भू पर।
चम्पा जुही गुलाब खिल रहे,
भौंरे गूँज रहे जिन पर।
सुबह टहलने हम जाते हैं,
तब है सुख मिलता।
नहीं धूप अच्छी लगती है,
नहीं शीत से तन हिलता।
पेड़ों पर निकली नव कोंपल,
बाग़ हरे हैं दिखलाते।
चिड़ियाँ चहक रही हैं उन पर
लख यह सब हम सुख पाते।

क्यों

लेखक, श्रीयुत लालाराम जायसवाल

मेरी बगिया के फूलों पर
तितली खेल मचाती हैं;
पर जब मैं हूँ उन्हें बुलाता
पास नहीं वे आती हैं।
फूल-फूल पर बैठा करती
पेड़-पेड़ पर जाती है
किन्तु पकड़ने जब मैं जाता
तुरत दूर उड़ जाती हैं
क्यों मुझसे वे इतना डरतीं
उन्हें न क्या मैं करता प्यार,
यदि मिल जायें एक बार वे
कर लूँ जी भर उनको प्यार।
लाकर उनके आगे रख
रङ्ग - बिरङ्गे ताज़े फूल
नहीं भटकना उन्हें पड़ेग
पेड़-पेड़ पर जाकर भूल

आटे की भुजिया

लेखिका, कुमारी भारती जोशी

बकबक नगर में एक लाला रहते थे। कञ्जूस क नम्बर के थे। लालाजी से अगर कोई कुछ ाँगता तो कुछ न कुछ बहाना कर देते। दूकान र जाते और जो कुछ मिलता उसमें से दो आने पनी बीबी को और दो आने .खुद लेकर खाने ा सामान ले आते। उनकी बीबी उनके और पने लिए भोजन बना देती और लाला बाक़ी से अपनी तिजोरी में रख देते। एक दिन की ात है कि लाला साहब की बीबी बीमार हो गई। ालाजी ने पैसे बचाने के लिए दवा न की। वा न पिलाने से आखिर वह मर गई। लालाजी न में बड़े .खुश हुए, क्योंकि एक आदमी का र्च कम हो गया था, लेकिन अगर वे बाहर पनी .खुशी प्रकट करते तो दूसरे लोग उनकी सी उड़ाते, इसलिए अपने दिखाने के लिए रञ्ज दा किया पर मन में .खुश थे।

एक दिन लाला ने सोचा कि बीबी तो मर गई, एक जने का खरचा भी कई दिन से कम गया है, इसलिए आज आटे की भुजिया बनाई जाय। यह सोच लाला ने गेहूँ निकाले और में पीसने लगे। जब सब गेहूँ पिस गये तो आ आटा अच्छी तरह घोल लिया और फिर मसाला डालकर चूल्हा जलाया, कड़ाही चढ़ा तेल डाला। अब लालाजी भुजिया बनाने जब लालाजी ने अन्तिम भुजिया डाली तो सोचने लगे कि हाथ में जितना आटा लगा निकल नहीं सकता। इसलिए यही ठीक है कि हाथ ही इसमें डाल देना चाहिए। इससे जितन आटा हाथ में लगा है वह पककर हाथ में ही लग जायगा फिर खा लेंगे। यह सोच लालाजी ने हाथ कड़ाही में डाल दिया। हाथ जलने लग आपने घबड़ाकर झटके से हाथ बाहर नि और तेल के छींटे सारे बदन में आ जिससे सारे बदन में फफोले पड़ गये। ला कूदते-हाँफते डाक्टर के पास पहुँचे और लगवाई। कुछ ही दिन में सारा बदन हो गया। तब से लाला ने कञ्जूसी छोड़ दी।

वसन्त

लेखक, श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म'

देखो, फिर वसन्त ऋतु आई।
वन, उपवन, बाग़ों में छाई॥
फूल खिले सुन्दर चमकीले।
नीले-पीले रङ्ग रँगीले।
शोभा हैं ये अजब दिखाते।
हमें साफ़ रहना सिखलाते॥
फूल खिले हैं क्यारी-क्यारी।
हरी हो गई धरती सारी॥
शीत नहीं अब हमें सताती;
आग नहीं अब हमको भाती॥
धीमी हवा लगी अब बहने;
जाड़ा गया, लगी क्यों कहने।
है वसन्त का साज निराला;
ऋतु का यह सिरताज निराला॥

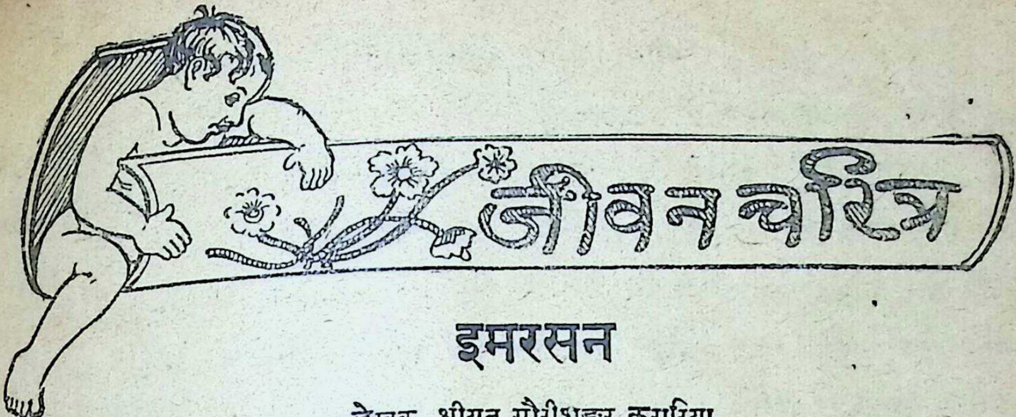

इमरसन

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर कुरारिया

राल्फ़ वाल्डो इमरसन का जीवन बालकों और युवकों के लिए आदर्श है। उसकी प्रतिभा ने रे संसार को आश्चर्य में डाल दिया है।

इमरसन का जन्म २५ मई, सन् १८०३ को रिका के बोस्टन शहर में हुआ था। उसके ा ईसाई पादरी थे। इमरसन के बचपन में ही, कि वह केवल आठ वर्ष का था, पिता का स्वर्ग- हो गया। माता ने बड़ी मेहनत से कुटुम्ब का न किया और बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। बड़ी त के साथ इमरसन ने बोस्टन और हारवर्ड में ा प्राप्त की। पहले उसका उद्देश्य अपने पिता मान पादरी होने का था, पर अन्त में उसे अपना दा बदलना पड़ा। उसने लेखक होने का निश्चय ा और लेखों द्वारा अपने विचार जनता के ने प्रकट किये। चूँकि वह प्रकृति का उपासक र होनहार कवि था, उसने बोस्टन के निकट कोर्ड नामक गाँव में अपना घर बनाया और ने तक वहीं रहा। वहाँ उसने खेती के लिए कुछ ीन भी मोल ली।

वह प्रकृति की शोभा पर मुग्ध हो जाया करता प्रकृति ही मानों उसकी शिक्षा देनेवाली थी। अपने पड़ोसियों से मिलता-जुलता; उनकी कठि- इयों और समस्याओं में दिलचस्पी रखता और सानों के साथ मनोविनोद भी करता। गाँव के लक उसे प्यार करते और वह उन्हें प्यार करता। सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधारों लिए वह लेख और कवितायें भी लिखता पर ऐ ढङ्ग से कि हर एक पर उनका असर पड़ता था

धीरे-धीरे इमरसन का नाम फैलता गया अच्छे से अच्छे कवि और विद्वान् कन्कोर्ड आ और उसके साथ से लाभ उठाते। सरलता, सादग और सत्यता के व्यवहार से हर एक उसकी ओ खिच जाता और जीवन भर इमरसन का प्रेमी ब जाता। अभिमान उसे छू तक नहीं गया था।

दोपहर के पहले का समय वह पढ़ने बिताया करता था और बाद में अकेले या किस के साथ खेत, जङ्गल और नदी के किनारे जाक घूमता, कभी हरी घास पर लेटता। प्रकृति क लीलाओं और परिवर्तनों को देखता। ठण्ड के ३- महीने वह व्याख्यान देता और शेष दिन अध्ययन चिन्तन और लेख लिखने में लगाता।

इमरसन के विचार भावपूर्ण और गम्भी होते इस कारण पहले जनता को सहज ही समझ में न आये। धीरे-धीरे जनता ने उनक मूल्य समझा और अपनाया।

इमरसन अमेरिकन साहित्य में नये यु का चलानेवाला माना जाता है। उसने साहित को पुरानी रूढ़ियों से दूर कर आज़ाद कर दिय है और नये रास्ते पर बढ़ना सिखलाया है। क लेखकों और कवियों ने उसके आदेशों को मानक

नई रचनाओं को जन्म दिया है, जो कि पहिले पुरानी लकीर के फ़क़ीर बने रहना ही अच्छा समझते थे। इमरसन ने समझाया कि "यह बन्धन है। इन बन्धनों को तोड़ना चाहिए। नक़ल करने का अर्थ है कमज़ोरी। हमें बालक बने रहने में ही सन्तोष न करना चाहिए। ख़ुद अपनी आँखों से देखो और जो देखो वह लिखो। ख़ुद सोचो और जो सोचा है, वही लिखो।" ऐसी बातें इमरसन की रचनाओं में जहाँ-तहाँ मिलेंगी।

"हर एक में व्यक्तित्व होता है—एक स्वाभाविक प्रतिभा होती है जो अवसर पाकर चमकती है। उसका आदर करना हर एक आदमी का कर्त्तव्य है। हर एक व्यक्ति एक विशेष के लिए जन्म लेता है। इमरसन की सभी नाओं में आपको उत्साहपूर्ण आदेश मिलेंगे।

इमरसन की मृत्यु सन् १८८२ में क गाँव में ७९ वर्ष की उम्र में हुई। पर उसका चरित्र आज भी सारे संसार के लिए उदाहर बालको! उसके चरित्र से प्रभावित हो त अपने जीवन को सुन्दर और सफल बना और बना रहे हैं। तुम्हें भी इमरसन के का अध्ययन—उसकी लिखी पुस्तकें प करना चाहिए और इस तरह अपनी मौलि और स्वतन्त्र विचारों को बढ़ाना चाहिए।

गुड़ियों का गीत

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

हम गुड़ियों का देश निराला।
हम गुड़ियों का वेष निराला॥
नीले-पीले लाल गुलाबी।
हरे बसन्ती औ' उन्नाबी॥
पहन-पहनकर वस्त्र रँगीले।
सादा कभी, कभी चटकीले॥
हम सबके मन को हरती हैं।
खेल नये निशि-दिन करती हैं॥
हमें देख यदि पाती मुन्नी।
दौड़ी-दौड़ी आती मुन्नी॥
कैसी ख़ुश हो जाती मुन्नी।
फूली नहीं समाती मुन्नी॥
हमको गले लगाती मुन्नी।
हिलराती दुलराती मुन्नी॥
गोदी में ले हमें घूमती।
कभी हमारे गाल चूमती॥
पढ़ना-लिखना बिसराती है।
हमें [illegible] पाती है॥

हमें सुलाकर सोने जाती।
सपनों में भी नहीं भुलाती॥
कभी हमारा ब्याह रचाती।
हमें नवेली बहू बनाती॥
घूँघट में रहना सिखलाती।
सजधज से बारातें लाती॥
मधुर-मधुर पकवान खिलाकर।
देती है बारात बिदा कर॥
छा जाता घर में सूनापन।
नहीं किसी का भी लगता मन॥
कैसे खेल खिलाती मुन्नी।
कैसे स्वाँग रचाती मुन्नी॥
कैसी अच्छी मुन्नी प्यारी।
हम सब हैं इस पर बलिहारी॥
हम मुन्नी की सखी सहेली।
हम दुनिया के लिए पहेली॥

ाना शुरू किया। बन्दर
गई।

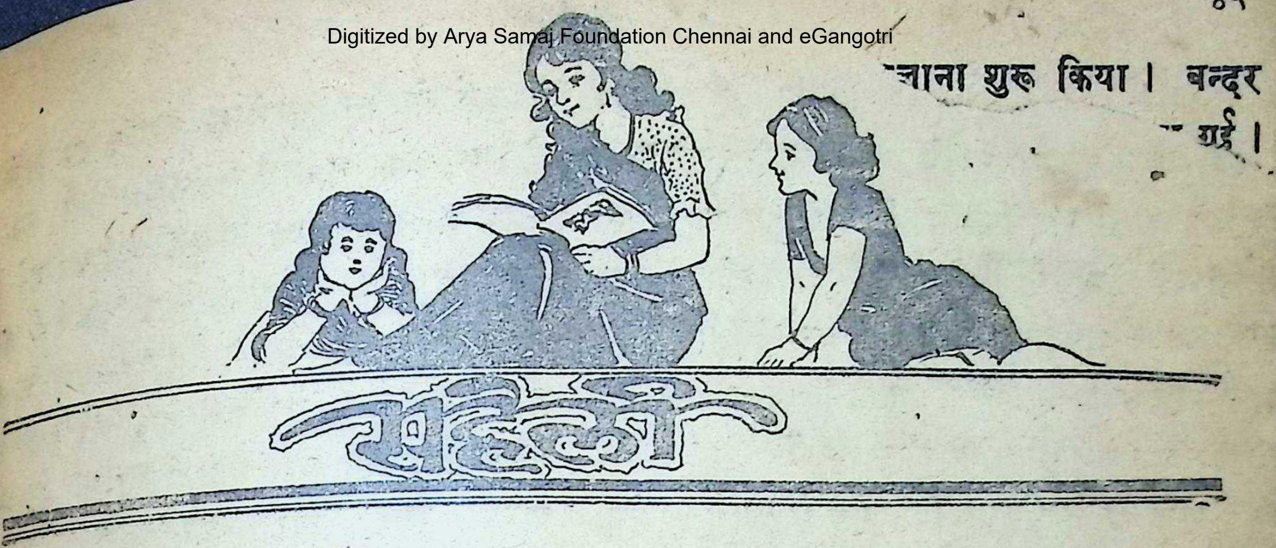

गुड्डा

लेखक, श्रीयुत राय ज्योतिषचन्द्रप्रसाद वर्मा

स्नेहलता अभी सोकर ही उठी थी कि माया र रवि पहुँच गये। अम्माँ ओसारे पर बैठी हुई धो रही थीं, इसलिए स्नेह ने इशारे से उन्हें ी चलने को कह दिया। गुड्डा लेकर चुपके-से स्वयं भी जब बाहर जाने को हुई कि अम्माँ से देख लिया। वे बेतरह झुँझला उठीं—काजी, गुड्डा नहीं लाये, आफ़त ले आये। तो उनकी लाड़ली पढ़ने में पहले से ही ख़ूब लगाती थीं और अब तो हो गई है पूरी लिदास। सुबह से शाम तक बस गुड्डे से खेल—खाने की सुधि न पीने की। अभी सोकर उठी ीं, कि फिर खेलने की धुन सवार हो गई।"

स्नेह अम्माँ की बातों से डरकर काकाजी के ट खिसक आई। "क्या करोगी भाभी, मेरी टिया अभी बच्ची है न। बचपन में तो सभी ऐसा करते हैं।" कहते हुए स्नेह को गोद में लेकर काजी बाहर बैठक में चले गये। माया, कुमार, , प्रेम सब के सब पिछवाड़े में पाकर के पेड़ के े स्नेह की बाट जोह रहे थे। उसके आते ही आरम्भ हो गया।

माया खाना बनाने के लिए मिट्टी सानने से अपने गुड्डे को सजाने लगी। रवि बाग़ीचे फूल लाने चला गया।

माया मिट्टी सानती हुई बोली—"मालकिन देखो तो आटा ठीक से सन गया न।"

स्नेह ने तिनककर जवाब दिया—"नहीं, अ नहीं हुआ, ठीक से सानो। काम करने में मन नह लगता, केवल बैठी रहती हो।"

प्रेम बैठा हुआ ग़प लड़ा रहा था। स्नेह च से बोल उठी—"क्यों जी, केवल तुम ग़प ही लड़ाओ या काम भी करोगे? हमें ऐसा नौकर नहीं चाहिए इस तरह काम करने में मुँह चुराने से विदेश में का कैसे चलेगा। कितनी देरी हो गई और अभी त तुमने मालिक को स्नान भी नहीं कराया। जाओ पहले लल्ला (गुड्डे) को बुला लाओ। देखो तो कहाँ बैठा हुआ खेल रहा है।"

प्रेम धूप में से गुड्डे को उठा लाया--"माल किन देखो लल्ला धूप में खेल रहा था, कहीं कुछ ह जाता तब?"

स्नेह का ग़ुस्सा बढ़ गया। उसने पकवा बनाना छोड़कर गुड्डे को तड़ातड़ दो-चार तमा रसीद कर दिये। धूप में रहने के कारण गुड्डा त

नई रचनाओं के जन्म दिया करती रहती हूँ कि धूप पुर मत जा। पर यह तो मेरी बात मानता ही नहीं, तो मैं क्या करूँ?" फिर आजिज़ आकर अम्माँ की सीखी हुई बोली में अपने माथे को ठोंकती हुई बोली—"हे भगवान्, मैं क्या करूँ? मैं तो इस पाजी से तङ्ग आ गई हूँ। पढ़ना-लिखना छोड़कर बराबर धूप में ही खेलता रहता है।"

गुड्डे को घूरती हुई फिर प्रेम से बोली—"प्रेम, डाक्टर साहब कहाँ हैं? जाओ बुला लाओ।"

रवि डाक्टर और कुमार कम्पाउंडर बनकर आ धमके। रवि ने अपनी पेंसिल को झारकर गुड्डे की काँख में लगा दिया। फिर कुछ देर तक अपनी क़मीज़ की बाँही को ऊपर उठाकर ख़ाली कलाई देखता रहा, जैसे घड़ी से टाइम देख रहा हो। फिर उस पेंसिलवाले थर्मामीटर को देखते हुए डाक्टर साहब की सुनी हुइ बोली में बोला—"बुख़ार अभी बढ़ रहा है, इस समय एक सौ एक है। इसे मलेरिया हो गया है। मालूम होता है यह धूप में खेल रहा था। ऐसे लड़कों को तो बेंत से पीटना चाहिए और घर से निकालकर बग़ीचे में फेंक देना चाहिए कि भूत उठाकर ले जायँ।"

फिर चिन्तित होकर तागे का बना हुआ डाक्टरी यन्त्र लगाया। छाती और नाड़ी की धड़कन को गिना। फिर गम्भीर स्वर में बोला—"घबड़ाने की बात नहीं, हम इसको अच्छा कर देगा। ऐ कम्पाउंडर साहब, इसको चार ख़ुराक मलेरिया-मिक्सचर तो पिला देना।"

फ़िर ईंट और पत्थर के टुकड़ों के रुपयों से डाक्टर साहब की फ़ीस चुका दी गई। वे बड़ी प्रसन्नता से रुपयों को जेबों में रखकर, ईश्वर को आज की आमदनी के लिए धन्यवाद देते हुए चले गये।

इसी समय काकाजी आकर स्नेह को बुला में गुड्डे को सूटकेस में रखकर काकाजी के खेत की ओर घूमने चली गई।

आज पाठशाला में स्नेह का मन नहीं रह-रहकर वह छुट्टी होने की राह देख र मन ही मन आज के लिए सुन्दर-सुन्दर मो बना रही थी! गुड्डे की शादी होगी, वह माँ बनेगी, रवि और माया वधू की, फिर अच्छा खेल होगा। और न जाने क्या- गुनगुना रही थी।

छुट्टी होते ही स्नेह गुड्डे को सजाने की घर दौड़ पड़ी। स्लेट-पेंसिल को फेंक, स्कूल प कर, जब नित की नाईं वह आलमारी से गुड्डा लने गई तो देखा गुड्डा वहाँ नहीं है। हृदय ध करने लगा। आलमारी में से गुड्डा क्या हो वह कुछ सोच नहीं सकी। तीन-चार बार आलमारी देख डाला, घर का कोना-कोना डाला, कूड़े के ढेर को भी नहीं छोड़ा, प कहीं मिला नहीं। स्नेह ग़ुस्से से दाँत पीसने आज गुड्डे की जान की ख़ैरियत नहीं, मिले वह उसे ख़ूब पीटेगी। न मिलने पर अम्माँ आई, काकाजी के कमरे की भी ख़ाना-तल ली; पर सब व्यर्थ! हारकर वह रोने लगी ज़ोरों से कि अम्माँ आजिज़ हो गईं। क समझाने लगे, खो ही गया तो क्या होगा, गुड्डा उससे भी अच्छा शहर से ख़रीदकर दिया जायगा। और जब इतना सब कहने स्नेह चुप नहीं हुई तो अम्माँ को क्रोध आ ऊपर से दो चार तमाचे भी लगे, "पगली क वह खो ही गया तो क्या, उसके पीछे अ ही दे देगी?"

स्नेह सिसकती हुई कुमार, प्रेम आदि गई। रवि वहाँ नहीं था। उसने माया से

को तो मैंने बाग़ीचे में जाते देखा है।" स्नेह हृदय में शङ्का के बादल उठे। शायद उसी ने हीं गुड्डा चुरा लिया है। उसी ने तो एक रोज़ था कि गुड्डा दे दो, नहीं तो चुरा लूँगा। उसके सिवा दूसरे का देखा ही कहाँ हुआ है गुड्डा कहाँ रक्खा रहता है। उसे विश्वास हो कि रवि ने ही उसके गुड्डे को चुराकर चे में कहीं छिपा दिया है। क्रोध से उसकी में लाल हो गईं।

रवि को देखते ही क्रोधित स्वर में पूछ उठी—गुड्डा कहाँ छिपा आये हो लाला? ला दो, तो अच्छी बात नहीं होगी।"

रवि स्नेह से ऐसे स्वर में बात सुनने का नहीं था। "मैं?" वह हक्का-बक्का-सा स्नेह ँह देखने लगा। "हाँ, हाँ, तुम" स्नेह गुस्सा ली-पीली होती हुई बोली—"ला दो, नहीं तो रखती हूँ। ख़बरदार, चोर कहीं का।"

"मैं क़सम...."

"सो सब कहने से काम नहीं चलेगा। चलो, चाची से मार खिलवाती हूँ तो पता लगेगा।"

उसे खींचकर चाची के पास ले गई। रवि कहा नहीं, उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े।

और जब चाची की मार से रवि चीखने-ने लगा, तो स्नेहलता को भी दुःख होने कि उसने यह अच्छा काम नहीं किया।

पिछवाड़े में शाम को खेलना बन्द रहा, कोई हाँ नहीं आया और रवि भी स्नेह से मुँह ये अलग बैठा रहा।

दीपक जल जाने के बाद अम्माँ ने धुले हुए ों को रखने के लिए जब सूटकेस खोला कि के एक कोने से वह हँसता हुआ छोटा-सा निकल आया। स्नेह के ताज्जुब का ठि ना ही न रहा। उसे आज सुबह की घटना याद आ गई जब वह सूटकेस [illegible]ाना शुरू किया। बन्दर आलमारी में रखने के बदले सूटकेस में ही रख गई। काकाजी के साथ खेत की ओर घूमने गई थी और आकर थोड़ी देर के बाद खा-पीकर फिर पाठशाला चली गई थी।

स्नेह को रवि का निर्दोष चेहरा याद आ गया। पछतावे की ज्वाला में वह जल उठी।

रवि दरवाज़े पर बैठा हुआ था, स्नेह को देखते ही डर से सहमकर खड़ा हो गया।

"गुड्डा मुझसे ही खो गया था लाला, मैंने बेकार तुम्हारा नाम लगा दिया" और उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े—"अब मेरे साथ नहीं खेलोगे न? अच्छा, मत खेलना, मैं बड़ी बुरी हूँ।"

"धत्त, इसी लिए तुम रोती हो दीदी! मैंने कब कहा है कि तेरे साथ नहीं खेलूँगा।" रवि स्नेह का आँसू पोंछते हुए बोला—"चुप रहो, नहीं तो मुझे भी रुलाई आने लगेगी।"

और रोकने पर भी रवि की आँखों में आँसू आ ही गये। स्नेह ने आँचल से उसके आँसुओं को पोंछ दिया—"लो, अब तुम्हीं इस पाजी से खेलना।" उसने रवि के हाथ में अपना गुड्डा रख दिया।

"और तुम?" रवि आश्चर्य से पूछ उठा।

"मैंने दूसरा गुड्डा पा लिया है।"

"कहाँ?"

"यह" स्नेह ने रवि को गोद में उठा लिया। फिर मुसकाती हुई बोली—"जानते नहीं हो क्या; गुड्डे से तो केवल बच्चे ही खेलते हैं न! अम्माँ कहती हैं मैं तो अब बहुत बड़ी हो गई हूँ!"

सुबह में फिर माया और रवि गुड्डा लेकर आ पहुँचे। स्नेह ने खिड़की से देखा और सब बच्चे भी पेड़ के नीचे ठण्ड से थरथराते हुए उसी की राह देख रहे थे। खेलने का लोभ वह रोक न सकी और वहीं दौड़ पड़ी।

घमण्डी बन्दर

लेखक, श्रीयुत 'शरद'

एक दिन एक बन्दर उछलता-कूदता एक धोबी के यहाँ पहुँचा। धोबी ने एक साहब का कोट-पतलून साफ़ कर धूप में सूखने को डाल रक्खा था। बन्दर ने कोट-पतलून देखा तो उसका मन कोट-पतलून पहनकर साहब बनने के लिए मचल उठा। उस समय धोबी वहाँ नहीं था। अच्छा मौक़ा पाकर बन्दर कोट-पतलून लेकर जङ्गल में भाग गया। जङ्गल में जाकर उसने कोट-पतलून पहन लिया और साहब बन गया।

बड़ी शान के साथ वह एक पेड़ के नीचे घूम रहा था कि बाघ ने उसे देखा। बाघ ने सोचा—यह बन्दर कोट-पतलून पहने घूम रहा है। इसका तो यही मतलब है कि बन्दर अब साहब हो गया है। यह सोच बाघ ने बन्दर के सामने जा झुककर सलाम किया। घमण्डी बन्दर ने शान से कहा—"भाई बाघ, मैं चाहता हूँ कि दोपहर को सोने के लिए मुझे कोई ऐसी खाट या झूला दो कि नींद ख़ूब आवे।"

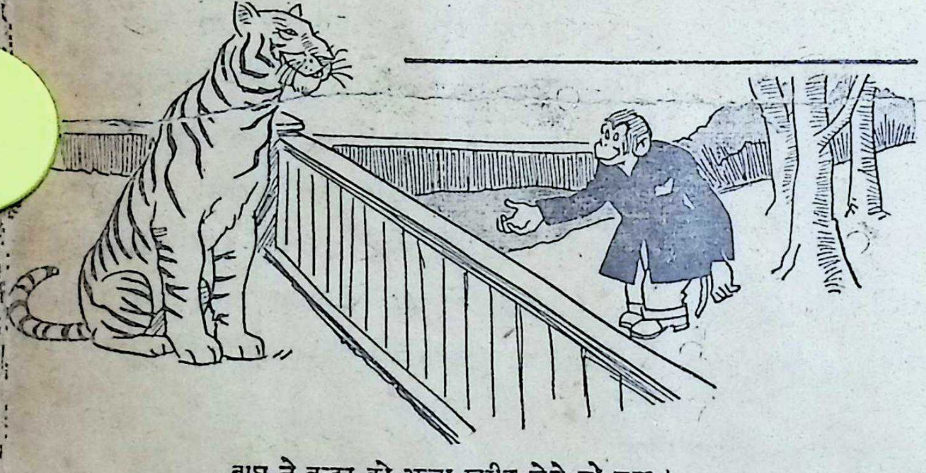

बाघ ने बन्दर को झूला ख़रीद लेने को कहा।

बाघ ने बड़ी दीनता से कहा—"सरकार! हमारे पास एक झूला है जिसे हम बेचना चाहते हैं। उस झूले पर आप अच्छी तरह सो सकेंगे।"

बाघ ने कहा—"आजकल हम गाना सीख रहे हैं।"

बन्दर ने ख़ुश होकर कहा—"तब अच्छा है। जब हम सोया करेंगे तो तुम गानेवालों की, मण्डली लाकर गाना सुनाया इससे मुझे नींद जल्दी आ जाया करेगी।"

बाघ ने कहा—"साहब, हमारे पा वालों की कोई मण्डली तो है नहीं, हाँ कभी कहीं गाना-बजाना होने लगता है भी बैठकर सुनते हैं और सीखते हैं।"

बात तय हो गई। बाघ को बन्दर ने का दाम भी दे दिया। को जब सोने का समय तो बाघ ने झूला ला पेड़ की डालों से लटका दिया। सोने के बन्दर आया तो झूला ख़ुशी से फूल उठा। पर इतने ज़ोर से दोनों पेड़ की डालियाँ, यह झूला बँधा था, झुक गईं। बन्दर बहुत बुरा लगा। उसे ग़ुस्सा चढ़ आया

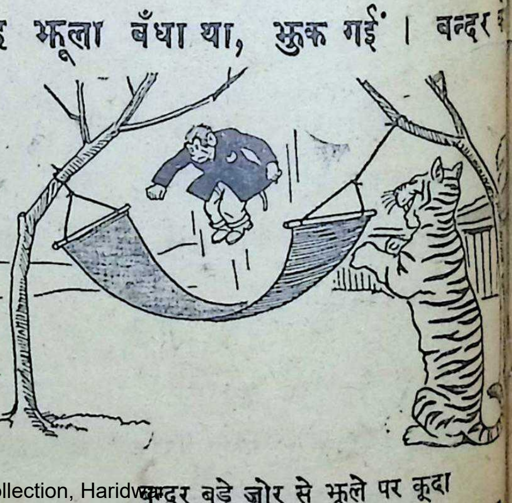

बन्दर बड़े ज़ोर से झूले पर कूदा

खराब है। ग़ुस्से में आ उसने अपना भी फेर लिया। बाघ बहुत गिड़गिड़ाया जाकर वह घमण्डी बन्दर माना।

इतने में बन्दर ने देखा—दो ऊँची गर्दन के चले आ रहे हैं। बन्दर ने इन्हें बुलाया क सारस बोला—"हम लोग बहुत भूखे हैं।" ने कहा—"तुम दोनों अपनी लम्बी गरदन से हमारा झूला बाँधकर हमें झुलाओ तो तुम्हारे खाने का प्रबन्ध कर देंगे।" इस पर दोनों सारस राज़ी हो गये।

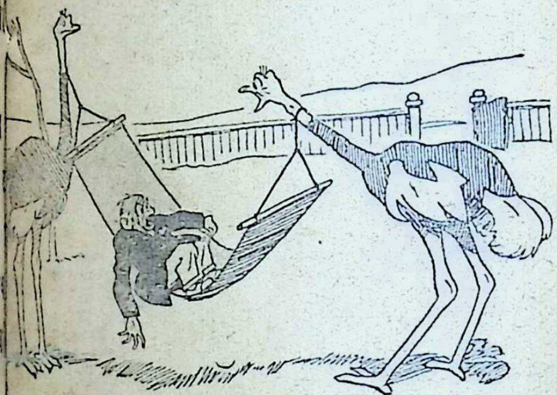

एक सारस को बड़े ज़ोर से खाँसी आ गई

दोपहर को जब बन्दर झूले पर शान से लेट तो सारसों ने अपनी गरदन हिला-हिलाकर झूले को धीरे-धीरे झुलाना शुरू किया। बन्दर को बहुत अच्छा लग रहा था। उसे नींद आ गई। तभी उन दो सारसों में से एक को खाँसी आ गई। खाँसी आने से गर्दन हिली और झूला भी हिला जिससे बन्दर की नींद खुल गई। घमण्डी बन्दर को बहुत ग़ुस्सा आया। उससे यह सहा नहीं गया और उसने दोनों सारसों को डाँटकर भगा दिया।

घमण्ड में उसने सारसों को भगा तो दिया पर यह न सोचा कि उनके चले जाने पर झूला कैसे खड़ा रहेगा। पर घमण्ड के कारण तो उसका दिमाग़ ठीक था ही नहीं। सारस चले गये। जब बन्दर का ग़ुस्सा उतरा तो उसने झूला टाँगने की कोशिश की, पर अब वह कैसे टँग सकता था। बेचारा बन्दर परेशान होकर रह गया। दौड़-धूप में उसे अपने कपड़ों की सुध न रही। कपड़ा उतारकर उसने एक ओर रख दिया। बाघ ने जो उसको इस तरह देखा तो अपना झूला भी उठा ले गया और बेचारा बन्दर हर ओर से हाथ धोकर पछताता बैठा रहा।

जागो

लेखक, श्रीयुत आशाकान्त बी० आचार्य

जागो जागो भैया मेरे,
उषा थाल ले आई;
आसमान पर लाली छाई,
कलियाँ भी मुस्काईं।
चली जा रहीं चिड़ियाँ देखो
'चींचीं' गीत सुनाती,
हुआ भोर अब तुम भी जागो।
तुम्हें नींद क्यों आती?
उठो चलो अब लगो काम में
आलस अपना त्यागो।
भारत-माँ के प्यारे बच्चो!
भोर हुआ अब जागो।

सोने की बाल्टी

लेखक, श्रीयुत जगतनारायणप्रसाद

रामू एक ग़रीब किसान का बेटा था। जब उसकी उम्र दो ही साल की थी, तभी उसके पिता का देहान्त हो गया। उसकी माँ पड़ोस के एक महाजन के यहाँ नौकरी करके अपना तथा अपने बच्चे का पेट पालती थी।

रामू जब पाँच बरस का हुआ तो माँ ने उसे पढ़ने के लिए भेजना चाहा। पर धनाभाव के कारण वह उसे न पढ़ा सकी। लेकिन इस बात से उसके दिल में बड़ी ठेस लगी।

रामू जब दस बरस का हो गया तो पास-पड़ोस के लोगों के जानवर चराकर अपना पेट पालने लगा। दूसरे लड़कों को पढ़ता देख उसे बड़ा रञ्ज होता था। वह सोचता कि अगर किसी तरह मैं भी पढ़ जाऊँ, तो क्या ही अच्छा हो। वह सारे दिन जानवर चराता और शाम को कुछ न कुछ पढ़ता। धीरे-धीरे उसने हिन्दी की सारी वर्णमाला सीख ली।

अब किताबों के बग़ैर आगे का कार्य कैसे चले? यह सोच उसने एक महीने की आधी कमाई तो खाने-पीने के सामान जुटाने में ख़र्च की और आधी कमाई से पढ़ने की कुछ किताबें ख़रीद लीं। पर मास्टर के बिना कैसे पढ़े। वह किताबें लिये हुए जानवरों को चराता और जो अक्षर पहिचानता था उन्हें किताबों में ढूँढ़ा करता था।

एक दिन दोपहर को बड़े ज़ोर की लू चल रही थी। ज़मीन तवे की तरह जल रही थी। रामू एक पेड़ की छाँहीं में बैठा हुआ किताब के पन्ने उलट-पुलट रहा था कि एकाएक उसे रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह उस ओर दौड़ा। पास जाकर देखता क्या है कि एक बुढ़िया है, जिससे चला नहीं जा रहा है, फिर भी वह आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है। रामू के सामने वह दो ही कु थी कि एकाएक गिर पड़ी। यह देख र दया आई और उठाकर पेड़ की छाया में

बुढ़िया का गला सूख रहा था। उ से पानी माँगा पर रामू का लोटा एक दो कहीं चला गया था। पहले तो रामू ने लगाई, पर जब उसका पता न लगा परेशान हुआ। वह सोचने लगा कि पा तरह लाया जाय। उसे ऐसा मालूम हु अगर पानी लाने में देर हुई तो बुढ़िया मर

कुछ सोचने के बाद उसने पत्तों का ए बनाया और अपनो धोती से एक कोने बाँधा। फिर वह उसे लेकर कुवें में उतर दोने में पानी भरकर धोती को मुँह से पकड़ और धीरे-धीरे ऊपर आ गया। बुढ़िया के जाकर उसके मुँह में ज्योंही पानी डाला, एक सुन्दर परी के रूप में बदल गई। उसे दे डरा। रामू को डरता देख परी ने कहा—"मैं बहुत ख़ुश हूँ, डरो नहीं।" इसके बाद परी ने हाथ ज्योंही ऊपर उठाया कि एकाएक एक आ गई जो देखने में सोने की मालूम होती

परी ने बाल्टी रामू की ओर बढ़ाते हु कि इसे लो, सँभालकर रखना और जिस तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े उसी इस पर कपड़ा डाल ज्योंही मेरा स्मरण कर उसी वक़्त यह तुम्हारी मंशा पूरी करेगी। कहकर परी ग़ायब हो गई।

बाल्टी पाकर रामू बहुत ख़ुश हुआ औ जा अपनी माँ से सारा हाल कह सुनाया। बेटे को गले लगाया और कहा——"एक दू मदद करना हमारा धर्म है।"

अब रामू ने बाल्टी आज़माना चाहा। उसने बताये हुए ढंग से पहले तो अपने पढ़ने की माँगीं। मुँह से कहना ही था कि पढ़ने ारा सामान आ गया। इसी तरह से उसे के सभी सामान मिलने लगे।

उसने जानवर चराना छोड़ दिया और पास के स्कूल में मन लगाकर पढ़ने लगा।

कुछ दिनों बाद रामू काफ़ी पढ़ गया और अपनी ज़िन्दगी के दिन ख़ुशी से बिताने लगा।

वसन्त

[१]

लेखक, श्रीयुत बलवीरसेन खन्ना

देखो वसन्त ऋतु आई है,
हरियाली सँग में लाई है।
हर डाल-डाल, हर पात-पात,
खेतों में शोभा छाई है॥
सुरभित समीर अब चलता है,
फूलों के मन को छलता है।
आकाश हुआ अति निर्मल है,
गुड़ियों का अब उड़ता दल है।
सर्दी ने पूँछ दिखाई है,
गर्मी ने ली अँगड़ाई है।
पशु-पक्षी ख़ुश हो झूम रहे,
कोयल ने कूक लगाई है॥
सरसों ने पलकें खोली हैं,
पेड़ों पर चिड़ियाँ बोली हैं।
भौंरे भी तितली को पुकार,
चल दिये बनाकर टोली हैं॥
जल-थल में छाया है वसन्त,
ऋतुओं का राजा है वसन्त।
सब कोई सुख में डूब रहे,
मानों दुःखों का हुआ अन्त॥

[२]

लेखिका, कुमारी कुसुमकुमारी माथुर

अब आई वसन्त-बहार।
कूक रही कोयल मतवाली,
झूम रही है डाली-डाली।
उपवन की है छटा निराली,
फूले नहीं समाते माली॥

फूल उठी अब केसर-क्यारी,
करती स्वागत हो बलिहारी।
फूलों की है रङ्गत न्यारी,
झूम रही केसर मतवारी॥

पीले कपड़े सभी रँगाते,
आज सभी हैं ख़ुशी मनाते।
बच्चे मिलकर गाना गाते,
फूलों के हैं हार बनाते॥

जग में छाई ख़ुशी अपार,
पहनें सब गेंदों के हार।
ऋतुओं का आया सरदार,
अब आई वसन्त-बहार॥

लालची राजा

लेखक, श्रीयुत प्रेमकुमार कपूर

एक नगर में एक सौदागर रहता था। उसकी एक लड़की थी। वह उस लड़की को बहुत प्यार से रखता था। एक दिन सौदागर राजा के यहाँ गया और अपनी लड़की की बहुत बड़ाई करने लगा। उसने कहा कि मेरी लड़की इतनी होशियार है कि वह घास को सोना बना देती है।

राजा लालची था। उसने सौदागर से कहा कि कहाँ है तेरी लड़की, तू उसको बुलाकर ला।

सौदागर अपनी लड़की को लेकर राजा के पास गया। राजा ने एक कोठली में घास भरवा दी और लड़की से कहा कि अगर तूने यह घास सुबह तक सोना बनाकर नहीं दी तो मैं तुझे मरवा डालूँगा।

ऐसा कहकर राजा तो चल दिया पर लड़की बड़े सोच में पड़ गई। थोड़ी देर बाद एक बौना आया। बौने ने लड़की से पूछा—"क्यों, तुम उदास क्यों बैठी हो?"

लड़की ने अपना सब हाल बता दिया। बौने ने कहा—"अगर मैं इस सब घास को सोना बना दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने कहा—"मैं तुम्हें अपनी सोने की अँगूठी दे दूँगी।"

बौने ने घास को सोना बना दिया और अँगूठी लेकर ग़ायब हो गया।

सुबह राजा घास को सोना देखकर बहुत .खुश हुआ। उसने फिर एक कोठा पत्तों से भर दिया, लड़की अब की बार बहुत घबराई रात को बौना आया। बौने ने लड़की से अब मुझको क्या दोगी। लड़की बोल मेरे पास तो कुछ नहीं है। जो था वह दे बौने ने कहा—"जो तुम्हारा पहला लड़ वह मुझे दे देना।" लड़की ने हाँ कहा बौने ने सारे पत्तों को सोना बना दिया राजा आया। सोने का ढेर देखकर .खुश हुआ। उसने सौदागर से कहा तुम्हारी लड़की से विवाह करना चाहता

सौदागर तुरन्त राज़ी हो गया। क्यों इन्कार करता। दूसरे रोज़ धूम-धाम लड़की की शादी हुई।

कुछ दिनों के बाद रानी को ए लड़का हुआ। राजा ने ब्राह्मणों को खिलाया। राजा ने अपना धन .खूब सौदागर को भी बहुत हर्ष हुआ।

कुछ दिनों के बाद बौना आया। रानी से लड़का माँगा। रानी लड़के सकी और रोने लगी। रोने की आवा को सुनाई पड़ी तो राजा अपनी सभा छोड़कर तुरन्त आया। राजा ने रानी से "तुम क्यों रोती हो?" रानी ने अपना बता दिया।

राजा ने बौने को .खूब धन देकर किया। राजा-रानी सुख से रहने लगे।

पूसी की माला

लेखक, श्रीयुत अशोक

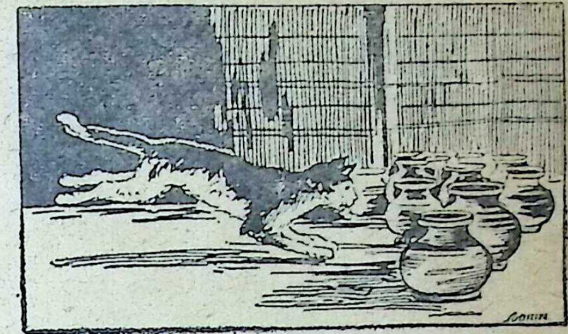

घूम रही थी घर में पूसी,
खाने का कुछ डौल लगाती,
किन्तु जहाँ भी वह जाती थी,
खाली हाथ लौट थी आती ।
पहुँची तभी एक कमरे में,
दिये घड़े कुछ वहाँ दिखाई,
होगा उनमें कुछ खाने को,
सोच यही वह झटपट धाई ।

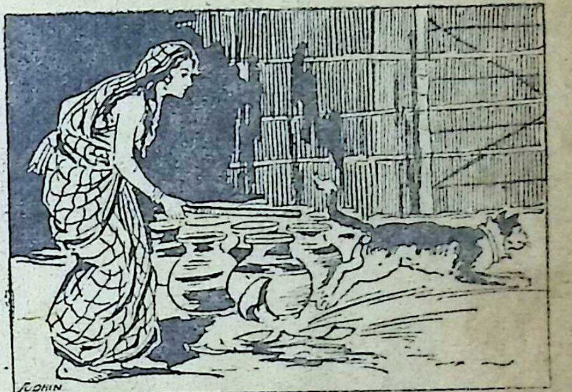

वहाँ पहुँचकर एक घड़े में,
उसने फ़ौरन गरदन डाली;
भाग्य किन्तु उसका खोटा था,
वह बर्तन था बिलकुल खाली ।
खड़-खड़ सुनकर मलकिन दौड़ी,
फ़ौरन डण्डा एक जमाया,
फूटा घड़ा, किन्तु पूसी की
गरदन में उसका मुँह आया ।

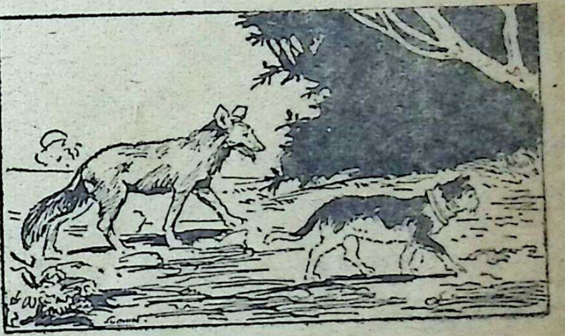

बर्तन का मुँह पहने पूसी,
बेचारी पहुँची जङ्गल में,
उसे देखकर एक लोमड़ी
ने झट सोचा अपने मन में ।
बिल्ली की यह सुन्दर माला,
किसी तरह यदि मैं पा जाऊँ,
तो सारे जङ्गल के पशुओं
पर मैं अपना रोब जमाऊँ ।

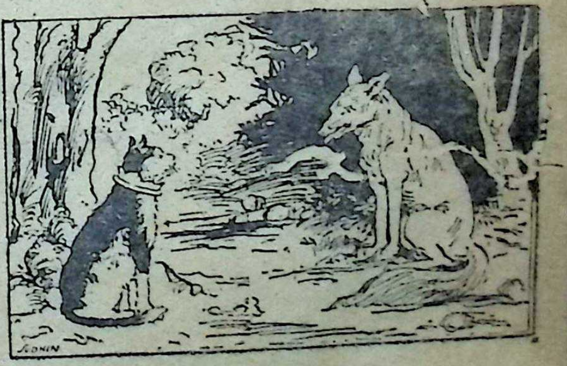

बोली वह पूसी से ऐसे,
भली बहुत यह लगती माला;
मैं भी लेना मोल चाहती,
ऐसी ही सुन्दर इक माला ।
हँसकर पूसी बोली उससे,
खाली बर्तन में मुँह डालो,
सर पर डण्डा पड़ते ही बस,
ऐसी माला तुम भी पा लो ।

चिड़ियों का संसार

लेखक, श्रीयुत बाफणा भँवरलाल जैन, विशारद

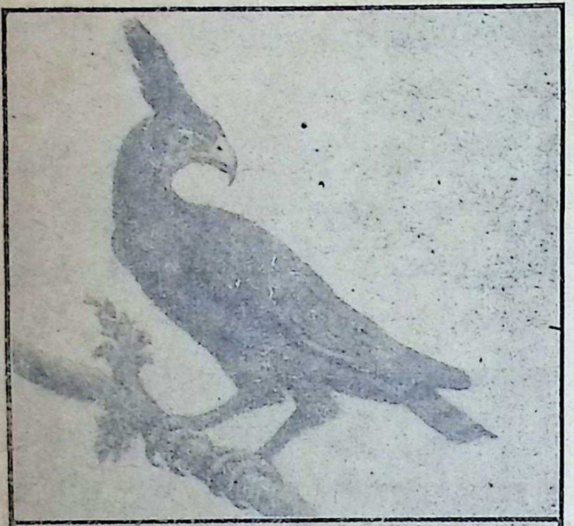

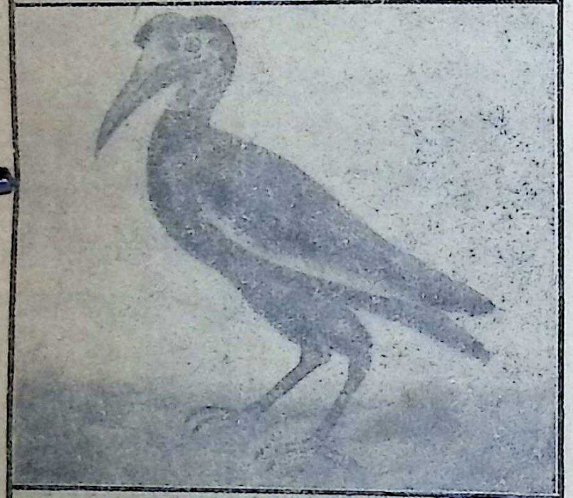

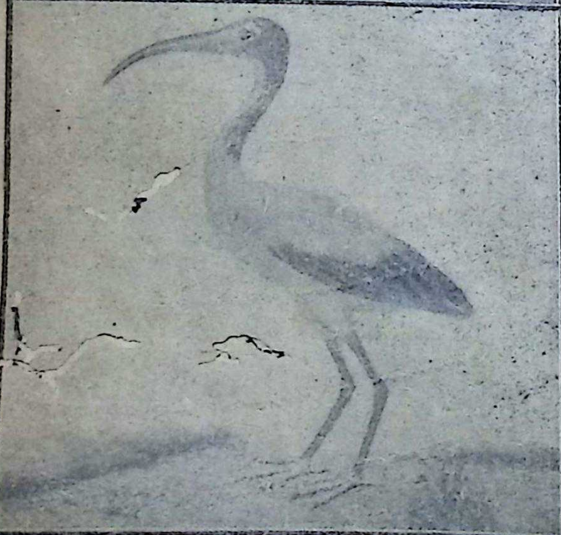

हर एक आदमी यह जानता है कि चि किस तरह की जीव हैं, कहाँ रहती हैं, किस अपना पेट पालती हैं, पर ऐसे मनुष्य कुछ ही जिन्होंने तरह-तरह की चिड़ियाँ पाली हों औ जानने की कोशिश की हो कि वे किस प्रका अण्डों को सेती हैं, बच्चों को किस तरह उड़ना, चलना और भोजन करना सिखाती हैं। इस की जानकारी हम पालतू चिड़ियों से नहीं सकते। हाँ, घोंसलों में रहनेवाली चिड़ियों बात की जानकारी अवश्य प्राप्त की जा सकती

जिस तरह आदमी अपने घरों में रा जाने पर अपने बच्चों के साथ सो जाते हैं, तरह चिड़ियाँ भी अपने बच्चों के साथ घोंस सोती हैं। कुछ रात हो जाने पर बस्ती में छा जाती है। ठीक इसी प्रकार इनके घोंस भी होता है। आदमी चोर के डर से प रखता है, पर इन पक्षियों में कोई पहरेदार होता। हाँ, चोर अवश्य होते हैं। इन उड़ चोरों में एक तो उल्लू है, दूसरा चमगा इनकी कड़कड़ाती आवाज़ को सुनकर चिड़ बच्चे सिकुड़ जाते हैं और सूरज निकलने के तक उसी तरह पड़े रहते हैं।

सूरज निकलने पर चिड़ियाँ अँगड़ा हुई पंख फटफटाती हैं। इनके घरों में इकट्ठा हुआ भोजन नहीं रहता, इसलिए ये अपने की तलाश में चली जाती हैं। चिड़ियों के को देखते हुए हम उन्हें दो भागों में बाँट सक एक तो वे चिड़ियाँ जिनकी चोंचें कठोर नहीं वे छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े खाकर अपना पेट भरत दूसरी वे हैं जिनकी चोंचें सख्त होती हैं; वे और उनसे भी कड़ी-कड़ी चीज़ें खा सकती हैं

जिस समय चिड़ियाँ खाना लेकर घोंसलों ती हैं, उनके बच्चे चीं-चीं करने लग जाते हैं चिड़ियाँ उन्हें खिलाती हैं। प्रायः सभी यों के एक से अधिक बच्चे होते हैं। वे उन बारी-बारी से खिलाती हैं। यह कभी नहीं के एक बच्चा भूखा रह जाय और दूसरा खा जाय। वे याद रखती हैं कि पहले खिलाया है और अब किसे खिलाना है। यह पहचानने की बड़ी शक्ति रहती है। अबा- ऐसी चिड़िया है जो जाड़े में ठंडे देशों से जाती है और गर्मी में फिर उसी देश में घोंसले में रहने के लिए आ जाती है।

कोयल, सारिका और लवा बड़े तड़के उठने- चिड़ियाँ हैं। सारिका सबसे जल्दी उठती र खाने की खोज में निकल जाती है। यह तरह के कीड़े मारकर लाती है। सारे दिन यही करते बीतता है। यह चिड़िया एक में तीन सौ बार अपने बच्चों के लिए कुछ न लाती है। यह अपने बच्चों की रक्षा के लिए सचेत रहती है। यही कारण है कि जब कभी शिकार फँसाने में देर लग जाती है तब बिना खाना लिये ही लौट आती है। यह अपने बच्चों को हद से ज़्यादा खाना देती है। पर जब कभी यह भोजन लेकर घोंसले में आती है तो इसके बच्चे चीं-चीं करने लग जाते हैं जैसे कि बहुत ही भूखे हों।

जब चिड़ियों के बच्चे बहुत छोटे होते हैं तब उनके माता-पिता हज़म किया हुआ खाना या उसी से निकला हुआ एक प्रकार का दूध पिलाते हैं। कबूतर अपने खाने से एक प्रकार का दूध बनाते हैं और जब बच्चों को दूध पिलाना होता है तो अपना मुँह खोल देते हैं और बच्चे अपनी चोंच भीतर कर देते हैं। ऐसा करने पर कबूतर मुँह से दूध उगलते हैं और बच्चे पीने लग जाते हैं। जब बच्चे कुछ और बड़े हो जाते हैं तब कबूतर उन्हें आधा हज़म हुआ भोजन खिलाते हैं।

कीड़े खानेवाली चिड़ियाँ पेड़ों के साथ बहुत उपकार करती हैं। पिद्दी एक बार में छः या सात बच्चे देती है। नर और मादा खेतों से इनके लिए ऐसे कीड़े लाती हैं जो खेती के लिए हानिकारक होती हैं। ये एक दिन में क़रीब ८०० कीड़े लाती हैं। इस तरह ये पेड़ और पत्तियों को बहुत लाभ पहुँचाती हैं।

याद

लेखिका, कुमारी शारदा गर्ग

यह प्यारा-प्यारा मुखड़ा,
क्यों उसकी याद सताती ?
वे प्यारी-प्यारी आँखें
क्यों हैं सन्देश सुनातीं ?
मैं कहती बिज्जू 'आ जा',
झट मुसका भग जाता था;
मैं कहती मुनुआ 'आ जा',
घुटनों के बल आता था।

जब भूख उसे लगती थी,
बीबी को अपनी सूरत
रो-रोकर दिखलाता था,
अपनी रोनी-सी मूरत।
सबको लगता था प्यारा,
छीना क्यों विधि ने उसको ?
अब उसकी याद रुलाया
करती रहती हम सबको।

भ्रम

लेखिका, कुमारी शकुन्तलादेवी मिश्र (उम्र १३ वर्ष)

रविवार का दिन था, स्कूल था बन्द, 'कमला' अपने पढ़ने के कमरे में बैठी पढ़ रही थी। उसकी सखी गौरी वहाँ आई। कमला ने ख़ुश होकर कहा—आओ गौरी, यहाँ बैठो।

गौरी ने सिर हिलाकर कहा—"मैं बैठूँगी नहीं, बाग़ में चलो, वहाँ झूला झूलें।" कमला ने कहा—"नहीं गौरी! ऐसे दुपहर के सन्नाटे में वहाँ न जाओ, यहीं गुड़िया खेलें।" गौरी बड़े ज़ोर से हँस पड़ी और बोली—"इस समय दिन में न जाओगी और जाना क्या रात में चाहिए।" कमला ने डरते हुए कहा—"दादी कहती थी कि सन्नाटे के समय वहाँ भूत आते हैं।" गौरी फिर हँसने लगी। उसने कहा—"क्या भूत आप खाने आते हैं? अरे तुम बड़ी डरपोक हो कमल! दादी ने तुम्हें योंही डराया होगा। इस समय ख़ूब बादल छाये हैं, झूलते बड़ा अच्छा लगेगा। चलो, तुम्हें ज़रूर चलना पड़ेगा।" कमला ने बहुत 'नाहीं' की पर गौरी के हठ से लाचार होकर उसने अपने छोटे भाई-बहन, मुन्ना, मुन्नी को बुला लिया और गौरी के साथ चल दी। बाग़ कमला के घर के पास ही था और उसी के पिता का था।

× × × ×

कमला और गौरी झूले पर खड़ी पैंग दे रही थीं और मुन्ना-मुन्नी दोनों बैठे थे। झूला ख़ूब ऊँचे उठकर ज़ोरों से नीचे की ओर आता और मुन्ना-मुन्नी आनन्द से चिल्ला उठते। कमला को भी भूल गया कि बाग़ में भूत आते हैं। जिस पेड़ पर झूला पड़ा था उससे कुछ दूर ४-५ ख़ूब घने-घने पेड़ एक-दूसरे से सटे हुए थे उनके नीचे अँधेरा

क्योंकि बादल छाये थे। थोड़ी देर
जगह खड़-खड़ की आवाज़ आई जिसे
कमला का मुँह सूख गया, मुन्ना-मुन्नी भी
पर गौरी नहीं डरी। उसे भूत-प्रेतों पर
नहीं था। अब खड़खड़ाहट के बीच धी
आवाज़ आने लगी—"आऊँ, खाऊँ।" क
काँपते हुए कहा—"भूत नाक से बोलते हैं।
मुन्नी दोनों वहाँ से भाग गये पर कमला इ
गई थी कि भाग न सकी। गौरी समझती
कोई लड़की छिपकर डरवा रही है, इसलि
हँस पड़ी और बोली—"आओ।" फिर ज़ोर
खड़ हुआ और कमला व गौरी ने उस ओर
तो अँधेरे में डाल पर नीली-पीली दो अ
चमकती नज़र आईं; अब तो गौरी भी ड
कमला के तो प्राण ही निकल गये। वह आँखें
कर बेहताशा चिल्लाई—बाग़ में भूत....दौड़ो...

बाहर कमला के पिता टहल रहे थे।
चीख सुनी तो घबराकर दौड़े और दोनों
आकर पूछने लगे—क्या हुआ, तुम दोनों
चिल्लाई थीं?

कमला ने किसी तरह उँगली उठाकर
"वहाँ भूत हैं।" "भूत कहाँ", कमला के
हँसकर कहा—"भूत नहीं, तुम डर गई हो।
सचमुच भूत है; देखिए तो," कमला ने कहा

कमला के पिता उस जगह गये। उन
गौरी भी गई। उन्होंने कोट की जेब से
'टार्च' निकालकर जलाया और इधर-उ
तो दीख पड़ा कि एक डाल पर एक बिल्ली
रही है—म्याऊँ-म्याऊँ। गौरी हँसते-हँसते

लगी। वह बिल्ली एक गिलहरी को पकड़ पर पकड़ न सकी तब नीचे आकर गौरी खड़ी हो गई। उसके गले में लाल रङ्ग मी फ़ीता बँधा था और फ़ीते पर नीले डोरे ा था T (टी)।

गौरी ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"यह ा की पालतू बिल्ली 'टीमी' है। मुझे यह ख़ूब ती है।"

कमला के पिता हँसते हुए चले गये।

× × × ×

अब कमला को भूत पर विश्वास नहीं है। गौरी ने उस दिन की बिल्लीवाली घटना सबको बता दी थी। सबका ख़ूब मनोरञ्जन हुआ। स्कूल में अब भी कमला की हँसी होती है। उसके आते ही कोई न कोई लड़की ज़रूर कहती—"कमला, वह देख भूत!" और सब की सब ख़ूब ज़ोर से हँसने लगतीं तथा वह भी उसमें साथ देती।

घड़ी

लेखक, श्रीयुत नन्दनगोपाल श्रीवास्तव

टिक-टिक देखो घड़ी बोलती,
है हमको वह समय बताती।
किन्तु कभी जब हम सोते हैं
टिक-टिक करके हमें सताती।
सुख भी देती, दुख भी देती,
नहीं बाज़ आदत से आती।
टिक-टिक सुनते-सुनते देखो,
मेरी तबियत है घबराती।
अभी ध्यान में आया देखा,
उस पर लाइन काली पड़ी।
देखा उसकी दो मूँछों को,
दोनों ओर दीखती खड़ी।
नाई की ग़लती से देखो,
कटी मूँछ है मानो छोटी।
अन्धी उसकी सूरत सदैव,
हम सबको लगती है खोटी।
किन्तु कभी क्यों ग़ुस्सा करके,
टिन-टिन है वह बोला करती।
पता नहीं, क्यों उसके अन्दर,
दोनों सुइयाँ डोला करतीं।
किन्तु सदा वह ऊपर रहती,
औ' अचरज से है वह भरी।
कुछ भी होवे, समय बताती,
बाबूजी की बड़ी घड़ी!

टर्रखट्टूँ

लेखक, श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जैन, एम० ए०

एक रोज़ बोली यों नानी, आओ बच्चो, सुनो कहानी ।
जङ्गल में इक नाला बहता, उसमें था टर्रखट्टूँ रहता ।
उछल-कूद बढ़-बढ़कर करता, गाल फुलाकर हर-हर करता ।
टर्रखट्टूँ हुशियार न कम था, गुरु होने का भरता दम था ।
इक दिन उसके जी में आया, देखे दुनिया यह मन भाया ।
पर उसके थे जितने स्याने, कैसे उसको देते जाने ?
उसको हर दम घेरे रहते, जल बाहर नहिं रहने कहते ।
टर्रखट्टूँ ने पर यह ठानी, आज करेगा वह मनमानी ।
छिपकर निकल पड़ा वह चुपके, चला मगर वह दुबके-दुबके ।
झपटा इतने में इक कागा, उसे चोंच में धर ले भागा ।
टर्रखट्टूँ अति ही घबराया, सारा भेद समझ में आया ।
ग़लती उसने अपनी माना, किन्तु व्यर्थ था अब पछताना ।
देख पेड़ की सुन्दर छाया, कौआ उड़कर नीचे आया ।
पहिले टर्रखट्टूँ को पटका, फिर ख़ुद उतरा, देकर झटका ।
बोला अब तुमको खाता हूँ, दम भर में निगले जाता हूँ ।
टर्रखट्टूँ मन में घबराया, मरने का भय दिल में लाया ।
टर्रखट्टूँ ने हँस मुँह खोला, औ' कौए से झट यों बोला ।
सुन रे कौए, सुन रे कौए, अभी बुलाता हूँ मैं हौए ।
तू ख़ुराक है उनकी कौए, मुझे चाहते हैं वे हौए ।
तब तो कौआ भी घबराया, तुरत चोंच में उसे उठाया ।
उसे लिये आकर वह ठहरा, जहाँ गढ़ा था अतिशय गहरा ।
रख गड्ढे में बोला कौआ, यहाँ न आ सकता है हौआ ।
किन्तु न उसने हिम्मत हारी, हँस करके किलकारी मारी ।
बोला झटपट सुन रे कौआ, अब तुझको मारेगा नौआ ।
लिये उस्तरा आता होगा, या उसको पैनाता होगा ।
नहीं चाहता जो तू मरना, उड़ जल्दी, जल्दी उड़ वरना ।
उसके आते तू न बचेगा, पछतायेगा, हाथ मलेगा ।
कौआ भी था बड़ा सयाना, उठा चोंच में हुआ रवाना ।
उड़ा सोचता मन में कौआ, कौन बला यह हौआ-नौआ ।
टर्रखट्टूँ ने इक किलकारी, ख़ूब अकड़कर फिर से मारी ।
कौआ बोला क्यों हँसता है, टर्र टर्र तू क्यों करता है ?
खोला ज्यों मुख उसने अपना, मार्ग लिया टर्रख ने अपना ।
नाला इक बहता था नीचे, गिरा उसी में आँखें मींचे ।

बेचारा बनिया

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण वर्मा

एक गाँव में एक बनिया रहता था। वह ज़ फेरी करके चीज़ें बेचा करता था। एक ह अपनी गठरी लिये हुए एक जङ्गल से रहा था। उस जङ्गल में एक बिगड़ा हुआ ऊँट आकर रहने लगा था। जो कोई भी ङ्गल में होकर निकलता था, ऊँट उसका करता और लपककर अपने मुँह से उसका कड़कर लटका लेता था। इस प्रकार न कितने आदमियों के सर वह, कटोरदान के की तरह, धड़ से अलग कर उन्हें मौत के घाट चुका था।

आज बहुत दिनों बाद उसे यह बनिया ई पड़ा। बनिया अपने पीछे 'बल-बल' करते बना नकेल के ऊँट को दौड़ते हुए आते देख या और अपनी जान लेकर भागना शुरू । भला ऊँट की लम्बी टाँगों की दौड़ में ट से कब बच सकता था। बनिया अपने का कोई उपाय न देखकर एक कच्चे, फूटे में कूद पड़ा और छिपकर दीवार के सहारे हा। मगर ऊँट तो उसकी जान लेने के मानों क़सम ही खा चुका था, उसी कुयें के रे बैठकर अपनी गरदन नीचे डाली। ऊँट चार कोशिश करता कि उसकी खोपड़ी पकड़-लोटे-डोर की तरह बाहर खींच ले। लेकिन बार उसके होठ और बनिये के सिर के बीच ही इंचों का अन्तर रह जाता।

बेचारा बनिया दबका हुआ बैठा था। इतने सने देखा कि एक काला, पुराना साँप उसके [illegible] मौत देखकर वह डरा पर पत्थर की मूर्ति की भाँति वह टस से मस न हो सका।

साँप रेंगता हुआ बनिये के घुटने और कन्धे पर से चढ़कर उसके सिर पर बैठ गया। फिर ज्योंही ऊँट ने गरदन लपकाई, साँप ने ऊँट के मुँह में काट लिया। फिर उतरकर अपने बिल में घुस गया।

कुछ ही मिनट बाद बनिये ने देखा कि ऊँट की निर्जीव गरदन कुँए के अन्दर लटकी ही रह गई। बनिया ऊँट की गरदन का सहारा लेकर ऊपर आ गया और अपने घर की राह ली।

कुछ ही दिन बाद उस गाँव में एक सँपेरा आया। उसकी उस बनिये से भेंट हो गई।

सँपेरे ने बनिये से कहा—लालाजी, कहीं आपने कोई साँप देखा हो तो बताइए। मैं उसे पकड़ूँगा, फिर आप मेरा हुनर देखिए।

बनिया—हाँ-हाँ, मैं तुम्हें बताऊँगा। लेकिन………।

सँपेरा—लेकिन क्या? क्या मैं उसे पकड़ नहीं सकता?

बनिया—तुम्हारी क्या हिम्मत जो उसे पकड़ सको। वह बहुत पुराना नाग है। उसके शरीर पर बाल हैं। उसे देखते ही तुम्हारे होश उड़ जायँगे।

सँपेरा—अगर मैंने पकड़कर न दिखाया तो आज से यह काम ही छोड़ दूँगा।

बनिये ने ख़ुश होकर कहा कि अच्छा, चलो मेरे साथ; मैं तुम्हें बताऊँ। आगे-आगे बनिया चला पीछे-पीछे सँपेरा। रास्ते में बनिया सोचता

ही जाय। क्योंकि रात-बिरात, अँधेरे-उजेले में निकलते समय उसका भय लगा रहता है।

शीघ्र ही वह स्थान आ गया और बनिया ने हाथ के इशारे से बताया कि इसी फूटे कुएँ के अन्दर वह साँप रहता है। सँपेरे ने बीन बजाना और मन्त्र पढ़कर कंकड़ी कुएँ के अन्दर फेंकना शुरू किया। एक घण्टे बाद सँपेरे ने कहा——यह तो बड़ा ज़बरदस्त साँप है। क़ाबू में आना बड़ा कठिन है।

बनिया ने कहा——बस, इसी पर मार रहे थे ? कहाँ गया वह तुम्हारा हुन

इस बार सँपेरे ने हथेली पर जान कोशिश की। थोड़ी देर बाद कुयें के आवाज़ आई कि 'बनिया, तू कोढ़ी साँप फुंफकारता हुआ बाहर निकल आ

बनिया उसी समय कोढ़ी हो गया, ने साँप को पकड़ लिया।

वीर सिपाही हम हम हम

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

वीर सिपाही हम हम हम
तुम राजा हो तुम सरदार
तुम वज़ीर तुम राजकुमार,
वीर सिपाही हम हम हम
वीर सिपाही हम हम हम।
बढ़ते पाँव हमारे साथ,
हिलते साथ हमारे हाथ,
एक नियम हैं एक क़दम
वीर सिपाही हम हम हम।
कन्धों पर रखकर हथियार,
चलते हम डरता संसार,
चलते हैं हम धम धम धम,
वीर सिपाही हम हम हम।
पढ़ते वीरों के आख्यान*,
चलते लेकर तीर कमान,
खाते रसगुल्ला चम चम
वीर सिपाही हम हम हम।

वसन्ती गीत

लेखिका, कुमारी उर्मिला सिनहा

यह वसन्त की उषा रँगीली,
फैला नव-नव कलियाँ सुन्दर,
रङ्ग गुलाबों के नव अन्तर
छिड़का दी है केसर पीली।

फूलों में मकरन्द बसाकर
भौंरे घूमें झुण्ड बनाकर,
जगा-जगा फूलों से कहती—
आई छवि वसन्त की पीली।

हैं किसान सब ख़ुश हो-होकर
सरसों के खेतों में जाकर
पावे प्राण वर्ष नव में सब
देख - देखकर शोभा पीली।

क्यों न आज फिर हम भी हँसकर
सब भाई औ' बहनें मिलकर,
क्रोध क्लेश सब दूर भगाकर—

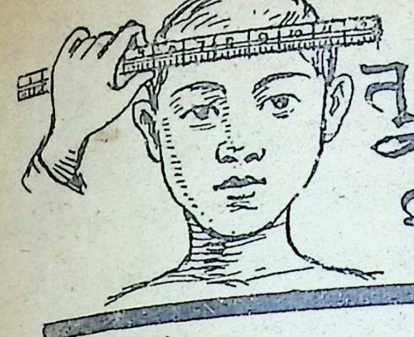

तुममें कितनी बुद्धि है?

नीचे लिखे हुए प्रश्नों के उत्तर सोचकर लो और फिर उनको अलग पेज पर दिये गये से मिलाकर अपनी बुद्धि की परीक्षा करो।

१—इँग्लॅंड के नहरों के केन्द्र पर कौन-सा सा हुआ है?

२—चिड़ियों के पैर एक-दूसरे से क्यों नहीं -जुलते?

३—वसन्त के शुरू की अपेक्षा अन्त में चिड़ियाँ कम गाती हैं?

४—कौन-सी चिड़िया अपने अण्डे दूसरे पक्षी सले में देती है?

५—वह कौन-सा पक्षी है जो पानी में रहने गरम और सूखा रहता है और क्यों?

६—शहर में कुहरा अधिक घना क्यों पड़ता है?

७—तीन मातायें हैं, हर एक के दो लड़कियाँ वे सभी एक मकान में रहती हैं, जिसमें सात हैं और हर माँ या लड़की एक कमरे में सोती यह कैसे सम्भव है?

८—वह कौन-सी चीज़ है जो अपनी जगह से एक इञ्च भी नहीं खिसकती पर बिना चले शहर से दूसरे शहर को भी जाती है?

९—एक आदमी हवाई जहाज़ से उत्तरी ध्रुव की ओर रवाना हुआ। पहले वह एक हज़ार मील दक्षिण की ओर उड़ा फिर एक हज़ार पूरब की ओर। बताओ उत्तरी ध्रुव की ओर सीधा जाने के लिए वह किस दिशा की ओर उड़े।

—अशोककुमार

१०—मनुष्य के शरीर का ऐसा कौन-सा भाग है जिसकी लम्बाई पूरे शरीर की लम्बाई से भी अधिक है?

११—मनुष्य के शरीर में ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ बचपन में कोई हड्डी नहीं होती पर बड़े होने पर वहाँ हड्डी हो जाती है?

१२—क्या गदहे रात्रि में ही पागुर करते हैं?

१३—क्या पानी में भी हवा होती है?

१४—क्या पृथ्वी के उसी ओर के समुद्रों में ज्वार-भाटा आता है जिधर कि सूरज या चाँद होते हैं?

१५—मनुष्य जैसे-जैसे पृथ्वी से ऊँचा उठता जाता है या किसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ता जाता है, उसकी बोझ उठाने की शक्ति क्यों बढ़ती जाती है?

—वंशीधर शर्मा

भेड़िया और ख़रगोश

लेखक, श्रीयुत राजेन्द्रकुमार

['बाल-सखा' के पिछले अङ्क में एक सचित्र कहानी प्रकाशित हुई थी। हमारे पास बहुत-से पाठकों मूक 'कहानी' का पता लगाकर भेजा है। आई हुई उन कहानियों में श्रीयुत राजेन्द्रकुमार की कहानी सबसे अच्छी है। उसे हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।—सं०]

किसी समय एक भेड़िया एक जङ्गल में रहता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसमें शिकार करने की शक्ति न रह गई थी। वह भूखों मरने लगा।

आख़िर उसे एक तरकीब सूझी। कहीं से जाकर वह एक पुतला ले आया। उसको उसने एक कूँची से तारकोल से रँग दिया और उसे लाकर सड़क के किनारे रख दिया। इतना करके भेड़िया एक पेड़ की आड़ में बैठ गया।

थोड़ी देर बाद एक ख़रगोश उधर से निकला। ख़ुशी के मारे वह नाच रहा था। पास आने पर उसने पुतले को देखा तो समझा, पुतला उस पर हँस रहा है। आकर वह पुतले खड़ा हो गया और उसने हँसने का का

पुतले ने कोई जवाब न दिया तो ने समझा कि पुतला उसकी हँसी और उसके पूछने पर उसे उत्तर भी ख़रगोश को बहुत क्रोध आया और लड़ने लगा।

ख़रगोश के बदन में भी तारकोल लग गये और उसका हाथ पुतले से चिप इतने में ही भेड़िया पेड़ की आड़ से निकल आया और ख़रगोश का कान पकड़कर ओर घसीट लिया और दम भर में उसे चट

अँगूठेराम

लेखक, श्रीयुत शिरीषकुमार

पुराने ज़माने में अँगूठे के बराबर एक लड़का रहता था। उसे लोग अँगूठेराम कहा करते थे। वह रोज़ सुबह उठकर नदी के किनारे सैर किया करता था। उसी नदी में एक हाथी नहाया करता था। एक दिन हाथी ने अँगूठेराम को खदेड़ा। अँगूठेराम भागे। थोड़ी दूर पर अँगूठेराम ने मटर का एक खेत देखा। मटर की एक छीमी में छेद था। अँगूठेराम मटर के छेद में से निकलकर भाग गये। हाथी ने सारा खेत खोज डाला पर अँगूठेराम का कहीं पता न लगा चारों तरफ़ देखा। दूर पर अँगूठेराम को भागे जा रहे थे। हाथी उनके पीछे थोड़ी देर में अँगूठेराम एक स्टेशन पर स्टेशन पर एक इंजन खड़ा था। अँगूठेराम चिमनी से निकलकर भाग गये। हाथी भी में घुसा पर वह फँस गया। इतने में ही पड़ा और हाथीराम को बहुत दूर एक पहुँचा दिया। अब अँगूठेराम मज़े में रहने

पृष्ठ ५७ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

—इँग्लैंड की नहरों के केन्द्र पर बसे हुए
नाम बरमिंघम है। यह शहर इँग्लैंड के
शहर लिवरपूल, लन्दन, हल और ब्रिस्टल
तथा नदियों द्वारा मिला हुआ है।

-जिस तरह का जीवन चिड़ियों को
पड़ता है उसी के अनुसार उनके पैर भी
जिन पक्षियों को पानी पर रहना पड़ता
पैर जालीदार होते हैं; जो पेड़ पर रहती
पैर पंजेदार होते हैं; जो चिड़ियाँ पेड़ों पर
जैसे तोता या कठफोड़वा, उनके दो पंजे
र दो पीछे की ओर होते हैं।

—वसन्त के अन्त और गर्मी के शुरू में
अपने बच्चों की देख-रेख करने तथा उनकी
कताओं को पूरा करने में फँसी रहती हैं।
वे गाकर अपने शत्रुओं का ध्यान अपनी
हीं आकर्षित करना चाहतीं।

—कोयल अपने अंडे दूसरी चिड़ियों के
में देती हैं।

—बतख पानी में भी रहकर गरम और
हती है। इसका कारण यह है कि उसके
से एक प्रकार का चिकना पदार्थ निकलता
जो उसके पंखों के ऊपर बैठ जाता है।
पानी का प्रभाव नहीं होता।

६—हवा में रहनेवाले धूल के कणों पर भाप बैठ जाती है इससे कुहरा पड़ता है। यों शहर की हवा में धूल के कण अधिक होते हैं इसलिए शहर में कुहरा अधिक घना मालूम होता है।

७—एक स्त्री है, उसके दो लड़कियाँ हैं और उन दोनों के भी दो लड़कियाँ हैं। इस तरह कुल घर में पाँच ही प्राणी हैं।

८—सड़क।

९—उत्तर की ओर।

१०—मनुष्य की छोटी आँत की लम्बाई पूरे शरीर से कितनी ही अधिक होती है।

११—कपाल में बचपन में हड्डी नहीं होती, फिर हो जाती है।

१२—गदहे कभी पागुर नहीं करते।

१३ पानी में हवा होती है। पानी के जीव इसी में साँस लेते हैं।

१४—उसके दूसरी ओर भी ठीक उसी तरह ज्वार-भाटा होता है।

१५—ऊपर उठते जाने से हवा का दबाव घटता जायगा और बोझ क्रमशः हलका होता जायगा। इसलिए मनुष्य ज्यों-ज्यों ऊँचाई पर पहुँचेगा, नीचे की अपेक्षा अधिक बोझा उठा सकेगा।

रात

लेखक, श्रीयुत कमलेशकुमार गुप्त

सूरज डूबा हुआ अँधेरा।
काली निशि ने जग को घेरा॥
सन्ध्या उतरी तारे निकले।
आसमान में चन्दा निकले॥

उजियाली है नभ में आई।
मधुर चाँदनी जग में छाई॥
तारे लगते हैं मणि जैसे।
आसमान हो थाली जैसे॥

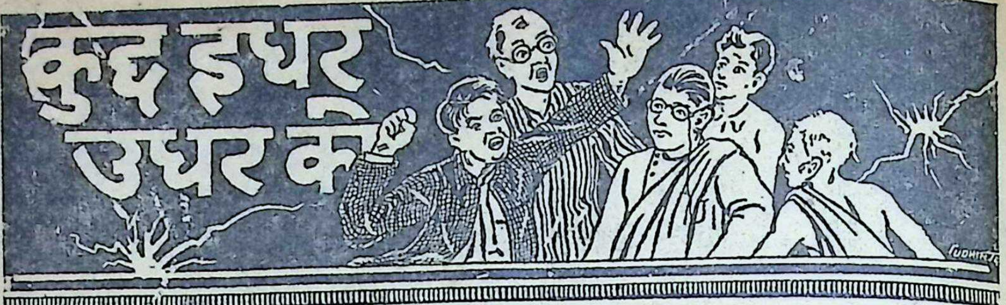

नया खेल

कुमारी मनोरमा ने इस महीने में खेलने योग्य एक नया खेल खेलने का ढङ्ग लिखकर भेजा है—

यह खेल कमरे में बैठकर खेला जाता है। इसके लिए दो लड़के होते हैं। एक फोटोग्राफर बनता है और दूसरा उसका सहायक। एक काली चद्दर और डण्डों की सहायता से दोनों केमरा खड़ा कर देते हैं। चित्र उतारने के लिए वह एक सादा पोस्टकार्ड लेता है और तब अपने सहायक को कमरे से बाहर चले जाने को कहता है। तब जो लड़का फोटोग्राफर बना हुआ है वह कमरे में बैठे हुए लड़कों में से किसी एक को चित्र खिचाने के लिए राज़ी करता है। चित्र खींचने का बहाना करके काली चादर के भीतर से वह सफ़ेद कार्ड निकालकर कहता है—"हाँ, यह तस्वीर बहुत सुन्दर आई है, मैं अपने सहायक को दिखाता हूँ।" वह बाहर से अपने सहायक को बुलाता है और उसे वह कार्ड दिखाता है। सहायक बननेवाला लड़का तुरन्त कहता है यह तो फ़लाँ लड़के की तस्वीर है, कितनी साफ़ आई है। सब लड़के आश्चर्य करते हैं कि सहायक तो बाहर था उसे कैसे पता चल गया कि किस लड़के ने तस्वीर खिंचाई है। इसका रहस्य यह है कि फोटोग्राफर बननेवाला लड़का अपने सहायक को कार्ड देते समय उसी प्रकार खड़ा हो जाता है जिस प्रकार चित्र खिंचानेवाला उस समय खड़ा है। सहायक उसको देखकर एक बार दूसरे लड़कों की ओर देखता है और तुरन्त ही

यदि सहायक कुशल हुआ तो आप इस खे
अपने साथियों को आश्चर्य में डाल सकते

आँखों का भ्रम

कभी-कभी हम एक चीज़ देखते हैं। देख
वह बिलकुल ठीक मालूम पड़ता है पर असल
नहीं होता। जैसा कि यहाँ के दो चित्रों

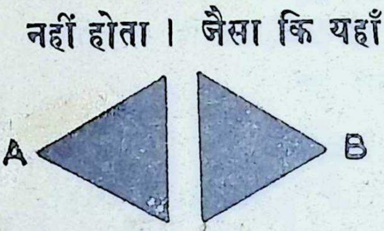

पड़ता है। चित्र में देखने से मालूम पड़त
A और B की दूरी B और C की दूरी से
पर वास्तव में ऐसा नहीं है। पटरी लेकर
A और B की दूरी B और C की दूरी
बर ही मिलेगी।

इस चित्र में हम एक फूल और ए
अलग-अलग देखते हैं। पर यदि

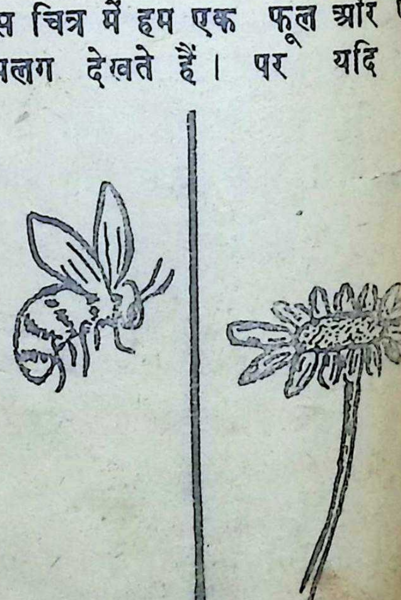

लाइन पर नाक रखकर देखो तो तुम्हें बहुत

बच्चों का कमरा

फूल

लेखिका, कुमारी शोभादेवी मिश्र (उम्र ९ वर्ष)

री डाल पर फूले फूल,
ाल गुलाबी नीले फूल;
खो रहे हवा में झूल,
पीले चमकीले फूल।
ख़ूब सुगन्ध उड़ाते फूल,
हमें बहुत ही भाते फूल;
हँसते औ' मुस्काते फूल,
देखो रहे डाल पर झूल।

सवेरा

लेखक, श्रीप्रकाश, प्रयाग

रात वह गई काली-काली,
खिला कमल-सा प्रातःकाल;
सूरज निकला आसमान में,
पूरब का कोना है लाल।
दिखा रही अपने को हिल-हिल,
फूल-भरी पेड़ों की डाल;
लगा सुनाई देने भन-भन,
फूल खिल उठे पीले-लाल।
शान्त अभी जो ताल वहाँ था,
लगा सुनाने कल-कल गान;
जाने लगे किसान खेत को,
चिड़ियाँ लगीं सुनाने तान।

भारत

लेखक, श्रीयुत हजारीसिंह मिण्डा

भारत देश हमारा है।
हम सबको वह प्यारा है॥
जङ्गल की कैसी क़तार है।
फूलों की कैसी बहार है॥
कैसे सुन्दर पेड़ लगे हैं।
कैसे सुन्दर फूल खिले हैं॥
नो करके निकाल दीजिए।
चिड़ियाँ सब यह [illegible]
हम सबको बतलाती हैं॥
भारत देश हमारा है।
हम सबको वह प्यारा है॥

जाड़े की आग

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर पाण्डेय

साँझ-सवेरे सब कोई हैं
आग निकट आ जाते।
ख़ुश होकर के अपने मन में
ईंधन उसे खिलाते।
अच्छी लगती आग बहुत है,
बैठें सभी जलाकर।
आग तापने को कहता है
सबसे जाड़ा आकर।

प्रश्न पहेली

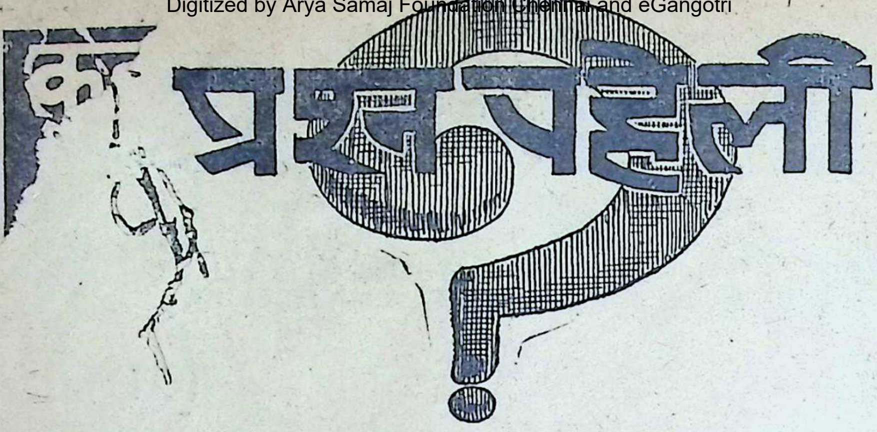

तीन वर्ण का नाम है मेरा।
आसमान में रखता डेरा॥
गड़-गड़कर मैं जगत जगाता।
कृषकों के सब कष्ट भगाता॥
(बादल)
—गोपालकृष्ण बाँगड़

× × ×

क्या जानूँ वह क्या है,
जैसा देखूँ वैसा है।
अर्थ तू उसका पूछेगा,
मुँह देखे तो सूझेगा।
(दर्पण)
—गोविन्दराम मिण्डा

× × ×

जीवन का एक अङ्ग कहाता।
आदि कटे तो युद्ध हो जाता।
मध्य कटे तो वजन बताता।
अन्त कटे तो मैं मर जाता।
(मरण)
—आर० बी० जोशी 'रमण'

× × ×

गोल - गोल चक्कर सी,
हूँ मैं मीठी शक्कर सी।
आदि कटे रङ्गी बन जाती,
जिससे सब के मन को भाती॥
(नारङ्गी)

दो वर्णों का मेरा नाम
आती हूँ दुनिया के काम
उलट जो मुझे पाओगे
गआ गआ चिल्लाओगे
(आग)
—गोपालदास मोर 'विद्यार्थी'

× × ×

हरी चादर ऊपर से ओढ़,

ढेर के ढेर चलीं आज है,
मेरे तेरे हाथ बिकाने॥
(मक

ऊपर से मेरा रङ्ग हरा,
भीतर तो लाल रङ्ग भरा;
मुझको पा सब ख़ुश होते हैं,
पीस-पीसकर ख़ूब लगाते हैं।
(मेंहदी)
—गौरीशङ्कर पा

× × ×

आदि कटे तो रत बन जाता,
मध्य कटे तो भात कहाता,
अन्त कटे तो भार कहाता,
दुनिया का जी ललचाता।
(भारत)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा - साधा एक समान।
आदि कटे तो खाना बनता,
पूरा होकर छम् छम् करता॥
(नाचना)
—रामे

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
बतलाओ तो पाओ इनाम॥
आदि कटे तो रस बन जाता
मध्य कटे सस कहलाता।
अन्त कटे तो ताल बन जाता।
(सरस)
—सुरेन्

× × ×

धीरे - धीरे बढ़ता हूँ,
जग उजियारा करता हूँ॥
(चन्द्रमा)
—रामखिलावन त्रि

मनो-विनोद

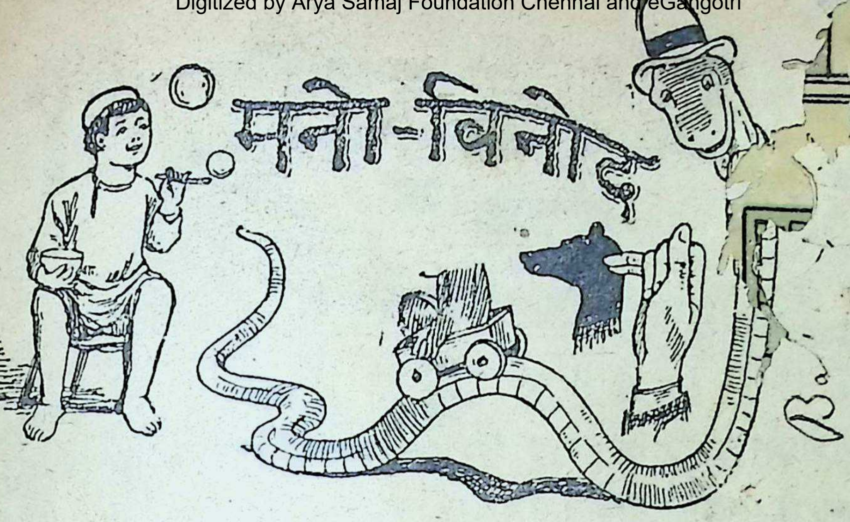

ा ने क्रोध के साथ लड़के को डाँटते हुए कहा—तीन ुम पढ़ रहे हो और अभी तक तुम्हें दस तक गिनती आया। आखिर तुम ज़िन्दगी में करोगे क्या ?

पहलवान होऊँगा पिताजी।' लड़के ने उत्तर दिया।

—जैनेन्द्रनाथ

× × × ×

टर साहब भूगोल पढ़ा रहे थे। उन्होंने रमेश से मेश, बताओ आस्ट्रेलिया का कौन-सा विचित्र है।

थी।"

थी! आस्ट्रेलिया में हाथी तो होता ही नहीं।" साहब ने कहा।

सी लिए तो हाथी वहाँ के लिए विचित्र है।" उत्तर

—कुमारी उषादेवी

× × × ×

सनकी आदमी तालाब के किनारे टहल रहा था फिसला और बेचारा छप से पानी में गिर पड़ा। दो यों ने उसे गिरते देखा और तुरन्त उसे बाहर ने के लिए कूद पड़े। बाहर आने पर सनकी महोदय —ओह! जब मैं गिर पड़ा तो समझा था कि मैं में गिर पड़ा। और अब याद आया कि मैं तैरना हुए भी डूब रहा था।

—अजयकुमार

× × × ×

लिक—(नौकर से) अरे रामू इधर आ। देख, से दवाई के बदले स्याही पी गया हूँ। अब क्या करूँ ?

मू—कोई हर्ज नहीं, अब आप सोखता चबा लीजिए।

× × × ×

यह मकान किसका है ?"

लालाजी का।"

कौन लालाजी ?"

जिनका यह मकान है।"

× × × ×

सवाल का उत्तर ग़लत पाने पर मास्टर साहब झुँझला कर बोले—अबे, तुझे किस गधे ने पढ़ाया है !

"पढ़ाया है तो आप ही ने मास्टर साहब।" वह बोला।

—वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'

× × × ×

एक आदमी—डाक्टर साहब, मैं एक महीना पहिले अँगूठी निगल गया था, अब मेहरबानी करके निकाल दीजिए।

डाक्टर साहब—फिर इतने दिन क्यों नहीं आये ?

वह आदमी—इतने दिन मुझे पैसों की जरूरत नहीं पड़ी।

एक आदमी—तुम्हारे छोटे भाई का क्या नाम है ?

दूसरा आदमी—मुझे नहीं मालूम। वह अब तक बात नहीं कर सकता।

—विश्वनाथराव चि

अध्यापक—सोहन, तुम बहुत आलसी होते

आलस्य विद्यार्थियों का शत्रु है।

सोहन—मास्टर साहब, आपने कल ही हमें अपने शत्रुओं को प्यार करना चाहिए

× × ×

एक बार पण्डितजी अपने विद पढ़ा रहे थे।

पण्डितजी—अगर पन्द्रह आदम घण्टे में पूरा करते हैं तो पाँच आ घण्टे में करेंगे ?

एक छोटा-सा लड़का—वे उस का

पण्डितजी—क्यों नहीं ?

लड़का—क्योंकि पन्द्रह आदमी कर चुके हैं।

—

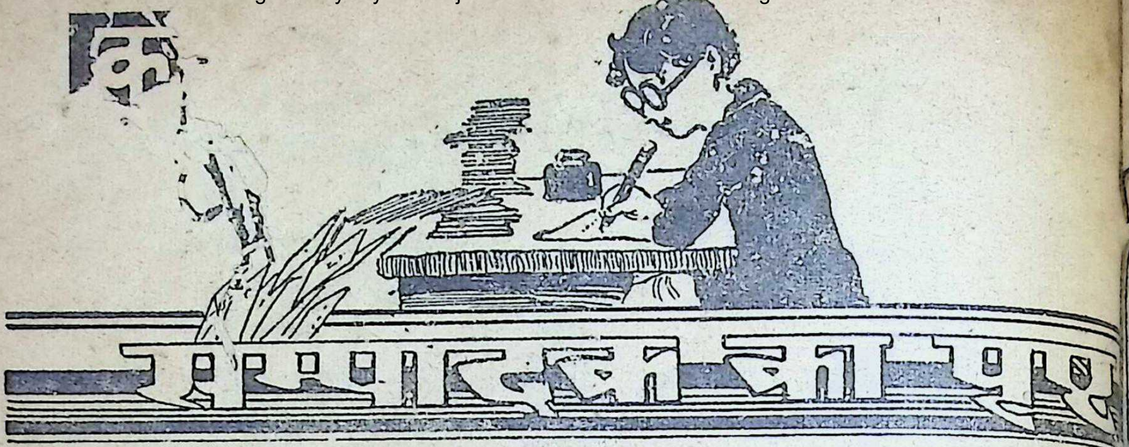

इस अङ्क में कुत्तों की आदतों के सम्बन्ध में एक लेख छपा है। इससे प्यारे बाल-सखाओं को यह मालूम होगा कि जानवरों की आदतें किस प्रकार बनती हैं। आशा है, पाठकों को यह लेख पसन्द आयेगा और वे अन्य जानवरों की आदतों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार लिखने की कोशिश करेंगे।

× × × ×

पिछले अङ्क में प्रकाशित मूक कहानी के उत्तर में हमारे पास बहुत-से पाठकों ने बहुत सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ भेजी हैं। हमें खेद है कि हम उन सभी कहानियों को नहीं छाप सके। आशा है, प्रेषकगण क्षमा करेंगे।

× × × ×

'बाल-सखा' के एक पाठक ने हमारे पास यह शिकायत भेजी है कि उनकी कवितायें 'बालसखा' में नहीं प्रकाशित क्यों? 'बाल-सखा' में यदि कोई कविता नहीं छप पाती ह अर्थ नहीं है कि वह अच्छी नहीं है। उनकी ही अच्छी हैं परन्तु यदि वे 'बाल-सखा' के

× मनोरञ्जक कवितायें भेजें तो उन्हें निराश

गोल

हूँ मैं × × ×

आदि वाला ने 'सरसों के फूल'-शीर्षक एक जिससे ठकों के लिए हम उसे यहाँ छाप रहे हैं।

ने बँगले में है
दो वर्ष की खेती;
आती हूँ खेत मनोहर,
उलट ो सुख देती।
गआ

पीले-पीले फूल खिल
लगते कितने प्य
मानो खिले हुए धरती प
पीले - पीले ता

सुबह-शाम जब धीमी-धीमी
हवा डोलने लगती;
इन फूलों की शोभा कितनी
तब है अच्छी लगती!

× × ×

श्रीयुत सुरेन्द्रकुमार पूछते हैं कि कोई टिक है, कोई सिक्के इकट्ठा करता है और कोई संग्रह करता है। वे ऐसी चीज़ का संग्रह क जिसका कोई दूसरा आदमी संग्रह न करता हो। उन्हें कोई ऐसी चीज़ बता सकते हैं?

× × ×

इस अङ्क में एक बहुत मज़ेदार खेल खेलने है। आशा है, प्यारे बाल-सखाओं को यह प और वे इसके द्वारा अपने साथियों का मनोर

× × ×

'बच्चों का कमरा'-शीर्षक स्तम्भ के सम्ब एक पाठक ने लिखा है कि उसमें कहानियाँ भी छ इस अङ्क में हम श्रीयुत शिरीषकुमार की एक छाप रहे हैं। आशा है, पाठकों को यह पसन्द आयेगी।

×

हरी

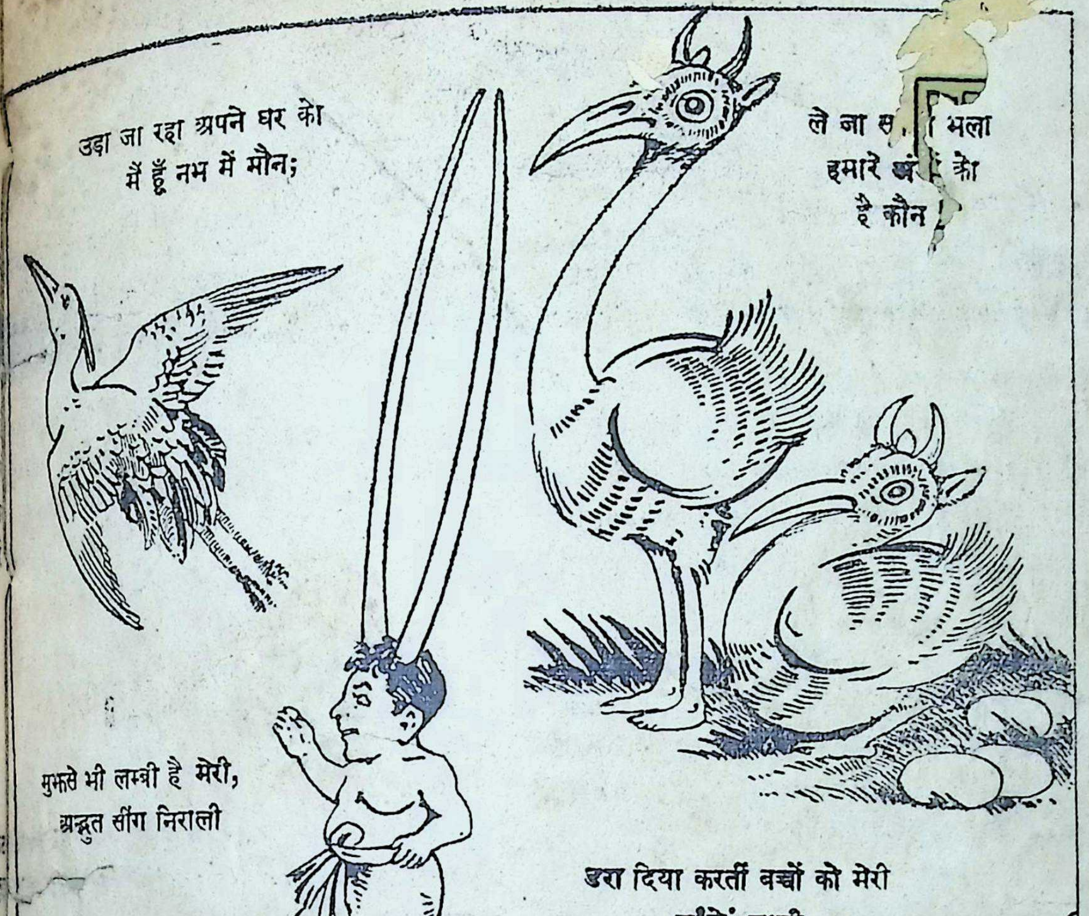

उड़ा जा रहा अपने घर को
मैं हूँ नभ में मौन;

ले जा स[illegible] भला
हमारे अं[illegible] को
है कौन

मुझसे भी लम्बी है मेरी,
अद्भुत सींग निराली

डरा दिया करतीं बच्चों को मेरी
आँखें काली

मैं भी चिड़िया
यह तुम मानो;
मुझे देखकर
तुम पहचानो।

SUDHIN SAHA

वे हाथ आ
और क्य
करेंगे?

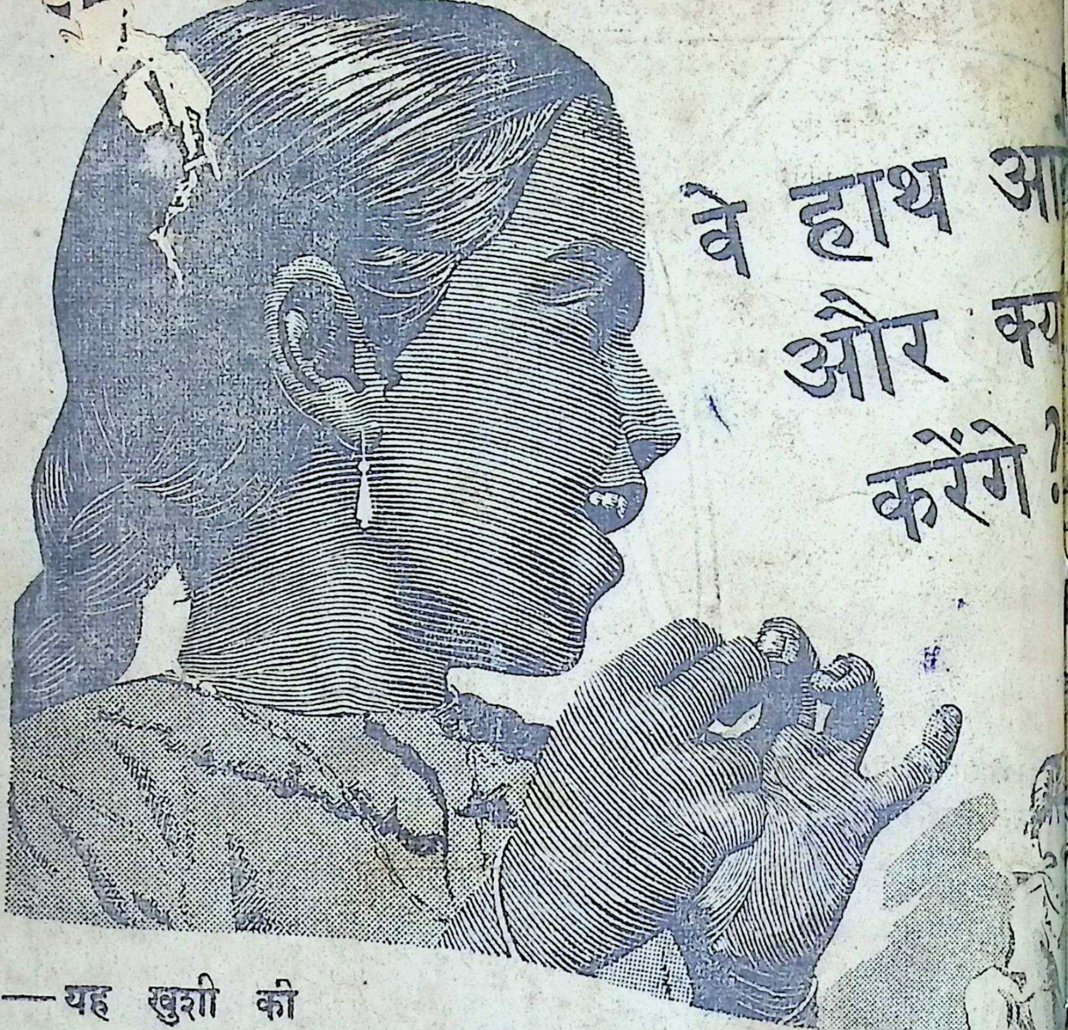

—यह खुशी की
बात है कि बच्चा "मैलके खतरे" से सुरक्षित है!

अभी तो मिट्टी की पकौड़ियां बना रही है और दूसरे क्षण जमीन पर दुकान सजाने लगती है। नहीं कहा जा सकता कि किस तरह की मैल उसके हाथोंमें जमा हो जायेगी अथवा यह कि किस तरह के कीटाणु उस मैलमें मौजूद होंगे। यदि बच्चेको लाइफबॉय के इस्तेमाल की आदत न सिखाई गयी होती, तो उस पर कितना खतरा रहता। लेकिन वह हररोज लाइफबॉय इस्तेमाल करती रहती है, जिससे निश्चय ही वह सुरक्षित रहती है।

उसके माता-पिता आपको बतायेंगे कि लाइफबॉय से ही सारा परिवार स्वस्थ और सुखी रहता है। वे जानते हैं कि मैलमें कीटाणु होते हैं—बहुत ही खतरनाक कीटाणु-और ये कितनी आसानी से बिमारी पैदा कर सकते और संक्रामक फैला सकते हैं। लेकिन हररोज नियमित तौर पर ऐण्टीसेप्टिक लाइफबॉय साबुन इस्तेमाल करने पर बच्चे इस खतरे से सुरक्षित रहते हैं। लाइफबॉयमें एक विशेष स्वास्थ्य-रक्षक तत्व हैं, जो भारतके दूसरे साबुनमें नहीं है।

लाइफबॉय का व्यवहार
करना एक जरूरी आदत है

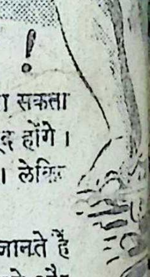

अब मोम लगे कागज़के रैपरमें बेचा जाता है

L. [illegible] HI

LEVER BROTHERS (INDIA

ालसखा

अप्रैल १९४५

२५-५-४५
गुरुकुल कांगड़ी

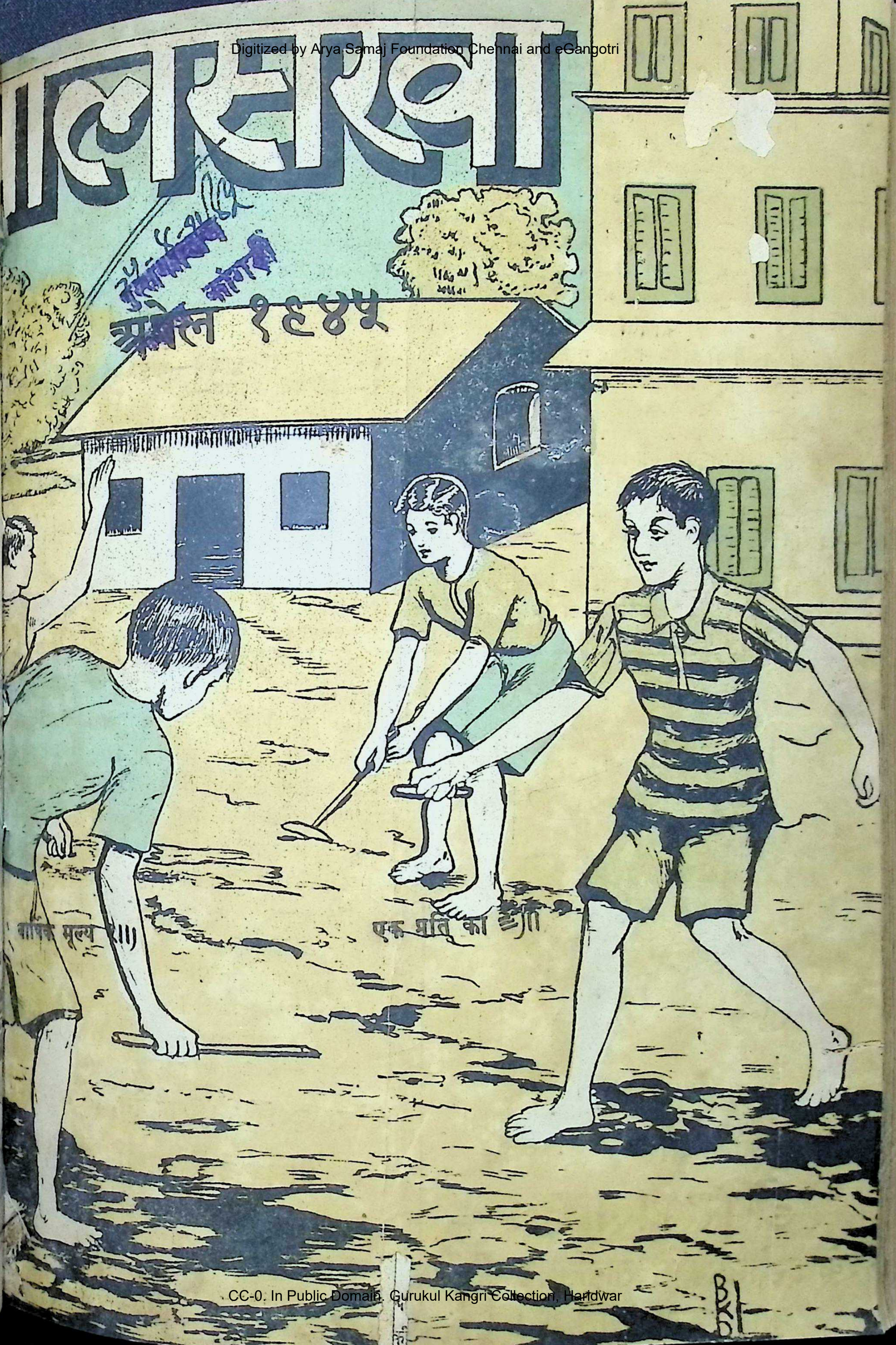

वार्षिक मूल्य ३॥)

एक प्रति का ≡)॥

कहानी

१—कश्मीरी बच्चे—श्रीमती विमला लूथरा ... ९८
२—विचित्र बदला—श्रीयुत रमेशचन्द्र माथुर 'चन्द्रमा' १०२
३—तुम जीते, मैं हारा—श्रीयुत सत्यप्रसाद रतूड़ी ... १०४
४—गन्दा लड़का—श्रीयुत महावीरप्रसाद श्रीवास्तव १०५
५—फिटफिटिया बन्दूक़—श्रीयुत एम० एल० पांड़े १०६
६—नाशपातीवाला—श्रीयुत दीनबन्धु पाठक ... १०९
७—दो टीन पेटरौल—श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, एम०ए० ११२
८—अजगर की कथा—श्रीयुत निशीथकुमार राय, बी०ए० ११३
९—हीरों का द्वीप—श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ११६
१०—कुतिया रानी—सुश्री लक्ष्मीबाई श्रीवास्तव ... १२२

कविता

१—होशियार बच्चों की प्रार्थना—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ९७
२—दो कञ्जूस—श्रीयुत चन्द्रपालसिंह यादव, 'मयङ्क', बी.ए. १०१
३—फुलवारी—श्रीयुत उमाशङ्करप्रसादसिंह 'शङ्कर' १०३
४—मन्दिर—श्रीयुत ज्ञानचन्द्र १०५
५—छोटा सिपाही—श्रीयुत वीरेन्द्र त्रिपाठी ... १०५
६—दो आँसू—श्रीयुत मनोहरलाल दुबे ... १०८
७—तितली—श्रीयुत रामस्वरूप दुबे, बी. ए., एल्-एल. बी. १११
८—वह कौन—कुमारी शारदा मिश्र १११
९—लोरी—श्रीयुत श्रीनिवास 'सोना' ११२
१०—बच्चों की बात—श्रीयुत एस० एल० चतुर्वेदी ११५
११—वर्ष-गाँठ—श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म' ११८
१२—मेरा भैया—कुमारी ललितादेवी ११८
१३—बिज्जो—श्रीयुत राजेन्द्रकुमार जैन
१४—कोयल—श्रीयुत सुरेश शुक्ल, 'साहित्य-रत्न'
१५—दर्ज़ी की मशीन—श्रीयुत श्रीधर 'पङ्कज' कुलश्रेष्ठ
१६—माँ धरित्री से—श्रीयुत दयाल गिरि गोस्वामी ...
१७—एक भारतीय बालक के उद्गार—कु० कमल
१८—नदी-किनारे—श्रीयुत चन्द्रभानु सिंह ...
१९—खटमल—श्रीयुत बदरी 'दास' ... ...

लेख

१—महानुभावों का बचपन—श्रीयुत रवीन्द्रकुमार
२—याद रखने योग्य बातें—श्रीयुत सुन्दरलाल
'जनसेवक' ... ...

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है—श्रीयुत कृष्णदयाल सेठ
२—छोटे बच्चों के लिए—
  बिल्ली—श्रीयुत देवेन्द्रमोहन माथुर ...
  बे-आवाज़ हवाई जहाज़—श्रीयुत विश्वेश्वरप्रसाद
  मेरा मित्र—श्रीयुत धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया ...
  मेरा भैया—श्री ललिता नाथानी ... ...
  मुन्ना श्यामा—श्रीयुत सत्यनारायण पटवारी ...
  तीर-कमान—श्रीयुत श्रीकृष्ण बिलैया ...
३—प्रश्न-पहेली .. ..
४—मनोविनोद ... ...
—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरे बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट
और चुस्त बनते हैं।

सच बात है—

कि बहुत ही छोटे बच्चों को खाना और खेलने
चीज़ें बहुत ही पसन्द आती हैं। किन्तु इसके बाद जो
उन्हें प्रिय लगती हैं तो वह है रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाली
कहानी की पुस्तकें। नीचे हम छः पुस्तकों के नाम लिख
इनमें से प्रत्येक पुस्तक इतनी मज़ेदार है कि बच्चे उन्हें
प्रसन्नता से लोटपोट हो जायँगे।

सद्गुणी बालक ... १।=)
मज़ेदार ख़ज़ाना ... ॥)
सोने का पेड़ ... ॥≡)
अनोखी कहानियाँ ... ।=)
लकड़ी का घोड़ा ... ॥≡)
बाल-कवितामाला ... ॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

बालक-बालिकाओं के लिए
कविता का अपूर्व झरना

पं० रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं
शौक़ से पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह
रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

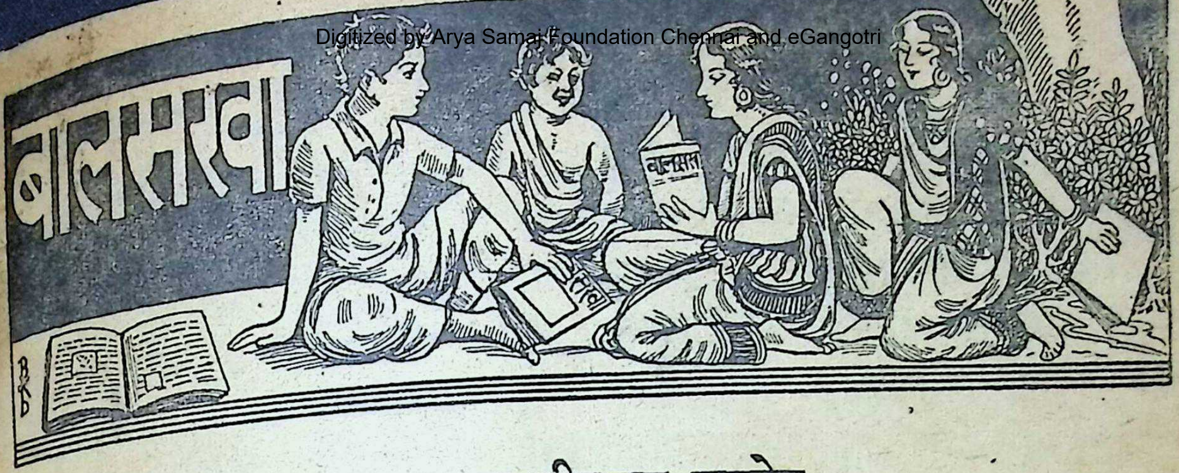

सम्पादक—लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय

अप्रैल १९४५—अधिक चैत्र २००२ [संख्या ४
र्ष २९]

होशियार बच्चों की प्रार्थना

लेखक, श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

हम सब बच्चे मिल-जुलकर अब
तुमको नाथ ! मनाने आये ;
और तुम्हारे खाने को भी
साथ मिठाई अपने लाये ।
सोहन कहता—"लड्डू मेरा
नाथ शौक़ से ही खायेंगे ;"
मैं कहता हूँ—"हलवा मेरा
आप सभी चट कर जायेंगे ।"
किन्तु अरे आशा क्या कहती—
"साथ नाथ के मैं खाऊँगी ;
वे थोड़ा ही खा पायेंगे
पर मैं सभी हड़प जाऊँगी ।"
मैं कहता हूँ—"ठीक नहीं यह,
मीठा उनको खा लेने दो ;
धीरे-धीरे काम बनेंगे
फिर इतवार अरे ! आने दो ।
उस दिन सबकी छुट्टी होगी
गोल बाँधकर हम आयेंगे ;
हाथ पकड़कर हलवाई तक
सभी नाथ को ले जायेंगे ।
वहाँ कहेंगे हलवाई से
'मीठा अपना ख़ूब खिलाओ ;
हम लोगों को और नाथ को
बढ़िया रबड़ी, दूध पिलाओ ।'
वहाँ पेटभर खायेंगे हम
लड्डू ख़ूब उड़ायेंगे हम ;
किन्तु पेट भर जाने पर सब
खिसक वहाँ से आयेंगे हम ।
फिर हलवाई पकड़ नाथ से
हम सबके भी पैसे लेगा ;
जब तक दाम नहीं ले लेगा
नहीं कहीं भी जाने देगा ।
आख़िर हो लाचार नाथ को
दाम वहाँ तो देने होंगे ;
और फिर कभी धन्यवाद भी
उनको हमसे लेने होंगे ।"

कश्मीरी बच्चे

लेखिका, श्रीमती विमला लूथरा

जब मोहन ने सुना, कि उसके पिता की बदली क़श्मीर को हो गई है तो वह बहुत घबराया। उसने सोचा कि अब यहाँ से चला जाना पड़ेगा। स्कूल छूट जायगा—सब साथी यहीं रह जायँगे और मैं अकेला वहाँ कश्मीर में हूँगा। वहाँ किसके साथ खेलूँगा? मालूम वहाँ का स्कूल कैसा हो! मास्टर मारते तो होंगे और हिसाब के मास्टर के पास फ़ुट-रूल होगा या बेत? लड़के आँखमिचौनी खेलते होंगे कि हीं? उनकी सूरत कैसी होगी? कपड़े कैसे पहनते गे? उनके घर किस ढँग के होंगे? उनकी बोली मझ में आवेगी या नहीं? इन्हीं विचारों से वह छ उदास हो गया।

नटखट लड़का

मोहन की माता को जब उदासी का कारण म हुआ तो उन्होंने उसे बुलाकर समझाया। मोहन से बहुत प्रेम था। वे उसे उदास होते न देख सकती थीं। उन्होंने बहुत-से देश देखे कश्मीर को तो बहुत अच्छी तरह जानती थीं; उनके बचपन का कुछ भाग वहीं बीता था।

वे बोलीं—बेटा, तुम घबराते क्यों हो? बहुत ही सुहावना देश है। वहाँ बहुत-से फ बाग़-बग़ीचे, नदी-नाले और पहाड़ हैं। व घोड़े की सवारी करते हैं। बग़ीचों में जा खाते हैं। तुम जो लाल सेब, नासपाती और बुख़ारा इतने चाव से खाते हो, ये सब क से तो आते हैं।

अब तो मोहन के मुँह में पानी आने वह बोला, तब तो माँ कश्मीर बड़ी अद्भुत होगी। हम भी चलेंगे। किन्तु यह तो बता क्या पेड़ से फल तोड़कर खाने की आज्ञा होती

माँ ने उत्तर दिया—वैसे तो बग़ीचों के म पेड़ों की रक्षा के लिए चौकीदार तैनात कर दे परन्तु यदि माली के लड़के से तुम्हारी मित्र जाय तो वह अपने पिता से पूछकर तुम्हें म फल तोड़ने दे सकता है।

यह बात मोहन के मन भा गई। उसने नि कर लिया कि कश्मीर पहुँचते ही सब मालि लड़कों से मित्रता कर लेगा। मोहन अपने मित्र बहुत प्रेम करता था और मित्रों की ही उसे अधिक चिन्ता रहती थी। वह उत्सुकता से मुख की ओर देख कहने लगा—अच्छा माँ, व बच्चे कैसे होते हैं? क्या वे मेरे साथ दोस्ती कर

माँ जान गई कि मोहन के मन में क्या-क्या उसने बड़े लाड़ से मोहन को चूमकर कहा—क बच्चे बहुत सुन्दर होते हैं। उनका गोरा-गोरा लम्बी पतली नाक, मोटी-मोटी आँखें और को होंठ, सब मिलकर उन्हें बहुत ख़ूबसूरत बना दे

नहीं, कश्मीरी बच्चे बहुत मेहनती होते हैं। कूल भी जाते हैं और अपने माता-पिता को काम में यता भी देते हैं। छोटे-छोटे लड़के और लड़कियाँ चलाना सीख जाती हैं। जब तुम कश्मीर ओगे तब देखोगे कि बच्चे नाव में बेधड़क बैठ और चप्पू चलाना शुरू कर देते हैं। वे थोड़ी में नदी के पार पहुँच जाते हैं और अपना काम के वापस लौट आते हैं।

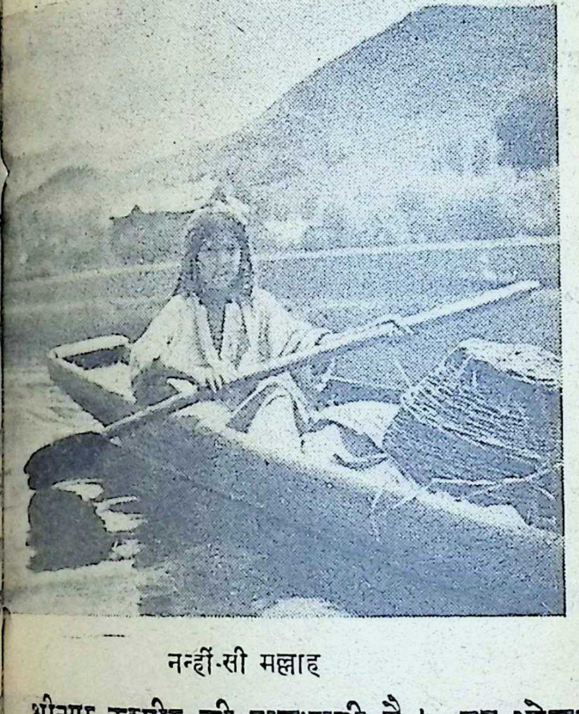

नन्हीं-सी मल्लाह

श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। वह झेलम ी के किनारे बसा हुआ है। यह नदी शहर के तर तक फैली हुई है और शहर को इस प्रकार रती हुई बहती चली जाती है जैसे और शहरों की ड़कें। इसलिए, यहाँ के लोग नाव में ही अपना र बना लेते हैं और छोटी किश्तियों द्वारा अपना काम कर लेते हैं। यही कारण है कि कश्मीरी बच्चे हुत छोटी उम्र में तैरना सीख जाते हैं। गर्मी के ौसम में ये सारा दिन पानी में बत्तखों की तरह किलोल करते फिरते हैं।

जैसे-जैसे मोहन की माँ उनका वर्णन करती ाती थी, मोहन की उत्सुकता बढ़ती जाती थी और वह माँ के समीप खिसकता जाता था। उसने बड़े अचम्भे से पूछा—"माँ, ये बच्चे क्या और काम भी करते हैं?" माँ ने कहा—"हाँ, ये भेड़ों के रेवड़ (झुण्ड) लेकर पहाड़ों पर चराने ले जाते हैं। भेड़ें तो घास चरती रहती हैं और बच्चे इकट्ठे होक कभी गोलियाँ खेलने लगते हैं, कभी आँखमिचौनी शाम को जब सूर्य डूबने लगता है तब ये भेड़ों के लेकर भागते, कूदते, नाचते-गाते घर लौट आते हैं इतना ही नहीं, यहाँ की भेड़ों के बालों से जो ऊ और ऊनी कपड़ा बनाने के लिए खड्डियाँ लगाई ग हैं, उनको चलाने में भी ये घरवालों का हा बटाते हैं।

भाई-बहन

यह सब सुनकर मोहन की घबराहट दूर ह लगी और उसके मुख पर प्रसन्नता खेलने लग

यह देखकर माँ ख़ुश हो गई और कश्मीरी बच्चों कहानी विस्तार से सुनाने लगी—ये बच्चे खेतों भी काम करते हैं। यह काम होता तो कठिन परन्तु ये घबराते नहीं, बल्कि धूप और खुली में परिश्रम करके ख़ुश होते हैं। कश्मीर में कहीं- ऐसे खेत भी होते हैं जो पानी में तैरते रहते हैं।

मोहन ने अकचकाकर पूछा—यह कैसे सकता है?

माँ ने हँसकर उत्तर दिया—यहाँ तो एक देखने की चीज़ है। कश्मीर में बहुत-सी झीलें हैं। इनमें से कई तो मीलों लम्बी-चौड़ी हैं। बहुत-से लोग ानी के किनारे ही रहते हैं और वहीं पर अपने रहने का सब सामान इकट्ठा कर लेते हैं। किसान लोग

कश्मीरी लड़की—अपने खेत में

त-सी मोटी-मोटी लकड़ियाँ इकट्ठी करके रस्सी बाँध देते हैं। फिर उनपर मिट्टी डालकर खाद ा देते हैं और उसके बाद बीज बो देते हैं। ही दिनों में बीज उगकर ऊँचे-ऊँचे पौदे हो े हैं। पानी देने की भी ज़रूरत नहीं रहती; क्योंकि पानी से सिंचाई होती रहती है। इन खेतों एक विशेषता यह है कि जब किसान लोग घर ाते हैं तब खेत को भी साथ लेते जाते हैं। परन्तु बदमाश लोग दूसरों के खेत चुराकर ले जाते हैं। ी रातों में चोर चुपके से जाकर उन रस्सियों काट देते हैं जिनके सहारे खेत मालिकों के घरों मीप बँधे होते हैं। फिर इन्हीं रस्सियों को ते हुए वे खेतों को कोसों लिये चले जाते हैं। बेचारे किसान जब सुबह उठते हैं तो खेतों को जगह न पाकर बहुत दुखी होते हैं।

मोहन को अभी तसल्ली न हुई। उसने माँ, 'कश्मीरी बच्चे क्या हमारे ही जैसे कपड़े पह

माँ बोली—नहीं बेटा! कश्मीरी बच्चे लम्बे, ढीले-ढाले चोग़े-से पहनते हैं, जिन्हें वे कहते हैं। इनकी बाँहें इतनी लम्बी होती हैं तक ढँक जाते हैं। जब शीत-ऋतु में बर्फ़ और ये जाड़े से ठिठुरने लगते हैं तब यही लम् चोग़े इनके शरीर की रक्षा करते हैं। ठण्ड में पहनने के लिए इन चोग़ों में लिहाफ़ की रूई भर लेते हैं।

बहनें

अब मोहन की उमङ्ग का क्या पूछना था। .खुशी के मारे कूदने लगा—अहा हम कश्मीर जायँ वहाँ जाकर कश्मीरी बच्चों के साथ खेलेंगे, तै सीखेंगे, घोड़े पर चढ़ेंगे और माँ मुझे एक छोटी नाव भी ले देना, जिसमें तुम्हें बिठाकर नदी सैर करूँगा।

दो कंजूस

लेखक, श्रीयुत चन्द्रपालसिंह यादव, 'मयङ्क', बी० ए०

गाँव में 'गटरूमल' नामक मनुष्य रहता था।
ती करने में वह सब लोगों से बढ़कर था ॥
कंजूसी कर-करके उसने रुपया बहुत बचाया।
कौड़ी-कौड़ी करके अपने धन को ख़ूब बढ़ाया ॥
टरूमल की कंजूसी औ' धन की सारी बात।
ास-पास के गाँवों में हो गई बहुत विख्यात ॥
सात कोस की दूरी पर था रामपूर इक ग्राम।
उसमें भी कंजूस एक रहता था 'मटरूराम' ॥
र मटरू के ऊपर थी निर्धनता की ही छाया।
नी नहीं हो सका कभी वह, थी ईश्वर की माया ॥
होते होते मटरू ने भी सुन पाई सब बातें।
गटरूमल के धन की औ' कञ्जूसी की वे बातें ॥
टरू ने यह सोचा—गटरू के समीप मैं जाऊँ।
कस प्रकार वह धनी हुआ है इसका पता लगाऊँ ॥
यह विचार आते ही मन में, ख़ुश हो मटरूराम।
दौड़ पड़ा उस ओर जिधर था गटरूमल का ग्राम ॥१॥

चलते-चलते आख़िर को वह पहुँच गया उस गाँव।
पर बेचारे मटरू के थे बहुत दुख रहे पाँव ॥
फिर गटरूमल के मकान का उसने पता लगाया।
औ' गटरूमल को जब देखा, तब जी में जी आया ॥
"गटरूमल जी, राम-राम है, मैं हूँ मटरूराम।
हुत दूर पर मैं रहता हूँ, रामपूर है ग्राम ॥
चला आ रहा हूँ मैं, ज्योंही सुना आपका नाम।
पास आपके आया हूँ; है बहुत ज़रूरी काम ॥"
इस प्रकार से मटरू बोला, गटरूमल से जाकर।
"कहिए, है क्या बात?"—कहा गटरू ने कुछ घबराकर ॥
"गटरूमल जी, मुझ ग़रीब पर इतनी दया दिखावें।
'मालदार' हो गये किस तरह मुझको आप बतावें ॥"
इस प्रकार से बोला मटरू, सुनकर उसकी बात।
मुसकाकर बोला गटरूमल—आओ मेरे पास ॥
किस प्रकार मैं धनी बना हूँ, यह तुमको बतलाऊँ।
कैसे जमा हुआ धन मेरा, इसका भेद बताऊँ ॥
देखो मेरे घर में है कुछ नहीं आज खाने को।
इससे चलना है दुकान कुछ खाने को लाने को ॥
आओ मेरे साथ, चलें हम तुम दोनों दूकान।
फिर ख़रीद करके खावें कुछ पूड़ी औ' पकवान ॥
यह कहकर गटरूमल फ़ौरन निकल पड़ा निज घर से।
मटरूराम इधर, यह लखकर, मन ही मन में हरसे ॥
चलकर दोनों व्यक्ति, गये हलवाई की दूकान।
गरम पूड़ियाँ वहाँ धरी थीं औ' सुन्दर पकवान ॥
देख-देखकर मटरू के मुँह में भर आया पानी।
गटरूमल बोले हलवाई से यह सुन्दर बानी—
"कहो पूड़ियाँ कैसी हैं, जो तुमने अभी बनाई?"
यह सुन करके इस प्रकार बोला फ़ौरन हलवाई—
"बहुत नरम पूड़ियाँ बनी हैं, बिलकुल मक्खन जैसी।
मानो मेरी बात इन्हें खा करके तो देखो जी ॥"
"तब तो मक्खन लूँगा, वह पूड़ी से अच्छा होगा
आओ मटरूराम चलें आगे को।"—गटरू बोला।
चला वहाँ से गटरू तब पहुँचा मक्खन की दूकान।
उसके पीछे-पीछे पहुँचे दुखिया मटरूराम ॥
गटरू बोला-"क्योंजी, मक्खन कैसा है बतलाओ।
"स्वच्छ तेल की भाँति ज़रा ले करके तो तुम खाओ।
मक्खनवाले की सुनकर यह बात, कहा गटरू ने—
"नहीं-नहीं, अब तो मैं लूँगा तेल, जा रहा हूँ मैं ॥"
और चल पड़ा गटरू आगे-आगे सरपट चाल
मटरूराम चल पड़ा गटरू के पीछे तत्काल
गये शीघ्र गटरू औ' मटरू तेली की दूकान।
गटरू बोले—"अरे, तेल कैसा है तेलीराम?"
तेली बोला—"भाई, मैंने तेल किया तैयार
पानी-सा है साफ़ तेल यह, देखो इसकी धार।
सुनकर उसकी बात, कहा मटरू से गटरूमल ने—
"अरे, तेल क्या होगा लेकर, पानी तो है घर में ॥
आओ मेरे घर मैं तुमको पानी ख़ूब पिला
औ' मैं भी पानी पी करके अपनी भूख मिटाऊँ।
सुन गटरू की बात, कान मटरू ने पकड़े अपने।
बोला वह—"बस चाचा, अब मैं जाता हूँ घर अपने ॥
जान गया यह बात जिस तरह धन तुमने जोड़ा
इस कठोर व्रत के आगे दुनिया का धन थोड़ा है"

विचित्र बदला

लेखक, श्रीयुत रमेशचन्द्र माथुर 'चन्द्रमा'

एक राजा थे, गाने-बजाने के बड़े प्रेमी। उनका इक- ौता बेटा भी उन्हीं की तरह सङ्गीत-प्रेमी था। चम्पा नाम ी एक स्त्री थी। उसकी लड़की का नाम था तारा। ाजकुमार राजा-रानी की आँखों का तारा था किन्तु था ड़ा ज़िद्दी। साथ ही जल्दी किसी के बहकाने में आ ाता था।

नन्हीं बालिका तारा बड़ा बढ़िया गाती थी। राजकुमार ारा से मित्रता किये बिना रह न सकता था। आख़िर ही हुआ। राजकुमार को तारा बिना चैन न मिलता और रा को राजकुमार के इशारों पर नाचने में ही सुख मिलता। नों सङ्ग खेलते, गाते, हँसते और अपनी दुनिया में ान रहते।

समय जाते कब देर लगी। कमबख़्त भाग ही गया नकुमार और तारा का बचपन लेकर। अब दोनों बड़े चले थे।

राजा ने देखा कि राजकुमार को राज-काज की चिन्ता ीं है तो उन्हें चिन्ता हुई राजकुमार की। पिता ने पुत्र बहुत समझाया—"बेटा, दुनिया में सङ्गीत ही सब कुछ है।" पर सब व्यर्थ। राजकुमार तो सङ्गीत की ही ।या में रहना चाहता था पर दुनियावालों को चैन ? मन्त्रियों ने राय दी कि किसी सुन्दरी राजकुमारी ादी कर दी जाय। ध्यान अपने आप बट जायगा। कुमार के लाख इनकार करने पर भी लोगों ने हिम्मत न ी और चालें चल किसी तरह राजकुमार को एक सुन्दरी कुमारी से शादी करने पर राज़ी कर ही लिया। राजा प्रजा की ख़ुशी का न रहा ओर न छोर।

धूमधाम से बारात चली तो सङ्ग में चम्पा और तारा ाई। शादी हो गई। किन्तु अभी तक राजकुमार ने ुमारी को न देखा था। बैठे-बैठे सोचा, चलो तारा से ही सुनें। पहुँचे उसके कमरे में तो देखा कि तारा ी है और चम्पा उसको समझा रही है। राजकुमार े का कारण पूछना शुरू किया तो बड़ी देर के बाद कठिनाई से चम्पा ने कहा—महाराज, यदि कारण र मुझे प्राण-दान दें तो कुछ अर्ज़ करूँ।

जो कुछ कहना हो, जल्द कहो। मैं तुमसे कुछ न ।" राजकुमार ने अधीरता से कहा।

सुनिए महाराज। मेरे जासूसों ने ज्योतिषियों से पता है कि जिससे आपकी शादी हुई है उसकी तो शादी [illegible] ोनी चाहिए थी। ये जब अपने पति को देखेंगी तो वह अन्धा या बहरा हो जायगा। पति की नज़ मुख पर न पड़नी चाहिए। यही कारण है सरका के रोने का" कुटिल चम्पा ने मुँह बनाते हुए कहा।

राजकुमार को क्रोध आ गया। उसने सोचा इन दोनों के सभी मेरे दुश्मन हैं। उसने क्रोध हुए पूछा—उपाय ?

"महाराज, यदि आप जीवन भर उसका मुख न उससे बात न करें तो वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ स मुस्कराते हुए चम्पा बोली।

बहूरानी घर आ गईं। किन्तु लोग आश्चर्य से से हो गये जब उन्होंने देखा कि राजकुमार रा नहीं देखना चाहता। हमेशा आँखों पर पट्टी बाँधे र

राजकुमार की माँ महारानी और बहू राजरानी क थीं। राजरानी बड़ी सुशील और चतुर थीं। राजकुमार का प्रत्येक कार्य अपने हाथ से करना कर दिया।

एक दिन आँखों पर पट्टी बाँधे राजकुमार भोज रहा था और राजरानी परोस रही थीं कि राजरा कहा :—

लाल ही घोड़ा लाल ही जोड़ा, लाल ही रङ्ग होगा सव
लाल बाग़ में चोरी होगी, सावधान रहें राजकुमा

बात यह थी कि राजकुमार को बाग़ों की सजाव बहुत शौक़ था। सात बाग़ थे। सातों में भिन्न-भिन्न प्र के रङ्गों की सजावट होती थी। जैसे लाल बाग़ में प्र चीज़ लाल हो, हरे में प्रत्येक चीज़ हरी। इसी प्रकार त हरे, पीले, नीले, गुलाबी, सफ़ेद और काले रङ्ग के थे। इन्हीं बाग़ों में तारा या अन्य मित्रों के सङ्ग राजकु का समय बीतता था।

दूसरे दिन लाल बाग़ में चोरी हो गई। राजकुमार प्रिय वस्तुयें ग़ायब। सारा बाग़ उजाड़ दिया गया था

राजरानी ने दूसरे दिन उसी तरह की बात हरे बा लिए कही और तीसरे दिन हरे बाग़ की भी वही दशा जो लाल बाग़ की हुई थी। इसी प्रकार छः दिन में रङ्गों के बाग़ उजड़ गये। बचा काला बाग़। सारा चोर की खोज में था किन्तु ज्ञात होता था कि शायद चोर दुनिया का रहनेवाला नहीं है।

सातवें दिन काले बाग़ में स्वयं राजकुमार पहरे रहा [illegible] काली ही रोशनी थी। बाग़ भर में उल्टी गाड़ दी गई थीं।

राजरानी ने सुबह राजकुमार से काले बाग़ के लिए भी प्रकार की बात कही।

उधर राजकुमार पहरे पर मुस्तैद। रात के बारह बजे अचानक राजकुमार ने चीख़ने की आवाज़ सुनी। दौड़ा ओर। देखा और फिर देखता ही रह गया। एक र राजकुमार। पैर में उसके कीलें छिद गई थीं। घोड़ा और कराह रहा था।

"हाय, किस निठुर ने बाग़ में कीलें गड़वाई हैं और ी रोशनी करवाई है जो राह चलते भटक जायँ। मेरी ी तो भोजन बनाये बैठी मेरा इन्तज़ार कर रही होगी र मैं यहाँ। आह! बड़ा दर्द" कहते हुए सवार राज- ार गिरने लगा। राजकुमार ने उसे सँभाल लिया और ीं काँटे न थे, ला बैठाया। सवार राजकुमार ने लाख ा किया किन्तु राजकुमार ने अपना साफ़ा फाड़कर उसके बाँध दी। राजकुमार को यह ख़याल ही न हुआ कि सवार चोर हो सकता है।

दूसरे दिन राजमहल में राजकुमार भोजन कर रहा था राजरानी ने कहा--

ा लगे उस काले बाग़ में जहाँ लोहे के काँटे चुभ गये।
ा जियें वे राजकुँवर जिन पाग चीरके बाँध दिये॥

राजकुमार के हृदय की दुनिया डोल-सी गई पर सँभल ा कि अचानक राजरानी खड़े से गिर गई। "हाय! में बड़ा दर्द" उसके मुँह से निकला। राजकुमार की खों की पट्टी का आँखों पर ठहरना दूभर हो गया। राज- ार ने सोचा—"मुख न सही पैर तो देख लूँ।" किन्तु अपने ही साफ़े की पट्टी देखकर हृदय की धड़कन बन्द-सी होने लगी। मन ने कहा—"ज़रा पहचानो तो?" झट आँखें मुख पर जा लगीं—"ओह! राजरानी, मुझे क्षमा करो। तुम्हीं तो रातवाला राजकुमार हो। मैंने तुम्हें देखा भी और बात भी की किन्तु न अन्धा हुआ न बहरा। उन दुष्टाओं ने अब तक मुझे कपट से भ्रम में डाल रक्खा था तो बस अब उनकी सज़ा मौत ही होगी। अच्छा रानी, किन्तु तुम मुख से तो मुझे क्षमा कर दो।" कहता हुआ राजकुमार सहज ही उसके पैरों की ओर झुक पड़ा।

राजरानी ने उसे पकड़ते हुए कहा—महाराज, क्षमा दो शर्तों पर ही मिल सकती है। एक तो यह कि चम्पा को तीर्थ करने भेजकर तारा को यहीं रहने दीजिए। प्राणदान दोनों को दे दीजिए तब क्षमा मिलेगी।

"ऐसा क्यों?" आश्चर्य से राजकुमार ने पूछा।

"तबियत ही तो है महाराज! दूसरी शर्त यह कि तारा को अपनी बड़ी रानी का पद दीजिए।"

"यह क्या करती हो राजरानी?" चिल्ला पड़ा राजकुमार

"यह कहानी बहुत बड़ी है महाराज, किन्तु मैं यही बत सकती हूँ कि वह मेरी बहन है। ये मेरी शर्तें न सह भिक्षा है, जो आपको देनी पड़ेगी।"

राजकुमार लाचार था। आखिर वही हुआ जो रा रानी चाहती थी। दोनों बहनें कहिए या जो कुछ, अ सुख से रहती थीं। किन्तु इससे सबसे बड़ा सबक़ रा कुमार को यह मिला कि फिर कभी उसने बिना समझे-बू कोई काम नहीं किया।

फुलवारी

लेखक, श्रीयुत उमाशङ्करप्रसादसिंह 'शङ्कर'

मन को कितनी अच्छी लगती, अहा, आज फुलवारी।
सभी क्यारियाँ सजी हुई हैं, अति सुन्दर सुखकारी॥
रङ्ग-रङ्ग के सुमन खिले हैं, चटक रही हैं कलियाँ।
उड़तीं सतरङ्गी विमान-सी छवि की परी तितलियाँ॥
फूलों-फूलों से रस लेकर, 'गुन-गुन' भौंरे गाते।
उनकी मधुमय वंशी से चहुँदिशि स्वर-सप्तक छाते॥
'कुऊ-कुऊ' कुञ्जों से आती, पिक की पञ्चम बोली।
मन को मीठी लगती, जैसे उसमें मिसरी घोली।
लतिकायें झूमतीं मस्त हो, प्रमुदित डाली-डाली
सभी ओर हरियाली फैली, हृदय चुरानेवाली
पवन-स्पर्श से झड़ते परिमल, क्या बहार उपवन की
मानो आकर यहीं बसी है, सुन्दरता त्रिभुवन की
इसे देख छा गई हमारे, दिल में भी अलमस्ती
माली-द्वारा बसी हुई रे, यह फूलों की बस्ती

तुम जीते, मैं हारा

लेखक, श्रीयुत सत्यप्रसाद रतूड़ी

गढ़वाल राज्य की राजधानी टिहरी से आठ मील पश्चिम की ओर, सड़क के किनारे, एक छोटी पहाड़ी पर उप्पूगढ़ का खँडहर आज चुपचाप उदास खड़ा है। उत्तर में नीचे गङ्गा हरहराती हुई बह रही है। दक्षिण-पश्चिम में एक छोटी-सी नदी इठलाती हुई भागी जा रही है। पूर्व में टिहरी जानेवाली सड़क एक विशाल अजगर की तरह लेटी हुई है।

आज से बहुत पहले, क़रीब चार सौ वर्ष पहले ह गढ़ अपनी शान में फूला न समाता था। परन्तु ाज बेचारा चुप, एकाकी अपने अच्छे दिनों की ाद में सिसक रहा है।

उन अच्छे दिनों का क्या कहना उप्पूगढ़ में ीरवर कफ़ू चौहान रहता था। गढ़ को अपने वीर ा घमण्ड था। गढ़ स्वतन्त्र था। गढ़वासियों को पनी आज़ादी जान से भी प्यारी थी।

महाराज अजयपाल ने गढ़वाल के सब गढ़ों ा जीतने का सङ्कल्प किया था। वे एक-एक करके हुत-से गढ़ जीत चुके थे। एक दिन उप्पूगढ़ की ी बारी आई। महाराज अजयपाल की सेना ने ढ़पर धावा बोल दिया।

कफ़ू की सेना और महाराज अजयपाल की ना में घमासान युद्ध हुआ। कफ़ू जान रहते अधी-ा स्वीकार न करने की प्रतिज्ञा कर चुका था। स वीर को अपनी आज़ादी प्यारी थी।

महाराज अजयपाल की सेना बहुत बड़ी थी, र कफ़ू की सेना छोटी-सी। परन्तु वीर कफ़ू हार ननेवाला न था। वह दोनों हाथों में तलवार लेकर तों में लगाम दबाकर, घोड़े के ऐंड़ लगा लड़ती सेना के बीच घुस गया। उसका विकराल रूप खकर महाराज अजयपाल की सेना घबरा गई।

कफ़ू बड़ी तेज़ी से दोनों हाथों से चलाने लगा। सैनिकों ने समझा कि भैरव युद्ध कर रहे हैं। कफ़ू की सेना ने भी धावा बोल दिया। महाराज अजयपाल की पैर उखड़ गये।

होनहार बलवान् है। सेना में कफ़ू के दूत ने तुरन्त उप्पूगढ़ में जाकर यह खबर गढ़पति अब न आ सकेंगे। गढ़ की वीराङ्ग अब अपने कर्तव्य का पालन करना ठीक स जब उनका प्यारा गढ़पति न रहा तो वे क्या रहकर ? गढ़ में आग लगाकर वे जल मरीं धायँ-धायँ करके जल उठा।

कफ़ू ने आकर देखा—गढ़ जल रह उसकी आशायें भी गढ़ के साथ जल रह उसका दिल टूट गया।

भागती सेना लौट पड़ी। उदास उन्मत्त पकड़ा गया। लोग उसे महाराज अजयपाल के ले गये। अजयपाल ने उसे बहुत समझाया अ स्वीकार करने के लिए परन्तु जिसे स्वतन्त्रता हो वह झुकना कब स्वीकार करता है।

महाराज अजयपाल को क्रोध हो अ उन्होंने जल्लाद को बुलाकर आज्ञा दी कि क इस तरह तलवार चलाये जिससे उसका सिर महाराज के चरणों पर आ गिरे। जल्ला तलवार उठाई। कफ़ू ने गरदन पर तलवार प सिर को ऐसा झटका दिया कि वह अभिमान सिर महाराज अजयपाल के चरणों पर गिरने के दूर पीछे जा गिरा। वह वीर हमेशा आज़ाद र

महाराज अजयपाल को अपने क्रोध पर खेद वे वीर थे। उन्होंने मृतक कफ़ू के आगे सिर न उनके मुँह से निकल गया—वीर, तुम जीते मैं

गन्दा लड़का

लेखक, श्रीयुत महावीरप्रसाद श्रीवास्तव

गोपाल आँगन में खड़ा रो रहा था और उसकी रोटी पका रही थी। इतने में भोला गोपाल को ने के लिए बुलाने आया। उसे रोता देखकर

ला ने पूछा—क्यों भाई, रोते क्यों हो ?

गोपाल—अम्माँ ने मुझे मारा है।

भोला फिर बोला—चाचीजी, आपने इसे रा है ?

इसपर गोपाल की माँ ने कहा—यह बहुत बुरा ड़का है। न दाँत माँजता है, न कुल्ला करता है और मुँह धोता है। न जाने कहाँ का दरिद्र गन्दा पैदा आ है जो ऐसे ही खा लेता है।

अब भोला ने गोपाल से कहा—भाई ! तुम तो चमुच बहुत घिनौने हो। मेरे भाई महेश भी दाँत हीं माँजते थे। नतीजा यह हुआ कि उनके दाँतों में ड़ी लग गई। अभी कल ही तो डाक्टर के यहाँ नके दो दाँत उखाड़े गये। उनकी आँखें भी कम-ोर हो आई हैं। उन्हें कम दीखता है।

भोला फिर बोला—देखो मेरे दाँत कितने फ़ और चमकीले हैं। देखूँ तुम्हारे दाँत ?

गोपाल ने दाँत दिखा दिये। "धत् तुम्हार भला हो। तुम्हारे दाँत तो इतने गन्दे हैं कि तुम्हा साथ खेलने को जी नहीं चाहता।" कहकर भोल बाहर भाग गया। गोपाल रोता रहा।

दूसरे दिन जब गोपाल अपने साथियों के सा खेलने गया तो उन्होंने उसे अपने साथ खिलाने मना कर दिया, क्योंकि उसके दाँत मैले थे।

चार-पाँच दिन तक जब गोपाल को खेल शामिल नहीं किया गया तो फिर वह अपने पुरा साथियों के पास जाकर बोला—भई ! अब मु खिला लो। मैं कल से दाँत माँज लिया करूँगा

उन्होंने जवाब दिया—नहीं। जब तक तुम्ह दाँत बिल्कुल साफ़ और सफ़ेद न हो जायँगे, तब हम तुम्हें अपने साथ खेलने न देंगे। गोपाल जी घर पर पड़े-पड़े बहुत ऊबता था। इसलिए उ रोज़ सुबह दाँत साफ़ करना शुरू कर दिय १०-१५ दिन के बाद वह अपने दोस्तों के पास ग उस दिन बड़े ज़ोरों की आँख-मिचौनी खेली।

गोपाल को ज़बर्दस्ती गन्दगी छोड़नी पड़ी।

— —

मन्दिर

लेखक, श्रीयुत ज्ञानचन्द्र

ना हुआ था नदी-किनारे, छोटा-सा मन्दिर मेरा।
पन एक देखा था मैंने, जिसमें हुआ सबेरा॥
चिड़ियाँ स्वयं जगाने आईं, माला लाया माली।
उठो प्रभात हुआ देखो तो प्राची ऊषा में लाली॥
विचरा करना गली-गली, नित लेकर खाली झोली।
दयालुओं से भर जाती थी खाली मेरी झोली॥
गर्व सहित करता मैं पूजा, शङ्ख और घड़ियाल बजा।
भक्त-मण्डली में शामिल सब, क्या राजा क्या वहाँ प्रजा॥

छोटा सिपाही

लेखक, श्रीयुत वीरेन्द्र त्रिपाठी

'मेरा एक मित्र करता था भारत-सेवा-दल की
तुम भी तो उसके सैनिक हो मुझको भी ले चलो न
मेरे भैया मुझे बना लो अपने दल का एक सिपा
'अभी नहीं पहले तुम पढ़ लो कर लो अपनी खतम प
'पढ़ता तो मैं सदा रहूँगा किन्तु तुम्हारे दल में जा
सीखूँगा कुछ नये तरीक़े जो होंगे उन्नति के चा
और देश पर जो मरते हैं करते उनकी सभी
इसी लिए तुम मुझे बना लो अपने दल का एक सि

फिटफिटिया बन्दूक़

लेखक, श्रीयुत एम० एल० पाँड़े

लल्लू के लाला ने एक छोटी-सी फिटफिटिया बन्दूक़ ाकर उसे दे दी। वह बन्दूक़ क्या आई लल्लू के पास जतने बबुवे मनुवे थे उनके लिए काल आ गया। रबड़ के बुवे और लकड़ी के मनुवे सीधे-सादे थे जो लल्लू के लघर में आराम से रहते थे। उन्हें किसी का डर न था। नका इतना ही काम था कि लल्लू जब उनसे खेलना ाहे तब वे चुपचाप उसके हाथों का खिलौना बन जायँ।

लल्लू एक दिन अकड़ता हुआ अपने खेलघर में उसी टफिटिया बन्दूक़ को लेकर पहुँच गया। वहाँ उसने अपने ारे लकड़ी के मनुवों को एक लाइन में खड़ा कर दिया। के बाद बन्दूक़ की नाल में उसने डाट भर दिया। ह डाट उसी बन्दूक़ में एक डोर के सहारे बँधा रहता था। ट भरने के बाद लल्लू ने फिटफिटिया का घोड़ा चढ़ाया र निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया। एक फिट-सी वाज़ हुई और डाट सामने को उछलकर एक मनुवे को लगा। मनुवा ज़मीन पर गिर पड़ा। लल्लू ने फिर शाना साधा, बन्दूक़ फिर फिट से बोली। डाट उछला र दूसरा मनुवा भूमि पर आ रहा।

लल्लू तो मारे ख़ुशी के उछल पड़ा—"अहा, कैसी छी बन्दूक़ है मेरी।" उसने कहा—"अब तो मैं -एक करके इन सब सिपाहियों को मार डालूँगा।" मुच उसने सबको मार गिराया। इसके बाद उसने ो, शेर, घोड़े, भालू, बकरी और बन्दर आदि जितने भी ौने उसके पास थे सभों को एक-एक करके भूमि पर ा दिया।

लल्लू का मन अभी निशानेबाज़ी से नहीं भरा था। ी फिटफिटिया अभी और चलती किन्तु उसकी माँ से बुला लिया। वह भोजन करने घर के भीतर गया।

लल्लू के जाते ही जितने खिलौने थे सभी धूल झाड़ते उठ खड़े हुए और इधर-उधर देखकर अपने घरों में गये। वे सभी उस बन्दूक़ से बहुत डर गये थे। बाघ भालू तो डर के मारे सन्दूक़ के पीछे छिप गये और से छिपे-छिपे बन्दूक़ को देखने लगे, जिसे वहीं भूमि ाड़कर लल्लू खाना खाने घर में चला गया था।

"कैसी भयङ्कर वस्तु है यह नया खिलौना जिसे लल्लू ने लोगों के ही घर में लाकर डाल दिया है।" बाघ ने से कहा—"बस, 'फट' से बोली और हम लोगों को भूमि पर लिटा देती है। भई, सच पूछो तो मैं नहीं कर सकता।"

"हो हो। अरे कहाँ तुम सब भागे जा रहे हो सुनो तो। आओ यहाँ आओ, मैं भी मित्र हूँ।" ने दूसरे खिलौनों को भागते देखकर कहा—"आओ भी अपने इस खेलघर की बातें सुनाओ।"

"चलो-चलो, रहने दो बड़ी बी! हम सब तुम ही भले।" मनुवों ने कहा—"तुम गला फाड़कर करती हो और फिर सर पर कचोके लगाकर हम पटक देती हो।"

"भई वाह!" फिटफिटिया ने हँसते हुए उत्तर दि "मैं तुम्हें कोई कष्ट थोड़े ही देना चाहती हूँ, मेरे मित्रो! तो आवाज़ ही फिटफिट है। उससे डरना ही क्या? मेरा घोड़ा खींचोगे वहीं फिट से आवाज़ होगी। अ बात तुम्हारे पटक देने की, सो उसका तो कोई ख़याल करो मत। वह तो केवल मेरा छोटा-मोटा डाट तुमको गिरा देता है। अब तुम उस नन्हीं-सी चीं डरो ही क्यों। रही बात गिरने की, सो यह तुम्हारी कम है। चोट तो कोई तुम्हें लगती नहीं। खेल तो खेल है

बन्दूक़ बेचारी ने बहुत कुछ कहा, किन्तु दूसरे खि ने उसकी एक न मानी। लल्लू ने जिस जगह उसे दिया था वह बेचारी वहीं पड़ी रही और वहीं से खिलौनों को बुलाती रही, किन्तु उसकी पुकार कि नहीं सुनी। वे सब उसे बड़ी बे-रहम, कट्टर और ज समझते रहे। उससे दूर ही दूर रहे। बेचारी व क्या करती। खिलौनों को उसकी आवाज़ बुरी लगत और वह अपनी बोली बदल सकती नहीं थी।

खिलौनों के अलावा लल्लू के पास एक फुस्सी भी उस बिल्ली का नाम पन्नो था। पन्नो भी खेलघर में करती। खिलौनों से उसकी बड़ी मुहब्बत थी। एक सी टोकरी पन्नो के सोने-बैठने के लिए थी।

एक दिन लल्लू ने टोकरी में झाँककर देखा आश्चर्य के मारे चिल्ला उठा।

"अम्माजी, ओ अम्मा। पन्नो के मेऊँ, मेऊँ, चार, इतने सारे बच्चे। देखो तो ज़रा कितने अच्छे हैं" लल्लू ने चिल्लाकर कहा।

बात सच थी। खिलौनों ने भी झाँककर देखा, छोटे चार बच्चे टोकरी में पड़े हुए थे। चारों बच्चे

क पेट से लिपटे पड़े थे। पन्नो बड़ी ख़ुश दिखलाई ी थी।

किन्तु तुम जानते हो, बड़े होकर जब वे अपनी टोकरी बाहर निकलने लायक़ हो गये तो उन्होंने क्या उपद्रव ा? खिलौनों को किस प्रकार तङ्ग किया? वे चारों उछलकर खिलौनों की मेज़ पर पहुँचते और गुड़ियों तथा ों के पेटों में अपने पञ्जे कोंच देते। कभी अपने दाँतों उन्हें नोचते। यहाँ तक कि बेचारी गुड़ियों का पेट जाता, उनके पेट का भूसा और गूदड़-गादड़ सब बाहर ल आता। खिलौने तङ्ग आ गये। अन्त में तङ्ग कर सभों ने राय की कि पन्नो के पास चलें और इन माशों की शिकायत करें। यही सोचकर सब खिलौनों मिलकर बड़े मन्नू को अपना सरदार चुना और उसे ो बीबी की सेवा में भेजा।

बड़े मन्नू ने जब बच्चों की शिकायत उनकी माँ से की माँ भालू पर बहुत बिगड़ी। उसने कहा—“भाग जा ाँ से। बड़ा आया मेरे दुलारे बच्चों की चुग़ली करने। खेलते हैं तो खेलने दे। अच्छा करते हैं जो तेरे साथियों पेट फाड़ डालते हैं। जा, निकल यहाँ से, नहीं तो भी उठाकर पटक दूँगी।”

बड़ा मन्नू आख़िर रूई और मट्टी का खिलौना ही तो ा। डर गया बेचारा। अपना मुँह लटकाये लौट आया। ा करता।

बच्चे कुछ दिनों में और बड़े हो गये। अब तो वे र भी ऊधम मचाने लगे। फिटफिटिया अपनी जगह ड़ी-पड़ी यह सब देखा करती। गुड़ियों का हाल देखकर बड़ी दया आती। एक दिन जब उसने देखा कि बिल्ली च्चों ने एक बड़ी ख़ूबसूरत गुड़िया के बाल नोच डाले फिटफिटिया को बड़ा ग़ुस्सा आया। उसने सोच लिया कि खिलौनों की ज़रूर सहायता करूँगी, यद्यपि खिलौने ससे चिढ़ते थे, उससे बातें नहीं करते थे, उससे दूर रहते , फिर भी उसने निश्चय कर लिया कि गुड़ियों को उन माश बच्चों के चंगुल से ज़रूर बचाऊँगी।

उसने बड़े मन्नू को अपने पास बुलाकर कहा—मन्नू, ओ, मैं तुम्हारी सहायता करूँगी! इन बदमाश बच्चों से मैं तुम्हारा पिंड छुड़ा दूँगी। आओ, मुझे उठाओ और मेरा ट मेरे मुँह में भर दो। बच्चों पर निशाना साधकर मेरा डाट दो। वे तुमको तङ्ग करना बन्द कर देंगे।

मन्नू ने दौड़कर ज़मीन पर से छोटी फिटफिटिया बन्दूक़ ली। इसमें उसने डाट भर दिया और [illegible] सबसे [illegible] फ़ुस्सू पर, जो उसके बाल नोचने आ रहा था, निशाना साधकर बन्दूक़ का घोड़ा दबा दिया।

‘फिट’ डाट बड़े ज़ोर से उछला और यदि फ़ुस्सू भाग न गया होता तो उसके सिर पर बड़े ज़ोर से लगता।

‘फ़ुर्र-र-र-र’ चारों बच्चे एक साथ चिल्ला उठे। पन्नो ने उनकी चिल्लाहट सुनी तो अपनी टोकरी से उछलक भागी। वह मन्नू पर बड़े ज़ोर से झपटी।

“फिट” डाट ने उछलकर पन्नो को जहाँ का तहाँ रो दिया। पन्नो बीबी भी डर गई।

मेऊँ, यह चाहे जो चीज़ भी हो, पन्नो ने कहा— “किन बच्चो, यह है बड़ी भयङ्कर। आओ, मेरे पीछे भाग चलो हम लोग इस फिटफिटिया से दूर ही रहेंगे। यह ब ख़तरनाक है। क्या जाने हम सबको खा डाले।”

वह अपने बच्चों के साथ खेलघर से बाहर भाग ग वहाँ से वह उनको चौके में ले गई और वहीं सबको स के लिए कहा, क्योंकि अब फिर खेलघर में जाने की उस इच्छा नहीं थी।

“देखो!” फिटफिटिया ने ख़ुश होकर कहा— तुमसे कहा न था। वे सब चले गये। अब फिर क यहाँ नहीं आयेंगे। अब तुम लोग कुछ समय तक चैन रहोगे। जाओ, अब अपने साथियों को यह ख़ुशी बात सुना दो।

मन्नू ने बन्दूक़ ज़मीन पर रख दी। वह दौड़कर अ साथियों से यही बात कह आया। तब तो सारे खि अपनी-अपनी जगह से निकलकर फिटफिटिया के आगये। उन सब ने मिलकर उसे अपने कन्धों पर लिया और सारे खेलघर में उसे कन्धों पर उठाये चिल्लाते फिरे—“अहा, हा! कैसी अच्छी है हमारी बन्दूक़।” वे लोग इतना चिल्लाये कि उनकी साँस फूलने ल

“हम लोगों को बड़ा दुःख है” सब खिलौनों ने मि कहा—जो हमने आपको निर्दय, क्रूर और बे-मुर समझा! आपने हम लोगों पर बड़ी दया की। अ बहुत-बहुत धन्यवाद।

“अच्छा, तो अब शायद” फिटफिटिया ने कहा— लोग मुझसे दोस्ती रक्खोगे।

“ज़रूर, ज़रूर” हर एक चिल्ला उठा। वे सब बन्दूक़ को उठाकर अपने खेलघर में ले गये और वहीं बराबर अपने पास रक्खा। तब से तो बन्दूक़ के अधिक मित्र बन गये कि वह उनकी गिनती भी न सकती थी।

महानुभावों का बचपन

लेखक, श्रीयुत रवीन्द्रकुमार

एक खलिहान में बहुत-से बालक किसी महत्त्व के कार्य की तैयारियाँ कर रहे थे। जिस कार्य की यारियाँ हो रही थीं, वह था बारूद का युद्ध। ब बालकों का मुखिया एक छोटा किन्तु तेजस्वी ड़का था।

ख़ैर, युद्ध शुरू हो गया युद्ध में किसी बालक तो चोट-चपेट नहीं आई पर सारा खलिहान जल- राख हो गया। वह खलिहान था मुखिया के ता का। उसकी साल भर की कमाई चौपट हो गई। रपक्ष का नाम स्टेलिन था जो आजकल रूस का धाता है।

× × × ×

चर्च के पासवाले टीले के पीछे से व्याख्यान की आवाज़ आ रही थी। बड़ी भा सुनने को खड़ी थी। सभी लट्टू हो रहे थे। पादरी साहब की आवाज़ थी। सब लोग सम थे कि पादरी साहब ही व्याख्यान दे रहे हैं।

व्याख्यान हो जाने पर लोगों ने हाथ जय-जयकार किया। अन्त में एक बालक हुआ उस टीले के पीछे से निकला। सब चकित रह गये। इस बालक ने बिल्कुल पादरी की-सी आवाज़ में कैसे व्याख्यान दे डाला, मन में यही प्रश्न था।

यह बालक बेनिटो मुसोलिनी था जो दिनों इटली का अधिनायक (डिक्टेटर) था।

दो आँसू

लेखक, श्रीयुत मनोहरलाल दुबे

ष्मकाल की दोपहरी में सूर्यदेव तपते हैं जब,
प्राणी व्याकुल हो कहते— सन्ध्या आयेगी अब कब।
क दिवस सन्ध्या आने पर खगगण चले बसेरों को,
धर शिकारी बन्दूक़ें ले शीघ्र चले उद्यानों को।
द्रादेवी की गोदी में पशु-पक्षी थे पड़े हुए,
र नींद में सोये थे वे दिन भर के थे थके हुए।
ना हुआ बरगद की डाली में था एक नीड़ सुन्दर,
बच्चों के साथ एक चिड़िया सोई थी उसके अन्दर।
हसा गूँज उठा पूरा नभ हुई एक भारी आवाज़,
हर निकल पड़े सब पक्षी मानो कहीं गिरी हो गाज।
चिड़ियाँ भी सहसा डरकर घोर नींद से जाग पड़ीं,
बच्चों को पाकर न वहाँ व्याकुल हो नभ में निकल प
इस चिड़िया का नन्हा बच्चा – उसकी आँखों का त
नीचे गिरकर तड़प रहा था घायल होकर बेचा
नीचे उतर वृक्ष से चिड़िया जब बच्चे के निकट
घोर शोक में डूब गई वह निज को भी थी भूल
फिर उसने देखा कि शिकारी की आँखें थीं उस पर
किन्तु वहाँ से नहीं हटी वह निश्चित मृत्यु जानकर
माँ की इस गहरी ममता का पड़ा प्रभाव शिकारी
उसके कम्पित कर से सहसा वह बन्दूक़ गिरी भू
अपने बच्चे के मरन पर चिड़िया बहा रही आँ
किन्तु शिकारी की आँखों में करुणा के थे दो आँ

हिसाब लगाइए

मास्टर साहब क्लास में विद्यार्थियों को बाँटने के लिए कुछ आम लाये। यदि वे प्रति छात्र एक आम दें तो एक आम है। यदि दो-दो दें तो एक छात्र को आम नहीं मिलते। तो आम और विद्यार्थियों की संख्या क्या हो सकती है?

—अनेश

नाशपातीवाला

लेखक, श्रीयुत दीनबन्धु पाठक

दशहरे की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला था। ति उस दिन घर से कुछ देर से निकली। आकाश बादल छाये थे लेकिन बूँदें नहीं पड़ती थीं। ने सोचा, छाते की क्या ज़रूरत, जल्दी पहुँच ऊँगी। फिर वर्षा के दिन भी तो नहीं हैं। वह नी किताबों और ते को बग़ल में दबाकर घर से चल ी। रास्ते में उसे न्दरों का एक झुण्ड ल गया। वह बड़ी शान थी, कहीं ये दर काट न लें। दूर पर एक आदमी पने सिर पर टोकरी खे आ रहा था। सने बन्दरों को न खा। टोकरी को तारकर ज़मीन पर रख दिया और पेशाब करने लगा। एक बन्दर, जो टोकरी के पास था, झपटकर उसपर टूट पड़ा। उसकी देखादेखी सारे बन्दर उस ओर दौड़ पड़े। शान्ति की जान में जान आई। वह भगवान् को मनाने लगी। बड़ी पा की, नहीं तो बन्दरों की जाति बड़ी शैतान होती है। कहीं मेरी किताबें ही छीन लेते। उसने देखा, ारे बन्दर उस टोकरी से नाशपातियाँ चुराये पेड़ पर भागे जा रहे हैं। वह बड़े ज़ोर से हँस रही थी और आदमी चिल्ला रहा था। आदमी ढेले ढूँढ़-ढूँढ़कर उन बन्दरों पर फेकता लेकिन वे टस से मस न होते। आदमी की देखा-देखी बन्दर भी ढेले के स्थान प नाशपातियों से उसे मारने लगे। इस तरह कु नाशपातियाँ उस आ दमी को मिल गईं लेकिन टोकरी में ए भी नाशपाती न बची वह आदमी थक वहीं रास्ते में गया था। अपने हा से सिर पकड़े लटकाये कुछ से रहा था। इसी नरेश नाम का लड़का आ निकल वह बन्दरों की हर देखकर हँसने और नाशपातीवा बोला—क्यों, पातियाँ क्या हुईं? बन्दरों ने ख़रीद बेचारा आ परेशान था। वह की बात को वि घूँट की तरह पी

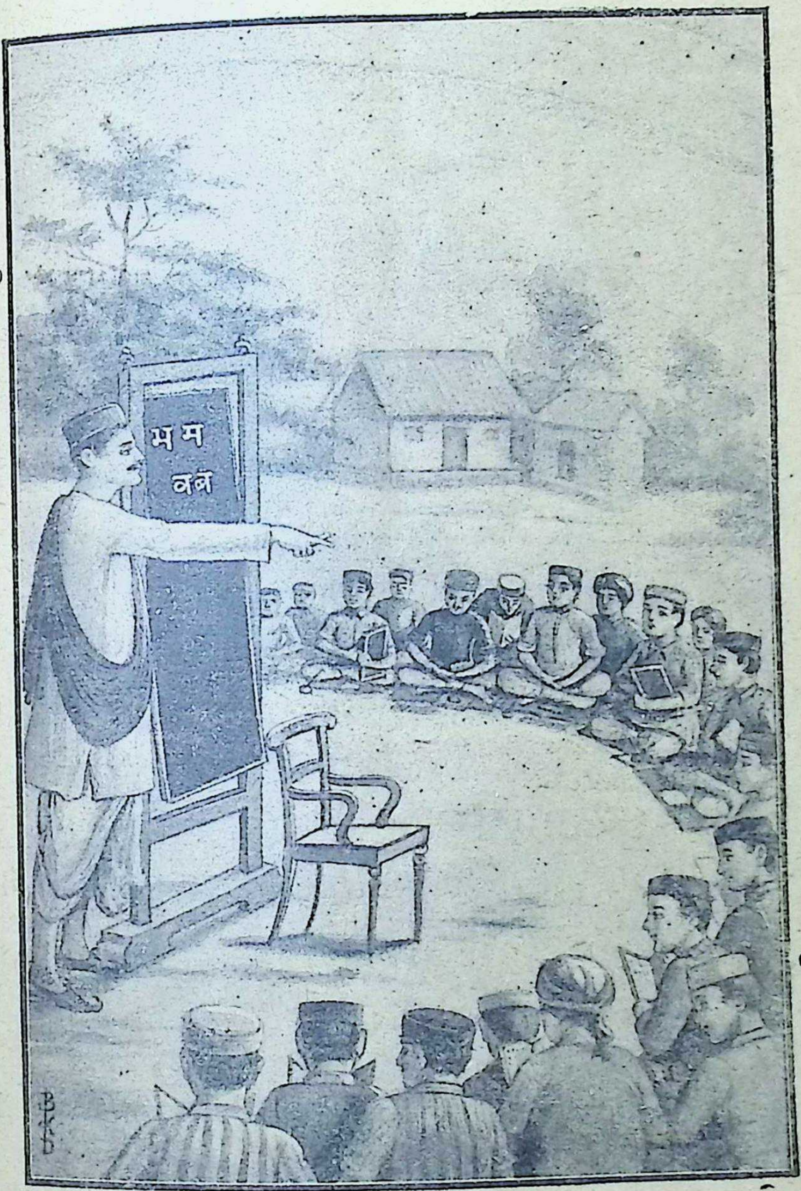

मास्टर साहब बच्चों को पढ़ा रहे थे

नरेश फिर से बोला—अरे आठ-दस तो शायद बिकीं। ख़राब हैं क्या? जब बन्दरों ने नहीं ख तो आदमी कौन ख़रीदेगा? सस्ती बेचकर क्यों चले जाते घर। दूसरी टोकरी लाकर बेचो।

आदमी को कुछ क्रोध आ गया। वह ज़ोर से ारजकर बोल उठा—जा, सीधे अपने रास्ते चला ा। तू भी जले पर नमक छिड़क रहा है। तू क्यों हीं अपनी किताबों को बेच लेता। कब से बड़बड़ र रहा है।

शान्ति बग़ल से चली जा रही थी। वह नरेश काफ़ी परिचित थी। उसने नरेश से हँसते हुए हा—तुम भी तो पढ़ने नहीं जाते नरेश। किताबें चकर खरीद न लो नाशपातियाँ। कुछ बची भी हैं।

नरेश हँस रहा था। वह कहने लगा—बालक र बन्दर एक ही श्रेणी में माने जाते हैं। अगर बची हुई नाशपातियाँ दे दे तो हर्ज ही क्या ? ो भी उन्हीं बन्दरों में गिन ले।"

आदमी क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और री लेकर चलता बना। दोनों लड़के जैसे ही े बढ़े, आकाश में घिरे बादलों से बूँदें पड़ने लगीं। लों में गड़गड़ाहट हो रही थी। दोनों लड़के अभी टोकरीवाले को हँस रहे थे, अब स्वयं परेशान कैसे जल्दी स्कूल पहुँच जायँ। बादल इतनी घनघटा में छाये थे कि दो-चार दिन तक न निकलेंगे। -धीरे वे बूँदें गहरी वर्षा बन गईं। पानी ही पानी हो । बच्चे भीग गये। शान्ति और नरेश दोनों ही क़स्बे के स्कूल में पढ़ते थे। जब वे स्कूल े तो स्कूल के अन्दर भी पानी भरा देखा। र साहिब ने कहा—जाओ लड़को, आज छुट्टी बरसाती दिन में पढ़ाई न हो सकेगी।

शान्ति बोल उठी—मास्टर साहब! अभी आने हम लोग बिल्कुल भीग गये हैं। जाने में तो कल ीमार पड़ जायँगे। आप यही चाहते हैं क्या ?

मास्टर साहब ने हँसते हुए कहा—लड़के तो ाँ बहुत चाहते हैं। आज बिना छुट्टी के छुट्टी री है तब क्यों नहीं आप जाते ?

शान्ति कुछ शर्माती हुई बोली—हाँ साहब, छुट्टी तो चाहते हैं लेकिन इतनी तेज़ ह वर्षा नहीं चाहते। आते समय केवल वर्षा जाते समय हवा का भी सामना है। घर पहुँ बहुतों को निमोनिया हो जायगा।

मास्टर साहब ने सभी लड़कों को बु कहा—अच्छा लड़को, आओ तुम्हें आज व एक नई कहानी सुनावें।

सारे लड़के दौड़कर मास्टर साहब के पा गये और चिल्लाकर कहने लगे—सुनाइए, साहब सुनाइए।

मास्टर साहब ने लड़कों को शान्त करते कहा—"शोर बन्द करो तो सुनावें।" लड़के हो गये। मास्टर साहब ने कहा—देखो, आकाश में जो ये बादल छाये हैं, ये अधिक तक नहीं टिक सकते। वर्षा-ऋतु में तो इन बा की मौसमी हवा बहती है; लेकिन इस समय बादल अचानक आ गये हैं। यह जो ज़ोरों की चल रही है, इन बादलों को घण्टे दो घण्टे में ले जायगी। फिर तो यही आकाश पहले की स्वच्छ हो जायगा। इससे तुम लोग एक घण्टे रुके रहो जिससे पानी रुक जाय। फिर अपने-अ घर जाना।

सचमुच एक घण्टे के बाद बहुत-से बादल कर इधर-उधर उड़ गये। पानी का बरसना बन्द गया। लड़के स्कूल से हँसते हुए निकल पड़े। न और शान्ति भी उसी रास्ते से चल पड़े जिधर टोकरीवाले को बन्दरों ने परेशान किया था। जै ही वे आगे बढ़े, देखा वही नाशपातीवाला टोकरी नाशपातियाँ और हाथ में ढेले और डण्डा लिये आ आगे जा रहा है। नरेश ने उस आदमी को पुकार कहा—अजी नाशपातीवाले, बन्दरों के लिए ना

वह चिढ़ा तो था ही, बोल उठा–तेरे लिए भी है।

नरेश हँसते हुए कहने लगा—तो तुझे क्या मालूम था कि मैं स्कूल में हूँ। अच्छा ला, यहीं । क्यों तुझे कष्ट हो।

आदमी बोला—क्या नाशपातियाँ खाने के लिए स्नान किया है ?

नरेश कुछ झेंप गया। उसने कहा—यह तो रसात की वजह से हो गया है।

आदमी ने नरेश को उत्तर दिया—ऐसे ही दरों ने भी अचानक नाशपातियों का नुक़सान कर या है। देखो, मैं तो नहीं भीगा। तुम्हीं क्यों भीग ? जानते नहीं कि वर्षा क्यों बन्द हो गई।

शान्ति बोली—हम लोगों ने आज यही पढ़ा । तुम्हीं नहीं जानते। हम बता दें तो तुम भी जान । चले हो हमें सिखाने। अच्छा, तुम बतलाओ, रसात क्यों बन्द हो गई और ये बादल क्यों ड़ गये।

आदमी समझदार था। हँसते हुए बोला—देखो, तुम लोग बच्चे हो। अभी नहीं जानते। व ऋतु को छोड़कर बाक़ी सभी ऋतुओं के बादल ह के झोकों से उड़ जाते हैं। वर्षा में भी तेज़ ह होने पर बादलों से वर्षा नहीं हो पाती।

दोनों बच्चे चिल्ला उठे–अरे, यही बात तो मास्ट साहब ने आज बताई है.। अब हम लोग याद रक्खेंग

आदमी बोला—क्या याद रक्खोगे ?

शान्ति--यही कि बादलों का शत्रु हवा तेज़ हवा के आगे बादल नहीं टिक सकते।

आदमी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अपने सिर नाशपातियों की टोकरी उतारकर दोनों बच्चों दो-दो नाशपातियाँ खाने को दीं। बच्चे उस आद की ओर देखकर कहने लगे—पैसे तो नहीं हैं।

आदमी ने कहा—जाओ, यह तुम लोगों इनाम है। तुम आज के अपने पढ़े पाठ को भूले हो।

तितली

लेखक, श्रीयुत रामस्वरूप दुबे, बी० ए०, एल्-एल० बी०

पीली, नीली, लाल, रँगीली
रङ्ग-बिरङ्गी और छबीली।
इधर-उधर उड़ती है जाती,
क्या फूलों का रङ्ग चुराती ?
भाग रही है क्यों उड़-उड़कर,
क्या तू मुझसे जाती है डर ?
मेरा इतना मन ललचाया,
छूने को बढ़ हाथ बढ़ाया,
पर न हाथ तू मेरे आई,
क्षण में ही दी दूर दिखाई।
तुझको मिली कहाँ यह मस्ती,
बोल कहाँ है तेरी बस्ती।
तितली ज़रा पास में आ जा,
आ, मेरे मन को बहला जा।

वह कौन ?

लेखिका, कुमारी शारदा मिश्र

नीले, लाल, सुनहरे नभ में, रवि का रथ है आ
दिन भर रहकर नित्य शाम को, चला कहाँ वह जा
सदा रात को चमका करते, नभ में चन्दा-त
और प्रात में फीके होकर, क्या हो जाते स
उमड़-घुमड़कर रङ्ग-बिरङ्गे बादल नभ में छ
फिर जल बनकर पृथ्वी पर वे, सदा बरस क्यों ज
हरी घास पर उज्ज्वल मोती, कौन नित्य बिखर
जिनको दिन में आकर सूरज है बटोर ले जा
किसने दी है फूलों को यह, कोमलता औ' ल
किसने फैलाई पृथ्वी पर, यह सुन्दर हरिया
यही सोचता हुआ नित्य मैं, सो जाता हूँ थक
नहीं किसी ने इन प्रश्नों का, दिया मुझे कुछ उ

दो टीन पेटरौल

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

मेरे एक गुरुजन नहर के बड़े साहब (एक्ज़ीक्यूटिव जीनियर) हैं। वे आठ साल पहले बुन्देलखण्ड में थे। हरों और बम्बों का मुआयना करने के लिए वे प्रायः रे पर जाया करते थे। कभी-कभी मैं भी उनके साथ ला जाता था।

नहर के किनारे दस-दस मील पर नहर विभाग की ोठियाँ (रेस्ट हाउस) थीं। क्रम-क्रम से एक-एक दिन हरते हुए आगे बढ़ रहे थे। सफ़र मोटर से होता था। र के लिए चाहिए पेटरौल। नहर के किनारे उन देहातों र खेतों के बीच पेटरौल की दूकान कहाँ ? इसलिए हेड-र्टर शहर से पेटरौल आ जाता था।

एक दिन जब पेटरौल ख़तम होने को आया तब ड्राइवर सूचना दी। पर कोई चिन्ता की बात न थी। झट र बाबू को बुलाकर कहा गया कि कल अगली कोठी पर टीन पेटरौल का इन्तज़ाम होना चाहिए। उस कोठी से र नज़दीक ही था।

तार बाबू ने झुककर सलाम किया और जाकर तार ा फ़ौरन् अगली कोठी के तार बाबू को सूचना दी-- टीन पेटरौल का इन्तज़ाम रखना।"

तार रोमन लिपि में दिया जाता है। यहाँ से जो तार ा गया था उसी के अनुसार उस कोठी के तार बाबू ने ज़ाम किया था।

दूसरे दिन इञ्जीनियर साहब अगली कोठी प और तार बाबू से पूछा--पेटरौल आ गया ?

उत्तर में तार बाबू ने दो आदमियों को इशारा कि साफ़ से कपड़े पहने कुछ हटकर बाक़ायदा खड़े थे। जल्द आगे बढ़कर झुककर सलाम किया।

इंजीनियर साहब की समझ में कुछ न आया। कहा--क्या है ? मैं पूछ रहा हूँ पेटरौल आ गया ?

तार बाबू—पेटरौल ! हुज़ूर समझने में ग़लती मैंने समझा, आपने दो-तीन पतरौलों को बुलाया है। पतरौल हाज़िर हो सके।

इंजीनियर साहब—क्या कहते हो ! अरे मैंने वास्ते दो टीन पेटरौल का हुक्म दिया था।

शब्दों के इस मनोरञ्जक खिलवाड़ को देख अपनी हँसी न रोक सका। मोटर के पेटरौल के स्था दो सजीव पतरौल* खड़े थे और इस अनोखी भूल पर मुसकरा रहे थे।

---

* नहर विभाग में जो आदमी खेतों की सिंचाई का रखता है उसे पतरौल कहते हैं।

लोरी

लेखक, श्रीयुत श्रीनिवास 'सोना'

ा जा मुन्नी, सो जा मुन्नी" कहकर माँ बहलाती है,
का मुखड़ा चूम-चूमकर बेहद ख़ुश हो जाती है।
हो गई मुन्नी को, पर नींद नहीं आ पाई है,
उसको बहला-बहलाकर नूतन गीत सुनाती है॥
ा जा निंदिया आ जा निंदिया, तुझे यहाँ बुलवाया है,
ख़ातिर तरस-तरस मुन्नी ने रात गँवाई है।

बाट जोहती रही खड़ी पर, तू न अभी तक आई
तुझे बुलाने के ख़ातिर भँवरे को मैंने भेजा है
निंदिया जाकर बड़ी देर में, अभी पहुँच ही पाई
आई निंदिया आई निंदिया अब मुन्नी सो जाती है
सोते-सोते स्वप्नों में वह, तुझको ही बुलवाती
थपकी दे-देकर माँ तेरी तुझे यहाँ बहलाती है॥

"सो जा मुन्नी सो जा मुन्नी" कहकर माँ बहलाती है।

अजगर की कथा

लेखक, श्रीयुत निशीथकुमार राय, बी० ए०

सिगुड़ युद्ध पर गया। मालव के राजा ने उसे दी थी। वह उस राज्य से युद्ध करने चला के राजा ने उसके पिता की हत्या की थी। ड़ाई थोड़े ही समय में समाप्त हो गई। सिगुड़ ने सकी सारी धन-दौलत दखल कर ली और उसका ज्य मालव के राजा को दे दिया।

लेकिन युद्ध में विजयी होकर भी वह शान्त न आ। अपनी सेना को लेकर वह देश की ओर ा। लौटते समय एक पर्वत की चोटी पर उसे अजगर की गुफा दिखाई पड़ी। अपनी सेना को लव लौट जाने को कहकर वह स्वयं वहीं रह या। वहीं से वह उस अजगर पर नज़र रखता। जगर की साँस से एक-एक स्थान जलकर ख़ाक गया था।

वहीं से सिगुड़ ने अजगर के रहने की गुफा और उसके आने-जाने के रास्ते को भी ख़ूब पहचान लिया। क्योंकि अजगर रोज़ अपनी खोह से निकल-र उसी राह से पानी पीने जाता था। दिन भर सिगुड़ पहाड़ पर से अजगर की खोह की ओर देखता रहा। शाम को उसे खोह से अजगर का भारी शरीर निकलते नज़र आया। जब वह चला तो ऐसा मालूम होने लगा मानो बहुत बड़ा हवाई जहाज़ चला जा रहा हो।

वहाँ से थोड़ी दूर पर एक गाँव था। वहाँ एक लुहार रेगिन रहता था। सिगुड़ वहाँ पहुँचा और लुहार से अजगर की कहानी सुननी चाही। लुहार ने कहना शुरू किया—"जिस दिन दुनिया बनी थी उस दिन से अनवरी नामक एक आदमी ने एक भारी ख़ज़ाने का पहरा देना शुरू किया। उसके बाद काफ़ी दिन बीतने पर एक आदमी आया। इस नये आदमी का नाम 'एसिर' था। उसने अनवरी को भगाक वह धन अपने क़ाबू में कर लिया। सोने के बड़े-ब ढोके तथा हीरे-जवाहरात उस धन के साथ मिले।

एसिर ने मरते समय वह सारा धन रिदमा को दिया और रिदमार थे मेरे पिता।

इतना बड़ा गुप्त ख़ज़ाना दुनिया में किसी कभी नहीं देखा था। वह एसिर ने रिदमार को क दिया?–यह प्रश्न आप कर सकते हैं। एसिर क लड़का था दुष्ट। उससे एसिर डरता था। रिदम ने उस लड़के को निर्धन कर दिया था। यह उसी का उपहार था। लेकिन रिदमार यह ज़्यादा दिन तक भोग न सका; क्योंकि उसके ल ने उस धन के लोभ में पड़कर अपने पिता की ह कर डाली। उस लड़के का नाम फैफनीर है मेरा भाई है।

शायद धन के लोभ से कोई उसको भी ह पहुँचाये, इस डर से वह अजगर बन गया। इ भयानक अजगर कि कोई उसके पास आने साहस भी नहीं करता। अपने भाई की तरह किसी जीव का रूप तो धारण नहीं किया; ले मेरे पिता जो मन्त्र जानते थे उसी के बल से अपनी आयु बहुत बढ़ा ली है। एक न एक फैफनीर को मारकर मैं स्वयं सारे धन का मा बनूँगा।"

सिगुड़ ने कहा—उसके धन का मुझे भी लालच नहीं है। फैफनीर को मारकर देश को बचाना ज़रूर चाहता हूँ। रेगिन ने को एक तलवार देकर कहा—"उसे मारना मुश्किल काम है। अगर वह मरेगा भी तो इसी वार से।" उसने सिगुड़ को अजगर के मार

तरीक़ा समझाना शुरू किया। उसने कहा—"जिस राह से अजगर जाता है उसी राह के बीच में एक गड्ढा खोदकर इस तलवार को लिये बैठे रहो। जैसे ही वह आये, उसके सीने और गले पर तलवार से ार करना। चोट खाते ही वह मर जायगा; क्योंकि ला और सीना ही अजगर के शरीर में सबसे नाज़ुक ोते हैं।" सिगुड़ ने उत्तर दिया—ऐसा एक गड्ढा अवश्य खोदूँगा और जिस तरह तुम कह रहे हो सी तरह उसे मारूँगा।

सिगुड़ अपने तेज़ घोड़े पर जा बैठा और राजा ार अपनी माता से भेंट करने चल दिया। सबसे ल-जुलकर जब वह लौटा तो उसने अजगर के स्ते में एक गड्ढा खोदा। अजगर को आते देखर शायद उसका घोड़ा हिनहिनाने लगे यह सोच- सिगुड़ ने उसको एक खोह में ले जाकर बाँध या।

गड्ढे के भीतर लेटकर सिगुड़ ऊपर की ओर वार चलाने का अभ्यास करने लगा। चित कर तलवार पकड़कर ऊपर की तरफ़ पैंतरा ने लगा। वहाँ लेटे-लेटे उसके मन में आया कि भारी विपत्ति सामने आ रही है। उसे ऐसा कि अजगर का ज़हरीला ख़ून उसकी हड्डियों मांस को जलाकर ख़ाक बना दे सकता है। सोचते ही वह बाहर निकल आया। फिर आस- कई गड्ढे खोदे और अजगर के ख़ून की धारा चने के लिए एक गड्ढे से दूसरे में जाने की सुरङ्ग उसने खोद ली। फिर आकर लेटते ही अजगर ाने का शब्द उसे सुनाई पड़ा। वह गड्ढे के आ गया। यह मौक़ा जाने देंना मूर्खता होगी—सोचकर उसने अजगर के ऊपर ज़ोरों से ार का वार किया। मारते ही ख़ून का फ़ौवारा नकला। सिगुड़ तुरन्त एक गड्ढे से दूसरे में हुआ भाग निकला।

जिस गड्ढे से वह भाग निकला थोड़ी ही देर में अजगर के ज़हरीले ख़ून गया। पासवाले दूसरे गड्ढे से उचककर देखा कि अजगर का भारी शरीर गिर सिगुड़ दौड़कर उसके निकट पहुँचा और गले पर तलवार का वार किया। अजगर उठ गया। ऐसा लगा कि वह अपना भारी लेकर अभी सिगुड़ के ऊपर आ गिरेगा। सिगुड़ एक ओर कूदकर जल्दी बहुत दूर भाग अजगर आख़िरी बार ज़ोर से गरजा और फिर पहाड़ उखाड़कर चुपचाप पड़ रहा। उसके ख़ून से भरे हुए गड्ढे में उसका सिर डूब गया

अजगर का शब्द सुनकर रेगिन समझ ग काम पूरा हो गया। वह फ़ौरन वहाँ आ पहु क्योंकि वह समझता था कि फैफनीर अज ख़ून में डूबकर सिगुड़ जलकर मर जायगा। उसे जीवित तथा बिना किसी चोट के देखकर को बड़ा क्रोध आया। अपने क्रोध को छिपाते उसने बड़ी ख़ुशी से कहा—"तुम्हारी जय हो। लोग तुम्हें फैफनीर को मारनेवाला सिगुड़ करेंगे।" इस प्रकार मीठे वचनों से वह सिगुड़ फुसलाने लगा; क्योंकि सिगुड़ के जीवित वह उससे एक काम करवा लेना चाहता था।

सिगुड़ ने उससे कहा—फैफनीर मर गया उसे मारना आसान नहीं था। अब मैं मालव तथा अपनी माँ से मिल सकता हूँ। इसके बाद और दौलत देखी जायगी।

"ठहरो, ठहरो! मेरा एक उपकार और कर भाई! अजगर के शरीर को चीरकर उसके कलेजे आग में झुलसा लाओ।" सिगुड़ ने वैसा किया। लेकिन इत्तफ़ाक़ से उसके हाथ पर एक ख़ून गिर गया। उसने तुरन्त उसे चाट लिय क्योंकि जिस स्थान पर ख़ून की बूँद गिरी थी,

जा रहा था। आग बुती जा रही थी मगर र का कलेजा तब तक ठीक-ठीक झुलसा नहीं इसी कारण और लकड़ियों की ज़रूरत हुई। लकड़ियाँ खोजने चल दिया। एक निराले स्थान पहुँचकर देखा कि एक डाल पर चार चिड़ियाँ हैं। वे अपनी भाषा में बातें कर रही थीं। गर का .खून चाटने के कारण सिगुड़ उनकी कुल समझ गया।

पहली चिड़िया—यह आदमी ऐसा मूर्ख है दुश्मन की बातों पर विश्वास कर बैठा।

दूसरी चिड़िया—अजगर की खोहवाली दौलत लालच से वह इसे मार डालना चाहता है। यह जो स्वयं अजगर का कलेजा खा ले तो इसे कोई मार सकता।

इसके बाद वे सब गा-गाकर कहने लगीं—के भीतर एक महल है, उसका नाम अग्निमहल। उस आलीशान अग्निमहल की दोनों दीवालें ब्राह्मणों से ननी हुई हैं। महल के चारों ओर ग का घेरा है। उसके बीच से कोई नहीं जा सकता। इस महल के बीच में एक लड़की सो रही है। वह बहुत सुन्दरी, साहसी तथा वीर है।

सिगुड़ मुग्ध होकर खड़ा-खड़ा उनके गीत सुनने लगा, फिर एक चिड़िया ने कहा–देखो देखो, वह आदमी आ रहा है।

दूसरी चिड़िया—और हाथ में बर्छी लिये इसको मारने आ रहा है।

तीसरी चिड़िया—जल्दी सावधान न होने से यह मारा जायगा।

सिगुड़ ने मुड़कर देखा, रेगिन बर्छी लि उसकी ओर आ रहा था। बस, सिगुड़ने रेगि के सीने पर कसकर तलवार मारी।

रेगिन चिल्ला उठा—ओफ़, मर गया, मर गया कैफ़नीर की धन-दौलत मैं एक बार छू न पाया। उ के वास्ते मैं, रिदमार और कैफ़नीर तीनों मर गये जिसने मुझे मारा है वह भी मारा जाय।

सिगुड़ ख़याली पुलाव पकाता हुआ अज के कलेजे को देखने चला। वहाँ जाकर देखा वह तो जलकर बिलकुल ख़ाक हो गया है।

बच्चों की बात

लेखक, श्रीयुत एस० एल० चतुर्वेदी

आओ मेरे प्यारे लाल, दूँगी तुझे मिठाई माल।
"ऊँहूँ" मैं ना आऊँगा, नहीं मिठाई खाऊँगा॥
मारेगी तू मुझे पकड़कर, या बाँधेगी मुझे जकड़कर।
क्रोधभरी माँ दौड़ पड़ी फिर, लिये हाथ में एक छड़ी फिर॥
मुन्ना का बछड़ा आता था, सोहन उधर दौड़ जाता था।
बछड़े ने सोहन को मारा, माँ का क्रोध निकाला सारा?
सोहन को पुचकारा जाकर, दी तब .खूब मिठाई लाकर।
मुन्ना भी तो आ ही टपका, दोनों ने मिल उसको गट
दोनों ही थे नङ्ग-धड़ङ्ग, पटुका पाग बना सान
बाबा बनते कहते 'बम-बम', डमरू इधर बजाते 'डम-
साहब बनते कहते 'कम-कम', खेल रहे थे खेल उसी
दद्दा आया मुन्ना सपटा, जाकर उसे पिता ने ड
दोनों भगे बिगाड़ा खेल, घर में जाकर चुपड़े

हीरों का द्वीप

धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र

पिछली कहानी

[रतन तिब्बत से एक सन्थाल की दी हुई गोली लाया था जिसको मुँह में रखने पर वह अदृश्य हो जाता था। राने साथी सुरेश के साथ हीरों के द्वीप को जाने के लिए तैयार हो गया। थोड़ा-सा ज़रूरी सामान साथ लेकर दोनों मित्र वारी से कलकत्ते गये और वहाँ से डाइमंड हार्बर पहुँचे। नाश्ता करके वे स्टीमर पर सवार हुए। दोनों ही स्वदेश को रके रवाना हो गये।]

(७)

जिस भयानक युद्ध के कारण आज सारे संसार में हाहाकार मचा हुआ है, उसका प्रभाव सिङ्गापुर पर बहुत ही रा पड़ा। बात यह थी कि अँगरेज़ लोग पच्छिम में पने बहुत ही बलवान् शत्रु जर्मनों का मुक़ाबला करने में गे हुए थे। पूर्व की ओर ध्यान देने का अवसर उन्हें हुत कम था। इतने में जापानियों ने चढ़ाई करके अँगरेज़ों रा उनके मित्र-राष्ट्रों के कई अच्छे-अच्छे स्थानों को उजाड़ अपने अधिकार में कर लिया। इसी सिलसिले में ङ्गापुर को भी जापानियों के गोलों का लक्ष्य बनना पड़ा। कारण धन-जन से भरा हुआ वह नगर प्रायः उजाड़ गया। परन्तु जिन दिनों की यह बात है उन दिनों संसार शान्ति थी और सिङ्गापुर ब्रिटिश साम्राज्य का पूर्वी फाटक के कारण बहुत बढ़िया और कारबारी नगर था।

सिङ्गापुर के बन्दरगाह में व्यापार के सिलसिले में तो ने ही जहाज़ आते ही जाते रहते थे, साथ ही अँगरेज़ों के -से जङ्गी जहाज़ भी अँगरेज़ जाति का शाही झण्डा ते हुए वहाँ डटे रहते थे। नरेश जिस दफ़्तर में काम था, उसका सम्बन्ध जङ्गी जहाज़ों से ही था, इस वह दफ़्तर बिलकुल समुद्र के किनारे पर था। दफ़्तर स ही जहाज़ पर से उतारे गये माल-असबाब को रखने ए लोहे के मोटे-मोटे गर्डरों और पत्थरों से काफ़ी बड़ा बनाया गया था। उसके पास ही दफ़्तर था। 'डक' कुली, मज़दूर, फिटर मिस्त्री आदि तरह-तरह के आदमी उनकी दौड़-धूप, बक-झक और तरह-तरह की चीज़ों ने-उठाने के कारण बड़ा शोर-ग़ुल मचा रहता था। दफ़्तर में बिलकुल सन्नाटा रहता था।

सुरेश जब रतन को लेकर सिङ्गापुर पहुँचा तब बन्दरगाह का दृश्य देखकर दङ्ग रह गया। रतन भी के सुन्दर से सुन्दर और भयानक से भयानक दृश्य चुका था, परन्तु एक साथ इतने अधिक जहाज़ उसने नहीं देखे थे। बन्दरगाह भर में उसे ऊँचे-ऊँचे मस्तूल दिखाई पड़ रहे थे।

सुरेश और रतन को इतनी फ़ुरसत नहीं थी बन्दरगाह का दृश्य देर तक देखते। वे दोनों सीधे दफ़्तर में पहुँचे। समुद्र में बड़े-बड़े जहाज़ भों-भों थे। कितने ही स्टीमर और नौकायें तरह-तरह का असबाब लादे हुए समुद्र में चल रही थीं। उनमें से कु जहाज़ पर से माल उतारकर तट पर रखने जा रही थीं कुछ तट पर से माल लेकर जहाज़ में लादने जा रही जङ्गी जहाज़ तथा पनडुब्बियाँ भी वहाँ कम नहीं जहाज़ में काम करनेवाले कुलियों तथा दूसरे प्रकार के चारियों की दौड़-धूप और उतावली का अन्त नहीं पर सुरेश और रतन को इन बातों से कोई मतलब नहीं उनकी यही इच्छा थी कि जितनी जल्दी हो सके, नरे मिलकर हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करने का कार्य बना लें।

पहले-पहले नरेश से मुलाक़ात करने का निश्चय रतन ने। उसने यह भी निश्चय किया कि जिस तरह आँ से ओझल रहकर बातें करते-करते मैंने सुरेश को भौं कर दिया था, उसी तरह नरेश को ज़रा देर तक छ चाहिए। रतन ने केवल मनोविनोद के लिए ऐसा करने विचार किया था। पर परिणाम इसका बहुत भया हुआ। दूसरों की आँखों से ओझल हो जाने की

रतन ने तिब्बत में प्राप्त की थी उसकी बदौलत नरेश तनी अधिक घबराहट हो गई थी कि यदि सुरेश ने मानी से काम न लिया होता तो कदाचित् नरेश के प्राण बच पाते।

नरेश कोई मामूली आदमी तो था नहीं कि उसके कोई भी चला जाता। वह था जहाज़ के दफ़्तर का बाबू। उससे मिलने के लिए सूचना भेजकर पहले ा लेनी पड़ती थी। रतन ने भी दफ़्तर के चपरासी हाथ अपने नाम का कार्ड नरेश के पास भेज दिया।

रतन ने अपने नाम का जो कार्ड अँगरेज़ी में छपवाया उसके ऊपर छपा था रतनलाल शर्मा 'इनविज़िबिल'। रासी ने जिस समय कार्ड ले जाकर नरेश के सामने रक्खा समय वह मन को बहुत ही एकाग्र करके दफ़्तर के आवक काग़ज़-पत्र देख रहा था। उन काग़ज़ों के ऊपर से भर के लिए दृष्टि हटाकर वह सोचने लगा कि 'इनज़िबिल' का अर्थ होता है 'अदृश्य'। पर किसी मनुष्य के म के साथ इस शब्द का प्रयोग कैसे हो सकता है? इस नविज़िबिल' (अदृश्य) शब्द का सम्बन्ध न तो सी जाति से है और न किसी व्यवसाय से। लोगों के म के साथ मामूली तौर पर दो ही प्रकार के शब्द ते हैं। कुछ लोग तो अपने नाम के साथ शर्मा, वर्मा, म, शुक्ल, तिवारी, राय, चौधरी या इसी प्रकार के ऐसे दूसरे ब्द लिखा करते हैं जो उनकी जाति को सूचित करते हैं। सके सिवा कुछ ऐसे शब्द लिखते हैं, जिनसे मालूम हो जाता कि ये कौन-सा व्यवसाय करते हैं। पर इन सज्जन के ाम के साथ जो शब्द लिखा हुआ है वह तो बिलकुल विचित्र र्थ का बोधक है। कोइ आदमी अदृश्य कैसे हो सकता है?

इस तरह थोड़ी देर तक सोच-विचार करके नरेश ने चपरासी से कहा—श्रीयुत रतनलाल को बुला लाओ।

चपरासी कमरे से बाहर गया। नरेश फिर ध्यान से उस कार्ड को देखने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसा आदमी है। मन ही मन उसने कहा—यह कोई पागल तो नहीं है।

एकाएक दरवाज़े के पास जूतों की खड़बड़ाहट सुनाई पड़ी। यह खड़बड़ाहट नरेश के सामनेवाली कुर्सी तक मालूम होती रही। बाद को एकाएक बन्द हो गई। मानो कोई बाहर से आकर उस कुर्सी पर बैठ गया हो। पर कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था।

नरेश को अब कुछ आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा—तो क्या अदृश्य महाशय ने ही आने की कृपा की है! ये तो सचमुच अदृश्य हैं। कोई प्रेतलीला तो नहीं है?

नरेश को एकाएक डर मालूम पड़ने लगा। एक तो वह पहले से भूत-प्रेत में विश्वास किया करता था, दूसरे सिङ्गापुर में भूतों के उपद्रव के सम्बन्ध की बहुत सी कहानियाँ भी सुनने में आती थीं। सिङ्गापुर के जङ्गली और साहब लोग इस तरह की बातें उससे अकसर किया करते थे। इससे आज जब नरेश ने इस तरह की लीला अपनी आँखों से देखी तब उसको दृढ़ विश्वास हो गया कि यह कोई प्रेत-लीला ही है। इससे वह शङ्कित होकर बैठा रह गया।

जूतों की खड़बड़ाहट बन्द होने के क्षण भर के बा सामनेवाली कुर्सी पर से आवाज़ आई—गुड मॉर्निंग नरेश बाबू, हाउ डू यू डू अर्थात् नरेश बाबू, नमस्कार। कहिए क्या हाल है।

नरेश एक तो जूतों की खड़बड़ाहट सुनकर घबरा उठ था, दूसरे अब बहुत ही साफ़-साफ़ मनुष्य की बोली उस सुनी पर कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ा। इससे डर के मा उसकी घिग्घी बँध गई।

क्षण भर बाद सामनेवाली कुर्सी पर से फिर आवा आई—कहिए नरेश बाबू, जहाज़ के दफ़्तर के बड़े बाबू पद पा जाने का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य शिष्टाचार भूल जाय। क्या आप किसी के नमस्कार का उत्तर देने में अपना अपमान समझते हैं?

अब नरेश किसी प्रकार अपने आपको सँभाल न सक वह 'चपरासी! चपरासी!' चिल्लाने लगा।

चपरासी बाहर बैठा था। बड़े बाबू के व्याकुल क का स्वर सुनकर वह चौंक पड़ा और दौड़कर उनके प पहुँचा। कमरे में पहुँचते ही उसने ज़ोर की हँसी का श सुना—हो! हो! हो! हो!

चपरासी भी चौंक पड़ा। वह मन में कहने लगा कमरे में बड़े बाबू के सिवा और तो कोई है नहीं, फिर ज़ोर से हँस कौन रहा है! हक्का-बक्का होकर वह बड़े की ओर ताकने लगा। पर उनके मुख का भाव दे उसने सोचा कि यहाँ ठहरना अब ठीक नहीं है। हो न कोई......

इतने में हँसी रुक गई। कुर्सी पर से आवाज़ आ चपरासी को बुलाकर क्या करोगे भाई! शायद तुम लिए कुछ खाने-पीने का प्रबन्ध करना चाहते होगे। भाई, इस मामले में ज़रा फुर्ती करो; मुझे बड़ी लगी है।

बड़ी भूख लगी है! चपरासी तो दो ही छल कमरे से बाहर निकल गया। बाद को अपनी बोली में से चिल्लाते-चिल्लाते वह डक की ओर दौड़ा।

चपरासी को इस तरह भागते देखकर नरेश का रहा-सहा साहस जाता रहा। पर उसमें तो भागने की भी शक्ति नहीं रही। पैर इतने भारी हो गये थे कि उठाये न उठते थे। इससे आँखें बन्द किये हुए ठूँठ की तरह वह वहीं बैठा रहा।

एक मिनट भी न बीता होगा कि एक गरम-गरम हाथ नरेश के हाथ से लगा। इससे वह काँप उठा। बहुत ही अकचकाकर जब उसने आँख खोली तब सामने कोट-पतलून पहने और हैट लगाये हुए अपनी अवस्था के एक युवक को बैठा पाया।

हाथ मिलाते-मिलाते उस आदमी ने कहा—वाह भाई, तुमने भला आँखें क्यों मूँद लीं? क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो? मैं वही रतनलाल हूँ, जिसे तुम जरद्गव कहकर चिढ़ाया करते थे।

उस समय नरेश की ऐसी दशा नहीं थी कि व लाल को पहचानने की कोशिश करता। अपने साथी जरद्गव के सम्बन्ध में वह पहले से ही सुन कि आसाम के गारो पहाड़ पर उसे सिंह ने मारकर है। इससे उसे निश्चय हो गया कि वही जरद्गव होकर मुझे परेशान करने यहाँ आया है। मन में य आते ही वह लड़खड़ाकर कुर्सी पर से गिर पड़ा औ हो गया।

(क्रमश

वर्ष-गाँठ

लेखक, श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म'

म से पहली शुभ वर्ष-गाँठ, मुन्नी बिटिया की आई है।
माता-पिता, बहन-भाई सब
हैं प्रमुदित आनन्दित आज।
सारे नौकर ख़ुश हो करके
दौड़-दौड़ करते हैं काज।
जें ढोल, मृदङ्ग, मजीरा और बजे शहनाई है!
से पहली शुभ वर्ष-गाँठ, मुन्नी बिटिया की आई है।
कोई लड्डू-पेड़े खाता,
कोई बरफ़ी, खुरमी खाता।
कोई सोहन हलुआ खाता,
कोई खड़े-खड़े ललचाता।
दादी बिना दाँत की खाती ख़ूब मलाई है।
से पहली शुभ वर्ष-गाँठ, मुन्नी बिटिया की आई है।
चन्दा-सा उसका मुखड़ा है
इसी लिए 'शशि-किरण' नाम है।
हाथ जोड़कर करे नमस्ते—
उसका केवल यही काम है।
जाने के पहले सब को बाँटी गई मिठाई है।
पहली शुभ वर्ष-गाँठ, मुन्नी बिटिया की आई है।

मेरा भैया

लेखिका, कुमारी ललितादेवी (आयु १० वर्ष)

मेरा भैया बड़ा निराला,
सबका दिल बहलानेवाला।
गोरा-गोरा सुन्दर मुखड़ा,
देख उसे भूलूँ सब दुखड़ा।
ठुमक-ठुमककर चलता भैया,
सबको हर्षाता है भैया।
जब है कोई उसे बुलाता,
तो भी है न पास वह आता।

बिज्जो

लेखक, श्रीयुत राजेन्द्रकुमार जैन (आयु १२ वर्ष)

डाँट पड़ी औ' चाँटे खाये,
पिटकर बिज्जो घर को आये।
बिज्जो तू क्यों है हठ करता,
और जान को है क्यों पड़ता।
क्यों तू, रे! लड़ता जाता है,
काम जिसे करता जाता है।
नहीं किसी को भी वह भाये,
डाँट पड़ी औ' चाँटे खाये।

कोयल

श्रीयुत सुरेश शुक्ल, साहित्य-रत्न

कू-कू पड़ी सुनाई
सर्दी, कोयल आई ।
का मधुर सँदेशा लाई
का प्रेम बरसने आई ।
-कुहक आमों पर बोली
-फुदक डालों पर डोली ।
रही है मीठी बोली
र कहती बीती होली ।
मधुर मनोहर बानी
इससे मैंने पहचानी ।
यल रानी, कोयल रानी
सिखा दो मीठी बानी ।
गीत मनोहर गाती
पर रह-रह मँडराती ।
कू-कू-कू शोर मचाती
-कृष्ण का गाना गाती ।
! बोलो मीठी बानी,
ही सिखाती कोयल रानी ।
ी इसी से वन की रानी
यल रानी, कोयल रानी ॥

—

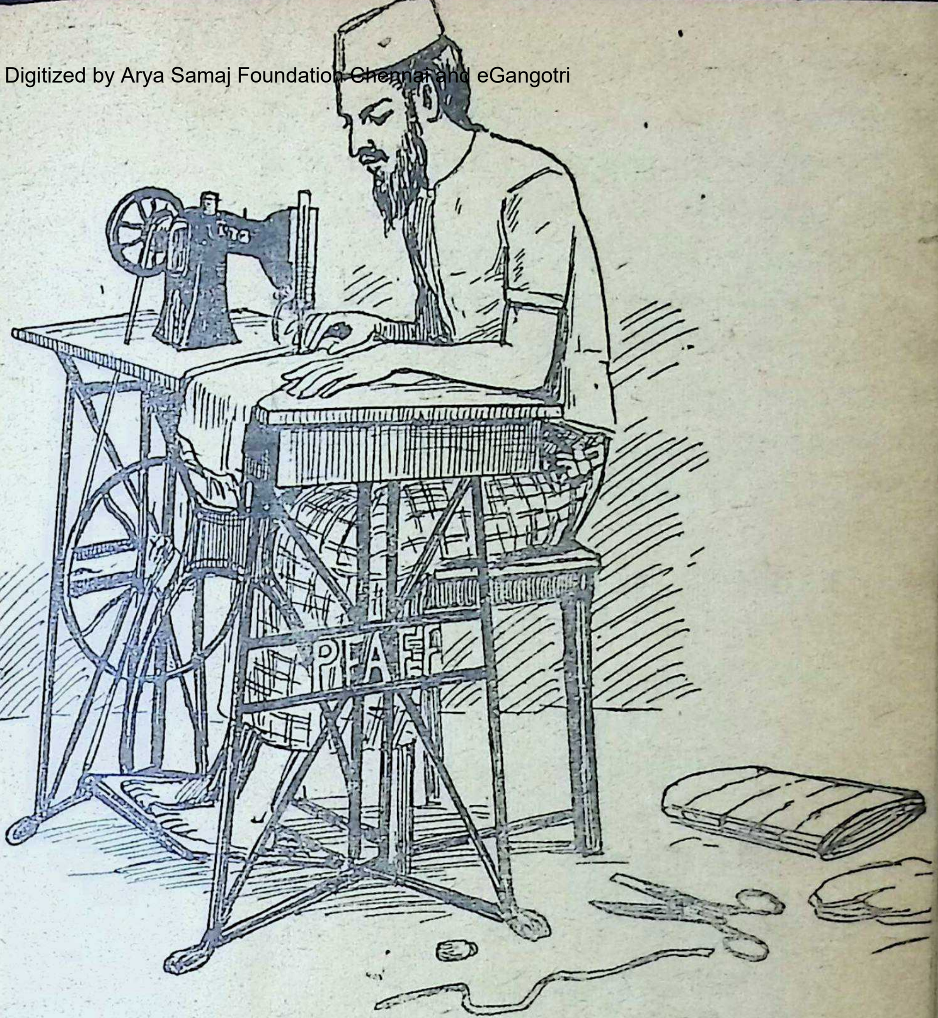

दर्ज़ी की मशीन

लेखक, श्रीयुत श्रीधर 'पङ्कज' कुलश्रेष्ठ

हो लँगोट, चाहे बनियाइन,
या रेशम के वस्त्र मुलायम,
कुर्त्ता, टोपी और कमीज़—
एक-एक से बढ़िया चीज़ ।
क्षण भर में करती तैयार ।
सीकर कपड़े कई हज़ार ॥
नये-नये कपड़े बनवाओ ।
नया-नवेला रूप दिखाओ ॥
कोट और पतलून सिलाओ ।
पूरे बाबूजी बन जाओ ॥
लाल शेरवानी मखमल की ।
उसपर टोपी हलकी-फुलकी ॥
चूड़ीदार सिला पैजामा ।
बनो नवाबों के भी नाना ॥
सिलवा लो चाहे सलवार ।
करें ताज्जुब सारे यार ॥

हाँ, लम्बा-सा कोट सिलाओ ।
पूरे पञ्जाबी बन जाओ ॥
कोट कि जिसका बन्द गला हो ।
सिर पर टोपी का तुर्रा हो ॥
हो खद्दर का कुरता यार ।
बनो पण्डितों के सरदार ॥
नेकर खाकी, टोपी खाकी ।
सारी वर्दी होवे बाँकी ॥
अगर ज़ीन की हो सिलवाई ।
जो देखें वे कहें सिपाही ॥
जैसा, जिसका वस्त्र सिला लो,
बस, वैसा ही वेश बना लो ॥
काकाजी लहँगा सिलवावें,
तो क्या वे काकी कहलावें ?

याद रखने योग्य बातें

संग्रहकर्ता, श्रीयुत सुन्दरलाल शिक्केवाला 'जनसेवक'

(१) एक साल में हमारे नाख़ून अधिक से अधिक ढाई इञ्च बढ़ते हैं।

(२) मनुष्य के बाल १ वर्ष में १६ इञ्च तक बढ़ते हैं।

(३) जोंक एक दिन में ५० इञ्च चलती है।

(४) मनुष्य १ घण्टे में ९॥ मील चल सकता और १४ मील दौड़ सकता है।

(५) हाथी एक घण्टे में २५ मील चल सकता है।

(६ मनुष्य साइकिल से एक घण्टे में १६ मील जा सकता है।

(७) ख़रगोश एक घण्टे में ३६ मील दौड़ता है।

(८) जहाज़ की गति पानी में ५६ मील प्रति घण्टा है।

(९) गीध १ घण्टे में १२५ मील उड़ सकता है।

(१०) समुद्री हवाई जहाज़ १ घण्टे में ४५० मील जाता है।

(११) डाक ले जानेवाला हवाई जहाज़ १ घण्टे में ७५० ील जाता है।

(१२) आवाज़ १ घण्टे में ७८० मील जाती है।

(१३) तूफ़ान घण्टे में १२०० मील तक चला

(१४) राइफल की गोली की गति १८०० घण्टा है।

(१५) प्रकाश की किरण एक सेकेंड में १ हज़ार ३२५ मील दौड़ती है।

(१६) अबाबील पक्षी ८० मील प्रति घण्टे के उड़ता है और सुई की नोक के बराबर कीड़ों को लेता है।

(१७) रोहू मछली (डुम्बरा) केवल एक बार लाख अण्डे देती है। १९ लाख में १९ बच्चे बढ़ पाते हैं।

(१८) केचलाट ह्वेल ६० फ़ुट लम्बी होती है। एक दाँत तौल में ४ पौण्ड होता है।

माँ धरित्री से

लेखक, श्रीयुत दयाल गिरि गोस्वामी

दे बुद्धि, बल, विद्या प्रचुर,
जीवन-मधुर, जीवन-मधुर।

[१]

तेरे धूलि-कणों का चन्दन प्रातःकाल लगाता हूँ।
मिट्टी खा, माता को अपना सुन्दर मुख दिखलाता हूँ॥
एक और दो तीन सीखने, चुनकर लाता हूँ ढेले।
लड्डू कभी बनाता उनको कभी बनाता हूँ केले॥
देख तुझे पुलकाता उर।

[२]

मरी ओढ़ूँ, प्रिय हल जोतूँ और चराऊँ मैं पशु-धन।
रत की गौरव-गाथा में बिखरा दूँ अपना जीवन॥
त्रिक-जग की भूल-भुलैया भ्रान्त न मुझे करावेगी।
अपनी ग्रामीण-सभ्यता उन्नत जब हो जावेगी॥
निज संस्कृति का देख मुकुर।

एक भारतीय बालक के उद्गा

लेखक, कु० कमल रावत

भरत की तरह मैं बहादुर बनूँगा,
मैं माँ-बाप का नाम रौशन करूँगा।
मैं विद्या पढ़ूँगा, मैं ज्ञानी बनूँगा,
दयानन्द-सा मैं भी योगी बनूँगा।
मैं माँ-बाप का हुक्म माना करूँगा,
श्रीराम जी का मैं पैरू बनूँगा।
अछूतों अनाथों को दिल से लगाकर,
मैं भाई-सा बर्ताव उनसे करूँगा।
हक़ीक़त, फ़तेह ज़ोर आवर के माफ़िक़,
सदा धर्म ही पर मैं क़ायम रहूँगा।
तिलक, लाजपत या जवाहिर-सा बनकर,
मैं भारत पर तन-मन न्योछावर करूँगा।
मैं भारत का बालक हूँ, भारत है मेरा,
सदा उसकी सेवा में दिल से करूँगा।

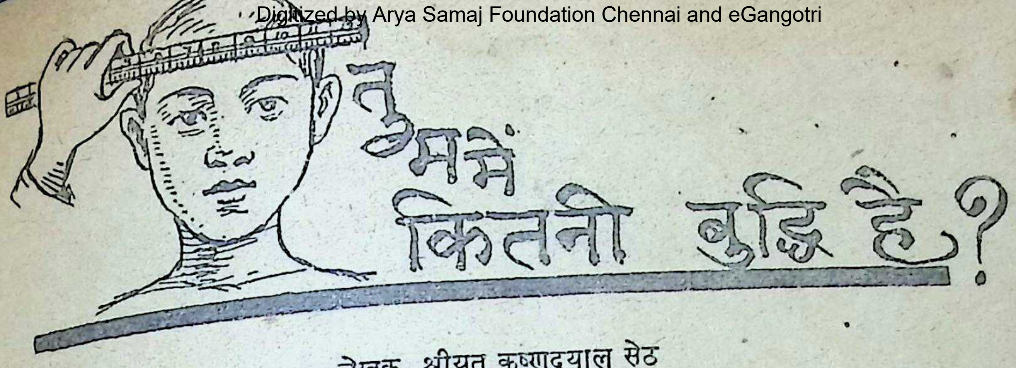

तुममें कितनी बुद्धि है?

लेखक, श्रीयुत कृष्णदयाल सेठ

नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके सही उत्तर निकालने की कोशिश कीजिए और अपने उत्त
ले अङ्क में दिये जानेवाले उत्तरों से मिलाइए।

१—भारतवर्ष में दो ताजमहल हैं। बताइए कौन-कौन हैं।

२—क्या मछलियाँ सोती हैं ?

३—दुनिया में सबसे बड़ा टापू कौन-सा है ?

४ गोपाल अपने घर जा रहा था कि मार्ग में एक
राहा पड़ा जहाँ पर सड़क बतलानेवाला साइनबोर्ड नीचे
रा पड़ा था जिससे मालूम न होता था कि किस गाँव का
न-सा रास्ता है। परन्तु अपनी बुद्धि से गोपाल ने अपने
व का मार्ग पहचान लिया। वह गाँव में पहुँच गया।
सोचकर बताइए कि गोपाल ने अपने गाँव का रास्ता कै
मालूम कर लिया।

५—नीला और पीला रंग मिलकर कैसा रंग होता है ?

६—गाय के मुँह में दाँत होते हैं या नहीं ?

७—दुनिया में रायटर ने सबसे पहले खबरें किस प्रक
भेजी थीं ?

८—इँगलैंड की नियम बनानेवाली सभा को क
कहते हैं ? इसी सभा का ईरान में क्या नाम है ?

९—सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है या पृथ्वी
के चारों ओर घूमती है ?

मार्च के बाल-सखा में 'तुममें कितनी बुद्धि है' शीर्षक स्तम्भ में छपे प्रश्नों के उत्तर—

१—(क) अंगूर, (ख) हरिन, (ग) शीशा, (घ) सुन्दर, (ङ) आँखें।

२—(अ) धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि।

(आ) भारत के जङ्गी लाट (सेनापति)।

(इ) सिडनी।

(ई) नहीं। हड्डी के स्थान पर एक दूसरी चीज़ होती है जो कार्टिलेज (Cartilege) कहाती है। यह वही है जिससे हमारे नाक-कान के अगले भाग बने होते हैं।

(उ) चैम्बरलैन। मि० एमरी।

(ऊ) सर सेम्युल होर। उनका दूसरा नाम टेम्पुलवुड भी है।

३—(अ) बड़ी।

(ब) पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।

(स) कोलम्बस।

(द) वह लड़का औरत का बेटा था।

(ई) जार्ज स्टीफेन्सन।

पृष्ठ १०८ पर छपे प्रश्न का उत्तर

४ आम और ३ छात्र।

कुतिया रानी

लेखिका, सुश्री लक्ष्मीबाई श्रीवास्तव

किसी बियावान जङ्गल में एक बड़े महात्मा हते थे। उनकी कुटी के पास रोज़ एक कुतिया ाया करती थी। उस कुतिया को साधु रोज़ कुछ ाने को दे देता था। इसी तरह वह रोज़ आती र साधु रोज़ खाने को देता। कुतिया साधु से ल गई।

एक दिन महात्माजी भोजन करके आराम कर थे कि उनके मन में यह बात आई कि इस तिया को लड़की बनाकर क्यों न रख लूँ। बस, ने मन्त्र से उन्होंने कुतिया को लड़की बनाकर लिया। वह रोज़ साधु की सेवा, पूजा-पाठ दे में सहायता और जङ्गल से फल-फूल लाना दे सब काम किया करती थी।

एक बार देवगढ़ का राजा उसी बियावान ल के साधु की कुटिया के पास से होकर शिकार ने जा रहा था कि उसकी नज़र उस कुटीवाली ी पर पड़ी। वह मन में विचारने लगा कि ऐसी ूरत लड़की साधु की कुटिया में कहाँ से आई। उस लड़की की ख़ूबसूरती पर लट्टू हो शादी चार करने लगा। साधु के पास जाकर उसने जोड़कर प्रणाम किया और कहा कि महात्माजी, इस लड़की की शादी मेरे साथ कर दें तो वहुत ही अच्छा हो। साधु इस बात पर रा हो गया। उसने राजा के साथ बड़ी धूम-धाम से कर दी।

लड़की राजा के साथ अपनी ससुराल गई। राजमहल में राजा और रानी दोनों के का कमरा पास-पास था। एक दिन राजा पत्नी के कमरे में बाहर जूते उतारकर भीतर परन्तु देखता क्या है कि बिस्तर पर रानी नहीं उसने सोचा कि अपनी सहेली के साथ वह कहीं हो वह कमरे से बाहर निकला तो क्या देखता है जूते को एक कुतिया काट रही है। राजा साह फ़ालतू कुतिया समझकर उसे निकलवा दिय परन्तु वह कुतिया तो रानी थी। राजा अपने बि पर जाकर सो गया। थोड़ी देर में कुतिया बनकर अपने बिस्तर पर सो गई। सबेरे राजा देखा तो रानी बिस्तर पर थी। यही बात र अक्सर देखा करता।

एक दिन राजा सोचने लगा कि आखिर क्या है। आज जाँच करनी चाहिए। उसने रानी सोने के कमरे की आड़ में छिपकर रात को दे तो रानी अपने बिस्तर से उठकर कुतिया बनी इधर-उधर घूमने लगी। यह देख राजा ने भीतर जा

कुतिया से कहा—"अरी तू तो अभी रानी थी, कैसे हो गई !" तब उस कुतिया रानी ने का फेर बतलाकर कहा कि मैं पहले कुतिया और साधु की कुटिया के पास जाया करती थी। ाजी दया कर मुझे रोज़ खाने-पीने को दे करते थे। मैं उनके पास हिल गई। उन्होंने बल से मुझे कुतिया से लड़की बनाकर रख लिया कहा कि तू दिन को लड़की और रात को या बन जाया करेगी।

सब हाल सुनकर राजा चकित हो गया। फिर राज़ होकर उस कुतिया रानी को लेकर साधु के पास गया और कहने लगा—महात्माजी, आपने मुझे यह बात पहले ही क्यों नहीं बतला दी ?

साधु—राजन् ! मैंने आप से शादी कर लेने का हठ नहीं किया था। आपने ही तो ख़ुशी से शादी की थी।

राजा अपने भाग्य को धिक्कारता चला गया। इधर साधु ने कुतिया रानी से कहा—तूने कुतिया का जन्म लिया था। मैंने तुझे लड़की बनाकर रक्खा, पर तेरा ऐसा भाग्य कि राजा की रानी बनकर भी तू वहाँ कुतिया बन जाती थी ! तू सचमुच कुतिया है।

नदी-किनारे

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभानु सिंह

जागो ललन हमारे, नौका लगी किनारे।
अब हो गया सवेरा, रहा न कहीं अँधेरा ॥
कलकल ध्वनि करती है, गाती मन हरती है।
नदी निराली गति ले, उथल-पुथलकर तट से ॥
चलो उतरकर बैठें, दृश्य सिन्धु में पैठें।
रवि का नृत्य मनोरम, जल पर देखें अनुपम ॥
वायु बह रही धीरे, प्रकटाती है हीरे।
नील नीर के निर्मल, चमक दिखाते प्रति पल ॥
बतक डुबकी लेकर, तैर रहे हैं छवि धर।
नदी पार जाने की, दें विधि यश पाने की ॥
लोग स्नान हैं करते, जल पूजा के हित भरते।
खड़े सूर्य आवाहन, करते कोई मन-मन ॥
घड़ी बजी मन्दिर में, चन्दन देकर सिर में।
भक्त हाथ हैं जोड़े, सारी चिन्ता छोड़े ॥
उठो, आरती-वारी, बीते नहीं हमारी।
दुनिया जाग गई है, छिटकी छटा नई है ॥

खटमल

लेखक, श्रीयुत बदरी 'दास'

मेरी नन्हीं-सी खटिया में हैं नन्हें-नन्हें खटमल।
मलमल के शौकीन बहुत हैं, होते दूर देख कम्बल ॥
भाई, पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ज्योंही झपकी ले पाते ;
हमें काटकर शीघ्र कहीं ये चुपके चम्पत हो जाते ॥
कुछ दुख तो अवश्य देते पर करते बहुत भलाई ये।
पढ़ते समय हमें सोने से करते सदा मनाही ये ॥
दुख सहने की शक्ति हमारे अन्दर ये पैदा करते।
दुख देनेवाले पर भी कुछ कुपित नहीं होने कहते ॥
यही नहीं, जब शाला जाते, ये कपड़े में रहते हैं।
सदा हमारे सङ्गी बनकर लेकिन दुख ही सहते हैं ॥
दीवारों पर, दरवाज़ों पर, हम उनके पीछे रहते।
हाय ! पकड़कर साथी को भी चुटकी-तले मसल देते ॥
ये छोटे हैं इससे क्या, पर हैं तो ईश्वर के प्राणी।
हम-जैसा ही सब कुछ है, पर हम-जैसी न इन्हें वाणी ॥
उनका दोष समझकर हम तो उन्हें शीघ्र ही देते मार।
पर वे दोषी आप नहीं क्या जिन्हें सफ़ाई का न विचार ?
अगर सफ़ाई से हम रहते क्यों शरीर पर वे चढ़ते !
इन्हें मारकर, हिंसा कर क्यों अपने सिर कलङ्क मढ़ते ॥

बिल्ली

लेखक, श्रीयुत देवेन्द्रमोहन माथुर

देखो वह आती है बिल्ली ।
बच्चो, वह है बड़ी चिबिल्ली ॥
जब वह मेरे घर है आती ।
तुरत पकड़ चूहों को खाती ॥
जो भी चूहा आगे आता ।
सीधा उसके मुँह में जाता ॥
उसके दो हैं प्यारे बच्चे ।
जो हैं लगते सबको अच्छे ॥
वह बिल्ली है सबकी प्यारी ।
सब बच्चों की प्रेम दुलारी ॥

——

बे-आवाज़ हवाई जहाज़

लेखक, श्रीयुत विश्वेश्वरप्रसाद

मुन्नी ! आज हुआ इतवार ।
खेलेंगे माधो के बार ॥
छोटा-सा एक काग़ज़ लाओ ।
उड़ता हवा जहाज़ बनाओ ॥
कोने-कोने इसके मोड़ो ।
काट फाँट दोनों को जोड़ो ॥
फिर दो-बारा मोड़ो रील ।
पङ्ख बनाओ जैसे चील ॥
एक लगाकर लम्बी पूँछ ।
तनिक मरोड़ो इसकी मूँछ ॥
यह लो उड़ा, हुआ तैयार ।
जाता चीर हवा को पार ॥

——

मेरा मित्र

लेखक, श्रीयुत धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया

मेरा मित्र बड़ा शैतान, हरदम रखता तीर
दिनभर फिरना उसका काम, पढ़ने का न कभी
गया एक दिन नदी-किनारे, बैठे थे मेंढक
चढ़ा धनुष पर छोड़ा तीर, मेंढक का छिद गया
ऐसा है यह मेरा मित्र, हैं इसके सब काम
सखे ! कभी मत बनना ऐसे, मेरे दुष्ट मित्र के

——

मेरा भैया

लेखिका, श्री ललिता नाथानी

मेरा भैया बड़ा निराला, उसको कहूँ बरेली
सूरत उसकी है ही हँसमुख, देख उसे पाती हूँ मैं
दिनभर है वह दङ्गा करता रोके जाने पर है
जब वह दिन में है सो जाता, मेरा मन न कहीं लग
है सारे घर का वह तारा, नाम विजय रक्खा है

——

'मुन्ना-श्यामा'

लेखक, श्रीयुत सत्यनारायण पटवारी

मुन्ना-श्यामा दोनों भाई, करते रहते रोज़
माँ उनको हरदम समझाती, पर न समझ में उनके
आपस की यह देख लड़ाई, करते रहते सभी
इसी लिए हे प्यारे भाई, हरगिज़ करना नहीं

——

तीर-कमान

लेखक, श्रीयुत श्रीकृष्ण बिलैया

देखो मेरा तीर-कमान, कैसा सुन्दर पड़ता
बड़े यत्न से इसे बनाया, पढ़ने का सब समय लग
इससे दुष्टों को मारूँगा, शान्ति न्याय मैं फैलाऊँ

प्रश्न-पहेली

आदि कटे मूली कहलाऊँ,
मध्य कटे तो माली।
अन्त कटे मामू बन जाऊँ,
है साधारण ताली ॥—(मामूली)

—आदर्शकुमार वर्मा

× × ×

चार चौकड़ी एक बाज़ार।
चौंसठ घोड़े एक सवार ॥—(रुपया)

× × ×

एक तमाशा हमने देखा,
चलते-चलते जो थक गया।
धड़ से काटा उसका सिर,
वह फिर चलने लग गया ॥—(क़लम)

—दुर्गादत्त मोदी

× × ×

चार अक्षरों का है नाम।
भक-भक करना मेरा काम ॥—(रेलगाड़ी)

—गोपालदास मोर 'पङ्कज'

× × ×

काली कुतिया गहरा पेट।
दफ्तर में लेती है लेट ॥
लोग मारते मुँह में भाले।
पर वह उनको करती काले ॥—(दावात)

—धुम्मनलाल सर्राफ़

× × ×

तीन अक्षर की अजब सवारी।
सुख है अधिक दाम भी भारी ॥
मिनटों में कोसों पहुँचाती।
कभी न थकती और थकाती ॥-(मोटर, जहाज़)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आती हूँ खाने के काम ॥
प्रथम कटे तो कड़ी कहाती।
मध्य कटे से वही कहाती ॥—(ककड़ी)

—कुँवर रघुवीरसिंह राठौर

× × ×

तीन अक्षरों का है नाम।
बतलाओ तो मिले इनाम ॥
अन्त कटे थोड़ा कहलाता।
आदि कटे मुर्दा बन जाता ॥—(कमरा)

—महावीरप्रसाद मोर

× × ×

चार नारियों का एक पति,
हरदम सँग में फिर भी जती।
मुझ बिन किसका चलता काम,
मुझे बतावे मिले इनाम ॥—(अँगूठा)

× × ×

चार अक्षरों का है नाम,
जिसको चाहे सकल जहान।
आदि कटे तो पथ बन जाता,
कटे दूसरा वैकुण्ठ कहाता।
अन्त काटकर करो शुमार,
क्या है इस पर करो विचार।—(सुमारग)

—अन्नाराम शर्मा

× × ×

छः पैसे का मैं हूँ पाजी,
रखता हूँ मैं सबको राजी।
दूर-दूर तक जाता हूँ मैं,
ख़बरें सभी सुनाता हूँ मैं।
बतलाओ तो क्या हूँ मैं ॥—(लिफ़ाफ़ा)

× × ×

एक पुरुष के हैं दो नारी,
दोनों हैं जीवों से प्यारी।
एक सुखी एक आली,
इस पहेली का अर्थ बताओ,
नहीं तो हम बाबू तुम माली।—(धोती)

—सीताराम कनो

× × ×

ख़ैर, ख़ून, खाँसी, ख़ुशी;
इन सबमें है मेरा धाम।
माखन चाखन राखन में भी,
सोचो समझो मेरा नाम ॥—(ख)

—विद्यार्थी बाबूराम शा

× × ×

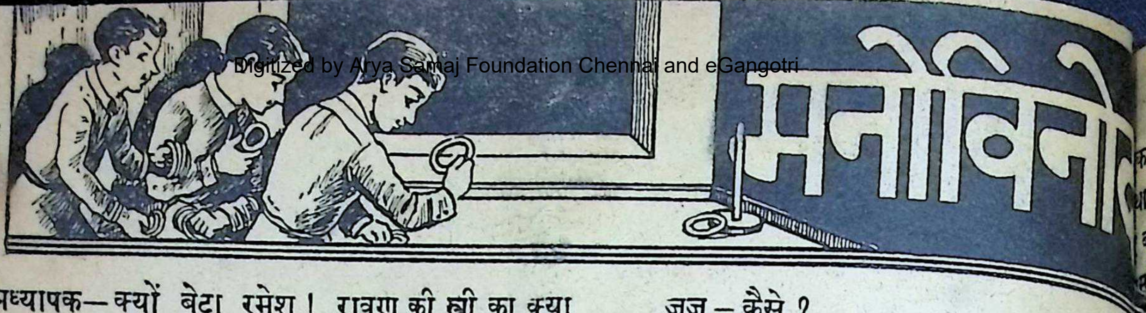

अध्यापक—क्यों बेटा रमेश ! रावण की स्त्री का क्या नाम था ?

रमेश—जी, एक मन दस सेर।

अध्यापक—पगले, औरतों के नाम भी कहीं वज़न में हुआ करते हैं !

रमेश—मन दो धरी (मन = १ मन, दो धरी = दस सेर)।

× × ×

बाप—(अपने पुत्र सुरेश से) बेटा, तुम शादी किससे रोगे ?

सुरेश—दादी से।

बाप—दादी से ?

सुरेश—हाँ, आपने भी तो मेरी माँ से शादी की है।

× × ×

मास्टर—(लड़के से) चिड़िया अण्डे पर क्यों बैठती है ?

लड़का—साहब, उसके पास मेज़ और कुर्सी नहीं है।

× × ×

एक काना आदमी सिनेमाघर गया। उसने हाथ में छः से लेकर बाबू से टिकट देने को कहा। बाबू ने छः पैसे कर कहा—अबे छः पैसे और ला।

काने ने कहा—साहब, मैं तो एक ही आँख से देखूँगा।

× × ×

मास्टर—(सुशील से) क्यों रे नालायक़ सुशील, तूने नया का नक़शा क्यों नहीं बनाया ?

सुशील—साहब, ज़रा दुनिया को स्थिर हो जाने दीजिए।

× × ×

एक सज्जन रेल में सफ़र कर रहे थे। आपको रेल में लगी तो पास में रक्खे हुए थैले में से मिठाई और पूरी लकर खाने लगे। इतने में स्टेशन आ जाने से एक मुसाफ़िर उसी डिब्बे में आ डटा। उक्त सज्जन को ई खाते देख उसके मुँह में लार भर आई। उसने —क्यों साहब, अकेले-अकेले मिठाई खा रहे हैं ?

सज्जन—जी नहीं, पूरी के साथ।

× × ×

जज—(मुलज़िम से) यह जाली नोट तूने बनाया था ?

मुलज़िम—जी हाँ।

जज—कैसे ?

मुलज़िम—क्यों ! क्या आपको भी हवा खा

—पुखराज ता

× × ×

लड़का—(पिता से) मैं स्कूल चला।

पिता—जल्दी मत जाओ। ११ बजने पर जा

(एक दिन घड़ी टूट गई)

पिता—तू स्कूल जाता क्यों नहीं ?

लड़का—पिताजी, ११ तो बजने दीजिए।

× × ×

जनसंख्या लेनेवाला—आपके यहाँ कितने प्राणी

मनुष्य—क्या मच्छरों को भी मिलाकर बताऊँ ?

× × ×

सुरेन्द्र—आप कौन-सी दातौन करते हैं ?

सोहन—(जो भूखा था) गन्ने की।

—विष्णुविहारी श्री

× × ×

सेठजी—क्या आज चिट्ठियाँ आई हैं ?

मुनीम—बहुत-सी।

सेठजी—कहाँ हैं ?

मुनीम—डाकख़ाने में। —राधेश्याम पलोड़

× × ×

वीरेन्द्र—तुम्हारा मकान कहाँ है ?

विमल—हमारा मकान पुरानी कचहरी के सामने

वीरेन्द्र—और पुरानी कचहरी कहाँ है ?

विमल—हमारे घर के सामने।

× × ×

दौलत—(मास्टर से) आज मैंने बहुत बड़ा शेर दे

मास्टर साहब—सचमुच ?

दौलत—सचमुच नहीं मास्टर साहब, अजायब

× × ×

मास्टर साहब—मोहन, ४ आने तोले के हिसाब तोले भङ्ग के क्या दाम होंगे ?

मोहन—मास्टर साहब, माफ़ कीजिए। मुझे ने नशीली चीज़ें लेने को मना कर दिया है।

—पुष्पाकुमारी

× ×

क दिन दो बढ़ई एक लकड़ी चीर रहे थे। उनमें एक था और एक बड़ा। इतने में एक सनकी आदमी ने बड़े बढ़ई के एक तमाचा जमा दिया।

सने पूछा—यह क्यों ?

नकी ने उत्तर दिया – यह छोटा लड़का अपने औज़ार पनी ओर खींचता है और तुम उसे छीनते हो। इसे दो नहीं तो और मारूँगा। —साँवरमल धूत, विद्यार्थी

× × ×

क वकील के घर में रात को चोर घुसे। ढूँढ़ने पर भी कोई चीज चुराने लायक़ नहीं जान पड़ी। इतने में जाग गये। चोरों को भाग जाना पड़ा। सबेरे मित्रों कील साहब से हाल पूछा तो उन्होंने कहा—हमारी बदनामी हुई। चोर ख़ाली हाथ लौट गये। वे होंगे कि इतना बड़ा आदमी और घर में ख़ाक भी नहीं।

× × ×

क क़ाज़ी साहब को सपने में शैतान दिखाई दिया तो उसकी दाढ़ी पकड़कर ज़ोर से एक तमाचा मारा। आँख खुली तो देखा हाथ में अपनी ही दाढ़ी है। शर्मिन्दगी हुई।

—वेदप्रकाश

× × ×

शङ्कर जब परीक्षास्थान से बाहर निकला तो पिता ने —'बेटा, सब प्रश्नों का उत्तर दिया है?' शङ्कर ने —'जी हाँ, सभी प्रश्नों की ठीक-ठीक नक़ल कर दी है।'

× × ×

ोगेन्द्र—पिताजी, आप ईश्वर का भजन क्यों करते हैं ?

पिता—भजन करने से ईश्वर प्रसन्न होता है।

सुनकर योगेन्द्र रोने लगा। कारण पूछने पर उसने —जब आप पर ईश्वर ख़ुश रहेगा तब आप मरने के और मैं भी घर का मालिक होने से रहा।

× × ×

किसी पाठशाला में एक लड़का गुरुजी के लिए खीरा ा। गुरुजी नमक लेकर खाने बैठे। काटकर खाते ही ला उठे—'ज़हर है।' लड़ने कहा - कल चार आने के ह खीरे लाया था। कड़वे निकले तो माँ ने कहा रुजी को दे आना; यहाँ कौन खायगा ?

—नरेन्द्रपाल सिंह

× × ×

—बाबूजी, आप इतने मोटे क्यों हैं ?

—मैं ग़म खाता हूँ।

—तो मुझे रोटियाँ क्यों खिलाते हैं ? मुझे भी ग़म ।

× × ×

पत्नी – (पति से हँसी करते हुए) मेरे पास एक अनोखी वस्तु है।

पति—कौन सी ?

पत्नी—साड़ी, जिसमें बेल नहीं।

पति—मेरे पास इससे भी बढ़िया चीज़ है।

पत्नी—कौन सी ?

पति—जेब है, मगर उसमें रुपया-पैसा नहीं।

× × ×

चित्रकार--आप इस चित्र को कितने में लेंगे ?

गाहक—दो रुपये में।

चित्रकार—पाँच रुपये का तो इसमें कपड़ा लग गया है जिस पर चित्र बना है।

गाहक—हो सकता है। पर अब तो कपड़ा बेकाम हो गया। उसके पाँच रुपये नहीं दिये जा सकते।

—सत्यप्रकाश गोयल

× × ×

रामसुन्दर बीमार था। डाक्टर के कहने से रामसुन्दर की माँ बीमार के छुए बर्तनों को खौलते पानी से धो रही थी। इसी समय रामसुन्दर का भाई आया और पूछने लगा—अम्मा, बर्तनों को क्यों औटाती हो ?

माता—उबालने से भैया की बीमारी के वे कीड़े मर जायँगे जो इन बर्तनों में लग गये हैं।

लड़का—तो तुम भैया को क्यों नहीं औटातीं जिसमें वे चङ्गे हो जायँ ?

—दुर्गादत्त मोदी

× × ×

सेठजी—क्या आप शिकार को जाते हैं ?

शिकारी—जी हाँ। क्या आप भी चलते हैं ?

सेठजी—मैंने तो हज़ारों शिकार किये हैं।

शिकारी—एक-दो के क़िस्से तो सुनाइए।

सेठजी—वाह ! अभी चूहे का शिकार कर लेता, अगर वह बिल में न घुस जाता।

× × ×

मास्टर साहब—बच्चो ! कल पाठ को घोटकर लाना।

लड़के—बहुत अच्छा।

मास्टर साहब—(दूसरे दिन) क्या पाठ याद करके आये ?

लड़के—जी नहीं। आपने तो घोटने को कहा था घोटा हुआ रकाबी में पड़ा है।

—जवेरचन्द जैन, बाल

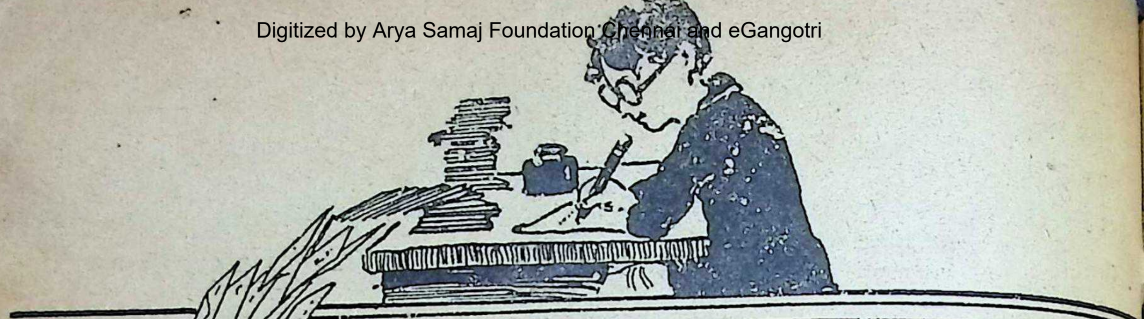

सम्पादक का पत्र

पाठक-पाठिकाओं, लेखकों तथा लेखिकाओं की कृपा 'बाल-सखा' पर सदा से रही है। वे अपनी रचनायें छपने के लिए बड़ी उत्सुकता से भेजते रहते हैं। कई लेखक-लेखिकाओं की रचनायें महीनों पहले आई थीं, किन्तु उनपर हमारी ओर से अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हो सकी है। इसका हमें बहुत खेद है। आशा है, 'बाल-सखा' के प्रेमी इस त्रुटि के लिए हमें क्षमा करेंगे और पूर्ववत् कृपा-भाव रक्खेंगे।

× × ×

बाल-सखा में स्थान थोड़ा है और रचनायें आती हैं अधिक। इस दशा में सभी रचनाओं को स्थान मिलना सम्भव नहीं। पर जो उच्च कोटि की रचनायें होती हैं वे देर से ही क्यों न हों, छापी ज़रूर जाती हैं। लेखकगण कृपा कर धैर्य रक्खें।

× × ×

एक-आध बार ऐसा हुआ है कि एक ही लेखक की दो रचनायें एक अङ्क में छापी गई हैं। इसके लिए उलहना आया है। इससे हमें प्रसन्नता हुई। बारीकी से पढ़नेवालों की कृपा के लिए धन्यवाद।

× × ×

बाल-सखा बालकों और बालिकाओं का अपना पत्र है। हमें प्रसन्नता है कि वे उसके लिए बहुत-सी सामग्री भेजते हैं और हम उसका उपयोग अधिक से अधिक करने की कोशिश करते हैं। कैसा अच्छा हो कि हमारा बाल-लेखक-वृन्द अच्छी से अच्छी सामग्री भेजने का प्रयत्न करे जिससे उसकी यह शिकायत कम हो जाय कि हम लोगों के पत्र में बड़े-बूढ़ों की रचनायें अधिक छपती हैं। बड़े-बूढ़े बाल-सखाओं के उपकार के लिए ही रचनायें भेजते हैं और बाल-सखाओं का सम्पर्क प्रत्येक दशा में प्रौढ़ों से रहता ही है।

× × ×

'नहीं छपेंगी' शीर्षक की सूचना पढ़ने से लेखक-समुदाय को पता लग जाता था कि किस-किसकी रचना प्रकाशित न हो सकेगी। किन्तु इस शीर्षक में नाम छपने से कुछ लोग अपना अपमान समझते और ख़ास तौर पर इसके लिए रोक लगा देते थे। आशा है, सम्पादक की कठिनाई का लेखक-बन्धु करेंगे।

× × ×

'वीरपुत्र दल अजमेर' के निश्चयानुसार अखि तीय वीरपुत्र सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन अ कराया जावेगा। अतः प्रत्येक उन्नतिप्रिय छात्र अजमेर में 'वीरपुत्र' के रूप में आने की तैयारियाँ कर देनी चाहिए। उन्हें अपने नगर में 'वीरपुत्र स्थापना करनी चाहिए। छपे हुए सदस्य-प्रतिज्ञा- नियम उल्लिखित दल से शीघ्र मँगवा लीजिए। उत्सव छुट्टियों में १५ से २० मई के आस-पास होगा। उत्साही छात्र-बन्धु सप्रेम सादर निमन्त्रित है। धर्म का कोई बन्धन नहीं।

× × ×

धौलपुर से श्री मधुसूदन शुक्ल लिखते हैं–मैंने पूछ कि सपने क्यों और कैसे दिखाई देते हैं। सपने देखने कारण है चिन्ता होना और गहरी नींद न आना। यदि उपाय किया जाय कि रात को गहरी नींद न आने फिर किसी बात की चिन्ता करके सो जाय तो ज़रू दीखते हैं। गहरी नींद न आने के कारण हैं—(१) खूब सो लेना, (२) उपवास करना अथवा बहुत कम करना, (३) मल-मूत्र के वेग को रोककर सोना, (४) बीमारी के कारण कमज़ोरी अधिक बढ़ जाना, (५) के कारण कमज़ोर हो जाना।

मल-मूत्र के वेग को रोककर स्वप्न देखने का यत्न नहीं। इससे भयङ्कर स्वप्न दीखते हैं और स्वास्थ्य का डर रहता है। बीमारी तो सबसे ख़राब है। पहले अच्छे हैं इसलिए जिस दिन स्वप्न देखने की इच्छा दिन या तो उपवास रक्खा जाय अथवा बहुत कम किया जाय। दिन में काफ़ी सो ले और फिर जैसा स्वप्न देखना चाहे वैसी किताब बिस्तर पर ले तक पढ़ता रहे, ज़बर्दस्ती पढ़ता रहे जब तक आँखें हो जायँ।

पढ़ने-पढ़ाने से उनका ज्ञान बढ़ता है
उपन्यास
गल्प
कविता
धर्म
इतिहास
रोमान्स
जीवनचरित
विज्ञान
प्राचीनसाहित्य
राजनीति
सरस्वती सिरीज
इण्डियन प्रेस
प्रयाग
मूल्य ॥≈)

इस अनोखी सरस्वती-सिरीज में विविध विषयों पर नई-नई पुस्तकें निकलती रहती हैं। आप इन्हें खरीद कर कुछ ही दिनों में एक अच्छा-सा पारिवारिक पुस्तकालय बहुत कम लागत से तैयार कर सकते हैं। यह पुस्तकालय आपके तथा आपके परिवार के लिए महान उपयोगी होगा।

सभी पुस्तक-विक्रेताओं तथा ह्वीलर के कुछ स्टाल पर पुस्तकें मिल सकेंगी। विवरण के लिए हमारा सूचीपत्र मुफ्त मँगायें।

वस्त्र नं० १

चम्बा रूमाल

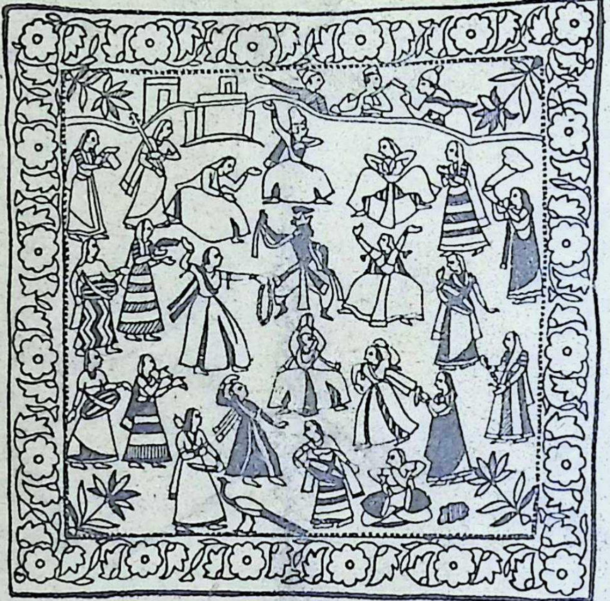

वस्त्र नं० १

चम्बा रूमाल

(अ) चम्बा रूमाल सूत के बने हुए हैं। इनमें रामायण, भारत या पुराणों की कथाओं को चित्रित करनेवाला कसीदा उपर्युक्त चित्र में कृष्ण नाचती हुई गोपियों से घिरे दिखलाये है।

हाथ की कती और बुनी खादी पर पहले रूपरेखा बनाकर ी सारी लम्बाई-चौड़ाई में धागा डाला जाता है। ऊपर-नीचे रूपरेखा इसी प्रकार कई रङ्गीन धागों से भरी जाती है। उसके दोनों किनारों में समानता आ जाती है।

ये रूमाल सदियों प्राचीन हैं तथा 'पहाड़ी स्कूल' के नाम से त उस भारतीय चित्रकला से साम्य रखते हैं जो उत्तरी में हिमालय के तटवर्ती चम्बा, कांगड़ा, बशोली तथा जम्मू में प्रचलित थी।

(ब) ऐसे कपड़े मूल्यवान् होते हैं। अतः सर्वकार्य साबुन ५०१ स्पेशल से इनकी रक्षा कीजिए।

(स) इस कूपन को पोस्ट आफ़िस बाक्स नं० ६३ नं० १ के पते से भेजिए। हम आपको 'टाम्को स्को भेजेंगे, जिसमें आप इनका क्रम एकत्र कर सकेंगे।

५०१

A TATA PRODUCT

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

युद्ध में कठिनाई के समय काम आनेवाली नाव

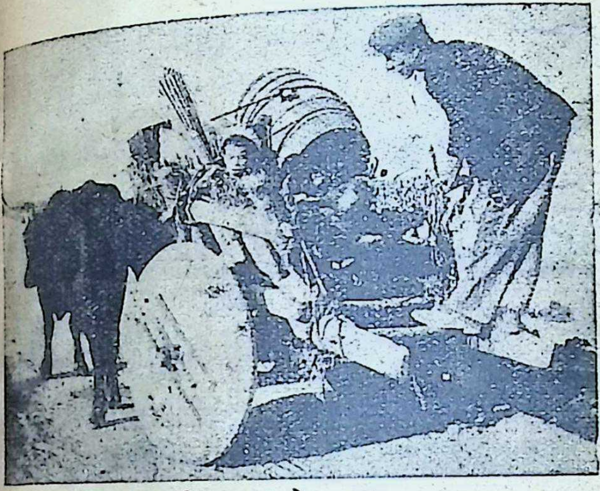

सार्डीनिया की बैलगाड़ी

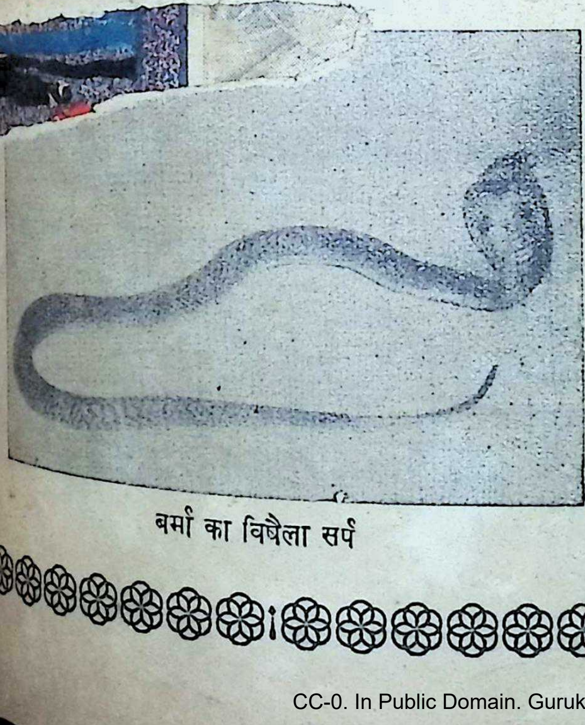

बर्मा का विषैला सर्प

बर्मा के जङ्गली जीव

बन्दर पेड़ों पर खेल कर रहे हैं

निश्चय उसने
लाइफबॉय की
आदत सीखी है!
LIFEBUOY
SOAP
LIFEBUOY SOAP
लाइफबॉय का व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

वह स्कूल जा रहा है। वहाँ से वह अपने साथ क्या लाएगा? नया ज्ञान, नये तरीके—और शायद किसी रोग के कीटाणु भी! माँ अपने छोटे बच्चे को सुरक्षित रहने की शिक्षा देकर बाहर भेजती है—सब से अच्छी शिक्षा लाइफ़बॉय साबुन का दैनिक इस्तेमाल है—जो गंदगी के उस शत्रु से रक्षा करता है जो स्वस्थ से स्वस्थ बच्चे को भी रोग लगा सकता है।

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

बालसखा

दिसम्बर १९४३

वार्षिक मूल्य २॥)

एक प्रति का ≡)

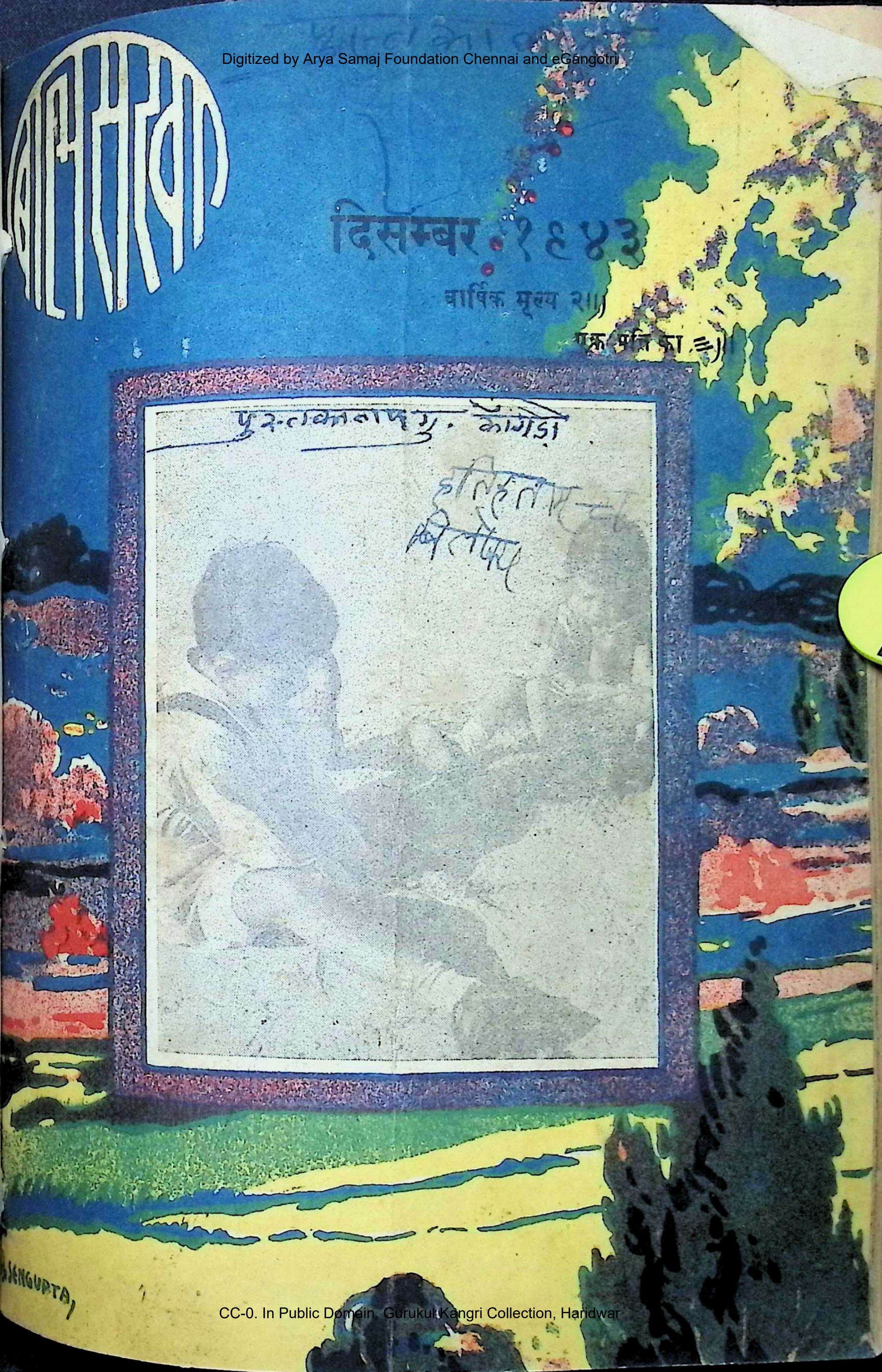

पुस्तकालय गु. कांगड़ी

[illegible]

विषय-सूची

कहानी

१—चार मित्र—श्रीयुत 'विभूति' ३२२
२—सुनहले बौने—श्रीयुत राजकुमार सिनहा ... ३२७
३—अद्भुत सेब—श्रीयुत बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश' ३२९
४—तैरने की कोशिश—श्रीयुत सत्यवीर ... ३३१
५—पुष्पा की चालाकी—श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव ३३४
६—भैंस की चराई—श्रीयुत प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव ३३५
७—सोने का कड़ा—कुमारी विद्यादेवी ... ३३७
८—सुनहली राजकुमारी—श्रीयुत 'शरद' ... ३३८
९—लालची लोमड़ी—श्रीयुत 'मलिन्द' ... ३४०
१०—भोले सेठजी—श्री मानवतीदेवी टीपड़ेवाला ... ३४१
११—विश्वामित्र ने राज्य क्यों छोड़ा—श्रीयुत मोहनलाल नेहरू ... ३४२
१२—महात्मा सियार—श्रीयुत सुबोध मिश्र 'सुरेश' ... ३४४
१३—शहनाई—श्रीयुत वसन्तकुमार अग्रवाल ... ३४५

कविता

१—शरद के बादल—श्रीयुत मनबोधनलाल ... ३२१
२—कहानी—श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए० ३२३
३—तारे—श्रीयुत देवीराम ...
४—जाड़ा—श्रीयुत कान्तिचन्द्र ... ...
५—ओस—श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म' ...
६—जाड़े की शाम—श्रीयुत अशोक ...
७—जाड़े की धूप—कुमारी प्रमीला ... ...

लेख

१—चमगादड़—श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी, बी० ए, विशा
२—भारत के बौद्ध तीर्थ—श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य

फुटकर

१—बच्चों का कमरा—
    फूल—कुमारी मोहिनीबाला श्रीवास्तव ...
    मेरी माँ—श्रीयुत वेदव्रत शर्मा 'विभु' ...
    काली बिल्ली—श्रीयुत श्यामनारायण कपूर
    मेरा भैया—कुमारी राजकिशोरी देवी त्रिपाठी
२—कुछ इधर-उधर की ... ...
३—मनो-विनोद ... ...
४—प्रश्न-पहेली ... ...
५—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरे-बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट
और चुस्त बनते हैं।

बनारस के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

संशोधित आज्ञा

बनारस के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने जनता की सू
के लिए ता० २०-९-४३ को निम्न आज्ञा जारी की

आज्ञापत्र

१७ जनवरी, १९४२ की विज्ञप्ति नं० २८
एक्ट द्वारा भारतरक्षा क़ानून की धारा ५९ ए के
सार प्राप्त अधिकारियों के आधार पर मैं, बनारस
डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, प्रस्तुत आज्ञापत्र द्वारा अपने
आज्ञापत्रों में, जो गत २२ अक्टूबर, १९४२ को
किये गये थे, कुछ संशोधन कर रहा हूँ। वह संशोधन
प्रकार है—मेरे पूर्ववर्ती आज्ञापत्र की उपधारा (
तारीख़ २२-१०-४२ के अनुसार अब यह अनि
नहीं है कि रेलवे लाइनों से एक मील के भीतर
हुए गाँवों में से प्रत्येक के निवासी रेलवे लाइन
पहरेदारों को सहायता देने के लिए प्रत्येक रात
चार-चार आदमी दें।

उक्त तारीख़ को जारी किये गये शेष आज्ञा
पूर्ववत् रहेंगे।

(ह०) ए० डी० पन्त

बालसखा

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

दिसम्बर १९४३—पौष २००० [संख्या १२

शरद् के बादल

लेखक, श्रीयुत मनबोधनलाल

श्याम बादल आ रहे हैं ;
नील नभ पर छा रहे हैं।
ऋतु में कौन इनकी चाह करता है भला अब ?
इनके दान की परवाह करता है भला अब ?
मलिन-मुख ये शरद् के घन
कब किसी को भा रहे हैं ?
कँपाती, जी दुखाती, चल रही है वायु शीतल ;
पाँव ठिठुर रहे हैं, काँपता है जगत ही-तल।
दीन जन को कष्टदायी
मेघ शीत बढ़ा रहे हैं।

दिन सिकुड़ता जा रहा है, हो रहा है शीत दिनकर;
धूप ज्योत्स्ना बन रही है, छिपे बैठे लोग घर-घर
रवि-करों पर डाल परदा
जलद और सता रहे हैं।
घेरकर नभ बादलों ने, दिवस ही में रात ला दी ;
और रिम-झिम जल बरसकर, वायु की सर्दी बढ़ा दी।
कभी ओले पड़पड़ाते,
वायुझोंके आ रहे हैं।
मेघ भी इस शीत ऋतु में, मन्द गति से चल रहे हैं
कभी जमकर उपल बनकर, गिर रहे हैं, गल रहे हैं।
कहाँ पावस की उमंगें
अश्रु अब बरसा रहे हैं।

हँसानेवाली एक सुन्दर कहानी

चार मित्र

लेखक, श्रीयुत 'विभूति'

गर्मी की छुट्टियाँ समाप्त हो गई थीं। सुरेश, चन्दन, शङ्कर और अजीत शहर जाने के लिए स्टेशन पर पहुँचे। चारों मित्र स्कूल के बारे में बातें कर रहे थे। स्कूल में लड़के उन्हें चण्डाल-चौकड़ी के नाम से पुकारते हैं। कारण यह है कि वे सदैव दूसरों को छकाने के लिए कोई न कोई तरकीब सोचा करते हैं। परन्तु पढ़ने-लिखने में वे बड़े तेज़ हैं और अपना काम हमेशा ठीक समय पर करते हैं। इसलिए स्कूल के सभी अध्यापक उन्हें बहुत मानते हैं।

गाड़ी लेट थी इसलिए वे प्लेटफ़ार्म पर टहल रहे थे। सहसा चन्दन ने कहा—भाई, आज तो स्टेशन पर बहुत-से नये लड़के दिखाई पड़ रहे हैं। ये सब हमारे स्कूल में भर्ती होने के लिए जा रहे हैं। कोई ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए कि कुछ मज़ा आये।

सुरेश ने कहा—यह समय ठीक नहीं है। किसी से अपनी जान-पहचान भी नहीं है।

'तो इससे क्या होता है ? हम ऐसी तरकीब सोचें कि वे अपने आप बेवक़ूफ़ बनें।' चन्दन ने कहा।

तरकीब सोची जाने लगी। देर भी नहीं हुई। शङ्कर के पास एक खोटा रुपया था। उसके सिरे पर एक छोटा-सा छेद था। शङ्कर ने उसमें एक डोरा बाँध दिया। अपने कुर्ते की जेब में छेद करके रुपये को जेब से नीचे गिरा दिया।

यह सब करके वे चारों मित्र प्लेटफ़ार्म पर एक ऐसी जगह आकर खड़े हो गये जहाँ अधिक लोग आ-जा रहे थे। रुपया शङ्कर ने ज़मीन पर गिरा दिया और डोर का सिरा जेब के भीतर और शिकार का इन्तज़ार होने लगा।

बड़ी देर तक किसी ने ध्यान नहीं फिर एक साहब दिखाई पड़े। शायद कालेज में भरती होने जा रहे थे। टहल रहे थे। एक लावारिस रुपये को पड़े देखा तो उसे ले लेने की इच्छा हो

चारों मित्रों के पास आकर वे खड़े और बड़ी नम्रता से पूछा—गाड़ी आज है क्या ?

चारों मित्र शिकार फँसता हुआ सम पर अनजान बने हुए उत्तर दिया—जी हाँ, आध घण्टा लेट है।

उन महाशय ने रुमाल निकाली पर का पसीना पोंछने के बहाने उसे बड़ी से रुपये पर गिरा दिया। झटपट वे रुमा के लिए झुके।

झटपट डोर खिंची और रुपया जेब में पहुँच गया। उन महाशय ने सावधानी से उठाया पर रुपये का पता रुमाल हाथ में लिये वे आश्चर्य से जहाँ था उस स्थान को देख रहे थे। यह काम का हो नहीं सकता। अभी-अभी उन्होंने देखा था और अभी ही वह ग़ायब !

बेचारे भयभीत-से, सकपकाये-से आगे तो चारों मित्र जी खोलकर हँसे।

रुपया फिर ज़मीन पर पड़ा हँ शङ्कर की उँगलियाँ जेब के भीतर पर थोड़ी देर तक फिर कोई फँसा। इतने में ही एक दस-बार

। उसने रुपये को देखा। क्षण भर खड़ा रह-
ह रुपये को देखता रहा; फिर चारों मित्रों की
काकर ज्योंही उसने रुपये को उठाना चाहा
र ने डोर खींच ली।

चारों मित्र हँस पड़े। लड़का मुँह बनाता हुआ
गया।

रुपया फिर प्लेटफ़ार्म पर आ डटा। इस बार डोर
रही थी। किसी बड़े शिकार की बाट वे जोह
। तभी उन्हें दिखाई पड़ा सतीश। सतीश चारों
के स्कूल में ही पढ़ता है पर बड़ा घमण्डी है।
त्रों ने उसे कई बार बेवक़ूफ़ बनाया था इस-
ह इनसे कभी नहीं बोलता।

किन्तु आज वह उनकी ओर मुस्कराता हुआ
और नमस्कार करके कहा—कहो भाई, गर्मी
की छुट्टियाँ कैसे कटीं?

'बहुत मज़े में। अपनी कहो।' चन्दन ने
पर मन में चारों मित्र हँस रहे थे।

'मेरी भी ऐसी ही कटीं; कहीं जा तो सका नहीं।' सतीश ने उत्तर दिया और फिर जैसे उसे कुछ ध्यान आ गया। उसने कोट की जेब में हाथ डालकर कहा—"ओह! जेब के इस छेद से मैं परेशान हो गया। अभी न देखता तो—"

कहकर वह रुपया उठाने के लिए झुका। शङ्कर ने डोर खींची। रुपया सतीश की उँगलियों के ज़मीन पर पहुँचते-पहुँचते जेब में पहुँच गया।

सतीश का मुँह लाल हो गया। पता नहीं ग़ुस्से से या लज्जा से। वह बड़बड़ाता हुआ एक ओर को चल दिया।

चारों मित्र बड़े ज़ोर से हँस पड़े। सतीश उनके हँसने की आवाज़ सुनकर बार-बार उनकी ओर देखता जा रहा था, जैसे कह रहा हो कि मैं कभी तुमसे इसका बदला ज़रूर ले लूँगा।

किसी नये शिकार के लिए जाल फेंका जानेवाला ही था कि ट्रेन आती दिखाई पड़ी। चारों मित्र अपने सामान के पास पहुँच गये।

कहानी

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०, वर्धा

मुझे सुना दे वही कहानी।
में माँ थी, दो बालक थे,
और न थे राजा-रानी।
क्यों माँ! कहती थी जो नाना॥
माँ वन में रहती थी,
ीं, क्यों दुख सहती थी,
कुश ही क्या नाम न थे माँ
वे बालक थे मानी।
न थे किन्तु अभिमानी॥

कौन वहाँ था सेना लाया,
बड़े दर्प से था चढ़ आया,
किन्तु बालकों के सम्मुख थी
धूल उन्होंने छानी।
क्यों माँ! सबने ही थी जानी॥
यदि वैसा ही अवसर पाऊँ,
मैं भी कुछ करके दिखलाऊँ,
स्वाभिमान हित मर मिटने में
लाभ बहुत, कुछ हानी।
क्यों माँ! सत्य न क्या यह बानी॥
मुझे सुना दे वही कहानी॥

चमगादड़

लेखक, श्रीयुत देवदत्त द्विवेदी, बी० ए०, विशारद

आप लोगों में से बहुतों ने चमगादड़ ज़रूर देखा होगा। वह अक्सर शाम होने पर, जब कि उल्लू को छोड़कर सब चिड़ियाँ बसेरा ले लेती हैं, हवा में थोड़ी-सी ऊँचाई पर उड़ा करता है। दूर से उसकी शक्ल काली-काली दिखाई देगी। उसे 'चमगादड़' कहते हैं। उसकी अजीब कहानी है। शायद आप यह सोचें कि वह अपने खाने की चीज़ें दिन में ही ढूँढ़ लेता होगा। लेकिन यह बात नहीं है। उसकी आँखें इस तरह बनी होती हैं कि वे सूरज की रोशनी में देखने का काम बिल्कुल ही नहीं कर सकतीं। वे सिर्फ़ रात में ही, चाहे अँधेरी हो या उजाली, देख सकती हैं। यही वजह है कि चमगादड़ रात भर जागा करता है और दिन में, जब कि चारों ओर शोल-ग़ुल मचा रहता है, सोने के सिवा और कुछ भी काम नहीं करता। वह हवा में बिना किसी काम के नहीं उड़ता। बल्कि किसी ख़ास वजह से ही इधर से उधर गश्त लगाया करता है। बात यह है कि हवा में हमेशा, चाहे दिन हो या रात, कुछ न कुछ कीड़े मकोड़े उड़ा ही करते हैं। हम लोग उन्हें रात में आसानी से नहीं देख सकते। लेकिन चमगादड़ की तेज़ आँखें उन्हें देख लेती हैं और वह उन्हें खा जाता है। अब आप समझ सकते हैं कि चमगादड़, ज़हरीले और नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ों को खाकर, हमें तरह-तरह की बीमारियों से बचा लेता है। ज़िन्दा रहने पर वे कीड़े आदमियों, जानवरों और फ़सलों में कई किस्म की बीमारियाँ फैलाते हैं।

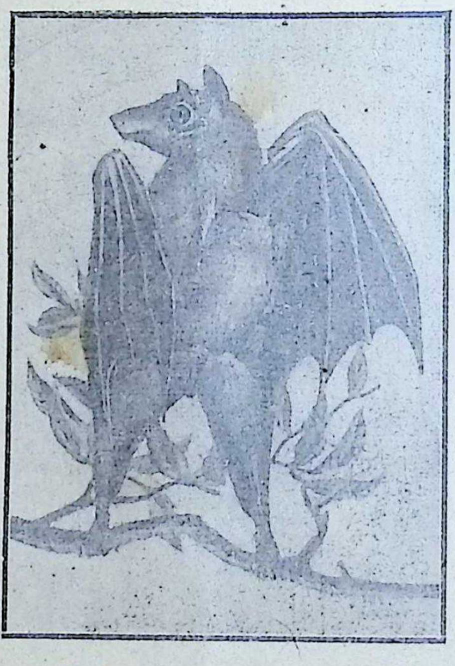

चमगादड़

हमं ऊपर बता चुके हैं कि चमगाद उड़ता है। इससे आप कहीं यह न मान लें कि एक तरह का परिन्द या चिड़िया है। क्यों गादड़ चिड़िया नहीं है। देखिए, चिड़िया है। अण्डों के फूटने पर छोटे-छोटे बच्चे नि ये बच्चे माँ का दूध नहीं पीते; क्योंकि चि नहीं देती। वह अपनी चोंच में छोटे- मकोड़े लाकर बच्चों की चोंच में रख देती वे खा लेते हैं। यही उनकी ख़ुराक होती

हम चमगादड़ को चिड़ि तो हमें यह मान लेन कि वह भी चिड़ियों कीड़ों-मकोड़ों से ही अ का पेट भरता होगा। यह बात नहीं है। बच्चों को अपना दूध है। आपने देखा हो कुतियों, गाय, घोड़ी, बकरी, भैंस अपने अपना दूध पिलाकर ही है। उसी तरह मादा भी अपने बच्चों को दूध पिलाती है। हमें यक़ीन है कि आ जानकर अब कभी ग़लती से यह न कि चमगादड़ भी परिन्द या चिड़िया है होते हुए भी वह चिड़िया नहीं है।

इस अजीब जानवर के बदन की से देखने पर हमें कितनी ही दिलचस्प दार बातें मालूम होंगी। पहले मुँह को हम देखेंगे कि उसका नन्हा-सा मुँह मिलता-जुलता है। उसके कान छो ख़ूबसूरत होते हैं। उसकी छोटी

पुस्तकालय

चमकीली होती हैं। उसके नन्हे-नन्हे सफ़ेद दाँत
नुकीले और चमकदार होते हैं। वे दाँत उसे
चीज़ें कुतरने या जानवरों के बदन में सूराख़
पूरी मदद पहुँचाते हैं। तादाद में वह उतनी
उँगलियाँ रखता है जितनी हम लोग। लेकिन फिर
उँगलियाँ हम लोगों की उँगलियों की तरह
होतीं। दिन में वह अपना पूरा धड़ नीचे
करके उँगलियों से डाल वग़ैरह
रहता है। उसे अपनी उँगलि
में मदद मिलती है; क्योंकि
सीधा न होकर कोट की
होता है। यही वजह है कि
रख देता है, अच्छी तरह चि
अब हम चमगादड़ के पङ्
छतरी से बिल्कुल मिलते
छतरी लोहे की पतली कड़ि
और उन्हें दबाव लगाकर खो
जाती है ठीक उसी तरह
होता है। वह बहुत ही मु
और उसके नीचे कितन
चमगादड़ के उड़ने पर वह अ
और फैलने पर ही उस प
दिखाई पड़ती है। सिकोड़ लेने
से लेकर पैर तक रहत
चौड़े पङ्खे को देखकर कहीं
पङ्खे सँकरी जगहों या पेड़
उलझ जाते होंगे।
होती। हम ऊपर बता
अँधेरी रात में भी
है। इसके अला
जाती है।
आसानी से
पानी से

इस बात की
की जा चुक

एक जाने के बाद लता वहाँ से उठी और गुफा पर गई। उसने पत्थर उठाने की कोशिश की पर वह पत्थर बहुत ही भारी था इसलिए वह उसे वहाँ से न हटा सकी। एकाएक उसकी दृष्टि एक सुनहले लैम्प पर पड़ी। शायद कोई बौना जल्दी में उसे यहाँ गिरा गया होगा। लता ने लैम्प को उठा लिया और उसे अपनी माँ को दिखाने का विचार किया, परन्तु उसी समय उसे बौने की याद आई कि वह बेचारा अपना लैम्प न पाकर बहुत दुखी होगा। इस विचार से वह घर जाने से रुक गई और बौने के लौटने की राह देखने लगी। पर उसे ज़्यादा देर तक राह नहीं देखनी पड़ी, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही उसे एक बौना दिखाई पड़ा। वह पृथ्वी पर इस तरह देख रहा था मानो कुछ ढूँढ़ रहा हो।

"महाशय, मैं समझती हूँ कि जो आप ढूँढ़ रहे हैं वह चीज़ मैंने पाई है।" लता ने धीरे से कहा और लैम्प को दिखाया।

लैम्प को देखते ही बौना बहुत प्रसन्न हुआ और कहा—"धन्यवाद, धन्यवाद। इसके बिना मैं रानी के पास नहीं जा सकता था। हर एक बौने को लैम्प लाना चाहिए नहीं तो दरबान रोक लेगा।" और उसने लता के हाथ से लैम्प ले लिया।

क्षण भर बाद बौने ने कहा—"जाओ, तुम्हारी सबसे प्यारी इच्छा कुछ घण्टों के भीतर पूरी हो जायगी।" इतना कहकर वह जङ्गल की ओर भाग गया।

यह ख़ुशख़बरी अपनी माँ को सुनाने के लिए लता अपनी झोपड़ी की ओर चली। सब हाल सुनकर माँ बहुत ही प्रसन्न हुई और उसकी तबीयत भी बिलकुल ठीक हो गई। थोड़ी देर

मार पड़ गई।
पैसा न था।
हुई। वह इसी
पास दौड़ती हुई
बहुत पसन्द करती
टी में था, जिसमें
थी। पास ही एक
ह रहा था। लता
थी। वह वहाँ पर
ाय सोचने लगी।
गी और वह सो गई।
कि आवाज़ सुनकर
आँखें मल-मलकर
एक बौना एक गुफा
तक भूरे मख़मल की
ी पेटी उसकी कमर
सुनहला लैम्प लटक
चौकन्नी निगाह से
कर जङ्गल में घुस गया।
पाँच बौने उसी गुफा से
और भाग गये। जाते वक़्त
फा के द्वार पर एक बड़ा सा

ा चुके हैं कि
लेखक, है। इसलिए

आप लोगों में से बहुतों ने चमगादड़ ज़्यादा देखा होगा। वह अक्सर शाम होने पर, जब, जहाँ उल्लू को छोड़कर सब चिड़ियाँ बसेरा ले लेती हैं। हवा में थोड़ी-सी ऊँचाई पर उड़ा करता है। दूर से उसकी शक्ल काली-काली दिखाई देगी। उसे 'चमगादड़' कहते हैं। उसकी अजीब कहानी है। शायद आप यह सोचें कि वह अपने खाने की चीज़ें दिन में ही ढूँढ़ लेता होगा। लेकिन यह बात नहीं है। उसकी आँखें इस तरह बनी होती हैं कि वे सूरज की रोशनी में देखने का काम बिल्कुल ही नहीं कर सकतीं। वे सिर्फ़ रात में ही, चाहे अँधेरी हो या उजाली, देख सकती हैं। यही वजह है कि चमगादड़ रात भर जागा करता है और दिन में, जब कि चारों ओर शोल-ग़ुल मचा रहता है, सोने के सिवा और कुछ भी काम नहीं करता। वह हवा में बिना किसी काम के नहीं उड़ता। बल्कि किसी ख़ास वजह से ही इधर से उधर गश्त लगाया करता है। बात यह है कि हवा में हमेशा, चाहे दिन हो या रात, कुछ न कुछ कीड़े मकोड़े उड़ा ही करते हैं। हम लोग उन्हें रात में आसानी से नहीं देख सकते। लेकिन चमगादड़ की तेज़ आँखें उन्हें देख लेती हैं और वह उन्हें खा जाता है। अब आप समझ सकते हैं कि चमगादड़, ज़हरीले और नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ों को खाकर, हमें तरह-तरह की बीमारियों से बचा लेता है। ज़िन्दा रहने पर वे कीड़े आदमियों, जानवरों और फ़सलों में तरह-तरह की बीमारियाँ फैलाते हैं।

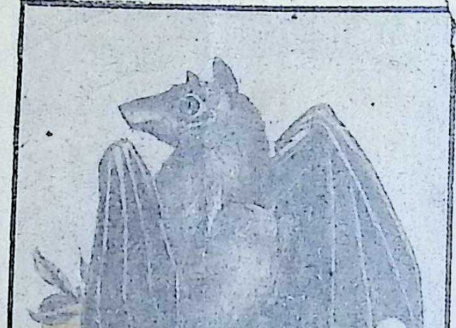

चमगादड़

लङ्का, हिन्दुस्तान, दक्षिणी अमेरिका और
में पाये जाते हैं। उनके बदन का रङ्ग
बहुत कुछ मिलता-जुलता है। चूँकि इस
जानवर फलों की फ़सल बरबाद करते
उनका रङ्ग लोमड़ी की तरह होता है इस
उड़ती हुई लोमड़ी या "फ़्लाइंग फ़ॉक्स"
हैं। चमगादड़ों से फलों की हिफ़ाज़त
ये बच्चे कहीं-कहीं उन्हें टोकरियों से
नहीं देती भर निगरानी रखते हैं।
मकोड़े लाक गादड़ों का गरोह कुछ न कुछ
वे खा लेते हैं या करता है। कुछ-कुछ
नी बढ़ जाती है कि वे
लगते हैं। ऐसे चमगा
। वे अक्सर सोते हुए
र हमला करते हैं और
कर भाग जाते हैं। वे
ं और पाली जानेवाली
मला कर देते हैं और
उन्हें छोड़ देते हैं। इस
ख़ूँख़ार होते हैं और उन्
लिए आदमी तरह-

दूध पिलाती है।
जानकर अब कभी
कि चमगादड़ भी
होते हुए भी वह
इस अजीब जान
से देखने पर हमें कितनी
दार बातें मालूम होंगी।
हम देखेंगे कि उसका नन्हा-सा
मिलता-जुलता है। उसके कान
ख़ूबसूरत होते हैं। उसकी छोटी

हमको तारे,
जगमग तारे।
छुप जाते हो?
लाते हो।
प्यारे;
तारे।

सुनहले बौने

लेखक, श्रीयुत राजकुमार सिनहा

क जङ्गल में फूस की एक झोपड़ी थी। उसमें हुत ही ग़रीब औरत रहती थी। उसके एक थी। उसकी उम्र बारह वर्ष की थी। उसका ता था। लता बहुत ही सुन्दर लड़की थी। बाल बहुत ही चिकने और चमकीले थे। ओंठ थे। वह सदैव प्रसन्न और हँसमुख रहा थी।

एक दिन अचानक उसकी माँ बीमार पड़ गई। गों के पास दवा लाने को पैसा न था। उस दिन लता बहुत दुखी हुई। वह इसी में, जङ्गली फूलों के पास-पास दौड़ती हुई यान पर गई जिसे वह बहुत पसन्द करती वह स्थान एक सुन्दर घाटी में था, जिसमें हरी-हरी घास उगी हुई थी। पास ही एक कल-कल शब्द करता बह रहा था। लता र यहाँ आकर घण्टों बैठती थी। वह वहाँ पर र रुपया पाने का कोई उपाय सोचने लगी। सोचते उसे नींद आने लगी और वह सो गई।

थोड़ी ही देर सो पाई थी कि आवाज़ सुनकर जाग गई और चारों तरफ़ आँखें मल-मलकर ने लगी। उसने देखा कि एक बौना एक गुफा निकला। वह सिर से पैर तक भूरे मखमल की क पहने था। एक सुनहली पेटी उसकी कमर बँधी थी जिससे एक छोटा सुनहला लैम्प लटक था। उसने चारों तरफ़ चौकन्नी निगाह से, फिर जल्दी से भागकर जङ्गल में घुस गया। तरह बारी-बारी से पाँच बौने उसी गुफा से ले और जङ्गल की ओर भाग गये। जाते वक़्त ख़िरी बौने ने गुफा के द्वार पर एक पत्थर-सा र रख दिया।

उनके जाने के बाद लता वहाँ से उठी और गुफा के पास गई। उसने पत्थर उठाने की कोशिश की पर वह पत्थर बहुत ही भारी था इसलिए वह उसे वहाँ से न हटा सकी। एकाएक उसकी दृष्टि एक सुनहले लैम्प पर पड़ी। शायद कोई बौना जल्दी में उसे यहाँ गिरा गया होगा। लता ने लैम्प को उठा लिया और उसे अपनी माँ को दिखाने का विचार किया, परन्तु उसी समय उसे बौने की याद आई कि वह बेचारा अपना लैम्प न पाकर बहुत दुखी होगा। इस विचार से वह घर जाने से रुक गई और बौने के लौटने की राह देखने लगी। पर उसे ज़्यादा देर तक राह नहीं देखनी पड़ी, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही उसे एक बौना दिखाई पड़ा। वह पृथ्वी पर इस तरह देख रहा था मानो कुछ ढूँढ़ रहा हो।

"महाशय, मैं समझती हूँ कि जो आप ढूँढ़ रहे हैं वह चीज़ मैंने पाई है।" लता ने धीरे से कहा और लैम्प को दिखाया।

लैम्प को देखते ही बौना बहुत प्रसन्न हुआ और कहा—"धन्यवाद, धन्यवाद। इसके बिना मैं रानी के पास नहीं जा सकता था। हर एक बौने को लैम्प लाना चाहिए नहीं तो दरबान रोक लेगा।" और उसने लता के हाथ से लैम्प ले लिया।

क्षण भर बाद बौने ने कहा—"जाओ, तुम्हारी सबसे प्यारी इच्छा कुछ घण्टों के भीतर पूरी हो जायगी।" इतना कहकर वह जङ्गल की ओर भाग गया।

यह ख़ुशख़बरी अपनी माँ को सुनाने के लिए लता अपनी झोपड़ी की ओर चली। सब हाल सुनकर माँ बहुत ही प्रसन्न हुई और उसकी तबीयत भी बिलकुल ठीक हो गई। थोड़ी दे

बाद दोनों माँ-बेटी खाने को गईं, वहाँ पर दोनों ने देखा कि सूखी रोटियों के बजाय उस जगह अच्छे-अच्छे पकवान रक्खे हैं। उन लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उन्होंने ख़ूब छककर भोजन किया। इसी तरह कुछ दिन सुख से बीते। थोड़े दिन बाद फिर रुपयों की आवश्यकता पड़ी।

एक दिन वह उसी घाटी पर गई। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि छहों बौने एक पेड़ के के नीचे उदास बैठे हैं। उसने बौनों से पूछा—"तुम लोग क्यों इस तरह मुँह बनाये बैठे हो?" एक बौने ने उत्तर दिया—"आज हमारी रानी के यहाँ जलसा है। उनका हुक्म है कि हर एक बौना अलग-अलग रङ्ग की पोशाकें पहनकर आवे। हमारे यहाँ बारह बौनों के झुण्ड हैं। हर एक झुण्ड में छः बौने हैं। हर एक झुण्ड को अलग-अलग रङ्ग की पोशाक पहनकर जाना चाहिए। सब ने हरा, लाल, पीला, बादामी, नीला, सुनहला, भूरा, गुलाबी, सफ़ेद, बैंगनी, काला आदि चुन लिया है। अब हमारे लिए कोई रङ्ग नहीं रह गया।"

लता ने कुछ देर सोचकर उत्तर दिया—"मैंने अपनी गुड़ियों के वास्ते नारङ्गी के छिलकों की पोशाक बनाई थी। अगर तुम लोग भी नारङ्गी ला दो तो मैं तुम लोगों को भी वैसी ही पोशाक बना दूँ।" यह सुन सब बौने नारङ्गी के छिलके की खोज में चल दिये। घण्टे भर बाद ही नारङ्गी के छिलकों का ढेर लग गया। लता ने भी पोशाक बनाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में सब पोशाकें तैयार हो गईं।

अपनी नई पोशाक पहनकर बौने बहुत ख़ुश हुए और लता से कहा—"हम तुम्हारे बारे में रानी से ज़िक्र करेंगे। तुम बारह बजे तक देखना।"

लता 'अच्छा' कहकर अपने घर चली उसे नींद नहीं आई। रात को बारह बजे किसी ने दरवाज़े पर पुकारा—"लता, लता

लता ने फ़ौरन ही दरवाज़ा खोला बौने खड़े हैं। बौनों ने लता को देखकर "हमने रानी से तुम्हारे बारे में कहा था, देखना चाहती हैं। रानी ने तुम्हें अभी और तुम्हारे लिए यह गाड़ी भेजी है।" बौने ने एक पास ही खड़ी गाड़ी इशारा किया।

लता तैयार होकर गाड़ी पर आकर थोड़ी देर बाद गाड़ी रानी के महल पर वहाँ रानी पहले से ही उसका स्वागत लिए दरवाज़े पर खड़ी थी। वह जैसे ही उतरी, रानी उसका हाथ पकड़कर गई। वहाँ उसे बहुत अच्छे-अच्छे को मिले। ऐसे पकवान उसने पहले खाये थे। आध घंटे बाद जलसा शुरू लता ने रात भर जलसा देखा। सवेरे उसे अपना सारा महल दिखाया। जब झोपड़ी को जाने को तैयार हुई तो एक बहुत ही सुन्दर बेग देते हुए कहा— तुम्हें भेंट करती हूँ। इसमें बहुत से अशर्फ़ियाँ हैं। इसकी ख़ास बात यह है से तुम चाहे जितना रुपया निकाल लो बेग हमेशा इसी तरह भरा रहेगा।"

घर आने पर उसने माँ को सारा हाल माँ बहुत ख़ुश हुईं। अब उनका सारा हो गया और माँ-बेटी सुख से रहने लगीं।

अद्भुत सेब

लेखक, श्रीयुत बल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश", मिरज़ापुर

बहुत ग़रीब आदमी था। उसके एक था जिसका नाम श्यामू था। जब वह से तङ्ग आ गया तो उसने श्यामू को परदेश के लिए भेजा। श्यामू थोड़ा-सा भोजन माल में बाँधकर चला। जब वह एक जङ्गल हुँचा तो उसे एक बहुत कुरूप और कोढ़ी मिला जो कराह रहा था। श्यामू को उसे र दया आई और उसके पास जा पूछा—ात है भाई?"

"मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे भोजन चाहिए।" बोला।

श्यामू ने अपना सारा भोजन उसे दे दिया।

जब वह खा चुका तो वह एक बौना बन और उससे बोला—"मैं तुम्हारी परीक्षा ले था। मैं तुमसे बहुत ख़ुश हूँ। लो, इस जादू ँगूठी को पहन लो। इसको पहनने से तुम ो देखोगे, लेकिन तुमको कोई न देख सकेगा। सुनो, यहाँ से दूर एक जङ्गल है। वहाँ एक भयङ्कर अजगर रहता है। उसके पास एक है। वह उस मणि को एक पेड़ के नीचे र उसके प्रकाश में रोज़ खाने की तलाश करता है। तुम एक बड़ी कील ठोंककर पेड़ पर चुपचाप बैठ जाना और जब साँप और अपनी मणि उसी पेड़ के नीचे रखकर की खोज में कुछ दूर निकल जाय तो मणि मले से ढक देना, सर्प तुरन्त आकर अपना उसी पर पटकेगा और पटकते-पटकते मर ा। जब सवेरा हो और वह मर जाय तो मणि को ले लेना। यह मणि सँभालकर रखना। यह तुम्हें मनचाही वस्तु देगी। यह कह वह ग़ायब हो गया।

श्यामू ने वैसा ही किया और उसे मणि मिल गई।

वह मणि और अँगूठी को ले आगे बढ़ा। चलते-चलते शाम हो गई। वह इतना थक गया था कि उसे मणि के गुण का ध्यान भी न रह गया। भूख भी ज़ोरों की लग आई थी। उसने एक धनी आदमी से ठहरने की जगह और खाना माँगा। उस धनी आदमी ने उसे अपने यहाँ ठहरा लिया। खा-पीकर जब रात में वह सो गया तब धनी आदमी की लड़की किसी काम से उस कमरे में आई। उसने मणि को चमकते देख उसे ले लिया। साथ ही उसने उसकी अँगूठी भी उतार ली।

जब सबेरा हुआ और श्यामू ने अपने पास वह मणि और अँगूठी न देखी तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने उस धनी आदमी से भी अपनी मणि और अँगूठी के बारे में कहा। वह आदमी बहुत नाराज़ हुआ कि मेरे घर में मेरे परिवार को छोड़कर और कौन हो सकता है? यह तो मेरे परिवार को चोर बता रहा है। उसने कहा—पास में कुछ था नहीं, झूठ-मूठ सब बात बना रहा है।

श्यामू बहुत उदास हो घर लौटा। रास्ते में उसे फिर वही बौना मिला। बौने ने कहा—"क्यों, मैंने तुमसे कहा था न कि इन दोनों चीज़ों को बहुत सँभालकर रखना। ख़ैर, इनके मिलने की तरकीब बताता हूँ। लो, ये दो टोकरियाँ सेब की लो। पहली टोकरी के सेब खाने से व्यक्ति गधे की शक्ल में आ जाता है और दूसरी टोकरी के सेब को

खाने से वह फिर अपने पुराने रूप में आ जायगा। उस लड़की को, जिसने तुम्हारी चीज़ें चुराई हैं, सेब खाने का बहुत शौक़ है। उसके पास एक व्यापारी का भेस बनाकर जाओ। पहले पहली टोकरी के सेब खिलाना जिससे वह गधे की शक्ल में आ जाय। तब वह आप से आप जङ्गल में भाग जायगी।"

श्यामू ने ऐसा ही किया। लड़की ने उसे बुलाया और कुछ सेब ख़रीदे। उसने एक सेब लेकर खाया ही था कि वह गधे की शक्ल में बदलकर बाहर भागी। वह भी उसके पीछे दौड़ा। उसे पकड़कर उसने अपनी मणि और अँगूठी ले ली और उसे एक निर्दय आदमी के दिया। वह आदमी इस गधे को भी .ख़ू काम लेने लगा।

उस धनी आदमी ने लड़की को पाकर, उसकी खोज करवाई, पर उसक पता न चला। श्यामू अब मणि के सहा बड़ा आदमी हो गया था। उसे उस ल दया आई और उसने उसे दूसरी टोकरी खिलाकर फिर आदमी बना दिया।

वह धनी आदमी अपनी लड़की पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

जाड़ा

लेखक, श्रीयुत कान्तिचन्द्र

सर्दी का अब मौसम आया,
नहीं तनिक भी मुझको भाया।
कपड़े बहुत पहनते अब हम,
बाहर नहीं टहलते अब हम॥
जो ग़रीब हैं, काँप रहे हैं,
आग जलाकर ताप रहे हैं।
छोटे-छोटे दिन होते,
नहीं व्यर्थ हम दिन खोते हैं॥
होती लम्बी रात अनोखी,
पड़ती जिसमें सर्दी चोखी।
छोड़ी जाती नहीं रज़ाई,
दाँतों का अब नौबत आई॥
सुबह देर तक हम सो जाते
स्कूल समय पर पहुँच न पाते
हम पर नित जुर्माना होता
और तमाचे खाना होता
बार-बार क्यों जाड़ा आता?
कँपा-कँपा क्यों हमें सताता?
वर्षा आ' वसन्त के मौसम,
न थे हमारे लिए वही कम॥

तैरने की कोशिश

लेखक, श्रीयुत सत्यवीर

गाँव के बाहर एक छोटा-सा तालाब था। ॰ में बतखें तैरा करती थीं। पास ही एक रहती थी। उसके बहुत-से बच्चे थे। बच्चे माँ का साथ छोड़कर इधर-उधर घूमने के चले जाते तो मुर्ग़ी बहुत परेशान होती और ही उन्हें पुकारने लगती।

जब बच्चे कुछ बड़े हुए तब मुर्ग़ी ने उन्हें दिन ले चरने की आज्ञा दे दी। सब बच्चे गाँव की चल पड़े, क्योंकि उन्होंने देखा था कि उनकी हें खाने की तलाश में गाँव की ओर ही ले थी। परन्तु उनमें एक बच्चा बड़ा उत्साही था। पने को दूसरे बच्चों से बुद्धिमान् समझता था। ए वह दूसरों की तरह गाँव की ओर नहीं गया। जब सब चले गये तो वह भी बाहर निकला। दूर ही चलने पर उसे एक कूड़ेखाने के खाने को मिल गया। खा-पीकर वह तालाब ोर चला गया।

वहाँ उसने देखा कि बहुत-से बतख के बच्चे पर तैर रहे हैं। उसकी भी पानी पर तैरने च्छा हुई परन्तु तैरना वह जानता नहीं था। ए मन मारकर रह जाना पड़ा।

उसने एक बतख के बच्चे को अपने निकट र कहा—"क्या तुम मुझे भी अपनी तरह सिखा सकते हो?"

बतख ने हँसकर कहा—"पर तुम तैर नहीं सकते।"

मुर्ग़ी के बच्चे को यह बात बहुत बुरी लगी। र बतख का बच्चा भी तो उसी की तरह है। ह तैर सकता है तब वह क्यों न तैर सकेगा? भी मन में कुछ सोचकर उसने पूछा—"क्यों? मैं नहीं तैर सकता।"

'क्योंकि तुम्हारे पैर में जालियाँ नहीं हैं जैसी रों में हैं।' बतख के बच्चे ने अपना पैर दिखाते हुए कहा—"यदि तुम्हारे पैर में भी जाली होती तो तुम बिना किसी के सिखाये ही तैर सकते थे।"

मुर्ग़ी का बच्चा अपने घर लौट आया। शाम को उसने अपनी माँ से कहा—"माँ, मैं अपने पैरों में जाली लगाना चाहता हूँ।"

मुर्ग़ी ने आश्चर्य से कहा—"जाली! तुम कहते क्या हो? मैंने तो केवल मकड़ी की जाली की बात सुनी है।"

माँ से कुछ आशा न देख वह चुप रहा। दूसरे दिन जब सब चले गये तो वह एक मकड़ी के पास पहुँचा और बोला—"मकड़ी बहन, क्या तुम मेरे पैरों में जाली बुन दोगी?"

मकड़ी हँसी; कहा—"भला पैर में जाली बुनवाकर क्या करोगे?"

"तैरूँगा।" मुर्ग़ी के बच्चे ने उत्तर दिया।

मकड़ी ने कहा—"नहीं, ऐसा कभी न करना, नहीं तो डूबकर मर जाओगे।"

पर मकड़ी का बच्चा भला कब माननेवाला था। उसने मकड़ी को एक पैर में जाली बुनने के लिए राज़ी कर लिया। मकड़ी ने उसके पैर में एक अच्छी ख़ासी जाली बुन दी। अब मुर्ग़ी का बच्चा एक पैर उठाये हुए तालाब की ओर चला। उसे भय था कि ज़मीन पर पैर रखने से उसकी जाली टूट न जाय।

वह अपने मन में बड़ा प्रसन्न था कि वह भी अब मज़े में तैर सकेगा। तालाब के किनारे पहुँचकर वह तुरन्त पानी में कूद पड़ा।

परन्तु पानी में गिरते ही वह डूबने लगा। उसने अपना जालीवाला पैर बहुत चलाया पर कोई फल न हुआ।

कुछ बतख दूर से उसका यह तमाशा देख रहे थे। उसे डूबता हुआ देखकर वे दौड़े आये और उसे बचाकर पानी से बाहर निकाला।

अपने परों के पानी को झाड़ते हुए वह अपने घर चला गया।

भारत के बौद्ध तीर्थ

लेखक, श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य

बुद्ध भगवान् का नाम तो तुम लोगों ने सुना ही होगा। वे हमारे देश के बहुत बड़े महात्मा थे। उनको पैदा हुए हज़ारों वर्ष हो गये। उन्होंने दया और प्रेम की शिक्षा दी थी। उनका कहना था कि किसी जीव को न मारना चाहिए। उनके समय में ही उनको बहुत-से लोग मानने लगे थे। उनको माननेवाले बौद्ध कहलाते हैं और उनका धर्म बौद्ध धर्म कहलाता है।

बौद्ध धर्म का प्रचार बहुत हुआ। हमारे देश में आज भी बहुत-से लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं। चीन, जापान और बर्मा में भी बौद्ध धर्म के माननेवाले बहुत हैं। बौद्ध धर्म के माननेवालों के लिए भारतवर्ष तीर्थ-स्थान है, क्योंकि बुद्ध भगवान् यहीं पैदा हुए थे। यहाँ उनके चार ख़ास तीर्थ हैं। इस लेख में हम तुम्हें उन्हीं चारों तीर्थों के बारे में कुछ बतायेंगे।

पहला तीर्थ लुम्बनी वन है। यहाँ बुद्ध भगवान का जन्म हुआ था। कपिलवस्तु में यह एक हरा-भरा सुन्दर बाग़ है। यहाँ पर सम्राट् अशोक की एक लाट है। बुद्ध भगवान् की माँ का नाम मायादेवी था। वे कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन की रानी थीं। एक बार जब वे यात्रा कर रही थीं तो इसी स्थान पर बुद्ध भगवान् का जन्म हुआ था। इसलिए बौद्ध धर्म के माननेवाले इसे बहुत

मानते हैं।

लुम्बनी वन की अशोक की लाट

दूसरा तीर्थ बुद्धगया है। यह

में गया से थोड़ी दूर पर है। गौतम

और राज-पाट छोड़ने के बाद भगवान् की खोज में बहुत दिन तक घूमते रहे। वे ऐसा उपाय खोजना चाहते थे जिससे संसार में दुःख न रह जाय। बुद्धगया में आने पर उन्हें ज्ञान मिला। बौद्ध लोग इस स्थान को भी एक

मानते हैं।

बुद्धगया का मन्दिर और बो

यहाँ पर एक विशाल मन्दिर बना

जिसे सम्राट् अशोक ने बनवाया था।

पेड़ के नीचे बुद्ध भगवान् को ज्ञान हुआ

वह तो नहीं रह गया पर मन्दिर के

दूसरा पेड़ है। कहते हैं ईसा की तीसरी

यह पेड़ लगाया गया था। यह भी

कि इस पेड़ की एक डाल लङ्का भी

और वहाँ उससे एक बहुत बड़ा वृक्ष

वहाँ अभी तक है। मन्दिर में आजकल

भगवान् बुद्ध की पूजा होती है और

माननेवाले इस स्थान को देखने के लिए र जाया करते हैं।

तीसरा स्थान सारनाथ है। यह स्थान स के पास है। गया में जब गौतम बुद्ध को ज्ञान हो गया तब वे सोच रहे थे कि अपने धर्म का प्रचार वे कहाँ पर पहले-पहल करें। उन्हें अपने पाँच शिष्यों का ध्यान आया वे सारनाथ पहुँचे। यहीं उन्होंने पहले-पहल धर्म का प्रचार किया। और उन पाँचों को र शिष्य बनाया।

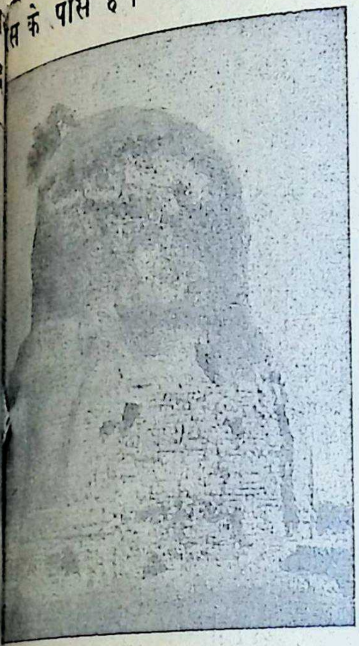

सारनाथ का बौद्ध-स्तूप

सारनाथ में बौद्धों के बहुत-से मन्दिर हैं। ी समय यहाँ एक विद्यालय था। इसके चारों र राख के टीले मिलते हैं जिससे पता चलता है बौद्ध धर्म के विरोधियों ने कभी इसे जलाकर कर डाला होगा। कहते हैं अशोक के समय को खोदकर बहुत-सी पुरानी चीज़ें निकाली गई हैं। आजकल वहाँ पर बौद्धों का एक सुन्दर विहार बना हुआ है जहाँ बहुत-से भिक्षु रहते हैं।

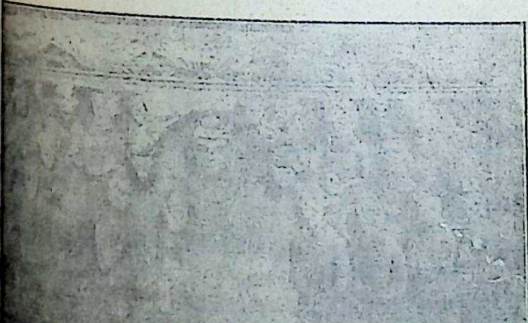

सारनाथ के पाँच भिक्षु

चौथा तीर्थ-स्थान कुशीनगर है। इसे कुशीनार भी कहते हैं। यहाँ बुद्ध भगवान् अपने अन्तिम दिनों में आये थे और यहीं शालवन में उनका 'निर्वाण' हुआ था। बौद्ध लोग मृत्यु को 'निर्वाण' कहते हैं। कहते हैं यहाँ उनको अतिसा हो गया था पर वे उसी दशा में पावापुरी से कुशीनगर को चले गये।

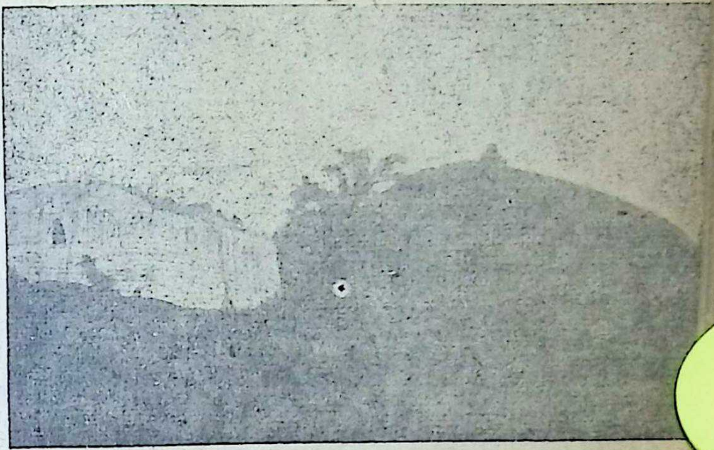

कुशीनगर

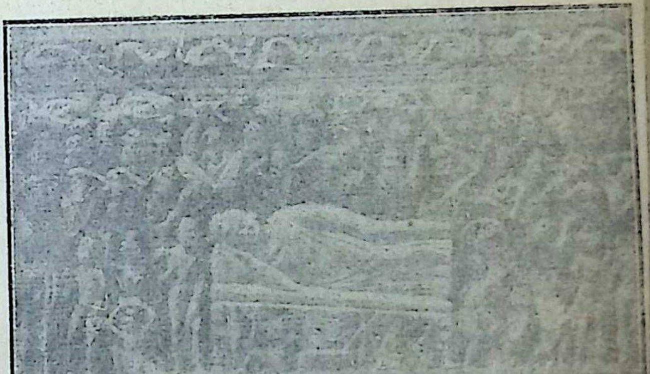

बुद्धदेव का 'निर्वाण'

बौद्धों के और भी बहुत-से तीर्थ दूसरे देशों हैं। तिब्बत, चीन, लङ्का, बर्मा, श्याम आदि देश में, जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार है, अनेक तीर्थ हैं परन्तु भारत के इन तीर्थों का बहुत अधिक मह

पुष्पा की चालाकी

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

पुष्पा बड़ी चालाक लड़की है। उसकी चालाकी से सब लोग हैरान रह जाते हैं। अपने साथियों को वह अक्सर अपनी चालाकी से बेवक़ूफ़ बनाया करती है। उसका बड़ा भाई सुरेश उससे बहुत परेशान रहता है।

एक बार पुष्पा और सुरेश साथ-साथ बाग़ में खेल रहे थे। बातों ही बातों में पुष्पा ने कहा—"सच तो यह है कि लड़कियाँ बहुत-से काम कर सकती हैं पर लड़के उन कामों को कभी नहीं कर सकते।"

सुरेश को हँसी आ गई। पुष्पा हमेशा लड़कियों की ही बड़ाई करती रहती है, जैसे लड़के मूर्ख ही होते हैं। उसने कहा—"कहीं लड़कियाँ भी कुछ कर सकती हैं ? देखो, हमारे साथी जो कर सकते हैं क्या वह तुम लोग कर सकती हो ?"

पुष्पा ने तो सुरेश को तङ्ग करने के लिए तरकीब सोच ही रक्खी थी; बोली—"अजी, दूर की बात छोड़ो। मैं कहती हूँ जो काम मैं आँख बन्द करके कर सकती हूँ वह तुम आँख खोलकर नहीं कर सकते।"

"बताओ, वह कौन-सा काम है।" सुरेश ने जोश के साथ उत्तर दिया।

"पर भाई, अच्छी तरह सोच लो।" पुष्पा ने कहा।

इसपर सुरेश को और जोश आ गया। उसने ताव में आकर कहा—"तुम बताओ, तुम बताओ तो। जो काम तुम आँख बन्द करके कर सकती हो वह तो कोई भी लड़का आँख खोलकर कर सकता है।"

बाग़ की चहारदीवारी की मरम्मत करने के लिए ईंटें, चूना और बालू रक्खी हुई थी। पुष्पा ने तुरन्त ही एक मुट्ठी बालू ली और आँख बन्द करके अपनी आँख पर डाल लिया और बोली—"इसे अब तुम आँख खोलकर करो।"

भला यह काम बेचारा सुरेश आँख खोलकर कैसे कर सकता था। इसे पुष्पा की चालाकी समझ में आ गई। वह चुप रह गया।

थोड़ी देर बाद सुरेश ने भी पुष्पा को की एक तरकीब सोची। दौड़कर माँ से सन्तरे माँग लाया और बोला—"पुष्पा बहन मेरे पास तीन सन्तरे हैं।"

पुष्पा ने देखा कि उसके हाथ में तो सन्तरे हैं, इसलिए उसने पूछा—"तुम्हारे हा दो ही सन्तरे दिखाई पड़ते हैं। तीसरा कहाँ

सुरेश ने बड़े गर्व से एक सन्तरा हाथ कहा—"देखो, यह है सन्तरा नम्बर एक रहा सन्तरा नम्बर दो और एक और दो तीन हुए न ?"

पुष्पा ने तुरन्त कहा—"हाँ, भाई तु कहते हो। यह बात मेरी भी समझ में थी। सचमुच तुम्हारे पास तीन सन्तरे हैं

सुरेश गर्व में ख़ुश हो रहा था कि इ उनके चाचाजी इधर आ निकले। पुष्पा देखते ही पुकारा—"चाचाजी, यहाँ आइए

चाचाजी जब उनके पास आ गये तो सुरेश से कहा—"सुरेश भाई, आज हम चाचाजी को सन्तरा खिलायेंगे।"

सुरेश ने सोचा, पुष्पा चाचाजी को बनाने की कोई तरकीब करनेवाली है। उसने कहा—"अवश्य, चाचाजी आज सन्तरा ख

चाचाजी ने उत्तर दिया—"हाँ, अवश्य

पुष्पा ने कहा—"अच्छा सुरेश भा सन्तरा चाचाजी को दे दो।"

सुरेश ने एक सन्तरा चाचाजी की ओर बढ़ा तब पुष्पा ने कहा—"और एक सन्तरा मुझे दे

सुरेश ने दूसरा उसे दे दिया। पुष्पा छीलकर खाती हुई बोली—"और अपना वह सन्तरा तुम खा जाओ।"

सुरेश को पुष्पा की इस चालाकी पर खीझ लगी, पर अब उपाय ही क्या था।

भैंस की चराई

लेखक, श्रीयुत प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव

रामदीन एक बँगले में माली का काम करता स वर्ष से उसका उस बँगले से सम्बन्ध था, अब न वह उसे छोड़ना चाहता था और न का स्वामी ही उसे छुड़ाना चाहता था। उम्र उसे निर्बल बना दिया था, परन्तु अब भी उसमें नी शक्ति थी कि माली का काम कर सके।

एक दिन वह अपनी खाट मैदान में डालकर रहा। एकाएक उसे सामने दो भैंसें चरती दीख । उसे बड़ा क्रोध आया और बड़बड़ाने लगा—ाय-भैंसवाले सदा अपने जानवरों को इसी बँगले के भीतर कर दिया करते हैं।"

उसने लाठी उठाई और दोनों को दो-दो ई। भैंसवाला सामने खड़ा था। रामदीन उसे डाँटने—"क्यों जी, तुमने किससे पूछकर भैंस ई? तुम बड़े बदमाश हो।" यों कहकर वह ों को बँगले के बाहर निकालने लगा और ा—"मैं अभी इन्हें काँजीहौस लिये जाता हूँ।" ाले ने चुपचाप एक दुअन्नी निकालकर माली ाथ में रख दी।

दुअन्नी ने रामदीन की क्रोधाग्नि पर ठण्ढे जल काम किया। वह बोला—"अच्छा, अब न इधर पावें ये भैंसें।" भैंसवाले ने कहा—"भैया, यह इतनी बड़ी हो गई है तुम्हें कटवाना ही पड़ेगा। र दस-पाँच दिन हमारी भैंसें चर लेंगी तो ारी मेहनत बच जायगी।"

रामदीन ने एक-आध मिनट तक चुप रहकर ा—"अच्छी बात है।" अब भैंसवाला भी घूँस स्वतन्त्रता के साथ भैंस चराने लगा। इस र कई दिन तक वह भैंसें चराता रहा।

एक दिन रामदीन ने सोचा, क्यों न वह नी का पैसा वसूल करे। उसके यहाँ भैंसें चरने आती हैं तो क्या वह उन्हें योंही चरने दे? वह खाट पर से उठा और लाठी लेकर भैंसों पर टूट-पड़ा। भैंसें भगीं। वह भी उनके पीछे लपका और उन्हें घेर-घेरकर काँजीहौस की ओर चला। जैसे ही उसने फाटक के बाहर क़दम रक्खा उसे सामने भैंसवाला दिखाई दिया। वह लगा ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने—"क्यों जी, मैंने बार-बार तुम्हें मना किया, लेकिन तुम मानते नहीं। अगर घास खिलाने का बूता नहीं है तो क्यों जानवर पालते हो? जब देखो बँगले के भीतर उन्हें चराते रहते हो। साहब की रोज़ डाँट हमें खानी पड़ती है। अभी-अभी भैंस ने गुलाब के दो पेड़ कुचल डाले और चार रुपये का नुक़सान कर दिया।"

भैंसवाले ने यह सुना तो बड़े अचम्भे में पड़ गया। सोचा—"जान पड़ता है, देवता फिर कुछ पूजा चाहता है।" बोला—"भैया, अभी कुछ दिन ही तो हुए तुमने कहा था, चरा लिया करो। अब कैसी बात करते हो?"

माली बोला—"क्या कहा? मैंने कहा था, ख़ूब बोलता है। मैंने कब यह कहा था कि अपनी भैंसें यहाँ छोड़ दिया करो।"

बेचारे भैंसवाले ने टेंट से एक चवन्नी निकाली और रामदीन के हाथ में रख दी। चाँदी की चवन्नी की चमक रामदीन की आँखों में आ गई। वह मुस्कराकर बोला—"अरे भैया बुधई, ज़रा ऐसा ख़याल रक्खा करो कि साहब की आँख बची रहे और पेड़-पौदों का नुक़सान न हो। तुम ऐसा किया करो कि शाम को अपनी भैंसें छोड़ दिया करो जिससे वे रातभर यहाँ चरती रहें और सुबह उन्हें हाँक ले जाया करो।"

यों कहकर माली ने भैंसें छोड़ दीं। बुधई सोचने लगा—"यह माली लालची है। जब देखो तब काँजीहौस की धमकी देने लगता है। कब तक इसे दुअन्नी-चवन्नी दी जायेगी। लालच की भूख कभी मिटती थोड़े है। जितना उसे खिलाओ उतना ही वह बढ़ती है। अब कोई और तरकीब सोचनी पड़ेगी। अभी दो-चार दिन तक तो यह बोलेगा नहीं। फिर देखा जायगा।"

इसी प्रकार दिन बीतते गये। बुधई अब बिलकुल बेफ़िक्र भैंस चराने लगा परन्तु उसे अब भी विश्वास था कि फिर किसी न किसी दिन एक नया दृश्य देखना पड़ेगा। कई दिन बीत गये बुधई रोज़ माली की धौंस की राह देखता रहा।

रामदीन आज शाम तक अपनी क्यारी ठीक करता रहा। दिन भर उसे जानतोड़ काम करना पड़ा। खाने को रोटी भी नहीं मिली। शाम होते-होते जो अपनी कोठरी में आया तो थककर खाट पर पड़ रहा। रोटी अभी तक बनी नहीं थी। भूख के मारे रामदीन का बुरा हाल था।

वह अपनी बुढ़िया मालिन के ऊपर बरस पड़ा—"दिन भर फावड़ा चलाते-चलाते जान निकल जाती है जो घर आओ तो एक रोटी भी नहीं मिलती। जा ज़रा चिलम भरकर ले आ।"

बुढ़िया इधर-उधर देखकर आ गई। बोली—"तम्बाकू तो है ही नहीं; कैसे चिलम भरें?"

अब क्या था, थके-माँदे बुड्ढे का शरीर क्रोध के मारे काँप उठा—न खाना है न तम्बाकू। सहसा वह उठ खड़ा हुआ। अपने आप बोला—"न सही, आज-कल कई दिन के लिए घर में तम्बाकू आ जायगी। इतने दिन से भैंस चरा रहा है, न जाने कितने की घास भैंस खा चुकी होगी।" यह सोचता हुआ दो-चार मिनट इधर-उधर टहल-फिरकर रामदीन अपनी खाट पर चुपचाप लेट गया।

सारी रात बीत गई। उसको नींद न
सुबह होते ही वह उठा। रस्सी लेकर बाग़
चल दिया। भाग्य की बात कि भैंसें अब
रही थीं। वह दौड़ा-दौड़ा गया और
बाँधकर चल दिया।

फाटक तक पहुँचा ही था कि बुधई आ
दिखाई दिया। बुधई बोला—"राम-राम
रामदीन ने भी कहा—"राम-राम। भाई,
भैंसों के मारे नाकों दम आ गया। मैं कि
मना कर चुका हूँ कि भैंस बँगले में न ला
पर मानते ही नहीं। जब देखो, भैंस लि
जाते हो।"

बुधई बोला—"अरे भैया, छः आना
ले लिया है। तुम्हारे लालच का भी ठिका

रामदीन बोला—"क्या बकता है?
ली है और तुझ बदमाश से? मुँह सं
बोल। एक तो भैंस चरावे ऊपर से रोब!

रामदीन पूरा कह भी न पाया था
बोला—"अच्छा भैया, ले जाओ। देखें कैसे
हो। तुम्हारी बात का कुछ ठिकाना भी
जाओ।"

रामदीन कुछ न बोला। हाँ, उसने
क़दम कुछ तेज़ कर दिये। शीघ्र ही वह बी
में जा पहुँचा। बुधई ने आगे बढ़कर दो
पर ज़ोर से एक-एक लाठी जमाई। भैंसें
रामदीन के हाथों से रस्सी छूट गई। वह
सा खड़ा रह गया। कभी भैंस की ओर
कभी भैंसवाले की ओर, तो कभी बँगले की

चुपचाप वह लौट आया। बुधई अब भी
में भैंसें चराता है पर रामदीन कुछ नहीं बो
सोचता है बोलकर वह कर ही क्या सकता

बुधई को एक अच्छी तरकीब मिल गई

सोने का कड़ा

लेखिका, कुमारी विद्यादेवी

बहुत दिनों की बात है कि काशी के एक में आकाश से एक सोने का कड़ा गिरा। पर साफ़ अक्षरों में खुदा हुआ था। यह कड़ा के लिए है जो दूसरे मनुष्यों पर प्रेम रखता है। इस पर सब मन्दिर के पुजारियों ने सारे र में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो मनुष्य ने भाइयों से प्रेम रखता है और अपने को इस के पुरस्कार का अधिकारी समझता है उन को यहाँ इकट्ठा होना चाहिए जिससे यह निर्णय जा सके कि कड़ा किसको दिया जाना चाहिए।

यह समाचार सारे नगर ही में नहीं बल्कि दूर-तक फैल गया और दूर-दूर से लोग आने लगे। री लोग आँगन में बैठकर यह निर्णय करने कि कौन मनुष्य इस पुरस्कार का अधिकारी अनेक विद्वान्, धार्मिक, धनी और निर्धन सभी अपने-अपने ठाठ-बाट से काशी में आने लगे। मनुष्य काशी नगर में आये कि ऐसा जान था कि मानो यहाँ एक मेला होने जा रहा है। इस प्रकार एक वर्ष तक लोग आते रहे।

लोग चाहे किसी से प्रेम करें या न करें, दिखाने के लिए बहुत-सी बातें गढ़ लेते हैं। से भिखारी, लूले, लँगड़े, अन्धे, काने अनेक र के पीड़ित भिखारी इकट्ठे हुए थे; क्योंकि जो आते वे दिखाने के लिए बहुत दान करते थे।

पुजारियों ने एक व्यक्ति को चुना, क्योंकि ने अपना सारा धन ग़रीबों को बाँट दिया था। मनुष्य प्रसन्नता से सोने के कड़े को लेने के आगे बढ़ा। जैसे ही पुजारी ने कड़े को, उसे वह पत्थर का हो गया। यह देखकर सबको आश्चर्य हुआ। डर से कड़ा उसके हाथ से गिर पड़ा। गिरते ही कड़ा फिर सोने का हो। सब लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गये। पुजारी समझ गये कि वह व्यक्ति पुरस्कार का अधिकारी नहीं है। वह आदमी भी सिर नीचे झुकाये अपने घर चला गया।

एक साल तक लोग आते-जाते रहे। तीन बार पुजारियों ने कड़े को अपने चुने हुए आदमी को दिया पर हर बार वह उनके हाथ में पहुँचते ही पत्थर का हो जाता था। इससे पुजारी लोग बहुत घबड़ाये कि अब क्या करना चाहिए।

चार साल बीत गये, पर कोई आदमी न मिला। एक दिन एक किसान मन्दिर में दर्शन करने आया। वह बड़ा दयालु था। जब उसने भिखारियों को देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसके पास कुछ धन तो था नहीं कि उनको कुछ देता। फिर भी उसने भिखारियों को अपनी मीठी वाणी से परमेश्वर की बड़ाई करके दुःख में साहस बनाये रखने को कहा। फिर मन्दिर में जाकर पूजा-पाठ करके लौटा। उसने देखा कि बहुत-से मनुष्य अपनी-अपनी बड़ाई पुजारी से कह रहे हैं। वह इस पर कुछ ध्यान न देकर जाने लगा। अचानक पुजारी के मन में कुछ विचार आया और उसने किसान को बुलाया। वह लौट आया।

पुजारी ने उससे कहा—"भाई, तुमने कड़ा लेने के लिए अपने बारे में मुझसे कुछ नहीं कहा। क्या तुम मनुष्यों से प्रेम नहीं करते?"

किसान ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"मैं सभी मनुष्यों से प्रेम करता हूँ परन्तु उसके लिए मुझे पुरस्कार की ज़रूरत नहीं। प्रेम तो मैं केवल इसलिए करता हूँ क्योंकि इससे मेरे हृदय को सुख मिलता है।"

पुजारी उसकी बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसके हाथ में कड़ा दे दिया।

कड़ा उसके हाथ में पहुँचकर भी उसी प्रकार सोने का बना रहा।

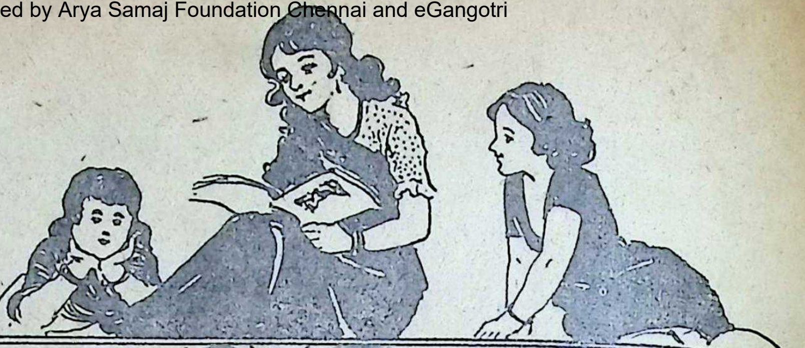

सहेली

सुनहली राजकुमारी

लेखक, श्रीयुत 'शरद'

किसी गाँव में एक बहुत ग़रीब लड़की रहती थी। वह बड़ी दयालु और अच्छी थी। कभी किसी के साथ वह बुरा बर्ताव न करती थी। गाँव में किसी को कोई ज़रूरत होती तो वह उसका काम करने के लिए सदा तैयार रहती थी। इसलिए सब उसे बहुत चाहते थे। ग़रीबी के कारण वह अच्छा खा-पहन न पाती थी। उसकी इच्छा थी कि यदि वह रानी बन जाय तो ग़रीब आदमियों की और अधिक मदद करे।

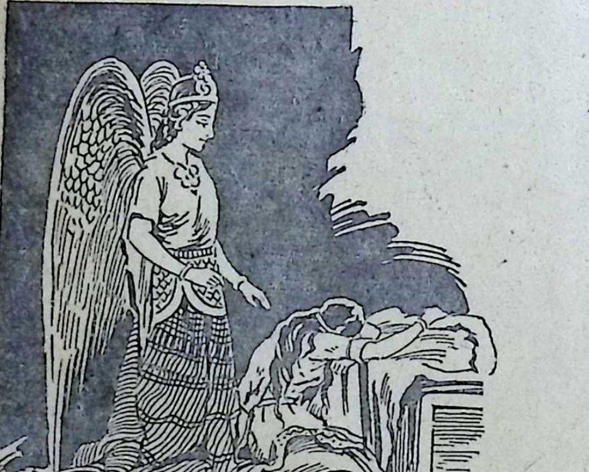

वह रो रही थी।

एक दिन वहाँ के राजा के यहाँ जल गाँव के सब लोग जलसा देखने गये पर पास अच्छे कपड़े न थे, इसलिए वह जल न जा सकी। उसे अपनी ग़रीबी पर ब हो रहा था। घर से बाहर आकर वह बैठ गई और सिर ढँककर रोने लगी।

सहसा उसे कुछ आहट जान पड़ी। आँखें पोंछ डालीं। उसने देखा कि उसकी बहुत ही सुन्दर स्त्री चली आ रही है। उस के पास दो पङ्ख लगे हुए हैं। लड़की ने लिया कि यह कोई परी है। परी आ पास खड़ी हो गई और उससे रोने का कार

लड़की ने अपनी ग़रीबी की सब दी। परी ने कहा—"तुम बहुत अच्छी लड़ मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

यह कहकर उसने अपने हाथ की लड़की को छू दिया। छड़ी के छूते ही कपड़े बदल गये। उसके कपड़े इतने सुन्दर कि देखने में वह एक राजकुमारी-सी मा लगी। परी ने कहा—"जाओ, तुम भी जल सकती हो, पर ध्यान रखना आधी रात

वहाँ न ठहरना । जैसे ही बारह बजे वैसे ही हाँ से चल देना नहीं तो तुम्हारा यह रूप जायगा और तुम फिर वही ग़रीब लड़की ाओगी ।"

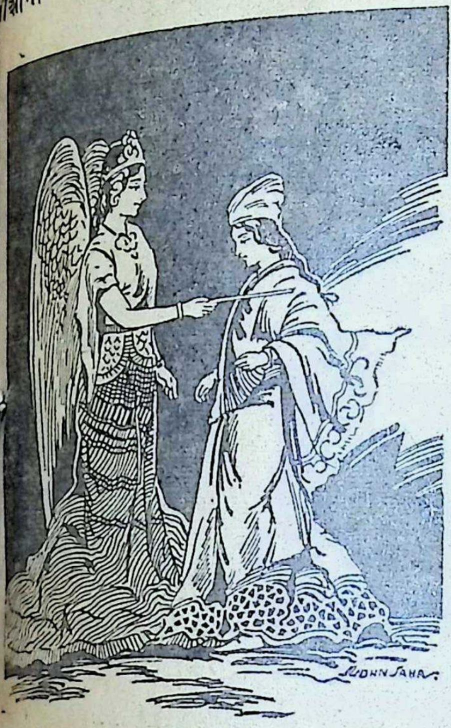

ड़ी के छूते ही लड़की एक सुन्दर राजकुमारी बन गई ।

लड़की ने परी की बात ध्यान से सुनी । जब ग़ायब हो गई तो लड़की राजा के महल की र चली । महल के पास पहुँचते ही लोगों ने उसे ा तो समझा कोई राजकुमारी आ रही है । कुमार को भी ख़बर हुई । वह दौड़ा हुआ उसके गत के लिए बाहर आया और अपने साथ ाकर सबसे ऊँची जगह पर अपने पास बिठाया ।

लसा बड़ी देर तक होता रहा । राजकुमार से बातें करता रहा । लड़की का तौर-तरीक़ा र बोलचाल सभी लोगों को बहुत पसन्द आया । उसका नाम न जानता था पर उसके सुनहले कपड़ों के कारण सब उसे सुनहली राजकुमारी कहने लगे ।

बारह बजते ही वह वहाँ से चल दी । राजकुमार उसके पीछे-पीछे थोड़ी देर और रुकने के लिए आग्रह करता हुआ आ रहा था । लड़की को डर था कि कहीं उसका रूप बदल न जाय इसलिए महल के बाहर आते ही वह जान छुड़ाकर भागी । राजकुमार भी उसके पीछे भागा । जल्दी में लड़की के पैर का एक गहना ज़मीन पर गिर गया ।

राजकुमार उसे उठाने के लिए झुका पर जब उसने फिर सिर उठाया तो देखा, राजकुमारी का वहाँ पता नहीं है । हाँ, थोड़ी दूर पर एक ग़रीब लड़की ज़रूर जा रही है ।

राजकुमार गहना लिये हुए लौट गया । उसने दूसरे दिन उस गहने को अपने पिता को दिखाया और कहा—"मैं उसी राजकुमारी से विवाह करूँगा ।"

बस, फिर क्या था ? उस राजकुमारी की खोज होने लगी । राजा ने कहा—"जिस लड़की के पैर में सुनहली राजकुमारी का गहना ठीक उतरेगा उसी से राजकुमार का विवाह होगा । परन्तु कोई लड़की न मिल सकी ।"

अन्त में एक दिन राजकुमार घूमते-घामते लड़की के गाँव से निकला । एकाएक उसे वह ग़रीब लड़की दिखाई पड़ी । शक्ल उसकी सुनहली राजकुमारी से मिल रही थी । राजकुमार उसे राजमहल में ले गया । वहाँ जब वह गहना उसके पैर में पहनाया गया तो बिल्कुल ठीक उतरा ।

बस, फिर क्या था । राजकुमार की उससे शादी हो गई । लड़की की इच्छा पूरी हुई । वह ग़रीबों का बड़ा ध्यान रखती और उन्हें हर प्रकार से सहायता दिया करती ।

लालची लोमड़ी

लेखक, श्रीयुत 'मलिन्द', गया

एक दिन एक भूखी लोमड़ी कुछ भोजन करने की फ़िक्र में थी कि उसने एक मोटी मुर्ग़ी देखी।

लोमड़ी मन में बोली—"क्या .खूब? मेरे मन का भोजन आप से आप आ गया! मैं इस झाड़ी के पीछे छिप जाऊँगी और जब वह मेर पास से होकर गुज़रेगी, मैं उस पर झपट्टा मारूँगी और उसे मार डालूँगी।"

वह पेड़ के पीछे छिप गई, पर जैसे ही वह मुर्ग़ी पर झपट्टा मारनेवाली थी वैसे ही उसके कानों में शोर सुनाई पड़ा। घबड़ाकर वह चिल्ला पड़ी—"यह कौन-सी बला है?" और इधर-उधर देखने लगी। आवाज़ जैसे उसके सर के ऊपर से आई और ऊपर देखने पर उसे पता चला कि पेड़ से लटका हुआ एक नगाड़ा है। हवा के बहने से शाखाएँ नगाड़े पर चोट करती थीं और उस नगाड़े से वही आवाज़ आती थी जिसे लोमड़ी सुन चुकी थी।

लोमड़ी के मुँह में पानी उतर आया .खूब! जो चीज़ इतनी आवाज़ कर सकती हड्डियों में इस मुर्ग़ी से कहीं अधिक मांस

उसने मुर्ग़ी के हाथ से चली जाने न की और उसने उस नगाड़े को पाने किया। उसे नीचे उतार लाने में उसका समय बर्बाद हुआ, क्योंकि वह वहाँ तक से नहीं पहुँच सकता थी। फिर भी वह भगती ही रही और अन्त में नगाड़ा ज़मीन गया। अब वह उसको खाने बैठी। उसने का दोनों छोर खोल डाला पर मांस का न था। उसका मुँह .गुस्से से लाल हो उसे भारी निराशा हुई जब उसे पता च अन्दर कुछ भी नहीं है!

मन में उसने कहा—"क्या .खूब! कै हूँ मैं—मैंने लालच के फेर में कितना सुन्द स्वादिष्ठ भोजन छोड़ दिया!" और वह एक ओर चली गई।

ओस

लेखक, श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म'

हरे, लाल औ' पीले-पीले।
खिले फूल हैं नीले-नीले॥
पड़ी ओस की उन पर बूँदें।
कैसी शोभा देतीं बूँदें॥
ओस नहीं, हैं सुन्दर मोती।
छटा निराली इनसे होती॥

मुन्नी इन्हें उठाने जाती।
पर छूते ही यह ढल जाती॥
मुन्नो बड़े ज़ोर से रोती।
.गुस्सा बड़े ज़ोर से होती॥
कहती—"बड़ी बुरी है ओस।
भैया कभी न छूना ओस॥"

भोले सेठजी

लेखिका, श्री मानवतीदेवी टीपड़ेवाला

सेठ मानमल अपनी कोठी में सुख की नींद थे कि १२ बजे के क़रीब उनकी नींद टूटी तो में गीदड़ों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई न जानें क्या सोचकर उन्होंने अपने नौकर सिंह को आवाज़ दी। पहरेदार था बेचारा, ाज़ सुनते ही आया और बोला—"जी, मालिक व।"

सेठजी—रामसिंह, इतनी रात हो गई फिर जङ्गल में ये गीदड़ क्यों चिल्लाते हैं?

रामसिंह—बेचारे भूख के मारे चिल्लाते हैं; के मारे क्या किया जाय?

सेठजी—अच्छा, यह बात है तो कल ही अपने के स्टाक में से २५ बोरे गेहूँ निकलवाकर बेचारों खिला देना।

रामसिंह 'जी, मालिक साहब, ठीक है' कहता चला गया।

सेठजी तो बेचारे थे सीधे-सादे और रामसिंह चतुर पर साथ ही दयालु भी। उसने भी सेठ के हुक्म के मुताबिक़ दूसरे ही दिन २५ बोरे निकलवाकर ग़रीब और असहाय मनुष्यों में दिये और थोड़े-से अपने घर में रखवा । पर सेठ साहब को ख़बर तक न हुई।

दूसरे दिन वही समय था, सेठ साहब ठण्ढ के रज़ाइयों में लिपटे मुलायम गद्दों पर लेटे थे सोच रहे थे कि आज भी ये गीदड़ क्यों रहे हैं। उनकी हवेली जङ्गल के नज़दीक थी। इसलिए उन्हें गीदड़ों और जानवरों चिल्लाना सुनाई पड़ा करता था। हाँ, तो उन्होंने फिर रामसिंह को पुकारा। रामसिंह तो तैयार था ही—जी मालिक साहब, क्या आज्ञा है?

सेठजी—अरे भाई, ये आज फिर क्यों चिल्लाते हैं। रामसिंह तो जवाब पहले ही से सोच आया था। बोला—"हुज़ूर, कल भूख तो मिट गई पर ठण्ढ के मारे बेचारे मर रहे हैं। ज़रा बाहर चलकर देखिए तो कितनी ठण्ढ पड़ती है।"

"अच्छा, तो कल कम्बल की एक गाँठ मँगवाकर बाँट देना।" दयालुप्रकृति सेठजी बोले।

रामसिंह यही तो चाहता था। दूसरे ही दिन उसने कम्बलों की एक गाँठ लेकर ग़रीब भिखारियों को बाँट दी। सब ने सेठ साहब को आशीर्वाद दिया और साथ ही रामसिंह को भी।

कहीं जङ्गल के जानवरों का चिल्लाना रुक सकता है! वे तो रात पड़ी और चिल्लाने लगे। फिर सेठजी ने रामसिंह को बुलाया और ज़रा झुँझलाते हुए बोले—"अबे, दो दिन हो गये। उन्हें खाने को दे दिया, ओढ़ने को दे दिया, अब वे फिर क्यों चिल्लाते हैं?"

रामसिंह, जो पक्का बातूनी और चालाक था, हँसता हुआ बोला—"मालिक साहब, अब वे आपको आशीर्वाद दे रहे हैं कि हमारे मालिक जुग-जुग जियें।"

"अच्छा, तो ठीक है। तब तो ऐसे ही करते रहेंगे।" भोले सेठजी बोले।

'जी हाँ, अब आप मज़े में सो जाइए' कह कर रामसिंह फिर अपनी ड्यूटी पर चला गया।

एक पौराणिक कहानी

विश्वामित्र ने राज्य क्यों छोड़ा ?

लेखक, श्रीयुत मोहनलाल नेहरू

राजा विश्वामित्र एक बार दिग्विजय को निकले। छोटे-छोटे बहुत-से राज्यों को अपने अधीन करते वे एक बड़े सुन्दर स्थान में पहुँचे। वहाँ हर तरह के फल-फूल के पेड़ लगे थे। वहाँ बहुत-से ब्राह्मण और साधु हरभजन में लीन थे। जङ्गली जानवर उन लोगों से ऐसे हिल गये थे कि उनके पास बराबर ही बने रहते थे। विश्वामित्र ने वहीं डेरा डाल दिया। उनके हाथी, घोड़े, पैदल सब वहीं आराम करने के लिए रुक गये।

पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि यह आश्रम वशिष्ठ का है जिसमें वे अपने चेलों के साथ रहते हैं। विश्वामित्र उनके दर्शन करने के लिए गये।

वशिष्ठ ने राजा को देखते ही कहा—"आओ राजन् बैठो, तुम और तुम्हारे बच्चे अच्छे तो हैं? तुम्हारी प्रजा कैसी है? कोई शत्रु तो तुम्हारा बाक़ी नहीं रहा?"

राजा ने उत्तर दिया—"आपकी कृपा से सब ठीक है। कोई देश विजय करने से बाक़ी नहीं रहा। घर जाते समय आपके दर्शन करने के लिए यहाँ ठहर गया।"

वशिष्ठ—अच्छा राजन्, तुम इस समय आराम करो और मैं तुम्हारे और तुम्हारी सेना के खाने-पीने का इन्तज़ाम करता हूँ।"

विश्वामित्र—महाराज, आप इतना कष्ट क्यों करते हैं? आपने जो कन्द-मूल-फल दिया है वही हमारे लिए काफ़ी है। आपके दर्शनों से ही हमें सब कुछ मिल गया। मुझे तो अब चलने की आज्ञा ही दीजिए।

वशिष्ठ—नहीं राजन्, आज तुम हमा हो। मैं आज तुम्हें जाने नहीं दूँगा। तुम्हा सेना ही आज यहाँ भोजन करेगी।

राजा—मगर महाराज, आपको इत सेना को खिलाने के लिए बड़ी कठि सामना करना पड़ेगा।

वशिष्ठ—राजन्, आज तुम देखोगे तपस्वी लोग क्या कर सकते हैं। यहाँ बैठे मैं आपका सारा प्रबन्ध दम भर में कर दूँ

विश्वामित्र बहुत चकराये और यह को उत्सुक हो उठे कि यह ब्राह्मण, जिसके पर एक साधारण गाय भर चर रही है, कै बड़ी सेना को खिलाने का प्रबन्ध कर सके

उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। ही देर में दूध और तरह-तरह के भोजन सबके सामने आ गये।

राजा ने वशिष्ठ से पूछा—महाराज, पूछ सकता हूँ कि इतना दूध इस छोटे-से कहाँ से मिल गया।

वशिष्ठ ने उत्तर दिया—"महाराज, य कामधेनु गाय का प्रताप है। मैं जितना दू उससे मिल सकता है।"

राजा ने कहा—"महाराज, तब तो यह राजाओं के योग्य है। साधु-सन्तों को इ का अधिकार नहीं होना चाहिए। आप इ को मुझे दे दें।"

वशिष्ठ ने उत्तर दिया—"राजन्, यह मूल है। गाय-बैल की कौन कमी जो

य को लेना चाहते हो। मैं इसे किसी को सकता।"

राजा—महाराज, मैं आपको इसके बदले में र गायें देने को तैयार हूँ।

शिष्ठ—राजन्, यहाँ एक गाय का रखना कल है, फिर हज़ार गाय की कौन कहे।

राजा—तो मैं इसे ज़बर्दस्ती ले जाऊँगा।

यह कहकर उन्होंने अपने आदमियों को —"कोई है? गाय को पकड़ लो।"

गाय पकड़ ली गई और राजा तुरन्त चल

वशिष्ठ ने अपने चेलों से सलाह की और त्रों को ख़बर भेजी कि राजा अपना धर्म मेरी गाय को पकड़े लिये जा रहा है। वे बचा सकते हों तो तुरन्त ही बचायें। मित्र-जातियाँ थीं पह्लव, शक और यवन। न्त ही राजा का रास्ता रोककर खड़ी हो गई। घोर युद्ध हुआ और दोनों तरफ़ के बहुत-से आदमी मारे गये। वशिष्ठ की कुटी जला दी गई पर अन्त में राजा की ही हार हुई। उनके सब पुत्र मारे गये और सेना भाग खड़ी हुई।

विश्वामित्र बहुत लज्जित हुए। उन्होंने राज-पाट छोड़कर वशिष्ठ को प्रणाम किया और कहा—"मैंने आपका बहुत अपराध किया। एक तो आप ब्राह्मण, दूसरे मेरी प्रजा। मैंने अपने कर्तव्य को भुला दिया था। आप मुझे क्षमा करें। मैं तप करूँगा और अपने पाप का प्रायश्चित्त करूँगा।"

वशिष्ठ ने कहा—"राजा का कर्तव्य है अपनी प्रजा का पालन करना—उसे अपनी सन्तान की तरह मानना। जो राजा ऐसा नहीं करता उसे दण्ड भोगना ही पड़ता है। तुमने दिग्विजय करके एक राज-धर्म का तो पालन किया, अब प्रजा का पालन करो।"

जाड़े की शाम

लेखक, श्रीयुत अशोक

ाम हो गई आसमान में,
पश्चिम में है लाली छाई;
और सुनहली किरणें देखो,
पेड़ों की चोटी पर आई।
सन-सन करती हवा चल रही,
हरी पत्तियाँ झूल रही हैं;

होवे रात घूमने निकलें,
परियाँ खुश हो फूल रही हैं।
चन्दा सर्दी में घुल-घुलकर,
शरद चाँदनी बहा रहा है;
जाड़ों की यह शाम निराली
ऐसा आनँद और कहाँ है?

एक मजेदार कहानी

महात्मा सियार

लेखक, श्रीयुत सुबोध मिश्र 'सुरेश'

एक जङ्गल में बहुत-से खरहे रहा करते थे और वहीं पर पीपल के पेड़ पर एक बूढ़ा बन्दर भी रहा करता था। बन्दर से खरहों की गहरी दोस्ती थी।

मगर खरहों को हमेशा आपस में झगड़ते देखकर बन्दर बहुत दुखी रहा करता था। वह खरहों को समझाता कि आपस में मेल न रखनेवालों को कष्ट उठाना पड़ता है। मगर खरहे नहीं मानते थे।

अचानक एक लोभी सियार खरहों के समीप आया और बोला—“घबड़ाओ मत। मैं भगवान् का भेजा हुआ दूत हूँ। मैं सिर्फ़ हवा पिया करता हूँ। मैं सिद्ध योगी हूँ।”

बन्दर के मना करने पर भी खरहे 'जय महात्मा! जय महात्मा!' कहते हुए सियार की प्रार्थना करने लगे। सियार महात्मा की तरह आसन जमाकर बैठ गया और उपदेश देने लगा।

खरहों ने विश्वास कर लिया कि सचमुच सियार महात्मा है। अब तो सियार की पूजा भी होने लगी। जब रात को खरहे सो जाते तो सियार घूम-घूमकर उन्हें देखता और मनमाना भोजन किया करता।

एक दिन सियार घूमते-घूमते जङ्गल में दूर निकल गया तो अचानक एक शेर से उसकी भेंट हुई। शेर दहाड़कर बोला—“मैं कई दिनों का भूखा हूँ, तुम्हें खाऊँगा।”

सियार ने चालाकी लगाई। बोला—“मैं भगवान् का भेजा हुआ दूत हूँ। तुम भगवान् की विनती किया करते हो। भगवान् ने तुम पर ख़ुश होकर, तुम्हारी भलाई के लिए मुझे भेजा है। मैं तुम्हें सुखी बनाऊँगा। चलो मेरे साथ, मैं तुम्हें ऐसी जगह बता देता हूँ जहाँ बहुत-से खरहे रहते हैं। वहाँ तुम रोज़-रोज़ भर पेट स्वादि
किया करोगे।”

शेर ख़ुश हुआ और सियार को आ
पर बैठाकर चला। सियार ने शेर को ख
पता बताया।

खरहे शेर को आते देखकर बहुत
और अपने पुराने मित्र बन्दर के पास प
बोले—“बन्दर भाई! कोई उपाय बताओ

बन्दर बोला—“यह सब सियार की
है। तुम लोगों का आपस में मेल नहीं
उसी का फल है। एक घास को कमज़ोर से
आदमी भी उखाड़ देता है, तोड़ फेंकता है।
उन्हीं घासों को मिलाने से जब रस्सी
जाती है तो पहलवानों के भी तोड़े नहीं टूटती
तुम लोग आपस में मेल कर लेते हो तो
शेर का लकड़दादा भी तुम्हारा बाल बाँ
कर सकता। एकता सबसे बड़ी ताक़त है।
जाओ। एक में एक मिलाने से ही ग्यार
है। बस, एक हो जाओ और एक साथ
पर धावा बोल दो।

और वही हुआ। खरहे एक साथ ही
टूट पड़े। कोइ नाक खरोचने लगा। किसी
ऐंठा तो कोई दुम को दाँत से काटने लगा
देर में ही शेर घबड़ा गया और बाप-बाप
हुआ भागा।

जो अपनी भलाई के लिए दूसरों
चाहता है वह कभी सुखी नहीं हो सकता।
ने अपनी जान बचाने के लिए खरहों
चाही। फल यह हुआ कि शेर सियार
कर गया।

परोपकार—दूसरों की भलाई—ही
सुख और आनन्द है।

शहनाई

लेखक, श्रीयुत वसन्तकुमार अग्रवाल

मेरा परिवार बहुत छोटा है। यही दादी, पिता, चाचा, भाई मोहन, बहन विमला। चाचा ज़मींदारी की देख-भाल करते हैं। दार आदमी हैं। बिना ब्याज के वक्त ज़रूरत पया देते हैं। गाँव में उनका मान है। पिता वकील हैं, मामूली हैसियत के। दनी पचास-साठ, बहुत कम। परेशानी बहुत। माँ घर का काम-काज देखती हैं। रोटी हैं। अन्य आवश्यक कामों में हिस्सा हैं।

दादी माँ पर नियन्त्रण रखती हैं। रात को समय दादी माँ से पैर दबवाती हैं, माँ हमसे—ा से दायाँ, मुझसे बायाँ।

फिर भी हम बच्चों से कोई खास मतलब है। ठाठ से खेले खाये। मैं आठवीं में, बहन वीं में पढ़ती है। छोटा भाई मस्त मौला है। दर्जे का 'सेकेंड इयर' है। पार साल इसी का 'थर्ड इयर' होने की पूरी आशा है। ठ है। माँ का प्यारा है, चाचा का दुलारा मैं भी बाप का दुलारा हूँ। टीपू भी प्यार ा है।

लेकिन बहन की पूछ नहीं है। हमने प्यार ा है, बहन ने दादी की झिड़कियाँ। पर री कितनी सीधी है। झाड़ना, बुहारना, हाथ ना, चूल्हा जलाना सब उसी के माथे है। दादी की समझ में यह काम नहीं है।

चाचा बूढ़े हैं। मन अमीर है। जानवरों की नहीं कर सकते पर चार गायें पाले हैं—काली, एक भूरी, एक सफ़ेद। गउओं के लिए एक मड़इया है। छोटी है। उसमें भूसा भी जमा है। बरसात में चूती थी। इस बार ख़ूब चूई है।

चाचा कह चुके हैं, भगवान् के सामने शपथ ले चुके हैं, कि वे चाहे मर जायँ पर यदि गाय ने अबकी बार बछिया दी तो बाजे ज़रूर बजेंगे। पिताजी इस शपथ को दोहरा चुके हैं, जाने किस भाव से।

रात को गाय के बाड़े में बकरियाँ घुस जाती हैं। इसकी रखवाली के लिए एक कुत्ता रक्खा गया है। रोज़ गोश्त और दूध-रोटी झाड़ता है। कुत्ते को एक नई ज़ञ्जीर बाज़ार से आई है। गन्दा न हो जाय, ज़मींदार साहब का कुत्ता है, एक नौकर नहलाने-धुलाने को रक्खा गया है। जो कुछ है और होता है, चाचा की बदौलत है और होता है।

गाय में चारा-भूसा लगता है। बेकार का खर्च है। पिता को गाय पसन्द नहीं। पर बँधी गाय के दूध का शौक़ है। चाचा गाय को दादी के समान मानते हैं। उसकी यथोचित सेवा करते हैं। पिता को गोबर-गन्दगी से, मच्छड़ों से घृणा है। चाचा गोबर को पवित्र समझते हैं। घृणा नहीं करते। घर लीपा जाता है, कण्डे बनते हैं। और पसन्द करते हैं इसलिए नहीं कि विटामिन होते हैं, गऊ माता का प्रसाद है।

हम लोगों ने गायों का ख़ूब दूध खाया है। खीर भी, रबड़ी भी, मलाई भी। सिर्फ़ काली और भूरी दूध दे रही हैं। सफ़ेद बहुत दिन से छूटी है। दूसरी काली भी इधर चार-पाँच रोज़ से दूध देना बन्द कर चुकी है।

शहर में हैज़े का प्रकोप है। घर-घर में बीमारी है। तमाम लोग गाँव छोड़कर चले गये हैं। लगभग आधा गाँव उजाड़ हो गया है। ईश्वर की कृपा से हमारा घर बचा है। इधर दादी को बुख़ार आने लगा है। बढ़कर शायद हैज़ा हो गया है। यही अब गईं तब गईं। पर तक़दीर का खेल। दादी मृत्यु के मुख से घसिट आईं। घर में पूजा हुई। दादी की नीरोगता के साथ ही साथ अन्य लोगों के स्वस्थ रहने की कामना की गई। हम लोगों को मिठाई मिली। पण्डितजी को दस रुपये। साथ में बहुत-सा कपड़ा-दुपट्टा, कुर्त्ता, धोती, नौकरों ने रुपये पाये। भग्गू ने दो, मुलिया ने एक, जगिया ने भी शायद एक से अधिक नहीं पाया। पण्डितजी और माँगते थे पर पिता का ख़याल करके चाचा ने हाथ रोक लिया था।

शायद चाचा से पूजा के वक़्त कुछ भूल हो गई। भगवान् बिगड़ गये। चाचा को रात के वक़्त बुख़ार आ गया। मामूली मलेरिया बुख़ार।

सफ़ेद गाय बछड़ा देनेवाली है। अब उसकी सेवा कौन करे? ऐसे में तो सेवा की और ज़रूरत है। अब सेवा का भार लड़कों पर पड़ा है। जो कुछ बन सकता है, कर रहे हैं। रात को चाचा को टाइफ़ाइड हो गया है। गाय कुछ नहीं खा रही है, जाने कैसे जान गई है।

शरद पूनो का दिन है। लोग रात तरह सोये हैं। चाचा को भी आज आराम

"बस बेटा, अब पैर दबाओ। खिड़की आने दो। गायों की दालान के तरफ़ की भी खोल दो। गायों को चारा डाल आओ

सुबह मैं सबसे पहले उठा। पहले पास दौड़ा। एक बछिया पैदा हो शहनाईवाले को बुलाया, फिर सबको चाचा को भी बताने आया। सो रहे हैं रहा हूँ, पर उठ नहीं रहे हैं। पिताजी नब्ज़ देखते ही आँसू की झड़ी लग गई को ढँक दिया। कहते हैं चाचा की चाह की थी। चाह पूरी होते ही चाचा तुरन्त च

अन्दर चाचा की अर्थी उठ रही है, शहनाई बज रही है। मरे चाचा शहनाई हैं, बछिया के पैदाइश की और अपने स्व की। हम तेली खाने को उत्सुक हैं। बात की है। आज सबेरे की मालूम होती है परिवार और छोटा हो गया है। गायें हैं। एक बड़ी बछिया बची है। पिता को प्रेम नहीं है तो भी उसे रख लिया है नहीं क्यों?

फिर शहनाई नहीं बजी पर बिना सुनाई पड़ रही है।

जाड़े की धूप

लेखिका, कुमारी प्रमीला

धूप भागती जाती है।
जाड़े के डर से यह देखो।
देर न अब कर पाती है॥
सुबह देर से आया करती,
शाम जल्द है जाया करती;

दिनभर सबको भाती है॥
बनी चाँदनी-सी है शीतल,
धरती पेड़ न जाते हैं जल
दिन तो जल्दी जाता है ढल
रात न पर कट पाती है

बच्चों का कमरा

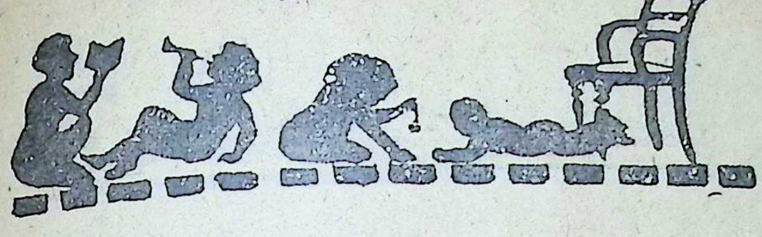

फूल

लेखिका, कुमारी मोहिनीबाला श्रीवास्तव

री खिड़की के बाहर ,
क लता लगी है सुन्दर ;
खिलते हैं फूल मनोहर ,
वे सफ़ेद बहु सुन्दर ।
है सुबह जब हवा चलती ,
है पत्ती - पत्ती हिलती ;
हैं फूल झूलते जिन पर ,
लगते वे कितने सुन्दर ।
ब हवा इधर है आती ,
संग में सुगन्ध है लाती ;
न की है कली खिलाती ;
मैं कितनी ख़ुश हो जाती।

——

काला बिल्ली

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण कपूर, हरदोई

काली सी बिल्ली
भूरी सी बिल्ली,
घूर-घूर देखती है
कैसी चिबिल्ली;
कूदती है फाँदती है
झुनुक, झुनुक ।
चूहे का मुखड़ा
रोटी का टुकड़ा
कूद फाँद करके
उसको जा पकड़ा,
चुपके से खाती है
कुतुर कुतुर ॥

——

मेरी माँ

लेखक, श्रीयुत वेदव्रत शर्मा 'विभु', बुलन्दशहर

जब माँ आती है याद मुझे ,
मैं रोया करता बार-बार ;
कितना करती थी प्यार मुझे ,
पर न था भाग्य में बदा प्यार ।
जब मैं रोने लग जाता था
गोदी में ले चुप करती थी;
वीरों की कथा सुना करके
मन मेरा वह ख़ुश करती थी ।

——

मेरा भैया

लेखिका, कुमारी राजकिशोरीदेवी त्रिपाठी

मेरा भैया अति शैतान ।
छोटे बाबू उसका नाम ॥
दिन भर वह है शोर मचाता ।
अम्माँजी को ख़ूब खिझाता ॥
दो पैसे का चेहरा लाकर ।
अपने मुँह में उसे लगाकर ॥
हनूमान का रूप बनाता ।
सबको है वह ख़ूब डराता ॥

——

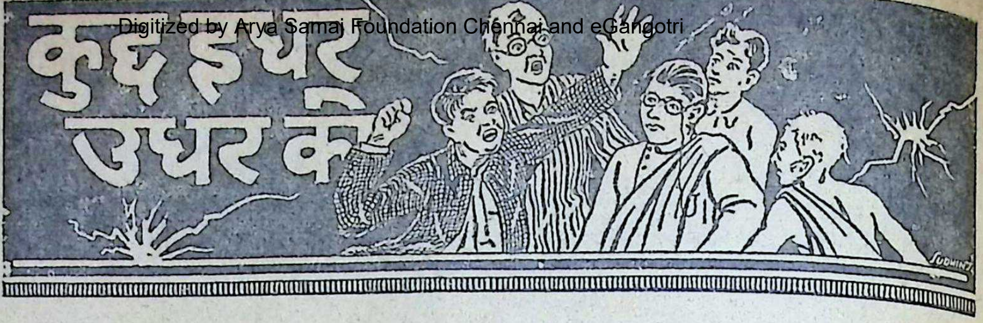

कुछ इधर उधर के

नये खेल सीखिए

(पिछले अङ्क में हमने बालसखाओं से अपने-अपने सबसे अच्छे खेल लिख भेजने की प्रार्थना की थी जिससे दूसरे बालसखा भी उन खेलों को सीख सकें। हमारे पास बहुत-से पत्र आये हैं। सब खेलों को हम एक साथ नहीं छाप सकते। यहाँ केवल दो खेलों के बारे में बताया जा रहा है।)

अन्धा-बूढ़ा

यह खेल एक बड़े मैदान में खेला जाना चाहिए। एक लड़का आँखों पर पट्टी बाँधकर बीच में खड़ा हो जाता है। यह अन्धा बूढ़ा कहलाता है। सब लड़के मैदान में बिखर जाते हैं। सीटी बजते ही लड़के धीरे-धीरे बूढ़े की ओर बढ़ते हैं। जो लड़का बूढ़ा बना हुआ होता है, वह आहट पाकर उँगली उठाता है। यदि उधर कोई लड़का हुआ तो फिर सीटी बजती है और सब लड़के अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाते हैं। अब बूढ़ा उस लड़के से किसी जानवर की बोली बोलने को कहता है। अगर बोली सुनकर बूढ़ा लड़के को पहचान लेता है तो उस लड़के को बूढ़ा बनना पड़ता है। नहीं तो खेल चलता रहता है।

झपकी

यह खेल बड़ा मज़ेदार है और किसी समय कमरे में बैठकर खेला जा सकता है। कुछ लड़के मिलकर एक जगह पर बैठ जायँ। अपने में से एक खिलानेवाला चुन लें। खिलानेवाला जल्दी-जल्दी कहता है 'साँप भागा, मछली तैरी, चिड़िया उड़ी, घोड़ा दौड़ा' आदि। सब लड़के उसे ध्यान से सुनते रहते हैं। वाला बीच में कुछ ग़लत बोल जाता है जै उड़ी'। इस पर सब लड़के ताली बजाने जो ताली नहीं बजाता उसे 'झपकी आ हैं, क्योंकि वह खिलानेवाले की ग़लती सका। जिसे झपकी आ जाती है वह अलग हो जाता है। इस तरह एक के बा लड़का अलग होता जायगा। जो आ 'जागता' रहे वही जीतता है। इसमें खि को बहुत होशियार होना चाहिए, नहीं झपकी आनेवाले लड़के को पकड़ नहीं स

—हरप्रसाद टएड

आकाश नीला क्यों ?

आकाश को नीला रङ्ग सूर्य से मि सूर्य की रोशनी अलग-अलग रङ्गों की कि समूह है। सब मिलकर सफ़ेद रोशनी पै हैं। हवा में धूल के बहुत-से कण सदा उ हैं जो सूर्य की किरणों से टकराकर नी को छोड़कर और सभी रङ्गों को अपने लेते हैं। जो नीला रङ्ग धूल द्वारा नहीं वही आसमान का रङ्ग हो जाता है।

चन्द्रमा में धब्बे क्यों ?

वैज्ञानिकों का कहना है कि चन्द्रमा पृथ्वी की तरह मैदान, घाटियों और पहाड़ों हुई एक दुनिया है। दूरबीन से देखने पर इ निशान भी दिखलाई पड़ते हैं। जो का दीखते हैं उनमें से ज्यादा तो ज्वालामुखी के मुहानों के निशान हैं। ये बहुत बड़े हैं।

मनो-विनोद

शेखचिल्ली बैठे-बैठे रो रहे थे इतने ही में उनका वहाँ आ धमका और पूछने लगा—“दोस्त, क्यों रो ?” वे बोले—“भाई, इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी घर- बहुत बीमार है। शायद वह एक-डेढ़ घण्टे में मर । मैं अभी एक गाँव को जा रहा हूँ जो दो मील पर है। मेरे लौटने से पहले ही वह मर जायगी। मैं पहले ही रोने का फ़र्ज़ अदा कर रहा हूँ।”

× × × ×

लड़के को तमाचा मारकर पण्डितजी बोले— ! तुझे अभी सही लिखना तक नहीं आया ?”

जो पण्डितजी से कई दफ़ा करारी मार खा , बोला—“पण्डितजी ! जो मैं पढ़े-पढ़ाये को न भूल तो मेरा नाम ‘मूला’ !”

—रामचरण गुप्त

× × × ×

—(विद्यार्थी से) क्यों रे श्याम, राम और में क्या रिश्ता था ?

श्याम—पण्डितजी, वे आपस में मित्र थे।

—कैसे ? वे तो दुश्मन थे।

वि० श्याम—आप ही ने तो बताया था कि सत्पुरुषों के कोई भी दुश्मन नहीं हुआ करते। रामजी तो सत्पुरुष थे।

—सागरमल मेहता इन्दौर

× × × ×

स्त्री—(पति से) सुना, घर में आटा नहीं है ?

पति (बहरा)—ऐं क्या ? आटा नहीं है।

स्त्री—बिल्कुल नहीं है।

पति—ठीक है आज रोटी रूखी ही बना लेना।

× × × ×

महेश—अरे मित्र बलिवन्त, चलो नुमायश देख आवें।

बलिवन्त—ठहरिए पाँच मिनिट, ज़रा हाथों का मैल छुड़ा लूँ, क्योंकि वे बहुत गन्दे हो गये हैं।

महेश—(थोड़ी देर पश्चात्) क्या ? अभी तक मैल छुड़ा ही नहीं पाया ? अच्छा, अब धोबी के यहाँ से छुड़वा लेना।

– भीष्मसिंह चौहान

× × × ×

अध्यापक—मोहन, तुम अपना पाठ याद नहीं करते हो। मैं तुम्हारे पिता को मुझसे मिलने के लिए कहलवाऊँगा।

मोहन—मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे पिता से मिलने की कृपा न करें। मेरे पिता एक डाक्टर हैं। अगर कोई उन्हें देखना चाहता है तो पहले पाँच रुपये (फ़ीस के) देने पड़ते हैं।

—रतनचन्द सावनसुखा

× × × ×

मास्टर—नेमू कलवाला पाठ याद किया ?

नेमू—मास्टर साहब, मेरी पुस्तक में वह पाठ था ही नहीं।

मास्टर—क्या हो गया,

नेमू—मैंने फाड़ दिया।

—जोशी-बन्धु

× × × ×

मोहन—(सन्दूक़ खोलकर और उसमें चूहा देखकर) बाबा! चूहा।

बाबा—(हँसकर) क्या कहा ? मैं चूहा हूँ ?

× × × ×

मास्टर—(हरी से ग़लती होने पर) अच्छा, कान पकड़ो।

हरी—(आगे बढ़कर मास्टर के कान पकड़ता हुआ) लीजिए।

× × × ×

शिक्षक—(छात्र के ग़लती करने पर) तुम बड़े गधे हो जी !

छात्र—और गधे को पढ़ानेवाले कौन ?

—राजेन्द्रसिंह यादव 'व.णा'

× × × ×

एक समय एक मास्टर साहब ने लड़के को
कहा कि तुम्हारे इतने बड़े लड़के हाई स्कूल पास
उस लड़के ने कहा कि आपके इतने
जवाहरलाल नेहरू भारतवर्ष के नेता हैं और
मामूली मास्टर ही हैं। इतना सुनते ही मास्टर
सब लड़के हँसने लगे।

—सत्यप्र

× × × ×

अन्धा भिखारी—(घर की मलकिन से)
जाय। मेरी दोनों आँखें···

"यहाँ नहीं हैं" कहकर मालकिन ने दरव
कर लिया।

× × × ×

शिक्षक—(छात्र से)—'ख़ाली' शब्द का प्र
जैसे यह मकान बहुत दिनों से ख़ाली है।

छात्र—आज मैंने बहुत मिठाई 'खा ली' है।

—वल्लभर

× × × ×

माता—जाओ बेटा, अपने पिताजी को भोजन
लिवा लाओ। देर हो गई तो कहीं नाराज न हो
बेटा—वाह, माताजी! पिताजी कभी तुमसे
थोड़े ही होते हैं। वे तो मुझसे नाराज़ होते हैं और
खड़ी-खड़ी तमाशा देखा करती हो।

—वेदव्रत

प्रश्नपहेली

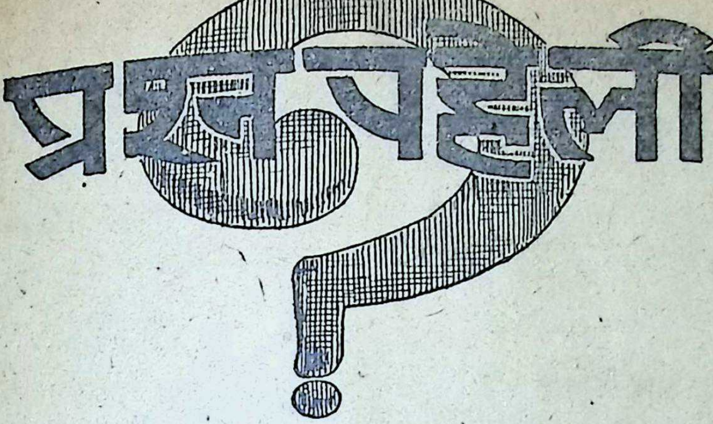

आ जाता जब क्रोध मुझे,
मैं पत्थर बन गिरता भू पर;
पर गिरते ही मेरा यह तन,
जल बनता पल में गलकर।
(ओला)

× × ×

आदि कटे से हर बन जाता,
मध्य कटे से नर हो जाता;
जो कोई मुझको अपनाता,
खेत हरा उसका हो जाता।
(नहर)

—श्रीपविराय 'विशारद'

× × ×

पङ्ख हैं पर उड़ता नहीं,
चलता हूँ पर बढ़ता नहीं;
पंछी नहीं न उड़ूँ अकास,
सीत बाँटता सबके पास।
(बिजली का पङ्खा)

—विमल कोछड़

× × ×

हुआ, नहीं है जैसा होता,
आधा बगुला आधा तोता।
(मूली)

—राधारानी भार्गव

× × ×

सारा तन मेरा मिट्टी का,
पर मैं महल बनाती हूँ;
पक जाने पर वर्षों रहती,
बिना पके गल जाती हूँ।
(ईंट)

—पुरुषोत्तमदास काबरा

× × ×

काला घोड़ा, सफ़ेद सवार,
काम पड़े तू उसे पुकार।
(रोटी)

—भवानीशङ्कर चतुर्वेदी

× × ×

मैं आती हूँ, मैं जाती हूँ,
मैं हरदम काला खाती हूँ,
जो तुम पीते, वह मैं पीती,
मैं तुम्हें दूर ले जाती हूँ।
(रेल)

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम,
लिखना-पढ़ना मेरा काम;
मेरे बिना रहें अज्ञानी,
मुझको पा बन जाते मानी।
(विद्या)

—चिरञ्जीलाल केडिया

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आग में जलना मेरा काम;
लोहे का तन रखता राम,
बतलाओ तो मिले इनाम।
(चिमटा)

—रतनचन्द सावनसुखा

सम्पादक का पृष्ठ

इस अंक के साथ 'बाल-सखा' का २६ वाँ साल समाप्त होता है। अगले अंक से 'बाल-सखा' नये वर्ष में प्रवेश करेगा। अब तक हमें अपने लेखकों, कवियों, पाठकों का बराबर सहयोग मिलता रहा है। हमें पूरी आशा है कि आगे भी वे हम पर इसी प्रकार अपनी कृपा बनाये रहेंगे।

× × × ×

कानपुर में श्री जयनारायण सिनहा को चि का बहुत शौक़ है। वे लिखते हैं कि उनके पा चिड़ियाँ हैं। वे विचित्र चिड़ियों के बारे में जान हैं। यदि आप इस सम्बन्ध में कुछ जानते हों बतायें।

× × ×

श्रीयुत 'शरद'

'बाल-सखा' के सुपरिचित बाल-कवि श्री हरिदयाल चतुर्वेदी की कविताओं का एक संग्रह 'जादूगर' अभी हाल में शिवानी बुकडिपो, लखनऊ से प्रकाशित हुआ है। चतुर्वेदीजी की अवस्था अभी केवल बारह वर्ष की है, पर कवितायें आपकी बड़ी ही सरस और सुन्दर होती हैं। जो बालसखा उनकी 'जादूगर' पुस्तक मँगाना चाहें वे प्रकाशक के यहाँ से मँगा सकते हैं। मूल्य आठ आना है।

× × × ×

भूल-सुधार

गत अंक में श्रीयुत रामानन्द चटर्जी का प्रकाशित हुआ था, परन्तु भूल से उस पर लेख छपने से रह गया था। उस लेख के लेखक श्री हैं। वे एक अच्छे लेखक और कहानीकार हैं। में भी उनकी एक कहानी छपी है। आशा है, उक्त लेख के लेखक के स्थान पर श्रीयुत शरद का लेंगे। उनका चित्र भा हम यहाँ पर प्रकाशित कर

नहीं छपेंगी

निम्नलिखित रचनायें 'बाल-सखा' में स्थानाभाव के कारण नहीं छप सकेंगी। प्रेषकगण क्षमा करें।

कवितायें—सर्वश्री गोविन्दराम मिएडा, कुमारी पुष्पा हूजा, काशीप्रसाद डरोलिया, सागरमल मेह शकुन्तलादेवी मिश्र, कुमारी शोभादेवी मिश्र, उगमसिंह सेल, प्रभातकुमार राय चौधरी, विपिनविहारी वा कुसुमकुमारी माथुर की।

कहानियाँ—सर्वश्री श्यामलाल गुप्त, कुमारी शकुन्तलादेवी मिश्र, श्रीकृष्ण सेठ, विपिनविहारी वाजपे गीतादेवी श्रीवास्तव 'पड़ोसिन' और सुरेन्द्रनाथ बड़वानी की।

फुटकल—सर्वश्री गौरीशंकर पुरोहित 'निर्मल', मदनमोहन [illegible], अविनाशचन्द्र, प्रियवल्लभ प्रकाश गोयल, विद्यार्थी उगमसिंह, गोपालकृष्ण बांगड़ की।

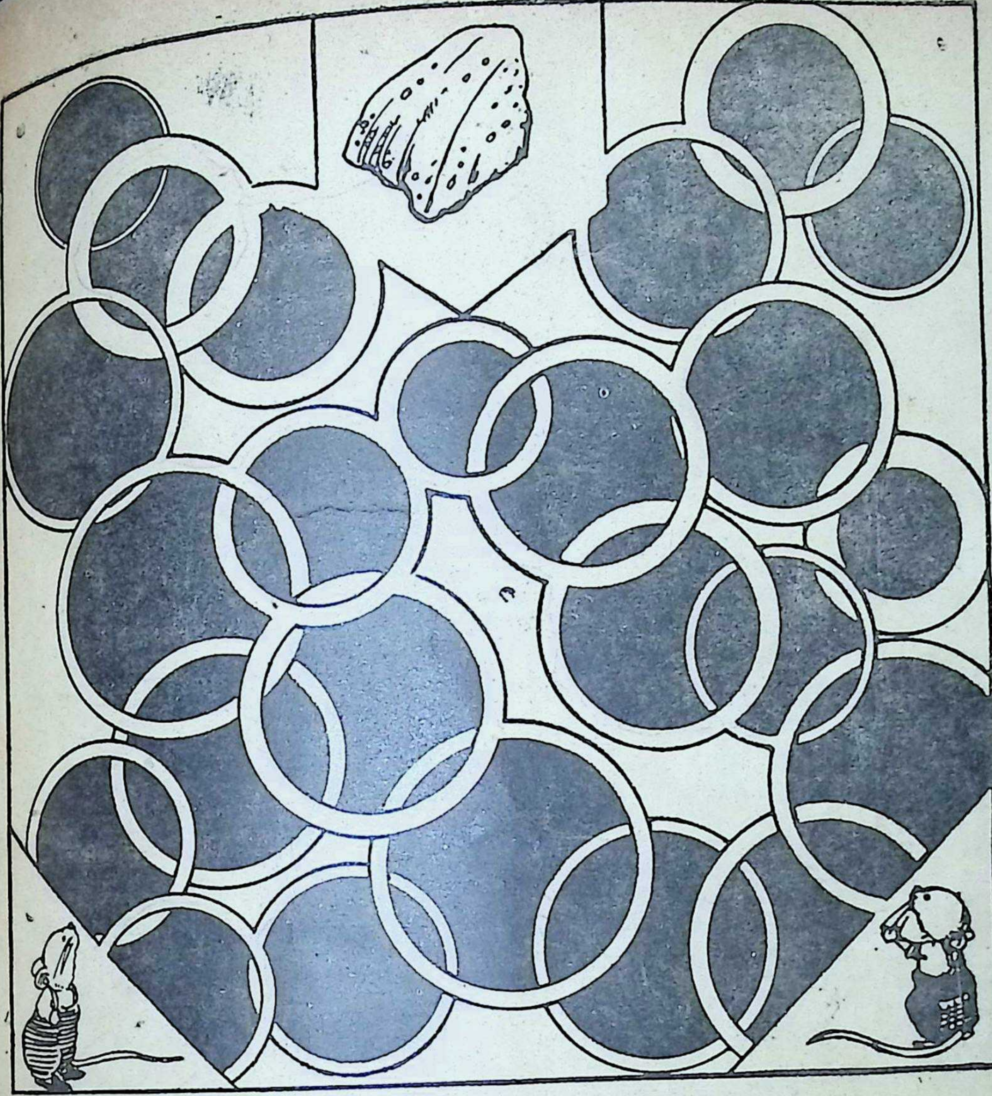

चूहेराम की परेशानी

र में रहती है इक बिल्ली,
भी करती नहीं निठल्ली;
र चूहों के यम की नानी,
न्हें पकड़ती तुरत सयानी।
चूहेराम उसी के डर से,
नहीं निकलते अपने घर से;
रात हुई झट कपड़े पहने,
लगे हृदय में अपने कहने।
न पूसी पहचानेगी,
घरवाला जानेगी;
छों पर वे हाथ फेरते,
टी की इक टूक हेरते—

लगे घूमने घर में ऐसे,
घर के होवें मालिक जैसे;
घर का कोना-कोना छाना,
पर न मिला उनको कुछ खाना।
दीख पड़ी इतने में रोटी,
पर तक़दीर हुई थी खोटी;
राह न ऐसी थी दिखलाती,
रोटी तक उनको पहुँचाती।
जायँ किधर से खड़े बिसूरें,
मूँछ पकड़, रोटी को घूरें;
तुम्हीं उन्हें आ राह बताओ,
रोटी तक उनको पहुँचाओ।

आप नहीं जानतीं कि वह कहां होगा ! —लेकिन इतना आ

जानती हैं कि वह "मैलके खतरे" से सुरक्षित

हो सकता है कि वह यातो बाजारमें चक्कर लगा रहा हो—या नदी या तालाबके किनारे कीचड़में खेल र यातो फुटवाल खेलनेमें धूलमें लथपथ हो रहा हो। लेकिन चाहे वह जहां भी हो, इतना आप जरूर जानती है मैला हो रहा है। क्या यह एक सौभाग्यकी बात नहीं है कि आपने उसे लाइफबॉयका इस्तेमाल करनेकी आद दी है? इस लीये जो भी हो, पर आप जानती हैं कि मैल उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकेगी।

यह कितनी अच्छी बात है कि लाइफबॉय साबुनको हर रोज इस्तेमाल करने से बच्चे "मैलके खतरे" से सुर हैं, क्योंकि यह खतरा हर जगह रहता है। हर तरह की मैलमें कीटाणु पैदा होते हैं—ऐसे खतरनाक की आसानीसे बीमारी पैदा कर सकते हैं और संक्रामक रोग फैला सकते हैं। लेकिन लाइफबॉय साबन एण्टीसेप्टि भारतमें यही एकमात्र साबुन है, जिसमें विशेष स्वास्थ्य-रक्षक तत्व है जिससे लाइफबॉय विश्वविख्यात बन

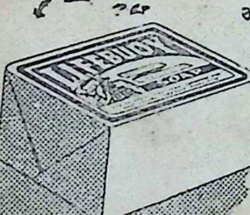

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक जरूरी आदत है

L 68-95 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) L

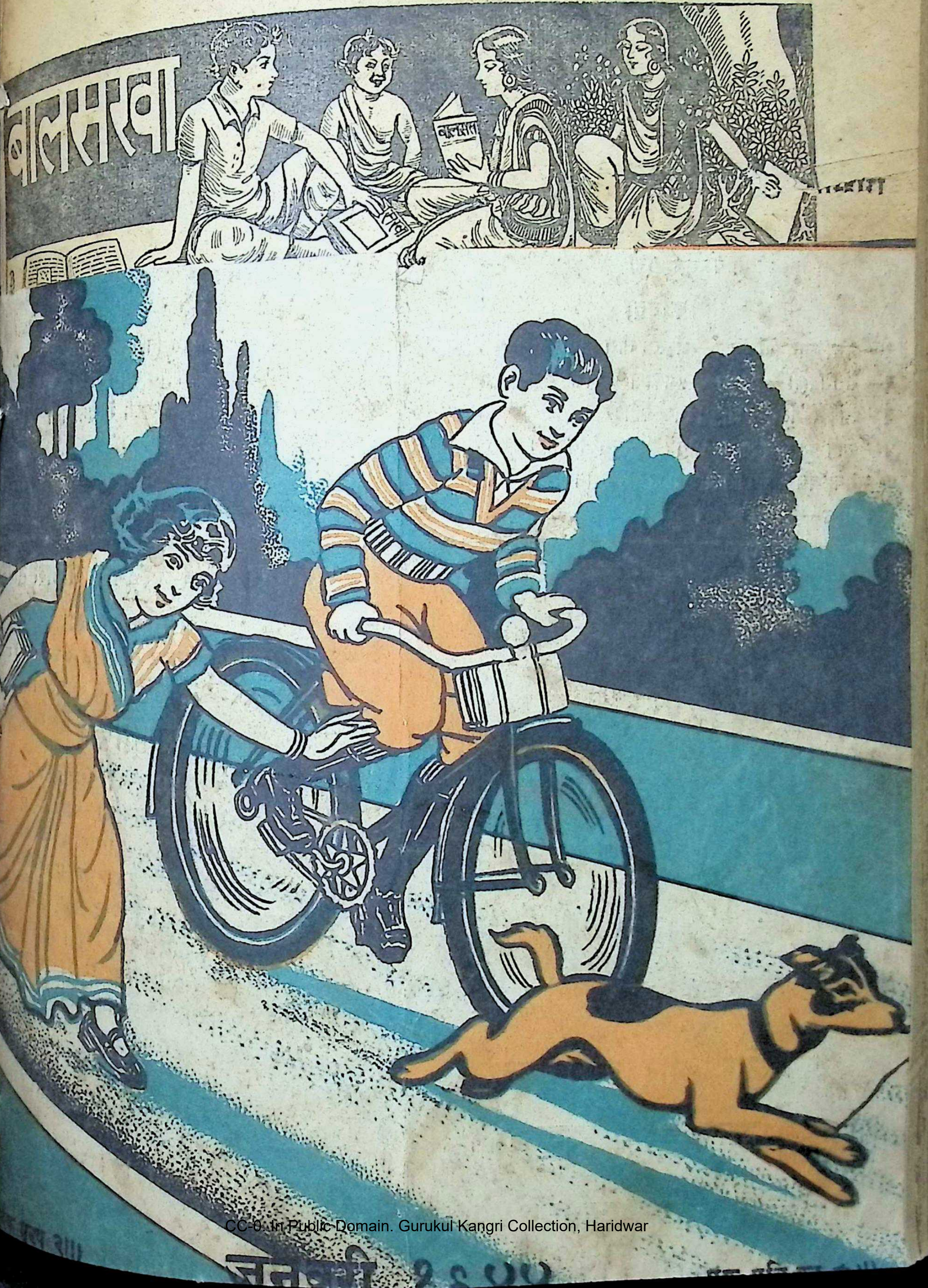
बालसखा
बालसखा
जनवरी १९४४

८—कुहू-कुहू—श्रीयुत बलराम, वर्धा १

कविता

१—उठ, जाग मेरे लाल—श्रीमती तारा पाँड़े ... १
२—मेरी बिल्ली—श्रीयुत चन्द्रप्रकाश 'प्रकाश' ... ३
३—जाड़े के दिन—श्रीयुत स्वर्ण-सहोदर ७
४—चूहों की चालाकी—श्रीयुत 'अनन्य' विशारद ... १२
५—नया वर्ष—कुमारी शैलबाला सकलानी' ... १३
६—प्रश्न—कुमारी प्रमीला १५

३—बच्चों का कमरा—

मुन्नी और शामा—श्रीयुत उमाकान्त जोशी
जाड़ा—श्रीयुत विपिनविहारी वाजपेयी ...
नया वर्ष—श्रीयुत ओम्प्रकाश 'प्रेमी' ...
माँ की गाय—कुमारी मोहिनीबाला ...
४—प्रश्न-पहेली ... ...
५—मनो-विनोद ... ...
६—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरे-बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट
और चस्त बनते हैं।

बनारस के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

संशोधित आज्ञा

बनारस के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने जनता की के लिए ता० २०-९-४३ को निम्न आज्ञा जारी की

आज्ञापत्र

१७ जनवरी, १९४२ की विज्ञप्ति नं० २ एक्ट द्वारा भारतरक्षा क़ानून की धारा ५९ ए के सार प्राप्त अधिकारियों के आधार पर मैं, बनार डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, प्रस्तुत आज्ञापत्र द्वारा अप आज्ञापत्रों में, जो गत २२ अक्टूबर, १९४२ को किये गये थे, कुछ संशोधन कर रहा हूँ। वह संशो प्रकार है—मेरे पूर्ववर्ती आज्ञापत्र की उपधारा तारीख २२-१०-४२ के अनुसार अब यह आ नहीं है कि रेलवे लाइनों से एक मील के भीत हुए गाँवों में से प्रत्येक के निवासी रेलवे ला पहरेदारों को सहायता देने के लिए प्रत्येक रा चार-चार आदमी दें।

उक्त तारीख को जारी किये गये शेष आ पूर्ववत् रहेंगे।

(ह०) ए० डी० पन
डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, ब

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

[२८] जनवरी १९४४—माघ २००० [संख्या १

उठ, जाग मेरे लाल !

लेखिका, श्रीमती तारा पाँड़े

कमलिनी हँसकर खिली,
नभ में अरुणिमा छा गई।
विश्व के कण-कण जगे,
मुस्कान ऊषा ला गई।
पलकें खोल, गाते विहग के लघु बाल !

आज न्यौछावर हुए
मन, प्राण यह छवि देखकर,

गा रहा कोई प्रभाती,
दूर-वह अति दूर पर।
बाँसुरी कब से बजी, तू भी मिला स्वर ताल !
किरण आकर छू गई
तेरे अधर सुकुमार।
भर गई तेरे दृगों में
दिवस का उपहार।
उठ गये निज-निज गृहों में लाल, बाल गोपाल !

उठ, जाग मेरे लाल !

गंगा का आना

लेखक, पं० मोहनलाल नेहरू

कहते हैं कि गङ्गा की धारा पहले आकाश में ही बहती थी। राजा भगीरथ के बाप और दादा इस बात की कोशिश करते-करते मर गये कि वह भू-लोक में उतर आवे मगर वह न उतरी। जब भगीरथ गद्दी पर बैठे तो उन्होंने गङ्गा को उतारने के लिए घोर तप किया और ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया। तब एक दिन ब्रह्मा ने उन्हें दर्शन दिये।

ब्रह्मा--मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे वर माँगो।

भा०--देव, आप अन्तर्यामी हो फिर भी मुझसे पूछते हो कि मैं क्या चाहता हूँ। आप जानते हो, मेरे पिता और पितामह और उनके बाद मैं गङ्गाजी की धारा को भू-लोक में लाने के वास्ते यह घोर तप कर रहा था। आप प्रसन्न हो तो मुझे यह वर दो कि गङ्गा की पवित्र धारा यहाँ उतर आवे और जिधर मैं कहूँ उधर बहे।

ब्रह्मा—पुत्र, तूने जो वर माँगा वह तो तभी मिल सकता है जब शिव और गङ्गा दोनों राज़ी हों। इस वास्ते मैं उन्हें बुलाता हूँ और मुझे आशा है कि वे भी तेरी इस घोर तपस्या से प्रसन्न होकर तेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

(शिव और गङ्गा का प्रवेश) भगीरथ दंडवत् करता है।

भ०—देव, मैं बड़ा ही भाग्यवान् हूँ जो आपने मुझे दर्शन दिये। आज मेरे समान कौन हो सकता है। यदि आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो गङ्गा माता की पवित्र धारा स्वर्ग से नीचे लाकर इस भू-लोक में बहा दें जिससे मनुष्य मात्र अपने पापों को धो सकें।

ब्रह्मा--कहो गङ्गा, तुम अपनी धारा ज़मीन पर बहाने को तैयार हो? हम तो कहेंगे रा तप ने हम देवताओं को भी जीत लिया है

शिव—राजन्, हम तुम्हारे तप और तुम्हारे वास्ते सब कुछ करने को

गङ्गा—क्या ख़ूब, आपसे राजा क्या हैं। यह तो भार मुझपर है। से नीचे खींचा जा रहा है, मैं चाहूँ या मैं ऐसी गई-गुज़री कि मिट्टी-कूड़े में बहूँ।

शिव--देवि, तुम ऐसी परोपकारी हो बात कह रही हो! देखो, सारे मनुष्यमात्र कार होगा। ज़रा झुकनेवाले ही नीचे उद्धार कर सकते हैं। जो वृक्ष फलों से वही तो झुक जाता है।

गङ्गा--[क्रोध में] देव, तुम्हारा है मगर जब मुझे [तुम] नीचे उतारने प तो शायद मुझे उतरना ही पड़ेगा परन्तु य रक्खो कि [मेरा] तेज यह धरती बरदा सकेगी। मैं गिरते समय पाताल तक घुस और धरती के टुकड़े उड़ा दूँगी।

शिव--देवि, मैं धरती के बचाने सहायता कर सकता हूँ। तुम मेरे सिर धारा गिरा दो और कुछ ज़ोर मैं रोक को रसातल जाने से बचा दूँगा।

गङ्गा--अच्छा, यह अभिमान! तो आना इस वास्ते ही स्वीकार है कि तुम्हें स्वाभिमान का मज़ा चखा दूँ और धरती तुम्हें भी रसातल को पहुँचा दूँ। तैयार हो

इतना कहकर गङ्गा चली गई।

भ०—भगवन्, आप मेरे वास्ते तई इस सङ्कट में पड़ने देते हैं।

व—राजन्, तुम कुछ चिन्ता न करो। मैं प से बहुत प्रसन्न हूँ और भक्तों के वास्ते र सकता हूँ। यह तो कोई बात नहीं। भिमान से भरी है। शक्तिशाली व्यक्ति अभिमान में यह भूल जाता है कि दूसरा से भी ज़्यादा शक्तिशाली है। वह तो उससे ही पर जान सकता है, फिर वह व्यक्ति चाहे चाहे देवता। मुझे तो अपने भक्तों का सिद्ध करने के अलावा देवता, देवी तथा ा भी तो सुधार करना है।

ा—शिव! देखो, वह गङ्गा की धारा से बड़े ज़ोर से उतर रही है। गङ्गा क्रोध है। तुम अपनी जटा में उसे रोक लो।

शिव सीधे तनकर खड़े हो जाते हैं, गङ्गा रा उनके सिर पर गिरती है, ज़ोर का ता है।)

ा—शिव, लो अपने किये का मज़ा चक्खो।

व—देवि, मैं तैयार हूँ, तुम्हारा इन्तज़ार था।

त दिन बीत जाते हैं। धारा उनकी में ही उलझी रहती है। वे उसे निकलने का अवसर ही नहीं देते। बहुत ज़ोर लगाने पर भी वह नहीं निकल पाई।

गङ्गा—भगवन्, क्या मुझे यहीं क़ैद रक्खोगे?

शिव—नहीं देवि, मैं तो रसातल पहुँचने के डर से तुम्हें यहाँ रोके हूँ। क्या तुम्हारा क्रोध शान्त हो गया?

गङ्गा—क्यों मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो भगवन्! कहाँ मैं स्वतन्त्र घूमनेवाली और कहाँ तुम्हारी काली, लंबी जटाओं में जकड़बन्द, बीसों वर्ष से यत्न करने पर भी निकल नहीं पाती। मैं अपने अभिमान और क्रोध का मज़ा पा चुकी। अब तो मुझपर कृपा करो। जो आज्ञा दो वही करने को मैं तैयार हूँ।

ब्रह्मा—हाँ शिव, अब तो देवी को छोड़ दो। राजन्, तुम भी ज़ोर लगाओ।

भ०—हे देव, मुझपर जो आप प्रसन्न हो और मेरे तप से सन्तुष्ट हो तो देवी पर कृपा करो। मेरा कुटुम्ब न मालूम कब से इन्हें भू-लोक में लाने का प्रयत्न कर रहा है।

शिव—अच्छा देवि, तुम जाओ और भक्तों का उपकार करो।

गङ्गा पृथ्वी पर उतरकर बहने लगती है।

मेरी बिल्ली

लेखक, श्रीयुत चन्द्रप्रकाश 'प्रकाश'

मेरी बिल्ली पूसी छोटी,
ड़ी चिबिल्ली तन से मोटी,
भूरी है, है कुछ काली,
रूप में अजब निराली।
मेरे साथ सदा वह फिरती,
कभी न घरवालों से डरती,

खाल बड़ी है इसकी कोमल;
छूने में वह जैसे मख़मल।
पहने जब वह घण्टी रहती,
कभी न कुछ चूहों से कहती,
पर यदि घण्टी धरे उतार
चूहे सब खा जावें मार!

वरदू

लेखक, श्रीयुत कुँवर सुरेशसिंह

जिस तरह लाल कपड़े से बैल भड़कता है उसी तरह 'वरदू' शब्द के सुनते ही मेरे रोएँ खड़े हो जाते हैं। जानते हो क्यों ? अच्छा सुनो, लेकिन पहले यह वायदा कर लो कि मेरे सामने इस ख़तरनाक शब्द को कभी न कहोगे।

मेरे गाँव में एक पण्डितजी हैं, जिन्हें न जाने कैसे यह विश्वास हो गया है कि उरदू का शुद्ध फ़ारसी रूप 'वरदू' है। वे उरदू को 'वरदू' ही कहते हैं और वह भी इतने बेधड़क कि थोड़ी उरदू जाननेवाले इस धोखे में पड़ जावें कि दरअसल 'वरदू' ही सही है।

मैं भी पण्डितजी का 'वरदू' का शिकार हो गया जिसकी बड़ी दिलचस्प कहानी है।

बीस साल का अरसा हुआ मैं स्कूल में पढ़ता था। किस स्कूल में, यह बताना कठिन है क्योंकि एक स्कूल तो था नहीं। बिल्ली जिस तरह आँख खुलने से पहले अपने बच्चों को कई स्थानों में घुमाती है उसी तरह मैं भी तरह-तरह के स्कूलों में घुमाया जा रहा था। कभी गाँव के स्कूल में हूँ तो कभी बनारस में हूँ। वहाँ न ठीक पड़ा तो प्रयाग भेजने में कौन दिक़्क़त थी। अन्त में यह तय हुआ कि मैं लखनऊ के कालविन स्कूल में भेजा जाऊँ और एक दिन वह भी आ गया कि मैं लखनऊ भेज दिया गया।

स्कूल चाहे जैसा भी हो, नये लड़कों के लिए वह हौआ ही रहता है। नया लड़का एक ओर तो टीचरों के टेस्ट के इम्तहान से परेशान रहता है, दूसरी ओर शरारती लड़कों का गरोह उसे छेड़ने में कोई भी कसर उठा नहीं रखता। मेरा भी वही हाल हुआ।

जैसे-तैसे करके सब टीचरों को इम्तहान देकर मैं आख़ीर में जिस क्लास में पहुँचाया मौलवी साहब का था।

मौलवी साहब सेकेण्ड फ़ार्म पढ़ा रहे देखते ही ऐनक के ऊपर से घूरकर बो कौन हैं ?"

मैंने उन्हें प्रिन्सपल का परचा दे कि मैं इस स्कूल में दाख़िल होने आ उनके पास आने का मतलब महज सेके टेस्ट इम्तहान देना है।

मौलवी साहब बहुत दिलचस्प आ उनके दरजे का क़हक़हा और शोर दूर त पड़ता था जिसमें मौलवी साहब की आ से तेज़ रहती थी। मेरा दिया हुआ पर आपने पूछा—"इससे पहले आप कहाँ मैंने बताया कि मैं पहले बनारस में पढ़ता इलाहाबाद में।

मौलवी साहब बहुत ज़ोर से हँसे। "आक्ख़ाह ! आप काशीजी और (प्रयाग) के तालिबइल्म हैं ? फिर क्या आपका क्या इम्तहान लूँ, आप तो व रहे हैं जहाँ इल्म बाज़ारों में बिकती है तो पूछ लेना ज़रूरी हो गया है। अफ़सर जो ठहरा।"

एक लम्बी जमुहाई लेकर मौलवी मुझसे पूछा—"आप उरदू जानते तो हैं

"जी हाँ, थोड़ी-बहुत जानता हूँ" से कहा।

"बस ठीक है। थोड़ी तो यहाँ स हैं। इन अजुधियापरशाद (अयोध्याप्र जिन्हें आप सामने बैठा देख रहे हैं यह नहीं समझ में आया कि बे, पे, ते,

है। लेकिन आप बदस्तूर दरजे में मौजूद हैं सबसे आगेवाली सीट पर हमेशा बैठते हैं।"

मैंने सोचा छुट्टी मिली लेकिन मौलवी साहब रुक पूछा—"कौन-सी किताब पढ़ते थे आप?"

मैं अब बहुत शसपञ्ज में पड़ा क्योंकि अस- यह थी कि मैं उरदू बहुत ही थोड़ी जानता अलिफ़, बे आदि अक्षरों को पहचानने के मैंने दूसरी किताब के पाँच-सात बयान रट लिये थे और यह सोच रक्खा था कि पड़ेगी तो उन्हीं को सर्राटे से पढ़ दूँगा। वहाँ मौलवी साहब की बातों से मैं समझ था कि मेरा इम्तहान हो चुका है, अब किताब पढ़ावेंगे। मैंने अपनी क़ाबलियत दिखाने की कह दिया—"चौथी।"

"चौथी!" मौलवी साहब ने ताज्जुब में कहा—"चौथी किताब तक तो यहाँ अभी नहीं पहुँच सका। नरेनदर (नरेन्द्र) ही दरजे में सबसे तेज़ हैं। वे भी तीसरी किताब पढ़। लीजिए, यह चौथी किताब है। इसमें से बयान पढ़ दीजिए।"

मैंने सोचा कि यह तो बुरे फँसे। एक ही का फ़र्क़ होता तो किसी तरह बात भी जाती लेकिन यहाँ तो दो से एकदम चार छलाँग मार गया था। मैंने मन मारकर चुपके- किताब ले ली और इधर-उधर पन्ने उलटने- ने लगा।

मौलवी साहब देर होती देख बोले—"ज़रा से पढ़िए, हम लोग भी तो सुनें। आप तो मन में सब पढ़ते जा रहे हैं।"

मैंने शरमाते हुए कहा—"जी, यह तो नहीं रहा हूँ। इसके नीचेवाली किताब....।"

"उसी में। उसी में। पीछे की ओर तीसरी किताब भी उसी में है"। मौलवी साहब बात काटते हुए बोले।

मैं थोड़ी देर तीसरे हिस्से को उलट ही रहा था कि मौलवी साहब ने दूसरी किताब को उठाकर मेरे सामने बढ़ाते हुए कहा—"उसके नीचे फिर यह है।"

मैं यही तो चाहता था। सोचा अभी एक क्या दो बयान सुना दूँगा। सात बयान तो ज़बानी याद ही हैं। लेकिन बदक़िस्मती कभी अकेले नहीं आती। मौलवी साहब को न जाने क्या सूझा कि उन्होंने किताब को बीच से खोलकर मेरे सामने रख दिया। मैंने जो किताब की ओर नज़र डाली तो देखता क्या हूँ कि "कुम्हार और ऊँट" वाला बयान खुला हुआ है जो सातवें बयान से आगे का बयान है। इस बयान का क़िस्सा ज़रूर मालूम था लेकिन क़िस्सा जानना दूसरी बात है और क़िस्से को लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ दुहराना दूसरी बात। बड़ी मुश्किल में जान फँसी। किसी न किसी तरह कोशिश करके दो-चार शब्द पढ़े भी लेकिन उसके आगे फिर गाड़ी रुक गई। मौलवी साहब बेचारे कहाँ तक सब्र करते। न रहा गया तो बोले—"अब तो जनाब इसके नीचे की कोई किताब अभी तक तो छपी नहीं है वरना उसे भी पेश करता। यह तो ख़ैरियत हुई कि आपने चौथी किताब से ही शुरू किया, कहीं और आगे से शुरू करते तो जनाब घण्टा ही ख़त्म हो जाता। और इतनी जल्द-जल्द आपने किताबें ख़त्म कीं कि साहब मैं तो हैरत में आ गया। कसर बस इतनी रह गई कि बजाय नीचे से ऊपर चढ़ने के आप ऊपर से नीचे उतरते चले आये।"

मैं मारे शरम के ज़मीन में गड़ा जा रहा था। कहता तो क्या कहता। धीरे से बोला—"जी,

मेरी बात खत्म होने तक कौन रुकता है। मेरी ज़बान से ‘वरदू’ शब्द का निकलना था कि मौलवी साहब ले उड़े। बोले “आक्खाह! ‘वरदू’ पढ़ी है आपने? यह क्यों नहीं बताया पहले से। मैं नाहक़ उरदू की क़िताबों से आपको अभी तक परेशान कर रहा था। ‘वरदू’ की किताबें जनाब, यहाँ कहाँ मिलेंगी! वे तो परियागजी में ही चलती हैं।”

दरजे में इस ज़ोर का क़हक़हा लगा कि मैं घबड़ा गया। “वरदू पढ़ते हैं आप।” “वरदू मुझे भी सिखा दीजिए।” “हाँ ज़रा ‘वरदू’ बोलकर सुनाइए तो।” इस तरह की तरह-तरह की न जाने कितनी बोलियाँ मेरे ऊपर कसी गईं। मेरी आँख के सामने अँधेरा-सा छा गया था। क्या से क्या हो गया। कहाँ सोचा था कि ‘वरदू’ जैसे ही मेरी ज़बान से निकलेगा मेरा उखड़ा हुआ रोब फिर क़ायम हो जायगा और मौलवी साहब भी समझ जावेंगे कि है लड़का होशियार लेकिन यहाँ तो उसमें कहीं ज़्यादा मुसीबत आ गई।

मुझे यह समझने में देर न लगी कि ‘वरदू’ ‘उरदू’ का शुद्ध नहीं बल्कि बहुत ही अशुद्ध रूप है। जिस बात को पण्डितजी के साथ बरसों रहकर नहीं जान सका था उसे मौलवी साहब के दरजे में चन्द मिनटों में ही समझ गया। लेकिन अब समझने से होता क्या है। दरजे भर में जिसके मुँह से सुनिए बस “वरदू” के लिए ही फ़र्मायश हो रही है। मौलवी साहब अपनी अलग ही छेड़े हुए थे। “अरे साहब ‘वरदू’ की न पूछिए, बड़ी ही मीठी ज़बान होती है। मेरे एक ख़ालूज़ात भाई परियाग ही में रहते हैं। वह अक्सर कहते हैं कि परियाग के अमरूदों की तो बस तारीफ़ ही तारीफ़ है। वहाँ के अमरूदों से तो कहीं ज़्यादा

मेरी क्या दशा थी इसका अन्दाज़ा लोग करो। रह-रहकर गाँव के उन्हीं की शकल सामने आती थी और ग़ुस्सा लग रहा था कि क्या बताऊँ। घण्टा खत्म हुआ और मैंने सोचा कि जान बची। लेकिन इतनी जल्द छुट्टी मिल सकती थी। पण्डितजी की “ पीछा छोड़नेवाली नहीं थी। क्लास निकलते ही सारे स्कूल में यह बात फैल जिसके मुँह से सुनिए बस ‘वरदू’ की कर रहा है।

“क्यों साहब, आप कहाँ तक ‘वरदू’ “तो आपकी मादरी ज़बान ‘वरदू’ है?” क्यों नहीं, आप? हम लोगों की बात समझेंगे, ‘वरदू’ पढ़े हैं न?” इसी तरह फबतियाँ बोर्डिंग हाउस तक कसी गईं। मैं सा होकर अपने कमरे में घुस गया। झेंप आज तक कोई भी समर्थ नहीं हुआ है। तो उसकी कोई गुञ्जायश भी नहीं थी।

क़रीब एक महीने तक लड़कों ने मुझे से परेशान किया। ‘वरदू’ भर कह देना लेकिन कुछ दिनों बाद मैं भी शरारती गरोह में शामिल हो गया और यह सिलसिला टूट गया। लेकिन इस शब्द मित्र लोग अन्त तक न भुला सके आपस में कभी बहस होती या किसी बात मतभेद होता तो दोस्त लोग मीठी चुटकी कहते—“अरे भाई, यह भला कैसे ‘वरदू’ जो पढ़े हैं।”

गरमी की छुट्टियों में घर आया तो को देखते ही बदन में आग लग गई। तो यहाँ चन्दन-मन्दन लगाये घूम रहे हैं

फ़ारसी लेकिन मुझे तो ऐसा फँसा दिया है द छुटकारा मिलना मुश्किल है। इनको र उन्हीं मौलवी के दरजे में छोड़ दिया जावे दू-फ़ारसी भूल जावें।

लेकिन पण्डितजी को इससे क्या। वे मेरे से अपनी भाषा थोड़े ही बदल देते। आज उरदू पढ़ लेने पर भी वे जिस सफ़ाई से कहते हैं उसे देखते हुए यह उम्मीद करना एकदम फ़िज़ूल है कि वे कभी सिवा 'वरदू' के उरदू भी बोल सकेंगे।

इस घटना को बीस साल हो गये हैं लेकिन आज भी पण्डितजी के मुँह से "वरदू" सुनकर मेरे सारे रोएँ खड़े हो जाते हैं जैसे पैर तले साँप पड़ गया हो और मेरी दशा परमात्मा ही समझते हों तो समझते हों, पण्डितजी भला क्या समझेंगे।

जाड़े के दिन

लेखक, श्रीयुत स्वर्ण-सहोदर

जाड़े के दिन, जाड़े के दिन।

कब आते हैं, कब जाते हैं,
कुछ नहीं समझ में आते हैं,
बातें करते चुक जाते हैं,
कुछ ही घण्टे टिक पाते हैं,
नन्हें-नन्हें जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥१॥

हम काम न जमकर कर पाते,
दिन लेते धूप निकल जाते,
हम जाड़े से न निबट पाते,
ये जल्दी उधर खिसक जाते,
थोड़े - थोड़े जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥२॥

कतराये से सूरज चलते,
चुपके से मन्द-मन्द जलते,
जल्दी चढ़ते, जल्दी ढलते,
रुकते न ज़रा, जल्दी टलते,
मुट्ठी - मुट्ठी जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥३॥

बहती है हवा सरर सर सर,
लाती है ख़ूब ठण्ड भर भर,
सब जीव-जन्तु उससे डर डर,
करते सी-सी, कँपते थर थर,
ठण्डे - ठण्डे जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥४॥

बिच्छू का डङ्क बना पानी,
बाणों की नोक हवा रानी,
छाया भी क्या बर्फ़-स्थानी,
पग - पग पर होती हैरानी,
मुश्किल के हैं जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥५॥

जिस तरह सुबह, उस तरह शाम,
छाई रहती ठण्डक तमाम,
सब रटते दिन भर 'घाम-घाम',
छाया का लेते नहीं नाम,
हैं अड़बंगे जाड़े के दिन,
जाड़े के दिन, जाड़े के दिन ॥६॥

जोधपुर की यात्रा

लेखक, श्रीयुत बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश', मिर्ज़ापुर

जोधपुर राजपुताने का एक प्रमुख नगर है। अभी पिछले दिनों मुझे जोधपुर की यात्रा करने का मौक़ा मिला। यहाँ पर मैं जोधपुर के देखने योग्य स्थानों के बारे में अपने बालसखाओं को बताने जा रहा हूँ।

जोधपुर राजपूताने में तीसरी श्रेणी का शहर और जोधपुर राज्य की राजधानी है। इसे राव जोधाजी ने बसाया था। इस शहर के आस-पास लाल पत्थर की खानें हैं। यहाँ हाथी-दाँत के चूड़े का अच्छा काम होता है। क़सीदा और जाली का अच्छा काम होता है। बीकानेर की तरह यह शहर भी ६ मील लम्बी दीवार से घिरा हुआ है, जिसमें सात फाटक हैं। शहर कम से कम ६ मील के बीच में बसा है। बीच हिस्सों में कुछ पहाड़ियाँ भी आ गई हैं। शहर के प्राचीन भाग अधिक बसे हैं। यहाँ के बाज़ारों में बहुत अच्छी चहल-पहल रहती है। खासकर सायंकाल को दिखती है। जिधर ही नज़र डालिए रंग-बिरंगी पगड़ी पहने, राजपूती दाढ़ी मारवाड़ी लोग राजस्थानी भाषा बोलते हुए पड़ते हैं। यहाँ के दर्शनीय स्थानों में से मन्दोर, महामन्दिर, बालसमन्द और प्रतापसा (कैलाना), वेलिंगडन गार्डन (पब्लिक बा होटल, हवाई अड्डा और थड़ा आदि हैं, जहाँ

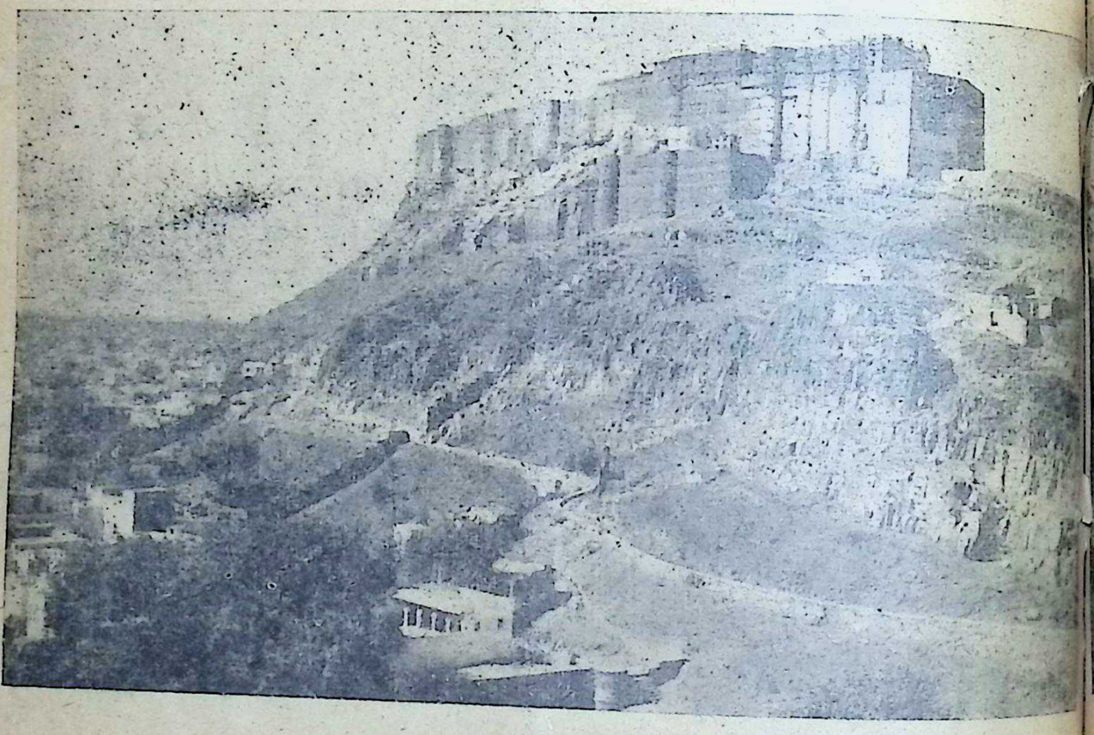

जोधपुर का पुराना क़िला

क़िला शहर के मध्य भाग में है औ कारण शहर के प्रत्येक हिस्से से यह दि पड़ता है। यह क़िला बहुत ही प्राचीन है इसकी दिवालों पर प्राचीन व महत्त्वपूर्ण ह आदि का कई जगह संग्रह है। क़िला श एक सीमा बनाता है। ऊपर क़िले तक पहुँ लिए सुडौल रास्ता बना दिया गया है। ताँगे आदि का रास्ता अलग बना है।

भाग की छत पर बहुत-सी प्राचीन तोपें हैं। का नाम उन्हीं पर लिखा हुआ है। इस मारवाड़ का झण्डा लहराता है और इस खड़े होकर देखने से सारा शहर दिखाई है। इसके अन्दर पत्थरों के बने हुए कई राजमहल हैं जिनकी सजावट देखने लायक़ ले के भीतर सीलाख़ाना, मोतीमहल और ख़ाना विशेष रूप से देखने योग्य हैं। ाना में सैकड़ों प्रकार की ढालें, तलवारें, ें, भाले व कवच रक्खे गये हैं। पर उनमें ाँदी की बड़ी अच्छी कारीगरी है। इसके वे इतने भारी हैं कि साधारण बलवाला न्हें सरलता से उठा नहीं सकता, उनका करना तो दूर की बात है। मोती-महल में ार कमरे हैं जिनकी दीवारों तथा छतों ने की अनुपम कारीगरी है। जवाहरख़ाना न के गहनों का ख़ज़ाना है। इसमें जवा-

का कोई पता नहीं। इस महल में जाने के लिए राज्य से विशेष अनुमति लेनी पड़ती है।

जोधपुर का श्री जसवंत स्मृति-मन्दिर

यों तो इस शहर में कई सुन्दर झीलें हैं पर उनमें से बालसमन्द कैलाना व गुलाबसागर आदि मुख्य हैं। इस झील के चारों ओर एक हरा-भरा सुन्दर बाग़ लगा हुआ है। बाग़ के एक ओर लम्बी व विशाल बालसमन्द नामक झील है। झील काफ़ी गहरी भी है और इसके किनारे घाट भी है। इसके तट पर एक सुसज्जित राजमहल बना है। इसमें और भी कई इमारतें हैं। पहले शायद चिड़ियाखाना भी इसी में था क्योंकि ख़ाली पिंजड़े अब भी दिखलाई पड़ते हैं। इस झील का पानी वैज्ञानिक ढङ्ग से साफ़ होकर शहर के काम में आता है। कैलाना झील एक शून्य स्थान में है पर संध्या के समय चाँदनी रात में जल-विहार करने का यह अच्छा स्थान है। पद्मसागर, गुलाबसागर व रानीसागर की झीलें भी देखने

यड़ा क़िले से उत्तर की ओर हटकर पहाड़ी पर बना है। यह सङ्गमरमर का है। गत शताब्दी के अन्तिम भाग में यशवन्तसिंह नाम के प्रसिद्ध जोधपुर-नरेश हो गये हैं। उनका समाधिस्थान इसी थड़े में है। जितने राजा स्वर्गवासी होते हैं उनको समाधि इसी के पास दी जाती है। यह एक अत्यन्त सुन्दर भवन है। यह एक ऊँचे और चौड़े चबूतरे पर बना है। इसके चारों ओर एक हल्की-सी फुलवारी लगी हुई है। उसके बीच में एक फुहारा है। चारों तरफ़ संगमरमर की चौकियाँ पड़ी हैं जिनपर बैठकर लोग हवा खाते हैं। इसके पीछे देवीकुण्ड नामक तालाब है। वर्षा में यहाँ की शोभा अनुपम हो जाती है।

जोधपुर के क़िले का राजमहल

मन्दोर पहले मारवाड़ (जोधपुर) राज्य की राजधानी थी। यह जोधपुर से तीन मील की दूरी पर है। इसमें जोधपुर के प्राचीन राजाओं

बने हैं जिनके बाहर उनके जन्म-मरण संवत् दिये गये हैं। ये छतरियाँ, लाल बनी हुई हैं, इन पर नक़्क़ाशी का बारीक एवं सुन्दर काम हुआ है जो बनता है। इसके सिवा यहाँ एक है जिसके अन्दर गर्मी के दोपहर में छाया रहती है। श्रावण के महीने में दो को यहाँ मेले लगते हैं तब यहाँ ठसाठस है। इसी बाग़ में वीरों का हॉल है जि

चन्द्र, शिवजी, भगवान बुद्ध, महात्मा रा श्री चामुंडी देवी आदि की मूर्तियाँ हैं एक ही पंक्ति में साथ-साथ बैठी दीखती मूर्तियाँ पहाड़ी भाग में से काटी गई हैं। ये इतनी विशाल हैं कि इनकी लम्बाई ६, ७ कम नहीं। मूर्तियों पर क़लई हुई है जिस बहुत अच्छी मालूम होती है। यहीं पर यहाँ

महामन्दिर एक जोधपुर के बड़े मोहल्ले का
। यह एक रेलवे स्टेशन है। इसमें महा-
नामक एक बड़ा मन्दिर है। इस मन्दिर
इतनी भारी व लम्बी-चौड़ी है कि इसकी
के लिए नीचे १०० बड़े खम्भे लगे हुए हैं।
एक बड़ी पत्थर की दीवाल से घिरा हुआ
प्राचीन मन्दिर में शिवजी की मूर्ति है।
को देखने से ही इसकी सुन्दरता का अनु-
सकता है।

लिङ्गडन गार्डन बीकानेर के पब्लिक के बाग़
जन-साधारण के लिए बनवाया गया है।
हुत बड़ा बाग़ है। बीकानेर व उदयपुर
इसमें भी एक चिड़ियाखाना है जिसमें बहुत
की चिड़ियों का संग्रह है। बहुत प्रकार के
भालू, चीते इत्यादि रक्खे गये हैं। इसके
इसमें कई एक मगरमच्छ भी रक्खे गये हैं।
घर भी इसी बाग़ में है जो कि बीकानेर-
यबघर की तरह बिलकुल आधुनिक ढङ्ग
हुआ है। इसमें प्राचीन हथियारों का भी
संग्रह है। यहाँ की बनी नामी हाथी-दाँत
इयों आदि का भी अच्छा संग्रह है। एक
ना है जिसमें जोधपुर व इसकी रियासत
स्थानों के बहुत-से सुन्दर फोटो हैं जिनको
में पूरा जोधपुर का दृश्य दिख जाता है।
का संग्रह काफ़ी अच्छा है। कई एक प्राचीन
हैं। इसी अजायबघर में एक और बड़ा पुस्तकालय है जिसमें हर विषय की पुस्तकों का संग्रह है। पब्लिक के अख़बार वग़ैरह पढ़ने के लिए भी एक भारी हाल बना हुआ है। यह अजायबघर पत्थर का बना हुआ है और जोधपुर के ख़ास स्थानों में से है। बाग़ में ही शहर का सिनेमाघर 'स्टेडियम' है। यह हाल ही में बिलकुल नये ढङ्ग का बना हुआ है।

गिर्दीकोट बाज़ार शहर के मध्य भाग में एक पक्की चौक में है जिसके दो फाटक हैं। इसके बीचोबीच में एक घण्टाघर है और आस-पास दुकानें हैं। चाँदपोल इस शहर के एक मुहल्ले का नाम है जो एक पहाड़ी पर स्थित है। वहाँ जाते समय शहर का घना मध्य भाग पार करना पड़ता है। ताज्जुब की बात तो यह है कि वहाँ एक ऐसी सड़क से जाना होता है जो वक्राकार होकर क्रमशः अत्यधिक ऊँचाई पर पहुँचाती है। ऊपर से शहर बहुत ही सुन्दर दीख पड़ता है। रात्रि के समय में जब सारे शहर के लैम्प जल जाते हैं तब वहाँ खड़े होकर देखने से चारों ओर दीपावली-सी लगती है।

अन्त में यह निस्सङ्कोच कहा जा सकता है कि पर्यटक के लिए जोधपुर में मनोरञ्जन और विनोद की पर्याप्त सामग्री है।

यह है जोधपुर का संक्षिप्त परिचय। आशा है इसको पढ़ने के पश्चात् तुम्हें जोधपुर की पूरी जानकारी प्राप्त हो जायगी।

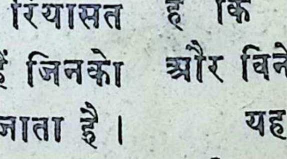

चूहों की चालाकी

लेखक, श्रीयुत 'अनन्य' विशारद

अपनी बूढ़ी नानी के मुख हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(१)

किसी गाँव में गिरिधर नामक रहता था धनवान बड़ा।
उसका घर खाने-पीने की चीज़ों से था भरा पड़ा॥
एक माँट में गज़क रेवड़ी, मटकी में गुड़धानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(२)

कहीं ढेरियाँ थीं अनाज की, कहीं मिठाई धरी हुई।
कुछ चीज़ें थीं बाहर फैलीं, कुछ बर्तन में भरी हुई॥
ऐसी सूरत में चूहों की, ख़ासी पेट भरानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(३)

खाने से सन्तोष कहाँ था ? जाकट कोट कुतर जाते।
बस्तों में बच्चे दे देते, स्याही को चट कर जाते॥
यह सब कुछ सह लेता गिरिधर किन्तु एक हैरानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(४)

हैरानी थी—उसकी नींदें 'खुट-खुट', 'चट-चट' खोती थी।
मानों टाइप से लिखने की रातों ट्रेनिङ्ग होती थी॥
गिरिधर को आख़िर झुँझला कर बिल्ली ला बैठानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(५)

लाया एक पालतू बिल्ली कला-कुशल थी जो पूरी।
जिसके देख सपाटे सब चूहों को चढ़ जाती जूड़ी॥
लोप हुई वह 'खुट-खुट चट-चट' किसको चीज़ें खानी थीं।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(६)

दाव नहीं लगता या उनका भूखों मरने लगे अरे!
सब ने सोचा कब तक बैठे रहें हाथ पर हाथ धरे॥
बोली एक खड़ी हो चुहिया जो चूहों की नानी थी।

(७)

"उम्र हो चुकी मेरी पूरी जीने की अब चाह नहीं।
जीवन-बलि दूँ इस प्रयत्न में तो भी कुछ परवाह नहीं॥"
इतना कहकर चल दी वह तो बड़ी जाति-अभिमानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(८)

बिल से निकल, दबे पैरों से पहुँची एक टोकनी पर।
इधर बिलैया ने जो देखा मुँह में आया पानी भर॥
वह भी धीरे-धीरे खिसकी उसको नज़र बचानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(९)

चुहिया ने चढ़कर जो देखा, बर्तन था बिलकुल ख़ाली।
कूद पड़ी वह भीतर, झट बिल्ली ने भी गर्दन डाली॥
बर्तन का मुँह तङ्ग रहा कुछ बिल्ली अब खिसियानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

(१०)

ज़ोर लगाकर डाली गर्दन, लेकिन फँसकर रही वहीं।
बहुतेरा चाहा निकालना, इधर-उधर को पटक रही॥
"सौं-सौं-फौं-फौं" करती बिल्ली उस ही भाँति भगानी थी।
ख़ूब छकाने की बिल्ली को जब चूहों ने ठानी थी॥

नया वर्ष

लेखिका, कुमारी शैलबाला सकलानी

नव उमङ्ग नव आशा लेकर—
लो, आया फिर यह नया वर्ष।

जीवन में साहस, बल भरकर—
न की दुर्बलताएँ हरने,
ेद-भाव को दूर भगाकर--
ीवन में कुछ जीवन भरने।
ओ ! लेकर नित-नित नया हर्ष,
लो, आया फिर यह नया वर्ष।

सारे जग का दुख-दर्द मिटा—
फिर से बीता गौरव लाने,
उन्नति की बाधा दूर हटा—
जग में सबको सुखी बनाने।
बरसा देने सब ओर हर्ष,
लो, आया फिर यह नया वर्ष।

एक मजेदार कहानी

सेठजी उड़ने लगे

लेखक, श्रीयुत शरद

मेरे पिताजी एक बहुत बड़े वैद्य थे। शहर-भर में लोग उन्हें जानते थे। मरने पर वे बहुत-सी दवाइयाँ छोड़ गये थे जिन्हें मैंने शीशियों में भरकर एक बक्स में रख दिया था।

एक दिन बग़लवाले सेठजी मेरे दरवाज़े में घुसे। सेठजी बड़े मोटे थे। उनके जैसी मोटाई का आदमी ढूँढ़ने से नहीं मिलता था। मैं कुर्सी पर बैठा एक किताब पढ़ रहा था। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब सेठजी को मैंने देखा। मुझे डर लगा कि कहीं वे कुर्सी पर बैठें और कुर्सी टूट न जाय। पर उपाय क्या था उनकी मुटाई के लायक़ तो कुर्सी भी मेरे पास नहीं थी। मैं यह सोच ही रहा था कि वे धम् से कुर्सी पर बैठ ही तो गये। एक बार मेरे प्राण सूख गये पर कुर्सी टूटी नहीं, सिर्फ़ चरमरा कर रह गई। फिर उन्होंने कहना शुरू किया—"बेटा, तुम्हारे बाप मेरे बड़े दोस्त थे। जब वे मरे थे तो मुझे बड़ा दुःख हुआ था। पर किसी का मरना कोई कैसे रोक सकता है। इधर उनके न रहने से मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है। ज़ुकाम में भी डाक्टर लोग चौदह आने की एक शीशी देते हैं। क्या बतावें·······।"

मैंने बीच ही में कहा—'अगर कोई छोटा-मोटा रोग रहा करे तो मुझसे कह दिया कीजिए, मैं दवा निकाल दूँगा।' मुझे कुछ दवाइयों की पहचान थी, क्योंकि पिताजी को मैं बराबर दवा बाँटते देखा करता था।

वे बोले—"देखो न, मेरा वज़न रोज़ ब रोज़ बढ़ता जाता है। मैंने शहर के हर डाक्टर को दिखाया पर कुछ लाभ न हुआ। क्या करूँ, क्या न करूँ। कुछ लाभ नहीं होता। अगर तुम्हारे पिता जी होते तो अवश्य कोई न कोई दवा देते।" मतलब उनके मोटापे से था। मैंने कहा—"बहुत-सी दवाइयाँ मेरे पास पड़ी हैं।"

मेरा इतना कहना था कि वे मेरे गये और लगे तङ्ग करने कि दे दो मुझे कि मैं पतला हो जाऊँ और मेरा वज़न

मैं बड़े फेर में पड़ा कि कैसी आफ़त गया हूँ। अगर इन्हें कोई दवा दे भी कहीं ऐसा न हो कि असर उल्टा पड़े।

अन्त में तंग करके उन्होंने वह बक्स निकलवा ही लिया। और मैं कर हर दवा की शीशी को ग़ौर से देखने बहुत उलट-पुलट के बाद एक शीशी आई जिसे देखते ही वे ख़ुशी से उछल बोले—"यही मेरी दवा है।" अब मेरे हाथ से छीन ली और घर की ओर मैं पुकारता ही रह गया पर वे कहाँ पता नहीं, क्या उन्होंने उस शीशी में पाया।

महीनों बीत गये। सेठजी उस दवा रहे पर उनमें कुछ भी फ़र्क़ न हुआ दिनों बाद मैं उस बात को भूल गया मैंने सेठजी को भी कभी बाहर न देखा।

एक दिन मैं एक दावत में तैयार रहा था कि सेठजी का नौकर दौड़ता हुआ और बोला—"सेठजी मर रहे हैं, जल्दी

मेरी समझ में न आया कि क्या अन्त में मैं उनके घर गया और अन्दर देखा कि कमरे का दरवाज़ा बन्द है और भीतर से "बचाओ-बचाओ" चिल्ला रहे हैं दरवाज़ा खोला पर वहाँ किसी को न

ओर देखा पर कोई दिखाई न पड़ा। फिर चिल्लाने लगा—"दरवाज़ा बन्द करो—बन्द ।" मैं पहचानता था, यह सेठजी ही की आवाज़ ऊपर सिर उठाया तो देखा कि सेठजी ऊपर की कड़ी पकड़े झूल रहे हैं। समझ में न आया या बात है। पूछा—"सेठजी, क्या बात है, तो उतरिए।"

उन्होंने उतरने की कोशिश की पर उतर न मुझे अपनी आँखों पर विश्वास न हो रहा मैंने देखा कि सेठजी सींक जैसे पतले हो और हवा में ऊपर उड़े जा रहे हैं।

मैंने उन्हें एक रस्सी के सहारे उतारा और बिल के नीचे उन्हें बैठा दिया ताकि वे दुबारा न उड़ जायँ। फिर मैं भी बैठकर बातें करता रहा। उन्होंने कहा—"दवा मैंने इकट्ठी खा ली थी। उसका यह असर हुआ और अब कुछ ऐसी दवा दीजिए कि मैं फिर मोटा हो जाऊँ।"

मैंने सोचा, एक बार के दवा देने पर तो ये हवाई जहाज़ बन गये। अब दवा दूँ तो कहीं ये मर न जायँ और इनके बाल-बच्चों को भी हमीं को पालना पड़े। मैंने उनको दवा देने से इनकार कर दिया। अब वे निराश हो खाना ख़ूब खाने लगे और धीरे-धीरे उनका वज़न फिर बढ़ने लगा।

मेरे सिर की बला टली। फिर मैंने डर के मारे कभी सेठ से बातें न कीं।

प्रश्न

लेखिका, कुमारी प्रमीला

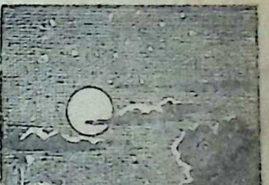

चाँद विहँसता आसमान में,
कमल ताल में खिलते हैं,
धीमी-धीमी हवा चल रही
फूल ख़ुशी में हिलते हैं।
तट पर खड़े पेड़ की पाँतें,
पहने हैं काली चादर;
धरती पर यह बिछी चाँदनी
लगती है कितनी सुन्दर।
पर जब होती सुबह कमल-दल
निज मुख बँद कर लेते हैं।
दिखलाकर निज रूप मनोहर
ख़ुशी न मन को देते हैं।
रोज़ रात आकर चन्दा की
किरणें उन्हें खिलाती हैं,
फिर क्यों मुझे सुलाती वे औ'
रवि की किरण जगाती है।

सेठजी ने कुत्ता पाला

लेखक, श्रीयुत सत्यवीर

सेठ कंजूसमल ने सुना कि शहर में कुत्तों की नुमाइश होनेवाली है और सबसे तेज़ दौड़नेवाले कुत्ते को एक अच्छी रक़म इनाम मिलेगी। कंजूसमल के मुँह में पानी भर आया। भला इससे भी आसान कोई व्यापार हो सकता है पर उनके पास कोई कुत्ता तो है नहीं। कुत्ता उन्होंने कभी पाला नहीं।

उन्होंने लोगों से कहा कि वे एक ऐसा कुत्ता ख़रीदना चाहते हैं जो बहुत तेज़ दौड़ सकता है। एक मित्र ने पूछा—क्यों, आप क्या उससे ख़रगोशों का शिकार करेंगे ?

सेठजी अपना भेद भला कब बता सकते थे। कह दिया—"हाँ, कुछ ऐसा ही इरादा है।"

दूसरे दिन सेठजी के पास एक कुत्ते के मालिक को लाया गया। पतले दुबले सींक-से आदमी थे। हांथ में एक बड़े भारी कुत्ते की ज़ञ्जीर पकड़े थे। सेठजी ने कुत्ते को देखा तो तुरन्त उनके ाँत निकल आये। पूछा—"आप यह कुत्ता बेचना चाहते हैं ?"

'जी हाँ', कुत्ते के मालिक ने कहा।

'क्या यह बहुत तेज़ दौड़ता है ?' सेठजी ने कुत्ते को देखते हुए पूछा।

"तेज़ ! अजी साहब, शहर भर में इससे तेज़ ा कोई दूसरा कुत्ता दौड़ ही नहीं सकता। क्या आप देखना चाहेंगे ?"

'अवश्य।' सेठजी ने उत्तर दिया।

कुत्ते के मालिक ने ज़ञ्जीर सेठ के हाथ में पकड़ा दी और कहा—"मैं सड़क पर चार फ़र्लाँग ी दूरी पर खड़ा हो जाता हूँ। आप इसे यहाँ से ोड़ दें। देखिए कितना तेज़ दौड़ता है।"

सेठजी बड़े ख़ुश हुए। कुत्ते के मालिक ने चार फ़र्लाँग दूर पर जाकर सीटी बजाई। कुत्ता ही एक झटके के साथ दौड़ पड़ा। सेठजी उसके साथ घिसलते हुए कुछ दूर तक चले

कुत्ते की तेजी देखकर सेठजी बहुत हुए। यद्यपि गिर पड़ने के कारण उनके में थोड़ी चोट भी आ गई थी पर उन्होंने ओर ध्यान न दिया। सौदा तय हुआ और को लेकर सेठजी भीतर पहुँचे। सेठानी भोजन रही थीं। कुत्ते को दूर से ही जो भोजन की मिली तो वह उछलकर खाने पर पहुँचा लगा जल्दी-जल्दी खाने।

सेठजी हक्के-बक्के रह गये। सेठानी ने कर कहा—"निकालो इस कुत्ते को यहाँ से से इसे पकड़ लाये। सारी रसोई ख़राब हो

सेठजी की ज़बान खुली, कहा—"ज़रा देखो तो। शहर के सब कुत्तों से यह तेज़ दौड़ मैंने ख़ुद इसका दौड़ना देखा है।"

'देखा होगा। पर मेरे घर में कुत्ता न सकता।'

सेठजी को कोई उपाय सूझ न प बोले—"तो इसे यहाँ रख थोड़े ही रहा हूँ बाहर ही रहेगा।"

कुत्ते का पेट भर गया था इसलिए वह के साथ बाहर चला आया। सेठजी ने उसे बँधवा दिया और अपने बहीखातों से गये। इसी समय पड़ोस के एक वकील साहब आये और सेठजी पर बिगड़ कर बोले—" साहब, आप अपने कुत्ते को बाँधकर रखिए क्या ? उसने मेरी बिल्ली को अभी मौत भ दौड़ाया।"

'अच्छा, आपने देखा कितना तेज़ दौड़ता सेठजी प्रसन्न होकर बोले।

हीं तेज़, दौड़ता है; वह तो कहिए मेरी बिल्ली की तेज़ दौड़ती है और फिर ठीक समय पर या नहीं तो उसकी जान ही गई थी।'

ही-खाता बन्द करके सेठजी कुत्ते की खोज ले। बहुत दूर जाकर उसे पकड़ पाया। े घर की ओर लौट पड़े।

ाह में उन्हें एक आदमी मिला। कुत्ते को ी वह बोल पड़ा—'इसे आप कहाँ पकड़े ा रहे हैं?'

र।' सेठजी ने अकड़कर कहा।

ाह, यह मेरा कुत्ता है, आज कई दिन हुए ा था और आप उसे अपने घर में करके रख रहे हैं।" आदमी ने बिगड़-हा।

"जी नहीं, मैंने तो इसे आज ही ख़रीदा है।" कुत्ते के मालिक का उन्होंने नाम बताया। पर वह आदमी कब सुननेवाला था। बोला—"आप झूठ कहते हैं। यह कुत्ता तो उसने मेरे हाथ बेचा था।"

दोनों आदमियों के बीच कहा-सुनी हो ही रही थी कि एक तीसरा आदमी आया और सेठजी के हाथ से कुत्ते की ज़ञ्जीर छीनकर चलने लगा।

अब तो वे दोनों इस तीसरे आदमी से भि गये। वह भी अपने को कुत्ते का मालिक बता रहा था। तीनों आदमियों में झगड़ा होने लगा और इसी बीच कुत्ता जो फिर भाग निकला तो किसी के हाथ न आया। तीनों आदमी कुत्ते की खोज में सारे दिन घूमते रहे पर न कुत्ते का पता चला न कुत्ता बेचनेवाले का।

तारे और चन्द्र

लेखिका, कुमारी शारदा मिश्र

आसमान में चाँद समूचा,
तारों बीच रहा था खिल।
आस पास उसके वे बिखरे,
करते थे झिलमिल-झिलमिल॥
दसों दिशाओं में फैली थीं,
चन्दा की किरणें शीतल।
अँधियाले का राज नहीं था,
नभ में दीप रहा था जल॥
टिमटिम करते कुछ तारों ने,
चन्दा से इस भाँति कहा—
सुन्दर विमल चाँदनी जग में
चन्द्र रहे हो व्यर्थ बहा।

जग में कोई नहीं मानते,
कभी तुम्हारा यह उपकार
केवल भोले बच्चे ही बस
करते हैं तुमको कुछ प्यार!
उत्तर में तब कहा चन्द्र ने,
यदि मैं करता हूँ उपकार।
नहीं चाहता तो बदले में,
मिले व्यर्थ ही मुझको प्यार॥
सीधी सादी बात अरे तुम—
नहीं समझते हो यों, शोक।
केवल अँधियाला हरने को
बिखराता हूँ मैं आलोक।

कुमारी अन्तरीप की कहानी

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबलीसिंह, बी० ए०

प्रिय बाल-सखाओ, तुम मनुष्य के मुखमण्डल से तो अच्छी तरह परिचित हो। सोचो तो कि अगर उसमें ठुड्डी न हो तो कैसा मालूम हो। सृष्टि-रचना के आरम्भ से ही अगर यह भाग न होता तो शायद किसी को कुछ न खटकता परन्तु अब उसके ग़ायब हो जाने से मनुष्य का मुखमण्डल अजीब-सा दिखाई देगा। इसी तरह बालसखा के बहुत-से पाठक भारतवर्ष के नक़शे से परिचित होंगे। इसमें दक्षिण की वह नोक, जो कि लङ्का द्वीप की तरफ़ बढ़ी हुई, दिखाई देती है। भारतवर्ष की प्राकृतिक बनावट में इसका एक विशेष स्थान है। इसके न रहने पर भारतवर्ष का वह परिचित रूप हमें कुछ विचित्र-सा दिखाई देगा। इसी हिस्से को कुमारी अन्तरीप या कन्याकुमारी कहते हैं। इसकी एक अजीब और सुन्दर कहानी है।

कुमारी के माने तो आप जानते ही हैं। कुमारी माने होता है अविवाहिता। यह एक अन्तरीप और अविवाहिता, यह कैसा मामला है? कहते हैं इस अन्तरीप के पास ही एक मन्दिर है सुचिन्द्रम में। यहाँ के देवता में और कन्याकुमारी में प्रेम हो गया और अन्त में विवाह का प्रस्ताव हुआ। कन्याकुमारी ने सुचिन्द्रम के देवता से कहा कि यदि आप अमुक दिन रात्रि को बारह बजे तक विवाह के सामान के साथ आ जायेंगे तो विवाह हो जायगा। देवता ने बड़ी धूमधाम से तैयारी की और बारात साजकर चले परन्तु निश्चित समय पर नहीं पहुँचे। कुमारी वचनबद्ध थी। उसने विवाह करने से इनकार कर दिया और यह भी कहा कि चूँकि मैंने हृदय आपको अर्पित कर दिया है अतः अब दूसरा विवाह भी न क आजीवन कौमार्य जीवन व्यतीत करूँगी। होकर उस देवता को भी वापस जाना पड़ा

आज-कल भी दक्षिण में यात्रा करनेवा कहते हैं कि अन्तरीप के पास जो बालू के हैं वे सवेरे और शाम को रङ्ग-विरङ्गे दि हैं। कहावत यह है कि यह बालू नहीं है विवाह के वही भिन्न विभिन्न उपहार है देवता कुमारी के लिए लाया था। बाद बालू के रूप में हो गये।

आज भी लोग इस देवता और कन्या की पूजा करते हैं। मन्दिर में अब सुन्दर लड़की की मूर्ति बनी है। इस पर है। सारा जीवन एक कन्या की कहानी है कन्या की छाप हमें इस मूर्त्ति और म मिलती है।

सुचिन्द्रम में भी एक मन्दिर इस देवता दक्षिण में कुमारी अन्तरीप की यात्रा क यात्री इस मन्दिर में भी जाकर देवता का करते हैं। इसके बाद कन्याकुमारी के म जाकर दर्शन और पूजा करते हैं। तभी पूरी समझी जाती है।

यह तो रही कन्या कुमारी की कथा के पास वह खण्डहर है जिसे रामेश्वरम् क यह हिन्दुओं का एक बहुत ही पवित्र स् इसे नल और नील नामक दो कारीगरों ने, सुग्रीव की सेना के ऐडवान्स गार्ड थे, बनाय इसी के द्वारा रामचन्द्र की सेना लंका द्वीप रावण को परास्त किया।

सच्चा न्याय

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

एक गाँव में दो दरिद्र भाई रहते थे। वे धन के लिए बाहर निकले। एक दिन रास्ते में द रुपयों की एक थैली मिल गई। उसमें दो भी थे। छोटे भाई ने कहा——"मेरा तो मतलब । अब मैं घर वापस जाऊँगा।" पर बड़े भाई —"मेरा मतलब नहीं हुआ है। इसलिए मैं अभी र घूमना चाहता हूँ। अतः लाओ मिला हुआ धन आपस में बाँट लें।" जब उन्होंने आपस धन आधा-आधा बाँट लिया तब बड़े भाई ने भी हिस्सा छोटे भाई को देकर कहा—"मेरा घर पहुँचकर मेरी स्त्री को दे देना।" छोटे घर पहुँचकर रुपये तो अपनी भावज को दे परन्तु लाल न दिया।

तीन-चार वर्ष के पश्चात् जब बड़ा भाई घर आया तब उसे मालूम हुआ कि छोटे भाई े दिये थे परन्तु लाल नहीं दिया था। इस ने छोटे भाई से लाल के लिए पूछा। उत्तर दिया—"मैंने आपकी स्त्री को लाल दे है।" तब बड़े भाई ने कहा——"वह तो कहती तुमने तो उसको केवल रुपये दिये हैं, लाल दिया है।" तब छोटे भाई ने उत्तर दिया——की स्त्री झूठ बोलती है। मैंने उसे लाल तभी या था।" इस पर बड़े भाई ने अपनी स्त्री को पीटने की धमकियाँ दीं।

जब स्त्री को पूरा विश्वास हो गया कि मार खाये मैं न रहूँगी तो वह रोती हुई के पास दौड़ी गई और उससे सारा हाल सुनाया। क़ाज़ी ने छोटे भाई को बुलाकर —"क्यों जी, जब तुमने इस स्त्री को लाल दिया कोई वहाँ पर था।"

छोटे भाई ने उत्तर दिया——"जी सरकार, उस समय वहाँ पर दो आदमी थे। यदि आप कहें तो मैं उन दोनों को भी आपके सामने लाऊँ और आप उन लोगों से भी पूछ सकते हैं।" क़ाज़ी ने कहा——"अच्छा, कल तुम उन आदमियों को मेरे सामने लिवा लाना।"

छोटा भाई दूसरे दिन उन आदमियों को कुछ रुपये देकर झूठी गवाही दिलवाने के लिए क़ाज़ी के पास लिवा लाया। गवाहों ने क़ाज़ी के सामने कह दिया—"हाँ साहेब, इस आदमी ने मेरे सामने इस स्त्री को एक लाल दिया था।"

तब वह स्त्री रोती हुई बादशाह के पास गई और उससे अपनी सारी कहानी कह सुनाई।

बादशाह ने पूछा—"तू क़ाज़ी के पास क्यों नहीं गई थी?" उसने कहा—"सरकार, मैं क़ाज़ी के पास गई थी परन्तु उन्होंने ठीक न्याय नहीं किया।" तब बादशाह ने उन दोनों भाइयों और गवाहों को बुलवाया। जब वे लोग आ गये तब बादशाह ने उन लोगों से सारा हाल पूछा। इसके बाद बादशाह ने उन लोगों को थोड़ा-थोड़ा मोम देकर कहा—"जाओ, अलग-अलग बैठकर इस मोम का लाल जैसा आकार बनाकर लाओ।"

बादशाह के आज्ञानुसार वे लोग लाल बनाकर ले आये। दोनों भाइयों ने तो मोम का लाल एक ही तरह का बनाया था। परन्तु गवाहों ने लाल का आकार भिन्न-भिन्न ढङ्ग का बनाया था। जब बादशाह ने उस स्त्री से लाल का आकार माँगा तो उसने कहा—"सरकार, मैंने तो लाल देखा ही नहीं। लाल का आकार बनाऊँ तो कैसे बनाऊँ।" तब बादशाह को सच्चा हाल मालूम हो गया। उसने गवाहों को डाँटकर कहा कि सच्ची बात बतला दो, नहीं तो तुम लोगों की अच्छी

तरह से ख़बर ली जायगी। तब गवाहों ने डरकर कहा कि सरकार, मेरे सामने इस स्त्री को लाल नहीं दिया गया। हम लोगों ने क़ाज़ी के सामने झूठी गवाही दी थी। तब बादशाह ने छोटे भाई से पूछा। उसने भी अपना भण्डा फूटा देखकर कहा—"हाँ सरकार, मैंने लाल नहीं दि पर बादशाह ने उन लोगों को कड़ी सज़ायें बादशाह ने क़ाज़ी को बुलाकर ठीक-ठीक करने के लिए डाट-फटकार बताई।

बादशाह ने लाल उस स्त्री को तुरन्त दि

.ग़ुब्बारे

लेखक, श्रीयुत अशोककुमार

लाल हो औ' नीले पीले
.ग़ुब्बारे यह रङ्ग रँगीले।

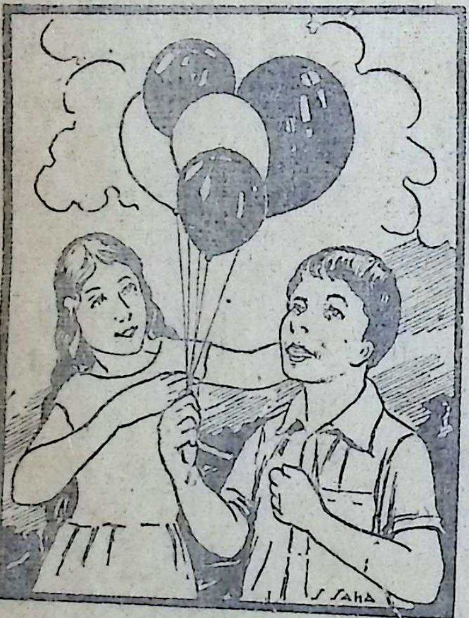

मोल इन्हें चुन्नू ले आया
जाकर चुन्नी को दिखलाया।

चुन्नी तुरत दौड़कर आ
.ख़ुश हो .ग़ुब्बारों पर धा
बोली, 'मुझे एक दे दे
मुझसे तुम पैसे ले लेना

डोर एक की उसने पकड़ा,
उसे उँगलियों से झट जकड़ा,
टूटी डोर उड़ा .ग़ुब्बारा,
खड़ा रहा चुन्नू बेचारा।

.ग़ुब्बारा फिर हाथ न आया
नहीं किसी ने उसको पाया
उड़कर पहुँचा आसमान में
घर को चुन्नू चला ध्यान में

गुड़िया रानी

लेखक, श्री कालीप्रताप द्विवेदी

हुत दिन पहले रूस में एक सौदागर रहता उसने बारह विवाह किये परन्तु उसकी सब में एक भी ज़िन्दा न बची। उसके एक थी जिसका नाम था वैसिला, जिसे उसकी सुन्दरता के कारण सब 'सुन्दरी वैसिला' ाते थे।

आठ साल की उम्र में ही उसकी माँ मर उसकी माँ, जो सौदागर की बारहवीं स्त्री थी, 'सुन्दरी वैसिला' को चाहती थी। उसने मरते वैसिला को बुलाकर तकिया के नीचे से एक ा निकाल कर दी; और —"वैसिला, मेरी प्यारी बच्ची, नहीं बच सकती। मैं तना ही, बल्कि उससे कहीं चाहती हूँ। इस कारण ह नहीं चाहती कि मेरे न र तुझे किसी बात की फ़ हो। यदि मेरे न र कभी तेरे ऊपर कोई े तो इस गुड़िया को कुछ ा खाना देकर अपने दुःख से छुटकारा ी तरकीब पूछना।"

अपनी बारहवीं स्त्री के मरने के बाद कुछ तक तो सौदागर ने बहुत दुःख किया परन्तु ही दिनों के बाद वह उसे एकदम भूल गया अब वह किसी अपनी तेरहवीं शादी के लिए प करने लगा। सचमुच 'वैसिला' की माँ का ल न था। कुछ दिनों बाद अपने एक विधवा से, जिसके दो लड़कियाँ पहले से थीं, शादी कर ली।

वैसिला आस-पास की सब से सुन्दर लड़की थी और इसी लिए उसकी सौतेली माँ उससे बहुत नाराज़ रहती थी।

कई साल बीत गये। एक बार सौदागर किसी काम से शहर से बाहर चला गया और उसकी सौतेली माँ ने अपना मकान बदल दिया। वह एक चीड़ के जङ्गल के पास मकान लेकर रहने लगी। उस जङ्गल में एक जादूगरनी रहती थी। सचमुच जैसी वह भयानक थी वैसा ही उसका नाम था बाबा-यागा। पर वैसिला उससे बचती रही क्योंकि उसकी गुड़िया उसे उसकी झोपड़ी तक जाने ही न देती थी।

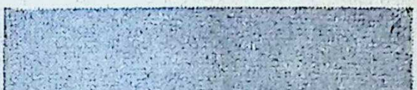

लेखक

एक दिन रात के समय सौदागर की स्त्री ने अपनी दोनों लड़कियों और वैसिला को बुलाकर तीनों को अलग-अलग काम दिया। एक का काम था फ़ीते बनाना और दूसरी का ऊन बिनना और वैसिला का काम था चर्खे पर सूत कातना। सचमुच उसे एक ख़राब और मुश्किल काम दिया गया था! पर वैसिला को अब भी जब कि वह काफ़ी बड़ी हो चुकी थी अपनी प्यारी माँ की सीख न भूली थी।

अचानक आँधी आ गई और घर की सब

करना था और घर में रोशनी थी ही नहीं। चारों ओर बड़ी तेज़ हवा चल रही थी। ऐसा मालूम पड़ता था मानों कोई बड़ा भारी तूफ़ान आ रहा हो। उसकी दोनों बहनें बत्ती बुझ जाने पर बहुत रोईं और वैसिला से कहा कि बत्ती जलाओ पर वैसिला के घर में आग तो थी नहीं। उन दोनों बहनों ने उसे 'बाबा-यागा' की झोपड़ी से आग लाने को कहा।

उसने कमरे के दरवाज़े बन्द करके गुड़िया को निकाला और उसे खाने को देकर कहा—"सुन री मेरी प्यारी गुड़िया मेरे फूटे भाग। बाबा-यागा की कुटिया से मुझको लानी होगी आग।" गुड़िया ने फ़ौरन जवाब दिया—"डर मत तू मेरी रानी, चल दे लेकर मुझको साथ। बाबा-यागा की कुटिया से तुझे दिलाऊँ आग।"

वैसिला गुड़िया को अपनी जेब में डालकर चल दी। डरती हुई वह जङ्गल के भीतर घुस गई और काफ़ी दूर निकल गई। वह चली ना रही थी, इसी समय एक सफ़ेद सवार उसके ग़ल से निकला। उसका रङ्ग सफ़ेद था और उसका घोड़ा भी बिल्कुल सफ़ेद था। कुछ दूर और चलने पर उसी तरह का एक लाल सवार निकला। वैसिला उनसे कुछ न बोली और राबर एक दिन और रात चलती रही और आख़िर वह उस झील के पास पहुँची जिसके पास बाबा-यागा' का कुटी थी। वैसिला कुछ सोच ही ही थी, इसी समय एक तीसरा सवार निकला और उस कुटिया के पास जाकर पता नहीं कैसे और कहाँ ग़ायब हो गया। उसका रङ्ग अँधेरे की रह काला था।

इसी समय एक ज़ोर की आवाज़ हुई और ङ्गल के सारे पेड़ हिलने लगे और सूखी पत्तियाँ ड़ने लगीं। बाबा-यागा इस समय सैर करने निकली थी। कुछ देर बाद वह सो-सी और कहने लगी —मैं आदमी को सूँघ ज़रूर यहीं कहीं से मांस की गन्ध आ यहाँ कौन है ?

वैसिला की घिग्घी बँध गई थी फिर भी कहा—"मैं हूँ ऐ दयालु जादूगरनी, मेरी बहनों ने आपके पास दीपक के लिए आग लाने को भे

बाबा-यागा ने कहा—"हाँ, मैं उन्हें जा पर तुम्हें यहाँ कुछ समय तक रहना पड़ेगा जो कुछ मैं कहूँगी करना पड़ेगा। अगर तु करने से इन्कार करोगी या न कर सकोगी तुम्हें खा जाऊँगी।" और तब उसने कुटि ओर मुँह करके कहा —"ऐ दरवाज़े और खिड़ खुल जाओ।" दरवाज़े और खिड़कियाँ खु और बाबा-यागा अन्दर चली गई और वै भी कुटिया के अन्दर उसके पीछे-पीछे चली कुटिया में पहुँचने पर बाबा-यागा बैठ गई तब उसने वैसिला को बुलाया और कहा— रसोई में जो कुछ हो उसे इस मेज़ पर र मुझे भूख लगी है।" वैसिला ने रसोई में देखा, क़रीब दस आदमियों का भोजन था। उसने सोचा क्या यह सब खा जा उसने सभी तरह-तरह की चीज़ों को मेज़ प रक्खा। बाबा-यागा सारे भोजन को चट गई वैसिला के लिए केवल थोड़ा-सा भोजन दिया। सोने जाने के पहले जादूगरनी ने वै से कहा—"देखो सबेरे उठकर घर को साफ़ क भोजन बनाना, कपड़े साफ़ करना। इसके खलिहान से एक मन गेहूँ निकाल कर डालना। अगर यह काम कल पूरा न हुआ तो तुझे खा जाऊँगी।" और वह सोने चली गई

बेचारी वैसिला को फिर अपनी गुड़िया याद आई। उसने जादूगरनी से बचा हुआ

ा को खिला दिया और आँसू बहाते हुए कहा—“मेरी गुड़िया रानी, बताओ मैं क्या अगर सब काम कल पूरा न हुआ तो जादूगरनी ा जायगी। मुझे बचाओ।” और वह घबरा-सिसकने लगी। गुड़िया ने उससे सो जाने को और उसे धीरज दिया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली तब सूरज निकल ा और चिड़ियाँ चहक रही थीं। वैसिला ने क खिड़की के बाहर एक क्षण के लिए सफ़ेद र को देखा और वह न जाने कहाँ फिर ग़ायब ा। जादूगरनी फिर उसी तरह सैर करने शकार के लिए तैयार हो रही थी और इसी लाल सवार भी जाता हुआ दिखाई पड़ा। समय सूरज आसमान में अच्छी तरह चमक ा। अपने बिस्तरे पर पड़ी वैसिला जादूगरनी चित्र लीला पर ताज्जुब कर रही थी। जैसे ह उठी, उसने देखा और उसे ताज्जुब हुआ सका सारा काम पूरा हो चुका था। उसकी सी गुड़िया गेहूँ के थोड़े-से बचे हुए दानों की में डालकर पीस रही थी। वह मारे के चिल्ला उठी—“गुड़िया रानी, तुम कितनी ी हो। तुमने आज मेरी जान बचा ली।” या रानी ने हँसकर कहा—“अब तुम्हें केवल बनाना है, उसे बना डालो।” और यह कहती वैसिला की जेब में कूदकर घुस गई।

शाम होने पर जादूगरनी के आने के पहले फिर और ज़मीन हिलने लगी। जादूगरनी ने आते ही —“सब काम कर लिया?” और वैसिला के ने पर वह खिसियाकर रह गई। उसने उस ी अच्छी तरह जाँच की और कोई गड़बड़ी न पर मन ही मन बड़ी अप्रसन्न हुई परन्तु न से ख़ुश होकर बोली—“सब खाना ले भाषा में कुछ कहा। वैसिला उसे समझ न सकी पर उसने देखा कि तीन आदमियों के छः हाथ उसके बिस्तर ठीक कर रहे हैं पर उसे सिर्फ़ हाथ ही हाथ दिखाई पड़े। जादूगरनी फिर सोने चली गई पर सोने से पहले उसने फिर वैसिला को बुलाकर कहा—“ऐ लड़की, कल भी तुझे आज की तरह काम करना होगा, पर एक काम और है। गेहूँ और चने यह दोनों भूल से खलिहान में मिल गये हैं; उन्हें छाँटकर अलग करना है।” उधर यह कहकर जादूगरनी तो सोने चली गई और वैसिला फिर गुड़िया निकालकर उसे खिलाने लगी। आज भी गुड़िया रानी ने उसे धीरज दिया।

सबेरे जादूगरनी बाबा-यागा फिर उसी तरह उठी और चली गई। इधर वैसिला ने गुड़िया रानी की सहायता से काम करना शुरू कर दिया। शाम होने पर फिर जादूगरनी आई और खाते हुए उसने फिर जादू की भाषा में कुछ कहा और अलग किये हुए चने की टोकरी को हाथ में लेकर जादू में कुछ कहकर टोकरी को छोड़ दिया। परन्तु टोकरी को ज़मीन पर गिरने से पहले ही छः हाथ उसे उठाकर ले गये। अब जादूगरनी फिर खाना खाने लगी। वैसिला को चुपचाप खड़े देखकर उसने कहा—“क्या तुम कुछ कहना चाहती हो?” वैसिला ने कहा—“मैंने रास्ते में कुछ अजीब बातें देखी हैं। आते वक्त मुझे एक सफ़ेद सवार मिला। वह कौन था?”

जादूगरनी—वह मेरे साथ रहनेवाला उजियाला था।

वैसिला—इसके बाद कुछ दूर जाने पर मुझे लाल सवार दिखाई पड़ा। वह कौन था?

जादूगरनी—वह मेरा लाल सूरज था।

वैसिला—इसके बाद मुझे यहाँ पर काला

जादूगरनी--वह मेरे जङ्गल में शाम हो जाने के बाद आनेवाला अँधियारा था।

वैसिला ने आगे कुछ न पूछा। जादूगरनी उसके इन प्रश्नों को सुनकर बड़ा प्रसन्न हुई। उसने पूछा--"तुम इतना काम कैसे कर लेती हो?"

वैसिला ने कहा--"मेरी माँ मरते समय मुझे एक गुड़िया दे गई थी, वही मेरा काम कर दिया करती है।" जादूगरनी को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, कहीं यह उस गुड़िया से मेरे ऊपर कोई आफ़त न लावे, इसलिए उसी समय उसे आग देकर अपने यहाँ से बिदा कर दिया।

वैसिला तेज़ी से घर की ओर दौड़ने लगी। बाबा-यागा की दी हुई आग अँधेरे में भी दिन की तरह उजाला कर रही थी। उसने सोचा अब उन लोगों को आग की जरूरत न होगी। वह दौड़ते-दौड़ते थक गई थी और एक हड्डी पर दी हुई जादूगरनी की आग उसके हाथ से गिरना ही चाहती थी कि वह हड्डी बोल उठी--"मुझे मत गिराओ, मुझे अपनी सौतेली माँ के पास ले चलो।" घर पर उसकी दोनों बहनें और सौतेली माँ उसकी बाट देख रही थी क्योंकि उनके लाख कोशिश करने पर भी आग जलती ही न थी। लेकिन जैसे ही वैसिला घर में आग लेकर आई, उसमें लपटें बढ़ने लगीं और वैसिला की माँ और बहनों को जलाने लगी। वैसिला पर उसका असर न हुआ। वह चुपचाप खड़ी रही परन्तु वे लोग जिधर ही भागतीं उन्हें आग घेर लेती थी। आख़िर वे जलकर ख़ाक हो गई और वैसिला घर में अकेली बच गई। उसने ुकान में ताला बन्द किया और शहर में एक ड़ोसिन के पास चली गई। वह सौदागर की राह ख रही थी।

एक दिन वैसिला ने पड़ोसिन से कहा—"मुझे ुछ काम करने को दो। मुझे चर्खा कातना बहुत अच्छा लगता है, इसलिए मुझे बा रूई ला दो।" पड़ोसिन ने उसे रूई ल वैसिला ने गुड़िया को कुछ खिलाकर रेशम को कहा। गुड़िया ने उसके लिए बहुत-सा रेशम तैयार कर दिया। वैसिला ने प को बुलाकर कहा—"इस रेशम को बाज़ार डालो और रुपया तुम स्वयं ले लेना।"

पड़ोसिन ने उतना अच्छा रेशम कभी न था, इसलिए वह बहुत ख़ुश हुई और कहने ऐसा रेशम तो रूस का बादशाह ही पहन है और वह उस रेशम को बाज़ार में न बादशाह के पास ले गई। राजा उस रेशम बहुत ही पतला था देखकर बहुत ख़ुश उसने भी इतना सुन्दर रेशम कभी न देख राजा उस पर बहुत ख़ुश हुआ। उसने कहा-तुम यह रेशम लाई हो तो इसी रेशम से मे एक राजसी पोशाक भी तैयार कर दो।"

पड़ोसिन—"यह रेशम मैंने तैयार नहीं है। वैसिला नाम की एक लड़की ने मुझे दिय

राजा ने रेशम देकर कहा—"अच्छा, से बनवाकर तैयार करो।"

पड़ोसिन ख़ुशी-ख़ुशी वैसिला के पास और उससे सब हाल कहा। वैसिला ने उतने में गुड़िया रानी से कहकर बारह पोशाकें करवा कर राजा के पास भिजवा दीं। इसी राजा का आदमी इनके घर आया। कहा—"राजा इस रेशम को देखकर बहुत हुआ और वह राजसी पोशाक बनानेवाली को अपने हाथ से इनाम देना चाहता है।"

वैसिला को देखकर राजा बहुत ख़ुश उसने और कुछ इनाम देने के बजाय अपने ए राजकुमार के साथ उसका विवाह कर दिया

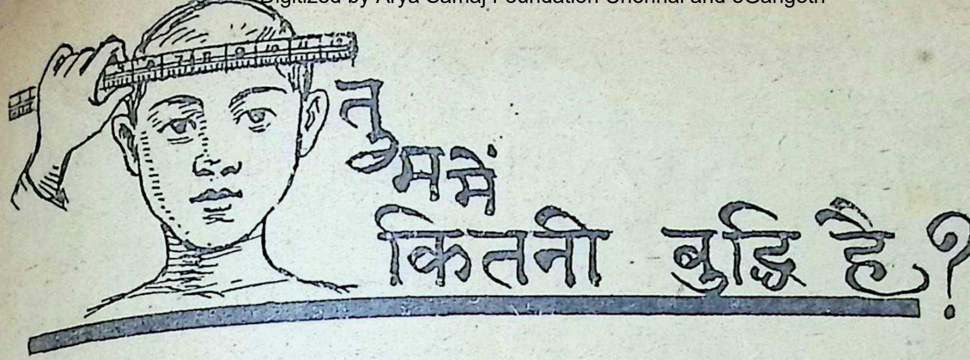

तुममें कितनी बुद्धि है?

लेखिका, श्री सरला तोशनीवाला, प्रयाग

यहाँ कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके उत्तर सोचिए और फिर पृष्ठ २७ पर दिये गये इनके उत्तरों से अपने उत्तर को मिलाइए।

१—एक छोटा और एक बड़ा प्राणी सड़क पर चल रहे हैं। छोटा बड़े का बेटा है लेकिन बड़ा छोटे का बाप नहीं है। तो बताइए वह कौन है।

२—क्या एक आदमी अपनी विधवा की बहन से शादी कर सकता है?

३—तीन फल में से दो फल उठा लीजिए। आपके पास कितने फल बचे?

४—दो बाप और दो बेटे शिकार खेलने गये। हर एक ने एक-एक बत्तख मारी और कुल तीन बत्तखें मारीं। कैसे?

५—एक नाव मन भर बोझा ढोती है। एक आदमी अपने दो लड़कों के साथ नदी पार करना चाहता है। आदमी मन भर का, और उसके लड़के बीस-बीस सेर के हैं। वे लोग नदी कैसे पार करेंगे?

६—तीन बिल्लियाँ तीन चूहों को तीन मिनट में मारती हैं तो सौ बिल्लियाँ सौ चूहों को कितने मिनट में मारेंगी?

छोटा-सा संसार

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

यह दुनिया इतनी बड़ी मगर संसार हमारा छोटा-सा!
दुनिया में कितने ग्राम-नगर,
पक्के घर, खपरैलें छप्पर,
मिट्टी के खेल घिरौंदों का घर-बार हमारा छोटा-सा।
दुनिया में कितने नारी नर,
हाथी, घोड़े, मक्खी, मच्छर,
कुछ गुड़ियों और खिलौनों का परिवार हमारा छोटा-सा।
सब चढ़ें जहाज़ों रेलों पर,
इक्कों, ताँगों या ठेलों पर,
चाबी से चलनेवाला मोटर कार हमारा छोटा-सा।
सब पढ़ते हैं ‘भारत’, ‘लीडर’
‘अर्जुन’, ‘नवयुग’, ‘जागरण’, ‘लहर’
पर प्राणों से प्रिय ‘बाल-सखा’ अखबार हमारा छोटा-सा।

कुहू कुहू

लेखक, श्रीयुत बलराम, वर्धा

एक था राजा। उसका नन्दन नाम का एक छोटा-सा राज्य था। उसकी प्रजा बड़ी सुखी थी। राजा के सात राजपुत्र थे। वे सब सत्यशील और वीर थे।

उसके पड़ोस में संगम नाम का राज्य था। वहाँ के राजा का नाम कुहू था। उसे सात बहनें थीं और थीं सब सुन्दर। नन्दन राज के राजकुमारों ने चाहा कि उनका विवाह कुहू की बहनों के साथ हो। कुहू ने अनुमति दे दी। विवाह बड़े ठाठ के साथ हुआ। कुहू की बहनें ससुराल चली आईं।

एक दिन कुहू को बहनों से मिलने की इच्छा हुई। वह घोड़े पर सवार होकर चला। मन्त्री ने प्रार्थना की कि वह साथ सेना ले जाय पर कुहू ने इनकार किया।

नन्दन राज्य के सात विभाग थे। एक-एक विभाग में हर एक राजपुत्र का निवासस्थान था। बड़ी बहन की राजधानी नज़दीक थी। कुहू बड़ी बहन के महल में दोपहर को पहुँचा। बहन ने उसका आदर किया। बहन ने भैया के ललाट पर कुंकुम का तिलक देखा और पान-बीड़े से सुर्ख़ हुए ओठ देखे। सोचने लगी, भाई साहब, भोजन कर आये होंगे। भाभी उन्हें भूखे कैसे भेजेगी? यह ताड़कर उसने भाई से भोजन के विषय में पूछताछ नहीं की।

कुहू भूख के मारे तड़पने लगा। पर वह अपने मुँह से कैसे कहे। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं। वह बिना सूचित किये हुए वहाँ से चल पड़ा। उसने प्रण किया कि अब वह उस राज में पानी तक नहीं ग्रहण करेगा।

राह में रात को वह एक पेड़ के नीचे रहा। प्रातःकाल नदी में नहाकर, तिलक लगाकर चल पड़ा। दोपहर को दूसरी बहन के में पहुँचा। बहन ने उसका सत्कार कर समाचार पूछे। वार्तालाप में उसे पता भाई साहब बड़ी बहन के महल से आ ललाट पर तिलक था और ओठ सुर्ख़ थे। सोचा "बड़ी दीदी भैया को भूखा क्यों उसने भी कुहू को भोजन के सिलसिले पूछा।

कुहू आग-बबूला हो गया। बिना कि सूचित किये वह चल पड़ा। इस राज्य कभी क़दम नहीं रक्खूँगा, यह प्रतिज्ञा कर रास्ते में एक नदी के किनारे पर रह गया और कर बीड़ा खाकर तीसरी बहन के राजमहल दोपहर के बारह बज चुके थे।

बहन ने सोचा, भाई साहब तो भोज आये-से प्रतीत होते हैं। दीदी इन्हें भूखा भेजेगी? उसने भी कुहू को भोजन के लिए कहा। कुहू की आँखें क्रोध के मारे अङ्गारे लगीं। रूठकर वह वहाँ से भी निकल गया। पाँचवीं और छठी बहन के राज में वही हाल

अन्त में वह छोटी बहन के राजनगर में उसने भी अन्य बहनों की भाँति कल्पना उसने भोजन की चर्चा तक नहीं छेड़ी।

कुहू व्यांकुल हो गया। बहन ने सोचा, के कष्टों के कारण भाई साहब क्षीण हो गये कुहू को बुख़ार आया। नौकर, दासियाँ, दौड़ती हुई आईं। सब उसकी सेवा में आ कुहू सत्य बात कैसे बतावे। उसके लि अपमान की बात थी। वह दिल मसोसकर की कोशिश करने लगा।

सका गला सूख गया। वह चिल्लाया—"पानी।" हन पानी लेती आई। उसने भाई को पानी ा। कुहू की अँतड़ियाँ भूख के मारे क्षीण ो थीं। वे ठण्ढे पानी की तकलीफ़ सह नहीं । कुहू तड़पने लगा। वह सदा के लिए ा।

समाचार पहुँचते ही कुहू की बहनें दौड़ती ी आ पहुँचीं। रानी भी आई और विलाप ी हुई बोली—"स्वामी, आप अकेले ही निकल । निकलते समय भोजन तक नहीं किया!" बड़ी बहन अवाक् रह गई। सोचने लगी, रे घर भूखे ही आये थे। वह भौचक्की-सी हो गई और रो-रोकर कहने लगी—"भैया, मैं तुम्हारी अभागिन बहन हूँ। तुम मेरे घर भूखे आये और तुम्हारी इस निठुर बहन ने तुम्हारे भोजन की पूछताछ तक न की। तिलक और सुर्ख़ ओठ देख समझ बैठी कि तुम खाकर आये। मैं पापिनी हूँ, कुलकलङ्किनी हूँ। भैया, मुझे क्षमा करना।"

सातों बहनों को अपनी ग़लती समझ पड़ी। वे सब सिसकियाँ लेकर 'कुहू-कुहू' कह रोने लगीं। वे ही बहनें अगले जन्म में कोयल बनीं। भाई की मृत्यु को वे भूल न सकीं। वे अब भी आम की डालियों पर बैठ कोमल करुण स्वर में गाती हैं—"कुहू-कुहू।"

पृष्ठ २५ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

१—बड़ा मनुष्य माँ है।

२—नहीं। जब तक आदमी नहीं मरेगा क उसकी स्त्री विधवा नहीं हो सकती और ने बाद कोई शादी नहीं कर सकता।

३—आपके पास कुल दो फल हैं।

४—शिकार के लिए एक बेटा, बाप और गया था। बाप बेटा भी था और बाप भी।

५—पहले दोनों लड़के चले जायँगे और एक लड़का नाव लेकर वापस लौट आयेगा। फिर आदमी चला जायगा। और दूसरा लड़का नाव लेकर अपने भाई को लेने के लिए वापस लौट आयेगा फिर दोनों भाई चले जायँगे।

६—सौ बिल्लियाँ सौ चूहों को तीन मिनट में मारेंगी; क्योंकि एक बिल्ली एक चूहे को तीन मिनट में मारती है।

माँ से

लेखक, श्रीयुत देवेन्द्रकुमार

यों लिखने को मैं भैया से
भी अच्छा लिख लेता हूँ अब;
पर मुझे न कोई भी लाकर
देता है लिखने को कागद।
काँपी मुझको दो लिखने को
मैं नहीं लिखूँगा पट्टी पर;
यदि मानोगी तुम नहीं बात
तो सिर में लूँगा मिट्टी भर।
यह देखो कितने बड़े-बड़े

भैया तो छोटा-छोटा सा
ही लिख पाते हैं कापी पर।
तुम क्यों न डाँटती चाचा को
वे इतने सारे काग़ज़ ले
हैं बड़ी मेज़ पर बैठ रोज़
कर देते सब के सब काले।

पर मुझे मारती हो फ़ौरन
यदि मैं लेकर के एक ताव;
नाले के बहते पानी से

नया खेल

"बभ्फ़"

इस खेल में चाहे जितने लड़के खेल सकते हैं। सब लड़के गोलाकार में बैठ जायँ। पहले एक लड़का गिनती एक से शुरू करे फिर हर एक लड़का एक के बाद गिनती बोलता जाय। किन्तु जिसके नाम ऐसी संख्या आये जिसमें ७ का भाग जा सके अथवा जिस संख्या के अन्त में ७ का अङ्क हो वह लड़का उस संख्या को न बोलकर "बभ्फ़" इस प्रकार बोले। गिनती बोलने का क्रम अति शीघ्र होना चाहिए। जो लड़का "बभ्फ़" न कहकर वह संख्या बोल जाय तो वह अपने आप उस गोलाकार से बाहर निकल जाय। इस प्रकार निकलते-निकलते जो लड़का अन्त में रह जायगा वही इस "खेल का राजा" कहलाता है।

इस खेल के खेलने से बच्चों की बुद्धि तीव्र होती है।

—महता शान्तिचन्द्र जैन "विशारद"

बोतल काटना

जब बोतल की गर्दन टूट जाती है, तब भी नीचे का हिस्सा काम लायक़ रहता है। जहाँ तक बोतल साबूत हो, उसमें तेल भर लो। अब एक लोहे का डण्डा या ऐसी कोई भारी चीज़ लो और आग में रखकर उसे लाल कर लो। यदि यह डण्डा बोतल से छुआ दिया जाय तो चट से बोतल साफ गोल, वहीं से अलग हो जायगी, जहाँ तक बोतल में तेल भरा है। इस तरह टूटी
काम में लाई जा सकती है।

शीशा काटना

यद्यपि सुनने में ग़लत मालूम होता
करके देखा जा सकता है कि शीशा पानी
बड़ी आसानी से कट सकता है। यों
विशेष प्रकार की क़लम के बिना शीशा
ही नहीं। पानी में मामूली कैंची से
भाँति नहीं तो दर्ज़ी की तरह तो कट
है। एक पानी की बाल्टी में शीशा
पानी के अन्दर पूरी तरह से डुबाकर,
अन्दर ही अन्दर काटो। इस तरह काटने
आसानी से कट जाता है।

—देवेन्द्र

टोपी के नीचे

यह एक साधारण-सी तरकीब है जो आ
अपने मित्रों को दिखाकर छका सकते हैं। अ
से कहिए कि वे एक-एक मिठाई ले आवें।
मेज़ पर एक तश्तरी में रख दीजिए। सब
अपनी-अपनी टोपी मेज़ पर रख देंगे। आप
टोपी से तश्तरी ढक दें और फिर थोड़ी दे
उसे खोलकर खा जायँ। अपने मित्रों से
वे किस टोपी के नीचे उन मिठाइयों को चाहें
जिसके नीचे वे कहें उसे उठाकर आप अपने सि
रख लें। मिठाइयाँ टोपी के नीचे हैं क्यों
तुम्हारे पेट में पहुँच चुकी हैं। आपके मित्र
कर रह जायँगे।

बच्चों का कमरा

मुन्ना और श्यामा

लेखक, श्रीयुत उमाकान्त जोशी

मुन्नी माँ की बड़ी दुलारी ;
श्यामा भैया की है प्यारी ।
भैया जब दफ़्तर से आते,
श्यामा को हैं मोती लाते ।
श्यामा को जब देते मोती,
तब है मुन्नी जी भर रोती ।
दोनों ही जब करें लड़ाई,
माता उन्हें छुड़ाने आई ।

जाड़ा

लेखक, श्रीयुत विपिनविहारी वाजपेयी, मुंगेली

आ गये जाड़े के हैं दिवस,
ग़रीबों की लेते जो जान ।
कँपाता है हमको दिन-रात
न कम पर सर्दी पड़ती जान ।
हवा ठण्डी चलती सब ओर
छेदती तन को जैसे बान ।
सताता है ग़रीब को बहुत
न करते इससे उसका मान ।
अँगीठी जलती रखते पास
न होता पर मद उसका चूर्ण,
तभी यह जाड़ा सकता भाग
गरम कपड़े यदि होवें पूर्ण ।

नया वर्ष

लेखक, श्रीयुत ओमप्रकाश 'प्रेमी', खुर्जा

यह 'बाल-सखा' का नया वर्ष;
आकर देता है हमें हर्ष ।
यह वर्षगाँठ इसकी आई;
छवि है कितनी इस पर छाई ।
है कभी चुटकुले यह लाता,
है कभी मधुर कविता गाता,
है कभी सुनाता सुघर कहानी
सुन जिसको होती हैरानी ।
लेखक की है यह अभिलाषा,
उसके मन की है यह आशा,
'बाल-सखा' के लेखक सारे
चिरजीवी हों सबके प्यारे ।

माँ की गाय

लेखिका, कुमारी मोहिनीबाला

मेरी माँ ने गैया पाली,
कुछ सफ़ेद औ' कुछ है काली,
दूध सवेरे सन्ध्या देती ।
खाने को है भूसा लेती ।
बछड़ा इसका सबका प्यारा,
दिन भर खेला करे बिचारा,
हमें देखकर दौड़ा आता,
हाथ चाटने है लग जाता

प्रश्न पहेली

बच्चों का दिल बहलाऊँ मैं,
उनका साथी कहलाऊँ।
क़िस्से और कहानी लाऊँ;
उन्नति-पथ पर पहुँचाऊँ।
('बाल-सखा')
—झोपूलाल लक्ष्मणदास

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
जाड़े में आती हूँ काम।
(रजाई)

× × ×

छोटा-सा घर तुरत बनाऊँ,
मच्छर मक्खी दूर भगाऊँ।
(मसहरी)
—पुरुषोत्तमदास मोदी

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
खाने के आता हूँ काम,
मध्य काट बनता हूँ चाल।
मेरा नाम कहो तत्काल।
(चावल)
—गिरिधारीलाल वैद्य

× × ×

आदि कटे तो लज्जा आवे,
मध्य कटे तो जज बन जावे
अन्त कटे तो सबको राखे,
जो बतलावे मीठा चाखे।
(जलज)
—शान्तिचन्द्र मेहता जैन

× × ×

चलते चलते थक गई,
आगे चला जब जाय;
लेकर चाकू काटिए
तब चलने लग जाय।
(क़लम)
—महावीरप्रसाद

× × ×

माता मुझको कहते हो तुम,
दूध सदा मेरा पीते;
धरती तोड़ा करते मेरे
बेटे जिससे तुम जीते।
(गाय)
—ओमप्रकाश

× × ×

तीन सींग औ' हरा रङ्ग मैं,
जल में उपजा थल पर आया,
खाल उतारी मेरे तन की,
कच्चा-पक्का सब ने खाया।
(सिंघाड़ा)
—वंशी

× × ×

मध्य कटे तो सिर बन जाता
अन्त कटे बन जाता सिया,
यार आदि के कटते बनता
नाम न मेरा किसने लिया।
(सियार)
—श्यामसुन्दर

× × ×

कितना प्यारा मैं लगता हूँ
शुक्ल पक्ष में मैं जगता हूँ।
मेरा रूप बदलता रहता
अन्धकार को हूँ मैं हरता।
(चन्द्रमा)
—मोहन

मनो-विनोद

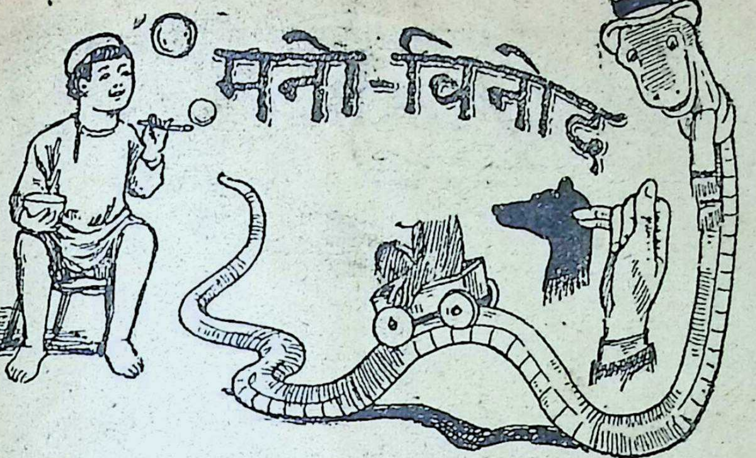

ध्यापक ने एक विद्यार्थी से प्रश्न किया। कोई उत्तर सूझ न पड़ रहा था। पासवाले विद्यार्थी ने अपने उत्तर बताना शुरू किया तो मास्टर साहब ने

क्यों जी, तुम उसे बता रहे हो ?

जी नहीं। आपने ही तो कहा था कि कठिनाई पड़े यों की सहायता करनी चाहिए। मैं भी वही कर रहा

लड़के ने उत्तर दिया।

—रविप्रताप सिनहा

× × × ×

तिहास का घण्टा था पर रमेश को नींद आ रही थी। र साहब ने उसे सोते देखकर पुकारा—रमेश, कब रहे हो ?

द से चौंककर रमेश ने उत्तर दिया—१८५७ ई०।

—कुमारी लजा देवी

× × × ×

ा लड़के स्कूल से एक ही बाइसिकिल पर लौट रहे थे। में पुलिसवाले ने रोककर कहा—आप जानते नहीं कि किल पर एक ही आदमी को बैठने का हुक्म है।

जो लड़का बाइसिकिल के पीछे खड़ा था उसने उत्तर —ज़रूर जानता हूँ, तभी तो देखिए मैं बैठ न कर खड़ा था।

—अशोककुमार

× × × ×

माता—(अपने पुत्र को अपने बाल स्वयं काटते देख) तुम अपने बाल स्वयं क्यों काट रहे हो ? क्या हीं है ?

पुत्र—पिताजी ने कहा है कि अपने काम स्वयं करने र।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पिता—(पुत्र से) कृष्ण, तुम्हारे दर्जे में ऐसा आलसी कौन है जो सब लड़कों के काम-काज करते वक़्त कुछ न करता हो ?

कृष्ण—(सोचकर) मास्टर साहब।

—ओम्प्रकाश वंशल

× × × ×

एक बार कमलाकान्त ने चन्द्रकान्त को एक पारसल भेजा और जो चिट्ठी उसमें रक्खी थी उसमें लिखा 'प्रिय मित्र चन्द्रकान्त, अगर तुम्हें यह पारसल न मिले तो फौरन मुझे ख़बर दे देना।

× × × ×

रात का समय था। सब सोये हुए थे। अचानक बड़े ज़ोर का हल्ला हुआ। मोहन की माँ ने घबराकर मोहन से कहा—मोहन ! जागते हो ?

मोहन बोला—जी नहीं, मैं तो इस समय गहरी नींद में हूँ।

—विश्वनाथ शर्मा 'प्रदीप'

× × × ×

बाजार में लाल-लाल मोसाम्बियों का ढेर देखकर मेरे मित्र का मुँह पानी-पानी हो गया। वह झट आगे बढ़ा और दाम पटाना शुरू किया।

"रुपये में कितने ? सोलह !"

पुनः रुपया फेंकते हुए उसने कहा—"आठ आने का दो, आठ आना वापिस करो; फिर आठ आने का दो, फिर चाहो तो वापिस कर सकते हो।"

भगवत्प्रसाद जायसवाल 'हृदय'

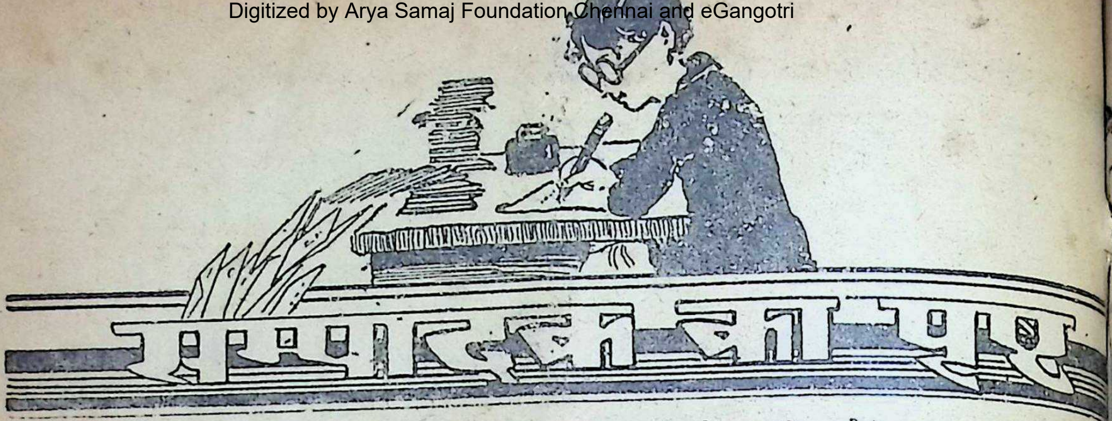

इस अङ्क से 'बाल-सखा' अट्ठाईसवें वर्ष में प्रवेश करता है। यह वर्ष हम और भी उत्साह के साथ प्रारम्भ कर रहे हैं और आशा करते हैं कि इस वर्ष 'बाल-सखा' अपने प्रेमी पाठकों का और भी अधिक मनोरञ्जन और ज्ञानवर्धन कर सकेगा।

× × × ×

नये वर्ष के उपलक्ष में हम अपने बाल-सखाओं को बधाई देते हैं। हमारी मनोकामना है कि यह वर्ष उनके लिए और भी अधिक सुखदायक सिद्ध हो।

× × × ×

नये वर्ष के उपलक्ष में हमारे पास 'बाल-सखा' के बहुत-से पाठकों के पास से बधाई के पत्र आये हैं। हम उनकी शुभ कामनाओं के लिए उनके कृतज्ञ हैं।

× × × ×

इस अङ्क म हम एक साचत्र कहानी प्रकाशित कर रहे हैं। आप इन चित्रों की कहानी का पता लगायें। सबसे अच्छी कहानी 'बाल-सखा' में प्रकाशित की जायगी।

× × × ×

इस अङ्क में कुँवर सुरेशसिंह की 'वरदू' नाम की बड़ी मज़ेदार कहानी प्रकाशित हुई है। आशा है, यह कहानी पाठक-पाठिकाओं को बहुत पसन्द आयेगी। कुँवर साहब ने 'बाल-सखा' के लिए और भी कहानियाँ लिखने का वचन दिया है। आपका स्वास्थ्य आज-कल ठीक नहीं है। 'बाल-सखा' की ओर से हम उनके स्वास्थ्य-लाभ की कामना करते हैं।

× × × ×

'बाल-सखा' में छपने के लिए हमारे पास हर महीने बहुत-से लेख, कहानियाँ और कवितायें आती हैं। उनके न छपने की सूचना हम अङ्क में प्रकाशित कर देते हैं। इस अङ्क में हम न छपनेवाली रचनाओं की सूचना नहीं प्रकाशित कर रहे हैं। नये वर्ष के अवसर पर हम उनको न कर सकने के लिए क्षमा चाहते हैं।

× × × ×

बड़े दिन के उपलक्ष में हमारे एक बाल-सखा ने
कविता बनाई है जिसे हम यहाँ छाप रहे हैं :—

आ गया बड़ा दिन देखो सुन्दर,
ख़ुशी मनाओ सब जी भरकर;
ख़ुशी मनाते बच्चे सारे,
बड़े-बड़े दिन होंगे प्यारे।
क्रिश्चियन का त्योहार बड़ा यह
बहुत दिनों में आता है यह
स्कूलों से है छुट्टी पा
छोड़ किताबें खेलो भाई।

—

× × × ×

श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य्य बँगला के ले
'बाल-सखा' के पिछले अङ्कों में उन्होंने हिन्दी में
का प्रयत्न किया है। उन्होंने 'बाल-सखा' के सम्
कविता हमारे पास भेजी है। उसे हम यहाँ छाप

'बाल-सखा' बच्चों का प्यारा,
हम सब की आँखों का तारा।
इसे देख बच्चे ख़ुश होते;
'बाल-सखा' लेने को रोते।
मिलने पर होते हैं मगन,
खिल जाता है उनका वदन।
सुख से भर जाते हैं नयन,
दूर तुरत होता है रोदन।

× × × ×

बच्चों का यह हास्य-सखा।
युग युग जीवे 'बाल-सखा'॥

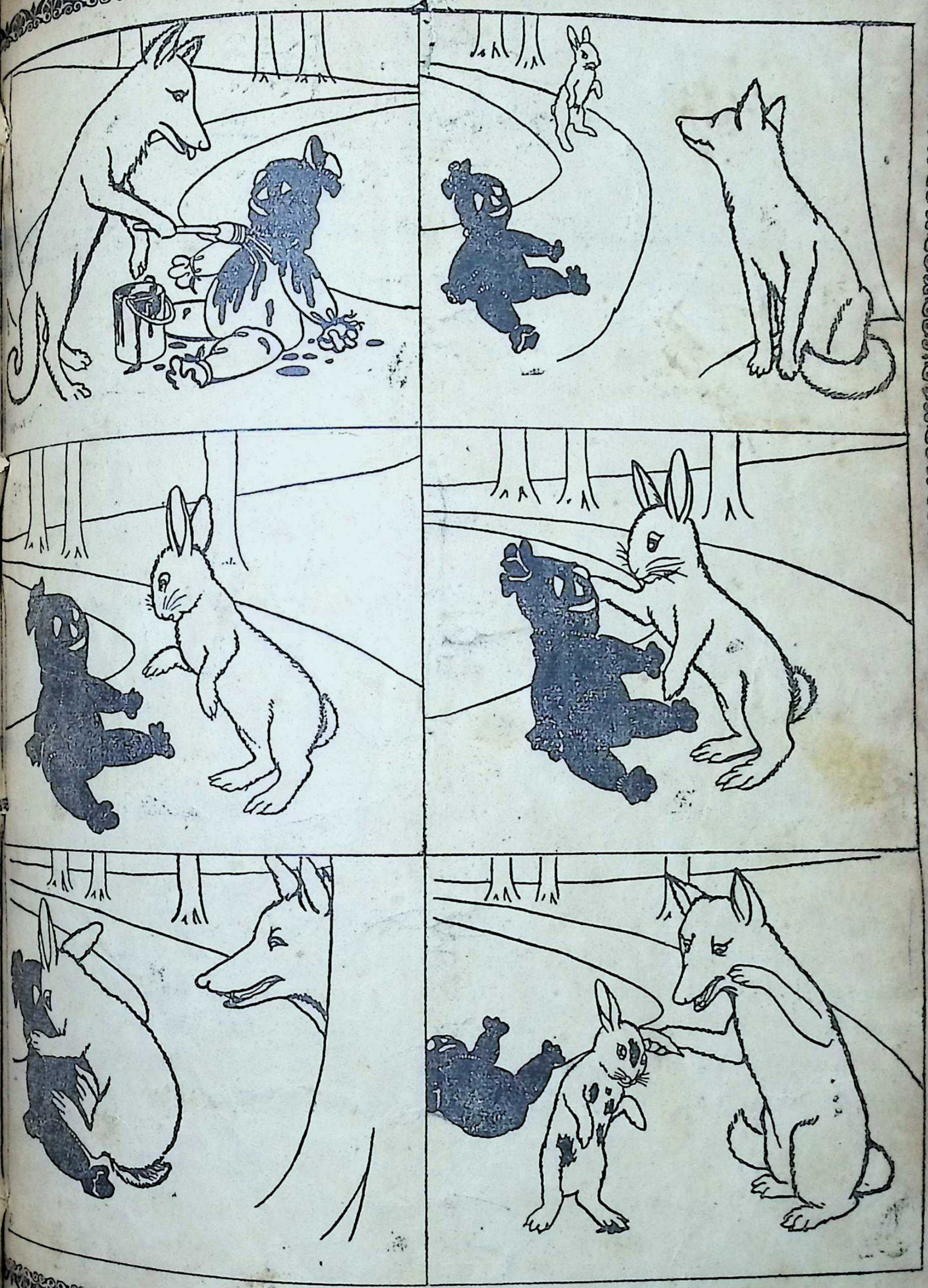

हमेशा किसी न-किसी पशुका आडम्बर करत रहता है!

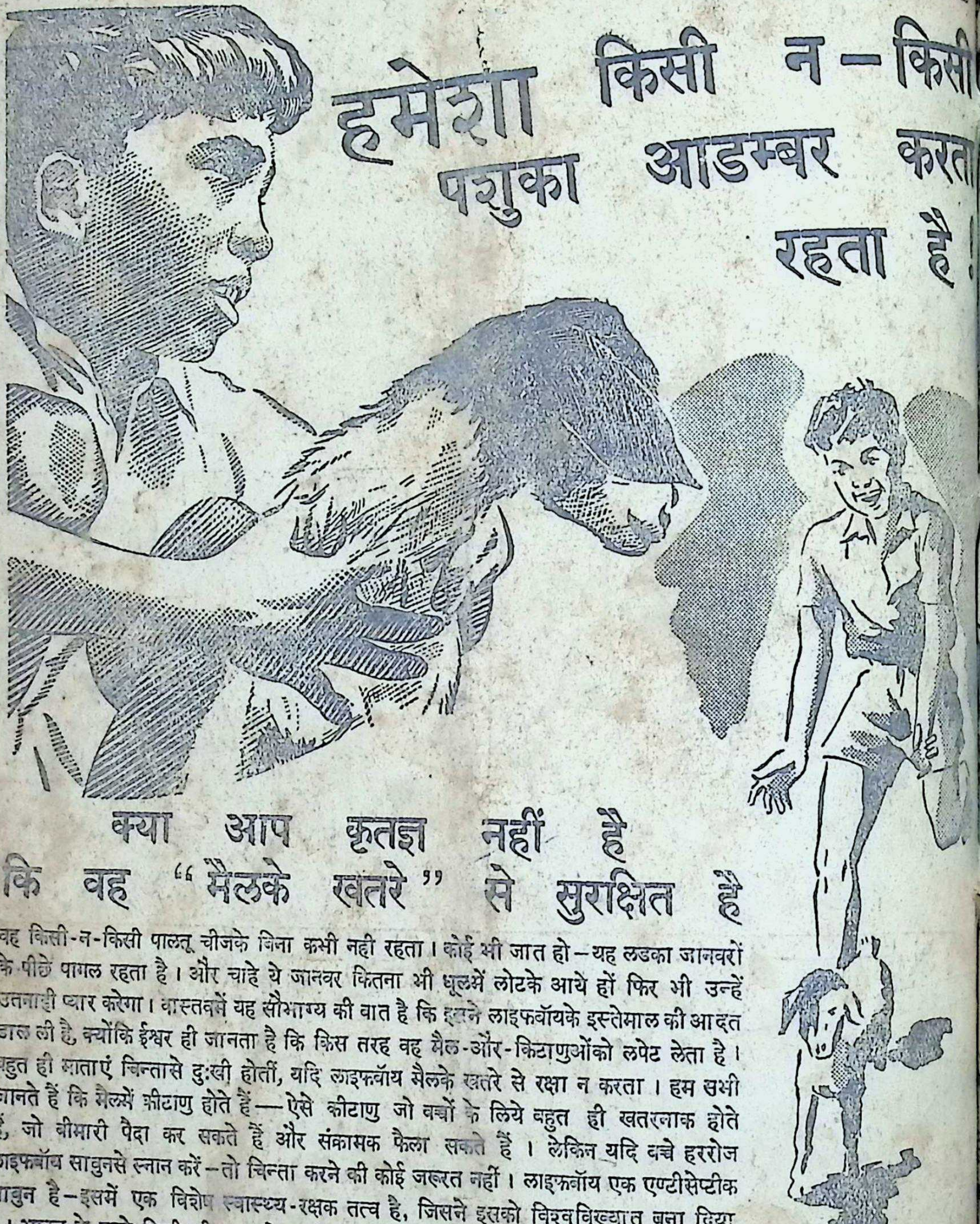

क्या आप कृतज्ञ नहीं है कि वह "मैलके खतरे" से सुरक्षित है

वह किसी-न-किसी पालतू चीजके बिना कभी नही रहता। कोई भी जात हो—यह लडका जानवरों के पीछे पागल रहता है। और चाहे ये जानवर कितना भी धूलमें लोटके आये हों फिर भी उन्हें उतनाही प्यार करेगा। वास्तवमें यह सौभाग्य की बात है कि इसने लाइफबॉयके इस्तेमाल की आदत डाल ली है, क्योंकि ईश्वर ही जानता है कि किस तरह वह मैल-और-किटाणुओंको लपेट लेता है। बहुत ही माताएं चिन्तासे दुःखी होतीं, यदि लाइफबॉय मैलके खतरे से रक्षा न करता। हम सभी जानते हैं कि मैलमें कीटाणु होते हैं—ऐसे कीटाणु जो बच्चों के लिये बहुत ही खतरनाक होते हैं, जो बीमारी पैदा कर सकते हैं और संकासक फैला सकते हैं। लेकिन यदि बच्चे हररोज लाइफबॉय साबुनसे स्नान करें—तो चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। लाइफबॉय एक एण्टीसेप्टीक साबुन है—इसमें एक विशेष स्वास्थ्य-रक्षक तत्व है, जिसने इसको विश्वविख्यात बना दिया है। भारत के दूसरे किसी भी साबुनसे यह फायदा नहीं होता।

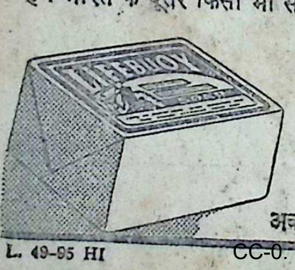

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक जरूरी आदत है

अब मोम लगे कागजके रैपरमें बेचा जाता है

L. 49-95 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

ालसखा

मार्च १९४५

एक प्रति का =)॥

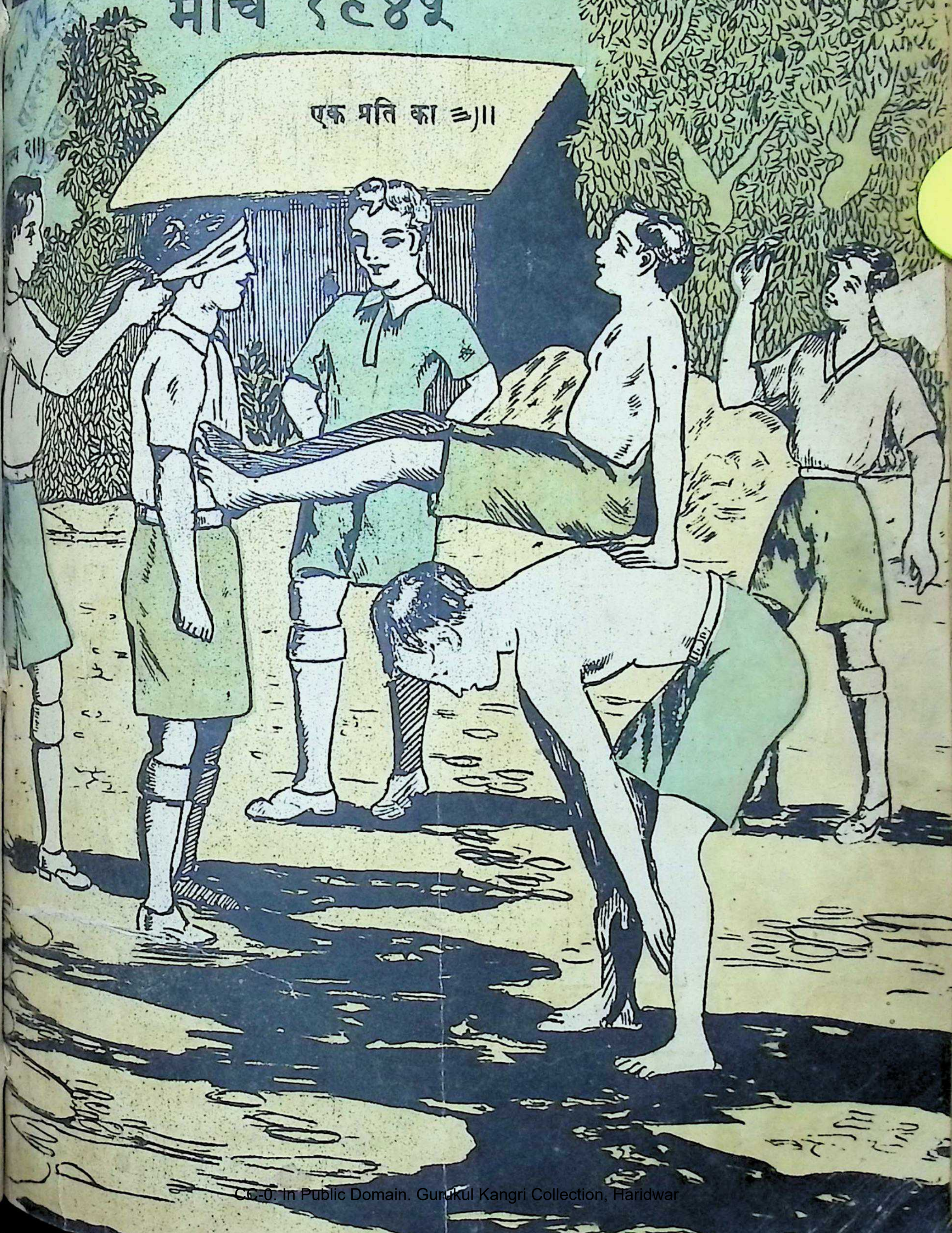

विषय-सूची

कहानी

१—ममी—श्रीयुत निशीथकुमार राय, बी० ए० ... ७१
२—हीरों का द्वीप—श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ७६
३—मुझे मौन अच्छा लगता है—श्रीयुत उमाशङ्कर शुक्ल ७८
४—मेरा सपना—श्रीयुत जितेन्द्रकुमार राय ... ८२
५—छोटा मुन्ना—श्रीयुत सुल्तान सिंह जैन ... ८३
६—बन्द कमरा—श्रीयुत एम० एल० पांड़े ... ८४
७—मीनार की राजकुमारी—श्रीयुत महेन्द्रनाथ 'मधुकर' ८७

कविता

१—चला काबुलीवाला—श्रीयुत श्रीधर कुलश्रेष्ठ ... ६५
२—चपरासी—श्रीयुत 'कुमार हृदय' ७२
३—दो भाई—श्रीयुत भुवनमोहन श्रीवास्तव ... ७५
४—लिफ़ाफ़े की शैतानी—श्रीयुत श्रीधर कुलश्रेष्ठ ... ८० ८१
५—शैशव—कुमारी पुष्पा सक्सेना "पुष्प" ... ८०-८१
६—मेरा मुन्ना—श्रीयुत रमाशङ्कर त्रिपाठी ... ८१
७—तारे—श्रीयुत ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, एम० ए० ८२
८—वसन्ती-पवन—श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी० ... ... ८५
९—बेर—श्रीयुत केदारनाथ अग्रवाल ८६
१०—वसन्त की हवा—श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए० ९१

लेख

१—श्री जगन्नाथ धाम : एक झाँकी—श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश' ... ...
२—खून क्या है ?—डाक्टर व्रजबिहारीलाल, बी० एस-सी०, एम० बी०, बी० एस० ...
३—वायुयान कौन नष्ट करता था ?—श्रीयुत नारायणदत्त तिवारी ... ...

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है ?—श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश' ... ...
२—कुछ इधर-उधर की ... ...
३—छुट्टी का घण्टा—बदली का दिन ...
४—पाठकों के पत्र ... ...
५—क्या तुम जानते हो ? ... ...
६—छोटे बच्चों के लिए—
तितली—श्रीयुत आनन्दमोहन जोशी
मेरा कुत्ता—श्रीयुत नरेन्द्रकुमार सिंह चौहान
मेरा घर—कुमारी मालती माथुर ...
काली बिल्ली—श्रीयुत सुरेन्द्रभूषणप्रसाद
७—प्रश्न-पहेली .. ..
८—मनोविनोद ... ...
९—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डॉंगरे बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट
और चुस्त बनते हैं।

सच बात है—

कि बहुत ही छोटे बच्चों को खाना और खेलना चीज़ें बहुत ही पसन्द आती हैं। किन्तु इसके बाद जो उन्हें प्रिय लगती है तो वह है रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाली कहानी की पुस्तकें। नीचे हम छः पुस्तकों के नाम लिख इनमें से प्रत्येक पुस्तक इतनी मज़ेदार है कि बच्चे उन्हें प्रसन्नता से लोटपोट हो जायँगे।

सद्गुणी बालक ... १।–)
मज़ेदार ख़ज़ाना ... ॥)
सोने का पेड़ ... ॥≡)
अनोखी कहानियाँ ... ।–)
लकड़ी का घोड़ा ... ॥≡)
बाल-कवितामाला ... ॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

बालक-बालिकाओं के लिए
कविता का अपूर्व झरना

पं० रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं को बड़े शौक़ से पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह उसी की रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

सम्पादक { लल्लीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

मार्च १९४५—चैत्र २००१ [संख्या ३

चला काबुलीवाला

लेखक, श्रीयुत श्रीधर कुलश्रेष्ठ

काबुलीवाला भैया, चला काबुलीवाला ।

ती जाकट, ऊँचा साफ़ा, मैली-सी सलवार ।
हुए फटही झोली में, चीज़ें कई हज़ार ॥
—भैया चीज़ों की भरमार ।

चप्पलें, खड़ी कलंगी, साफ़े पर ज्यों पूँछ ।
लाल हैं बाल सुनहरे, बड़ी-बड़ी-सी मूँछ ।
—भैया बड़ी भयङ्कर मूँछ ॥

खम्भा-सा, है रहता ठाठ बनाये आला ।
—भैया चला काबुलीवाला ॥

, पिस्ता, चिलगोज़ा, काग़ज़ी लिये बादाम ।
, अखरोट, चिरौंजी, क्या बढ़िया सामान ।
—भैया थमती नहीं ज़बान ॥

एक-एक से बढ़िया मेवा, खाओ, मुँह मटकाओ ।
अगर जेब में रहे, साथ के मित्रों को ललचाओ ॥
—भैया अपना काम कराओ ।
मन को फिरा रही है उसके अञ्जीरों की माला ॥
—भैया चला काबुलीवाला ।

डर लगता है उसे देखकर, कैसे उसे बुलावें ?
पैसा भी तो नहीं पास, फिर मेवा कैसे पावें ?
—भैया कैसे मेवा खावें ?

हमने माँ से कहा, उन्होंने तो हमको धमकाया ।
मैंने चबूतरे ही से, ज़ोरों से उसे बुलाया ॥
—भैया थी मेवे की माया ।
फिर भागा, मुझको लगता वह आफ़त का परकाला ॥
—भैया चला काबुलीवाला ।
—"ऊँ-ऊँ" चला काबुलीवाला ॥

श्री जगन्नाथ धाम : एक झाँकी

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश',

बालसखाओ ! मैं हाल में श्री जगन्नाथ धाम (पुरी) की यात्रा करने गया था। मैंने वहाँ जो कुछ देखा, उसे तुम्हें सुना रहा हूँ।

श्री जगन्नाथ धाम बहुत प्राचीन काल से पुरी, नीलाचल, पुरुषोत्तम आदि नामों से प्रसिद्ध है। यह हिन्दुओं के चार धामों में से है और उड़ीसा-प्रान्त में कटक के रास्ते से प्रायः ५५ मील दक्षिण को है। कलकत्ते से यह ३०० मील दूर, बङ्गाल नागपुर रेलवे पर, है। यह शहर दो हिस्सों में बँटा हुआ है, १—ालूखण्ड, २—शहर प्रधान। ालूखण्ड समुद्र-तट के हिस्सों को कहते हैं। यहाँ के सभी ुहल्ले बहुत आबाद हैं। पिछले ीस वर्ष से समुद्र-तट पर ालूखण्ड में गवर्नमेंट हाउस, ड़े-बड़े होटल और बहुत-से ईसों के बँगले बन गये हैं जिससे शहर की शोभा और ी बढ़ गई है। धार्मिक क्षेत्र ोने से यहाँ बहुत-से कलकत्ते त्यादि के मारवाड़ियों वग़ैरह ी बढ़िया धर्मशालायें बनी ई हैं जिनमें उतरने से सुभीता हता है। इससे हिन्दू यात्री तो प्रायः धर्मशालाओं ही उतरते हैं।

लेखक

यहाँ का तापमान बारहों महीने लगभग एक-सा हता है। समुद्र की शीतल हवा चलती है लेकिन ब हवा बन्द हो जाती है तब शहर के भीतरी हिस्सों बहुत गर्मी पड़ती है। ऐसी दशा प्रायः बरसात में ती है।

पहले पुरी के आस-पास दूर तक ज जङ्गल था। इसके बीच में नीलाचल नाम क नीला पहाड़ था। उस समय उस पहाड़ पर क वृक्ष और रोहिना नामी पानी का सोता था। पास ही एक प्रतिमा थी जिसे नीलमाधव कहे

धीरे-धीरे इसकी खबर अवन्ती के राजा इ को लगी जिसने अपने आदमी मूर्ति ढूँढ़ने को विद्यापति नामक मनुष्य के सिवा और लोग लौटे। विद्यापति ने इस और जगह की सूचना रा दी। बहुत-सी सेना औ इयों को लेकर राजा आया, राजा का अभिमान देखकर लुप्त हो गई। फिर आका हुई कि राजा, तू मेरा तो बनावेगा पर मेरे द कर सकेगा। राजा ने तपस्या की तब फिर आ वाणी हुई कि अगर तू १० अश्वमेध यज्ञ करे तो विष् दर्शन लकड़ी के लट्ठे की में, जिसपर पुनीत चिह्न पायगा। १०० यज्ञ पूरे पर राजा को एक लट्ठा में बहता दिखाई दिया जिसपर विष्णु की मू चिह्न थे। राजा ने इसको बड़ी धूमधाम से जगह पर स्थापित किया। इसी जगह अब म बना हुआ है।

अब राजा ने देश के बढ़इयों को बुलाया उस लट्ठे में से मूर्तियाँ बनाने को कहा। ता की बात यह हुई कि जब कारीगर लट्ठे को

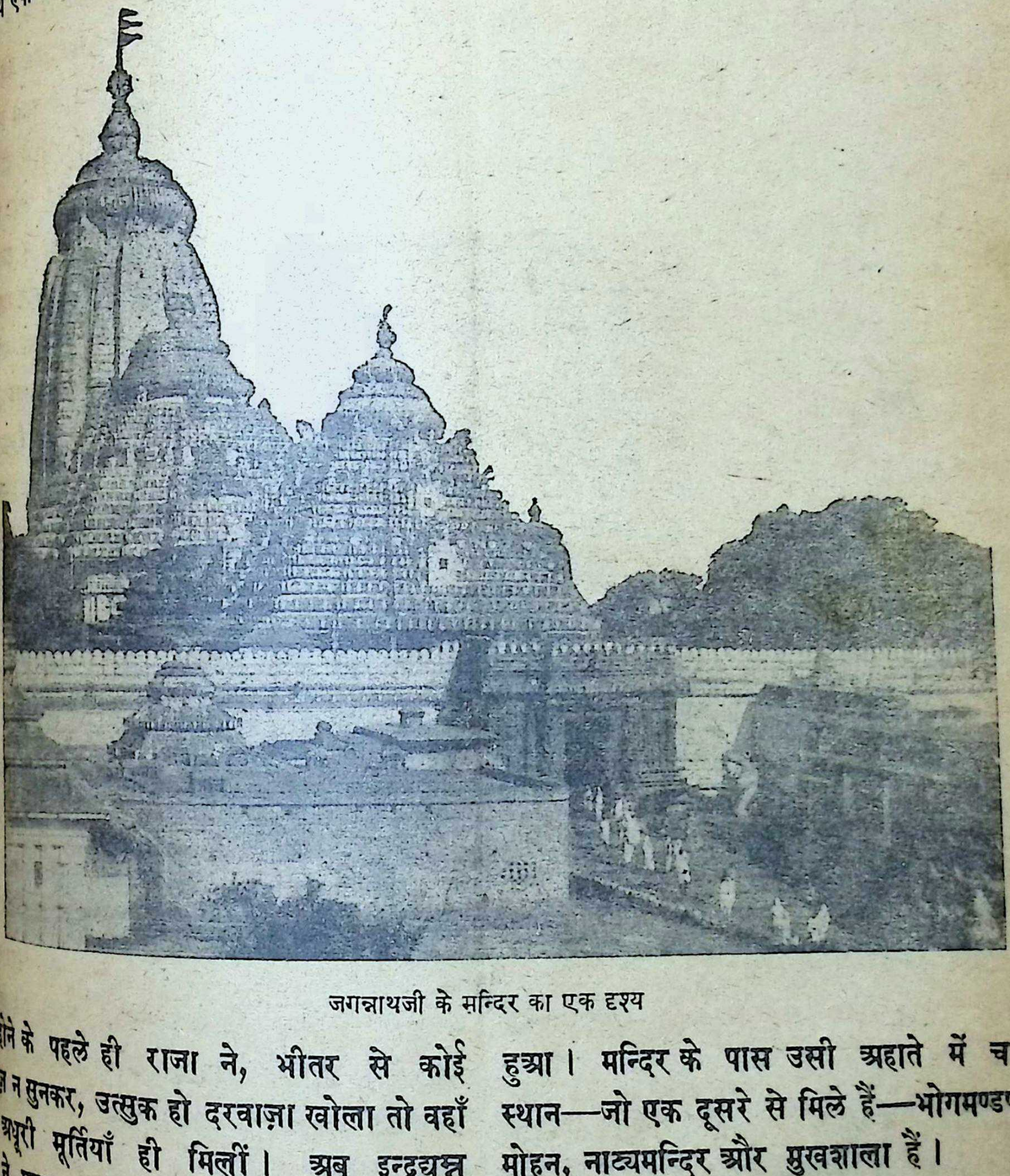

जगन्नाथजी के मन्दिर का एक दृश्य

लिए छेनी इत्यादि लगाते थे तब वे औज़ार ही
जाते थे। अन्त में स्वयं जगन्नाथजी एक बूढ़े
के रूप में प्रकट हुए और २१ दिनों के भीतर
बनाने की बात की। लोगों ने उसे उस लट्ठे
ाथ एक कमरे में बन्द कर दिया लेकिन मियाद
होने के पहले ही राजा ने, भीतर से कोई
ाज़ न सुनकर, उत्सुक हो दरवाज़ा खोला तो वहाँ
अधूरी मूर्तियाँ ही मिलीं। अब इन्द्रद्युम्न
ों ने मुद्दत तक ब्रह्मा का इन्तज़ार किया कि
र मन्दिर की प्रतिष्ठा करें। अन्त में विमान-
मूर्तियाँ लाई जाकर मन्दिर में स्थापित
गई।

राजा अनङ्ग भीमदेव (सन् ११८९ से १२२३ तक राज्य) के शासन-काल में उड़ीसा की बहुत तरक़्क़ी हुई। यह मन्दिर उसी के राज्य में क़रीब ५० लाख की लागत से, उसकी आज्ञा से. नीलकण्ठ राय गुरु महापात्र परमहंस वाजपेयीजी की निगरानी में तैयार हुआ। मन्दिर के पास उसी अहाते में चार ब
स्थान—जो एक दूसरे से मिले हैं—भोगमण्डप, जग
मोहन, नाट्यमन्दिर और मुखशाला हैं।

भोगमण्डप मन्दिर के बाद बना। यहाँ मठों औ
यात्रियों की तरफ़ से भोग लगता है जिसे छात्र-भो
कहते हैं। जगमोहन और नाट्यमन्दिर बड़े मन्दिर हैं
जगन्नाथजी का प्रसाद बनाने की जगह मन्दिर

पास ही है जिसमें सैकड़ों रसोइए भोग बनाते हैं। क़रीब हज़ार पाँच सौ रुपये का भोग प्रतिदिन लगता है। महाप्रसाद (दाल-भात) को अमीर ग़रीब सभी जातियों के लोग, बिना भेद-भाव के, एक साथ बैठकर बड़े चाव से खाते हैं।

मन्दिर बहुत बड़ी मज़बूत चहारदीवारी के भीतर है। इसमें कई फाटक हैं। अहाते में जगदीश्वर मन्दिर के अलावा और भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं। पत्थर का

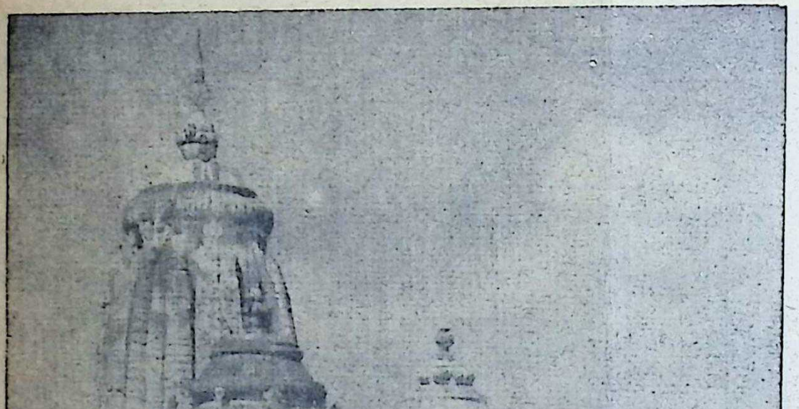

जगन्नाथजी का मन्दिर

ना हुआ जगन्नाथजी का मन्दिर सैकड़ों फ़ुट ऊँचा । मन्दिर के बाहरी हिस्से में बहुत-सी सुन्दर मूर्तियाँ नी हैं। पत्थर की नक़्क़ाशी और शिल्पकला को खकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है।

मन्दिर के प्रवेश-मार्ग के सामने बाहर अरुण-तम्भ है जिसके बचाव के लिए चारों ओर छोटी-सी लोहे की चहारदीवारी है। स्तम्भ के ऊपर देवता की छोटी-सी मूर्ति है। मन्दिर में जाने दर्शनार्थी इस स्तम्भ की पूजा करते हैं। इसी के मन्दिर के अहाते का फाटक है। भोगमण्डप में पर गरुड़ पक्षी विराजमान है जो भगवान् वि वाहन है। जनता इसी स्तम्भ के पीछे खड़ी हो से जगन्नाथजी का दर्शन करती है। नाट्य-मन्दि नृत्यगृह आगे पड़ता है। वहाँ भी यात्रियों होती है। इस जगह से चलकर मन्दिर के फाटक पर पहुँचते जगन्नाथजी की मूर्तियाँ हैं। आख़िरी दीवाल के पास, एक ऊँ तरे (जिसे रत्नवेदी कहते हैं) पर वेदी पर जगन्नाथजी, बलभद्र बीच में सुभद्राजी की मूर्ति राजभोग, स्नान और शयन के जनता रत्नवेदी तक नहीं जा स बाक़ी समय में भीतर जाकर दर्शन करते हैं। किसी को छूने की इजाज़त नहीं। कोई छू लेता है तो ठाकुरजी को स्नान कराया जाता है। तीनों चन्दन की लकड़ी की बनी हैं। जाता है कि बारह वर्ष के बाद कलेवर बदलने का समय तो नदी से चन्दन का बहुत पवित्र शहतीर अपने आप यहाँ आता है। उसी से नई मूर्तियाँ बना ली जाती हैं।

बलभद्रजी की मूर्ति कोई छः फ़ुट ऊँची जगन्नाथजी की पाँच फ़ुट ऊँची है। सुभद्राजी मूर्ति की उँचाई चार फ़ुट है। जगदीशजी का श्याम, बलभद्रजी का सफ़ेद और सुभद्राजी पीला है। उनके चेहरे इत्यादि विशाल हैं।

-भाँति के रेशमी कपड़ों एवं सुगन्धित पुष्पों से रहती हैं। रत्नवेदी पर लक्ष्मी, सरस्वती और न चक्र की भी छोटी-छोटी प्रतिमायें हैं।

मन्दिर का सारा प्रबन्ध पुरी के राजा के हाथ ये ही मन्दिर के आय-व्यय इत्यादि की देख-करते हैं। आजकल यहाँ के राजा श्री गजपति राज रामचन्द्र जी हैं।

यों तो पुरी में रोज़ मेला रहता है पर सबसे मेला रथयात्रा का आषाढ़ में होता है। मूर्तियों

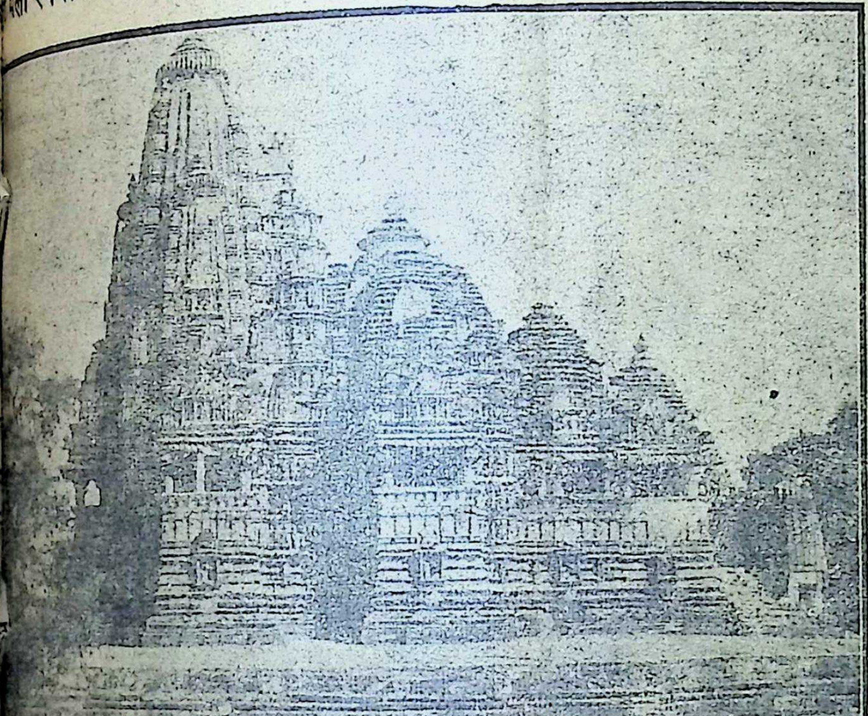

मन्दिर का एक दृश्य

अलग-अलग रथ में बैठाकर जनकपुरी (मन्दिर मील) बहुत धूम-धाम से ले जाते हैं। इसको ने के लिए लाखों यात्री दूर-दूर से इकट्ठे होते रथ बहुत बड़े और मन्दिर ही की तरह होते हैं। कारीगरी और बारीकी देखने योग्य होती है। पर भी मूर्तियाँ बनी रहती हैं। सबसे बड़ा रथ थजी का ४५ फ़ुट ऊँचा और ३५ वर्ग फ़ुट -चौड़ा होता है। उसमें ७ फ़ुट व्यास के १६ लगते हैं। बलभद्रजी और सुभद्राजी के रथ इनसे कुछ छोटे होते हैं। दर्शनार्थी इन रथों को खींचकर आनन्दमग्न होते हैं।

विजयादशमी के दिन मूर्तियों का बहुत सुन्दर स्वर्ण-शृङ्गार किया जाता है। स्वर्ण के विशाल हाथ, पैर, छत्र-मुकुट इत्यादि इस शृङ्गार में होते हैं।

पुरी में देखने योग्य बहुत-से स्थान हैं। चक्रतीर्थ मुहल्ले में बेड़ी हनुमान हैं जो समुद्र को भीतर नहीं आने देते। जनकपुरी मन्दिर से कोई तीन मील पर है। वहाँ मन्दिर पत्थर की मज़बूत चहारदीवारी के भीतर है तथा इसमें जानकीजी की मूर्ति है।

लोकनाथ - मन्दिर पुरी से दो मील पश्चिम है। मन्दिर में शिवजी की मूर्ति है जो सदा जल मे रहती है। सिर्फ़ शिवरात्रि को बाहर निकलती है।

चन्दन तालाब जगन्नाथजी के मन्दिर से लगभग एक मील पर है। यह बड़ा तालाब है। इसके बीच में एक सुन्दर मन्दि है जो प्रायः ख़ाली रहत है। वैशाख में जगन्नाथज की प्रतिनिधि मूर्ति यहाँ पधराई जाती है। इस तालाब का पानी साफ़ है। इसके सिवा यहाँ के तालाबों में मारकण्डेय और इन्द्रद्युम्न तालाब उल्लेखनीय हैं। यहाँ और भी छोटे-छोटे तीर्थ आदि एव मठ हैं।

वास्तव में पुरी वायु-सेवन और समुद्र-स्नान की जगह है। जहाँ कभी जङ्गल ही जङ्गल थे वहाँ आज बढ़िया बँगले हैं। समुद्र का भयङ्कर गर्जन, वहाँ की नीरोग हवा और किनारे से लेकर क्षितिज तक फैले

हुए नीलाचल के दर्शन मन में अपूर्व आनन्द पैदा करते हैं। समुद्र-तट पर बहुत-से आदमी सुबह-शाम घूमते नज़र आते हैं। समुद्र-किनारे बड़े-बड़े आदमियों के बँगले हैं जहाँ रहकर लोग अपूर्व स्वास्थ्य प्राप्त करते हैं।

समुद्र-स्नान वास्तव में एक प्रकार की कुश्ती है। मैं क़रीब १५ दिन पुरी में रहा था और रोज़ स्नान करता था जिससे शरीर में फ़ुर्ती मालूम पड़ने लग गई थी।

इसके घाट मज़बूत पत्थर के हैं किन्तु प्रायः गये हैं। पण्डे लोग यात्रियों को इस तालाब कराकर भुवनेश्वर महादेव का दर्शन कराते हैं। का पानी निर्मल है। उसमें बीच में एक मन्दिर प्रायः ख़ाली रहता है। साल में एक बार उत्सव में भुवनेश्वरजी की चल मूर्ति (प्रति को ले जाया जाता है।

भुवनेश्वर में राजा-रानी का मन्दिर कोई एक मील पर है। इस मन्दिर की

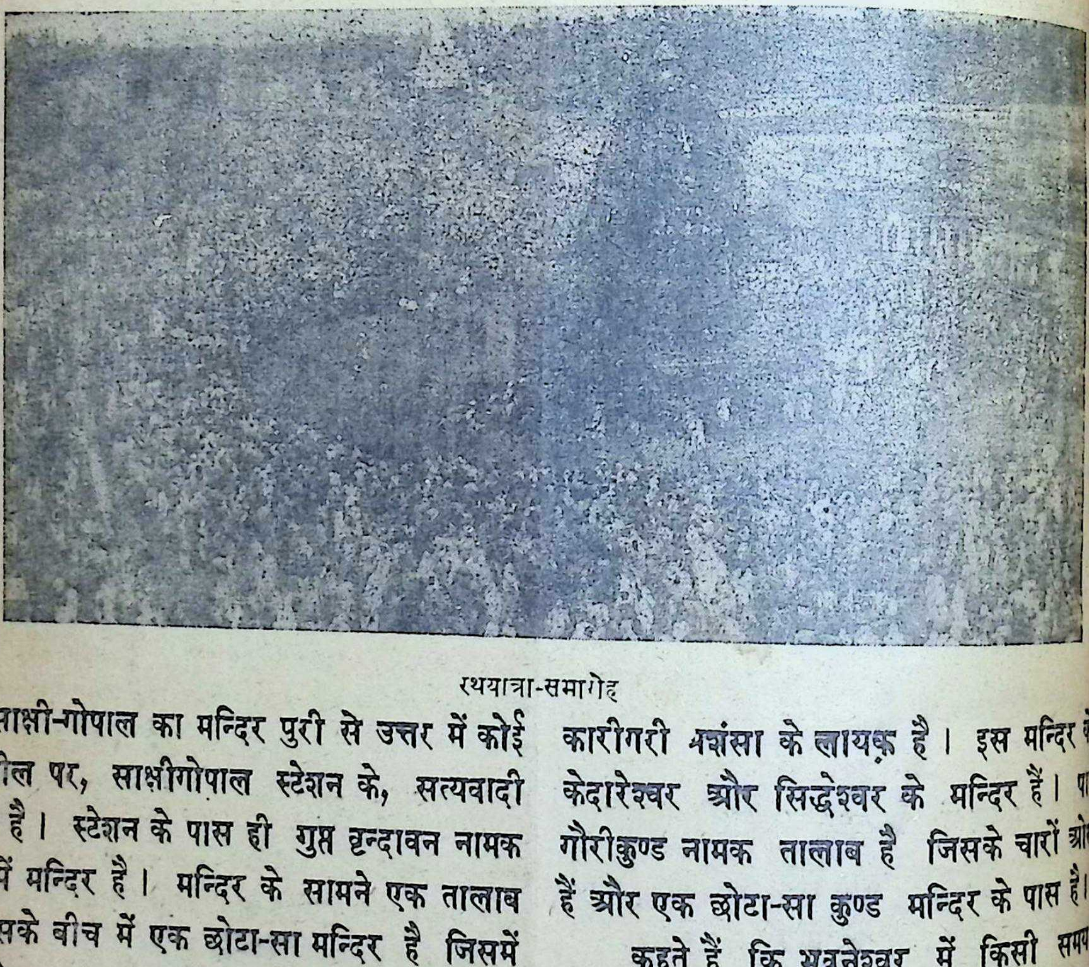

रथयात्रा-समारोह

साक्षी-गोपाल का मन्दिर पुरी से उत्तर में कोई ० मील पर, साक्षीगोपाल स्टेशन के, सत्यवादी ाम में है। स्टेशन के पास ही गुप्त वृन्दावन नामक ग़ीचे में मन्दिर है। मन्दिर के सामने एक तालाब । उसके बीच में एक छोटा-सा मन्दिर है जिसमें ाक्षी-गोपाल (कृष्ण) की मनोहर छवि है। दर्श- ार्थी पुरी से लौटते समय यहाँ दर्शन करते हैं।

पुरी से उत्तर कोई ४० मील पर भुवनेश्वर ाम का स्टेशन है। स्टेशन से मन्दिर लगभग एक ील पर है। बस्ती में बिन्दुसरोवर नामक तालाब है।

कारीगरी प्रशंसा के लायक़ है। इस मन्दिर के केदारेश्वर और सिद्धेश्वर के मन्दिर हैं। पा गौरीकुण्ड नामक तालाब है जिसके चारों ओर हैं और एक छोटा-सा कुण्ड मन्दिर के पास है।

कहते हैं कि भुवनेश्वर में किसी समय लाख मन्दिर थे, लेकिन आजकल तो मन्दि भग्नावशेष ही नज़र आते हैं।

भुवनेश्वर से क़रीब ५ मील की दूरी पर उ गिरि-खण्डगिरि की गुफायें हैं। ये गुफायें प्राचीन होने के नाते दर्शनीय हैं।

कहानी के आधार पर

ममी

लेखक, श्रीयुत निशीथकुमार राय, बी० ए०

त से वैरिस्टर होकर जब मैं हिन्दुस्तान लौटा तब एक म्बई के बन्दरगाह पर उतरते ही अफ़्रीका की सैर चलने के लिए कहा। मुझे कोई जल्दी न थी इसलिए हो गया। घर को तार भेज दिया कि मेरे लौटने होगी—चिन्ता न करें। अफ़्रीका में क्या-क्या देखा सी बड़ी विपद का सामना करना पड़ा यह फिर कभी ा। मैं उस समय मिस्र की राजधानी कैरो में था। इस का आरम्भ वहीं से हुआ। उस दिन सन्ध्या को मित्र प्रभाकर के साथ टहलने निकला। शहर के स्थान में पहुँचते ही मैंने देखा कि एक अरब मेरी ड़ा आ रहा है। वहाँ की घटनाओं से कुछ ऐसी ड़ गई थी कि हर बात में पहले विपद का ही डर होने था। मैंने जेब में हाथ डालकर पिस्तौल को छूकर दिल को ढाढ़स दिया और उसके पास आने की बाट लगा। उसने पास आकर अरबी भाषा में पूछा—

ब, एक चीज़ लीजिएगा ?”

ीज़ ? कौन सी ?” हम दोनों ने पूछा।

रा इधर आइए। बताता हूँ” कहकर वह राह के के खम्भे के पास से हमें हटा ले गया। उसके से डर मालूम होने पर भी मैं आगे बढ़ा। एकान्त उसने अपने फटे झोले में से जो चीज़ मेरे सामने , वैसी वस्तु के उस ग़रीब अरब के झोले में होने की मैंने स्वप्न में भी न की थी। वह था एक छोटा-सा क़रीब एक हाथ लम्बा ‘बौने’ का शरीर। उस ा चेहरा जीवित व्यक्ति के चेहरे से भिन्न न था। देखने से भ्रम होता था कि हाल ही का मुर्दा है। मैंने तथा विलायत के अजायबघरों में ‘ममी’ देखे थे मगर सब से कहीं बेहतर था। इसके साथ चार हज़ार साल रहस्यमय कहानी जैसे लिखी हुई थी। मैं ‘ममी’ ही उसे ख़रीदने के लिए व्यग्र हो उठा। उसने रुपया बताया। फ़ौरन् रुपये देकर मैंने उसे ले स तो कुछ नहीं था अगर वह मुझसे सौ भी माँगता तो मैं दुबिधा न करता। मुझे ऐसी चीज़ों का बहुत शौक़ है। मैंने अपने मकान में एक कमरा अपनी ‘लाइब्रेरी’ के पास ही बना रक्खा था, जिसमें कितनी ही ऐसी चीज़ें थीं जिनका मूल्य ऐतिहासिकों के लिए बहुत है। मगर इसके मुक़ाबले में वे कुछ नहीं थीं। आनन्द के मारे मुझसे रहा नहीं जा रहा था। मैंने अपने मित्र से शीघ्र भारतवर्ष को लौटने को कहा।

मैंने अपने घर पहुँचते ही एक अच्छी शीशे की आलमारी मँगवाई। उसके अन्दर बड़े यत्न के साथ उस ‘ममी’ को रखकर लाइब्रेरी के बीचोंबीच एक मेज़ पर रख दिया। जो कोई मेरे कमरे में आता वह पहले इस ‘ममी’ को आश्चर्य से देखता था और मेरे संग्रह की तारीफ़ किया करता था। मैं भी अपने सौभाग्य तथा संग्रह के गर्व से फूला न समाता था।

जिस कमरे में उस ‘ममी’ को मैंने रक्खा था, उसके ठीक ऊपरवाले कमरे में मैं सोता था। न जाने क्यों, रात को मैं नीचेवाले कमरे में किसी के चलने की आवाज़ सुना करता था। उस दिन भी रात को ऐसी ही किसी आहट से मेरी नींद खुल गई। मामला क्या है, यह देखने के लिए मैं खाट पर से नीचे उतरा ही था कि किसी चीज़ के गिरने का झन्-झन् शब्द सुनाई पड़ा। मैं चटपट नीचे उतर आया और कमरे में जाकर देखा। शीशे की आलमारी टूटी पड़ी है और ‘ममी’ कुछ दूर पर खड़े किये की हालत में है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। अगर आलमारी मेज़ पर से गिरकर चूर-चूर हो जाती तो ममी ज्यों का त्यों और ख़ासकर खड़े हुए की हालत में कैसे रह जाता। फिर, आलमारी मेज़ के बीचोबीच थी। बिल्ली या चूहों से वह हिलाई भी नहीं जा सकती। जिस चीज़ ने मुझे सबसे अधिक आश्चर्य में डाला था वह थे ‘ममी’ के फैले हुए दोनों हाथ। जिस समय मैंने ख़रीदा था उस समय मेरे ख़याल से उसके दोनों हाथ लटक रहे थे। उनका फैल जाना बड़ा आश्चर्य-जनक लग रहा था। आशङ्का से मेरा दिल काँप उठा।

दूसरे दिन जब अपने मित्रों को मैंने यह कहानी सुनाई तो वे हँसने लगे। एक ने कहा—“अरे यह शरीर के पुट्ठों का खेल है। पेशियों के फैलते ही हाथ-पैर फैल गये और उसी कारण आलमारी मेज़ पर से ज़मीन पर गिर पड़ी।” परन्तु मैं इस बात को न मान सका। पेशी क्या चार हज़ार साल बाद आज ही के दिन फैलने को थी।

---

* ाचीन मिस्र में मर जाने के बाद मुर्दे को कोई अद्भुत कर रख दिया जाता था जिससे वह सड़ता नहीं था। ा विश्वास था कि मृत्यु के बाद यमराज के दरबार में ने निर्णय के लिए जाना पड़ता है—इसी कारण मुर्दा किया जाता था। इसी मुर्दे को ममी कहते हैं।

एक रोज़ की बात है। तड़के, नौकर के पुकारने से नींद टूट गई। खीझकर नौकर को डाँटने जा रहा था कि उसने एक क़ीमती कार्ड मुझे थमा दिया। उस कार्ड पर अँगरेज़ी में लिखा था—"मि० एमिन पाशा"। मैं कपड़े पहनकर नीचे आया तो देखा एक आदमी अँगरेज़ी पोशाक पहने मेरी बाट जोह रहा है। उसने जिस स्वर में मुझे नमस्कार किया वह बहुत ही शीतल था। आगन्तुक का चेहरा कुछ लम्बा-सा था। सिर से पाँव तक शरीर ढका हुआ था। सर पर फ़ेल्ट का हैट, आँखों में धूप का चश्मा, गले में मफ़लर। गले से पाँव तक सूट से ढका हुआ था। उसने वैसे ही स्वर में कहा—"मि० हुक्कू, आप जो ममी मिस्र देश से ख़रीद लाये हैं उसकी क़ीमत मैं दे रहा हूँ। उसे मेरे हाथ बेच दीजिए।"

उसका यह बर्ताव मुझे बहुत बुरा लगा। व्यंग्यपूर्ण स्वर में मैंने कहा—"मैंने उसे बेचने के लिए नहीं ख़रीदा है, माफ़ कीजिएगा श्रीयुत पाशा!" आगन्तुक मेरे उत्तर से ज़रा खीझ उठा और रूखे स्वर में बोला—"आपको बेचना ही पड़ेगा मि० हुक्कू! इस ममी को जिसने बेचा था उसे इसे बेचने का कोई हक़ नहीं था। उसने इसकी चोरी की थी। इसके बदले में उसे अपनी जान देनी पड़ी है। आप इसे नहीं रख सकते। 'तुतम ख़ामेन' को कोई बन्द नहीं रख सकता। ख़ामेन का मुक़दमा होगा! उसे जाना है। खैर, लिए जितना रुपया कहें, मैं दे रहा हूँ।" अब उसने रुपये के कई नोट जेब से निकाले। मगर मैंने पूछा—"लेकिन आप इसे ले जानेवाले हैं कौन? बेचता—किसी भी दाम पर।" "मैं कौन हूँ? मूर्ख देख।" कहकर उसने एक-एक करके अपना मफ़लर, और कोट उतार डाला। हैट तथा चश्मा दूसरी दिया। इसके बाद जो मूर्त्ति मैंने अपने सामने वह किसी मनुष्य की नहीं थी। वह था अजाय रक्खा हुआ एक ममी! वैसा ही भीषण चेहरा, दृष्टि! सर पर से रूखे बालों के गुच्छे कन्धों त रहे हैं। रूखी दाढ़ी हवा में उड़ रही है। डर के बेहोश हो गया।

जब होश में आया तो देखा कोई नहीं है। नदारद! मैंने सोचा, कहीं स्वप्न तो नहीं देख रह मगर उस आगन्तुक का फ़ेल्ट हैट, मोज़े, मफ़लर तथा आदि वहीं पड़े थे। मैंने तुरन्त नीचे चौकीदार से उसने कहा कि किसी को जाते नहीं देखा। उसका सुनकर मैं चौंक उठा। तो क्या यह सच था?

चपरासी

लेखक, श्रीयुत 'कुमारहृदय'

यह रामलगन चपरासी है,
बाँदा का ठेठ निवासी है।

ऊँचा पूरा है नौजवान,
हट्टा-कट्टा है पहलवान।
घण्टे-घण्टे पर खाता है,
तम्बाकू, चूना और पान।

यह ठाठ कि साफा बाँधे है,
यह ठाठ कि सोंटा काँधे है।
चपरास कमर में कसी खूब,
काग़ज़ आफ़िस के साधे है।

जब हुई पुकार कहीं दौड़ा,
ड्यूटी से कभी न मुँह मोड़ा।
सर्दी कि धूप या पानी हो,
साहस औ' धरम नहीं छोड़ा।

हिन्दी अच्छी पढ़ लेता है,
उर्दू भी कुछ गढ़ लेता है।
फिर ज़रा-ज़रा सी यहाँ-वहाँ,
अँगरेज़ी भी कह देता है।

पन्द्रह रुपये कुल पाता है,
कुछ ऊपर से मिल जाता है।
सन्तोषी है यह रामलगन,
इसमें ही गुज़र चलाता है।

बोली का ज़रा कड़ा है यह,
हिम्मत का उफ़्! तगड़ा है यह।
अपमान ज़रा-सा हुआ कहीं,
सोंटा लेकर अकड़ा है यह।

इज्ज़त भी इसकी ख़ासी है।
यह हाकिम का चपरासी है॥

ख़ून क्या है ?

लेखक, डाक्टर व्रजविहारीलाल, बी० एस्-सी०, एम० बी०, बी० एस०

प्यारे बालको और बालिकाओ ! तुमने रक्त तो बार देखा होगा। यदि शरीर में कहीं चोट से कट जाय तो उस जगह से एक लाल-लाल पदार्थ बहने लगता है। इसी को तुम लोग कहते हो। तुम लोग यह न जानते होगे कि र यह है क्या चीज़। आओ, आज तुम लोगों इसी के बारे में कुछ सुनायें।

ख़ून एक चमकीले रंग का पतला पदार्थ है शरीर के भीतर नलियों के अन्दर रहता है और र दौड़ा करता है। एक स्वस्थ मनुष्य के शरीर की मात्रा छः सेर के लगभग होती है। बड़े-बड़े में तुम लोगों ने यह देखा होगा कि घरों में बम्बा अर्थात् पाइप द्वारा आता है। एक नगर स्थान पर बहुत-सी कलें लगी रहती हैं जहाँ से जल खींचकर इञ्जन द्वारा फिर पम्प करके बड़े नलों तथा नलियों में होता हुआ घरों तक चाया जाता है। इसको यों समझो कि जल ाने के लिए एक मुख्य स्थान होता है जहाँ पर इत्यादि लगे रहते हैं। इसके बाद जल बड़े-बड़े में, फिर छोटे-छोटे नलों और नलियों में होता घरों तक पहुँचता है। इसी प्रकार तुम्हारे र में भी एक विशेष स्थान है जहाँ इञ्जनघर है। पर इञ्जन लगातार चला करता है। यह इञ्जन हृदय या दिल है और वह विशेष स्थान पर यह रहता है, शरीर के बाईं ओर सीने के है। इससे लगी हुई अनेक नलियाँ रहती हैं भीतर रक्त बहा करता है। ये नलियाँ दो की होती हैं—एक साफ़ ख़ून को हृदय से कर शरीर के हर एक भाग में पहुँचाती हैं। मनियाँ कहलाती हैं। शरीर का अशुद्ध ख़ून सरे प्रकार की नलियों द्वारा हृदय में फिर लौट आता है। ये शिरायें कहलाती हैं। केवल फेफड़े में जानेवाली नलियों में इनकी विपरीत दशा होती है अर्थात् हृदय से फेफड़े में जानेवाली धमनियों में अशुद्ध रक्त और शिराओं में शुद्ध रक्त रहता है। यह क्रम स्वस्थ मनुष्य में एक मिनट में ७२ से ८० बार तक होता है अर्थात् एक मिनट में हृदयरूपी इञ्जन ७२ से ८० बार पम्प करता है और इस प्रकार रक्त इतनी ही बार एक मिनट में सारे शरीर में चक्कर लगा आता है। जब तक मनुष्य जीवित रहता है, यह चक्र चला करता है।

रक्त के दो भाग होते हैं—

१—रक्त का पतला पदार्थ, जिसको रक्त-वारि या अँगरेज़ी में 'प्लाज़्मा' कहते हैं।

२—रक्तकण या 'ब्लड कार्पसिल्स'।

रक्तकण भी दो प्रकार के होते हैं—(अ) लाल रक्तकण, (ब) सफ़ेद रक्तकण।

ये रक्तकण ख़ून के पतले पदार्थ में तैरा कर हैं। लाल रक्तकणों के कारण ही रक्त का रं लाल दिखाई देता है।

(अ) लाल रक्तकण—ये छोटे-छोटे गोल पदा हैं जिनके भीतर एक लाल रँग का पदार्थ, जिसक हिमोग्लोबिन कहते हैं, भरा रहता है।

ये इतने छोटे होते हैं कि तुम इनको अपन आँखों से नहीं देख सकते। इनको देखने के लि एक विशेष यन्त्र की सहायता लेनी पड़ती है जिसक ख़ुर्दबीन कहते हैं। इस यन्त्र द्वारा छोटी चीज़ें बड़ दिखाई देती हैं।

(ब) सफ़ेद रक्तकण—इनमें कोई रंग नहीं होता ये कई आकार-प्रकार के होते हैं। ये भी रक्त पतले पदार्थ में तैरा करते हैं और इतने छोटे होते कि बिना यन्त्र के देखे नहीं जा सकते। ये शरीर व

क्षा करते हैं। इनकी तुलना फ़ौज के सिपाहियों े की जा सकती है। फ़ौज में कई प्रकार के सिपाही होते हैं—कोई घुड़सवार सिपाही होता है, कोई पैदल सिपाही होता है, कोई तोपची इत्यादि होता है। ऐसे ही ये भी कई प्रकार के होते हैं।

ऊपर हम ख़ून की बनावट सरल रूप से बतला ुके हैं। अब यह बतलायेंगे कि शरीर को इसकी क्या आवश्यकता है और इसके मुख्य कार्य्य क्या हैं। सके मुख्य कार्य्य निम्नलिखित हैं—

१—शरीर के प्रत्येक अङ्ग को भोजन पहुँचाना—ुम लोग रोज़ भोजन क्यों करते हो? शायद तुम ोग यही उत्तर दोगे कि हम जीवित रहने के लिए ोजन करते हैं। हमारा शरीर अनेक अङ्ग-प्रत्यङ्गों से ेलकर बना है। एक-एक अङ्ग छोटे-छोटे कणों का मूह है। जब तक तुम जीवित हो तब तक तुम्हारे रीर का प्रत्येक कण भी जीवित है और जिस कार तुम्हारा सम्पूर्ण शरीर बिना भोजन के ज़िन्दा हीं रह सकता उसी प्रकार तुम्हारे शरीर के कोई ण भी जीवित नहीं रह सकते जब तक कि उनको ोजन न मिले। इस कारण उनके लिए भी भोजन तना ही आवश्यक है जितना तुम्हारे लिए। तुम ो अपने हाथों से भोजन कर सकते हो परन्तु तुम्हारे रीर के कण ऐसा नहीं कर सकते। वे बिना हाथों छोटे-छोटे अवयव होते हैं। उन तक भोजन पहुँाने का कार्य तुम्हारा रक्त करता है। जो कुछ म खाते हो वह पचकर तुम्हारे पेट की रक्त की लियों द्वारा उन्हीं के रक्त में प्रवेश करता है और न नलियों के रक्त में मिले हुए भोजन के पदार्थ ब छोटे-छोटे कणों में पहुँचते हैं तो वे उन नलियों भरे हुए पदार्थ को ले लेते हैं। यह कार्य शुद्ध क्त की नलियाँ करती हैं। जैसे भोजन के बाद तुम्हें ख़ाने या पेशाब जाने की आवश्यकता पड़ती है से ही तुम्हारे शरीर के कण अपना मल-मूत्र अशुद्ध ख़ून की नलियों या शिराओं में छोड़ देते हैं शिरायें फेफड़ों, गुर्दे इत्यादि में घूमती हुई औ मल-मूत्र छोड़ती हुई फिर हृदय में लौट जाती यह कार्य लगातार हर समय होता रहता है।

दूसरा कार्य रक्त का शुद्ध वायु में से ओ (आक्सीजन) को लेकर शरीर के सब अ पहुँचाना और वहाँ से कारबोनिक एसिड गै बाहर निकालकर शिराओं द्वारा फिर शुद्ध ह लिए फेफड़ों में ले जाना है। जीवन के लिए जन गैस आवश्यक है। उसके बिना मनुष्य एक भी ज़िन्दा नहीं रह सकता। कारबोनिक एसि मनुष्य-जीवन के लिए एक हानिकारक गैस है। गैस में मनुष्य ज़िन्दा नहीं रह सकता। शरी मल-मूत्र के साथ-साथ कारबोनिक एसिड गै पैदा होती रहती है। यदि इसके बाहर निकाल ठीक प्रबन्ध न हो तो इसके अधिक मात्रा में हो से जीवन सङ्कट में पड़ जाय। इसी लिए हर के साथ आक्सीजन भीतर जाता है और कारबो एसिड गैस बाहर निकलती है। साँस लेने में क्रियायें होती हैं—एक तो वायु को भीतर ले दूसरे फिर उसे बाहर निकालना। जब तुम वायु भीतर ले जाते हो तो बाहर से हवा तुम्हारे फे में जाती है। इसी वायु में आक्सीजन की मात्रा रहती है। यह वायु जब भीतर पहुँचती धमनी द्वारा लाये हुए अशुद्ध रक्त.से, जिसमें का डाइ आक्साइड गैस ही मुख्य होती है, मिलती आक्सीजन तुरन्त रक्त में सोखकर शिराओं फिर हृदय में आता है और कारबोनिक एसिड बाहर निकाली हुई साँस के साथ बाहर हो जाती इस प्रकार यह क्रम बराबर चलता रहता आक्सीजन और कारबोनिक गैस की अदला-ब एक मिनट में बारह से बीस बार तक होती है दूसरे शब्दों में यों समझ लो कि तुम लोग

ट में इतनी ही बार साँस लेते हो। इसलिए यह त याद रक्खो कि तुम जैसी वायु को अपने भीतर स द्वारा पहुँचाओगे उसका उसी प्रकार प्रभाव ारे रक्त पर पड़ेगा। यदि तुम लोग गन्दी हवा में, आक्सीजन की मात्रा बहुत कम होती है, गे या खेलोगे तो आवश्यकतानुसार रक्त को ना आक्सीजन न मिलेगा और तुम्हारा रक्त हो जायगा जिससे नाना प्रकार के रोग हो की सम्भावना है। अतः तुम लोगों को गन्दी ओं से बचना और खुली हवादार जगह में रहना हिए। खुली जगह में ही खेलो-कूदो।

एक तीसरा विशेष कार्य रक्त का शरीर के रोगों के कीटाणुओं से युद्ध करना है। ऊपर ाया गया है कि रक्त में दो प्रकार के कण होते —एक तो लाल रक्तकण जो आक्सीजन गैस तथा रे द्रव्यों को अपना लेते हैं, दूसरे श्वेत रक्तकण यही हमारे शरीर के रक्षक सिपाही हैं।

बहुत संक्षेप में यह समझ लो कि नाना प्रकार रोगों के उत्पन्न करनेवाले अनेक प्रकार के -छोटे कीटाणु होते हैं जो हर समय हर जगह मौजूद ते हैं और बराबर तुम्हारे शरीर पर हमला करने कोशिश करते रहते हैं। ज्यों ही इनको मौक़ा ला, ये रोग-कीटाणु शरीर के भीतर पहुँचने कोशिश करते हैं। ज्यों ही वे अन्दर पहुँचे रक्त के श्वेत कण उनसे लड़ाई ठान देते हैं। को तो वे खा जाते हैं और कुछ के चारों ओर डालकर उनको अन्न-जल बिना भूखों मार ते हैं। यदि तुम्हारे रक्त के श्वेत कणों में इतना बल न हुआ कि वे कीटाणुओं पर विजय पा सकें तो फल यह होगा कि तुम उस रोग से ग्रसित हो जाओगे जिस रोग के कीटाणुओं ने तुम्हारे रक्त-कणों पर विजय पाई है। इसको एक उदाहरण से समझ लो। मान लो कि तुम कहीं गिर पड़े और तुम्हारा हाथ ज़रा-सा कट गया। मवाद पैद करनेवाले कीटाणुओं को कटी हुई जगह से शरीर के अन्दर घुसने का मौक़ा मिल गया और वे तुरन्त अन्दर घुस पड़े। जहाँ वे अन्दर पहुँचे, रक्त के श्वेत कणों ने भी अपनी फ़ौज उनसे लड़ने के लिए रवाना कर दी। इस बात को तुम यों जान सकते हो कि चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर कटी हुई जग के आस-पास का भाग लाल पड़ जाता है। इस यह अर्थ हुए कि रक्त के श्वेत कण वहाँ पर अपन फ़ौज लेकर अधिक संख्या में आ डटे हैं। अ संग्राम छिड़ जाता है। यदि रक्तकणों ने कीटाणु को मार भगाया अथवा खा डाला तो कटी जगह सूख जायगी और वहाँ पर मवाद न पड़े और यदि रक्तकण कमज़ोर हुए तो रोग-कीटा उनको हराकर उनका संहार कर देंगे। वह जग पक जायगी। वहाँ से मवाद बहने लगेगा। मवा कोई और चीज़ नहीं है, केवल मरे हुए रक्तकण की लाशें हैं। इसलिए रोग-कीटाणुओं से लड़ने लिए तुम्हारे रक्तकण बहुत बलवान् होने चाहिएँ यह तभी सम्भव है जब तुम स्वस्थ और बलवान् र जिसके लिए यह बहुत आवश्यक है कि तुम शुद्ध पाचक और बलकारक भोजन करो और स्वच्छ वा का सेवन करो।

दो भाई

लेखक, श्रीयुत भुवनमोहन श्रीवास्तव

और घसीटा नाई, कहलाते थे दोनों भाई।
पर काटा करते बाल, और उड़ाते डटकर माल॥
ते भी ये ख़ूब कमाई, लेकिन जल्दी गई उड़ाई।
करके मदिरा-पान, खाया करता बँगला पान॥
घसीटा असल मदकची, सभी कमाई तुरत उलीची।
तब दोनों में हुई लड़ाई, ख़त्म हो गई पाई-पाई
लोगों ने की निन्दा इनकी, नहीं गाँठ में था कुछ जिनक
तभी होश में दोनों आये, थे मन में अपने शर्माये
फिर तो घबड़ा करके भागे, चले गये परदेश अभाग
नशा त्यागने की तब ठानी, अब होती है ख़त्म कहानी

हीरों का द्वीप

धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र

पिछली कहानी

[तन्त्रशास्त्र को खोजने रतन तिब्बत गया था। वहाँ उसे बड़ी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। लामाओं की क़ैद से वह कि ाग निकला। सन्थाल की दी हुई गोली उसके बड़े काम आई। अन्त में वह अपने मित्र सुरेश के पास पहुँचा जो हीरों र चढ़ाई करने की धुन में था। उस द्वीप का पूरा हाल जानने के लिए सुरेश ने विलायत से एक पुस्तक मँगाई थी। उसे ाह जाने के लिए तैयार हो गया। बहुत सोच-विचार के बाद उसने रतन को भी साथ ले जाने का विचार किया और उसे र लिया। सलाह हुई कि अधिक सामान की ज़रूरत नहीं। ओढ़ने-बिछाने के कपड़े, एक-एक राइफल, पिस्तौल और लेना चाहिए। जङ्गली लोग डटकर सामना करते हैं।]

(६)

हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करने में साथ देने के लिए रतन ाब तैयार हो गया, तब सुरश की ख़ुशी का ठिकाना न हा। यात्रा के लिए उसे अधिक तैयारी नहीं करनी थी। तने दिनों तक वह केवल प्रशान्त महासागर के द्वीपों का ावरण संग्रह करने लिए रुका था। लन्दन की ज्याग्रफिकल ोसाइटी से पुस्तक आ जाने पर उसका वह मतलब सिद्ध ो गया। इधर रतन-जैसा एक साहसी साथी भी मिल या। इससे सुरेश के मार्ग में अब कोई रुकावट न रही। टपट चल देना ही उसने उचित समझा।

सबेरे का सुहावना समय था। सूर्य भगवान् पूर्व दिशा आकाश में हँस रहे थे। उसी समय जलपान आदि से बटकर सुरेश और रतन मोटरकार पर सवार हुए। नगर ों सड़कों पर अभी तक भीड़ नहीं हो पाई थी, इससे उनकी ाड़ी पूरी रफ़्तार से चल रही थी।

सुरेश और रतन सीधे कलकत्ता की ओर वेग से चले। नकी मोटर एक क्षण के लिए न तो कहीं रुकना चाहती थी ार न उसकी चाल धीमी होती थी। सामने से होकर कलनेवालों को सचेत और सावधान करने के लिए वह ावर भों-भों करती हुई प्रायः एक-सी चाल से जा रही थी।

रास्ते में कई प्रसिद्ध और दर्शनीय स्थान पड़े। वे ऐसे ाम और महत्त्व के थे कि अपनी यात्रा रोककर एक बार हें देखे बिना कोई यात्री आगे बढ़ने की इच्छा नहीं कर कता था। परन्तु सुरेश और रतन को उनकी ओर ध्यान देने अवसर नहीं था। उनको तो एक ही बात की धुन थी— ों के द्वीप पर चढ़ाई करके वहाँ के हीरे बटोर ले आने की।

कलकत्ता पहुँचकर सुरेश और रतन ने एक दिन एक बढ़िया होटल में आराम किया। विश्राम तो नाम पिट्रौल का प्रबन्ध करने तथा और ज़रूरी चीज़ों का करने में उनका बहुत समय लगा।

सुरेश को सैर-सपाटे का बड़ा शौक़ था। और होता तो वह देवताओं के राजा इन्द्र के बग़ीचे कानन की भी शोभा को मात करनेवाले 'ईडेन गार्डन कलकत्ता के दूसरे कितने ही स्थानों को देखे बिना बढ़ता, परन्तु आज इन सब की ओर उसका ध्यान नहीं

रतन के लिए कलकत्ता में एक तरह से कोई भी र्षण की वस्तु नहीं थी। जिसने सारे हिमालय की थी, जो तिब्बत के पठार में घूम चुका था, उसके एक से एक ऐसे प्राकृतिक दृश्य आये हैं जिनके 'ईडेन गार्डन' वग़ैरह की कोई बिसात ही नहीं। में सुरेश के सबसे अधिक शौक़ की चीज़ थी, चिड़ियाख़ाना। पहले वह जब कभी कलकत्ता जात चिड़ियाख़ाना में जाकर वहाँ के पशु-पक्षियों को देखता था। तिब्बत जाने से पहले रतन भी यह चि ख़ाना देखने के लिए बहुत उत्सुक रहा करता था और कभी वह कलकत्ता आता, चिड़ियाख़ाना में पहुँचकर अद्भुत जीवों को देखे बिना न रहता। परन्तु तिब्ब सैर में उसे छोटे-बड़े प्रायः सभी प्रकार के, भूमि और पर चलनेवाले, जीव-जन्तुओं को देखने का अवसर था। इससे रतन के लिए यह चिड़ियाख़ाना अब कोई नहीं रह गया था।

कलकत्ता में एक दिन ठहरने के बाद सुरेश और मोटर पर सवार होकर फिर रवाना हुए। कलकत्ता दोनों ने कोई ऐसी वस्तु नहीं ख़रीदी जो यात्रा के

री न रही हो। इससे उनके पास सामान उतना ही जितना वे मोटर में अपने साथ आसानी से ले जा सकें। इससे पहले की ही तरह हवा से बातें करती हुई मोटर मैदान से होकर खिदिरपुर की ओर चली। देखते ही देखते 'माजेर हाट ब्रिज' और बेहाला को पार कर वह डाइमण्ड हार्बर की सड़क पर दौड़ने लगी।

आज सुरेश और रतन उजाला होने से कुछ पहले रवाना हो गये थे। सात बजने से पहले ही उन्हें डाइमण्ड हार्बर पहुँच जाना था, इसलिए उन्हें इतना ध्यान नहीं था कि सड़क के आस-पास के दृश्यों के आनन्द का अनुभव कर। यह सड़क कलकत्ता नगर के बीच की सड़कों के समान ऊँची इमारतों से घिरी हुई तो थी नहीं। इसके दोनों ओर खुले मैदान थे। इससे हवा अपनी इच्छा के अनुसार उछल-कूद कर रही थी। आस-पास जो वृक्ष थे उन पर चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। वे अभी सोकर उठी थीं और भोजन की खोज में निकलने से पहले भगवान् की प्रार्थना कर रही थीं। उनके इस मधुर सङ्गीत से यह सन्देश मिल रहा था कि हर एक कार्य करने से पहले भगवान् का आशीर्वाद अवश्य ले ले, उनकी कृपा के बिना कोई काम सिद्ध नहीं होता। इधर पूर्व दिशा के आकाश पर सूर्य की नन्हीं-नन्हीं किरणों ने अबीर पोतकर मानो उसके साथ होली खेलना आरम्भ कर दिया था। परन्तु सुरेश और रतन को इतना ध्यान नहीं था कि वे मोटर की चाल धीमी करके चिड़ियों के इस मधुर सङ्गीत का रस लेते या प्रकृति की यह सुन्दर छटा देखकर नेत्रों को सुखी करते। उनका ध्यान बराबर मोटर की चाल की ओर था। उसे वे किसी प्रकार धीमी नहीं होने देना चाहते थे।

डाइमण्ड हार्बर के समीप पहुँचते-पहुँचते सुरेश के मन में एकाएक मातृभूमि के प्रति ममता का भाव जाग उठा। वह कहने लगा—एक झोंक में आकर हम लोगों ने अपना देश छोड़ दिया। देखें, फिर अपने देश का दर्शन होता है या नहीं। हम लोग जिस द्वीप के लिए जानेवाले हैं, नरेश के पत्रों के द्वारा, उसके सम्बन्ध में मुझे यही मालूम हुआ है कि वहाँ पग-पग पर मौत का सामना करना पड़ेगा। देखें, द्वीप के जङ्गलियों के ऊपर विजय पा करके फिर अपने देश में लौटते हैं या जङ्गलियों का ही शिकार होना पड़ेगा।

रतन को यह समझने में देर नहीं लगी कि सुरेश के मन की दृढ़ता जाती रही है। उमङ्ग में आकर यह घर से निकल तो पड़ा है पर हीरों के द्वीप के जङ्गलियों का जो कुछ हाल इसे मालूम हुआ है, उसके कारण इस समय इसे घबराहट हो रही है। इससे साथी के मन में उत्साह का भाव पैदा करने के लिए वह कहने लगा—देखो सुरेश, मन में सन्देह को लेकर कोई भी काम नहीं किया जा सकता। जो मनुष्य प्राणों के मोह में पड़कर सदा हाथ-पैर सिकोड़े बैठा रहता है उसका संसार में जन्म लेना ही व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि वह ऐसा कोई बड़ा काम नहीं कर पाता, जिससे दूसरों का या ख़ुद उसका कोई उपकार हो। इसलिए प्राण हथेली पर लेकर ही कोई बड़ा काम करना चाहिए। प्राणों की रक्षा करनेवाले तो भगवान् हैं। जो आदमी कर्मवीर होते हैं उनका उद्देश्य कार्य को सिद्ध करना होता है, प्राणों की रक्षा करना नहीं।

यह बात सुनकर सुरेश कुछ लज्जित हो गया। उसने दबी ज़बान से कहा—भाई, मैं मरने से डरता नहीं हूँ। पर जहाँ प्राण जाने का भय अधिक है और काम होने की आशा बहुत कम है वहाँ जाते समय मन में चिन्ता होती ही है। आदमी एँड़ी और चोटी का पसीना एक करके को काम इसी आशा से करता है कि इसके सिद्ध हो जाने पर मुझे सुख मिलेगा। दस आदमी मेरी वाह-वाह करेंगे और मैं सुनकर प्रसन्न होऊँगा। अगर इस बात की आशा न हो तो पतिङ्गों की तरह दीपक पर कूदकर प्राण देने से लाभ ही क्या?

रतन ने कण्ठ के स्वर को और भी दृढ़ बनाकर कहा—तुम्हारे जैसे साहसी युवक के मुख से इस तरह की बा शोभा नहीं देती सुरेश! जो वास्तव में वीर होते हैं वे सुख दुःख की ओर ध्यान न देकर कार्य की ही चिन्ता करते हैं। जहाँ कहीं कर्त्तव्य के बिगुल की आवाज़ कानों में पड़ती है उमङ्ग से उनका हृदय नाचने लगता है। मरने-जीने की बा भूलकर वे पागल की तरह कार्य की धारा में कूद पड़ते हैं। कर्त्तव्य के सामने मरने-जीने का प्रश्न बहुत ही तुच्छ है। इसके सिवा सुख या सफलता की आशा से किसी काम हाथ लगाना कर्मवीर का काम नहीं है। कर्मवीर तो किसी का को अपना कर्त्तव्य समझकर करता है और दूसरों के लिए ए आदर्श छोड़कर कर्म करते-करते इस संसार से चला जाता है। उसके कर्म का फल भोगनेवाले दूसरे लोग होते हैं। इसलिए हम लोगों ने जो कुछ निश्चय किया है, भगवान् ऊपर भरोसा करके उसी के अनुसार कार्य करना है।

बातें करते-करते सुरेश और रतन ज़रा ही देर में डा मण्ड हार्बर आ पहुँचे। वहाँ पर एक होटल में उन दो ने चाय और पावरोटी खाई। जलपान करके वे बाज़ार गये। वहाँ से उन्होंने रास्ते में खाने-पीने के लिए कई चीज़ें ख़रीदीं। तब वे स्टीमर पर सवार होने के लिए घाट की ओर चले।

डाइमण्ड हार्बर की नदी का पाट बहुत चौड़ा है। कि ही लोगों को तो इस बात का भ्रम है कि यह नदी नहीं बल्कि समुद्र है। पर वास्तव में समुद्र वहाँ से बहुत दूर है, कि

जिस ओर नदी समुद्र से मिली है, उस ओर धुआँ सा जमा रहता है इससे कुछ साफ़ साफ़ नहीं दिखाई पड़ता। नदी और समुद्र की इस ओर की सीमा डाइमण्ड हार्बर ही है।

नदी में एक अच्छा-सा लञ्च खड़ा था। सुरेश ने सिङ्गापुर जाने के लिए उसे पहले से ठीक कर रक्खा था। इससे अपना सामान उस पर रखवाकर सुरेश और रतन लञ्च पर सवार हो गये। अब क्या था, सीटी दे रवाना हो गया। नदी के शान्त जल को चीरता बङ्गाल की खाड़ी की ओर बढ़ा।

सुरेश और रतन ने एक बार भक्तिपूर्वक मातृ प्रणाम किया और वे निश्चिन्त होकर बैठे रहे।

मुझे मौन अच्छा लगता है

लेखक, श्रीयुत उमाशङ्कर शुक्ल

बच्चो, जनवरी के पहले हफ़्ते में सारे देश में ठण्ड पड़ी ी। कड़ाके की सर्दी। शिमला, नैनीताल, मसूरी आदि स्थानों ं बर्फ़ भी गिरी थी। सेवाग्राम में भी ठण्ड पड़ी थी। हात्मा गान्धी ठण्ड के मारे अपनी कुटिया से निकलकर ाहर मैदान में धूप में ऊनी सफ़ेद शाल ओढ़कर बैठते थे। री पर गद्दी और उस पर सफ़ेद चादर। टेकने के लिए सनद। पास ही थोड़े से अख़बार। हिन्दी के—अँगरेज़ी नहीं। उन्हीं के पास उनके प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल ठते। चटाई बिछाकर। बापू बोलते न थे। वे मौन किये ए थे। तुम्हें मालूम होगा, वे बीमार हो गये थे। डाक्टर ीवराज मेहता ने उनसे कहा था कि आप मौन धारण रें। किसी से कुछ न बोलें। हाँ, लिखकर काम चला कते हैं।

बापू डाक्टरों की सलाह से मौन धारण किये बैठे थे। ास प्यारेलालजी भी थे। बापू के पास कभी-कभी, छ-कुछ समय के बाद, डा० सुशीला नायर आ जाया करती ीं। धूप से बचने के लिए एक खादी का गमछा बापू सिर र रक्खे हुए थे। चश्मा चढ़ाये। पास ही पीने के लिए वच्छ काँच की शीशी में जल रक्खा था। लकड़ी का छोटा ा क़लमदान भी और कुछ काग़ज़ भी। कुछ दूर हटकर नकी खड़ाऊँ। सामने चरखा, रूई की पोनी। तीन बजे ा समय होगा। बापू कुछ सोच रहे थे। कभी-कभी मुस-राते भी थे। प्यारेलालजी की डेढ़ वर्ष की छोटी-सी तीजी बापू के पास खेल रही थी। वह कभी चर्खे को ठाती, कभी रूई की पोनी फेंकती, कभी रोती और कभी खिलखिलाती। हवा का मन्द-मन्द झोंका चल रहा था।

इतने में एक दस वर्ष की लड़की आ पहुँची बापू के ास। बड़े-बड़े बाल, पेंट पहने और साफ़-सुथरी कमीज़। बापू के पास बैठ गई। उसने कहा—बापू, तुम बोलते क्यों नहीं? चुपचाप बैठे रहते हो। मेरे साथ खेलोगे तुम तो कभी मेरे साथ घूमने भी नहीं चलते। चलूँगी तुम्हारे साथ। भला बापू।

बापू ने उस लड़की को कभी देखा न था। लड़ निडरता देखकर बापू मुसकुराने लगे। उन्होंने प्यारे से लिखकर पूछा—कौन है यह लड़की? नई मालू है। मैं तो पहचानता नहीं हूँ।

प्यारेलाल ने लड़की से पूछा कि बापू कहते हैं कौन हो। मैं पहचानता नहीं हूँ। अपने बारे में बापू

लड़की ने कहना शुरू किया—बापूजी, मैं मेरठ हूँ। मेरा नाम शीला है। मैं अपने पिता के साथ सम्मेलन देखने आई हूँ। मेरठ के शिक्षा-सदन में प बापू, सुना है तुम बच्चों के साथ ख़ूब खेलते हो, बा हो, उनसे प्यार करते हो। बापू मुझे अच्छा नहीं जो तुम मौन रक्खे हो। कुछ बोलो, हमसे बातें करो

बापू सुन रहे थे। उन्होंने एक काग़ज़ के टु लिखा कि मुझे मौन अच्छा लगता है इसलिए बोल रहा।

इतना सुनकर वह बालिका बापू के हाथ से लि काग़ज़ को उठाकर भाग गई और जा-जाकर सबको लगी—देखो बापू ने हमें यह लिखा है कि मुझे मौन लगता है।

जिसने वह काग़ज़ देखा वही लड़की की निर्भय तारीफ़ करने लगा। जिन बापू के पास अपरिचि जाने में सकुचाते हैं उन्हीं के पास वह लड़की कितनी यता के साथ पहुँची और बापू ने उसे उत्तर भी दे वादा किया कि मैं आज तुम्हारे साथ घूमने चलूँगा।

महात्मा गान्धी बच्चों से बहुत बातें करते हैं और साथ समय मिलने पर खेलते हैं।

वायुयान कौन नष्ट करता था?

लेखक, श्रीयुत नारायणदत्त तिवारी

हाल ही में दक्षिण अफ़्रीका के केपटाउन क शहर में एक विचित्र घटना हुई थी। वहाँ के अड्डे पर लगातार कई हवाई जहाज़, अपनी न शुरू करते ही, नष्ट-भ्रष्ट होकर नीचे गिरने । यहाँ तक कि एक दिन तो ६ हवाई-जहाज़ इस र बेकाम हो गये। हवाई जहाज़ का चालक बड़ी करता, पर मशीन बे-क़ाबू हो जाती, और धड़ाम से लड़खड़ाते हुए ज़मीन पर टकरा । ऐसी अद्भुत घटना होते देख वहाँ के सभी चकरा गये। उनकी समझ में यह न आता आख़िर इन दुर्घटनाओं का क्या कारण है। कुछ अटकल लगाता तो कोई कुछ। कोई कहता यह दुश्मनों का काम है, उन्होंने मशीन के पुर्ज़े ाड़ दिये। कोई कहता कि सारी जड़ अमेरिकन की ख़राबी है। कुछ इञ्जीनियरों तथा वायुयान-लन के जानकारों का कहना था कि इसका मशीन के पुर्ज़ों या पेट्रोल की ख़राबी नहीं दुश्मन के एजेंटों का काम है, जिन्होंने मशीन ई ऐसी वस्तु डाल दी जिससे वह अपना ठीक-ठीक न कर सकी।

ख़ैर, जाँच शुरू हुई। पता चला कि हवा में समय वायुयान की गति को बतलानेवाले यन्त्र द हो जाने के कारण मशीनें बे-क़ाबू हो जाती । अब सब इञ्जीनियर यही कहने लगे कि इस को शत्रु के भेदियों ने ख़राब कर दिया। पर सबूत का पता नहीं चलता था। बड़ी खोज बाद एक टूटे हुए वायुयान की मशीन पर उसके वाले चालक के लिए एक भद्दी गाली, खड़िया ी हुई, मिली। अक्षर मिलाये जाने पर वे अड्डे पर रहनेवाले, एक आयरलैंड के वायु-चालक मिचेल शैंकस् के साबित हो गये। उसे ही शत्रु का भेदिया माना गया तथा वह पकड़कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया।

पर अभी तक यह पता न चला था कि शैंकस ने ऐसा कौन-सा काम किया जिससे गति-मापक यन्त्र बे-कार हो गया। बड़ी खोज के बाद मालूम हुआ कि प्रत्येक नष्ट हुए वायुयान के गति-मापक यन्त्र में सूखे हुए गोल और छोटे पेड़ के पत्ते डाल दिये गये थे जो वायुयान के उड़ते ही हवा के दबाव रबर की नली के मुँह पर चिपक जाते थे। इस प्रका यन्त्र में वायु न जाने देकर उसे बे-कार कर देते थे शैंकस् को ही इस षड्यन्त्र का रचनेवाला बतलाया गया उसे फ़ौरन फाँसी की सज़ा दे दी जाती, लेकिन—

डा० स्केफ, नामक एक वैज्ञानिक ने इस रहस को नये ढङ्ग से सुलझाने की कोशिश की। अन में वे सफल भी हुए और मिचेल शैंकस् निरपरा बतलाया जाकर छोड़ दिया गया। डा० स्केफ व मालूम हुआ कि पत्ते गोलाई में छः पेंस के अँगरेज़ सिक्के के बराबर हैं। आगे देखने पर पता चला वे पत्ते डलिया (डहलिया फूल, जो भारत में भ सर्वत्र पाया जाता है) के पुष्प के हैं, जो हवाई अड्ड के पिछली तरफ़ के हिस्से में काफ़ी लगाये हुए थे वे ही डहलिया के गोल तथा अर्धचन्द्राकार पत्ते किस अज्ञात शक्ति-द्वारा वायु-मापक यन्त्र में डाल दिये ग थे जिसके बेकार होने से इतने सब वायुयान टूटे थे

प्यारे बच्चो, बता सकते हो कि कौन-सी ऐस शक्ति थी, जिसने ये पत्ते इस प्रकार मशीन में डा दिये? अपने माता-पिता, भाई तथा अन्य सब सलाह ले लो और सोचो तो ज़रा। इनमें से कौ सम्भव है—मिचेल शैंकस्, दुश्मन के भेदिये, हवा क गति या वायुयान-चालकों की आपस की लड़ाई नहीं तो फिर सम्पादक के पृष्ठ पर पढ़िए।

टोपी, धोती, कोट पहनकर, घर से निकला एक
साज सजाये, वेश बनाये, उसने किया मोहल्ला
लगी हुई थीं बहुत ककड़ियाँ, अगल-बग़ल के
खरबूज़े थे महक रहे मीठे, कछार में,
उसे लिफ़ाफ़ा एक भेजना था, अपनी मौसी
किन्तु उस समय रह-रह उसके मुँह में आता पा
ख़रबूज़े की ओर दुबक, वह लालच के कारण
उछल लिफ़ाफ़ा कूदा नीचे, एक ओर को खा
ख़रबूज़े को छोड़ उसे—जल्दी सियार ने
बीच राह में, अजब तिकोना—डिब्बा एक पड़ा
वह डिब्बा था नहीं बल्कि, श्री बागड़बिल्ला का
बड़े ठाठ से वह बच्चों के सँग रहता इसके
सुन सियार की बोली, वह कौतूहल से आया
पूछा, "कहाँ भगे जाते हो, क्या आई आफ़त तुम
जल्दी-जल्दी में सियार ने, इसका कारण ब
तो बागड़ घर में जाकर, झट कपड़े नये पहन
लिया हाथ में छोटा डण्डा, सिर पर ऊँचा है
धोती पहन निराला ही सा, अपना सारा वेश
जब कि लिफ़ाफ़े के खोने पर, हिचकी भरने लगा
बोला बागड़, "मैं खोजूँगा, तनिक नहीं घबराओ

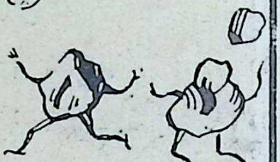

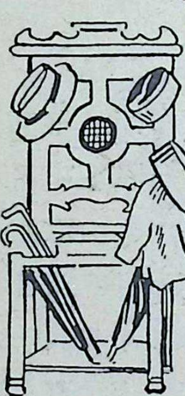

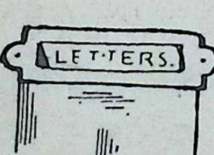

शैशव

लेखिका, कुमारी पुष्पा सक्सेना "पुष्प"

कहाँ गया तू भोला शैशव,
तुझको था दुनिया का वैभव,
अनुभव तेरा सबसे न्यारा,
भाव भरा था सबसे प्यारा ॥

आज़ादी से आबादी से,
तुझमें सब क्रीड़ा करते थे,
कहाँ भात है कहाँ रात है,
नहीं ज्ञान इसका रखते थे ॥

जीवन की मधुमय घड़ियों में,
खेल कूद पुलकित रहते थे,
भरी हुई अनुभूति हृदय में,
दौड़-धूप खेला करते थे ॥

बागड़बिल्ला, था सियार उसके पीछे।
लिफ़ाफ़ा भाग रहा था आगे, कर गर्दन नीचे ॥
कुछ ज़ोर लगाया, परमेश्वर का नाम लिया।
कर गति, उसने चट दौड़ लिफ़ाफ़ा थाम लिया ॥
में हैट न जाने कहाँ उड़ा बेचारे का।
भी खुल गई, नहीं डण्डा बच सका सहारे का ॥
खुश हो सियार चिल्लाया, चीख़ा, "हुआ-हुआ।"
तब जान लिफ़ाफ़ा, भगा नदी में बन कछुआ ॥
तारे रहे इसे दौड़ाते, वे पीछे-पीछे।
कछुआ जब बच पाया, इनसे जल के भी नीचे ॥
से लाल-लाल औ' हँसता-हँसता सूर्य हुआ।
चमकने अम्बर में, जग गर्मी से भरपूर हुआ ॥
बन पाँच कोण की—एक अजीब पतङ्ग उड़ा।
बिल्ला औ' सियार ने भी मछली का वेश धरा ॥
वाली पतङ्ग की, डोर पकड़ ली मछली ने।
इस तरह पकड़ गया, बेचारा ऊपर ही जल में ॥
चाने को चिड़िया बन, भागा मैदानों की ओर।
चील उसे दौड़ाया, दोनों ने कर काफ़ी शोर ॥
लेटर-बक्स दिखाई पड़ा उसे खेतों के पार।
, वह समा गया, रह गये टापते दोनों यार ॥

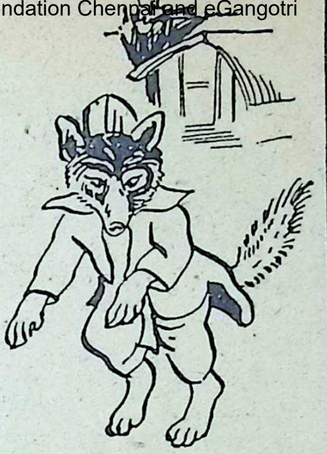

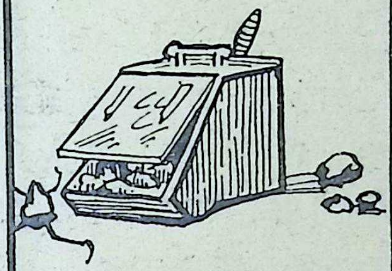

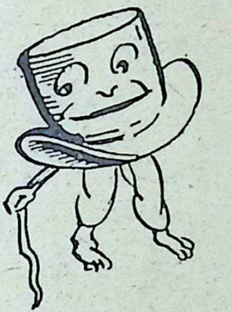

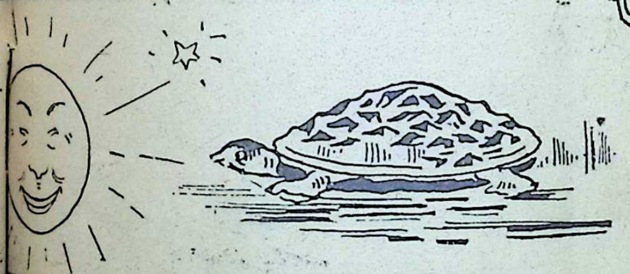

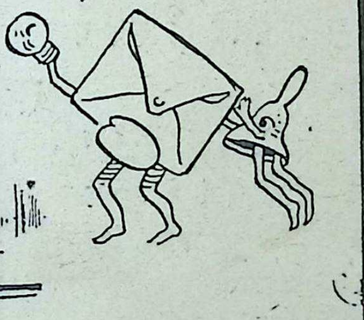

मेरा मुन्ना

लेखक, श्रीयुत रमाशङ्कर त्रिपाठी

मेरा प्यारा बेटा मुन्ना
बातें ख़ूब बनाता है।
जब वह जाता खेल-कूद में,
ऊधम रोज मचाता है ॥

सूरत उसकी भोली-भाली,
मेरे मन को हरनेवाली।
आँखें उसकी काली-काली,
बड़ी-बड़ी हैं और निराली ॥

दिनभर तितली पकड़ा करता।
आहट पाकर दौड़ा करता।
जब मैं उसे पकड़ने जाता,
तब वह इधर-उधर भग जाता ॥

मेरा सपना

लेखक, श्रीयुत जितेन्द्रकुमार रवि

मैं बन्दरों से बहुत डरता हूँ। मैं एक बार किसी जङ्गल में जा रहा था। बहुत दूर निकल जाने र अँधेरा होने लगा। अँधेरे में मुझको राह नहीं सूझती थी। थोड़े समय में मुझे ऐसा जान पड़ा कि कुछ दूरी पर बड़ा तेज़ उजेला हो रहा है। मैं उत्साहित होकर आगे चल पड़ा। वहाँ पहुँचने पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, जब मैंने देखा कि वहाँ पर बहुत ड़ा बाग़ है जिसके भीतर सुन्दर फल-फूलों के वृक्ष लहलहा रहे हैं। इन्हीं वृक्षों से प्रकाश हो रहा था। ग़ीचे के बीच में एक सुन्दर चबूतरा बना हुआ था। उसपर बहुत-से बन्दर बैठे हुए थे। उनके बीच में क चौकी थी। उस चौकी पर एक मोटा-ताज़ा न्दर बैठा था जिससे मालूम हुआ कि यह बन्दरों का सरदार है। हर एक वृक्ष पर एक-एक बन्दर बैठा ुआ था। हर एक के हाथ में एक-एक घण्टी थी ौर बन्दरों के सरदार के हाथ में बड़ा घण्टा। सब न्दर आपस में बातचीत कर रहे थे। उसी समय रदार ने घण्टा बजाया। घण्टा बजते ही सब बन्दर चुप हो गये। उसके बाद सरदार ने खड़े अपनी भाषा में कुछ कहा। सभी बन्दर पेड़ों उतर-उतरकर आने लगे और चबूतरे के चारों इकट्ठे होकर घण्टी बजाकर नाचने लगे।

अचानक एक बन्दर ने मुझको देख उसने तुरन्त अपना घण्टीवाला हाथ ऊपर उठा दूसरा हाथ हिलाते हुए ख़तरे की घण्टी बजा बन्दरों ने मेरी ओर देखा। वे खो-खो क ओर दौड़ पड़े। उन्होंने मुझको पकड़ लिया सरदार के पास ले चले। डर के मारे मेरी बँध गई। सरदार ने न जाने अपनी भाषा आज्ञा दी। चार बन्दर मुझे पकड़कर ले चले। दूर जाकर उन्होंने मुझे एक अँधेरे कुएँ में दिया। कुएँ की सतह में पहुँचने से पहले आँखें खुल गईं। मैंने देखा कि माताजी मुझको पीने के लिए जगा रही हैं। मेरा दिल धड़क र हाथ काँप रहे थे, दूध का गिलास हाथ में छूट पड़ा।

तारे

लेखक, श्रीयुत ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, एम० ए०

अम्मा मेरी, कह तो दे री—चमके क्यों ये तारे?
इस अँधियाले में कह दे क्यों निकले ये बेचारे?
क्या न इन्हें है इनकी अम्मा थपकी दे दुलराती?
बतला दे री, क्या न इन्हें है मीठी निंदिया आती॥
कह दे री, ये चमकीले औ' बड़े सजीले तारे—
इस अँधियाले में घर से क्यों निकल पड़े बेचारे॥
इतनी सर्दी! इतनी आँधी! औ' यह इतना पानी!
अम्मा, फिर इन लोगों ने क्यों यों चलने की ठानी?
कब से दौड़ रहे हैं री ये? क्या न अभी तक हारे?
अम्मा मेरी, बतला तो दे, कैसे हैं ये तारे।

× × × ×

बेटी मेरी, सुन तो ले री, क्यों चमके ये तारे।
इस अँधियाले में कह दूँ क्यों निकले ये बेचारे।
मेरे जैसी इनकी अम्मा इनको भी दुलराती
तेरे जैसी मीठी निंदिया इनको भी है आती
अपनी नींद अरी ये लेकिन कभी नहीं सोते हैं
औरों को सुख पहुँचा करके जी में ख़ुश होते हैं
इस दुनिया में रहते हैं बेटी ग़रीब बहुतेरे
अरी उन्हीं के कारण फिरते हैं ये दिये उजेरे
गिर न पड़े कोई दुखियारा गड़हे या नाली में
इसी लिए ये दिये दिखाते फिरते अँधियाली में
सच है बेटी, बहुत ठण्ड है और बड़ा पानी है
ऊपर इसी से इन लोगों ने चलने की ठानी है॥
चोट न खाने पावें गिरकर लोग कहीं दुखियारे।
फिरते सारी रात इसी से तारे दिये उजारे॥
हम भी जब तक जियें जगत को तब तक सुख पहुँचावें
बेटी दुख की अँधियाली में सुख का दिया जलावें॥

छोटा मुन्ना

लेखक, श्रीयुत सुलतानसिंह जैन

कृपाल और गोपाल चचेरे भाई हैं। दोनों दस बजे खाकर पाठशाला चले जाते हैं। साथ ही लौटते हैं खाना खाकर खेल-कूद में लग जाते हैं। ये इस प्रकार न करते हैं। एक दूसरे को नीच दृष्टि से नहीं देखते। र गाली-गलौज कभी नहीं करते। बड़ों का आदर करते दोनों में अटूट प्रेम है। इसी से सब इन्हें प्यार करते हैं।

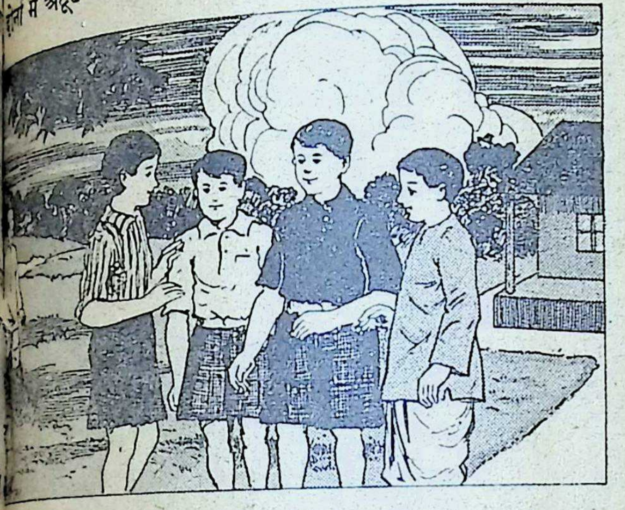

कृपाल स्कूल चला गया।

कृपाल के छोटे भैया को सभी छोटा मुन्ना कहते हैं। तीन ही वर्ष का है, परन्तु नटखट बहुत है। वह काल अपनी माता से पहले उठ बैठता है। हाप्पा र खा लेता है। खेलता रहता है। फिर सो जाता भी कृपाल पाठशाला चला जाता है। मुन्ना उठता और दूध पीकर खेल में लग जाता है। कृपाल पाठशाला से लौटने पर मुन्ना को गोदी में लेकर तरह-तरह खेल खिलाता है।

एक दिन मुन्ना रात को देर से सोया और दिन निकने पर उठा। माता ने उसे दूध पिलाया और खिलौनों में लगा दिया। माता कृपाल के लिए रसोई ने लगी। रसोई बन जाने पर कृपाल ने भोजन किया। वह हुआ बस्ता लेकर पाठशाला जाने के लिए तैयार हो गया। शान्ति से भैया को एक निगाह से देखता रहा। इतने ही में ने कृपाल को पाठशाला चलने के लिए पुकारा। कृपाल दिया। पीछे-पीछे मुन्ना भी भैया-भैया पुकारता भागा। माता चौके से मुन्ना को लेने दौड़ी। इतने में मुन्ना घर दरवाज़े से भैया-भैया चिल्लाता आँगन तक पहुँच गया। ने दौड़कर उसको पकड़ा। मुन्ना रूठ गया। माता ने लाकर उसे रबड़ के खिलौने दिये। और चीज़ों से भी बहलाना चाहा, किन्तु वह कहाँ मानता था। माता कहती—"भैया तो पाठशाला गया है।"

"ऊँ, ऊँ, ऊँ भैया पातछाला गया। मैं भी पातछाला जाऊँगा। ऊँ, ऊँ, ऊँ मैं भी पातछाला जाऊँगा।"

"मुन्ना दूध पीलो"—माता ने प्रेम से कहा।

"ऊँ, ऊँ, ऊँ मैं दूध नहीं पीऊँगा," मुन्ना ने कहा।

"क्यों? भैया अभी आ जायगा" माता ने कहा।

यह सुनकर मुन्ना शान्त हुआ और सो गया।

अभी कृपाल पाठशाला से लौटा भी न था कि छोटा मुन्ना फिर सोकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा—"ऊँ, ऊँ, ऊँ भैया पातछाला गया। ऊँ, ऊँ, ऊँ मैं भी पातछाला जाऊँगा।"

माता मुस्कराती भी थी और परेशान भी हो रही थी। इसी समय कृपाल पाठशाला से लौट आया। कृपाल को देखकर मुन्ना बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा—"भैया, टुम पातछाला गये थे। भैया, कल मैं भी पातछाला चलूँगा। (तुतलाते हुए प्रेम में)

(भैया के हाथ में बस्ता देखकर) "भैया, मेरे लिए पातछाला से क्या लाये हो?"

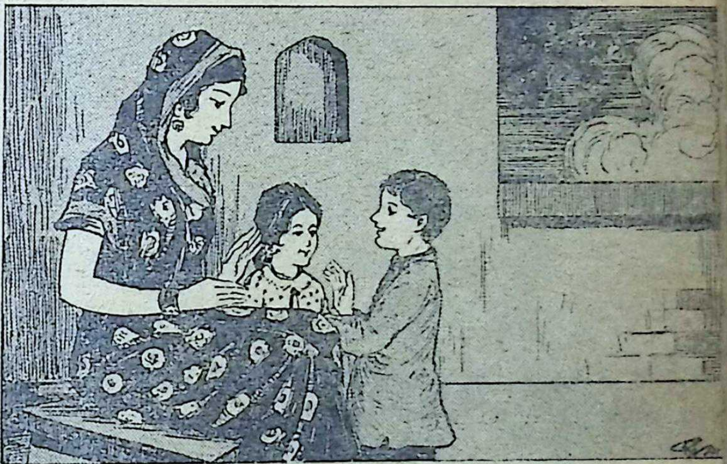

"कल तुम भी पाठशाला चलना मुन्ना।"

कृपाल हौले-हौले हँसने लगा। "भैया तुम तो हँसते हो" मुन्ना ने गुनगुनी आवाज़ से कहा।

"कल तुम भी पाठशाला चलना मुन्ना"—कृपाल ने कहा।

इससे मुन्ना ख़ुशी से मगन हो गया और अपने रबड़ के खिलौनों को उठा लाया। भैया के पास बैठकर उन खेलने लगा। भैया ने उसे बस्ते में से एक सुन्दर खेलों पुस्तक निकालकर खेल दिखाने शुरू कर दिये। मुन्ना प्रसन्नता से बाँसों उछलने लगा।

बन्द कमरा

लेखक, श्रीयुत एम० एल० पाँडे

एक जादूगर था जो फ़क़ीरों के वेश में घर-घर जाता था। यदि किसी घर में कोई सुन्दर लड़की मिल जाती तो उसे वह पकड़ लाता। ऐसे ही वह कितनी ही लड़कियाँ पकड़ चुका था। वे लड़कियाँ लौटकर फिर अपने घर नहीं जा पाती थीं।

एक दिन वह एक आदमी के घर गया। उस घर में तीन लड़कियाँ थीं। बड़ी लड़की ने उसे भीख दी। जब वह उसे रोटी दे रही थी तो जादूगर ने चुपके-से लड़की का हाथ छू दिया। जादू के असर से वह लड़की जादूगर की टोकरी में आकर ैठ गई और वह उस लड़की को अपने घर ले आया।

जादूगर का घर एक जङ्गल के बीच में था। ह जादूगर अपने घर में बड़ी शान से रहता था। ाजाओं का-सा उसका ठाट था। लड़की के आराम ी सभी चीज़ें वहाँ मौजूद थीं।

कुछ दिनों के बाद जादूगर को बाहर जाने की रूरत पड़ी। जाते समय उसने अपने घर की ालियाँ उस लड़की को दे दीं। उसने उस लड़की ो सब जगह जाने की आज्ञा दे दी थी किन्तु एक मरे में जाने की मनाही कर दी थी। कह दिया था ि यदि उस बन्द कमरे की ओर जायगी तो मर ायगी। जादूगर ने लड़की को एक अंडा भी या और कहा कि उसे किसी भी प्रकार खो न देना।

उसके जाने के बाद ही लड़की हाथ में वही डा लिये हुए सारे घर में घूम आई। जब उस बन्द मरे के सामने पहुँची तो उसका मन उस कमरे को देखने का हुआ। उस कमरे के भीतर पहुँची तो सने देखा कि वहाँ सैकड़ों लड़कियाँ क़ैद हैं। सब की ब लड़कियाँ बेहोश पड़ी थीं। लड़की उनको इस हालत देखकर डरी और बाहर भाग आई। भागने में उसके हाथ का अंडा ज़मीन पर गिरकर पिच और उसपर लाल बुन्दियाँ बन गईं। उसने उ को बहुत धोया किन्तु वे धब्बे साफ़ नहीं हुए।

थोड़ी देर के बाद जादूगर लौट आया। आते ही तालियाँ और अंडा वापस माँगा। अं पर लाल रँग चढ़ा देखा तो वह समझ गय लड़की उस बन्द कमरे में गई थी। उसने को उठाकर पटक दिया और उसी कमरे जाकर बन्द कर दिया।

अब वह फिर उसी घर में भीख माँगने इस बार वह उस घर की दूसरी लड़की को लाया। इस दूसरी लड़की का भी वही हाल जो उसकी बड़ी बहन का हुआ था।

इसके बाद जादूगर जाकर तीसरी लड़ भी पकड़ लाया। तीसरी लड़की अपनी दोनों से अधिक चतुर थी। जब जादूगर इसे भी ता का गुच्छा और अंडा देकर चला गया तब पहले तो उसने अंडे को ले जाकर एक आलमा रख दिया। इसके बाद तालियाँ लेकर वह घूमने निकली। उसने भी उस बन्द कमरे को चाहा। उस कमरे को खोला तो वहाँ का हाल वह घबरा गई। ज़मीन पर कितनी ही लड़कियाँ प रही थीं। उन्हीं लड़कियों में उसकी दोनों ब थीं। किन्तु यह बड़ी चतुर थी इसलिए उस में लाल दाग़ लगने नहीं दिया। जादूगर ल आया तो वह दौड़कर उसके पास गई और तालियाँ और अंडा ज्यों का त्यों लौटा दि जादूगर ने देखा कि अंडे में कोई दाग़ नहीं ल तो वह बहुत ख़ुश हुआ—"तुम मेरी पत्नी योग्य हो, क्योंकि तुमने परीक्षा पास कर ली जादूगर ने लड़की से कहा।

किन्तु जादूगर में अब पहले जैसी शक्ति नहीं गई थी, क्योंकि इस लड़की ने उसकी शक्ति नष्ट दी थी। अब वह जो चाहती, मनमानी कर थी। इसलिए वह उस बन्द कमरे में गई सारी सोई हुई लड़कियों को जगा दिया; कि अब उनके ऊपर से जादू उतर चुका था। उसने जादूगर से कहा :—

"मैं चाहती हूँ कि मुझसे शादी करने से पहले तुम टोकरी भर सोना मेरे माता-पिता को दे आओ।"

एक बड़ी टोकरी लेकर उस लड़की ने अपनी बहनों को उसमें बिठला दिया और ऊपर से भर दिया। इसके बाद उसने जादूगर से कहा उस टोकरी को हमारे घर पहुँचा आओ लेकिन में कहीं रुकना नहीं। मैं अपनी खिड़की से रहूँगी। जादूगर अपने कन्धे पर टोकरी रख- कुछ दूर चला। टोकरी भारी था। इसलिए एक ठहरकर उसने सुस्ताना चाहा। उसी समय के भीतर से आवाज़ आई—"मैं अपनी खिड़की रही हूँ।" उसने यह समझा कि मेरी स्त्री बोल रही है। इसलिए वह उठा और लड़-ता हुआ आगे बढ़ा। जब-जब उसने आराम की कोशिश की, उसे वही आवाज़ सुनाई दी। में हारकर वह किसी न किसी प्रकार लड़की पहुँच गया और टोकरी घरवालों को भेंट कर दी। जादूगर रास्ते ही में था, इसी बीच में उसकी होनहार दुलहिन ने एक नक़ली चेहरा फूलों से ख़ूब अच्छी तरह सजाकर खिड़की के पास बैठा दिया जिससे जादूगर समझे कि उसकी दुलहिन खिड़की से झाँक रही है। इसके बाद उसने सारी क़ैदी लड़कियों को छोड़ दिया। अपने विवाह का न्योता भी उसने सब जगह भिजवा दिया। इस सब के बाद उसने अपना शरीर तरह-तरह के परों से छिपा लिया। अब देखने में वह एक विचित्र प्रकार की चिड़िया लगती थी। उसे इस तरह कोई भी नहीं पहचान सकता था। फिर वह घर से बाहर निकली। रास्ते में उसे मेहमान मिले। उन लोगों ने उससे पूछा—"परियों के पक्षी, तुम कहाँ से आते हो ?" "मैं परियों के देश से आ रही हूँ।" उसने जवाब दिया—"और नई बहू कहाँ गई ?" "उसने सारा घर उलट-पलट डाला है और अब खिड़की मे बैठी बाहर झाँक रही है।"

जब जादूगर लौटा तो उसने खिड़की प नक़ली चेहरा देखा। वह समझा कि मेरी दुलहि ही झाँक रही है। वह भी घर के भीतर चला गया तब लड़की के नातेदारों ने, जो जादूगर से बदला ले आये थे, बाहर से द्वार बन्द करके घर में आग लग दी। इस प्रकार जादूगर और उसके बन्द कमरे क अन्त हो गया।

वसन्ती पवन

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०, एल्-एल० बी०

जब करने को मैं चला भ्रमण,
तब मिली आज कुछ नई पवन।
भीनी-भीनी इसकी सुगन्ध,
जिससे भौंरे बन जायँ अन्ध,
यह पवन भरी थी मधुर गन्ध,
तन हुआ मगन, मन हुआ मगन,
जब मिली सुन्धित नई पवन,
कुछ-कुछ तब ऐसा हुआ ज्ञान

इसमें सुगन्ध थी भाँत-भाँत,
आसान न समझो सभी बात;
बस, मीठा था दिशि का कण-कण,
यों मिली अनोखी सुखद पवन!
बौरे रसाल, बौरे कटहल,
कचनार, अनार, सन्तरे, फल,
फूलों की गिनती नहीं सरल!
मन मस्त हो रहा था छन-छन

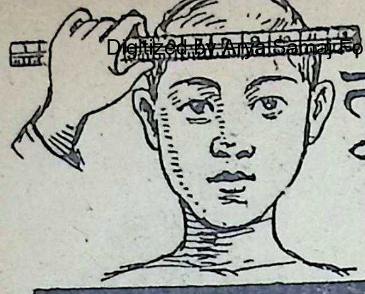

तुममें कितनी बुद्धि है?

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'

यहाँ हम कुछ प्रश्न देते हैं। सोच समझकर इनके उत्तर निकालो। अपने उत्तरों को दिये जानेवाले उत्तरों से मिलाना। सबका उत्तर निकालने का निर्धारित समय १० मिनट है। इससे समय न लगना चाहिए।

१—नीचे कुछ चीज़ों के नाम दिये गये हैं। इनमें से उस चीज़ को काट दो जो उस जात की पंक्ति में नहीं है। उदाहरणार्थ—'क' में अंगूर उस जाति में नहीं है।

(क) अखरोट, काजू, किशमिश, बादाम, पिस्ता, अंगूर।
(ख) शेर, हरिन, रीछ, चीता, भेड़िया, तेंदुआ।
(ग) ताँबा, पीतल, शीशा, सोना, चाँदी, लोहा।
(घ) अच्छा, भला, नेक, सुन्दर, उदार, गम्भीर।
(ङ) हाथ, पैर, आँखें, बाल, नाक, कान।

२—क्या तुम जानते हो :—

(अ) सम्राट् विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्न कौन थे?
(आ) भारत के वर्तमान वायसराय इससे पहले क्या थे?
(इ) आस्ट्रेलिया की राजधानी कौन है?
(ई) क्या मगर और घड़ियाल के शरीर में हड्डियाँ होती हैं?
(उ) इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री पहले कौन थे? आजकल भारत-सचिव कौन हैं?
(ऊ) स्पेन-स्थित ब्रिटिश राजदूत कौन थे? कितने नाम हैं?

३—ठीक-ठीक उत्तर दो :—

(अ) पृथ्वी चाँद से बड़ी है कि छोटी?
(ब) सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है कि पृथ्वी
(स) अमरीका का पता किसने लगाया?
(द) एक औरत का रिश्तेदार उससे मिलने को औरत के पास एक लड़का बैठा हुआ था। दार के पूछने पर कि यह लड़का कौन है, उस ने चतुराई से यह जवाब दिया—"इसके बहनोई मेरे लगता ननदोई।" यह सुन चकित हुआ पर समझ सका वह औरत लगता था। बताओ उस लड़के का औ क्या नाता था।
(ई) इञ्जन का आविष्कार किसने किया?

बेर

लेखक, श्रीयुत केदारनाथ अग्रवाल

पाते ही कोमल गूदा दाँतों ने उसको काटा।
बत्तीसों ने मिल-जुलकर आपस में झट से बाँटा॥
बेचारी जीभ न मानी वह भी ऐसी ललचाई।
फौरन वह लपकी आगे खाने को शीघ्र मिठाई॥

दाँतों ने खूब कुचलकर ऐसा रस-मधुर बनाया।
रुचि बढ़ी जीभ की जिससे पा गई स्वाद मनभाया।
पर कड़ी बड़ी थी गुठली दाँतों को लगा झमेला।
चालाक जीभ ने बढ़कर धक्का दे बाहर ठेला॥

× × × ×

जीवन का बेर यही है, कोमल गूदा खा जाओ।
बाहर गुठली को थूको, मीठा रस-स्वाद बनाओ॥

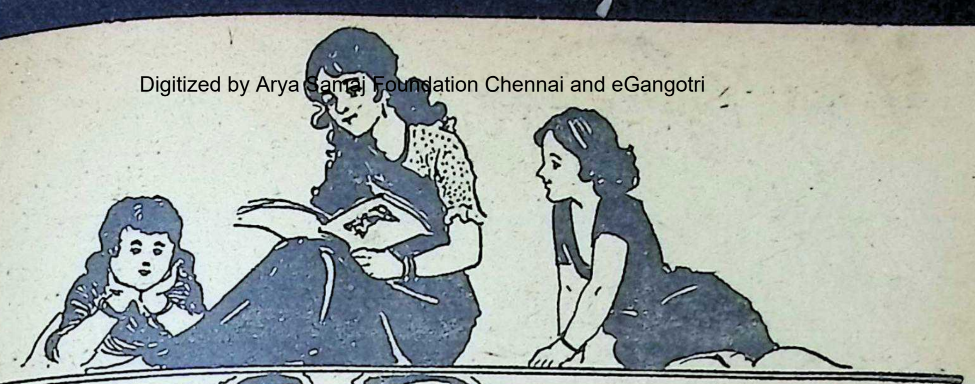

सहेली

मीनार की राजकुमारी

लेखक, श्रीयुत महेन्द्रनाथ 'मधुकर'

एक दिन कोई राजकुमार जङ्गल में शिकार खेलने वहाँ अचानक उसने किसी के सुरीले गाने की सुनी। राजकुमार गाने की आवाज़ के सहारे ान पर पहुँच गया। वह आवाज़ एक मीनार तर से आ रही थी जिसमें न दरवाज़े थे न सीढ़ी थी। जब वह एक नीचे खड़ा हो भीतर जाने ए रास्ता ढूँढ़ रहा था तभी एक बुड्ढी परी को यह सुना—

ओ बाहर आओ
लटकाओ अपने बालों को”

उसी समय एक स्वर्ग की राओं जैसी सुन्दर राज-री मीनार की चोटीवाली की पर आकर खड़ी हो गई अपने सिर के बालों को की से नीचे की ओर लट- लगी। वे बाल इतने लम्बे थे कि ज़मीन को थे। वह बुड्ढी परी उन्हीं के सहारे धीरे-धीरे र भीतर चली गई।

लेखक

राजकुमार ने उसी समय प्रण किया कि मैं भी ऊपर चढ़ूँगा चाहे प्राण ही क्यों न चले जायँ। जब वह परी वहाँ से बाहर निकलकर कहीं चली गई तब राजकुमार ने वहीं आकर उसी प्रकार वह गीत गाया जो परी ने गाया था। राजकुमारी खिड़की पर आई और राजकुमार उसके बालों की सीढ़ी पर धीरे-धीरे चढ़ गया। राजकुमारी को उसे देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसने पहले कभी किसी पुरुष को न देखा था। उस बुड्ढी परी ने उसे उसके माता-पिता से ले लिया था। जब वह बिल्कुल बच्ची थी तभी से इस मीनार के भीतर रह रही थी।

राजकुमारी ने पूछा—तुम कौन हो?

राजकुमार ने कहा—मैं एक सुन्दर-से देश का राजकुमार हूँ। चलोगी मेरे देश?

राजकुमारी का दय खिल गया। वह उसके रूप को देखकर लट्टू हो गई। बोली—हे राजकुमार, तब तुम मुझे अवश्य बचाओ। मैं इस परी से तङ्ग आ गई हूँ। मुझे यह कहीं भी नहीं ले जाती।

राजकुमार ने हँसते हुए कहा—"अच्छा, कल ही मैं तुम्हारे लिए एक रेशम की सीढ़ी लाऊँगा। जब यह परी यहाँ से चली जायगी तब मैं तुम्हें इसके चंगुल से बचा ले चलूँगा।

वह राजकुमारी बहुत ही सरल-स्वभाव की थी। वह यह समझती थी कि जब मैं उस परी से कहूँगी कि मैं राजकुमार से विवाह करना चाहती हूँ तब वह राज़ी हो जायगी। परन्तु जब वह आई और राजकुमारी ने यह बात कही तो वह आग-बबूला हो गई। उसने राजकुमारी के बालों को काट लिया और उसे जङ्गल में छोड़ आई।

दूसरे दिन जब राजकुमार वहाँ आया और उसने देखा कि बाल लटक रहे हैं तब वह मन में बहुत खुश हुआ। वह उसपर चढ़कर रेशमी सीढ़ी को साथ लेकर खिड़की पर खड़ा हो गया। वह बुड्ढी परी उसी समय भीतर से आकर खिड़की के स खड़ी होकर बोली—"अच्छा, तुम हो! लौट ाओ। अब वह चिड़िया इस घोंसले में नहीं है। बिल्ली उसे मारकर खा गई। अब वह तुम्हारी भी निकालने जा रही है।" बस, उसने रा को ढकेल दिया। वह काँटों की झाड़ी पर जहाँ काँटों ने उसकी आँखें फोड़ दीं।

अब राजकुमार अन्धा होकर इधर-उध कुमारी को ढूँढ़ने लगा। कई दिन बीत गये न मिली। उसे विश्वास हो चला कि अवश्य कुमारी को बिल्ली खा गई होगी। निराश हो वह अपने देश की ओर चल पड़ा तो अचान मार्ग में फिर वही गाना सुनाई पड़ा। वह ग आवाज़ के सहारे उस ओर बढ़ा और जब कुमारी ने उसे देखा तो वह दौड़कर उसके पर आ गिरी। उसी समय राजकुमारी की आँखों दो बूँद आँसू गिरे जिन्होंने राजकुमार की आँखें कर दीं। तुरन्त राजकुमार को अपनी खोई आँखों की ज्योति फिर मिल गई। वह बुड्ढी दोनों की यह देखकर क्रोध आग में जलकर भस्म हो गई।

राजकुमा राजकुमार अपने के राज्य गया जहाँ दो विवाह आनन्द हुआ और के बाजे बजे। दोनों राजसी बाट से रहने

कुछ दिन राजकुमारी के सुन्दर बच्चा पैदा हुआ। राजकुमार और राज दोनों उसे बहुत प्यार करते।

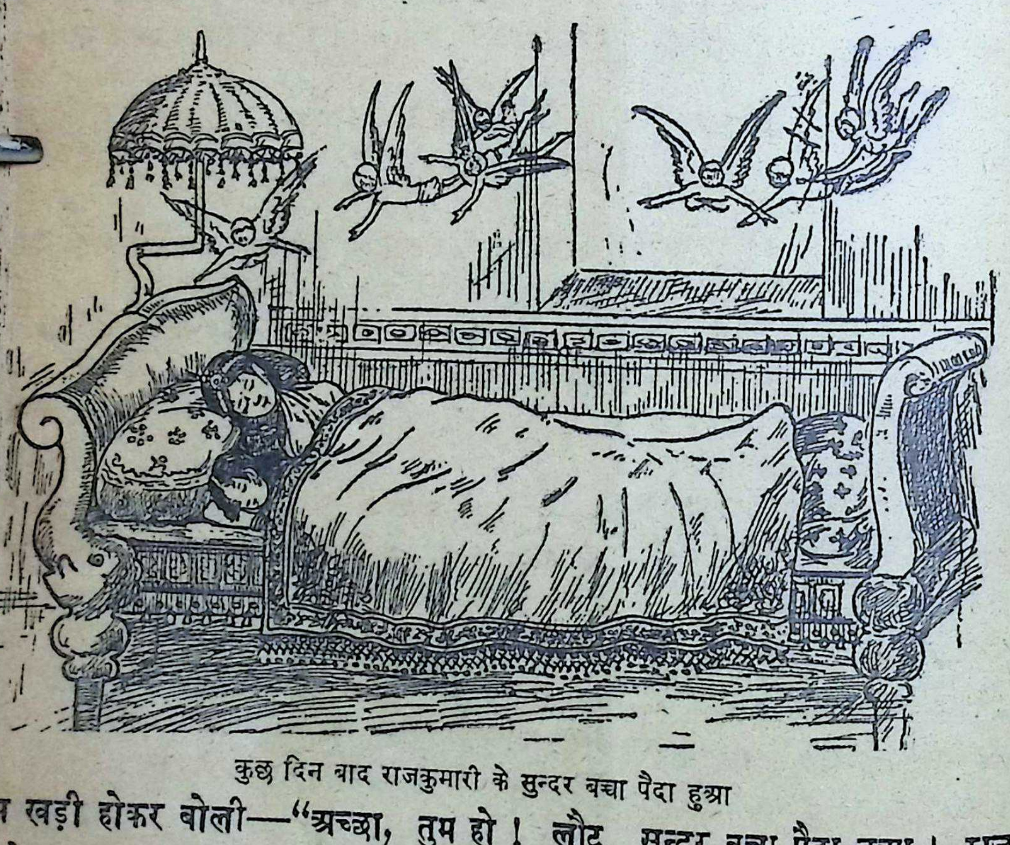

कुछ दिन बाद राजकुमारी के सुन्दर बच्चा पैदा हुआ

कुछ इधर उधर के

फ्रीका के जङ्गलों में कई ऐसे वृक्ष हैं जिनके पत्तों से वा टकराती है तब पत्तों से कई सुरीली आवाज़ें ती हैं। इनमें से कई आवाज़ें सितार तथा कई वाय- ों भी मिलती हैं।

× × ×

संसार भर में सबस लम्बी घास एक समुद्री घास है, हार्न तथा न्यूज़ीलैंड के मध्य भाग में पाई जाती है। लम्बाई २०० फुट से भी अधिक होती है। इसकी शाखा जहाज़ की मोटी रस्सी के समान होती है।

× × ×

वैज्ञानिक ने पारे से सोना बनाया है। उसके गुणों क्षणों से ज्ञात होता है कि वह सोना ही है। इसके में बहुत-सी बिजली ख़र्च हुई है।

× × ×

वैज्ञानिकों का कहना है कि संसार में नाना प्रकार के १२ (Elements) हैं। इनमें से १० तत्त्व प्राप्त हो चुके हैं।

× × ×

ोना सारे संसार में पृथ्वी से बीसवाँ भाग है न में)।

× × ×

बच्चों के लिए रेलगाड़ी, मोटर, हवाई जहाज़ आदि प्रकार के खिलौने हैं जो चाभी देने या स्प्रिङ्ग दबाने से ने लगते हैं। अब अमरीका के एक मनुष्य ने खिलौनों हर बनाया है। एक बटन दबाने से इसमें एक तरफ़ सूर्योदय होता है; तालाब में मोटरबोट (किश्ती) पुट पुट चलती है, शाम को गायें जाती हैं; आकाश में हवाई जहाज़ लगते हैं; सड़कों तथा मकानों में बिजली जलने लगती गिरजाघरों में घंटे बजते हैं, रेलगाड़ियाँ दौड़ती हैं, जहाजों की गूँज भी स्पष्ट सुनाई देती है।

× × ×

अरब में शाम को जब दिन भर की गर्मी से गर्म हुई ठण्ढी होने लगती है तब उसमें से एक मीठी ध्वनि पैदा है। ठण्ढी होती समय बालू खिसकती है और कानों सुख देनेवाली ध्वनि पैदा करती है, परन्तु यह ध्वनि दो ट से अधिक नहीं सुनाई देती।

× × ×

चीन के जङ्गलों में एक प्रकार का ऐसा वृक्ष पाया जाता है जिसमें बिजली भरी रहती है। इसके पत्तों को छूने से एक झटका लगता है। बिजली की यह शक्ति धूप में अधिक तथा छाँह में मध्यम रहती और वर्षा के समय बिल्कुल समाप्त हो जाती है।

—गुरुदयालसिंह 'दयाल'

× × × ×

एक चीनी पुजारी ने २७ साल तक अपने हाथ के नाख़ून नहीं कटाये। उसके नाख़ून २२$\frac{3}{4}$ इञ्च लम्बे थे।

× × × ×

फ़्रांसिस पिट के पास एक बिल्ली थी जिसने एक चूहे को माँ की तरह पाला था।

× × × ×

मरक्को के राजा 'मुलाई इस्माईल' के ५४० लड़के तथा ३४८ लड़कियाँ थीं। यह राजा सन् १७२७ ई० में मरा।

× × × ×

रोम के कमोडस लूसीअस ऑरलीस (१६१-१९२) ने १०३१ लड़ाइयाँ जीती थीं।

× × × ×

मेनसेन अर्नेस्ट पेरिस से मास्को, जो १७५० मील दूर है १३ नदियाँ पारकर पैदल दो सप्ताह में पहुँचा।

दुबारा कान्सटेंटीनोपिल से कलकत्ता ६६२५ मील ५ दिन में आया। यह नार्वे-निवासी था।

—रामप्रसाद मित्तर

× × × ×

सूर्य हमसे ९ करोड़ ३० लाख मील दूर है। ६० मील फ़ी घण्टा चलनेवाली गाड़ी को सूर्य तक पहुँचने में १७ वर्ष से भी अधिक समय लगेगा।

× × × ×

समुद्र के हर पचास हज़ार मन पानी में एक मन सोना मिला रहता है। यदि समुद्र के सब पानी को भाप बनाक उड़ा दिया जाय तो लाखों मन सोना निकल आवेगा।

—शांता त्रिपा

× × × ×

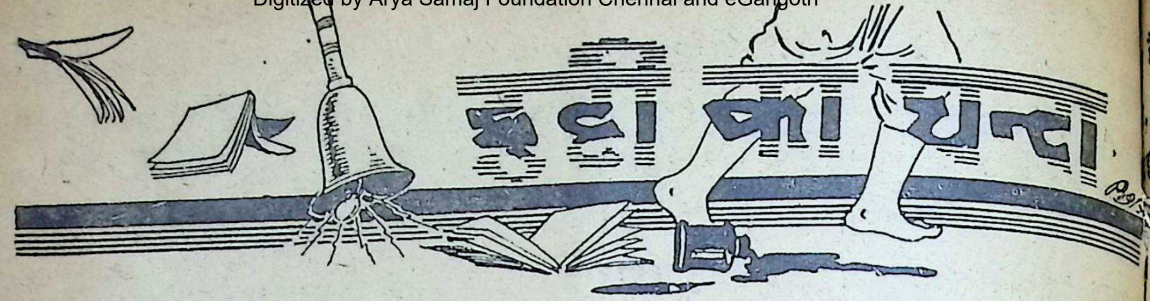

बदली का दिन

साइकिल में ताला लगाते हुए मैंने नाववाले से हा—दो आने लो तो मैं चलूँ। मेरे मित्र ने भी री बात को दुहराया। किराया तय हो गया। म लोग साइकिल वहीं रखकर नाव पर ले गये।

माँझी बोला—बाबूजी, बाइसिकल भी ाव पर ही रख लीजिए, कोई उठा न ले ाय।

मैंने लापरवाही से उत्तर दिया—अरे, समें ताला लगा हुआ है, कोई नहीं ले जा कता। माँझी बाबा, नाव तो मैं चलाऊँगा।

माँझी राज़ी हो गया। एक ओर से मैं ोर दूसरी ओर से मेरा मित्र नाव चलाने गा।

× × ×

बात यह थी कि उस दिन बदली थी। े मित्र ने आकर कहा—चलो कहीं घूम ावें। बस, उठाई साइकिल, चल पड़े।

नदी पर पहुँचकर इच्छा हुई, चलो व पर सैर करें। नाव चलाने का तो क़ था ही। भाड़ा तय कर नाव पर डट े और नाव चलाने लगे।

× × ×

पानी बरस रहा है। हम लोग चले जा रहे । पता नहीं कहाँ, और कितनी दूर। साइकिल किनारे पर पड़ी है। एकाएक उधर बड़ी दू एक नाव आती दिखाई दी। नाव के पास आ मेरा जी धक-से हो गया। यह तो मेरे घर के सा वाले बङ्गालियों की नाव है। उनका लड़का भी

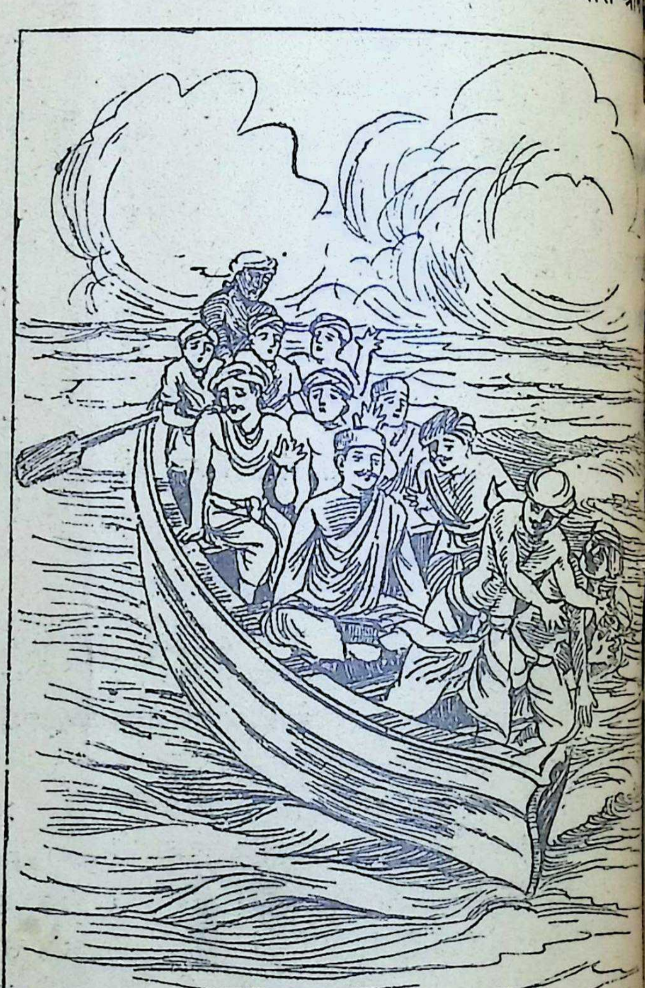

नाव नदी में चली जा रही थी।

मैंने सोचा कि यदि इसने घर पर कह दिया तो पिताजी नाराज़ हो जावेंगे। कहेंगे कि परीक्षा के दिन भी नहीं रहे, यह आठवाँ दर्जा है, तुमको साल फ़ेल होना है। फ़ेल होना है? इसके में एक शब्द भी नहीं सोच सका। किसी तरह आया और हम लोग उतर पड़े। किराया साइकिल उठाई; घर को चल पड़े।

पड़ोसी ने कहा भी—ठहरो, हम भी चलते हैं। में इस तरह चला मानो सुना ही नहीं। उन्होंने में यह भी कहा कि देखा, चला गया। उस ने कहा—घर पर कह दूँगा।

मैं जल्दी से घर पहुँचकर अपने पढ़ने के कमरे गया और पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद मैंने बङ्गाली लड़का आया है और मेरे पिताजी बातें कह रहा है। मेरा डर तथा क्रोध सीमा कर गया।

आवाज़ आई—'बबुआ, यहाँ आओ।' मेरे की आवाज़ थी।

मैं गया। देखा वही बङ्गाली लड़का मेरे घर एक चटाई पर बैठा है। पिताजी ने मुझे देखते ही डाँटना शुरू किया। बहुत डाँटा। मेरी आँखों में आँसू आ गये। मैंने देखा बङ्गाली लड़के की आँखों में भी आँसू हैं। पता नहीं, क्यों। वह सिर नीचा किये चला गया।

दूसरे दिन मैं किताबों में उलझा बैठा था, कि बङ्गाली लड़के की बहन ने आकर अपनी भाषा में कहा—तुम्हें भैया बुलाते हैं। मैंने उसकी ही भाषा में कहा—मैं नहीं जाऊँगा। एकाएक मैंने उसकी आँखों में आँसू देखकर कहा—तुम रोती क्यों हो?

उत्तर मिला—भैया ने कल शाम से कुछ खाया-पिया नहीं। पड़े रोते रहे।

मैं समझ नहीं पाया कि बात क्या है। गया तो बङ्गाली मित्र ने मेरे हाथ में एक पुर्ज़ा दिया। मैंने पढ़ा—

प्रिय मित्र,

मुझे कल वाली बात के इतनी बढ़ने की आशा न थी। मैंने जो कुछ किया उसके लिए क्षमा माँगता हूँ। उचित समझना तो क्षमा कर देना।

उस समय भी उसकी आँखों में आँसू थे। यह देखकर मैं मेल करके घर चला आया।

* * *

वसन्त की हवा

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

यह वसन्त की मस्त हवा।
सब रोगों की एक दवा॥
निकलो कमरे से बाहर।
खेलो कूदो इधर-उधर॥
रंग-विरंगे फूल खिले।
झूम रहे हैं हिले-मिले॥

क्या भीनी सुगन्ध आती।
मन में मस्ती भर जाती॥
दूर कभी चिड़ियाँ गातीं।
पास कभी चिड़ियाँ आतीं॥
मेरे भी यदि होते पर।
उड़ जाता मैं फर-फर-फर॥

पाठकों के पत्र

टिकट बदलिए

श्रीमान् जी,

सेवा में सविनय निवेदन है कि मुझे टिकट जमा करने का बहुत चाव है किन्तु मेरे पास विदेशी टिकट आवश्यकता से भी कम हैं। मैं अपना विदेशी टिकटों का संग्रह बढ़ाना चाहता हूँ।

अपने पत्र द्वारा आप दूसरे टिकट जमा करनेवाले बाल-सखाओं को सूचित कर दीजिए कि वे संग्रह बढ़ाने में मेरी सहायता करें या मेरे भारतीय टिकट लेकर विदेशी टिकटों से बदलें।

शचीन्द्रकुमार C/o डाक्टर एस० एल० कुलश्रेष्ठ, विजय-पारा स्ट्रीट कोटा (राजपूताना)

[जो बालसखा अपने टिकट बदलना चाहें वे श्री शचीन्द्र-कुमार से पत्र-व्यवहार करें।—सं०]

हाय दादा

सम्पादक जी,

सुनकर अत्यन्त शोक होगा कि आपके प्रिय लेखक श्री कृष्ण सांडल ता० ७ फ़रवरी को बारह बजे अन्तिम श्वास छोड़ गये। —चिरञ्जीलाल 'प्रेम'

२३२ ई० केरोल बाग़, नई दिल्ली

बालकों के लिए उपन्यास

श्रीमान् सम्पादक जी,

छोटे बच्चों के लिए छोटे-छोटे उपन्यास क्यों नहीं लिखे जाते। बड़े लोगों के लिए तो रोज़ नये-नये उपन्यास निकला करते हैं। क्या छोटे बच्चों को उपन्यास न पढ़ना चाहिए? आप बाल-सखा द्वारा लेखकों का ध्यान इस ओर क्यों नहीं आकर्षित करते? —रवीन्द्रकान्त निगम

[बाल-सखा में आपके लिए 'हीरों का द्वीप' उपन्यास प्रकाशित हो रहा है। उसे पढ़िए। ऐसे उपन्यासों का पढ़ना बच्चों के लिए लाभदायक ही है।—सं०]

चुनी हुई किताबें

श्रीयुत सम्पादक जी,

बालकों के लिए हर महीने प्रकाशित होनेवाली सुन्दर किताबों की सूची यदि आप बाल सखा में छाप दें तो हम लोगों को किताबें लेने में सुविधा हो।

[आपकी राय ठीक है। हम प्रयत्न करेंगे।—सं०]

क्या तुम जानते हो

× × ×

पृथ्वी (स्थल) पर जितनी बहुमूल्य-धातुयें हैं से अकेला सोना समुद्र (जल) में अधिक है।

× × ×

सूर्य का भार २×(१०)२७ टन है। यह पृथ्वी से ७,९२,००० गुना अधिक है।

× × ×

चन्द्रमा जब बढ़ता है तब उसका गोल हिस्सा की तरफ़, जब घटता है तो पूर्व की तरफ़ होता है।

× × ×

सूर्य का अर्द्धव्यास, पृथ्वी के अर्द्धव्यास से अधिक है।

संसार भर में सबसे मोटा मनुष्य डैनिअल लैम्बर्ट है। इसका जन्म १७७० ईसवी में हुआ था। उम्र में इसका वज़न ५ मन २८ सेर था। (१८०९ ई०) में इसका वज़न ९ मन ४ सेर था। वर्ष इसकी मृत्यु हुई।

× × ×

एक अण्डे में कैलशियम, मैंगनीज़, पोटाशियम, लोहा, मैग्नेशियम, सिलिका, फासफ़ोरस, स्ट्रोन्टियम, मोनियम और बोरियम आदि धातुओं का समावेश हो

× × ×

मादा दीमक एक दिन में एक करोड़ अण्डे दे

× × ×

संसार भर का सबसे बड़ा फूल रैफ्लीनिया होता है फूल की प्रत्येक पंखड़ी प्राय: एक फ़ुट लम्बी होती है फूल की चौड़ाई एक गज़ से भी अधिक होती है। मधुकोष में लगभग ५ सेर पानी आ सकता है।

× × ×

संसार भर में सबसे ऊँचा वृक्ष राइडर वुड है। ऊँचाई ३२५ फ़ुट है।

× × ×

एक मुर्गी ने ३६५ दिन में ३५७ अण्डे दिये हैं।

× × ×

संसार भर में सबसे लम्बा मनुष्य जैक अल है। लम्बाई ८' ७" है।

× × ×

पृथ्वी पर दौड़नेवाले जानवरों में शुतुर्मुर्ग अधिक होता है। इसकी चाल ६० मील प्रति घण्टा है।

× × ×

[illegible] ईसवी में दो लाख जानवर सैनिकों के लि गये थे।

—गुरुदयाल सिंह 'दया

तितली

लेखक, श्रीयुत आनन्दमोहन जोशी

भैया छोटी तितली ला दो,
मेरी साड़ी में लटका दो।
रङ्ग - बिरङ्गी नीली - पीली,
सुन्दर मोहक साज सजा दो ॥
कूँजे पर वह उड़-उड़ जाती,
फूली फूलों पर मँडराती।
गेंदे पर सर्वस्व गँवाती,
मेरी साड़ी पर चिपका दो ॥—भैया०
श्वेत श्याम औ काली है वह,
रखती चाल निराली है वह।
सुमनों पर मतवाली है वह,
तितली भैया मुझे बना दो ॥
सर्दी-गर्मी सहती है वह,
उनसे नित ख़ुश रहती है वह।
उनपर प्राण गँवाती है वह,
मुझको उसका पाठ पढ़ा दो ॥—भैया०

मेरा कुत्ता

लेखक, श्रीयुत नगेन्द्रकुमार सिंह चौहान

कुत्ता बड़ा बहादुर नहीं किसी से डरता है।
दरवाज़े पर आये सब कुत्तों से लड़ता है ॥
उसके लम्बे-लम्बे झबरा है, वह काला है।
गर्दन के पट्टे में छोटा-सा एक ताला है ॥
बाहर रोज़ शाम को और सुबह को जाता है।
सियों को लखकर वह भों-भों भों-भों करता है ॥
टामी कह पुकारता तब वह दौड़ा आता है।
चारों तरफ़ उछलकर मेरा जी भर लाता है ॥

मेरा घर

लेखिका, कुमारी मालती माथुर

मेरा घर है मुझको प्यारा,
कितना सुन्दर कितना न्यारा।
रङ्ग-बिरङ्गे फूल लगे हैं,
आस-पास में खेत सजे हैं ॥
लाल गुलाबी नीले-पीले,
हरे-भरे हैं औ' चमकीले।
उसमें चिड़ियाँ चूँ-चूँ करतीं,
मेरे मन को हरती रहतीं ॥
मेरा घर है मुझको प्यारा,
कितना सुन्दर कितना न्यारा ॥

काली बिल्ली

लेखक, श्रीयुत सुरेन्द्रभूषणप्रसाद

काली-काली पुस्सी मौसी,
बन्दर-सी वह कान हिलाती।
प्रतिदिन मेरे घर आ-आकर,
गर्म दूध चुपके पी जाती ॥
रातों को वह कभी न सोती,
नहीं और को सोने देती।
'म्याऊँ-म्याऊँ' उछल-कूदकर,
पकड़ तुरत चूहों को लेती ॥
वह अपने को भक्तिन कहती,
"नहीं मांस को मैं हूँ खाती।"
दिन भर तो वह माला जपती,
और रात में गाना गाती ॥
कभी उसे यदि बच्चे होते,
उन्हें मुझे वह दे जाती है।
प्रतिदिन मेरे घर आकर वह,
देख-भाल बस कर जाती है ॥

प्रश्न-पहेली

आदि कटे तो हाथ कहाता,
मध्य कटे से पार लगाता।
अन्त कटे तो पाक कराता,
है वह वृक्ष सभी को भाता ॥—(पाकर)

—यदुनन्दन विद्यार्थी

× × ×

सुजु गुदाद से हूँ सरासर भरी हुई,
लगती है आग तन में सर की लगी हुई।
रहती हूँ अकेली मकान में,
मेरा है नाम रौशन सारे जहान में ॥-(मोमबत्ती)

—मालती माथुर

× × ×

पैर कटे तो पूत बनेगा,
कमर कटे तो बने शहर।
इसने ही था कृष्णचन्द्र को,
दूध पिलाया मिला जहर ॥—(पूतना)

—देवेन्द्रमोहन माथुर

× × ×

तीन अक्षरों का मम नाम।
आदि कटे सुनने के काम॥
मध्य कटे तो मन बन जाता।
अन्त कटे से तीर्थ कहाता ॥—(मकान)

—बनवारीलाल 'सर्राफ़'

× × ×

सोया था बिस्तर पर भाई,
गरज मेघ की पड़ी सुनाई।
किन्तु धूल उसने बरसाई,
धूल वही सबने थी खाई ॥—(चक्की)

—जयकिशोर

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
पानी देना मेरा काम॥
आदि कटे शिवजी कहलाता।
मध्य कटे तो नर बन जाता ॥—(नहर)

—श्रीनिवास

× × ×

तीन अक्षर की बनी हुई हूँ,
रूप नहीं है मेरा।
मुझसे ही संसार बना है,
मानुष करते डेरा ॥—(पृ

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
देती हूँ मैं सबको काम।
आदि कटे मैं धन बन जाऊँ,
मध्य कटे चीनी हो जाऊँ ॥—(नि

× × ×

अक्षर मेरे साढ़े तीन,
लड़के जिसमें होते लीन।
पढ़ने के आती हूँ काम,
अब मुझसे ही चलते काम ॥—(पुस्

× × ×

दो अक्षर की मेरी छाती।
मरना-जीना तुरत बताती॥
अ को पहले अगर लगाओ।
तो तुम मूर्खराज बन जाओ ॥—(नाड़

—सत्यनारायण पोलीवा

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ मैं सबके काम।
मध्य कटे तो पड़ा कहाता,
अन्त कटे पर पट हो जाता ॥—(पट

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ खाने के काम।
अन्त कटे पर पाप कहाता,
आदि कटे से मैं पड़ जाता।
बालक मुझे जहाँ पा जाते,
कड़, कड़, कड़, कर सब खा जाते ॥—(

— गिरीशमोहन

× × ×

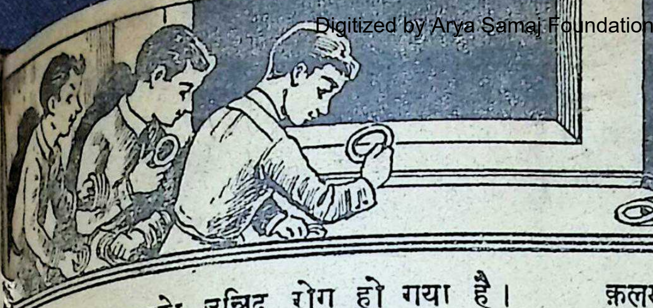

मनोविनोद

स्टर - देखिए, आपको उन्निद्र रोग हो गया है। सोते वक्त संख्यायें गिननी चाहिए। नींद आ जायगी।

(दूसरे दिन) कहिए, रात को नींद आई? गिनने के

हा था, गिना?

जी हाँ।"

हाँ तक?"

०४३२ तक।"

र तो नींद आ गई होगी?"

हीं डाक्टर साहब, फिर तो सवेरा हो गया।"

—बदरीनारायण जागिड़

× × ×

के दिन थे। एक बार एक लड़का देरी से स्कूल मास्टर साहब ने कहा—"क्यों रे! स्कूल देरी यों आया?" लड़के ने काँपते हुए कहा—"मास्टर वर्षा इतने ज़ोर की थी कि मैं एक क़दम आगे तो दो क़दम पीछे सरकना पड़ता था। इसलिए देरी ।" तब मास्टर ने कहा—"तुझे पीठ स्कूल की ओर ना चाहिए था।"

× × ×

–(अपने मित्र हरि से) "तू हमेशा चोरी करता है। ा क्यों नहीं पीटते?"

रि–"वे क्या पीटें? हैं तो वे अन्धे ही।"

—सुन्दरलाल राठी

× × ×

सेठजी थे। उनके दो नौकर रामू, श्यामू थे। रामू रस्सी से पानी खींच रहा था। एक चमार –भाई, हमें रस्सी दे दो।

मू–ले लो।

जी–रामू, वह तेरा कौन लगता था, जो तूने ी?

मू–अच्छा हुज़ूर, अब न देंगे।

श्यामू–रामू, रस्सी दो।

–नहीं देंगे।

जी–क्यों नहीं दोगे?

मू–आप ही ने तो कहा था कि जो तुम्हारा लगता से दो।

× × ×

क़लमी आम के बाग़ में एक पेड़ पर एक लड़का आम तोड़ रहा था। इतने में माली आ गया। उसने पूछा—क्यों जी, आम क्यों तोड़ रहे हो! लड़के ने कहा—कुछ नहीं जी। यों ही एक आम टूटकर गिर गया था उसी को जोड़ रहा हूँ।

—रमेशचन्द्र भटनागर

× × ×

एक मदकची ने छोटे लड़के से पूछा—भैया, तुम्हारी उम्र क्या है?

छोटे लड़के ने जवाब दिया—बाबा, घर में तो माताजी पाँच वर्ष का कहती हैं मगर स्कूल में सात वर्ष तथा रेल में तीन वर्ष का कहती हैं। —मनसूर अली, सारंगढ़

× × ×

लड़की—(अपनी बहन से जो चोटी कर रही थी)—बहनजी, आप क्या कर रही हैं?

बहन—(क्रोध में) तेरा सिर।

लड़की—नहीं, आप तो अपना ही सिर कर रही हैं।

× × ×

रामू—(श्याम से) मेरे पिता ने युद्ध में एक तलवार से १०० हाथी मार डाले थे।

श्यामू—वाह, यह भी कोई वीरता है। मैंने कल एक छड़ी से २०० चींटियाँ मार डाली थीं।

रामू—रहे मूर्ख ही। भला हाथी और चींटी का क्या मेल!

श्याम—वाह, चींटी के काटते ही हाथी मर जाता है।

× × ×

रामचन्द्र—(अपने मेहमान से) बैठिए, बैठिए। मैं तो आपका सेवक हूँ।

मेहमान—जी हाँ, इसमें क्या शक। कृपया आप मेरे लिए एक ताँगा किराये का लाइए।

रामचन्द्र—आप बैठिए तो, अभी नौकर आ जावेगा तो ताँगा मँगवा दूँगा।

मेहमान—माफ़ कीजिएगा। भूल हुई। अब समझा, आप सेवक हैं, नौकर नहीं हैं।

—रघुवरदयाल गुप्त

× × ×

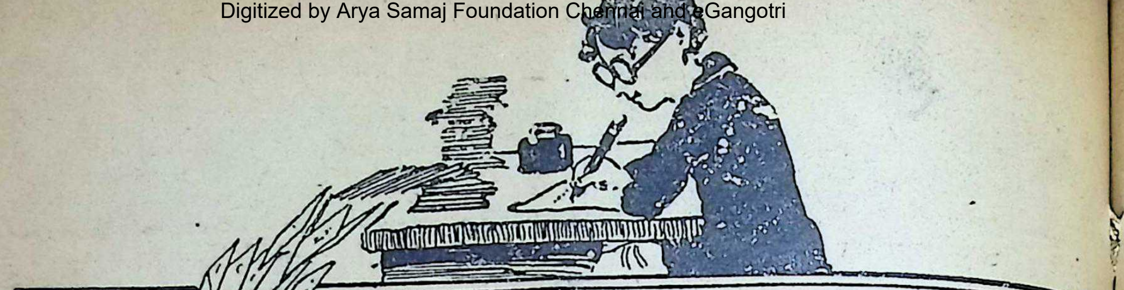

सम्पादक का पृष्ठ

प्यारे बाल-सखाओं को यह जानकर दुःख होगा कि बाल-सखा के सुपरिचित लेखक और कवि श्रीयुत कृष्ण सांडल की मृत्यु गत ७ फ़रवरी को एकाएक हो गई। श्रीयुत कृष्ण सांडल की अवस्था अभी बहुत कम थी। उन्होंने इतनी कम अवस्था में ही बहुत-सी रचनायें कीं। उनके उपन्यास 'शीला' को तो लोगों ने बहुत पसन्द किया था। बाल-सखा के पाठकों से उन्हें बहुत स्नेह था। वे बाल-सखा के लिए बराबर अपनी रचनायें भेजा करते थे। उनकी असामयिक मृत्यु से हिन्दी की बहुत हानि हुई है। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके सम्बन्धियों और मित्रों को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे।

× × ×

इस अङ्क में बाल-सखाओं ने श्रीयुत नारायणदत्त तिवारी का 'वायुयान कौन नष्ट करता था ?' शीर्षक लेख पढ़ा होगा। क्या आप कारण बता सकते हैं ? लीजिए, हम बता रहे हैं।

कटर बी नाम के एक प्रकार के कीड़े होते हैं। ये रात में डहलिया के पत्तों को बिछाने के लिए ले जाते हैं। उन्हें घोंसले के लिए वायुयान के रबड़ के कोमल हिस्से बहुत पसन्द आते थे। कटर बी कीड़े पत्ते ले आकर वहीं पर अपने घोंसले बनाने लगते। कोई-कोई कीड़े वायुयान के गति-मापक यन्त्र की रबड़ की लम्बी नली तक पहुँच जाते और इन पत्तों को वहीं छोड़ देते। इसी से वायुयान नष्ट-भ्रष्ट हो जाते थे। बेचारे कीड़े क्या जानें कि उनका यह काम कितना विनाशकारी है।

× × ×

इस अङ्क में श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी का पुरी के सम्बन्ध में एक सचित्र लेख छापा गया है। पाठकों को इस लेख से जगन्नाथ पुरी की काफ़ी जानकारी होगी। आप भी अपनी यात्राओं का वर्णन लिख भेजिए।

× × ×

महात्मा गान्धी को बच्चों से बहुत स्नेह है। आश्रम के बच्चे उन्हें अपने बापू समझते हैं। आ
दिनों जब वे मौन थे तब एक लड़की उनके पास प
उनसे मौन रहने का कारण पूछ बैठी। इस
महात्मा गान्धी ने जो उत्तर दिया था उसे श्रीयुत
शुक्ल के लेख में पढ़िए।

× × ×

लाट या बड़े लाट साहब जब किसी जगह जा
वहाँ लोगों को नहीं जाने दिया जाता। एक बार, बड़े
समय बड़े लाट हार्डिंज साहब (१९१०-१६) की
गाड़ी बक्सर (बिहार प्रान्त) स्टेशन पर रुकने को थी
लिए प्लेटफ़ार्म और मुसाफ़िरख़ाना ख़ाली करा दिय
पुलिस का कड़ा पहरा बैठ गया। सूबेदार मेजर
बहादुर अँजोर तिवारी ने उस समय इन हार्डिंज स
गोद में खिलाया था जब इनके पिता भारत के गवर्न
(१८४४-४८ थे। उसी नाते ये मिलने गये थे।
पुलिस के भगा देने पर कहारों ने, जो इनकी प
आये थे, छिपकर इन्हें उत्तर ओर की चहा
पर कोने में बिठा दिया। तमग़ों की माला
कूबड़ निकाले बैठे, तिवारीजी को अपनी गाड़ी
लाट साहब ने देख लिया। गाड़ी के ठहरते
उतरकर तिवारीजी के पास पहुँचे और 'पापा' 'पा
कर उन्हें अपनी गाड़ी में ले आये। यह देख तमाम
को बड़ा अचरज हुआ। सबसे बड़ा ओहदा पाने पर
अपनी जान-पहचानवालों को नहीं भूल जाता वही
आदमी है।

× × ×

बहुत से बाल-सखा हमारे पास अपनी रचनायें भे
हैं परन्तु वे साफ़-साफ़ लिखी न होने के कारण न
पातीं। बाल-सखाओं को अपनी रचनायें साफ़ औ
अक्षरों में लिखकर भेजनी चाहिए।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस, बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

अच्छी पुस्तकें मनुष्य को जितना ऊँचा सकती हैं बुरी पुस्तकें उतना ही नीचे गिरा सकती अपने बच्चों को चरित्र की दृष्टि से ऊँचा उठाने के पुस्तकों का चुनाव करते समय अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है।

मूल्य सवा रुपया

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी-कृत बच्चों की कविताओं का यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक हैं, यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत ही कमनीय है।

शिशु भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही रचनाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल कवितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके।

मूल्य एक रुपया

अन्वेषण-यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य स्थान लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना भी सम्भव नहीं था। वास्को डि गामा आदि कुछ अपूर्व साहसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर यात्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है।

मूल्य तेरह आने

जान जोखिम की कहानियाँ—इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। कतिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षकता और बढ़ गई है।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का एक प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। इसमें ध्रुवों में निवास करनेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल लिखा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, साथ ही मनोरञ्जन भी होगा।

मेरे देश की कथा-भारतीय इतिहास के और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आद बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र कराती है।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइ यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है।

बालनीतिमाला—संस्कृत के नीतिविषयक ग्रन्थों हिन्दी अनुवाद है। नीति का ध्यान यदि बचपन से जाय तो ज़िन्दगी बड़े आनन्द से कट सकती है।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस ताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जि बच्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न

मूल्य ग्यारह आने

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ—इस छोटी- में आठ मज़ेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। कहानी जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। के लिए यह बहुत ही मज़ेदार है।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता पुस्तक कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहा समय वही मज़ा आता है जो दूध और मलाई खाते

मूल्य आठ आने

लन्दन की एक झलक—बालकों को लन्दन श संक्षेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

आपके बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक रूप में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और रञ्जक हुई है।

फ्रांस—इस पुस्तक में फ्रांस देश का वर्णन किया गया है। बहुत ही सरल और मनोरञ्जक है।

आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्राप्त करने के लिए को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो अनावश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात गई है।

अमरीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं । उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी । अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए।

जर्मनी—जर्मनी अपने भयङ्कर कारनामों के कारण आज हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं, क्या विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाला है।

चीन देश का हाल—भारत का चीन से प्राचीनतर सम्बन्ध । उसी चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया गया है। बच्चों यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

ध्रुवप्रदेश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षिप्त परिचय गया है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पुस्तक के से मनोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी।

रूस—देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना महत्त्वपूर्ण बना लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद रूप से वर्णन किया गया है।

लामाओं के देश तिब्बत में—तिब्बत के रास्ते में क्या-कठिनाई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस पुस्तक में गया है।

परीदेश—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने पाया समझने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्रतिदिन व्यवहार की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी गई हैं बच्चे उन्हें पढ़कर उछल पड़ेंगे।

बालगोपाल तथा अन्य कहानियाँ—बच्चों की रुचि का भाँति अध्ययन करके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और भाषा में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक शिक्षाप्रद हैं।

मूल्य पाँच आने

च्यांग काई शेक—इस पुतक में च्यांग काई शेक का जीवन-चरित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के राष्ट्रीय जीवन में नया जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी बच्चों को अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।-) पाँच आने।

तुर्की के वीर—इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवाले कमाल अतातुर्क के जीवन-चरित्र का संक्षेप में वर्णन है। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मिस्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्टन चर्चिल का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीत होगा। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ को भनभनाकर जाते हुए देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जहाज़ की उत्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह संक्षेप में लिखा गया है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए बड़े ही मज़े की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के साथ गद्य और पद्य भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ लेते हैं।

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के लिए यह परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें लगभग ४८ चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना की गई है।

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों में ऐसे महापुरुषों के ज़ीवन-चरित्र संक्षेप में दिये गये हैं जो अपने महान् कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। उल्लिखित मूल्य प्रति भाग का है।

जोसेफ़ स्टालिन—अत्यन्त कठिन परिस्थिति में भी साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष ने जीवन दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रोचक प्रतीत होगी

वाल्मीकि—रामायण महाकाव्य की रचना करनेवाले आदि कवि वाल्मीकि का यह जीवन वृत्तान्त है। भाषा अत्यन्त सरल और रोचक है।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य सात कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि बच्चे पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा आकर्षक है

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

HAMARA

HAMĀM

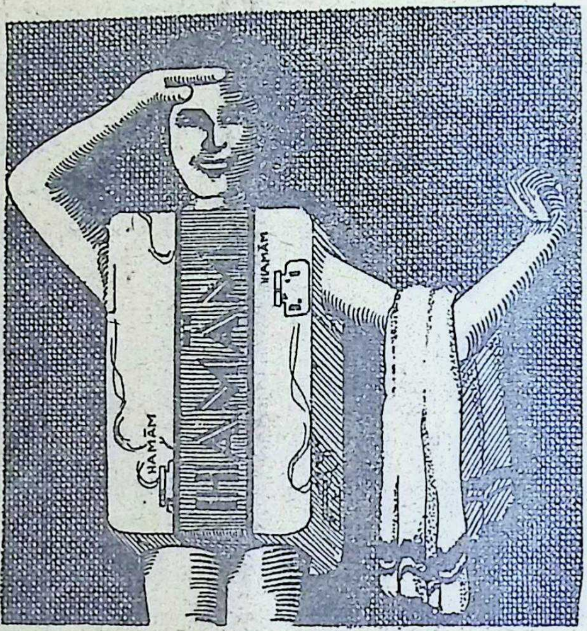

हमारा

हमाम

आपकी सेवा में

आप तक पहुँचने से पूर्व हमाम की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को अब आप जानते हैं। हम आपको बता चुके हैं कि हमाम की उत्पत्ति कैसे होती है, कैसे यह भारत की कची सामग्री से बनता है और इन प्राकृतिक पैदावारों के उपयोग कैसे हमारे देश की आर्थिक उन्नति में सहायता देते हैं। हम अब आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम हमाम के उच्च आदर्श और गुणों को सर्वदा प्रचलित रक्खेंगे और इस बात का ध्यान रक्खेंगे कि हमाम देश के कोने-कोने में मिलता है। हम आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

६—छहों कूपनों को काटकर पो० बा० नं० ६३ नं० १ के पते पर भेज दें। हम आपको एक उपहार भेंट करेंगे।

A TATA PRODUCT

दी टाटा आयल मिल्स कं०,
जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares Branch, Benares

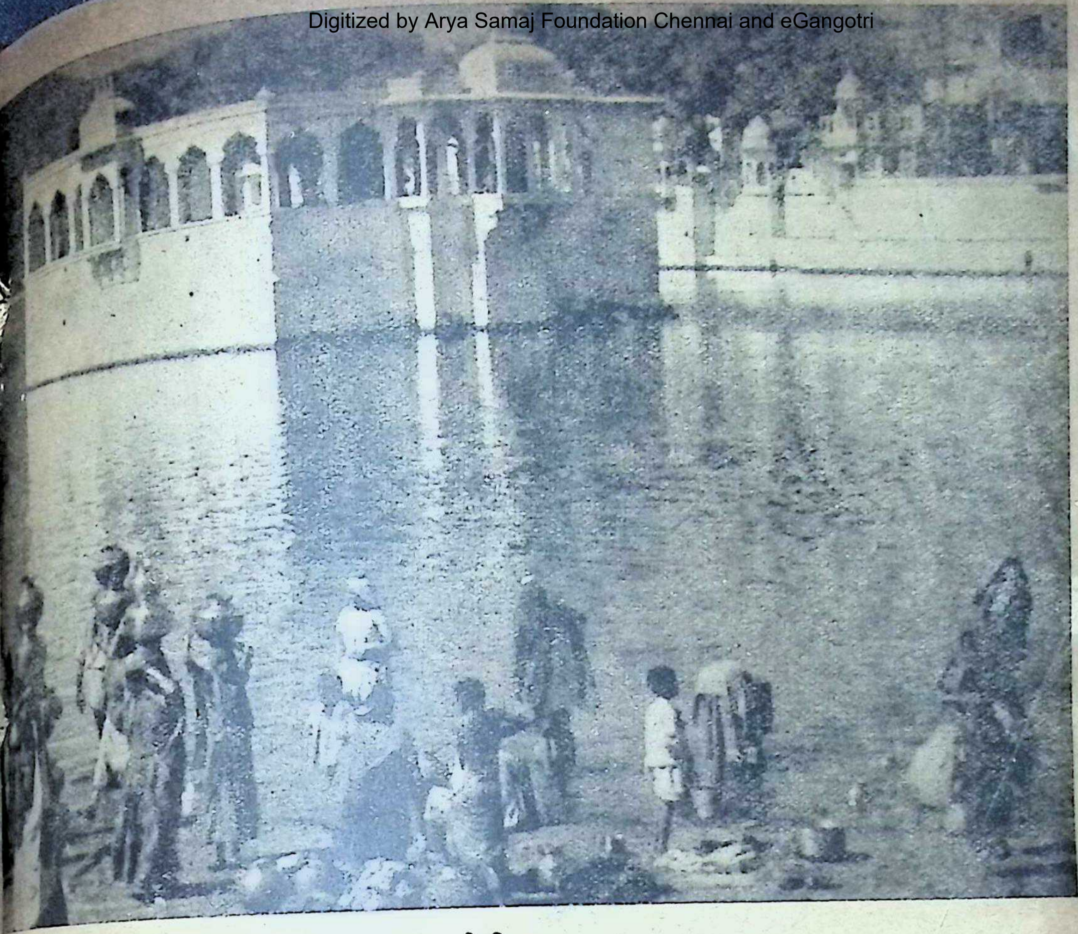

नदी-किनार

पर्व-स्ना

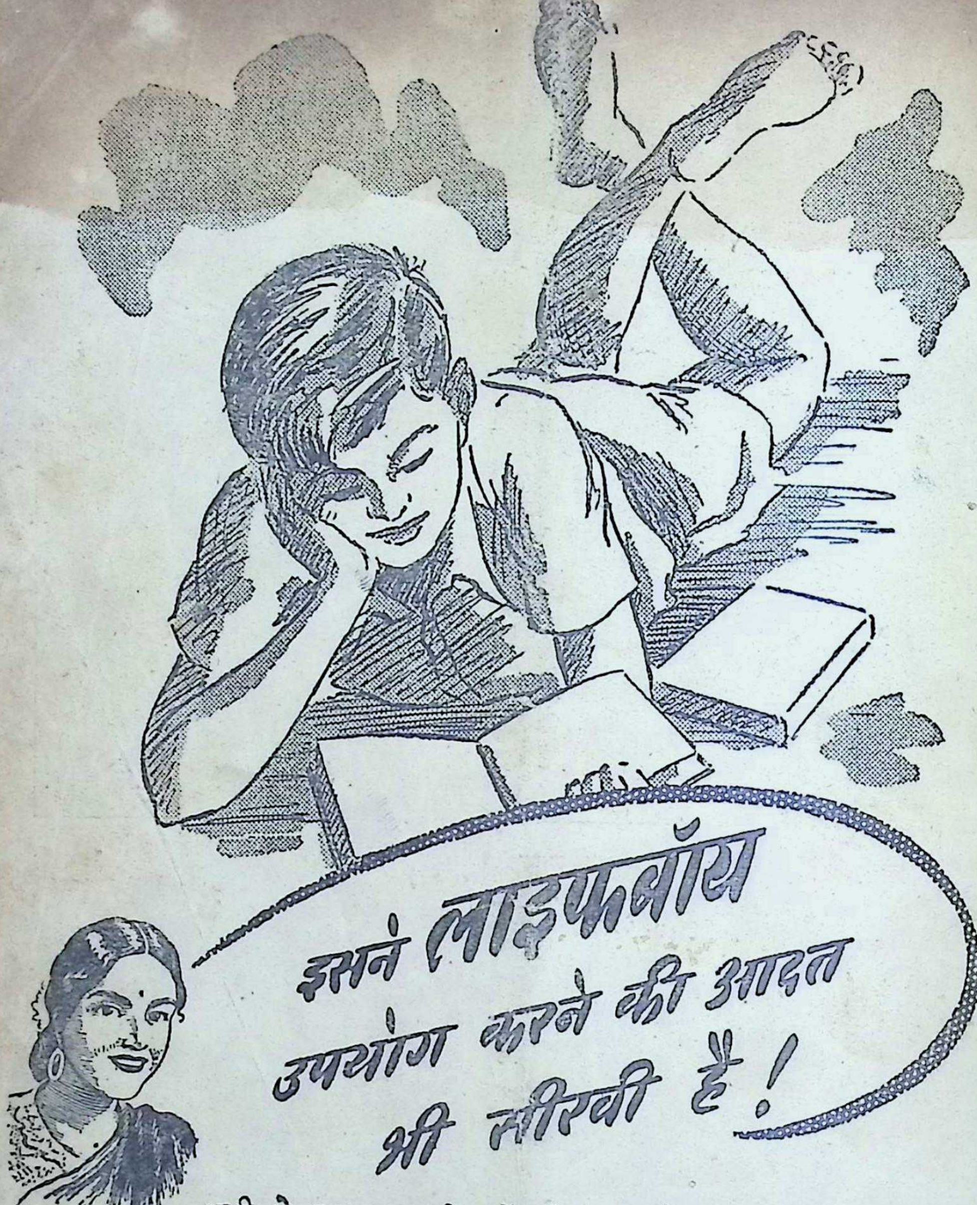
इसने लाइफबॉय
उपयोग करने की आदत
भी सीखी है!

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और ख़ुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के की 'गन्दगी के ख़तरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

LIFEBUOY
SOAP
LIFEBUOY SOAP

L. 77-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

बालसखा

फरवरी १९४५

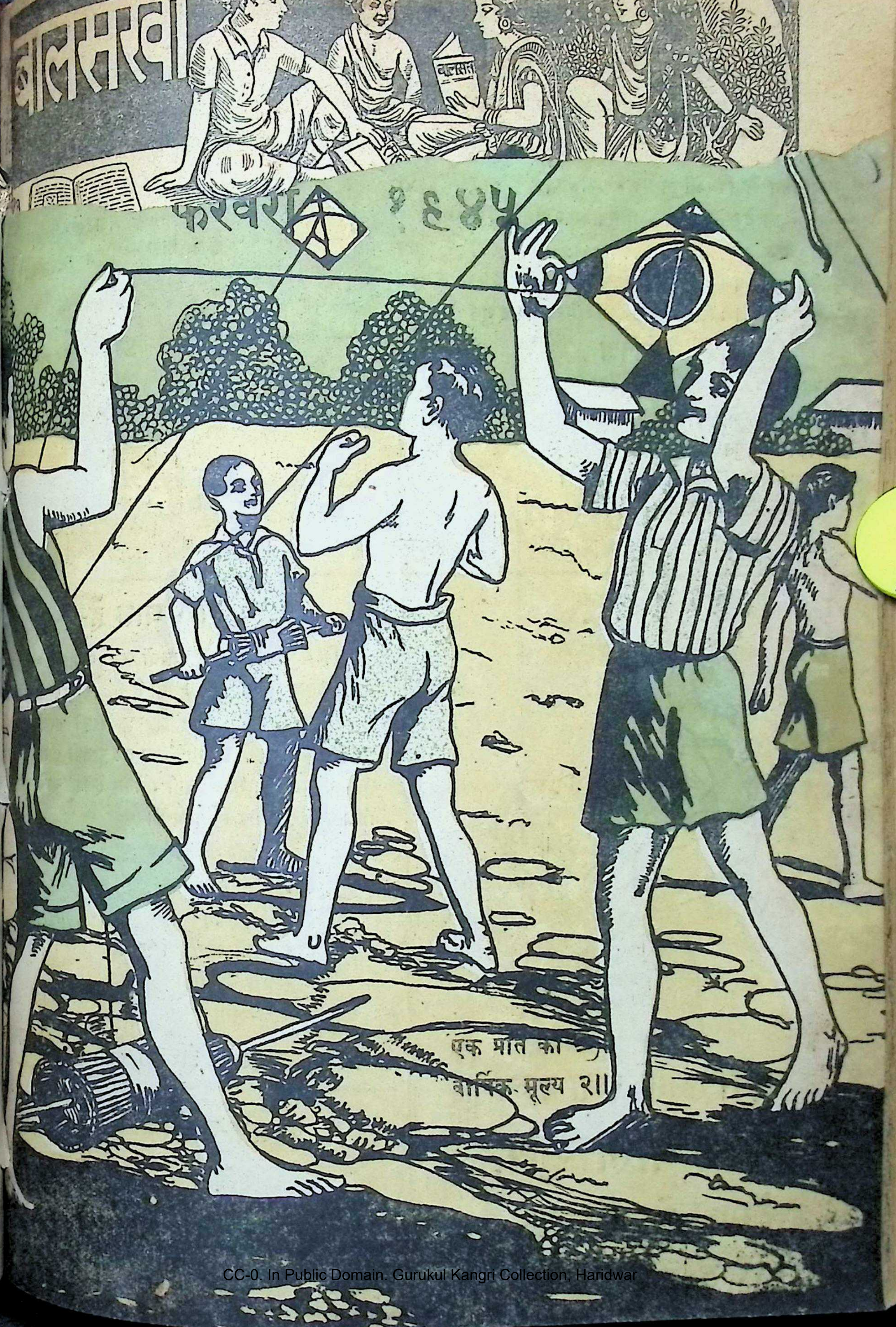

एक प्रति का

वार्षिक मूल्य २॥

२—दज़ा ... साद
३—बिनबिन बौना—श्रीयुत एम॰ एल॰ पाँडे ... ४८
४—रघु स्कूल देर से पहुँचा—श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी॰ ए॰ ५१
५—हीरों का द्वीप—श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ५७
६—चीन देश का मजिस्ट्रेट—श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद गुरु ६१

कविता

१—यह है वसन्त का पहला दिन—श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम॰ ए॰, एल्-एल॰ बी॰ ... ३३
२—होली—श्रीयुत अशोक ३३
३—वानरसिंह—श्रीयुत श्रीपतिराय द्विवेदी ... ३८
४—मेघ-गीत—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ... ४२
५—चरण-चिह्न—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ... ४२
१—लड़ाई के हथियार—श्रीयुत ब्रह्मदत्त विद्यार्थी ...
२—पठानों का कुछ हाल—श्रीयुत महेशप्रसाद आलिम फ़ाज़िल ... ...
३—युद्ध का ख़र्च ... ...
४—बाल-मन्दिर में बापू—श्रीयुत उमाशङ्कर शुक्ल ...
५—ब्रिटेन के बच्चे—श्रीयुत सत्यवीर ... ...
६—स्काउटिंग कैम्प—श्रीयुत विद्यार्थी ... ...

फुटकर

१—मनोविनोद ... ...
२—प्रश्न-पहेली ... ...
३—सम्पादक का ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे
डोंगरे बालामृत
के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

सच बात है—

कि बहुत ही छोटे बच्चों को खाना और खेल चीज़ें बहुत ही पसन्द आती हैं। किन्तु इसके बाद उन्हें प्रिय लगती है तो वह है रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाली कहानी की पुस्तकें। नीचे हम छः पुस्तकों के नाम लिख इनमें से प्रत्येक पुस्तक इतनी मज़ेदार है कि बच्चे उन्हें प्रसन्नता से लोटपोट हो जायँगे।

सद्गुणी बालक ... १।-)
मज़ेदार ख़ज़ाना ... ॥)
सोने का पेड़ ... ॥≡)
अनोखी कहानियाँ ... ।-)
लकड़ी का घोड़ा ... ॥≡)
बाल-कवितामाला ... ॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

बालक-बालिकाओं के लिए
कविता का अपूर्व झरना

पं॰ रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं बड़े शौक़ से पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह की रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

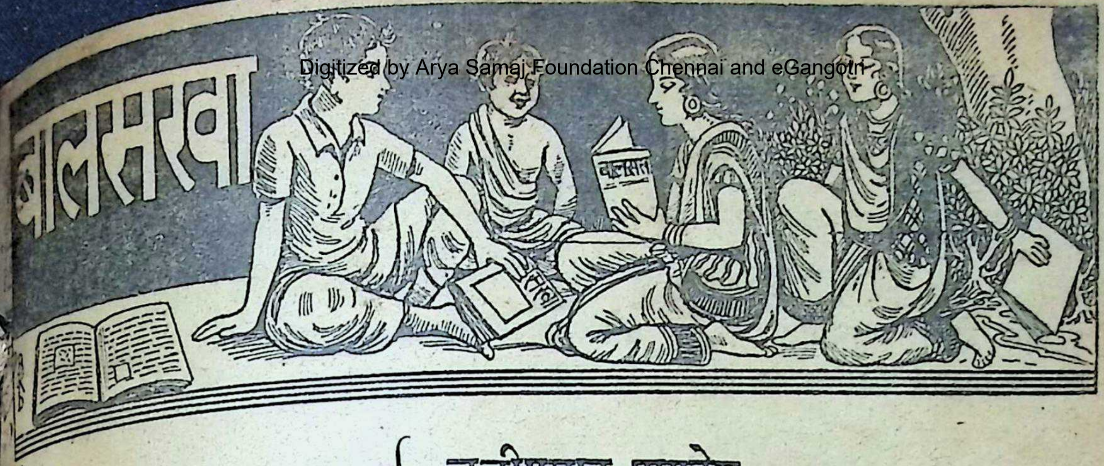

सम्पादक { लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

२९] फ़रवरी १९४५—फाल्गुन २००१ [संख्या २

यह है वसन्त का पहला दिन

श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी०

यह है वसन्त का पहला दिन।
कुछ-कुछ सुगन्ध के लेकर कण,
अब देखो बहने लगी पवन,
कुछ-कुछ निकले हैं नये सुमन,
यह है वसन्त का पहला दिन।
है कभी-कभी आती कोयल,
दो-चार बोल गाती कोयल,
फिर, चुप हो छिप जाती कोयल,
यह है वसन्त का पहला दिन।
किरणों में है कुछ-कुछ लाली,
दूर्वा में कुछ-कुछ हरियाली,
दिखलाता कुछ-कुछ ख़ुश माली,
यह है वसन्त का पहला दिन।
कुछ दिन लगते हैं अब सुन्दर,
कुछ दिशा दिखाती है मनहर,
यह कौन गया है जादू कर?
यह है वसन्त का पहला दिन।

होली

लेखक, श्रीयुत अशोक

एक साल के बाद आज फिर
होली का आया त्योहार;
छोटे-बड़े सभी के मन में
भरा हुआ उत्साह अपार।

रङ्गभरी पिचकारी लेकर
बच्चे खेल रहे बाहर।
हँसी-खेल का समाँ बँधा है
ख़ुशी छा रही है सब पर।

जहाँ पथिक कोई दिखलाता,
बँध जाती है रँग की धार
लाल, हरे, नीले, पीले, रँग
उसे तुरत रँगते भर प्यार।

नये-नये कपड़ों में सजकर
बच्चे मना रहे हैं मोद
चारों ओर जहाँ भी देखो
होता है आमोद-प्रमोद।

मन में सभी जगत के भरने
प्रेम और उत्साह अपार;
आता है हर साल रिझाने
को होली का शुभ त्यौहार।

लड़ाई के हथियार

लेखक, श्रीयुत ब्रह्मदत्त विद्यार्थी

हमारे बहुत-से बाल-सखा रोज़ अख़बार पढ़ते होंगे। युद्ध की बातें सुनकर बहुधा उन्हें यह आश्चर्य होगा कि आख़िर यह युद्ध है क्या और कैसा होता है। यह आश्चर्य होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि हममें से बहुत-से लोग ऐसे हैं जिन्होंने युद्ध को अपनी आँखों से नहीं देखा है। आओ, आज हम तुम्हें इस युद्ध के बारे में ही कुछ बतायेंगे।

तुमने सुना होगा कि रामचन्द्र को रावण से युद्ध करना पड़ा था। महाभारत की लड़ाई की कहानी भी तुम्हें मालूम होगी। महाभारत के युद्ध में किस तरह बहुत बड़ी-बड़ी सेनायें इकट्ठी होकर कई दिन तक युद्ध करती रहीं और अन्त में पाण्डवों ने कौरवों को हरा दिया। इस युद्ध में बहुत-से लोग मारे गये थे।

आजकल भी लड़ाई में बहुत-से लोग मारे जाते हैं, परन्तु अब युद्ध का वह तरीक़ा नहीं है जो पुराने ज़माने में था। पहले सेना चार तरह की होती थी—पैदल, घोड़ा, हाथी और रथ। और युद्ध किसी बड़े मैदान में लड़ा जाता था परन्तु अब तो लड़ाई ज़मीन, आसमान और समुद्र तीनों में होती है। लड़ाई में हथियार भी अब दूसरी क़िस्म के काम में लाये जाते हैं। धनुष-बाण का तो नाम भी नहीं रह ाया। धनुष-बाण का स्थान तरह-तरह के संहारक थियारों ने ले लिया है; जैसे तोप, बन्दूक़, बम त्यादि। रथ के स्थान पर अब मोटर-लारियाँ और ङ्क काम में लाये जाते हैं। सोचिए तो, मनुष्य ने कतनी तरक़्क़ी की है और वह आज युद्ध की कला ं कितना आगे पहुँच गया है।

आज के युद्ध को हम मामूली तौर पर तीन हस्सों में बाँट सकते हैं। स्थल-युद्ध धरती पर होता । इसमें पैदल सेना का काम ज़्यादा होता है।

पैदल पलटन के सिपाही बन्दूक़ों से युद्ध बन्दूक़ें भी कई तरह की होती हैं। बन् अलावा कई तरह के हथियार काम में ला हैं। ब्रेन गन, टामी गन, लेविस गन, खाई आदि का इस्तेमाल सिपाही लोग स्थल-यु करते हैं।

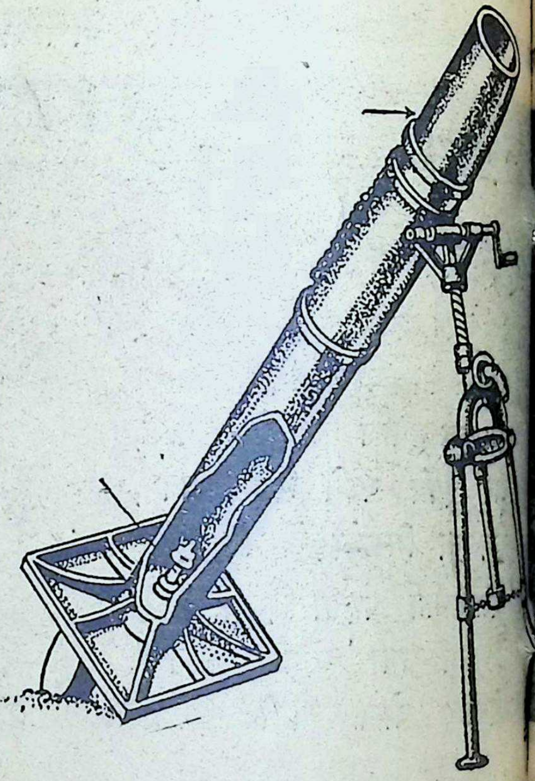

खाई की तोप

इसके सिवा बड़ी-बड़ी तोपें भी काम कर कुछ तोपें दूर की मार की होती हैं। इनसे गोले फेके जाते हैं जो बहुत दूर तक मार क बहुत-सी तोपें ऐसी होती हैं जिनकी मार होती है। चित्र में तोपों को देखकर तुम सकते हो कि वे कितनी भयङ्कर होती जब इनसे गोला छोड़ा जाता है तब इनसे भयङ्कर आवाज़ निकलती है। इनसे निकलने लगती है। इन तोपों की घड़घड़ा

भी सिपाही लोग अपना काम करते हैं।

पैदल सिपाहियों को एक स्थान से दूसरे स्थान जाने का काम मोटर-लारियाँ करती हैं। ज़रिये सेना के इस्तेमाल की सभी चीज़ें ढोई हैं। इस तरह आजकल युद्ध के लिए लारियाँ बहुत ज़रूरी हो गई हैं।

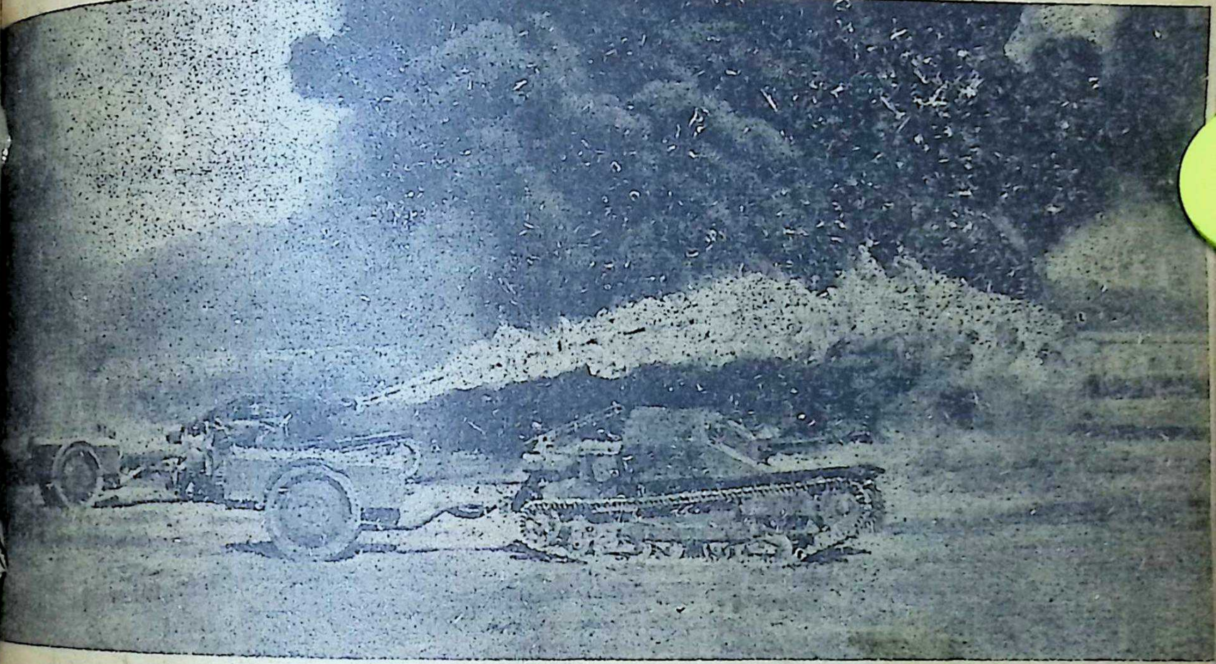

टैङ्क

पैदल सेना में टैङ्कों ने घोड़ों और हाथियों की ले ली है। टैङ्क का आकार सन्दूक के समान है। पहियों को छोड़कर इसके चलाने की कलें कार की कलों के समान ही होती हैं। इसका बहुत ताक़तवर होता है। इसे इच्छानुसार पीछे किसी भी ओर चलाया जा सकता है। स्पात की मोटी चद्दर का बना हुआ होता है बन्दूक़ की गोलियाँ और हलकी तोपों के गोले नहीं भेद सकते। टैङ्कों की सेना पैदल सेना के रास्ता बनाती चलती है। यह इस प्रकार का होता है कि ऊबड़-खाबड़ और नीची-ऊँची पर भी बिना कठिनाई के चल सकता है। पेड़ों को भी यह रास्ते में कुचलता चलता

है। कुछ रथ तो पानी और ज़मीन दोनों पर चलते हैं। इन्हें मेढक इस्पाती टैङ्क कहते हैं। आजकल के युद्ध में यह सचमुच वही काम करता है जो पुराने समय में हाथी करते थे।

स्थल-युद्ध का थोड़ा-सा परिचय हमने अपने बाल-सखाओं को दिया। यह परिचय बहुत कम है। स्थल-युद्ध के बारे में ही यदि सब बातें बताई जायँ तो बहुत समय लगे। अब समुद्री लड़ाई की भी कुछ बातें सुनो। समुद्र की लड़ाई स्थल की लड़ाई से अधिक महत्त्वपूर्ण और रोमाञ्चक होती है, क्योंकि वहाँ सैनिकों को लड़ने के लिए ज़मीन नहीं मिलती। यह लड़ाई जहाज़ों पर से लड़ी जाती है। इस काम के लिए यह ज़रूरी है कि समुद्र में लड़नेवाले जहाज़ अधिक मज़बूत और कई प्रकार के हों।

समुद्री युद्ध में कई तरह के जहाज़ काम में आते हैं। एक बड़े जङ्गी जहाज़ के साथ बहुत-से छोटे-छोटे जहाज़ होते हैं। उनमें कुछ तो ऐसे होते हैं जिनका काम दुश्मन के जहाज़ों का पता लगाना होता है। इनकी चाल तेज़ होती है। ये अपने जङ्गी

इनके अलावा विध्वंसक जहाज़ होते हैं। इन जहाज़ों का काम शत्रुओं के जहाज़ पर हमला करना होता है। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रकार के जहाज़ होते हैं।

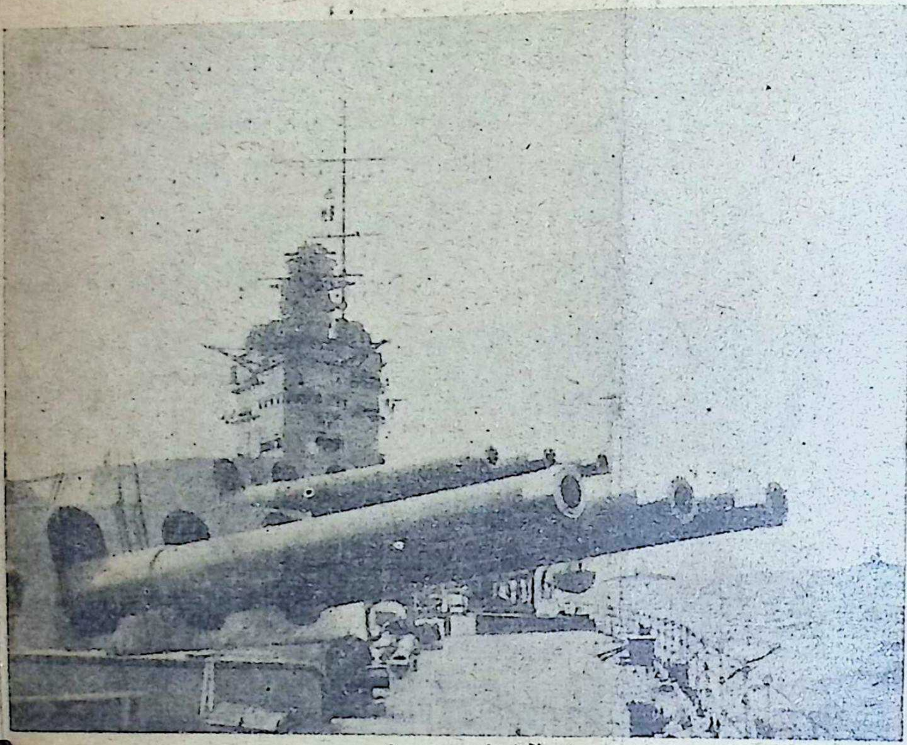

समुद्री जहाज़ की तोपें

समुद्र की लड़ाई में एक और तरह का जहाज़ काम में आता है। यह पानी के भीतर और ऊपर भी चलता है। इसे पनडुब्बी या ग़ोताख़ोर कहते हैं।

विध्वंसक जहाज़ धुएँ का बादल छोड़ रहा है

यह पानी के भीतर रहकर शत्रु के जहाज़ों की खोज

चोट करता है। इसकी बनावट बड़ी विचित्र यह महीनों तक पानी के भीतर-भीतर यात्रा रह सकता है।

समुद्र में भी हवा होता है। इस काम के एक ख़ास तरह का काम में लाया जाता है वायुयान-वाहक जहाज़ हैं। यह जहाज़ भी जहाज़ के साथ रहता इसके ऊपर हवाई जहाज़ों उड़ने और उतरने के स्थान बना रहता है। इस से वायुयान उड़कर आ में चक्कर लगाया करते हैं शत्रु की गति-विधि का लगाकर अपने जङ्गी को ख़बर दिया करते हैं

विस्फोटक चीज़ों की खोज ने आजकल में काम आनेवाली बहुत-सी चीज़ें बनाई हैं। सु के बारे में हमारे बाल-सखाओं ने ज़रूर सुना ये धरती और समुद्र दोनों में काम में लाई जा

ये फट जाती हैं जिससे जहाज़ में छेद हो जाता है। धरती की सुरङ्गें निकालने के ख़ास तरीक़ा इस्तेमाल में लाया पर समुद्र की सुरङ्गें हटाने के तो एक तरह का जहाज़ ही काम में जाता है जिसे सुरङ्ग हटानेवाला कहते हैं।

आकाश की लड़ाई वायुयानों की हैं। वायुयान भी कई तरह के होते कुछ वायुयान शत्रु के देशों पर बम ने का काम करते हैं। इनको बम- कहते हैं। इनके अलावा लड़ाकू भी होते हैं। लड़ाकू वायुयानों काम शत्रु के वायुयानों से लड़ना है। शत्रु के बमवर्षक हमला करते हैं तब वायुयान उनको मार गिराने का प्रयत्न करते हैं। इनके अलावा और बहुत क़िस्म के वायुयान होते हैं। इन वायुयानों को मार गिराने के लिए ख़ास तरह की तोपें काम में लाई जाती हैं जिन्हें वायुयान-विरोधी तोप कहते हैं। जिस समय ये तोपें शत्रु के वायुयानों को मार गिराने के लिए गोले छोड़ लगती हैं उस समय आकाश में गोले ही गोले दिखा

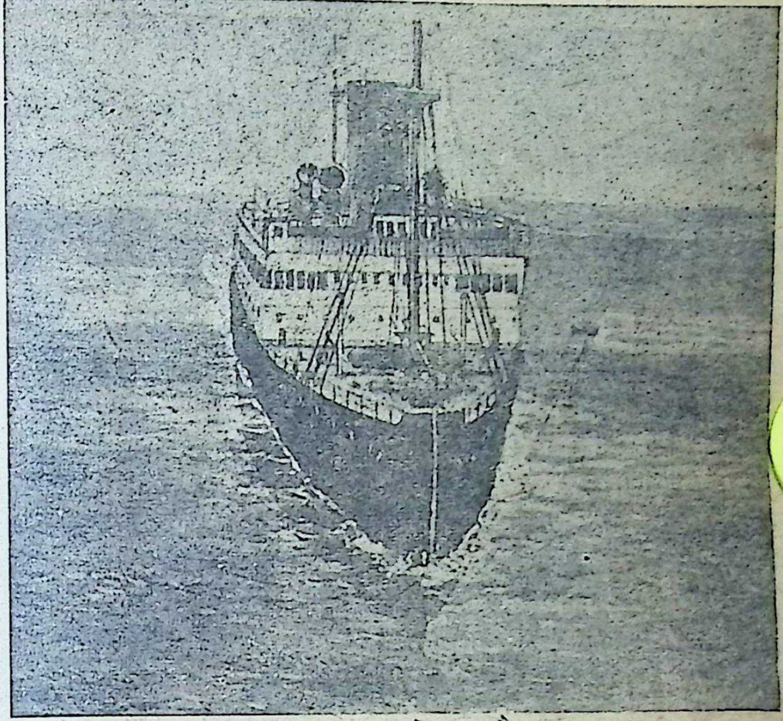

जहाज़ सुरङ्ग बटोर रहा है।

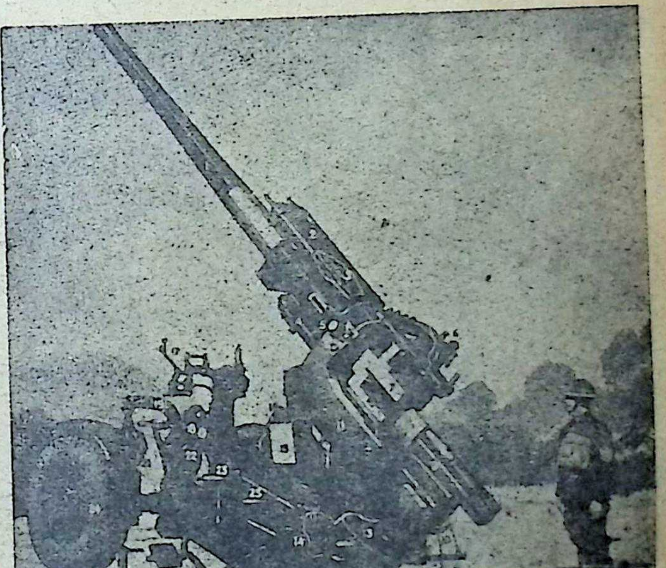

हवाई जहाज़ गिरानेवाली तोप।

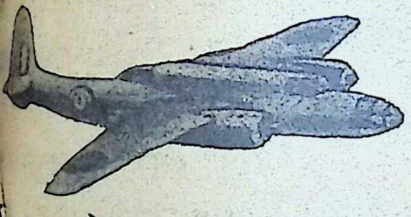

बोस्टन वायुयान

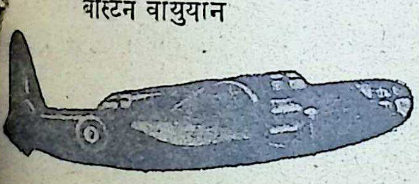

हैवक (बोस्टन) नामक वायुयान

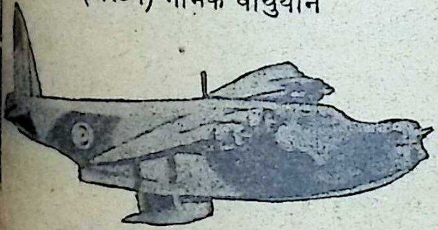

शार्ट संडलैंड वायुयान

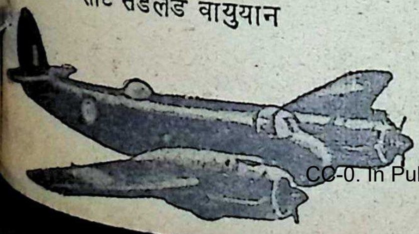

पड़ते हैं। चित्र में देखो, तोप किस तरह दनादन गोले फेंक रही है।

आजकल के युद्ध में काम आनेवाले हथियारों के बारे में हमने तुम्हें संक्षेप में कुछ बातें बताई हैं। इनसे तुम समझ सकते हो कि युद्ध में कितने भयङ्कर और कठिन काम करने पड़ते हैं। इन कठिन कामों को कोई आदमी तभी कर सकता वह .खूब हट्टा-कट्टा और तन्दुरुस्त हो। हम देश की आज़ादी की रक्षा तभी कर स जब .खुद तन्दुरुस्त हों। इसलिए हमें अपने का सदा ध्यान रखना और .खूब तन्दुरुस्त चाहिए।

वानरसिंह

लेखक, श्रीयुत श्रीपतिराय द्विवेदी

कूद-फाँदकर धूम मचाते पेड़ों पर वे रहते थे।
चीं-चीं की चीत्कार लगाते, वानर ऊधम करते थे॥
अपने दल के साथ सभी वे खेतों में जा चरते थे।
वानरसिंह उनका था नेता उसकी इज़्ज़त करते थे॥
सब वानर थे बाल, किन्तु उसमें ही मस्त जवानी थी।
अपनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी थी॥
उनका नेता वानरसिंह था वीर, तेजयुत औ' बलवान्।
इन्हीं गुणों के कारण करते सभी अन्य थे उसका मान॥
कभी चराता अपने दल को खेतों में ले जाकर धान।
कभी झुलाता पेड़ों पर था उसे शक्ति का अति अभिमान॥
उसको नेता बना वानरों ने की अति मनमानी थी।
अपनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी थी॥
एक दिवस वानरसिंह थे निज दल को सँग ले घूम रहे।
उचक-उचककर कूद-कूदकर पेड़ों पर थे झूम रहे॥
ृक्ष-तले बढ़ई तख़्तों को रहे चीरने में मशगूल।
न्हें देखने में वानरसिंह गये तुरत अपने को भूल॥
ूझी एक शरारत, मौक़ा देख काम में लानी थी।
पनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी थी॥

हुई दोपहर थककर बढ़ई चले जब कि सुस्ताने
फँसा कील अधचीरे तख़्ते बीच लगे घर जाने
वानरसिंह .खुश हुआ पेड़ पर बैठा मौक़ा पाने
ज्यों ही दूर गये कुछ बढ़ई कूद पड़ा वह आने
बल का था अभिमान, उसे तो अपनी शक्ति बतानी
अपनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी
हर्षिततन हो पेड़ों पर से कूद पड़ा वह बातों
दृष्टि अचानक पड़ी कील पर फँसी हुई थी पाटों
झपट शान से उसे एकदम पकड़ लिया दो हाथों
.खूब लगाया ज़ोर पकड़कर हिला दिया दो लातों
उखड़ गई तब कील पूँछ तख़्तों के बीच फँसानी
अपनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी
उछले-कूदे .खूब, न निकली पूँछ किन्तु उन पाटों
ज्यों-ज्यों कोशिश करते त्यों-त्यों फँसी पूँछ उन पा
असहनीय पीड़ा से चिल्ला लटक गये उन पाटों
अपनी शक्ति बताई उसने लड़ने में उन पाटों
भागे वानर दूर, उन्हें तो अपनी जान बचानी
अपनी शक्ति बताने की जब वानरसिंह ने ठानी

टके के पाँच

लेखक, प्रो० शङ्करलाल अग्रवाल, एम० ए०, बी० एस्-सी०, विशारद

पहला दृश्य

सड़क] [समय—५ बजे सायङ्काल

एक आदमी किसी बच्चे को ठोंक-पीट रहा है। भीड़ हुई है।]

दर्शक—जाने भी दो। क्यों बच्चे की जान ले रहे हो?

आदमी—इस कम्बख़्त ने मेरा नाकों दम कर रक्खा है। दुश्मन को भी ऐसी औलाद न दे।

दूसरा दर्शक—आख़िर बात क्या है?

आदमी—क्या बताऊँ!

दूसरा दर्शक—किसका लड़का है यह, तुम्हारा?

तीसरा दर्शक—इन्हीं का लड़का है।

आदमी—लड़का है! कौन यह? दुश्मन है मेरा। जी है कि इसकी बोटी-बोटी काट डालूँ।

तीसरा दर्शक—गयादीन, आज तुम्हें हो क्या गया है?

गयादीन—इसकी ख़ातिर मैंने क्या नहीं किया झिंगरू! भूखा सोया मगर इसे बढ़िया से बढ़िया खाना ; ख़ुद चाहे नंगे बदन रहा मगर इसे अच्छे से कपड़ा पहनाया। उस पर इस नालायक़ को मेरा ख़याल नहीं।

झिंगरू—आजकल सब जगह बच्चों का यही हाल है। अपना काम देखो। अभी लड़कपन है, धीरे-धीरे रहेगा।

गयादीन—आज हज़रत सुबह स लापता थे।

झिंगरू—कहाँ था रामू?

गयादीन—मुझसे पूछिए। जनाब थे पतङ्गों के दङ्गल कनकैया उड़ाई जा रही थी।

दर्शक बच्चा—तब तो ख़ूब पेंच लड़ाये होंगे, क्यों ? हमें क्यों नहीं बुला लिया?

चौथा दर्शक—चुप शैतान। तू भी जब तक जी भर- न खायगा तब तक ठीक रास्ते पर हरगिज़ न ।

गयादीन—ठीक कहते हैं आप। मैंने ख़ूब समझ लिया (रामू की तरफ़ इशारा करके) इस बदज़ात की एक है। (रामू को मारने के लिए डण्डा उठाता है)

दर्शक बच्चा—(डण्डा पकड़ लेता है) रहम खाओ, भाई। मर जायगा।

गयादीन—मैं तो चाहता हूँ कि ऐसी सन्तान मर जाय।

चौथा दर्शक—सचमुच मैं भी जब इस (दर्शक बच्चे दिखा करके) पाजी लड़के से तङ्ग आ जाता हूँ तब इसी तरह कोसने लगता हूँ। ख़ैर, भाई ग़म खाओ। नालायक़ सन्तान हो तो क्या मार डाली जाय?

झिंगरू—भला देखिए तो। चलो हटो गयादीन; बस काफ़ी हो चुका। (झिंगरू और चौथा दर्शक दोनों मिलकर गयादीन को ज़बरदस्ती वहाँ से हटाकर ले जाते हैं।)

चौथा दर्शक—(लौटने पर रामू से) बेटा, जान बची लाखों पाये। पतङ्गें उड़ाना बन्द करो। अब बुड्ढे बाप के काम में हाथ बँटाओ। अपनी दूकान सँभालो दूकान। समझे। वर्ना मैं तो चला, अब तुम जानो और तुम्हारा काम।

(जाता है)

दूसरा दृश्य

स्थान—गयादीन की दूकान] [समय—प्रातः ९ बजे

गयादीन—(रामू से) लो, इन टोकरों के नीबू घूम-घूमकर बेच लाओ। (कुछ जवाब न पाकर) सुनता है, रामू?

रामू—जाता हूँ, पर अभी बहुत सवेरा है।

गयादीन—(नाराज़ होकर) न जाने की मंशा हो तो वैसा कहो।

रामू—कितने नीबू हैं कुल?

गयादीन—पाँच दर्जन।

रामू—बस। ६० नीबुओं के बेचने में देर ही कितनी लगेगी, भला।

गयादीन—माना कि देर नहीं लगेगी। मगर अभी सुबह का वक़्त है। गाहक आसानी से मिलेंगे।

रामू—अच्छा, मैं चला। मगर हाँ, इन्हें बेचूँ किस भाव?

गयादीन—देख, इस टोकरे में हैं तीस; इन्हें पैसे के दो-दो बेचना। और उस टोकरे के तीस को पैसे के तीन-तीन। समझा?

रामू—जी, समझा। (खड़ा-खड़ा कुछ सोचने लगता है)

गयादीन—अब क्या सोचता है?

रामू—सोचता हूँ......ख़ैर, अब नहीं कहूँगा। आप नाराज़ होने लगेंगे।

गयादीन—नहीं। मालूम तो हो कि किस चीज़ का सोच-विचार है।

रामू—कह दूँ! मगर आप नाराज़ हुए तो!

गयादीन—नहीं, बोलो।

रामू—जब मैं सारे नीबू बेच आऊँ तो आप मुझे पतङ्गों के लिए एक पैसा देंगे?

गयादीन—(त्योरी चढ़ाकर) पतङ्गों के लिए पैसा !

(पिता का रुख़ बदला हुआ देखकर रामू सर पर टोकरे रखकर झटपट खिसक जाता है)

रामू—सिर्फ़ पाँच दर्जन।

गाहक—अच्छा, ले लेंगे सब। बताओ तब कै

रामू—टके के पाँच दे दूँगा।

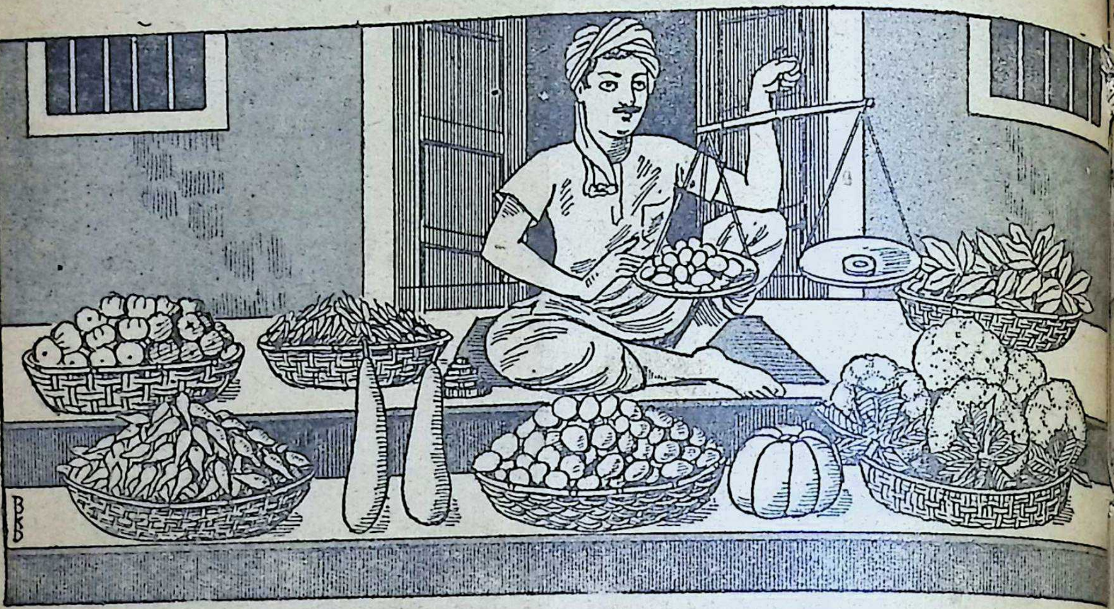

गयादीन अपनी दूकान पर बैठा तरकारी बेच रहा था।

तीसरा दृश्य

स्थान—बाज़ार] [समय—दिन के १० बजे

(रामू सर पर टोकरे रक्खे हुए आता है)

रामू—(ज़ोर से चिल्लाकर) नीबू लो, बड़े-बड़े नीबू।

ख़रीदार—देखें नीबू।

रामू—(बड़े नीबू दिखाकर) देखिए सरकार, बहुत बढ़िया नीबू हैं।

गाहक—(टोकरे के नीबू देखकर) इसमें कोई कोई दाग़ी हैं। ख़ैर, बोलो किस भाव दोगे।

रामू—सस्ते लगाये हैं ले लीजिए; पैसे के दो दे दूँगा।

गाहक—दो-दो ! अरे तीन-तीन तो दो।

रामू—हुजूर, मैं तो चार-चार देता मगर क्या करूँ नीबू की फ़सल जा रही है इसलिए इसकी आमदनी कम हो गई है। हम लोगों को भी मँहगे मिल रहे हैं।

गाहक—दाग़ी नीबू कौन पैसे के दो-दो लेगा ? तीन-तीन देना हो तो देते जाओ।

रामू—(छोटे नीबू दिखाकर) तीन-तीन ये नीबू मिलेंगे; कहिए कितने दे दूँ।

गाहक—ये नहीं चाहिए। (चल देता है)

रामू—सुनिए तो हुज़ूर ! अगर आप सब नीबू ख़रीद ें तो कुछ सस्ते दे दूँ।

गाहक—टके के पाँच !

रामू—जी। इससे सस्ते न दे सकूँगा।

गाहक—तो जाओ।

रामू—बहुत अच्छा। (चल देता है)

गाहक—(रामू को जाता हुआ देखकर) मालूम हो बेचना नहीं है।

रामू—जी, बेचना न होता तो इन्हें सर पर निकलता ही क्यों ?

गाहक—फिर देते क्यों नहीं ? सर पर बोझ रहे हो।

रामू—मैंने कह दिया टके के पाँच तक दे दूँगा

ख़रीदार—बड़े ज़िद्दी हो। कहीं किसी को दाम मिला करते हैं ?

रामू—सरकार, मैं मोल-तोल करता नहीं। मर्ज़ी हो, ले; मर्ज़ी न हो, न ले।

गाहक—अच्छा लाओ, गिनो।

रामू—लीजिए, हुज़ूर। (गिनता है। गिन चुकने के हैं पूरे ६० ?

गाहक—हैं। लो अपने २४ पैसे। (पैसे देता है

रामू—(पैसे लेकर) सलाम, हुज़ूर।

गाहक—ठीक हैं ?

गाहक—हिसाब लगा लो।

रामू—लगा लिया (पैसे गिनकर रख लेता है और चलने

है) सलाम।

गाहक—सलाम।

(दोनों जाते हैं)

चौथा दृश्य

गयादीन का मकान] [समय - दिन के ११ बजे

गयादीन रामू पर नाराज़ हो रहा है।)

गयादीन—मैं कैसे मानूँ कि तुमने एक पैसा नहीं

।

रामू—सच कहता हूँ; नीबू २४ ही पैसों के बिके।

गयादीन—२४ पैसों के, किस तरह ?

रामू—आपने कहा था कि आधे नीबू बेचना पैसे के और आधे पैसे के तीन-तीन। मैंने कुल नीबू टके के के बेच दिये। बात वही हुई।

सन्तू के पिता सन्तू को ढूँढ़ते हुए वहाँ आ पहुँचते हैं)

पिता—यहाँ सन्तू है, गयादीन ?

गयादीन—नहीं तो।

पिता—आज वह ग़ायब है।

गयादीन—अजीब हाल है इन लड़कों का। ज़रा रामू करतूत देखिए। पैसे का पैसा उड़ाया और उस पर सफ़ाई दे रहा है।

पिता—(रामू से) सच-सच क्यों नहीं कह देता।

गयादीन—सच कैसे कहे। पैसा गया पतङ्गों में। यह पहले से ही माँग रहा था।

पिता—तो फिर जाने दो। एक पैसे के लिए ख़ामख़ाह हुल्लड़ मचा रक्खा है। उड़ा डाली होगी पतङ्ग; मानते कब हैं भाई।

रामू—जी नहीं। मैंने पतङ्ग नहीं उड़ाई। २४ पैसों बिके जिन्हें मैंने ज्यों के त्यों लाकर इनके हाथ में दिया।

पिता—तुम्हारे हिसाब से कितने पैसे होते हैं ?

गयादीन—२५।

रामू—(ताज्जुब से) पच्चीस !

गयादीन—हाँ, हाँ २५। (सन्तू के पिता से) देखिए, पैसे के हिसाब से ३० नीबू कितने के हुए ?

पिता—१५ पैसों के।

गयादीन—और पैसे के तीन-तीन के हिसाब से ३० कितने के हुए ?

पिता—१० पैसों के।

गयादीन—अब ६० नीबू कुल कितने पैसों के हुए ?

पिता—२५ पैसों के।

रामू—सचमुच २५ पैसों के। मगर...सुनिए। टके के पाँच की दर से ६० नीबू कितने के हुए ?

पिता—२४ पैसों के।

रामू—यही तो मैं कहता हूँ, मगर ये कहते हैं कि मैंने एक पैसा चुरा लिया।

पिता—(हँसता है) समझा, मामला यह है।

गयादीन—क्या है, ज़रा मैं भी समझ लूँ।

पिता—रामू को दोनों क़िस्म के नीबू मिलाकर टके के पाँच नहीं बेचना था।

रामू—क्यों ? इसमें बुराई ?

गयादीन—(बात काटकर) बुराई अब तक समझ में नहीं आई !

पिता—(रामू से) देखते नहीं, मुफ़्त में एक पैसे का नुक़सान हुआ।

गयादीन—मगर इनकी बला से।

रामू—(पिता से) नुक़सान क्यों हुआ, यह समझ में नहीं आया।

पिता—तुमने जब टके के पाँच बेचे तो पैसे के २॥, २॥ पड़े। क्यों ?

रामू—जी।

पिता—पैसे के दो-दो वाले ३० नीबुओं को तुमने पैसे के २॥, २॥ करके बेचा। इससे जो नीबू १५ पैसों के बिकते वे १२ पैसों के बिके। यानी ३ पैसों का नुक़सान रहा।

रामू—बेशक।

पिता—और पैसे के तीन-तीन वाले ३० नीबू तुमने पैसे के २॥, २॥ की दर से बेचे। इससे जो नीबू १० पैसों के बिकते वे १२ पैसों के बिके जिससे तुम्हें २ पैसों का फ़ायदा हुआ।

रामू—(ख़ुश होकर) हाँ, हाँ।

गयादीन—मामला साफ़ हो गया। पहले तीन पैसों का नुक़सान फिर दो पैसों का फ़ायदा। इसी से एक पैसा कम पड़ा।

पिता—रामू, याद रक्खो—जब नीबू तादाद में बराबर हों और उनकी दर अलाहदा अलाहदा हो तब उन्हें मिलाकर न बेचना वना नुक़सान में रहोगे, जैसे इस मरतबा।

गयादीन - (रामू से) कान खोल के सुनता जा।

पिता—अगर नीबू तादाद में बराबर न हों बल्कि उनकी क़ीमतें बराबर हों तब उन्हें मिलाकर भी बेच सकते हो।

रामू—(ताज्जुब से) अच्छा।

गयादीन—ज़रा इस बात को और साफ़ कर दीजिए ताकि इस बेवक़ूफ़ की समझ में ठीक-ठीक बैठ जाय।

पिता—देखो, अगर तुम्हें पैसे के दो-दो वाले कुल २० नीबू दिये गये होते तो १० पैसें के होते, और अगर पैसे के तीन-तीन वाले ३० नीबू दिये गये होते तो वे भी १० पैसें के होते। उस हालत में नीबुओं की गिनती अलग-अलग होती यानी २०, ३०; और उनके दाम बराबर होते यानी १०, १० पैसे।

रामू हाँ, कुल ५० नीबू होते २० पैसें के।

पिता—ठीक। अब उन्हें टके के पाँच करके बेचो। कितने के हुए ?

रामू--२० पैसें के। अरे! ये तो हर हालत में २० पैसें के होते हैं।

पिता—देख लो। अब समझ गये ?

रामू—जी, बिल्कुल समझ गया। हिसाब के मुश्किल से समझ में आते हैं।

गयादीन—मगर पतङ्गों के पेंच आसानी से;

पिता--इमी का नाम है बचपन। सन्तू में ही पड़ा होगा। बड़ी देर हुई। चलूँ, देखूँ वह है

गयादीन—ज़रूर। मैं चलूँ आपके साथ ?

पिता—नहीं, नहीं। उसके लिए मैं अकेला (चलने लगता है)

गयादीन—माफ़ कीजिएगा। आपका बहुत समय हुआ।

पिता--नहीं, नहीं। (बाहर आ जाता है)

गयादीन—राम-राम।

रामू--राम-राम, बाबूजी।

मेघ-गीत

लेखक,
गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

गरज-गरजकर लरज-लरजकर हम नभ में छा जायेंगे।
हम निज तन से हम निज मन से काम विश्व के आयेंगे ॥
बरस-बरसकर विश्व सरसकर फूले नहीं समायेंगे।
सूखे उपवन सूखे तन-मन हम लहलहे बनायेंगे ॥
छोटे-बड़े सभी के मन में नव उमङ्ग सरसायेंगे।
सर-सरिता में कवि-कविता में अपना रूप दिखायेंगे ॥
हम जलचर में हम नभचर में आनँद-स्रोत बहायेंगे।
चातक-दुख हर तृषा शान्त कर सीपी में मुस्कायेंगे ॥
कदली में हम बदली में हम छवि भरकर हर्षायेंगे।
हमसे सज्जन हमसे दुर्जन सीख भिन्न ही पायेंगे ॥
दुर्जन पाता ज़हर बनाता हम न सर्प-मुख जायेंगे।
अत्याचारी पापी भारी हमें देख थर्रायेंगे ॥
जब प्रलयङ्कर महाभयङ्कर हम हुंकार सुनायेंगे ॥

चरण-चिह्न

चरण-चिह्न पर चलते जाते,
बड़े-बड़ों के पथ पर चलकर, हम अच्छे बालक कह
चले रामजी थे जिस पथ पर,
श्याम चले थे जिसके ऊपर,
हम उस पथ की रेणु चूमकर, मन में फूले नहीं स
राणा, शिवा चले जिस पथ पर,
लगता है वह कितना सुन्दर,
तिलक, गोखले, रानाडे के चरण-चिह्न हैं हमें
पद-चिह्नों से हम बल पाते,
तूफ़ानों में भी मुस्काते,
तारों से ये चमक-चमककर अन्धकार में राह दि
हाँ महत्त्व है इनमें रहता,
जो हर बालक से यह कहता—
इन्हीं चरण-चिह्नों पर चलकर, बालक भी महत्त्व है
चरण-चिह्न पर चलते जाते।

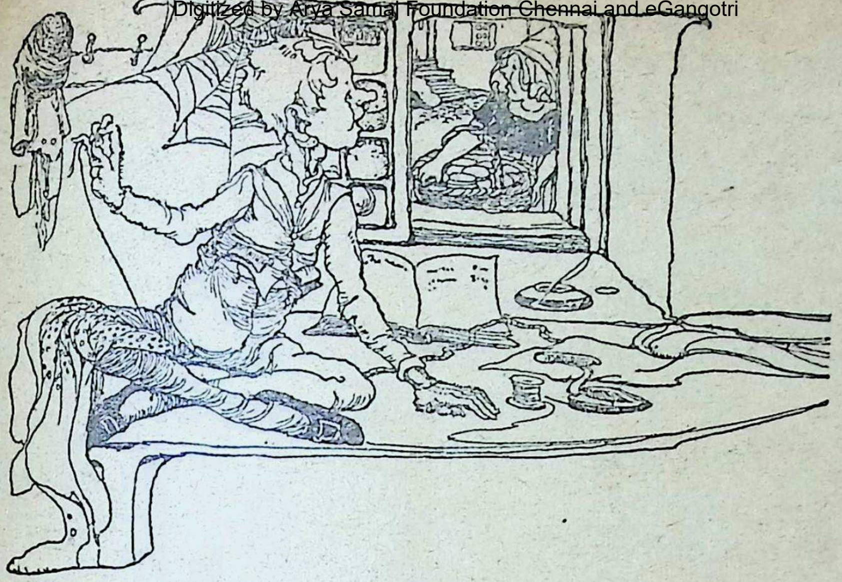

दर्ज़ी राजा कैसे हुआ ?

लेखक, श्रीयुत विश्वनाथप्रसाद सिंह

एक दिन एक दर्ज़ी अपनी दूकान में बैठा हुआ सी रहा था। उस दिन वह बहुत ही प्रसन्न और अपना काम बड़ी तेज़ी से कर रहा था। में एक बुढ़िया सामने से सड़क पर यह चिल्लाती निकली—"बढ़िया अचार बिक्री के लिए, या अचार बिक्री के लिए !"

दर्ज़ी ने बुढ़िया को बुलाकर उसके अचार ी तरह देखे। उसे वे अच्छे जँचे। अन्त में उसने ा—"सचमुच यह वस्तु ख़रीदने लायक़ है। तुम ों से मुझे चार अधपौवे तौल दो, अगर तुम ाई सेर दे दोगी तो भी ले लूँगा।" बेचने-ाी ने पहले समझा था कि अच्छा ग्राहक मिला, दर्ज़ी की बात सुनकर वह भुनभुनाती हुई अचार चली गई।

रोटी के साथ अचार लेकर दर्ज़ी खाने बैठा। ी बीच में अचार की महक पाकर मक्खियों ने ेरा और थोड़ी ही देर में मक्खियों का एक ा-सा बँध गया।

दर्ज़ी मक्खियों को उड़ाने लगा। परन्तु वे पहले से भी अधिक इकट्ठी होने लगीं। दर्ज़ी ने बहुत ही क्रुद्ध होकर एक कपड़े से झटका मारकर सात मक्खियों को मार गिराया। इसपर उसने स्वयं अपनी बहादुरी की तारीफ़ करते हुए कहा—"मैं कैसा बहादुर आदमी हूँ कि एक ही झपट्टे में इतने शिकार ! सारे शहर में आज मेरी इस वीरता का समाचार फैल जायगा।"

उसने कपड़े की पट्टी काटी और उसे सीकर उसपर बड़े मोटे-मोटे अक्षरों में यह लिखा—"एक ही वार में सात !"

दर्ज़ी ने तुरन्त संसार-यात्रा करने की तैयारी की। अब उस पट्टी को उसने अपनी कमर में बाँध लिया। चलते समय वह घर में यह देखने लगा कि वहाँ कोई ऐसी वस्तु तो नहीं जिसे अपने साथ ले जा सके। परन्तु उसे घर में बासी मक्खन की एक गोली के सिवा कुछ नहीं दिखाई दिया। उसे उसने जेब में रख लिया। घर से निकलते समय उसे एक झाड़ी में फँसी चिड़िया दिखाई पड़ी जिसे उसने पकड़ लिया और उसे भी जेब में डाल लिया।

उसके दरवाज़ेवाली सड़क एक पहाड़ी को जाती थी। उसपर चलते-चलते जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा तो उसे एक दानव मिला। दानव उसे बड़े ग़ौर से देख रहा था।

बहादुर दर्ज़ी ने बेधड़क बढ़कर उसे सलाम किया और कहा—"ऐ मेरे भाई, तुम इस चोटी पर बैठे हुए सारे संसार को अपने नीचे फैला देख रहे हो। मुझे इच्छा हुई कि मैं भी अपने भाग्य का निर्णय करूँ। क्या आप भी मेरे साथ चलना पसन्द करेंगे?"

यह सुनकर दानव ने छोटे दर्ज़ी से कहा—"तुम नाचीज़! हमारे साथ…………"

दर्ज़ी ने उत्तर दिया—"हाँ, आप ठीक कहते हैं, परन्तु यह आप पढ़ सकते हैं कि मैं कैसा व्यक्ति हूँ।" उसने अपनी कमर से पट्टी खोलकर दिखा दी जिसमें लिखा हुआ था—"एक ही वार में सात।" दानव को, यह समझकर कि ये सात अवश्य मनुष्य ही होंगे, अब उसके प्रति कुछ-कुछ श्रद्धा हुई। परन्तु इसपर भी उसने उसकी परीक्षा लेनी चाही। इसलिए उसने एक पत्थर का टुकड़ा हाथ में लिया और उसे ऐसा दबाया कि उसमें से पानी निकल आया।

अब दानव ने दर्ज़ी से भी ऐसा ही करने के लिए कहा। दर्ज़ी ने कहा कि यह तो बिलकुल बच्चों का खिलवाड़ है। फिर जेब से मक्खन की गोली निकालते हुए उसे इस प्रकार दबाया कि उसकी मलाई बाहर चारों ओर निकल आई।

यह देखकर दानव बड़े आश्चर्य्य में पड़ गया और कुछ कह न सका। अब उसने पत्थर का एक टुकड़ा उठाया और उसे ख़ूब ज़ोर से फेका। पत्थर बहुत दूर आसमान में चला गया। उसने दर्ज़ी को दिखाते हुए कहा—"देखा, कहाँ तक गया है। तुम भी ऐसा ही फेको।" दर्ज़ी ने जवाब दिया—"ख़ूब

ज़मीन पर गिर जायगा, लेकिन मैं ऐसा फे वह ज़मीन पर लौटेगा ही नहीं।" अब दर्ज़ी में हाथ डाला और चिड़िया को निकाल सफ़ाई से आसमान में फेका कि वह आज़ाद बड़ी तेज़ी से दानव के ढेले से भी ऊँची, हवा कर आँखों से ओझल हो गई।

अब दर्ज़ी ने अपने दानव मित्र से "भाई, यह खिलवाड़ कैसा पसन्द आया?" ने उत्तर दिया—"निस्सन्देह आप अच्छा ढेल हैं। आइए, अब हमें देखना है कि आप कितना ले जा सकते हैं।" इसके लिए वह दर्ज़ी को हुए बड़े वृक्ष के पास ले गया। कहा कि इस जङ्गल से बाहर ले चलने में मेरी मदद करो।

दर्ज़ी ने दानव से कहा—"आप तने कन्धे पर रख लें, और मैं टहनियों और को, जो सबसे भारी हिस्सा है, उठाऊँगा चलूँगा।" दानव ने तने को उठा लिया और उसके पीछे उछलकर एक डाल पर बैठ गया दानव को सारे पेड़ और दर्ज़ी को भी लेकर पड़ा। परन्तु दर्ज़ी ने अपनी चालाकी पर प्रसन्न हुए गाना शुरू किया, जिससे राक्षस को कि इतने बड़े पेड़ का ले चलना उसके लिए खेल है। किन्तु राक्षस थोड़ी ही दूर ले जा कुल थक गया। अब उसका आगे चलना गया। उसने चिल्लाकर ज़ोर से कहा—"मैं को गिरा दूँगा।" दर्ज़ी ने जल्दी से कूदकर तना पकड़ लिया मानो वही ले आ रहा था कहने लगा—"आपका डील-डौल इतना फिर भी यह पेड़ अकेले नहीं ले चल सकते।

अब वे साथ-साथ चलने लगे और में एक बेर के पेड़ के पास पहुँचे जो ख़ूब लदा हुआ था। दानव ने ऊपर की एक डा

—लो पकड़े रहो और बेर खाओ। परन्तु जैसे दानव ने डाली को छोड़ दिया, दर्ज़ी उसे रोक न ा। वह भी उसके साथ दूसरी ओर आ गिरा। से तनिक भी चोट न लगी। इसपर दानव ने —"इसका क्या मतलब? क्या तुममें इतनी भी नहीं कि एक टहनी को थामे रहो!" दर्ज़ी ने दिया—"क्या उसके लिए इस काम को बहुत समझते हो जिसने एक वार में सात मारे? सलिए उछल आया हूँ कि नीचे जङ्गल में शिकारी तीर चला रहे हैं। अच्छा, आप भी इतना ही तो मैं समझूँ।" दानव ने भी कोशिशप की रन्तु पार न कर सका और बीच ही में उलझ । इसलिए इस बाज़ी में भी वह दर्ज़ी से पीछे रहा।

इसपर दानव ने दर्ज़ी से कहा—"तुम बड़े ी हो, इसलिए हमारे घर चलो और एक रात साथ ठहरो।" दर्ज़ी तैयार हो गया और उसके उसकी गुफा में गया। वहाँ उसने देखा कि के दो और साथी हैं जो भुनी हुई एक-एक भेड़ हाथ में लिये हुए खा रहे थे। दानव ने जल्दी ज़ी को एक बहुत बड़ा बिस्तरा दिखा दिया कहा कि वहीं सो रहो। दर्ज़ी के लिए वह ौना बहुत बड़ा था। अतः वह उससे निकलकर कोने में जा रहा। परन्तु जब आधी रात हुई तो ने यह समझकर कि अब दर्ज़ी सो गया होगा, लोहे की बड़ी मोटी पाटी उठाई और ठीक बीच दर्ज़ी के बिछौने में दे मारा जिससे दर्ज़ी जाय। दूसरे दिन बड़े तड़के दानव अपनी गुफा बाहर चला गया। उसे दर्ज़ी का बिलकुल खयाल , परन्तु थोड़ी देर में दर्ज़ी बड़ी प्रसन्नता से के सामने आया। इस घटना से सभी राक्षस डर गये और इस डर से कि दर्ज़ी उन्हें मार , जङ्गल में भाग गये।

दर्ज़ी आगे बढ़ता गया। बहुत दूर पहुँचने के बाद वह एक राजा के महल के आँगन में पहुँचा। वह चलते-चलते थक गया था, इससे घास पर लेट गया और सो गया। जब वह सो रहा था, लोग उसके पास आये और उसकी पेटी में लिखा हुआ पढ़ा—"एक ही वार में सात।" वे कहने लगे—"यह वीर यहाँ क्या करेगा? यह अवश्य कोई बड़ा पराक्रमी योधा है।" वे लोग राजा के पास गये और कहने लगे कि अगर कहीं युद्ध छिड़ जाय तो यहाँ पर एक ऐसा आदमी है जिसे किसी को नहीं छोड़ना चाहिए। राजा ने अपने मन्त्रियों से राय ली और अपने एक दूत को उसे बुलाने के लिए भेज दिया। दूत चल पड़ा और वहाँ पहुँचकर उसके उठने की बाट देखता रहा। जब दर्ज़ी उठा तो दूत ने उससे राजा का सन्देश कह सुनाया। दर्ज़ी राज़ी हो गया और बोला—"मैं ठीक इसी कार्य के लिए आया हूँ। मुझे राजा साहब की सेवा स्वीकार है।"

थोड़े ही दिनों में राजा के दरबारी उससे अप्रसन्न हो गये। वे सोचने लगे कि यदि कहीं लड़ाई छिड़ गई तो एक वार में सात तो यही मार लेगा हम लोगों के लिए तो मारने को कुछ बचेगा ही नहीं इस बात पर सब दरबारियों ने मिलकर इस्तीफ़ा दे देने की सोची। सब मिलकर राजा के पास गये और कहने लगे—"हम लोग ऐसे आदमी के साथ नहीं रहना चाहते जो एक ही वार में सात मारता है।" इस समाचार से राजा बहुत दुःखी हुआ। उसने कहा—"मैंने कभी दर्ज़ी को देखा नहीं है।" राजा बड़ी प्रसन्नता से उसे निकाल देना चाहता था। परन्तु वह उससे डरता था कि कहीं दर्ज़ी मुझे तथा मेरी प्रजा को मार न डाले और स्वयं राजा बन जाय। बहुत दिनों तक वह इसपर विचार करता रहा। अन्त में उसने दर्ज़ी को बुलवा भेजा और कहा—"हमारे राज्य में एक बड़ा जङ्गल है। उस जङ्गल में दो

दानव रहते हैं। अगर तुम उनको मार डालोगे तो हम तुम्हें अपना आधा राज्य देकर अपनी राजकुमारी का ब्याह तुम्हारे साथ कर देंगे। तुम्हारी मदद के लिए तुम्हारे साथ सैकड़ों वीर योधा जायँगे।"

अब दर्ज़ी सौ योधाओं के साथ जङ्गल की ओर चल पड़ा और जैसे ही जङ्गल की सीमा के पास पहुँचा, उसने सवारों को यह कहकर वहीं छोड़ दिया कि मैं उन राक्षसों से अकेला मिलूँगा।

दर्ज़ी अब जङ्गल में घुस पड़ा और बड़े ग़ौर से इधर-उधर देखता रहा। अन्त में उसे एक घने जङ्गल में एक बड़े वृक्ष के नीचे दोनों राक्षस सोते मिले। दर्ज़ी ने अपनी जेबों में कुछ पत्थर के टुकड़े भरे। फिर वह उन्हें लेकर उस पेड़ पर चुपके से चढ़ गया। वह एक डाली से चिपटकर इस प्रकार बैठा कि सोनेवाले राक्षसों के ठीक ऊपर था। वहाँ से अपनी जेब से ढेलों को निकालकर वह एक राक्षस के सीने पर गिराने लगा। पहले तो दानव नहीं जगा, परन्तु कुछ देर में उसकी नींद टूटी और वह अपने साथी को धक्का देते हुए कहने लगा—"तुम मुझे क्यों मार रहे हो?"

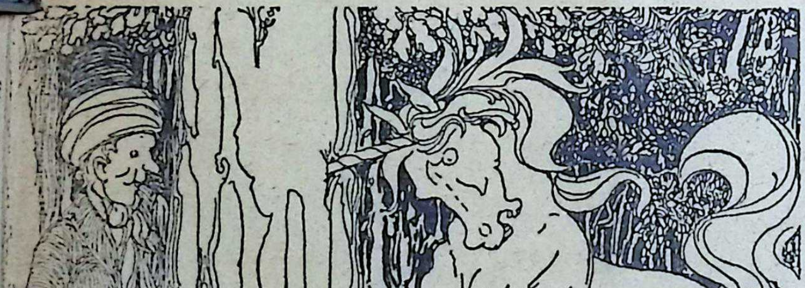

घोड़े ने अपना सींग पेड़ के तने में धँसा दिया।

दूसरे ने जवाब दिया—"तुम स्वप्न देख रहे हो। मैंने तुम्हें नहीं मारा।" अब दोनों फिर सोने लगे। इतने में दर्ज़ी ने दूसरे दानव पर पत्थर शुरू किया। इसपर दूसरा राक्षस चिल्लाक लगा—"यह क्या कर रहे हो! तुम हमें क रहे हो?" "मैंने तुम्हें नहीं मारा; तुम अवश्य देख रहे होगे।" पहले राक्षस ने जवाब दि परन्तु थके होने के कारण थोड़ी देर में दोनों सो गये। अब दर्ज़ी ने एक पत्थर पूरी ताक़त ल ऐसा फेंका कि पहले दानव की छाती में बड़े लगा। वह तुरन्त चिल्ला पड़ा—"यह बहुत बु है।" वह पागल की भाँति उछलकर दूसरे दान टूट पड़ा। वह क्रोधित था ही, दोनों में घमासान होने लगा। दोनों पेड़ उखाड़-उखाड़कर एक को मारने लगे। अन्त में दोनों लड़ते-लड़ते ज़मीन पर गिर पड़े।

अब दर्ज़ी झटपट पेड़ पर से उतर आ उसने अपनी तलवार से दोनों राक्षसों की छा भेद दिया। फिर वह शीघ्रता से अपने साथि पास पहुँचा और कहने लगा—"कार्य सम गया। मैंने दोनों को मार डाला, परन्तु कार्य ब कठिन था; क्योंकि वे अपनी रक्षा के लि उखाड़ लेते थे। फिर भी यह स आदमी के लिए बेकार था जो ए में सात मारे।"

"क्या तुम्हें चोट नहीं आ एक ने पूछा।

"इसकी कहाँ आशा थी! बाल भी बाँका नहीं हो स दर्ज़ी ने जवाब दिया। सवा तब तक विश्वास नहीं हुआ ज वे जङ्गल में जाकर मरे हुए रा और उखड़े हुए पेड़ों को देख नहीं

अब दर्ज़ी ने आकर राजा साहब से वा करने को कहा। परन्तु राजा साहब उससे इ

के लिए कोई दूसरा उपाय सोचने लगे। ने कहा—आधा राज्य और मेरी लड़की के ारी बनने के पहले तुम्हें एक और कार्य करना इस जङ्गल में एक सींगवाला घोड़ा रहता है। ड़ा ज़बर्दस्त है। उसे पकड़ लाओ। दर्ज़ी ने कहा—"मैं जङ्गली घोड़े से नहीं डरता। ार में सात—यह मेरा ध्येय है।" वह हाथ में ाड़ी और रस्सी लेकर जङ्गल की ओर चल । उसे देर तक जङ्गल में खोजना नहीं पड़ा। ी घोड़ा उसे मिल गया और उसकी ओर बड़ी से झपटा। दर्ज़ी ने जब देखा कि वह समीप या है तो वह फ़ौरन् एक पेड़ के पीछे हो गया। का सींग पेड़ में फँस गया और उसका निकलना कठिन हो गया। अब क्या था, दर्ज़ी ने चट-उसको गले में रस्सी डालकर, बाँध लिया और ड़ी से उसका सींग काट डाला। फिर उसे पकड़-राजा के सामने ला खड़ा किया।

परन्तु राजा इतने पर भी अपनी बात पूरी करने को तैयार नहीं हुआ। उसने कहा कि शादी से पहले तुम उस जङ्गली सूअर को पकड़ लाओ जो आजकल बड़ा उपद्रव मचा रहा है। दर्ज़ी ने कहा कि यह तो एक बच्चे का खिलवाड़ है। इस बार भी उसने शिकारियों को दूर ही छोड़ दिया। सूअर देखते ही उसपर झपटा। दर्ज़ी भागकर एक मकान में, जो मार्ग में था, घुस गया और उसके पीछे-पीछे सूअर भी। परन्तु दर्ज़ी एक खिड़की से निकल भागा और जब सूअर उधर से निकलने लगा तो खिड़की बन्द हो गई। वह भीतर क़ैद हो गया। दर्ज़ी ने अब शिकारियों को उसे देखने के लिए पुकारा और स्वयं राजा के यहाँ गया।

अब राजा अपना वादा पूरा करने के लिए लाचार हो गया। बड़ी सज-धज के साथ दर्ज़ी का विवाह राजकुमारी से हो गया। वह दर्ज़ी से राजा बन गया।

पठानों का कुछ हाल

लेखक, श्रीयुत महेशप्रसाद, मौलवी आलिम फ़ाज़िल

सीमाप्रान्त का पठान वज़न में ३ मन से कम ीं होता। बच्चे पहले तो दुबले-पतले होते हैं मानो ार हों; किन्तु ज्यों-ज्यों बढ़ते जाते हैं, हट्टे-कट्टे जाते हैं। बहुत-से पठान रोज़ी के लिए सिन्ध ेरा ग़ाज़ी ख़ाँ की ओर चले आते हैं। ये लोग ों मील का सफ़र पैदल करते हैं। गर्मी इनको न नहीं होती। जाड़े में आराम पाते हैं। बर्फ़ पर उसमें ख़ूब खेलते-कूदते हैं। ये लोग नार ज़मीन पर ही सोते हैं—तख़्त या चारपाई ोने की इनको आदत नहीं होती।

पठानों में लड़कियों का बड़ा आदर है। विवा के समय अच्छी ख़ासी रक़म मिलने से मा-बा इनका पालन सावधानी से करते हैं। पठानों में पद और तलाक़ (स्त्री को छोड़ देने) का चलन है। बु आचरण के स्त्री-पुरुषों से ये कठोर बर्ताव करते हैं जन्त्र-मन्त्र को भी ये लोग मानते हैं। पीरों औ मुल्लाओं की बड़ी क़द्र करते हैं। ये लोग ताज़िया दारी नहीं करते। नमाज़ के तो इतने पाबन्द होते कि किसी के साथ झगड़ा हो रहा हो और नमाज़ क वक़्त हो जाय तो तुरन्त नमाज़ पढ़ने लगते हैं।

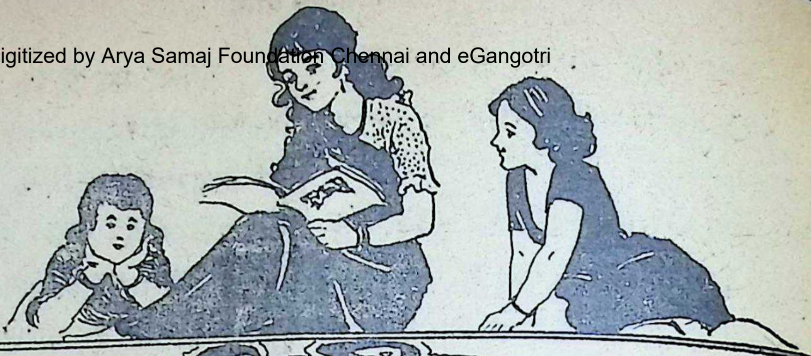

सहेली

बिनबिन बौना

लेखक, श्रीयुत एम० एल० पांडे

किसी समय भोगाँव में एक मोटा बौना रहता था। उसका नाम बिनबिन था। वह बड़ा लड़ाकू और नटखट था। सदा अपने पड़ोसियों से मार-पीट किया करता था। गाँववाले उससे बहुत डरते थे।

बिनबिन के पड़ोस में एक नन्हीं परी रहती थी। उसका नाम चमेली था। पड़ोस में बिनबिन का रहना उसे अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि वह अपनी खिड़की से चमेली के घर में कूड़ा-करकट फेंक दिया करता था। बेचारी चमेली को दिन भर अपना घर साफ़ करते बीतता। पर बिनबिन से कुछ कहने की उसे हिम्मत न होती थी।

दूसरी बात यह थी कि बिनबिन इतने ज़ोर से मोटी आवाज़ में गाना गाता कि सुननेवालों के कान फट जाते। चमेली को उसका गाना बहुत बुरा लगता। जब वह गाने लगता तो चमेली अपनी खिड़की तुरन्त बन्द कर लेती। इससे बिनबिन को बड़ा गुस्सा आता। वह और भी ज़ोर से गाने लगता। चमेली कुछ न बोलती, क्योंकि बिनबिन से झगड़ा न करना चाहती थी।

चमेली जब बहुत परेशान हो गई तब उसने एक तरकीब सोची। उसने सोचा कि जिस दिन बिनबिन घर से बाहर घूमने चला जायगा उस एक चाल चलूँगी।

एक दिन मौसम बहुत अच्छा था। बि घूमने के लिए घर से बाहर निकला। चमे उसके पीछे हो ली। बिनबिन एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने जेब से एक पुड़िया निका उसमें समोसे और दालमोट थी। वह उन्हें नि कर खाने लगा।

वहाँ से थोड़ी दूर पर दूसरे पेड़ के नीचे भी जाकर छिप रही और एकाएक बड़े ज़ो चिल्लाने लगी—सहायता करो, सहायता दौड़ो, भारी आँधी आ रही है। मदद, मदद।

फिर चमेली उस पेड़ के नीचे से नि बिनबिन की ओर भागी, मानों आँधी उसके पी आ रही हो। बिनबिन के पास पहुँचकर व पेड़ से लिपटकर चिल्लाई—मदद! मदद! तो कैसी भयङ्कर आँधी आ रही है। मुझे तो उड़ा ही दिया होता।

बिनबिन इतना घबड़ा गया कि उसके हा छूटकर समोसे नीचे गिर पड़े। बहुत सहमकर चमेली की ओर देखा। उसका मुँह-खुला का रह गया। एक बार गाँव में भयङ्कर आँधी आई

के सैकड़ों छप्पर और कितनी ही झोपड़ियाँ गई थीं। तभी से बिनबिन आँधी से बहुत था।

"ओहो! तुम हो बिनबिन!" चमेली ने मानों उसने उसे पहले पहचाना ही नहीं था। भी पेड़ से लिपट जाओ, जैसे मैं लिपटी हूँ। करो। कहीं आँधी तुम्हें उड़ा न ले जाय।"

बिनबिन उछल पड़ा मानों आँधी आ ही गई उसी समय हवा चली और सूखी पत्तियाँ लगीं। बिनबिन डर के मारे चिल्ला उठा। वह सचमुच आँधी आ रही है। चिल्लाकर से और ज़ोरों से चिपक गया।

"हाय! बिनबिन! कितने दुःख की बात है। कितने मोटे हो। आँधी तो तुमको बड़ी जल्दी जायगी। यदि तुम मेरी तरह नन्हें से होते बात न थी; क्योंकि तब तो आँधी तुमको भी न पाती।"

"क्य, क्य, क्या, तुम ऐ-ऐ-ऐसा समझती हो?" बिनबिन ने काँपते हुए पूछा। उसके दाँत ऐसे थे कि वह ठीक-ठीक बात भी नहीं कर सकता। "हाय! अब मैं क्या करूँ। मैं अधिक देर इस पेड़ को पकड़े नहीं रह सकता।"

"मेरे पास रस्सी का टुकड़ा है।" चमेली ने से कहा—"क्या मैं तुमको पेड़ से जकड़कर ? तब आँधी चाहे जितनी तेज़ बहे, तुमको नहीं ले जा सकेगी।"

"अहा तुम तो बड़ी अच्छी हो। कृपा कर मुझे से बाँध दो।" बिनबिन ने नम्रता से कहा।

चमेली दौड़कर बिनबिन के पास पहुँच गई। हवा चली और सूखी पत्तियाँ उड़ने लगीं। बिन- डरकर चिल्लाया—"जल्दी करो। मुझे बाँध आँधी आ ही रही है।"

चमेली मन ही मन गुनगुनाई। जल्दी से उसने बिनबिन को पेड़ से बाँध दिया। इतनी मज़बूती से उसे जकड़कर बाँधा कि हाथी भी होता तो भाग न सकता।

"अहा! कितनी अच्छी तरह तुम बँध गये हो!" चमेली ने नाचते हुए कहा।

"आओ, तुम भी पेड़ को पकड़ लो।" बिनबिन ने कहा—"नहीं तो आँधी तुम्हें उड़ा ले जायगी।"

"अजी मुझे आँधी का डर नहीं। वह मेरा क्या कर लेगी?" बिनबिन के देखते ही देखते चमेली वहाँ से चल दी। बिनबिन को बड़ा आश्चर्य हुआ।

किन्तु अधिक देर तक बिनबिन अकेले नहीं रहा। थोड़ी देर बाद गाँव के बच्चों ने आकर उसको घेर लिया। चमेली ही उन सबको बुला लाई थी।

"अरे तुमने बिनबिन को कैसे बाँधा! हमें भी तो बताओ।" बच्चों ने ख़ुशी के मारे चिल्लाकर चमेली से पूछा।

"क्या तुम उससे लड़ी थीं चमेली? तुम बड़ी चतुर हो। वह कितना मोटा और कितना भारी है! तुमने उसे बाँध दिया! कितने आश्चर्य की बात है। हम लोगों को भी तो बताओ।"

"ऐसी कोई बात नहीं है" चमेली ने अकड़ कर कहा—"कोई विशेष बात नहीं है। मैंने सोचा कि अब समय आ गया है कि बिनबिन को दण् दिया जाय। इसी लिए मैंने उसे बाँध दिया वि तुम लोग भी देख लो।"

चमेली जब बातें कर रही थी, तब कहीं तुमने बिनबिन का मुख देखा होता। वह बिल्कुल चुप था उसकी समझ में न आ रहा था कि वह कहे तं क्या कहे।

"मैं इसलिए ख़ुशी से बँधा हूँ कि एक भारं आँधी आनेवाली है।" अन्त में उसने कहा—"औ कोई कारण नहीं है।"

"हा! हा! ही! ही!" सब बच्चे हँसने लगे। "कैसा मज़ा है। सचमुच आँधी ही तो आनेवाली है। अहा हा! कैसे मज़े की बात है, दोस्तो।"

"अहा हा!" चमेली सबसे ज़ोर से हँसी।

बिनबिन ने छूटने की बहुत कोशिश की। चमेली ने उसे मज़बूती से बाँध रक्खा था। इसलिए वह किसी प्रकार अपने को छुड़ा नहीं सका।

किन्तु वह छूटे कैसे? किसी ने उसे खोलना नहीं चाहा। जब रात हुई और सब हँसते-हँसते थक गये तो अपने घर चले गये। चमेली अकेली वहीं रह गई।

"कल फिर वे तुम पर हँसने आयँगे।" चमेली ने कहा। "कैसे दुःख की बात है। तुम सदा सबसे लड़ते रहे। हमेशा तुमने सबको गालियाँ दीं। तुम कितने घमण्डी हो बिनबिन। यदि तुम ऐसे न होते तो किसी न किसी ने तुम्हें छुड़ा दिया होता।"

"तुम्हीं मुझे खोल दो न।" बिनबिन ने बड़ी खुशामद से कहा।

"हूँ! तुम्हें मैं खोल दूँ कि तुम मुझे दौड़ाओ और मारो। है न यही बात?" चमेली ने कहा—"तुम ऐसी आशा छोड़ दो। मैं मूर्ख नहीं हूँ जो ऐसा करूँ।"

तब बिनबिन को अपने सङ्कट का पता चला। 'नहीं मालूम कब तक इसी तरह बँधा रहना पड़े। अब उसे नन्ही-सी किन्तु चतुर परी से हार मान लेनी चाहिए।' बिनबिन ने सोचा।

"मेरी चमेली!" बिनबिन ने कहा—
खोल दो। मैं कभी तुम्हें तङ्ग नहीं करूँगा।
और घमण्डी था, किन्तु अब कभी भूल नहीं करूँ

"यदि मैं तुमको खोल दूँ तो क्या तु
छोड़कर चले जाओगे?" चमेली ने पूछा।

"हाँ-हाँ।" बिनबिन ने तुरन्त कहा।

उसने भी सोचा कि गाँववालों के सामने
अपमान हुआ है। अब वहाँ क्या रहूँ? वे स
मुझ पर हँसेंगे। उसने कहा—"मुझे इस गाँ
चला ही जाना चाहिए। अब फिर यहाँ नहीं आऊँ

चमेली यही चाहती थी। जल्दी से दौ
उसने बिनबिन को खोल दिया। बौने ने अँगड़ाई
वह चुपचाप वहाँ से अपने घर चला गया।
रात वह अपना सामान लेकर घर से निकल गया

चमेली उसे जाते देखती रही।
पड़ोसी से उसका पिण्ड छूट गया। अब कभी
घर में कूड़ा नहीं गिरावेगा। अब कभी उसके गा
चिल्लाहट नहीं सुननी पड़ेगी।

"बिनबिन कहाँ चला गया?" दूसरे गाँववालों ने पूछा।

"अरे मैंने तो उसे खोल दिया था।"
ने कहा—"मैंने उससे कह दिया था कि
सामान लेकर यहाँ से चला जा। वह चला गया

"वाह! वाह! चमेली तुम बड़ी चतुर
एक बच्चे ने कहा—"हम समझते हैं अब वह
नहीं आवेगा।"

युद्ध का खर्च

वाशिंगटन की ख़बर है—जनवरी सन् १९४५ तक मित्र-राष्ट्रों का ५ सौ अरब डालर युद्ध-कार्य में ख़र्च हुआ है। इसमें से आधा अमरीका ने ख़र्च किया है। रूस ने सन् १९४० के बाद से अब तक १०० अरब ख़र्च किया और ब्रिटेन ने १९३९ से अभी तक [illegible] अरब डालर ख़र्च किया। अमरीका ने ब्रिटेन और रूस से २३४ अरब ५०
अधिक ख़र्च किये। जर्मनी का युद्ध-व्यय १३० अ
आँका गया है। जापान का ख़र्च अलग है। (१ डा
३ रुपये २ आने)।

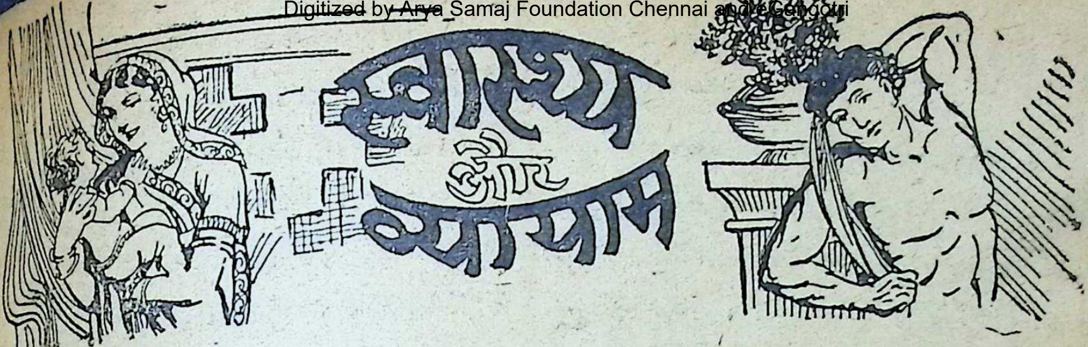

रघु स्कूल देर से पहुँचा

लेखक, श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

घर से रघु का स्कूल काफ़ी दूर है। वह रोज़ पैदल पढ़ने जाता है। उसका घर चौक में है। से थोड़ी दूर पर शहर का घण्टाघर है जिसमें सी घड़ी है। रघु रोज़ इसी घड़ी में समय देख स्कूल जाता था। समय का वह इतना पाबन्द था किसी ने उसे देर से स्कूल पहुँचते नहीं देखा।

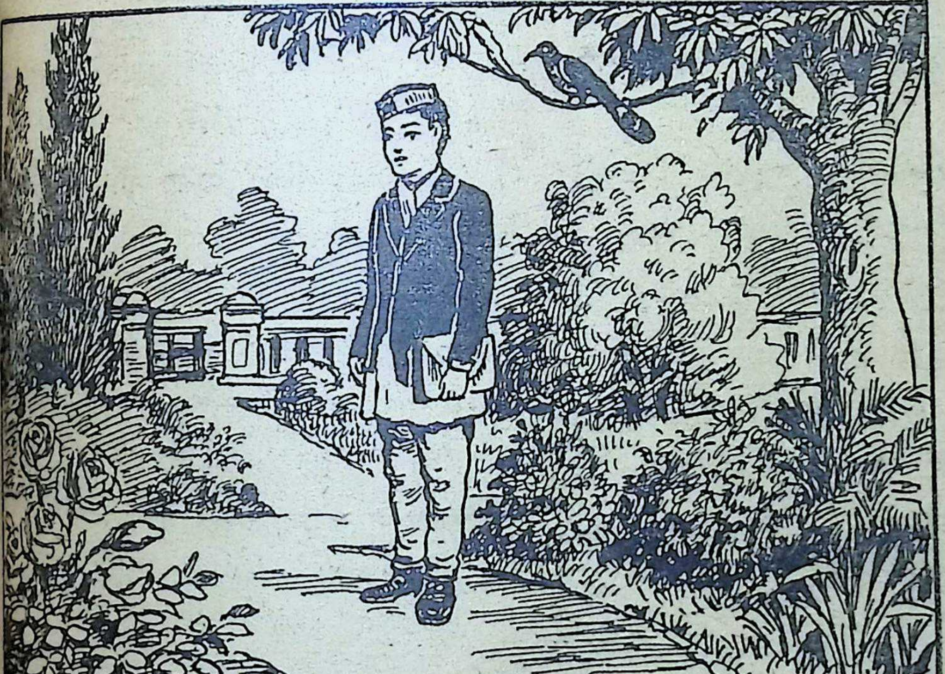

रघु घर से स्कूल के लिए रवाना हुआ।

एक दिन जब उसने स्कूल जाने के लिए घण्टाघर घड़ी की ओर देखा तो उसे लगा कि घड़ी की और गिनतियाँ उसे साफ नहीं दिखाई पड़ रही हैं।

'वर्षों से घड़ी की सफ़ाई नहीं की गई इसलिए इसका चेहरा गन्दा हो गया है। इसका चेहरा साफ़ होना ज़रूरी है।' रघु ने सोचा और स्कूल को चल पड़ा।

रघु अपने दर्जे में हिसाब में बहुत तेज़ था परन्तु अब उसके सब सवाल सही न होते। कभी-कभी त वह ऐसे सवालों मे भी ग़लती कर जात जिसे दर्जे के औ सब लड़के सही-सह कर लेते थे।

एक दिन मास्ट साहब ने उससे कहा- "रघु, तुम बोर्ड प लिखे गये सवालों क अपनी कापी पर ठीक ठीक नहीं उतारते इस लिए तुम उन्हें ठी हल नहीं कर पाते बोर्ड से सवालों व ठीक-ठीक उतारा कर

रघु उस दिन से बहुत सावधानी से सवाल को कापी पर उतारता पर रोज़ उसके सवालों व ग़लतियाँ बढ़ती जातीं।

अपने स्कूल में वह पढ़ने में ही अच्छा नहीं था बल्कि खेलने में भी अच्छा था। क्रिकेट खेलनेवाले लड़कों में वह सबसे अच्छा समझा जाता था परन्तु अब जब वह खेलता तो बहुधा गेंद को बल्ले से मार न पाता। इससे लड़कों ने उसे टीम से निकाल दिया।

रघु को इससे बहुत दुःख हुआ पर वह करता ही क्या। एक दिन उसने सोचा कि मैं जितनी ही कोशिश करता हूँ उतना ही चूक जाता हूँ। आख़िर इसका कारण क्या है। दूसरे दिन सुबह उसने स्कूल जाने के लिए घड़ी देखी तो उसे लगा कि अभी बहुत समय है। इसलिए वह रास्ते में बाज़ीगर का तमाशा देखने लगा। लेकिन जब स्कूल पहुँचा तो बहुत देर हो गई थी।

उसने सोचा—घण्टाघर की घड़ी बहुत ग़लत है; या शायद इतनी मैली हो गई है कि नीचे से कुछ साफ़ दिखाई नहीं देता। मास्टर साहब ने रघु को अपने पास बुलाया और अपनी मेज़ के पास बैठने को जगह देकर कहा—"रघु, तुम आज बहुत देर से आये। ख़ैर, अब देर न करना। बोर्ड पर से सवाल उतार कर जल्द हल करो।"

उस दिन रघु के सब सवाल सही हुए। साहब ने उसकी कापी लौटाते हुए कहा—"र पड़ता है तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो गई हैं जिस दूर की चीज़ ठीक-ठीक नहीं देख पाते। अ पहली लाइन में बैठे थे इसलिए तुम्हारे सब ठीक हो गये। तुम अपने पिता से कहो। वे आँख के डाक्टर के पास ले जायँ।"

रघु ने घर आकर पिता से सब बातें पिता उसे एक डाक्टर के पास ले गये। डाक् उसकी आँखों की जाँच कर कहा—"मैं तुम्हें दूँगा। उसे लगाया करो।"

रघु को चश्मा पहनना एक उलझन परन्तु जब डाक्टर ने उसे चश्मा दिया तो उसके ही उसे लगा जैसे किसी ने उसकी आँखों पर कर दिया हो। उसे बहुत-सी चीज़ें दिखाई पड़ने अब उसे घण्टाघर की घड़ी मैली न मालूम थी। बोर्ड पर लिखे सवालों को भी वह अच्छी पढ़ लेता था। उसके सवाल भी अब ग़लत न थे। क्रिकेट भी अब वह अच्छा खेलने लगा।

प्यासा कौआ

लेखक, श्रीयुत 'अशोक', बी० ए०

एक प्यास का मारा कौआ,
काँव-काँव कर चिल्लाया।
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर,
कहीं न जल उसने पाया॥
एक जगह पर घड़ा रखा था,
कुछ जल था नीचे जिसमें।
चोंच डुबाई जब कौए ने,
पर न चोंच डूबी उसमें॥
अगर घड़े को लुढ़काता तो—
पानी कैसे मिल पाता!
घड़ा फोड़कर भी कौआ फिर
कैसे प्यास बुझा पाता?

बहुत देर तक रहा सोचता,
काँव-काँव कर चिल्लाया।
उड़-उड़ दबा चोंच में अपनी
कङ्कड़ बहुत बीन लाया॥
एक-एक कर डाला उसमें,
पानी ऊपर उठ आया।
जी भर प्यास बुझाकर अपनी,
चला गया अति सुख पाया॥
कठिन काम कोशिश करने से,
सहज सरल हो जाते हैं।
जो 'सागर' में डुबकी लेते,
वे ही मोती पाते हैं॥

बाल-मन्दिर में बापू

लेखक, श्रीयुत उमाशङ्कर शुक्ल

च्चो! तुमने अख़बारों में पढ़ा ही होगा कि पिछले जब महात्मा गान्धी ने ४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर ४ तक विश्राम लिया था तब उन्होंने हर तरह नसिक कार्य करना बन्द कर दिया था। यही नहीं उन्होंने किसी भी बाहरी व्यक्ति से बातचीत तक बन्द कर दिया था। उन दिनों वे न तो अख़बार थे और न कोई ऐसा कार्य रते थे जिससे उनका थके। इसी बीच वे वर्धा मने गये थे और चार रहे भी थे। तुम जानते कि वर्धा कितना महत्त्व-स्थान है और हो भी क्यों हाँ पर महात्मा गान्धी हैं। वहाँ पर कई संस्थायें इस सम्बन्ध में हम आगे गे। आज इस लेख में हम गे कि महात्मा गान्धी को से कितना प्रेम है कि नकी संस्था भी देखने हैं।

र्धा में एक 'बाल-मन्दिर' इसका सञ्चालन महिला-करता है। इसका उद्घा-तीन वर्ष पहले तुम्हारे नेता पं० जवाहरलालजी ने किया था। इसमें ७० बच्चे-बच्चियाँ हैं। ३६ तो बच्चे हैं ३४ बच्चियाँ। उमर छोटी है। यही क़रीब वर्ष से लेकर पाँच वर्ष । पाँच साल के ऊपर के लिये ही नहीं जाते। तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि इतने छोटे-छोटे बच्चे क्या पढ़ते होंगे। पर वे हैं। पढ़ने से मतलब तुम समझते होगे क ख ग घ होंगे, पर यह बात नहीं। वे वहाँ पर तरह-तरह के सीखते हैं। नाचना सीखते हैं। बगीचा लगाना ते हैं। सच बोलना सीखते हैं। आपस में प्रेम करना सीखते हैं। अच्छी आदतें सीखते हैं। गाना सीखते हैं। उन्हें चीज़ों के नाम सिखाये जाते हैं। उन्हें बड़ा मज़ा आता है 'बाल-मन्दिर' में। उन्हें मास्टर नहीं सिखाते। उन्हें पढ़ाने के लिए कुशल मातायें रहती हैं। 'मांटेसरी' पद्धति द्वारा उन्हें सिखाया जाता है।

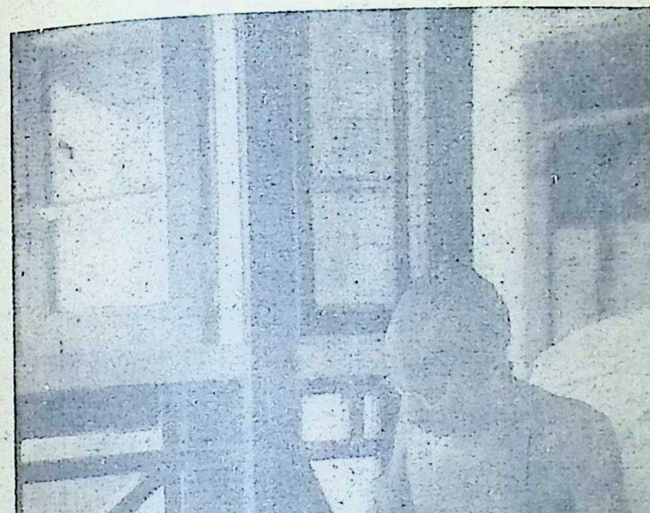

महात्मा गान्धी

हाँ, तो महात्मा गान्धी 'बाल-मन्दिर' देखने गये। उनके साथ कामर्स कालेज वर्धा के प्रिन्सिपल श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल, स्व० जमनालालजी बजाज़ की अस्सी वर्ष की माता तथा उनकी पत्नी श्रीमती जानकी देवी बजाज़ भी थीं। बापू इससे पहले 'बाल-मन्दिर' नहीं गये थे

छोटे-छोटे बच्चों को बत दिया गया था कि आज महात्म गान्धी आयँगे। फिर क्या था बच्चे उछलने लगे। आपस में कहने लगे—"आद गान्ध बाबा आयँगे—आद गान्ध बाबा आयँगे।"

गान्धीजी पहुँच गये बाल मन्दिर। बच्चों ने तुतला हुए कहा—"नमथ्थे बापूजी—नमथ्थे बापूजी।"

यह सुनकर गान्धीजी हँस लग। उनके बैठने के लि बाल-मन्दिर में मञ्च तैयार क दिया गया था। महात्माज उस पर बैठ गये। वे सफे चादर ओढ़े और चश्मा चढ़ा हुए थे। उनकी बग़ल में स्व जमनालालजी की बूढ़ी माँ बै गईं। एक बच्ची ने बापू तिलक लगाया तथा सूत की माला पहनाई।

बच्चों ने अपना कार्यक्रम शुरू किया। वर्धा में मरा जाननेवाले अधिक रहते हैं इसलिए अधिकांश बच्चे मरा भाषा ही बोलते हैं। कुछ हिन्दी बोलनेवाले भी हैं।। मरा जाननेवाले बच्चों को हिन्दी बोलना भी सिखाया जाता बच्चों ने एक गाना गाया। हारमोनियम के सुर में

मिलाते हुए—'चला सुटी झाली' (चलो छुट्टी हो गई)। मराठी गाना गाया। गान्धीजी मराठी भी समझ लेते हैं। वे प्रसन्न हुए।

लड़कों ने फिर एक छोटा-सा प्रहसन उन्दिर मामा यानी 'चूहा मामा' खेला। बच्चे बेखटके कार्य कर रहे थे।

महात्माजी को फिर बाल-मन्दिर का निरीक्षण करवाया गया। हर चीज़ दिखाई गई। बच्चों का काम देखकर महात्माजी बहुत प्रसन्न हुए।

आज हमारे देश में ऐसे ही बाल मन्दिरों की ज़रूरत है। बच्चे बाल-मन्दिर में जाकर सुधरते हैं, बिगड़ते नहीं। बच्चे ही हमारे देश के भावी नागरिक हैं।

नेहरूजी ने इस मन्दिर के उद्घाटन के समय कि बच्चो, आज इस अवसर पर बड़े आदमी नहीं तो मैं तुम्हारे साथ खेलता और नाचता। अवसर पर नेहरूजी ने एक आम का पौधा भी ल जिसकी सेवा बच्चे आजकल सींच-सींचकर कर रहे

महात्माजी जब चलने लगे तब तीन-तीन और चार साल के छोटे-छोटे बच्चों ने कहा—बापू आ आओगे ? ज़रूर आना। बापू दस-पाँच क़दम ही ग कि छोटे-छोटे बच्चों तथा बच्चियों ने एक स्वर में 'गान्धी दी की दै'। इन शब्दों में कितनी मिठास यह वही जानता है जिसके पास बाल-हृदय है।

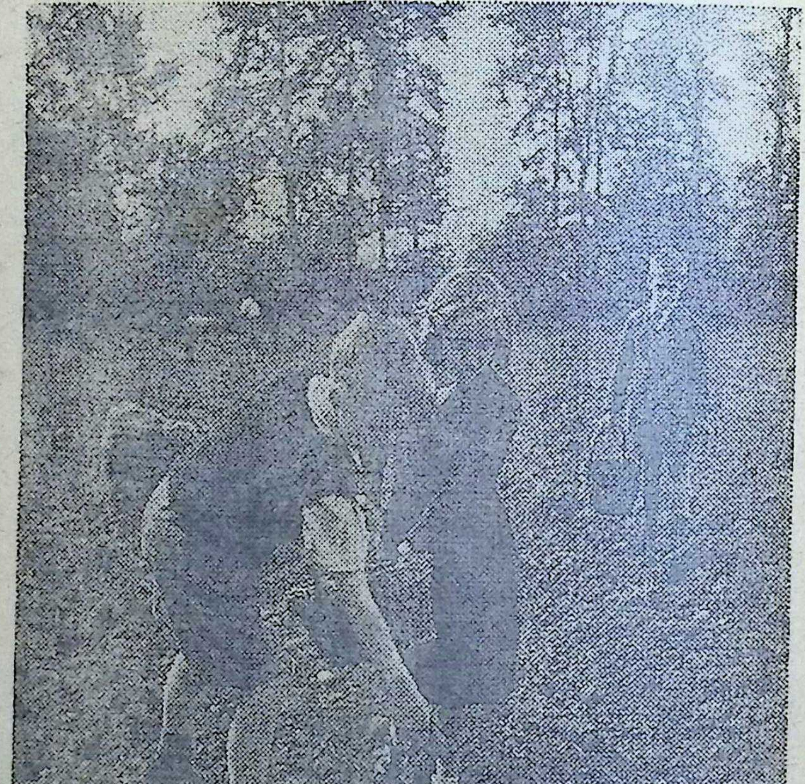

स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे छुट्टी के दिनों में खेतों में आलू बोने में किसान की सहायता कर रहे हैं

ब्रिटेन के बच्चे

लेखक, श्रीयुत सत्यवीर

आओ, आज तुम्हें ब्रिटेन के बाल-सखाओं के में कुछ बतावें। तुमने अपने शहर में बहुधा बच्चों को देखा होगा। यहाँ तुम्हें उस के बच्चों के में बतायेंगे जहाँ कार के बहुत- रहते हैं। ड़ाई शुरू होने इँगलैंड के पुरुष के कामों में गये। बहुत-से ना में भरती ये और बहुत- सेना के लिए तैयार करने- कारखानों में करने लगे। भी काम करने- की कमी पूरी सकी। तुम न कर सकते कि इतनी बड़ी लड़ने के लिए कितने अधिक आदमियों की हो सकती है। इसका नतीजा यह हुआ कि बहुत-सी औरतों को भी मर्दों के साथ कारखानों में काम करने की ज़रूरत पड़ी। आजकल बहुत-सी स्त्रियाँ कारखानों में काम करती हैं।

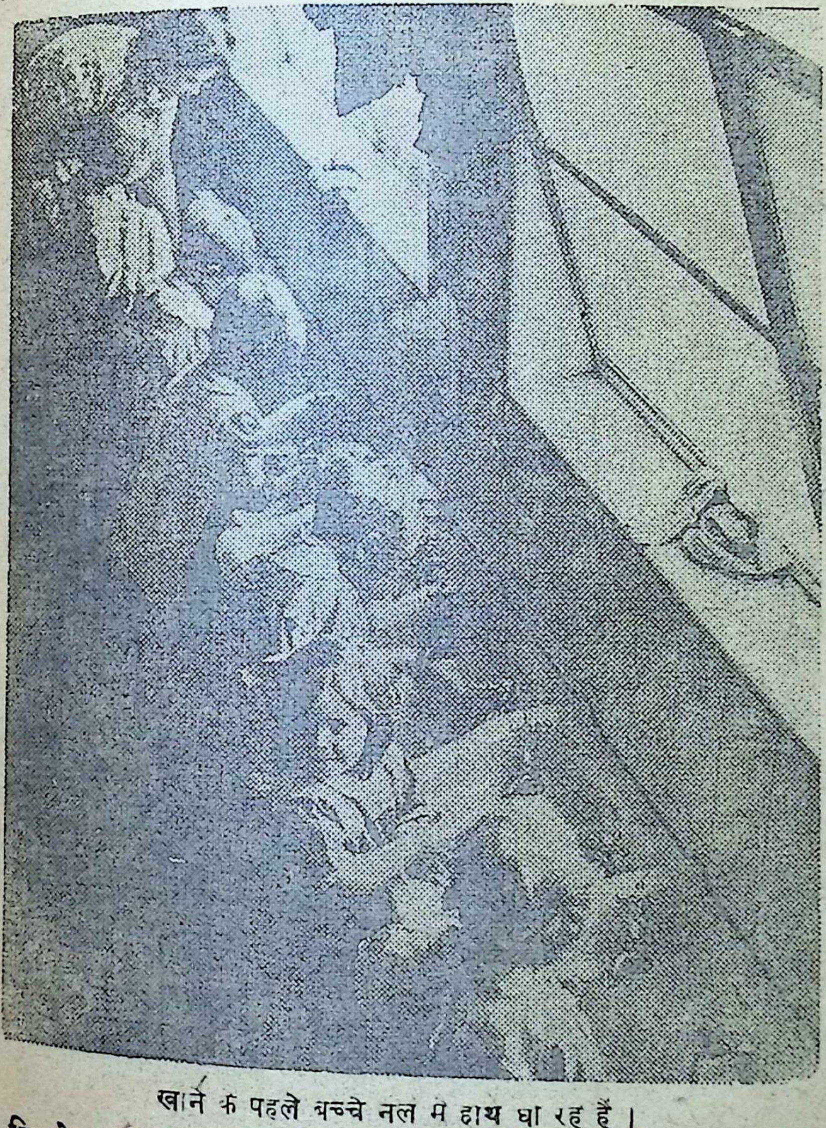
खाने के पहले बच्चे नल में हाथ धो रहे हैं।

तुम पूछोगे कि जब ये स्त्रियाँ कारखानों में काम करने चली जाती होंगी तब उनके बच्चे घर में अकेले रह जाते होंगे। तुम्हारा यह ख़याल दुरुस्त है। यदि बच्चों को घर में अकेले रहना पड़े तो बेचारों को बहुत बुरा लगे। परन्तु इन बच्चों के लिए ब्रिटेन में १६७० नर्सरी स्कूल हैं। मातायें दिन में काम पर जाते समय अपने बच्चों को इन स्कूलों में छोड़ जाती हैं। यहाँ पर बच्चों की देख-रेख करने के लिए योग्य स्त्रियाँ नौकर रहती हैं जो बच्चों के समय पर भोजन आदि देती हैं, उन्हें अच्छी-अच्छी

बातें सिखाती हैं, उनके साथ खेलती हैं जिससे बच्चे यहाँ बहुत .खुश रहते हैं। उन्हें घर की अपेक्षा स्कूल अधिक अच्छा लगता है क्योंकि यहाँ पर साथ खेलने के लिए उन्हें बहुत-से साथी मिलते हैं।

इन स्कूलों में बच्चों को अच्छी आदतें सिखाने का बहुत ध्यान रक्खा जाता है। तुम जानते हो कि सफ़ाई के साथ रहने, समय पर और ठीक प्रकार का भोजन करने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। इन स्कूलों में बच्चों को ठीक समय पर काम करने की आदत डाली जाती है। उनको स्वास्थ्य के साधारण नियम सिखाये जाते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि ये बच्चे उन नियमों का पालन बड़ी प्रसन्नता के साथ करते हैं। चित्र में देखो, खाना खाने के पहले बच्चे कितनी .खुशी के साथ हाथ-मुँह धो रहे हैं।

कितने ध्यान से कहानी सुनी जा रही है।

खाने-पीने के बाद बच्चों को खेल- अवसर दिया जाता है। उनके खेलने के लि हुए मैदान हैं जिनमें वे साथ-साथ खेलते हैं। कहानी सुनने में बहुत आनन्द आता होगा। तुम अपनी माँ से कहानी सुनने के लिए ज़िद होगे। ये बच्चे भी कहानी सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं और अपनी देख-रेख करने अध्यापिका से क सुनते हैं। फि देखो, ये छोटे बच्चे कितनी कता के साथ क सुना रहे हैं।

ये तो छोटे बच्चों की बा जो बच्चे समझ उन्हें स्कूल में पढ़ भेजा जाता है। के साथ-साथ वे मनोरञ्जन के भी से काम करते बहुत-से बच्चे में जाकर किसा सहायता करते हैं। (पृष्ठ ५४) चित्र में देखो बच्चे एक किसान के खेत में आलू के बीज बो र कितनी होशियारी से वे इस काम को कर रहे मालूम होता है जैसे उन्हें बहुत दिनों तक यह सिखाया गया है। तुम्हें भी अपनी माँ के का सहायता करनी चाहिए।

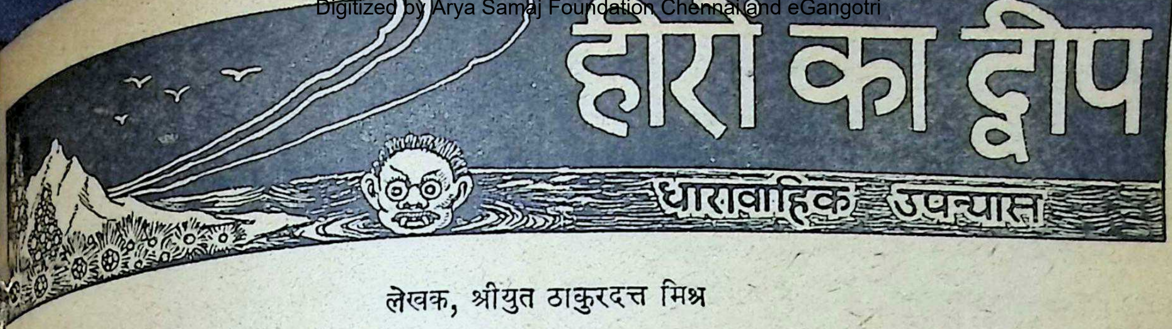

हीरों का द्वीप

धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र

कहानी

[रतन ने बताया कि तन्त्रशास्त्र की खोज करने की धुन में जङ्गल और पहाड़ों को लाँघता हुआ हिमालय पार कर कैसे हुँचा। तिब्बतियों ने उसे तरह-तरह के कष्ट पहुँचाये पर उनकी निगाह बचाकर किसी तरह वह लामाओं के मठ में पहुँच गया। उसे एक पर्वत की गुफा में क़ैद कर दिया जहाँ एक सन्थाल पहले से क़ैद था। तकलीफ़ें सहते-सहते एक दिन सन्थाल चल ते वक़्त उसने रतन को एक गोली दी जिसे मुँह में रख लेने पर उसे कोई देख नहीं सकता था। गोली को मुँह में रखकर गुफा से निकल भागा। वह किसी तरह आसाम में आ गया। वहाँ से रेल पर सवार हो वह सुरेश के पास आया था।]

(५)

र से जाने के कुछ दिनों बाद रतन के बारे में जो बात में आई थी, उससे यह मालूम हुआ था कि वह अब सार में नहीं है। उसे सिंह ने खा डाला। इससे अपने के साथी को इतने दिनों के बाद पाकर सुरेश की प्रस- ा ठिकाना न रहा। मित्र की तिब्बत-यात्रा का हाल र वह और भी प्रसन्न हुआ। छुटपन में सुरेश, नरेश र रतन, ये तीनों एक दूसरे के बड़े पक्के साथी थे। तथा कालेज में पढ़ते समय यों तो इन लोगों की मित्र- ली काफ़ी बड़ी थी, परन्तु इन तीनों में बहुत अधिक ता थी। ये तीनों एक साथ पढ़ते-लिखते, एक साथ कूदते और एक साथ घूमते-फिरते। छुटपन से ही नों अपनी धुन के बड़े पक्के थे। ये सदा यह सोचा ते कि कोई ऐसा अनोखा काम किया जाय, जिसे देखकर चकित हो जायँ।

लेज की पढ़ाई छोड़ने के बाद सुरेश तो घर पर ही रहा, नरेश सिंगापुर में जाकर जहाज़ के दफ़्तर में काम लगा और रतन गया लामाओं के बीच तन्त्रशास्त्र की करने तिब्बत। इस सिलसिले में उसे कई बार मौत सामना करना पड़ा। कई बार वह मरते-मरते बचा। में वह ख़ाली हाथ देश में लौटा भी नहीं। तिब्बत से ऐसी वस्तु लेकर आया जिसका चमत्कार दिखला- सभी को दङ्ग कर सकता था।

ई अनोखा काम कर दिखलाने के मामले में रतन ने और नरेश से पहले बाज़ी मार ली। इससे इतने द अपने एक ऐसे साथी को पाकर, जिससे वह हो चुका था, सुरेश जहाँ बहुत ही प्रसन्न हुआ वहीं भी कम नहीं हुई। उसके मन में आया कि यदि मैंने रतन के लौटकर आने से पहले ही हीरों के द्वीप क खोज कर ली होती तो कितना अच्छा था। परन्तु अ पछताने से तो कुछ होने को था नहीं।

रतन जिस समय अपनी तिब्बत की यात्रा का हाल बतला रहा था, उस समय अपने साथी के धैर्य और अद्भु वीरता का हाल सुनकर कभी तो सुरेश प्रसन्न हो उठत और कभी उसके सङ्कट का हाल सुनकर उसका हृदय दुः से अधीर हो उठता। रतन से इस प्रकार के साहस क आशा सुरेश को नहीं थी। सुरेश और नरेश दोनों अपने आपको रतन से अधिक साहसी समझते थे। वे दो 'बूढ़ा बैल' कहकर बहुधा उसकी खिल्लियाँ उड़ाया करते थे परन्तु वही रतन जब साहस का काम करने में अपने दो साथियों से आगे निकल गया, तब सुरेश के मन में उस प्रति ईर्ष्या का भाव तो उत्पन्न हुआ, परन्तु साथ ही सुरे के मन में यह बात भी आई कि हम तीनों आदमियों में कम से कम एक आदमी ने तो एक अद्भुत काम कर दि लाया। मन में यह बात आते ही सुरेश को रतन के प्र बड़ी श्रद्धा हुई।

हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करने के बारे में नरेश ने पत्र लिखा था, उसका उत्तर सुरेश ने बड़े उत्साह से दि था। उसने लिखा था कि प्रशान्त महासागर के द्वीपों भूगोल-सम्बन्धी जितना वृत्तान्त आज तक प्रकाशित हुआ वह सब संग्रह करके मैं शीघ्र सिंगापुर आ रहा हूँ। पर पत्र का उत्तर दे देना जितना आसान था, उतनी आसानी यात्रा की तैयारी नहीं की जा सकती थी। सुरेश रात्रि में जो पुस्तक पढ़ रहा था, उसी की खोज करने उसको दो महीने से अधिक लग गये। भारतवर्ष के स मुख्य-मुख्य पुस्तक-विक्रेताओं से लिखा-पढ़ी करने पर

जब वह पुस्तक उसे नहीं मिल सकी, तब उसने लन्दन की रायल ज्याग्रफिकल सोसाइटी को पत्र लिखा।

ऐसी दुर्लभ और काम की पुस्तक खोजने में जितना समय लगा, वह उसके लाभ को देखते हुए एक प्रकार से कम ही था, तो भी सुरेश हीरों के द्वीप में पहुँचने के लिए इस प्रकार उतावला था कि एक-एक क्षण उसके लिए एक-एक वर्ष की तरह हो रहा था।

एक ऐसे नाविक की लिखी हुई पुस्तक पाकर, जिसने जहाज़ पर सवार होकर सारे प्रशान्त महासागर का चक्कर लगाने के बाद आँखों देखा वर्णन लिखा है, सुरेश बहुत प्रसन्न हुआ। भाग्य से उसे एक ऐसा बहादुर साथी भी मिल गया जो मौत का सामना करके भी अपना कार्य सिद्ध कर चुका। इसलिए सुरेश को अब सिङ्गापुर के लिए चल देने भर की देरी थी। तैयारी उसे जो कुछ करनी थी, वह उसने कर ली थी।

यात्रा करने में सुरेश को अब एक ही बात की कठिनाई थी। हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करते समय रतन को अपने साथ ले जाने में सुरेश को कुछ हिचक-सी मालूम पड़ रही थी। वह सोच रहा था कि रतन ने अकेले ही तिब्बत जाकर हाँ जिस प्रकार के धैर्य और साहस से काम लिया है, उसके कारण साहसपूर्ण कार्य करने के सम्बन्ध में वह केवल हम ोगों की मण्डली में ही नहीं बल्कि सारे देश में सबसे आगे ो गया है। ऐसी दशा में हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करने की बात जब मैं उससे कहूँगा, तब वह तुरन्त ही तैयार हो ायगा और यह खोज करने का सारा यश मुझे न मिल सकेगा।

सुरेश ने इस विषय पर बड़ी देर तक विचार किया। हुत सोच-विचार करने के बाद उसने निश्चय किया कि तन को छोड़ना ठीक नहीं। उसे साथ ले जाने से लाभ ोगा, कुछ हानि न होगी। परन्तु यदि किसी कारण वह ाने को तैयार न हो तो मैं अकेला ही जाऊँगा। नरेश को भरोसा दे चुका हूँ। वह मेरी राह देखता होगा। मुझे यारी करने में ही बहुत विलम्ब लग गया। अब चार-ाँच दिन के भीतर यहाँ से चल देना चाहिए।

मन में यह निश्चय कर लेने के बाद भी सुरेश हीरों के ीप पर चढ़ाई करने की बात उस दिन रतन से नहीं कह का। परन्तु रतन को उसने अपने घर से कहीं नहीं जाने या। सुरेश ने उससे कहा कि दो-चार दिन यहाँ रहकर ाराम कर लो, तब दूसरी जगह जाना। रतन बहुत दिनों बाद लौटकर देश में आया था। इससे घूम-फिरकर पने साथियों और रिश्तेदारों से मिलने के लिए उसका मन लिए भी वह अधीर हो रहा था, परन्तु सुरेश-जै के साथी का आग्रह देखकर उसे रुकना ही पड़ा।

सुरेश के यहाँ रहकर रतन अपना सारा सम करने में ही बिताने लगा। खाने और सोने के दूसरा काम नहीं था। न तो वह कुछ पढ़ता-लि और न कभी किसी ऐसी बात पर विचार करता था, उसके दिमाग़ पर किसी तरह का बोझ आ सके। तरह आराम करने से उसकी तबीअत धीरे-धीरे सुध रही थी। इधर सुरेश प्रतिदिन इस बात पर विचार था कि जो साहसपूर्ण काम करने का निश्चय मैंने कि उसमें साथ देने के लिए रतन से कहूँ या न कहूँ। कभी तो वह बात छेड़ते-छेड़ते रुक जाता था। इस प्रकार चा दिनों तक आगा-पीछा करने के बाद सुरेश के मन का असमञ्जस दूर हो गया। उसने निश्चय कर लिया कि से इस बात को छिपा रखना किसी प्रकार उचित नहीं है

सवेरे का समय था। सुरेश और रतन हाथ-मुँह बाहर बरामदे में बैठे थे। नौकर ने उन दोनों ही की कु के समीप एक-एक स्टूल रख दिया। स्टूलों पर चा एक-एक प्याला रखकर वह चला गया। चाय पी सुरेश ने कहा—रतन, मैंने भी एक नई खोज क निश्चय किया है। इधर दो-ढाई महीने से मैं उ तैयारी में लगा हूँ। उसके लिए सभी आवश्यक इकट्ठी हो गई है। काम में जुट जाने भर की दे परन्तु यह काम तुम्हारी तन्त्र-शास्त्र की खोज से कम का नहीं है। इतना ज़रूर है कि अगर बाज़ी मार ली हम लोग मालामाल हो जायँगे, साथ ही हम लोगों हिम्मत देखकर देश भर के लोग चकित हो जायँगे।

रतन ने कहा—भाई, तुम ऐसी कौन-सी अद्भुत करने जा रहे हो ?

सुरेश ने कहा—मुझे हीरों के एक द्वीप का पता च उस द्वीप में हीरे जगह-जगह उसी तरह बिखरे हुए हैं, जि हमारे यहाँ देहात में कङ्कड़ या मिट्टी के ढेले पड़े रहते हैं

रतन ने कहा—तुमने इस बात का स्वप्न तो नहीं दे

सुरेश ने कहा—“हरगिज़ नहीं। यह स्वप्न या कल्पना की बात नहीं है, बल्कि इसका ठीक-ठीक पता गया है।” अब उसने नरेश की चिट्ठी रतन के सामने दी। साथ ही यह भी कहा कि मैंने लन्दन से प्रशान्त म सागर के द्वीपों के बारे में जो पुस्तक मँगाई है, वह हीरों द्वीप का हाल जानने के ही लिए मँगाई है। उसके प बहुत-सी आवश्यक बातें मालूम हो गई हैं। अब मामला ठीक है, केवल तुम्हारे तैयार होने की दे

रने में हम लोगों का साथ दोगे ? पर याद रक्खो रों के द्वीप में रहनेवाले जङ्गली लोग तिब्बत के लामाओं अधिक भयानक होते हैं।

गम्भीर होकर दो-तीन मिनट तक सोचता रहा। ना—जङ्गली लोग तो भयानक होते ही हैं, चाहे वे के पठार पर रहते हों, चाहे हीरों के या किसी अन्य द्वीप सभी जङ्गलियों में अभी तक सभ्यता का प्रकाश फैला है। इससे दया, क्षमा और सहनशीलता आदि उत्तम नमें नहीं आ पाये हैं। हमारे ही देश में ऐसे कितने हैं, जो ज़रा ज़रा सी बात पर अपने सगे-सम्बन्धियों खून करने पर तैयार हो जाते हैं। फिर उन जङ्गमें कैसे इस बात की आशा की जा सकती है कि कोई आदमी जाकर उनकी शान्ति भङ्ग करे और वे क्षमा जो हो, मैंने पुरुष होकर जब पृथिवी पर जन्म है तब पुरुष का जो धर्म है, उसका पालन तो मुझे ही पड़ेगा। तुम दोनों को काल के समान भयानक से लड़ने के लिए भेजकर भला मैं कैसे शान्ति से सकूँगा ? मेरे लिए तो घर के लोग सन्तोष ही किये । इससे यह लड़ाई भी जीत लेने के बाद प्रकट । ऐसे खतरे के समय मैं किसी प्रकार तुम लोगों को सकता। यदि कहीं जङ्गलियों का मुक़ाबला करके हुआ तो तीनों मित्र साथ-साथ मरेंगे, जिससे कम मुझे तुम दोनों के वियोग का दुःख न सहना पड़े।

की यह बात सुनकर सुरेश ख़ुशी के मारे उछल पड़ा। उत्साह से भरे हुए स्वर में वह बोला—तब क्या रहा ? अब तो एक तरह से सफलता मेरे हाथ में आ ही गई है। जो वीर कर्मयोगी लामाओं का गढ़ तोड़ आया है, वह हीरों के द्वीप के जङ्गलियों को परास्त करके ही रहेगा। अब तो तुम्हें एक अद्भुत विद्या भी मिल गई है। द्वीप के जङ्गलियों को चकमा देकर वहाँ के हीरे बटोरने में इस विद्या से बड़ी सहायता मिलेगी। अच्छी बात है, तो अब मैं सब ठीक-ठाक करता हूँ, परसों ही यहाँ से रवाना हो जाना चाहिए। मैं जब तक सिङ्गापुर नहीं पहुँच जाता तब तक नरेश का एक-एक क्षण बड़ी कठिनाई से बीतता होगा। इस बीच में उसके कई पत्र आ चुके हैं और हर एक पत्र में उसने शीघ्रता करने के लिए ही आग्रह प्रकट किया है।

रतन ने मुस्कराकर कहा—मुझे क्या लेना-देना है ? मैं तो तैयार ही हूँ। तुम चाहो तो मैं आज भी तुम्हारे पीछे हो लूँगा। पर साथ में अधिक सामान न लेना। ओढ़ने-बिछाने भर के लिए थोड़े-से कपड़े और तीनों आदमियों के लिए एक-एक राइफल, एक-एक पिस्तौल और कारतूस ले लेना काफ़ी होगा। पर यह बात अच्छी तरह समझ रक्खो कि उस द्वीप के निवासियों से बहुत ही जमकर लोहा लेना होगा। जङ्गली लोग ऐसे धीर और निडर होते हैं कि एक बार दल बाँधकर जब सामने आ जाते हैं, तब शत्रु को किसी तरह पीठ नहीं दिखलाते। दल का एक आदमी भी जब तक जीता रहेगा, तब तक वह लड़ाई के मैदान से टस से मस न होगा। (क्रमशः)

नदी

लेखक, श्रीयुत श्रीधर कुलश्रेष्ठ

हर-हर, घर-घर, करती-करती,
तू आगे चलती जाती है।
कङ्कड़ - पत्थर, सीपी - घोंघे,
तू सभी बहाती जाती है॥
तू बोल कहाँ से आती है,
तू बोल कहाँ को जाती है।
रों सीपी-घोंघे बतला—
तू चुरा कहाँ से लाती है ?
तना सारा पानी हरदम,
तू कौन कुएँ से पाती है ?
फिर भला खींचने में उसको,
तू रस्सी कौन लगाती है ?
तू बोल कहाँ से आती है,
तू बोल कहाँ को जाती है।
पानी इतना भर लेने को,
तू डोल कहाँ से लाती है ?
चाचा - चाची, भैया - भाभी,
मौसा - मौसी, काका - काकी—
तेरे हैं कोई जो कि—
उन्हीं के घर तू दौड़ी जाती है ?
तू बोल कहाँ से आती है,
तू बोल कहाँ को जाती है।
है सोच मुझे, बतला तो दे—
किसके घर खाना खाती है॥

स्काउटिंग कैम्प

लेखक, श्रीयुत 'विद्यार्थी'

बच्चे बाहर खेल रहे थे। थोड़ी देर बाद जब वे भीतर आये तो माँ ने कहा—खाना तैयार है।

'हम भी तैयार हैं।' दोनों बच्चे बोल उठे। 'बड़ी भूख लगी है।'

'और रमेश कहाँ है?' माँ ने पूछा।

'चलो, खाना परसो माँ। वह ख़ुद आ जायगा।' सुरेश ने उत्तर दिया।

माँ खाना परसने लगीं तो रमेश भी आ गया। थालियाँ परस दी गईं और बच्चे खाना खाने लगे।

सुरेश अपने स्कूल के स्काउट-दल में है। रोटी का कौर मुँह में रखते हुए उसने कहना शुरू किया—इस बार दशहरे की छुट्टियों में मेरे स्कूल के कुछ लड़के यात्रा पर जायँगे। मास्टर साहब कहते हैं, यह कैम्प-यात्रा होगी। वहाँ हमें उसी तरह रहना होगा, जैसे सैनिक लोग रहते हैं। इस बार मैं भी कैम्प-यात्रा को जाऊँगा।

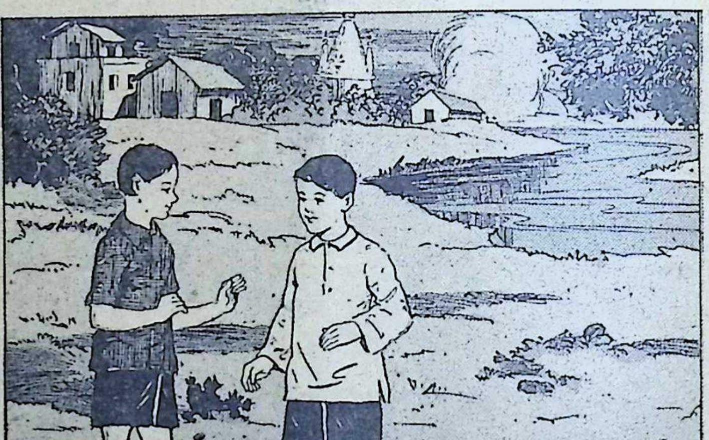

बच्चे बाहर खेल रहे थे।

'मैं भी जाना चाहता हूँ।' रमेश ने कहा।

'तुम कैम्प-यात्रा के योग्य नहीं हो। वहाँ बहुत काम करना पड़ता है; ख़ूब खेलना होता है। तुम थक जाओगे। कसरत भी तो करनी होती है।' सुरेश बोला।

जिस दिन सुरेश कैम्प-यात्रा को जाने के लिए तैयार होने लगा, रमेश ने फिर कहा—भैया, तुम मुझे अपने साथ नहीं ले चलोगे?

'तुम चल सकते हो। पर मैं समझता हूँ कि तुम्हें बहुत तकलीफ़ होगी।'

'कुछ परवा नहीं। मैं सब कर लूँगा। तो स्काउटिंग जानता हूँ।' रमेश ने गर्व के साथ

सुरेश ने माँ से कहा—माँ, रमेश भी टिंग कैम्प के लिए जाना चाहता है। मैं रोकता हूँ पर यह नहीं मानता।

'तो इसे भी ले जाओ।' माँ ने मुस्उत्तर दिया।

रमेश ख़ुश होकर अपने कमरे में तैयारी के लिए दौड़ गया। सुरेश जब रमेश के साथ तो स्काउट मास्टर ने कहा—सुरेश, इस बार तुम छोटे भाई को भी ले जाना चाहते हो क्या?

'जी हाँ, यह नहीं मानता।' सुरेश ने उत्तर

'बहुत की बात है। अभी छोटा है लिए हम इसका ध्यान होगा।'

रमेश ख़ुश हुआ। तीन-चा बाद रमेश ने को पत्र लिखा जिसमें उसने कैम्प के जीवन का किया। उसने लिखा था कि मुझे यहाँ का जीवन पसन्द आया है। सब लोग ६ बजे ही उठ जा नहाने-धोने और अपने तम्बू की सफ़ाई क बाद नाश्ता मिलता है। ९ बजे से ११ बजे तक कूद और व्यायाम होता है। उसके बाद मिलता है। चार बजे फिर खेल शुरू हो जाता रात को ८ बजे सब लोग सो जाते हैं।

रमेश ने लिखा था कि पहले तो मुझे बहुत बुरा लगा पर बाद में उसकी आदत-सी प

दोनों भाई कैम्प से लौटे तो उनकी तौल ई थी। जब वे भोजन करने बैठे तो माँ ने मेश, अब तुम्हें ठीक समय पर भोजन करने त पड़ गई होगी।

भी क्या माँ, तनिक इसे खाते तो देखो।'

सुरेश ने कहा—वहाँ हम लोगों में यह सब से छोटा था पर खाता सब से अधिक था।

सब लोग हँस पड़े।

सुरेश और रमेश ने अपना रोज़ का कार्यक्रम उसी प्रकार का बना लिया जैसा कैम्प में था। अब वे तन्दुरुस्त रहने लगे।

चीन देश का मजिस्ट्रेट

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद गुरु

रानी बात है, चीन देश के नानकिन शहर की घटना रीव चीनी पत्थर पर बैठा रो रहा था। सामने ख़ाली थी। जब कोई उससे रोने का कारण पूछता तो ता कि हण्डी में से कोई मेरी दिन भर की कमाई के र बची हुई मिठाई निकाल ले गया है। चीनी बहुत ही इसलिए सभी को उस पर दया आती थी पर कोई नहीं सकता था। आस-पास कोई नज़र ही नहीं आता पर सन्देह किया जा सके। सब थोड़ी देर उसके पास फिर सहानुभूति के दो-चार शब्द कहकर अपना ते। वह ग़रीब बिसूरता रह जाता।

य से उसी रास्ते से नानकिन के प्रसिद्ध मजिस्ट्रेट चान निकले। उन्होंने भी उस ग़रीब चीनी को र बैठे रोता हुआ देखा। उन्होंने भी और आदमियों उस ग़रीब से रोने का कारण पूछा। बताये जाने पर ने अपराधी का पता लगाना चाहा। जब कोई न मजिस्ट्रेट ने अपने अर्दली से कहा—"इस पत्थर ने की है। इसे उठाकर ले चलो और कल कचहरी ओ। इस पत्थर पर चोरी का मुक़दमा चलाया " अर्दली ने पत्थर उठा लिया। मजिस्ट्रेट ने ग़रीब को समझाया और दूसरे दिन कचहरी में आने के ा।

र में इस विचित्र मुक़दमे की ख़बर बिजली की तरह । लोग मुक़दमा सुनने कचहरी गये। कमरे के सामने भीड़ लग गई। मजिस्ट्रेट ने फ़ैसला सुनाया कि इस पत्थर को चोरी के अपराध में ३ वर्ष का कठोर दण्ड दिया जाता है। इस विचित्र फ़ैसले को सुनकर जितने लोग वहाँ खड़े थे सब ने ठहाका मारकर हँस दिया। मजिस्ट्रेट ने भौंहें चढ़ाकर सबकी ओर देखा और फिर कहना शुरू किया—"जितने लोग इस कमरे में खड़े हैं, सब ने तिरस्कारपूर्वक हँसकर अदालत का अपमान किया है। इस अपराध के लिए सब पर एक-एक रुपया जुर्माना किया जाता है। प्रत्येक आदमी दाहने हाथ के दरवाज़े से निकलता जावे और पानी से भरे काँच के बर्तन में जुरमाने की रक़म डालता जावे।"

हुक्म आख़िर हुक्म था। सब क़तार बनाकर दरवाज़े की तरफ़ बढ़े और काँच के बर्तन में रुपया डालकर बाहर निकल गये।

अन्त में एक व्यक्ति आया। उसने भी डरते-डरते पानी में अपना रुपया डाला। रुपया डालते ही बर्तन के पानी में घी की चिकनाई उतरा आई। मजिस्ट्रेट वहीं पास खड़ा था। उसने उस व्यक्ति को रोक लिया और डाँटकर पूछा—तूने ही उस ग़रीब आदमी की चोरी की है। क्या यह सच नहीं है?

उस धूर्त ने डरते-डरते अपराध स्वीकार कर लिया। ग़रीब आदमी अपनी गाढ़ी कमाई पाकर मजिस्ट्रेट की बुद्धिमत्ता को सराहता हुआ घर चला गया।

चार कबूतर

दर्बा भीतर एक ही

—रमाशङ्कर त्रि.

या शशी'

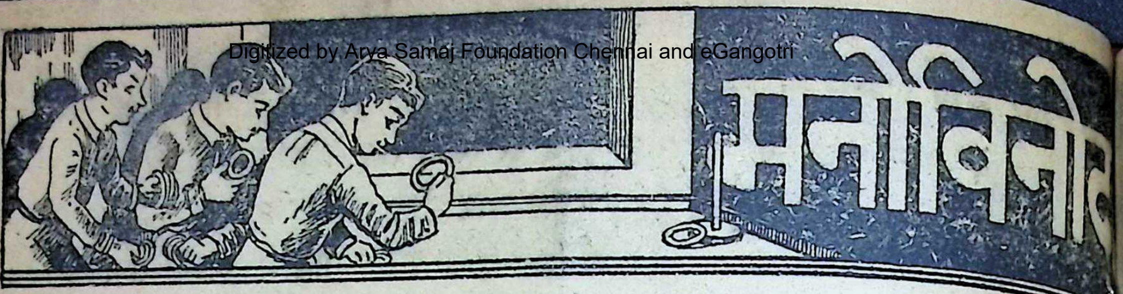

मनोविनोद

सुरेश—(दूधवाले से) आज दूध पतला क्यों है ?

दूधवाला—रात भैंसें वर्षा में खड़ी थीं।

× × ×

हरि—(कक्षा में) मेरी पुस्तक खो गई।

मुरारी—अरे भाई! अभी सड़क पर जाती हुई मुझे मिली थी।

× × ×

रमेश—किशन, तुम्हें किसने मारा ?

किशन—डण्डे ने।

× × ×

मास्टर—(छोटे बच्चे से) श्री, तुमने अँगरेज़ी के सब अक्षर याद कर लिये ?

बच्चा—जी हाँ। याद कर लिये।

मास्टर—'ए' के बाद कौन सा अक्षर आता है ?

बच्चा—'ए' के बाद तो सभी अक्षर आते हैं।

× × ×

दारोग़ा—(एक देहाती से) तुम क्या जानते हो ?

देहाती—मैं बहुत कुछ जानता हूँ।

दारोग़ा—बयान करो।

देहाती—जौ, चना, बूट, मटर, धान, गेहूँ, हल चलाना इत्यादि।

दारोग़ा—(बिगड़कर) मैं चोरी के बारे में पूछ रहा हूँ।

देहाती—चोरी के बारे में मैं कुछ नहीं जानता।

× × ×

मास्टर साहब—(एक लड़के से) इस बात के तीन प्रमाण दो कि पृथ्वी गोल है।

लड़का—आप कहते हैं, मैं कहता हूँ और किताब में लिखा है।

× × ×

ग्रामीण—(डाकिये से) क्यों जनाब, मेरे नाम की कोई चिट्ठी है ?

पोस्टमैन—आपका नाम क्या है ?

'जनाब चिट्ठी के ऊपर लिखा होगा, देख लीजिए।'

सकते हो। पर मैं समझता हूँ कि

×

हुत तकलीफ़ होगी।'

एक आदमी, जिसके पैर में दर्द हो रहा था, अधकचरे हकीम के पास जाकर बोला—हकीमजी, ऐसी दवा दीजिए जिससे तुरन्त दर्द हट जाय।

हकीम जमूर लेकर रोगी के दाँत निकालने जब बीमार ने ऐसा करने का कारण पूछा तो वह इससे तुम्हारा ध्यान पेट की ओर से हट जायगा और दर्द काहे का रहेगा।

—यशपाल

× × ×

गोपाल और मोहन में बड़ी मित्रता थी। बहुत बाद उनकी मुलाक़ात हुई।

गोपाल ने पूछा—कहो मोहन, इतने दिनों तक

मोहन—दुनिया के चक्कर में ही घूम रहा था।

गोपाल—आपके बाल-बच्चे आजकल कहाँ पर हैं

मोहन—बाल तो साथ हैं और बच्चे घर में हैं।

—र

× × ×

बुढ़िया—(छोटे बच्चे से) क्या तुम्हें मालूम कौन हूँ ?

बच्चा—क्या तुम अपने को भूल गईं ? अगर है तो अपनी माता से पूछो। तुम जो होगी वह तुम्हें देगी।

× × ×

बेटा—(पिता से) मैं कितनी देर में वापस

पिता—जितनी देर में खोटा रुपया वापस आता

× × ×

माधव—मुझे एक ऐसा आदमी मिला जो मेरी जात व नाम वग़ैरह पूछता था।

मुकुन्द—शायद उसने तुम्हें मनुष्य न समझा हो

× × ×

शिक्षक—'ग़ैर हाज़िर' का क्या अर्थ ?

छात्र—यही कि घर में हाज़िर, अगर यहाँ नहीं

—वल्लभदास

बहुत बुरा लगा।

प्रश्न-पहेली

आटा खाय, बतलावे बोले नहीं;
मारे से चिल्लाय।
(मृदङ्ग)

× × ×

माँ बेटी का एक ही नाम।
झट; बतलाओ मिले इनाम ॥—(चिड़िया)
--त्रिलोकचन्द्र

× × ×

हैं दो पङ्ख पर चिड़िया नहीं।
दाँत बहुत, चौपाया नहीं ॥—(चमगादड़)

× × ×

तीन अक्षरों का है नाम।
जिस पर सब रहते तू जान ॥
आदि कटे मछली मैं होता।
मध्य कटे तो नर हो जाता ॥—(ज़मीन)

× × ×

छः अक्षर का मेरा नाम।
आता हूँ खाने के काम ॥
पहले तीन से फूल का नाम।
अन्त तीन है फल का नाम ॥-(गुलाबजामुन)

× × ×

हाथ पैर से समय बताकर,
काम-सहायक होती हूँ।
मीठी-मीठी तान सुनाकर,
सबका मन बहलाती हूँ ॥—(घड़ी)

× × ×

एक फल 'अगहन' में आवे।
जो भी पावे मज़ा उड़ावे ॥—(आम)

× × ×

तो हूँ मैं नौकर, किन्तु नाम है मेरा ऐसा।
पढ़ने पर भी रहता, जैसा हूँ मैं वैसा ॥—(सईस)
—शशीमोहन ताषड़िया 'शशी'

एक पेड़ यहाँ और एक पेड़ कलकत्ता।
ऐसा पेड़ कहाँ जिसके फूल के ऊपर पत्ता ॥—(अनन्नास)

× × ×

एक अचम्भा देखो चल—
सूखी लकड़ी में है फल,
जो कोई उस फल को खाय।
पेड़ छोड़ वह अनत न जाय।—(बरछी)

× × ×

खेत में उपजे सब कोई खाय।
घर में उपजे घर वह जाय ॥—(फूट)

× × ×

जोगी एक मढ़ी में सोवे,
आवे बालिका कान से लागे,
जोगी तुरत मढ़ी से भागे।—(तोप का गोला)
—सनी कपूर

× × ×

देखा एक अनोखा पेड़,
फल की पंसेरी से होड़।
कच्चे की होवे तरकारी,
पकने पर मिठाई तैयार।—(कटहल)

× × ×

लग-लग कहे तो ना लगे,
बिलग कहे लग जाय।
कौन वस्तु ऐसी सखे,
देना मोहिं बताय।—(ओठ)

× × ×

पानी बरसा रात भर
भीग गये बन-पात।
पानी बरसे क्या हुआ,
जगत प्यासा जात।—(ओस)

× × ×

चार कबूतर चार रँग,
दर्बा भीतर एक ही रँग।—(पांन)
—रमाशङ्कर त्रिपाठी

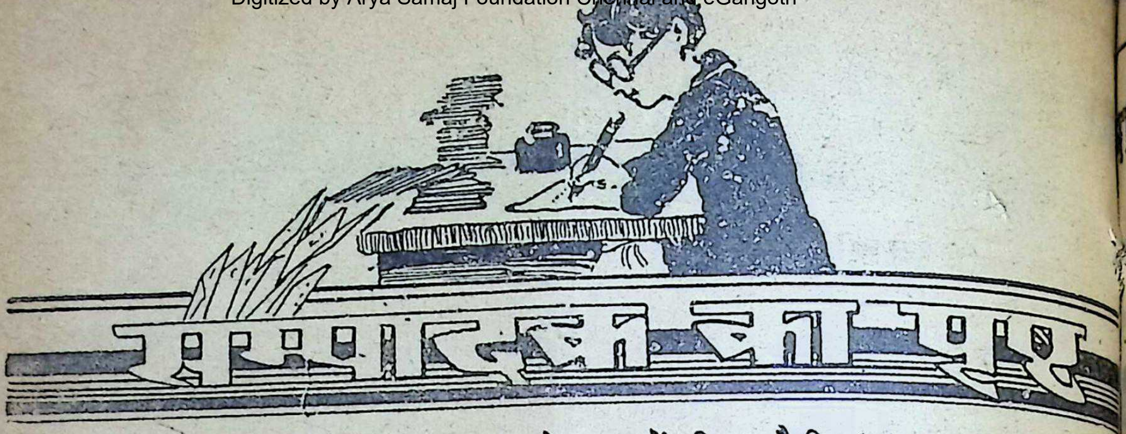

सम्पादक का पत्र

सुकवि सोहनलालजी ने गत ८ नवम्बर सन् १९४४ के कार्ड में संपादक को लिखा था—"आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि……'बाल-सखा' के लिए कई रचनायें लिखने की मुझे प्रेरणा मिली है।" जनवरी के 'बाल-सखा' में उनका बनाया 'राष्ट्रीय गीत' छपा है। इस महीने 'यह है वसन्त का पहला दिन' छापा गया है। यह रचना इतनी बढ़िया है कि किसी की प्रशंसा की कामना नहीं करती। इसके लिए कवि को बार-बार बधाई। मार्च में 'वसन्ती-पवन' का आनन्द लीजिएगा। आशा है, 'बाल-सखा' के प्रत्येक अङ्क में सोहनलालजी की एक न एक रचना प्रकाशित होती रहेगी।

× × × ×

होली के अवसर पर हम प्यारे बाल-सखाओं को बधाई देते हैं। होली का त्योहार मेल-मिलाप और प्रेम का है। बाल-सखाओं को आपस का लड़ाई-झगड़ा भूलकर प्रेम के साथ रहने का व्रत लेना चाहिए। होली के बाद हम भारत-वासियों का नया वर्ष शुरू होता है। हम लोग एक वर्ष अधिक बड़े हो गये। पिछले साल की भूलों पर एक बार फिर से सोचिए। अगले साल आप वैसी भूलों से बचें।

× × × ×

हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा झंझटों में फँसी रहने के कारण कम लिख पाती हैं। उन्होंने पत्र में लिखा है कि 'बाल-सखा नहीं आया तो न का आभास मिल गया।' नये वर्ष पर उन्होंने एक कविता भेजी है। यह इतनी अच्छी है कि हम इसे अङ्क में देने के लिए नहीं रोकना चाहते। इसे छापते हैं—

नया वर्ष

आया है नया वर्ष, ओ किशोर!
उठती है नवोत्कर्ष की हिलोर।
उतर रही नई किरन, सिहर बही नई पव
नई हँसी हँसा गगन, नई धरा हुई मग
पंछी के कण्ठों में नया रोर।
डोली है डाल-डाल, बोली है पुष्प-मा
तुम भी अब खिलो बाल, करके निज उच्च भा
आयेगी स्वतन्त्रता इसी ओर।
मन में भर चाह नई, कर दो यह राह न
आशा की बाँह नई, सपनों की छाँह न
खेल रहा बचपन का नया भोर।
वर्षों पर वर्ष छहर, आये ले नई ल
जीवन के सुखद पहर, सोहें ध्वजा फ
बढ़ करके छू लो तुम विजय-छोर!

पिछले अङ्क में 'तुममें कितनी बुद्धि है' शीर्षक स्तम्भ में छपे प्रश्नों के उत्तर—

(१) $\frac{१}{२}+\frac{३८}{७६}+४९+५०$।

(२) दोपहर तथा आधी रात ११ और १२ बजे के बीच।

(३) चीन, जर्मनी, अमरीका, फ़्रांस, इँग्लैण्ड और इटली।

(४) टाइटैनिक।

(५) रामचरित-मानस, हैमलेट, रघुवंश, ला मिज़रेबल, आनन्द-मठ, डिवाइन कॉमेडी, गीतांजलि, सेवा-सदन।

(६) दक्षिण अमरीका, नील नदी पर, प्रशा सागर में, दक्षिण अमरीका, साइबेरिया और अफ़्री

(७) हिटलर—१ जनवरी १९४१।

(८) मास्को से बर्लिन।

(९) प्लासी, सिंहगढ़, उदवा नाला, कालपी, सामूगढ़।

(१०) सांपो।

र्षिक 'बाल-सखा'

बच्चों को प्रसन्न रखिए

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को हमेशा प्रसन्न देखना चाहते हैं। इसका कारण केवल यही है कि खिलखिलाते हुए बच्चों को देखकर वे स्वयं प्रसन्न होते हैं। अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, खेलने के लिए पर्याप्त समय उन्हें अवश्य प्रसन्न रख सकता है। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। बच्चों की बौद्धिक जिज्ञासा जब तक तृप्त नहीं होती, तब तक उनकी वास्तविक प्रसन्नता की आशा दुर्लभ है।

अनोखा प्रकाशन

वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन हम इतनी सज-धज और सुन्दरता के साथ कर रहे हैं कि कोई भी बालक उसे पढ़कर फूला न समायेगा। बच्चों के मनोविज्ञान पर पर्याप्त अधिकार रखनेवाले प्रसिद्ध विद्वानों की सहायता से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। इस 'बाल-सखा' की छपाई और कवर ही सुन्दर न होगा बल्कि इसके ३०० पृष्ठों में कहानी, कविता तथा ज्ञान-विज्ञान की मनोरंजक और सरल सामग्री दी जायगी जिसे बच्चे एक वर्ष तक पढ़ते रहेंगे। दूसरी पुस्तकें ख़रीदने की आवश्यकता न होगी। १५० पृष्ठ केवल बालकोपयोगी सुन्दर मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियों के लिए ही सुरक्षित हैं। ५० पृष्ठों में कवितायें तथा १०० पृष्ठों में ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी मनोरंजक तथा सरल लेख दिये जायँगे। रंगीन और सादे चित्र भी पर्याप्त संख्या में दिये जा रहे हैं। सारांश यह कि इस वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन अपने ढंग का अनूठा और अनोखा होगा। इसका प्रकाशन शीघ्र ही होगा।

अपूर्व अवसर

इतना सुन्दर, आकर्षक और उपयोगी 'बाल-सखा' कितने शीघ्र हाथों-हाथ बिक जायगा यह आपको बताने की आवश्यकता नहीं है। काग़ज़ की महँगी तथा उसके कम परिमाण में मिलने के कारण हम इसे केवल ५००० की संख्या में निकाल रहे हैं। यदि आप अपने वार्षिक 'बाल-सखा' की प्रति शीघ्र आर्डर भेजकर रिज़र्व नहीं करा लेंगे तो अत्यन्त खेद के साथ बाद में आये हुए आपके आर्डर को हमें लौटा देना पड़ेगा। हमें आशा है कि आप इस अपूर्व अवसर को न खोकर अपना आर्डर हमें शीघ्र भेज देंगे।

—मूल्य दो रुपये

मैनेजर :—

'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अच्छी पुस्तकें मनुष्य को जितना ऊँचा सकती हैं बुरी पुस्तकें उतना ही नीचे गिरा सकती अपने बच्चों को चरित्र की दृष्टि से ऊँचा उठाने के पुस्तकों का चुनाव करते समय अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है।

मूल्य सवा रुपया

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी-कृत बच्चों की कविताओं का यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक , यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत ी कमनीय है।

शिशु भारती —यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही चनाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल वितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता ० जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके।

मूल्य एक रुपया

अन्वेषण-यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य थान लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना ी सम्भव नहीं था। वास्को डि गामा आदि कुछ अपूर्व ाहसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाज़ी गाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर ात्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है।

मूल्य तेरह आने

जान जोखिम की कहानियाँ— इस पुस्तक की विशेषता ह है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। तिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षकता और बढ़ ई है।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का क प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। इसमें ध्रुवों में निवास रनेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल खा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, साथ ही नोरञ्जन भी होगा।

मेरे देश की कथा - भारतीय इतिहास के कई और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं पढ़ाये इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आदर्श बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक उस को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र कराती है।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों की करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइयाँ यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है।

बालनीतिमाला—संस्कृत के नीतिविषयक ग्रन्थों हिन्दी अनुवाद है। नीति का ध्यान यदि बचपन से ही जाय तो ज़िन्दगी बड़े आनन्द से कट सकती है।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस ताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जिसे बच्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न स

मूल्य ग्यारह आने

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ —इस छोटी-सी में आठ मज़ेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। कहानी जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। के लिए यह बहुत ही मज़ेदार है।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता पुस्तक कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहानी समय वही मज़ा आता है जो दूध और मलाई खाते

मूल्य आठ आने

लन्दन की एक झलक —बालकों को लन्दन शहर सक्षेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी गई

बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और हुई है।

—इस पुस्तक में फ्रांस देश का वर्णन किया गया है। हुत ही सरल और मनोरञ्जक है।

ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो वश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात ई है।

रीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए।

र्मनी—जर्मनी अपने भयङ्कर कारनामों के कारण आज हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं, विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाला

देश का हाल—भारत का चीन से प्राचीनतर सम्बन्ध चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया गया है। बच्चों स्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वदेश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षिप्त परिचय है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पुस्तक के नोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी।

—देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना महत्त्वपूर्ण लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद रूप से न किया गया है।

माओं के देश तिब्बत में—तिब्बत के रास्ते में क्या-नाई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस पुस्तक में है।

—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने पाया ने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्रतिदिन की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी गई हैं हें पढ़कर उछल पड़ेंगे।

गोपाल तथा अन्य कहानियाँ—बच्चों की रुचि का अध्ययन करके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक द है।

मूल्य पाँच आने

च्यांग काई शेक—इस पुतक में च्यांग काई शेक का जीवन-चरित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के राष्ट्रीय जीवन में नया जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी बच्चों को अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।-) पाँच आने।

तुर्की के वीर—इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवाले कमाल अतातुर्क के जीवन-चरित्र का संक्षेप में वर्णन है। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मिस्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्टन चर्चिल का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीत होगा। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ को भनभनाकर जाते हुए देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जहाज़ की उत्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह संक्षेप में लिखा गया है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए बड़े ही मज़े की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के साथ गद्य और पद्य भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ लेते हैं।

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के लिए यह परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें लगभग ४८ चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना की गई है।

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों में ऐसे महापुरुषों के जीवन-चरित्र संक्षेप में दिये गये हैं जो अपने महान् कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। उल्लिखित मूल्य प्रति भाग का है।

जोसेफ़ स्टालिन—अत्यन्त कठिन परिस्थिति में भी साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष ने जीवन-दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रोचक प्रतीत होगी।

वाल्मीकि—रामायण महाकाव्य की रचना करनेवाले आदि-कवि वाल्मीकि का यह जीवनवृत्तान्त है। भाषा अत्यन्त सरल और रोचक है।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य सात कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि बच्चे पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा आकर्षक है।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

HAMARA

HAMĀM

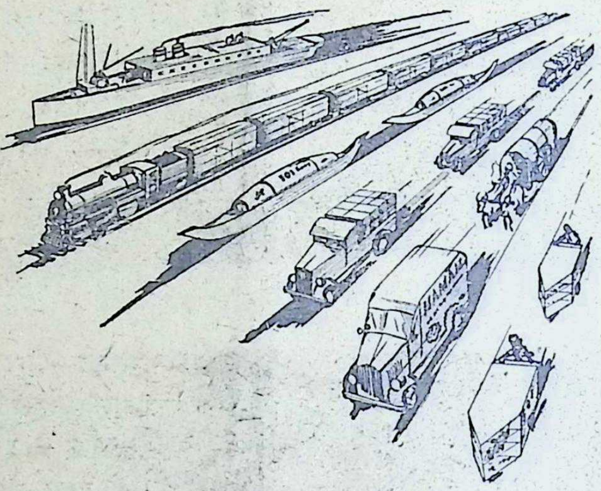

हमारा
हमाम

यातायात

शान्ति-काल में भी हमारे देश में यातायात एक कठिन समस्या थी। हमारे जल मार्ग, रेल मार्ग एवं सड़कें पर्याप्त रूप से उन्नत अवस्था पर नहीं पहुँच पाई हैं। अब तो युद्ध ने हमारे यातायात के साधनों पर भारी बोझ डाल दिया है। फिर भी हम भरसक यही प्रयत्न करते रहते हैं कि चाहे आप दूरस्थ ग्रामीण स्थान में भी क्यों न रहते हों आपको निरन्तर नियमित रूप से एवं शीघ्रतापूर्वक 'हमाम' प्राप्त होता रहे। रेलवे, स्टीमर्स एवं देशी नावें हमाम को वितरण के लिए कार्यालय से दूर-दूर स्थानों में ले जाती हैं। हमारी मोटरें और छोटी नावें बीच में पड़नेवाले छोटे स्थानों में माल की पूर्ति करती हैं और अन्त में हमारी हाथ गाड़ियों द्वारा हमाम आपके हाथों तक पहुँच जाता है। हमारी एकमात्र यही इच्छा रहती है कि इस कठिन समय में आपको कम से कम असुविधा का सामना करना पड़े।

हमारे इस प्रयत्न में सहायता कीजिए। सर्वदा हमाम का ही उपयोग करें क्योंकि यह सभी के लिए पर्याप्त परिमाण में प्राप्त हो सकता है। इस बात का ध्यान रखिए कि आप केवल हमाम का ही उपयोग कर रहे हैं, नक़ली माल का नहीं।

५ इस कूपन को काटकर अपने पास रक्खें। जब योजना समाप्त हो जाये तब कूपन हमें भेज दें। बदले में आपको कोई उपयुक्त चीज़ भेज देंगे।

अलग-अलग कूपन न भेजें।

A TATA PRODUC

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

तीन प्रसिद्ध नदियों के दृश्य

मिस्र देश की नील नदी का एक दृश्य

साइबेरिया की यनीसी नदी

अफ्रीका की नाइजर नदी का दृश्य

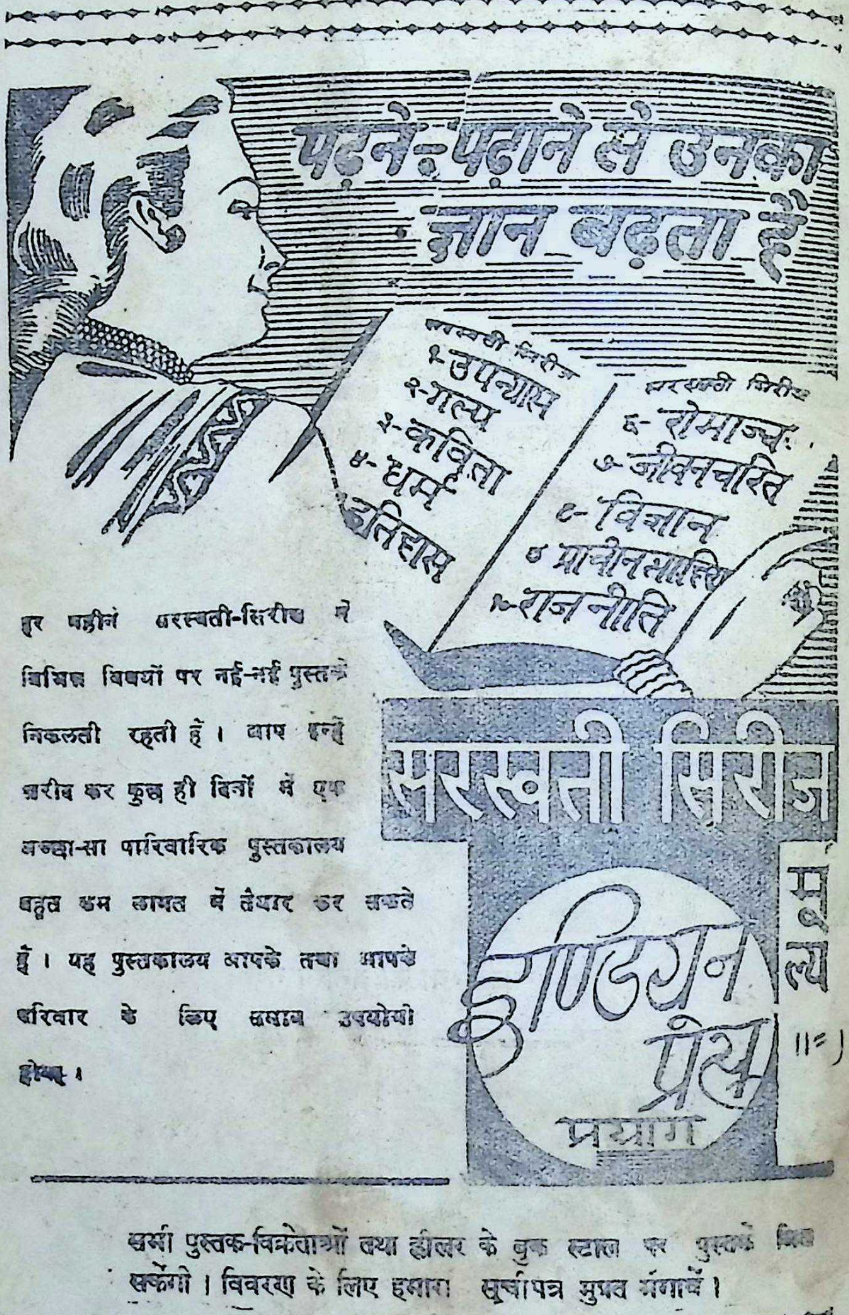
पढ़ने-पढ़ाने से उनका ज्ञान बढ़ता है
सरस्वती सिरीज़
१-उपन्यास
२-गल्प
३-कविता
४-धर्म
५-इतिहास
सरस्वती सिरीज़
६-रोमान्स
७-जीवनचरित
८-विज्ञान
९-प्राचीनसाहित्य
१०-राजनीति
सरस्वती सिरीज़
इण्डियन प्रेस
प्रयाग
मूल्य ॥=)

हर महीने सरस्वती-सिरीज़ में विभिन्न विषयों पर नई-नई पुस्तकें निकलती रहती हैं। आप इन्हें ख़रीद कर कुछ ही दिनों में एक अच्छा-सा पारिवारिक पुस्तकालय बहुत कम लागत में तैयार कर सकते हैं। यह पुस्तकालय आपके तथा आपके परिवार के लिए समान उपयोगी होगा।

सभी पुस्तक-विक्रेताओं तथा व्हीलर के बुक स्टाल पर पुस्तकें मिल सकेंगी। विवरण के लिए हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगावें।

बालक-बालिकाओं के लिए कुछ चुनी हुई पुस्तकें

ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें

...ष्कारों की कथा—तरह-तरह के

...ार कैसे बने; मशीनें कैसे बनीं; ... कैसे बना; रेल, जहाज़, तार, ...ना आदि कैसे बने; क्या आप ...चीज़ें बनाकर या नये काम करके ...र में नाम पैदा कर सकते हैं? ...दि बातें जानने के लिए आज ही ...पुस्तक मँगाइए। मूल्य ।।।) ...ह आने।

...ड में सेवा—अग्निकांड में ...स प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों ...जीवन और सम्पत्ति की रक्षा की ...सकती है, यह बात इस पुस्तक में ...स्तारपूर्वक समझाई गई है। पुस्तक ...चित्र है। मूल्य ।।=) दस आने।

...की सैर—नक्षत्र-मंडल से ...ंध रखनेवाली आवश्यक बातों ...सचित्र और रोचक विवरण। ... ।।।) बारह आने।

... यात्री—संसार के कितने ही ...त देशों का अन्वेषण करने के ... प्राणों की बाज़ी लगाकर उद्योग ...नेवाले अत्यन्त अध्यवसायी वीरों ...यात्राओं का विवरण। मूल्य ।।।) ...ह आने।

...यात्रा—दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुवों ...निवास करनेवाले जीव-जन्तुओं ...था वहाँ की वनस्पति आदि का ...वरण तथा उनकी खोज करनेवालों ...वृत्तान्त। मूल्य ।।=) दस आने।

...की सरल कथायें—नये-नये ...। ...आविष्कार करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या-क्या कठिनाइयाँ सहन की हैं, यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है। मूल्य ।।=) दस आने।

ग्रह-नक्षत्र—ग्रह-नक्षत्र आदि ज्योतिष-शास्त्र से संबंध रखनेवाले विषयों का विस्तृत और मनोरंजक वृत्तान्त मूल्य २) दो रुपये।

मेरे देश की कथा—भारतीय इतिहास के कई मुख्य और गौरवमय अध्याय जो स्कूलों में नहीं पढ़ाये जाते, वे इस पुस्तक में विशेषरूप से वर्णित हैं। मूल्य ।।=) दस आने।

जापान का हाल—उद्योग-धंधा, व्यापार और सामरिक शक्ति की दृष्टि से एशिया के सर्वश्रेष्ठ देश जापान का वर्णन। इसे पढ़कर देश के बालकों में देश को उन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील होने की प्रेरणा उत्पन्न होगी। मूल्य ।।) आठ आने।

विज्ञान की कहानियाँ—अनुवादक; पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। विज्ञान क्या है; कैसे आविष्कार हुआ तथा उसमें क्या-क्या शक्तियाँ हैं; और किन-किन महापुरुषों ने कैसे-कैसे आविष्कार किये, आदि सब बातों का बहुत ही मनोरंजक वर्णन है। भाषा सरल है। मूल्य ।।=) दस आने।

पृथ्वी की कहानी—इस पुस्तक में क्रम से पृथ्वी तथा उस पर के नदी-पर्वत, लता-वृक्ष तथा जीव-जन्तु आदि की उत्पत्ति तथा उन सबके क्रम-विकास का हाल लिखा गया है। मूल्य ।।) आठ आने।

पुरावृत्त—इस पुस्तक में स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी के बारह ऐतिहासिक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

वैज्ञानिकी—इस पुस्तक में उन वैज्ञानिक विषयों पर समुचित रूप से प्रकाश डाला गया है, जिनसे हमारे जीवन का घनिष्ठ संबंध है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर—जहाँ की भूमि का एक-एक कण स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आत्मत्याग करनेवाले वीरों के रक्त से संचित हुआ है, उसी चित्तौर का यह इतिहास है। मूल्य १।।) डेढ़ रुपया।

आदर्श महापुरुषों की जीवनियाँ

सद्गुणी बालक—इसमें ६९ आदर्श

व्यक्तियों के जीवन-चरित कहानी के रूप में लिखकर संग्रहीत किये गये हैं। जिन्हें पढ़कर बालक सद्गुणी बन सकते हैं। मूल्य १) एक रुपया।

भीष्म-पितामह—पिता के सुख के लिए अद्भुत आत्म-त्याग करनेवाले आजन्म ब्रह्मचारी तथा आदर्श वीर भीष्म-पितामह का जीवन-वृत्तान्त। मूल्य १।) सवा रुपया।

बुद्धदेव—बौद्ध-धर्म के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध के जीवन का वृत्तान्त मनोरंजक मत से संबंध रखनेवाली सहायता बातों का संग्रह। मूल्य गूढ़ से रुपया।

विदेशी विद्वान्—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता प्राप्त करनेवाले ११ विदेशी विद्वानों का जीवन-वृत्तांत इस पुस्तक में लिखा गया है और इसके लेखक हैं स्वर्गीय आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी। मूल्य १) एक रुपया।

सीता-वनवास—प्रजारंजन के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के द्वारा गर्भावस्था में सीता जी के परित्यक्त किये जाने की कथा इस पुस्तक में लिखी गई है। मूल्य ।।=) दस आने।

बालकों के विद्यासागर—यह भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान् पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जीवन-वृत्तान्त बालकों के लिए लिखा गया है। मूल्य ।=) छः आने।

युधिष्ठिर—यह धर्मराज युधिष्ठिर का वृत्तान्त है। इस छोटी-सी पुस्तक में महाभारत की सारी कथा का सारांश आगया है। मूल्य ।=) छः आने।

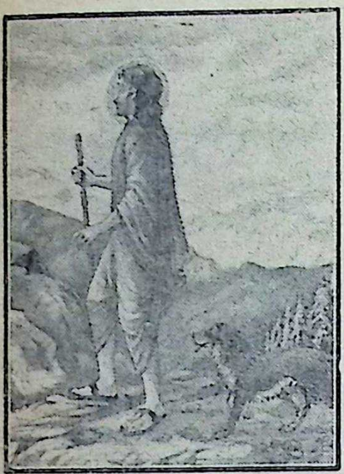

बाल रवीन्द्रनाथ—कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के जीवन की उन सभी घटनाओं का इसमें समावेश किया गया है, जिनकी जानकारी प्राप्त करना बालकों के लिए आवश्यक है। मूल्य ।।) आठ आने।

भक्त शिशु—इस पुस्तक में अत्यन्त शैशवकाल में भगवान् के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करके जीवन य करनेवाले ध्रुव, प्रह्लाद कई भक्तों का चरित संगृहीत किया गया है। मूल्य ।।।) बारह आने।

वाल्मीकि—राम-नाम के प्रभाव से वाल्मीकि किस प्रकार डाकू से इतने बड़े महर्षि हो गये, यह कथा पढ़कर चमत्कृत हो जाना पड़ता है। मूल्य ।) चार आने।

बाल द्विवेदी—आधुनिक हिन्दी-गद्य के निर्माता आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का यह जीवन-चरित सरस्वती-संपादक पंडित देवीदत्त शुक्ल ने विशेष रूप से बालकों के लिए लिखा है। मूल्य ।।) आठ आने।

चमत्कारी बालक—लेखक, मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ़। इस पुस्तक में युधिष्ठिर, एकलव्य, गोखले आदि ऐसे २९ बालकों के विचित्र जीवन-चरितों का संग्रह किया गया है। मूल्य ।=) छः आने।

प्रह्लाद—भक्तप्रवर प्रह्लाद का संक्षिप्त और सरल भाषा में लिखा गया जीवन-वृत्तान्त। मूल्य ।) चार आने।

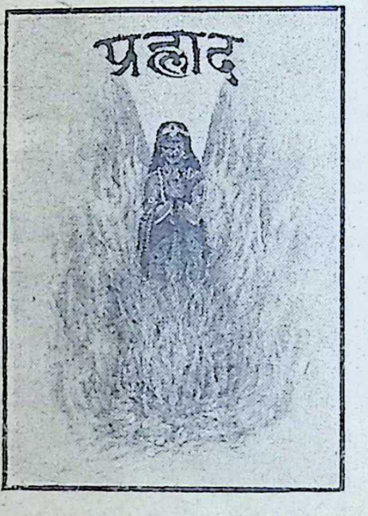

पुराणों की कहानियाँ

बाल-भागवत (पहला भाग)—इस पुस्तक में श्रीमद्भागवत की कृष्ण-जन्म तक की कथा सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।।=) दस आने।

बाल-भागवत (दूसरा भाग)—इस पुस्तक में श्रीकृष्ण भगवान् का चरित्र बहुत ही सरल भाषा में लिखा गया है। यह भागवत के दसवें स्कन्ध का सारांश है। मूल्य ।।।) बारह आने।

बाल-भारत (पहला भाग)—महाभारत की मूलकथा का सारांश। मूल्य ।।=) दस आने।

बाल-भारत (दूसरा भाग)—भारत के २३ शिक्षाप्रद

का संग्रह। मूल्य ।।=) दस

बाल-पुराण—यह पुस्तक महापुराणों का संक्षिप्त परिच इसे पढ़कर आप यह जान सके कि किस किस पुराण में कौन कौ कथायें हैं। मूल्य ।।=) दस

पौराणिक कहानियाँ—इसमें भा विष्णुपुराण तथा अन्यान्य पुरा छाँटकर आठ उत्तमोत्तम कथायें हीत की गई हैं। मूल्य ।) चार

बाल-रामायण—रामायण के कांडों की कथा का सारांश प्रत्येक बालक-बालिका के हा

यह पुस्तक अवश्य हों मूल्य ।।=) दस आ

…विष्णुपुराण—विष्णुपुराण की …नी हुई उपदेशपूर्ण कथाओं का …रांश। मूल्य ।=) छः आने।

…त-ग्रन्थों के हिन्दी-संस्करण (बालकों के उपयोग के लिए)

…हितोपदेश—मनोरंजक तथा …क कहानियों के द्वारा बालक-…काओं को व्यावहारिक ज्ञान …ने के लिए इससे बढ़कर कोई … उत्तम पुस्तक नहीं है। मूल्य …बारह आने।

…चतंत्र—इसमें भी नीति-…न्धी कहानियाँ संगृहीत की गई …पुस्तक क्या है, ज्ञान का भांडार …मूल्य ।।=) दस आने।

…भोजप्रबन्ध—राजा भोज के …र में विद्वानों का किस प्रकार …र हुआ करता था, इसी सम्बन्ध …इस पुस्तक में कई रोचक और …प्रद आख्यान संगृहीत किये …हैं। मूल्य ।।=) दस आने।

…कालिदास—कालिदास के भिन्न …थों में जितनी भी उपदेशप्रद …तियां आई हैं, वे सभी संगृहीत …र दी गई हैं। ऊपर मूल श्लोक …और नीचे हिन्दी-अनुवाद। …।=) छः आने।

…रघुवंश—यह महाकवि कालिदास …रघुवंश का सारांश है। सारी …तक बहुत ही सरल और रोचक …षा में लिखी गई है। साथ ही …का भी कोई अंश नहीं छूटने …। मूल्य ।।) आठ आने।

बालकों के लिए उपदेश-सम्बन्धी पुस्तकें

बाल-गीता—इस पुस्तक में गीता के अठारहों अध्यायों का सारांश सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य ।।।) बारह आने।

बाल दुर्गा—यह दुर्गा सप्तशती के तेरहों अध्यायों का सारांश है। मूल्य ।-) पाँच आने।

बाल-गीतावली—भगवद्गीता के अतिरिक्त और भी कई गीतायें हैं और सभी एक से एक बढ़कर हैं। उनमें से छाँटकर नौ गीतायें इसमें संगृहीत की गई हैं। मूल्य ।।=) दस आने।

बाल-स्मृतिमाला—भिन्न-भिन्न ऋषियों ने मनुष्य को संयम और सदाचार के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए जो नियम बनाये हैं, वे स्मृतियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस पुस्तक में उन्हीं अठारह स्मृतियों का सारांश दिया गया है। मूल्य ।।=) दस आने।

बाल-नीति-माला यह संस्कृत के प्रामाणिक नीति-ग्रन्थों का सारांश है। इसे पढ़कर तथा इसमें लिखी हुई बातों का मनन करके बच्चे नीतिमान् और चतुर बन सकते हैं। मूल्य ।।=) दस आने।

बालोपदेश—इसमें ऐसी-ऐसी शिक्षायें संगृहीत की गई हैं, जो केवल बालक-बालिकाओं के ही लिए नहीं बल्कि बड़े-बूढ़ों के लिए भी लाभदायक हैं। मूल्य ।=) छः आने।

बाल-मनुस्मृति—मनुस्मृति के चुने हुए श्लोकों का सारांश। मूल्य ।=) छः आने।

विद्यार्थियों के उपयोग की कुछ पुस्तकें

बाल-शिक्षा—यह कविता-पुस्तक है। इसमें बालकों के कंठस्थ करने योग्य सुपाठ्य और उपदेश-प्रद पद्य संगृहीत किये गये हैं। मूल्य ≡) तीन आने।

बाल-निबन्ध-माला—इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न शिक्षाप्रद तथा उपयोगी विषयों पर लिखे गये ३५ निबंधों का संग्रह है, साथ ही निबंध लिखने की रीति भी बतलाई गई है। मूल्य ।।=) दस आने।

बाल-स्वास्थ्य-रक्षा—किस प्रकार के भोजन-वस्त्र और आचरण से मनुष्य सुखी और आरोग्य रह सकता है, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्ण बतलाई गई है। मूल्य ।।=) दस आने।

शरीर और शरीर-रक्षा—इस पुस्तक में शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का विवरण तथा उनकी रक्षा का उपाय बतलाया गया है। शरीर के ढाँचे को भली भाँति समझने के लिए कई चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

आरोग्य-विधान—इस पुस्तक में स्वास्थ्य-सम्बन्धी प्रायः सभी बातें बहुत ही सरल भाषा में लिखी गई हैं। मूल्य ।-) पाँच आने।

वैज्ञानिक खेल-तमाशा—इस पुस्तक में काग़ज़ और कार्डबोर्ड इत्यादि के बहुत-से खेल चित्रों-द्वारा समझाये गये हैं। जिनके द्वारा बच्चों की निरीक्षण-शक्ति बढ़ती है। मूल्य ।=) छः आने।

बाल-हिन्दी व्याकरण—हिन्दी का व्याकरण जानने तथा शुद्ध-शुद्ध हिन्दी लिखना सीखने के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।।) आठ आने।

बाल-सद्बोध—इस पुस्तक के द्वारा बालकों को तरह-तरह की मनोरंजक पौराणिक कहानियों की सहायता से धर्म और सदाचार की गूढ़ से गूढ़ बातें सिखलाने का प्रयत्न किया गया है। मूल्य ।।) आठ आने।

पृथ्वी की परिक्रमा—इस पुस्तक में पृथ्वी के भिन्न-भिन्न देशों के मुख्य-मुख्य स्थानों का रोचक वर्णन बड़ी ही मनोरंजक भाषा में लिखा गया है। आर्ट पेपर पर छपे हुए कई पूरे पृष्ठ के चित्र भी हैं। मूल्य ।=) छः आने।

बही-खाता—हिसाब-किताब रखने का नया से नया तरीक़ा। मूल्य ।≡) सात आने।

बाल-कवितामाला—यह सरस्वती-संपादक पंडित देवीदत्त शुक्ल की बालकोपयोगी कविताओं का संग्रह है। मूल्य ।=) छः आने।

बालकों के खेलने योग्य नाटक

बालक अभिमन्यु—बाल्यकाल में ही अद्भुत वीरता प्रदर्शित करनेवाले अभिमन्यु का नाटक के रूप में लिखा गया चरित। मूल्य ।) चार आने।

श्रीकृष्ण और सुदामा—इस नाटक के द्वारा श्रीकृष्ण और सुदामा की अलौकिक मित्रता का चित्रण बड़े आकर्षक ढंग से किया गया है। मूल्य ।) चार आने।

दयालु दयानन्द—आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की जीवन-घटना के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। मूल्य ।) चार आने।

सच्चा सेवक—सेवा धर्म का कितना महत्त्व है और सच्ची सेवा के लिए मनुष्य का कितना आत्मत्याग करना पड़ता है, इस बात पर इस नाटक में विशेषरूप से प्रकाश डाला गया

बालिकाओं के उपयोग की पुस्तकें

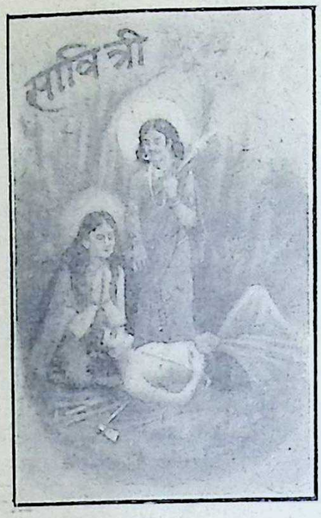

सावित्री—पतिव्रता-शिरोमणि सावित्री की दिव्य कथा इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढङ्ग से लिखी गई है। मूल्य ।) चार आने।

दमयन्ती—पतिव्रता-शिरोमणि महारानी दमयन्ती की उपदेशप्रद कथा रोचक भाषा में लिखी गई है। चार सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य ।) चार आने।

सती—इसमें दक्ष-सुता सती-शिरोमणि पार्वती के अवतार की कथा बड़ी ही सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-) पाँच आने।

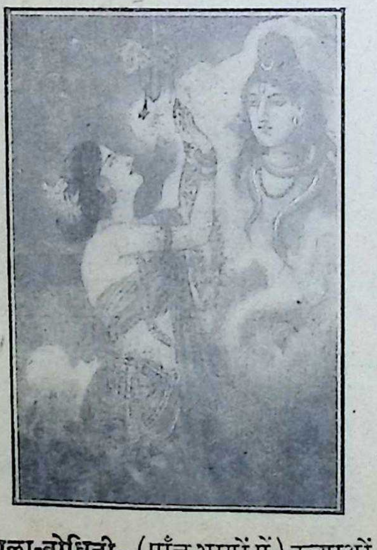

बाला-बोधिनी (पाँच भागों में) कन्याओं की प्रारम्भिक शिक्षा के लिए 'बाला-

गद्य तथा पद्य दोनों का समावे जो बहुत ही उपयोगी और शि है। विषय और भाषा की गम्भी पहले भाग से पाँचवें भाग तक क्र बढ़ती गई है। मूल्य पाँचों भ का क्रमशः ≡), ।), ।-), ।=), ।।)

बाला-पत्र-कौमुदी—इसमें भी भि पत्री लिखने के नियम और चिट्ठ के नमूने आदि दिये गये हैं। ।) चार आने।

सीता—लेखक, पंडित रामेश्वर पांडेय। सती साध्वी महाराणी जी का यह जीवन-चरित है। ।) चार आने।

बाला-पत्र-बोधिनी—लेखक, शालिग्राम वर्मा। इसमें चिट्ठी के नियम और नमूने आदि ही, साथ ही उदाहरण देकर ५० पत्र भी छापे गये हैं। मू आठ आने।

विचित्र-निबन्ध (प्रथम और भाग)—भिन्न-भिन्न विषयों पर गई कितनी ही उपयोगी तथा बातों से पूर्ण निबन्धों का साधारण पढ़े-लिखे भी इसे पढ़ समझकर ज्ञान-वृद्धि कर सकते मूल्य प्रथम भाग का ।।) आठ द्वितीय भाग का ।।-) नौ आने।

मनोरंजक कहानियाँ (प्रथम द्वितीय भाग)—मनोरंजक तथा प्रद कहानियों का संग्रह। प्रत्येक भाग का ।। चार आने।

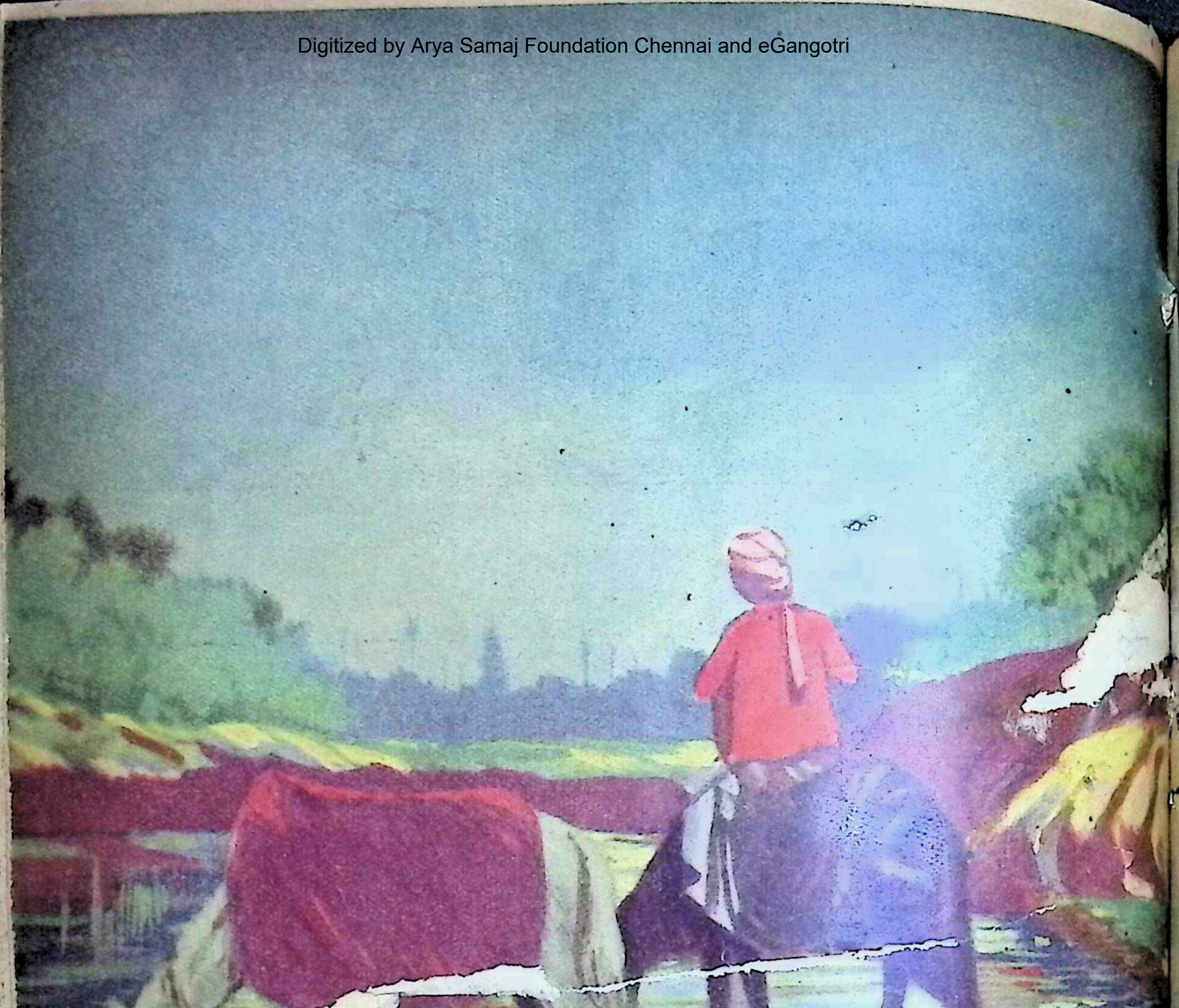

दुख सुख के साथी

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

र २५] अगस्त १९४१—श्रावण १९९८ [संख्या ८

पेड़

लेखक, श्रीयुत श्रीधर कुलश्रेष्ठ 'सुमन' उम्र ११ वर्ष

हरा पेड़ है कैसा सुन्दर।

झुकी हुई पत्तों से डाली।
फूल तोड़ लेता है माली॥
इसमें विहगों के हैं नीड़।
ऊपर से पत्तों की भीड़॥
ों के ही ऊपर रहते हैं मानव के पूर्वज बन्दर।
हरा पेड़ है कैसा सुन्दर।

फल-फूलों का जीवनदाता।
दुनिया भर में हवा बहाता॥
आँधी औ' तूफ़ान चलाता।
जब 'हा-हा' के स्वर में गाता॥
इसके द्वारा ही आते हैं जगती में वसन्त औ' पतझर॥
हरा पेड़ है कैसा सुन्दर॥

स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबलीसिंह

बालको, तुमने 'लीडर' पत्र का नाम तो सुना ही होगा। संयुक्त-प्रान्त का यह प्रमुख अँगरेज़ी पत्र है। स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि इसी के प्रधान सम्पादक थे। सन् १९०९ में ये लीडर के सम्पादकीय विभाग में आये और सन् १९२४ से प्रधान सम्पादक हो गये।

११ अप्रैल सन् १८८० में आपका जन्म विजयानगरम् में हुआ था। बचपन से ही आप प्रखरबुद्धि, तेजस्वी और होनहार थे। कहते हैं 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। आपके पिता महाराज विजयानगरम् के गुरु थे। वैसे तो स्वर्गीय चिन्तामणि के पिता साधारण स्थिति के ब्राह्मण थे। इसी कारण तो श्री चिन्तामणि को उचित शिक्षा नहीं मिली। विजयानगरम् महाराजा कालेज से आपने केवल हाई स्कूल पास किया था। बालकपन में ही आपको कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आपने इधर-उधर घूमने के बाद अन्त में 'इंडियन हेराल्ड' नाम के एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया लेकिन कुछ कठिनाइयों के कारण वह भी बन्द हो गया।

परिस्थितियाँ बुद्धि की प्रखरता को नहीं रोक सकतीं। स्वर्गीय चिन्तामणि जी को पत्र-संचालन करने में दिलचस्पी थी। अन्त में आपको १९०९ में यह महान अवसर प्राप्त हुआ जिसके कारण वे आज इतने बड़े आदमी हो गये।

'लीडर' पत्र का सम्पादन करने के सा साथ आप सामाजिक बुराइयों और राजनै कठिनाइयों की भी चर्चा किया करते थे। विषय में वे स्वयं अपना मत रखते थे। स सत्य का पालन करते थे। वे जिस नीति को समझते थे उसका पूरा पूरा खण्डन करते और जिसे वे अच्छा समझते उसका अनुमो करते थे। इसी नीति के कारण कितनों उनकी प्रशंसा की और कितनों ने विरो कुछ भी हो आप अपने विचारों से डिगने न थे।

आपकी सामाजिक सेवाओं और रा नैतिक सिद्धान्तों के कारण जनता में आप ख्याति बहुत ही शीघ्र हो गई। सरकार से यह छिपा न रहा। जनता और सरकार दो ने इस महान् व्यक्ति का उचित सम्मान किय आप दो बार १९१६-२३ और १९२७ ३८ तक प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य रह हैं। वहाँ पर उन्होंने जनता की स्तुत्य सेवा १९२१ से २३ तक आप शिक्षामंत्री भी नि हुए लेकिन कुछ कठिनाइयों के कारण आ अपने स्थान से इस्तीफ़ा देना पड़ा।

सन् १९१६ तक आप कांग्रेस के क समर्थक थे। कांग्रेस की सालाना बैठक आ लिए धार्मिक यात्रा से कम न थी। आ दादाभाई नौरोजी और गोपाल कृष्ण गोखले आदर्श बनाया था और आजन्म उन आद

पालन किया। मरते समय तक उसी द्धान्त को मानते रहे। १९१७ में आप ग्रेस से अलग रहे और तबसे आप रदल के सदस्य बन गये। आप उसके पति भी चुने गये। साइमन कमीशन विरोध भी आपने धूम से किया।

ये तो हुईं उनकी सामाजिक और नैतिक सेवायें। अब आप उनकी शिक्षा-न्धी सेवाओं पर ध्यान दें। आप सर्व-एक अच्छे और सफल पत्रकार थे। अच्छे वक्ता भी थे। आपने 'भारत' का संचालन हिन्दी में किया। यह दैनिक और साप्ताहिक रूप में कलता है। इसने हिन्दी की बहुत बड़ी और प्रचार किया।

आपने तीन पुस्तकें लिखी हैं—(१) भारतीय सामाजिक सुधार, (२) सर रोज़शाह के भाषण और लेख तथा (३) ग़दर के बाद भारतीय राजनीति। ये स्तकें अँगरेज़ी में लिखी गई हैं। तीसरी पुस्तक आपके भाषणों का संग्रह है जो आपने गपुर विश्व-विद्यालय में दिया था।

आपकी विद्वत्ता के उपहारस्वरूप प्रयाग विद्यालय और काशी विश्व-विद्यालय ने आपको डाक्टर की उपाधि दी। सरकार भी दौड़ में पीछे न पड़ी और सन् १९३६ में आपको सर की पदवी दी।

स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि

साधारण शिक्षा और साधारण आर्थिक स्थिति में उत्पन्न होकर भी स्वर्गीय सर चिन्तामणि ने अपने निरन्तर कठिन परिश्रम और सदाचार से अपने को इतना ऊपर उठा लिया। यह घटना इतिहास के लिए नई नहीं है। नेपोलियन, वाशिंगटन, गोल्डस्मिथ और जानसन आदि ही नहीं बल्कि कालिदास और शेक्सपियर को देखिए। उन्होंने भी साधारण स्थिति से इतनी उन्नति करके ख्याति पाई। परिश्रम का फल अवश्य मिलता है। सर चिन्तामणि के सब सम्मान उचित थे।

स्वर्गीय सर चिन्तामणि पत्रकार ही नहीं

थे। वे व्यक्ति भी थे। उनमें स्नेह और कौटुम्बिक प्रेम भी था। आपका कुटुम्ब भरा-पूरा है। पाँच पुत्र, एक विवाहित पुत्री, दो बहनें और आपकी विधवा पत्नी हैं।

आपका शरीर विशाल, स्वस्थ और मज़बूत था। आपके गंभीर और प्रतिभावान मुखमण्डल से शान टपकी पड़ती थी। आपकी रहन-सहन से ही गंभीरता टपकती थी जो दूसरों को सम्मान करने के लिए बाध्य करती थी। कहते हैं बड़े आदमी का सम्मान करने के लिए लोग स्वयं आ घेरते हैं। यह बात सर चिन्तामणि के विषय में भी ठीक है।

सर चिन्तामणि की उदारता भी कम न थी। आप बराबर निस्सहायों और ग़रीबों को सहायता देते थे। आप दया की मूर्त्ति थे।

धार्मिक विचार भी आपके पक्के थे। आप अपने धर्म के कट्टर अनुयायी थे। आपका ईश्वर में अटल विश्वास था। कहते हैं कि मृत्यु के एक दिन पहले आपने अपने पुत्र श्री सी० राव को पत्र लिखा कि, "मैं मृत्यु के निकट हूँ। शायद यह मेरी अन्तिम चिट्ठी है। यह उनके आत्मविश्वास और धर्म का ही प्रभा था। मानों वे मृत्यु के लिए पहले से ही तैया थे। सुनने में आया है कि आपकी पु अपने पति के साथ जाना चाहती थीं लेकि आपने आग्रह करके रोक लिया। मृत्यु के सम क़रीब-क़रीब आपके सभी कुटुम्बी उपस्थित थे। यह भी उनका अहोभाग्य था।

पाठको! यह केवल जीवनी ही नहीं बल्कि आदर्श जीवन है। कितने ही नौजवा लड़के अपने भाग्य और ग़रीबी को कोसते हैं यह बुरा है। कर्त्तव्यशील बनो और धीरे-धी सफलता के शिखर पर चढ़ो।

इस महान् व्यक्ति की मृत्यु से साहित्य औ समाज को भारी क्षति पहुँची है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति दे।

"वर्षा"

लेखक, श्रीयुत तिलकराज जैन 'वीर'

वर्षा कैसी सुन्दर आई,
सभी तरफ़ हरियाली छाई।
तरु लतायें हैं लहराई,
सुन्दरता इनकी मन भाई॥
कू-कू करती कोयल आई,
सबके मन को हरती आई।
आम्र-कुञ्ज में शोभा छाई,
लता वल्लरी उन पर धाई॥
.खुश हो-हो बच्चे फिरते,
पानी में वे दौड़ा करते।
कूद-कूद आनन्द मनाते,
"वीर" हृदय में सुख को भरते॥

युद्ध और पशु-पक्षी

लेखक, श्रीयुत गिरिधारीलाल शर्मा, 'गर्ग'

योरप में आज जो लड़ाई चल रही है, उसके बारे में तुम अकसर सुनते होगे। गोले, पनडुब्बी, जहाज़, हवाई जहाज़, छतरी, गैस, टैंक आदि की सहायता से किस तरह सिपाही लड़ रहे हैं, यह जानकर तुम्हें बड़ा आश्चर्य होता होगा। लेकिन, यह सुनकर तुम्हारे अचरज का ठिकाना न रहेगा कि इस लड़ाई में पशु-पक्षी भी बड़े अनोखे काम कर रहे हैं। कुत्ते, कबूतर, घोड़े, बिल्ली आदि अनेकों जानवरों से मनुष्य-सैनिकों की ही तरह काम लिया जा रहा है।

कुत्तों ने तो इस ओर कमाल ही कर दिया है। घायलों का पता लगाना, उनके पास दवा-दारू पहुँचाना, स्ट्रेचरवालों को रास्ता दिखाकर वहाँ तक ले जाना, निर्जन स्थानों में लड़ाई के हथियार और यहाँ तक कि तोपों के छोटे-छोटे हिस्से पहुँचाना, दुश्मनों की जगह का सूँघकर पता लगाना और पैराशूट सैनिकों को ढूँढ़ निकालना—ये सभी काम कुत्ते बड़ी ख़ूबी के साथ कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जगह-जगह वे चौकीदार का भी काम करते हैं।

भिन्न-भिन्न जाति के कुत्तों से भिन्न-भिन्न काम लिया जाता है। उदाहरण के लिए, घायलों की सेवा करनेवाले कुत्तों से पहरेदार या दूत का काम नहीं लिया जा सकता। इनका काम होता है जंगल-झाड़ियों में पड़े सैनिकों का पता लगाना। इन कुत्तों की पीठ पर एक थैला बँधा रहता है जिसमें तरह-तरह की दवायें भरी रहती हैं। घायल सिपाही इन थैलों से मन-माफ़िक़ दवा निकाल लेते हैं। यदि घायल सैनिक बेहोश रहता है, तो ये कुत्ते उसे झकझोर कर होश में लाने की कोशिश करते हैं। इतने पर भी सैनिक अगर नहीं जागता, तो कुत्ते लौटकर दूसरे आदमियों को वहाँ तक ले जाते हैं। समय पर सहायता पहुँचाकर हज़ारों आदमियों की इन कुत्तों ने जान बचाई है।

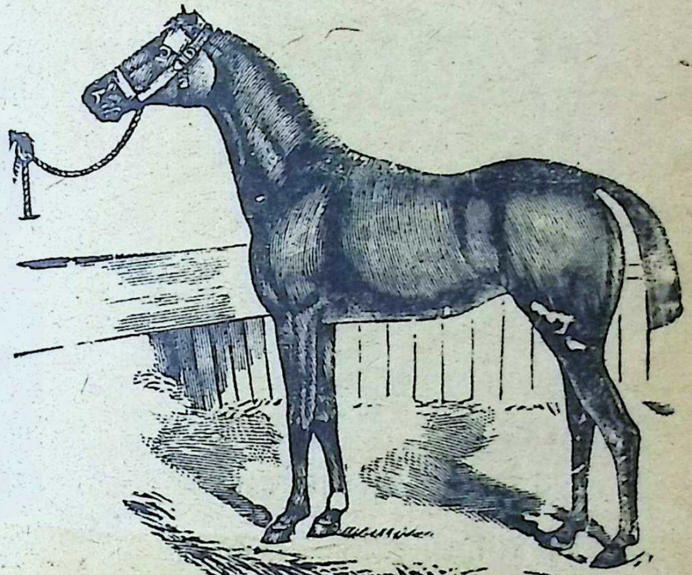

घोड़े युद्ध के काम आते हैं।

पहरा देनेवाले कुत्ते सैनिकों के आगे-आगे घूमते रहते हैं और दुश्मन को देखते ही उसकी ख़बर पहुँचा देते हैं। सूँघने और सुनने की शक्ति तेज़ रहने के कारण ये कुत्ते शत्रु का पता

बड़ी दूर से ही लगा लेते हैं और ज़मीन में गड़ी सुरंग को फ़ौरन पहचान जाते हैं। मनुष्य भले ही चूक जाय, लेकिन ये कुत्ते कभी नहीं चूकते; दिन-रात एक पैर पर खड़े पहरा देते रहते हैं।

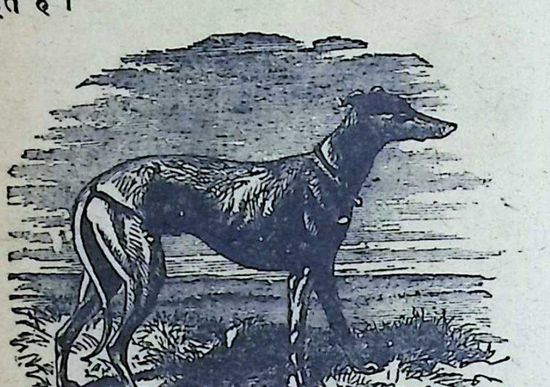

युद्ध में कुत्तों ने बड़ा काम किया है

मुख्य सेना से बहुत दूर जा पड़े और शत्रुओं से घिरे सिपाहियों को "समाचार पहुँचानेवाले" कुत्तों ने अनेक बार बहुमूल्य सहायता पहुँचाई है। दुश्मनों की आँखों में धूल झोंककर ये कुत्ते हेड क्वार्टर्स में चिट्ठी पहुँचा देते हैं, और फ़ौरन ही घिरे हुए सिपाहियों की मदद के लिए नई टुकड़ी भेज दी जाती है। कहते हैं, पिछली बड़ी लड़ाई में इन कुत्तों की वजह से लाखों सिपाहियों की जान बच गई थी। हाँ, ज़रूरत पड़ने पर ये कुत्ते भोजन का सामान भी पहुँचा सकते हैं।

बहुत दूर और जल्दी से जल्दी ख़बर पहुँचाने में कबूतरों ने बड़ा नाम कमाया है। ऐसी जगह पर, जहाँ कुत्ते की रूह भी नहीं पहुँच सकती, कबूतर आसानी से पहुँच जाते हैं। इनकी चाल भी बहुत तेज़ होती है बड़ी-बड़ी दूरी बात की बात में तय कर हैं। इन कबूतरों को ऐसी शिक्षा दी गई है वे सीधे प्रधानकार्यालय को उड़ आते हैं। उन वहाँ लौट आने पर एक घंटी ख़ुद ही बज उठ है, और इस तरह अफ़सरों को उनके पहुँच का पता लग जाता है। फ़ौज, टैंक, सबमेरि हवाई जहाज़, जहाँ भी देखिए ये कबूतर मौजू मिलेंगे।

पिछले महायुद्ध में इन कबूतरों ने हज़ार आदमियों को मौत के मुँह से निकाला था इन संवाद-वाहक कबूतरों को मारने के लि जर्मनों ने शिक्षित बाजों की एक सेना ब रक्खी थी। लेकिन, इस ओर उन्हें उत सफलता नहीं मिल सकी। "जैक", "चेर अमी" और "प्रेसीडेण्ट विलसन" नामक कबूतरों घायल अवस्था में भी बड़ी महत्त्वपूर्ण ख़ब पहुँचाई थीं। एक कबूतर को तो उसक वीरता और साहस के लिए "विक्टोरिया क्रास" भी मिला था।

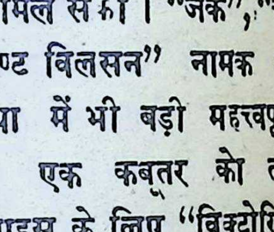

युद्ध में समाचार ले जानेवाले कबूतर

जहाँ हवाई जहाज़ नहीं जा सकते, शत्रु-प्रदेश की तसवीर खींचने का काम भी कबूतरों से लिया जाता है। कबूतरों के गले में

छोटा-सा स्वयं चालित केमरा लगा रहता है। शत्रुओं को ज़रा भी ख़बर नहीं होती, और ये कबूतर गुप्त जगहों की तसवीरें खींचकर चुपचाप बता देते हैं।

कुत्तों और कबूतरों के अलावे और भी अनेकों जानवरों ने समय-समय पर युद्ध में सहायता पहुँचाई है। फ़्रेंच लोगों ने बरफ़ गिरे होने पर सफ़ेद और रात में काली बिल्लियों-द्वारा भी ख़बर भेजने का काम लिया है।

कहते हैं, बहुत पुराने ज़माने से ही पशु-पक्षी युद्ध में ये काम करते आ रहे हैं। सैकड़ों और हज़ारों वर्ष पहले मिस्र और तुर्क लोगों ने भी कबूतरों से संवाद आदि भेजने का काम लिया था। पेरिस के घिर जाने पर एक बार एक मनुष्य ने प्रतिशब्द के लिए ५ पौण्ड का खर्च करके अपने कबूतरों-द्वारा १२,००० पौण्ड कमाये थे।

चीन और जापान में भी, लड़ाई में, पशु-पक्षियों के व्यवहार का उल्लेख मिलता है। कुत्तों-द्वारा जासूसी का काम लेने की बात तुमने सुनी होगी, लेकिन पुराने ज़माने के जापानी सरदार चूहों से भी जासूस का काम लिया करते थे। जासूस अपने पालतू चूहे को अपनी आस्तीन में छिपाकर रखता था और दुश्मनों के पड़ाव या क़िले के पास जाकर उसे छोड़ देता था। चूहे को ऐसी शिक्षा मिलती थी कि वह शत्रु के काग़ज़ातों को उठा लाता था। शत्रु की बहुत-सी गुप्त बातों का पता इस तरह आसानी से लग जाता था। जब कभी दुश्मनों के शिविर या क़िले की भौगोलिक अवस्था का पता लगाना होता था, तो लोमड़ियों से काम लिया जाता था।

कीड़े-मकोड़े भी किसी से पीछे नहीं रहे हैं। यहाँ तक कि मधु-मक्खियों ने भी लड़ाई में कंधा भिड़ाया है। कहते हैं, ऐंग्लो-जर्मन युद्ध के समय अफ़्रीका में जर्मनी की भागती हुई सेना ने पीछा करते ब्रिटिश सैनिकों को ख़ूब छकाया था। तार की सहायता से उन्होंने अनेक मधु-मक्खियों के छत्तों को संयुक्त कर रक्खा था। जैसे ही ब्रिटिश सिपाही पास आये कि एक छिपे हुए जर्मन ने मधु-मक्खियों को उकसा दिया। मधु-मक्खियों ने इस बुरी तरह से ब्रिटिश-सिपाहियों पर धावा किया कि उन्हें अपनी जान बचानी भी मुश्किल हो गई!

मैं शेर बन गया

लेखक, श्रीयुत गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०

हरिद्वार के पास का वन कजली वन कहलाता है। जंगली हाथी वहाँ झुण्ड के झुण्ड घूमते हैं। शेरों की दहाड़ भी ख़ूब सुनाई पड़ती है। यह वन हज़ारों मील तक फैला है। इसी वन के एक कोने पर एक रियासत सहानपुर है। उसका एक राजा था। बड़ा निशानेबाज़ था। बन्दूक़ की गोली कभी ख़ाली नहीं जाती थी। पैदल शेर का शिकार खेलता था।

एक दिन राजा शेर का शिकार खेलते-खेलते ख़ूब दूर निकल गया। शेर हाथ न लगा। वन में एक बारहदरी थी। वह अच्छी हालत में न थी, पर साफ़ थी। बारहदरी के पास कमलों से भरा तालाब था। राजा उसके पास से होकर निकला। लोग कहते थे कि इस बारहदरी में कोई बड़ा महात्मा रहता है। राजा को वह बारहदरी हाथ लग गई। ख़ूब ढूँढ़ा-भाला। पर महात्मा के दर्शन न हुए। सोचने लगा, सब गप्प है। यहाँ महात्मा-वहात्मा कोई नहीं है।

थोड़ी दूर आगे गया। एक शेर दिखाई दिया। शेर तालाब की ओर जा रहा था। राजा ने निशाना ताका। पीछे से गोली चला दी। भाग्य से ही शेर बचा। पर गोली एक पैर को छेद गई। राजा दूसरा वार करनेवाला ही था कि एक महात्मा को शेर की जगह खड़े देखा। लम्बी दाढ़ी थी। नङ्गा बदन था। हाथ से ख़ून बह रहा था।

राजा समझ गया कि महात्मा जी ही शेर बने हुए थे। वह महात्मा जी के चरणों में गया। महात्मा जी के पैर पकड़ लिये। महा जी ने कहा, ख़ैर जा। अपराध तो किया पर कुछ नहीं कहूँगा। हाँ आज से बारहदरी के आ पास एक मील तक किसी शेर को न मारना

राजा शाम को घर लौटा। यह कथा क आग की तरह यह फैल गई। जिसके मुख सुनो वही राजा और महात्मा की चर्चा क था। मैं भी वहीं रहता था मैंने भी सुनी। इस विषय की पुस्तकें भी बहुत पढ़ता था मैंने सोचा, मैं भी महात्मा को ढूँढ़ूगा। पर का डर था। कभी-कभी थोड़ी दूर जंगल जाता। डर तो लगता। सोचता शायद महा जी इधर भी आ जायँ। पर आगे जाने की हिम्म न होती।

धीरे-धीरे कई साल बीत गये। मुझे के अन्दर जाने की भी हिम्मत होने लगी अब मैं 'स्काउट' बन गया था। अन्य बाल के साथ मैं भी एक बार वन में गया। बालचर निशान बनाते और खोजते फिरते मैं खोज रहा था 'बारहदरी' को। मैं आगे ही गया। डर तो लगता था पर हिम्मत न

संध्या हो चली थी। सहसा खोजते-खो मैं एक तालाब पर आया। तालाब के कि महात्मा जी ध्यान में बैठे थे। मैं समझ गया वे ही महात्मा हैं। मैं बैठ गया। महात्म ध्यान करते रहे। रात हो चली थी। उन

आँखें खोलीं। मुझे सामने देखा। बड़ा आश्चर्य हुआ। बोले बच्चा! तू कौन? यहाँ से भाग जा। यहाँ शेर लगते हैं।

मैं चरणों में पड़ा। हाथ जोड़ बोला—कहाँ जाऊँ? रात में रास्ता कहाँ पाऊँगा? फिर आपके दर्शनों को ही चाहता था। अब जब आपके दर्शन पा लिये, तो क्यों भागूँ। अब तो जिस काम को आया हूँ, करके जाऊँगा।

महात्मा जी बोले—क्या काम है?

मैंने कहा मैं शेर बनने की तरकीब सीखना चाहता हूँ।

महात्मा जी ने बहुत हीला-हवाला किया। अन्त में इनकार कर दिया।

मैं दो दिन वहीं पड़ा रहा। थोड़े से चने झोली में थे। उन्हें ही खा पानी पिया। अन्त में महात्मा जी को झुकना पड़ा। उन्हें तरकीब बतानी ही पड़ी।

वे बोले, बेटा! एक शेर का मुख गर्दन पर से काट लाओ। उसमें चिरचिटी के बीज बो दो। कुछ समय पश्चात् पेड़ उगेगा। दाने आयेंगे। उन दानों की एक माला बना लो। जब वह माला मुख में रक्खोगे, शेर बन जाओगे।

मैं प्रणाम कर घर आया। इस फ़िक्र में था कि शेर का सिर कहाँ से मिले। सहानपुर के राजा का मुँहलगा एक नौकर था। उस नौकर का लड़का मेरा मित्र था। मैंने उस लड़के से कहा कि यदि तेरा पिता शेर का सिर ला दे तो जो मांगे वह दूँ। उसने अपने पिता से पूछा। पिता ने २००) माँगे। मैंने मंज़ूर किये। शेर का सिर आगया। बीज भी बोये गये। पेड़ लगा। इस बीच में उस नौकर ने मुझे काफ़ी परेशान किया। झट २००) माँगने आ खड़ा होता। मैं टालता रहा। माला गूँथी। उसी दिन वह रुपये माँगने आया। मैंने कहा कल ज़रूर दे दूँगा। वह बोला यदि कल नहीं दिये तो लाठी से ख़बर लूँगा। उसके जाने पर मैंने शीशा सामने रक्खा माला मुँह में दी। मैं शेर बन गया। बड़ा ख़ुश हुआ। माला जेब में रक्खी।

मैं शाम को घर से निकला। माला जेब में थी। मेरा एक परम मित्र था। वह बैठक में बैठा दोस्तों से गप्प हाँक रहा था। मेरा मित्र कह रहा था, मैं शेर से नहीं डरता। शेर क्या, शेर का बाप भी क्यों न हो? देखना तो। हमें जंगल की सैर करनी है। मैंने माला मुँह में रक्खी झट से बैठक में कूद पड़ा। सब भय से चिल्ला पड़े, "शेर, शेर"। सिर पर पैर रख दौड़े। मेरे मित्र का बुरा हाल था। बनिया ही जो ठहरा। बेतहाशा दौड़ा। धोती का तहमद बँधा था। वह किवाड़ में उलझ गया। धोती वहीं रह गई। मित्र ने पीछे फिरकर भी न देखा। दूर जाकर चिल्लाया, "शेर, शेर।"

मैंने माला मुँह से निकाल जेब में रक्खी। थोड़ी देर में बहुत-से आदमी छूरी-काँटे से लैस हो शोर मचाते आये। किसी की हिम्मत न पड़ी कि बैठक में झाँके। किसी ने मेरे मित्र से कहा, धनपत देख तो शेर है या नहीं। मित्र के मुँह से बोल न निकला। गिड़गिड़ाकर हाथ जोड़कर बोला; नहीं भइया! इतनी तू ही दया कर।

तू पहलवान है। अखाड़े का उस्ताद है। तू ही देख। बड़ा गुन मानूँगा। पर पहलवान की भी हिम्मत न होती थी। जान किसे प्यारी नहीं।

अन्त में एक जार के लड़के ने कहा, लो मैं देखता हूँ। डरते-डरते धीरे से थोड़ा-सा सिर आगे कर उसने मुझे कुर्सी पर बैठे देखा। अब तो उसे हिम्मत आगई। वह बैठक में कूदा और भी पीछे हो लिये। मुझसे पूछा, यहाँ शेर देखा है? मैंने कहा, मैं तो अभी-अभी आ रहा हूँ। शेर-वेर कहीं नहीं।

थोड़ी देर वहाँ रहा। अँधेरा हो चुका था। बाज़ार पहुँचा। सर्राफ़े की तरफ़ गया। सर्राफ़ लोग दूकान जल्दी ही बन्द करते हैं। सबसे अधिक चोरों का भय इन्हीं को है। जमा-पूँजी सब घर ले जाते हैं। एक मोटे लाला दूकान बन्द कर रहे थे। एक ताला लगाया। झटका लगाकर देखा कि खुल तो नहीं जायगा। दूसरा ताला बन्द किया। एक नज़र पास रक्खी थैली पर फेंकी। थैली वहीं थी। ताले को झटका। तीसरा ताला बन्द कर रहे थे। मैंने मौक़ा अच्छा समझा। झट से माला मुँह में दबाई। झपटकर उनके पास पहुँचा। उन्होंने शेर देखा। मुँह से बोल भी न निकला। तरबूज़ की तरह लुढ़क पड़े। मैंने थैली कबजाई। चम्पत हुआ। माला मुँह से निकाल दूर जा खड़ा हुआ।

सेठ जी को होश हुआ। इधर-उधर तनिक आँख खोलकर देखा। भय से थर-थर काँप रहे थे। शेर न देखा। जान में जान आई। पूरी आँखें खोलीं। बैठे हुए ज़ोर से चिल्लाये, शेर, शेर। लोग दौड़े। पर वहाँ कहाँ शेर था। सेठ जी की हँसी हुई। कोई बोला, सेठ जी सो रहे थे दूसरा बोला, नहीं कोई शेर की तसवीर बेचने वाला होगा। तीसरे ने कहा, जंगल का आगया था क्या?

लोग चले गये। सेठ जी ने थैली ढूँढ़ी पर वहाँ कहाँ थी। बहुतेरा खोजा। पर वह मिलने लगी थी। पूछा, लोगों के हाथ-पैर कि कहीं देखी हो तो बता दें। हारकर बैठ मैंने घर ला एकान्त में खोला। २०० रुपये नोट और १४५ रुपया आठ आना २ पैसे नक़द २०० रुपये तो शेर के सिर लानेवाले को दिये बाक़ी से मौज़ उड़ाने लगा।

अब तो चसका लग गया। मुफ़्त में हाथ लगे इससे बढ़कर आनन्द क्या होगा शेर बनकर रुपया लाने लगा। बड़ा ख़ुश कभी मन में सोचने लगता कि अच्छा कर हूँ या बुरा? इसका फल क्या होगा? को पता लग गया तो क्या जवाब दूँगा? गुलछर्रे उड़ते रहे।

एक दिन की बात है। मैं शेर बना। की गड्डी ले भागा। मुझे पता न था कि को मारने के लिए जगह-जगह पुलिस हो गई थी। शेर दौड़ रहा था। इसी एक पुलिसवाले ने गोली दागी। गोली कान के पार हुई। हृदय लरज गया। घबराया कि माला मुँह से निकल पड़ी। तरफ़ से आदमी डंडे ले दौड़े। पुलिसवालों सीटियाँ काम कर रही थीं। हज़ारों की भीड़

। मैं जान बचाने को भागा। पकड़ लिया । मेरी माला वहीं गिर पड़ी थी। मेरे हाथ गये। मैंने प्रार्थना की कि मैं एक चीज़ लाऊँ। किसी ने ध्यान न दिया।

कोतवाली ले जाया गया। तलाशी हुई। के बंडल निकले। मार पड़ी। मार ने सब दिया। मैंने सब क़िस्सा कह दिया। यक़ीन न आया। माला की ढुँढ़वाई हुई। न मिली। परिणाम सामने था। मेरे घर की तलाशी हुई। मेरे बैठक में एक सन्दूक़ पाया वह मेरा सन्दूक़ था। उसमें बहुत-सा माल निकला। सोने-चाँदी के गहने भी थे। एक के थे। उसने पहचान लिये। उसने कहा कि एक दिन शेर आगया था। मैं दूकान छोड़ गया था। गहने नदारद हो गये।

हुक्म सुनाया गया। ६ साल की क़ैद। भी सख़्त। पर नाबालिग़ था। अतः रिफ़ारमेटरी स्कूल भेजा गया। बालिग़ होने पर जो .क़ैद बाक़ी होगी वह सख़्ती से भुगतनी पड़ेगी।

अब सख़्त .क़ैद में हूँ। चक्की पीसनी पड़ती है। कमर पर डंडे पड़ते हैं। जी में आता है जेलर को खा जाऊँ पर माला तो पास है ही नहीं। यदि माला पास होती तो कभी का जेल के बाहर पहुँच गया होता। रोता हूँ, बड़ा दुखी होता हूँ। पर्चे लिखकर फेंक देता हूँ कि किसी को माला मिल जाय तो मुझे दे जाय। .खूब रुपया दूँगा।

आप भी इस कहानी को पढ़ रहे हैं। दया करना। आपको वह माला मिल जाय तो मुझ तक पहुँचा देना। बड़ा उपकार मानूँगा। अब किसी का कुछ न छीनूँगा। बस एक बार शेर बनकर जेल के बाहर हो जाऊँ। फिर न बनूँगा। भेजोगे माला ? अवश्य भेजना।

लल्ला भाई

लेखक, श्रीयुत सुन्दरमल एक विद्यार्थी

छोटा लल्ला भाई, कैसा मीठा पाजी है।
री से वो मेरी माला, ले जाने में राजी है॥१॥
कीनी बीबी जी की, नीली सिल्की साड़ी है।
बीबी रोती डोलें, कापी मेरी फाड़ी है॥२॥
ला को वो छीला बोले, मायारानी माना जी।
को वो पापा बोले, बूढ़े सारे नाना जी॥३॥
ा ये पानी में ही, मेमी है गा गीले का।
भावे पेड़े बालूसाई पूड़ी चीले का॥४॥
.गुस्से के आ जाने से तो, लोटा-लोटा डोलेगा।
कोने में फूला बैठेगा, घंटों ही में बोलेगा॥५॥
बंगाली-मिठाईवाला, जैसे द्वारे आता है।
हाथों में से जल्दी पैसा, दे के गप्पा खाता है॥६॥
मौसी जी की गोदी बैठे, न लेने दे लाली को।
बक्सा खोलूँ कैसे देखो, खो आया है ताली को॥७॥
'छन्नो देवी' सीखी तूने, जंदा ऊँचा गावे तू।
ऐसा छोटा लल्ला भाई, बिब्बी के जी भावे तू॥८॥

पहले और आज के सिक्के

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी, 'व्रजेश', मिर्ज़ापुर

प्रिय पाठको इसके पूर्व कि मैं अपना लेख शुरू करूँ मैं आप लोगों को यह बतलाना चाहता हूँ कि जिन सिक्कों का मैं वर्णन कर रहा हूँ वे आज नहीं—उस समय प्रचलित थे जब कि मानव-सभ्यता का विकास नहीं हुआ था। उस समय आज का ताम्र-युग नहीं था और न आज की तरह इतने आविष्कार ही हुए थे। आविष्कारों के बढ़ने ही के कारण सिक्कों की ज़रूरत बढ़ने लगी और फलस्वरूप सिक्कों का वह रूप हो गया जिसे आज हम लोग देख रहे हैं। नहीं तो हम लोगों को भी सिक्कों का वही पुराना रूप (फावड़ा, चाकू की तरह) देखने को मिलता।

प्राचीन काल में मलक्का (मलाया प्रायद्वीप) में वृक्ष के रूप में सिक्कों को बनाया जाता था। सेब इत्यादि की तरह एक दर्ज़न सिक्के एक वृक्ष में होते थे। इन पेड़ों का स्वामी अपनी इच्छानुकूल इन सिक्कों को तोड़कर अपना कार्य निकालता था और जब सिक्के ख़त्म हो जाते थे तो वह फिर धड़ को फेंक देता था क्योंकि फिर उनकी कोई क़ीमत नहीं रह जाती थी।

कुर्दिस्तान में पहले चाँदी के पतले तारों के सिक्के होते थे। बहुत पहले वहाँ गोंद के बूँदों से सिक्कों का काम लिया जाता था यहाँ मिश्री के टुकड़ों के भी सिक्के चलते थे।

एक समय वह था जब कि बर्मा देश में चाय सिक्कों की तरह व्यवहार में लाई जाती थी। रूस जैसे सुखी और समृद्धशाली देश पहले रोटी सिक्कों के रूप में चलती थी। दक्षिणी समुद्र के वेनीकोरो द्वीप में पक्षियों के पंख सिक्कों की तरह चलते थे। अमरीका जैसे सभ्य देश में भी १७ वीं सदी तक कौड़ियों के सिक्के प्रचलित थे। बहुत दिनों तक दक्षिणी समुद्र के याप नामक द्वीप में पत्थरों के टुकड़े सिक्कों की तरह चले। फ़ीजी द्वीप में कोई समय में ह्वेल मछली के दाँतों के बने हुए सिक्के प्रचलित थे और अफ़्रीका में हाथी के बालों के।

यह तो हुई पहले की बात। लेकिन आपको यह जानकर बहुत ताज्जुब होगा कि आधुनिक समय में भी—जब कि मानव-सभ्यता का पूर्ण रूप से विकास हो चला है—तब भी कहीं-कहीं विचित्र व अनोखे सिक्के चलते हैं। मनोरंजनार्थ मैं आजकल के कुछ अद्भुत सिक्कों का वर्णन करता हूँ—

फ़्रेन्डली टापू के निवासी अब तक शार्क मछली के दाँतों को सिक्कों की तरह चलाते हैं। दाँतों के रंग लाल व सफ़ेद होते हैं। सफ़ेद दाँत लाल दाँतों की अपेक्षा २० गुनी अधिक क़ीमत के होते हैं।

न्यूगिनी में आज भी कुत्ते के दाँत सिक्कों के रूप में चलते हैं। अब भी मध्य अफ़्रीका में हाथी के बालों के सिक्के चलते हैं। कहीं कहीं पत्थर के टुकड़ों के सिक्के अब भी चलते हैं।

मंगोलिया में अब भी जब कोई यात्री अपने रूसी सिक्कों को मध्य एशिया के सिक्कों से बदलना चाहता है तो वहाँ के इस महकमे के आदमी उसके बराबर मूल्य का चाँदी का टुकड़ा उसे दे देते हैं। यही मंगोलिया का सिक्का है।

मंचूरिया में बहुत दिनों तक वहाँ के प्रान्तीय गवर्नरों ने अपने काग़ज़ी सिक्के चलाये। जितने सिक्कों की उन्हें ज़रूरत होती थी उतने वे प्रेसों में छपवा लिया करते थे। वहाँ के नोट सुन्दर और छोटे होते थे।

"जो मेरे वश में होता"

लेखिका, कुमारी "चाँद", अमृतसर

जो मेरे वश में होता,
मैं नन्हा शिशु बन जाता—
  रार ठानकर
  मचल-मचलकर,
अम्मा को ख़ूब सताता ॥

सबका प्यारा बन जाता,
ना चपत किसी से खाता—
  पुलकित होकर
  किलक-किलककर,
मैं सबका जी बहलाता ॥

मुन्नी को पीटा करता,
तो भी 'राजा' कहलाता—
  दौड़-दौड़कर
  कूद-कूदकर,
घर भर में धूम मचाता ॥

पिता मिठाई यदि लाते,
फ़ौरन गले लिपट जाता—
  ठुनक-ठुनककर
  झगड़-झगड़कर,
सबसे ज़्यादा पा जाता ॥

जो मेरे वश में होता,
भाई, ना देर लगाता—
  कोशिश करके
  ज़ोर लगाकर,
'नन्ना मुन्ना' बन जाता ॥

एक हास्य-रस की कहानी

'अँधरसट्ट'

लेखक, श्रीयुत पन्नालाल गर्ग

आज से पूरे पचास वर्ष पहले की बात है। एक सेठ जी अपनी बैलगाड़ी पर सवार होकर अपनी स्त्री को साथ लिये गंगा जी नहाने जा रहे थे। रास्ते में एक अंधा मिला। उसने आवाज़ दी—

"साहु जी, गाड़ी में मुझे भी बैठा लो, आगे के गाँव में उतर जाऊँगा।"

सेठ जी ने कहा—"नहीं, नहीं गाड़ी में जगह नहीं है।"

अंधा गाड़ी के पीछे-पीछे गिड़गिड़ाता हुआ चलने लगा—साहु जी अंधे पर दया करो, एक कोने में मुझे भी बैठा लो।

सेठानी जी ज़रा दयावान थीं, वे बोलीं—"बैठा न लीजिए, बेचारा अन्धा है, घिसलता-घिसलता जा रहा है। आगे के गाँव में तो उतर ही जायगा।"

सेठ जी ने कहा—"देखो न हट्टा-कट्टा है, चला जायगा अपने आप, इसको गाड़ी में बैठाना ठीक नहीं।"

सेठानी बोलीं—"अरे भला यह बेचारा क्या करेगा, उसकी तो वैसे ही आँखें फूटी हैं।"

सेठ जी ने कहा—"अच्छा फिर बैठा लो।"

"सूरदास! ओ सूरदास! आओ एक किनारे तुम भी बैठ जाओ।"

सूरदास आशीर्वाद देता हुआ गाड़ी पर चढ़ बैठा—"भगवान् तुम्हारा भला करें, पुत्र चिरंजीव रहें।"

सेठानी बोलीं—"अरे! इसी बात का ही तो अफ़सोस है कि अभी तक भगवान् ने सन्तान का मुख नहीं दिखलाया है।"

सूरदास बोला—"भगवान् करे आपको जल्द ही सन्तान के दर्शन हों।"

सेठानी की आँखों से आँसू उमड़ पड़े।

सूरदास ने पूछा—"सेठानी तुम्हारी उम्र क्या है?"

"कोई पैंतीस वर्ष के लगभग होगी।" सेठानी ने आँखें पोंछते हुए उत्तर दिया।

इसी तरह सूरदास सेठानी की उम्र, जाति, गाँव के बारे में पूछ-ताछ बराबर करता रहा। तब तक उसका गाँव भी आगया।

सेठ जी ने पुकारकर कहा—"सूरदास! ओ सूरदास! तेरा गाँव तो आगया।"

सूरदास मौन रहा।

"सूरदास! उतरो! यहीं तो उतरने को कहते थे।"

सूरदास चुप्पी साधे था।

"सूरदास तेरे आँख-कान दोनों फूट गये हैं क्या?"

सूरदास फिर भी न बोला।

सेठ जी ने उसको हिलाकर कहा—"गाँव आगया।"

"तो उतरते क्यों नहीं?"—सूरदास ने जवाब दिया।

सेठ जी तो यह सुनते ही सन्नाटे में आगये। "सूरदास, पागल हो गये हो क्या? तुम उतारोगे कि हम?"

सूरदास ने कहा—"जब तेरा गाँव आगया तो उतरता क्यों नहीं पाजी, वाहियात में सूरदास-सूरदास चिल्ला रहा है।"

सेठानी ने दाँतों-तले उँगली दबा ली।

दोनों ने हाथ पकड़कर अंधे को गाड़ी से उतार दिया।

अब तो लगा अंधा चिल्लाने—"अरे बाप बचाओ, हमें मारे डालत है। हमरी मेहररुओ का लिये भागा जात है।"

चिल्लाहट सुनते ही गाँव के पुलिस, मुखिया सभी दौड़ आये और पूछने लगे—'क्या बात है सूरदास?'

"अरे कुछ पूछौ न सरकार, हम अपनी बैलगड़ीवा पर अपनी औरत का बैठाये गंगा नहाये जात रहे, रस्ते मां ई सेठ जी मिलें ऊ कहिन की हमऊ का बैठाय लेव दुई चारि रुपैया देब तौने से हम बैठाय लिया औउ इही ना माँ उतरै का कहत रहें तौन अब उनकी नियत खराव जनात है देखौ न सरकार गड़ीवौ और मेहरारू दोनों पर हाथ साफ करा चाहत हैं।"

मुखिया ने पूछा—"क्या बात है सेठ जी।"

सेठ जी ने कहा, "कुछ पुछिए न, हम लोग बैलगाड़ी पर गंगा नहाने के लिए जा रहे थे। रास्ते में यह अंधा मिला और गिड़गिड़ाने लगा कि ज़रा-सा गाड़ी पर बैठा लें आगे के गाँव में उतर जायेंगे। और गाँव आया और हमने उतरने को कहा तो हमसे ही उलटा उतरने को कहता है। और जब हमने इसे ज़बर्दस्ती उतार दिया तो लगा चिल्लाने।"

मुखिया ने फिर सेठानी जी से पूछा—"बोलो क्या मामला है?"

सेठानी ने कहा—"जो लाला जी कहते हैं ठीक है।"

अंधा फिर बोल उठा—"हजूर हमार औरतियो की नीयत डोल गई है। येहू सेठ जी के साथ जावा चाहा थी।"

मुखिया के मामला कुछ समझ में न आया। उसने तीनों को अलग-अलग कोठरी में बन्द कर दिया और कहा—"कल सबेरे फ़ैसला होगा।"

सेठ और सेठानी मुँह लटकाये अपनी-अपनी कोठरी में रो रहे थे।

सेठानी कहतीं—"देखो लाला जी ठीक ही कहते थे कि अन्धे बड़े फ़सादी होते हैं, हमने ही ज़िद की उसी का नतीजा है बैठे-बैठाये एक आफ़त मोल ले ली।"

सेठ जी कह रहे थे—"औरतों की बातों में कभी न आना चाहिए। मैंने तो पहले ही जान लिया था।"

और अंधा अपनी कोठरी में एक कोने से दूसरे कोने में कूदता और गाता—

एक अँधरसट्ट लगाया है,
नारि पराई पाया है,

पाया है तो पाया है,
नहीं तो गंग नहाया है,

और फिर कूदकर दूसरे कोने में पहुँच जाता।

इसी तरह वह अंधा गाता कि—"एक अँधरसट्ट लगाया है नारि पराई पाया है।" और एक कोने से दूसरे कोने में कूदता और ख़ूब हँसता।

मुखिया तो यह सब देख ही रहा था। उसने सेठ और सेठानी को तो छोड़ दिया और एक हंटर लेकर अंधे की कोठरी में घुसा। अ अंधा जैसे ही एक कोने से कूदकर दूसरे कोने में जाता वैसे ही 'सट्ट' से एक हंटर पड़ जाता।

अब तो 'सटा-सट्ट' अंधे की पीठ पर जम पड़ने लगे तो अंधे का सारा 'अँधरसट्ट' भूल गया।

सेठ जी ने उलटे अपने गाँव की राह ली। सेठानी ने कहा—"बस गंगा नहा चुके।"

"हरिकीर्तन"

लेखक, श्रीयुत सुकवि "शेष" श्रीवास्तव, परौरी

भजि ले मन श्री सीताराम।
असुर निकन्दन राधेश्याम॥

वही वृज की रज शिर पै धारा करेंगे।
तुम्हें भानुजा तट निहारा करेंगे॥
बसो आ के घनश्याम तुम मनके मन्दिर।
तो हम आरती नित उतारा करेंगे॥

जय रघुनन्दन जय सुखधाम।
भजु निशिवासर श्री घनश्याम॥

तरसते हैं दरशन को भारत-निवासी।
अहः कब तलक क़ौल टारा करेंगे।
सताते हैं याँ दुष्ट नित दीन जन को।
दुखी दास कब तक पुकारा करेंगे॥

जय अवधेश सुअंग ललाम।
जय वृजवल्लभ जय घनश्याम॥

बहुत सह चुके हैं बहुत सुन चुके हैं।
न कटु बैन अब तो गवारा करेंगे।
प्रभो शीघ्र ही क्षीरसागर से आओ।
तो फिर हम भी हिम्मत न हारा करेंगे॥

जय मधुसूदन जय गिरधारी।
जय सीतापति अवधबिहारी॥

पढ़ा दो वही पाठ गीता का फिर से।
न अब भूल के भी बिसारा करेंगे।
दुखी हो के कवि "शेष" कहते यही हैं।
तुम्हें छोड़ किसका सहारा करेंगे॥

जय पद पावन सीता राम।
जय नँद-नन्दन जय घनश्याम॥

मेरी देहली-यात्रा

लेखक, श्रीयुत जवाहरलाल

मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि पर्यटन शिक्षा का एक अङ्ग है। इसी वाक्य से प्रेरित होकर मेरी भी इच्छा पर्यटन के लिए बलवती हो गई। मैं इस अवसर की आतुरता से राह देख रहा था। ईश्वर की कृपा से गत दिसम्बर मास में वह सुवर्ण सन्धि अनायास उपलब्ध हुई।

पूज्य पिता जी अपने आवश्यकीय कार्य के हेतु उज्जैन, इन्दौर तथा देहली तक जाने-वाले थे। मेरी भी दिसम्बर की छुट्टी थी अतः अनुज कृष्णलाल के साथ में मैं भी पिता जी के साथ भ्रमण करने निकल पड़ा।

आमला जङ्क्शन (जी० आई० पी०) से २४-१२-४० को ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से इन्दौर के लिए रवाना हुए। ता० २५-१२-४० को १ बजे हम उज्जैन पहुँचे।

उज्जैन में रुकने का विचार तो था परन्तु इन्दौर के ख्याति प्राप्त राजवैद्य श्री ख्यालीराम जी से मिलना आवश्यक था। क्योंकि उनसे मिलने का टाइम पहले ही से निर्धारित हो गया था। इसलिए उज्जैन में रुक नहीं सके। बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे से उसी दिन चार बजे शाम को इन्दौर पहुँचे। बीयावानी में वैद्यराज जी से मिले व वापिस सराय में मुक़ाम किया।

२६-१२-४०, सवेरे प्रातः दैनिक कृत्यों से निश्चिंत होकर कुछ जलपान किया। क़रीब ८ बजे वैद्य जी से मिलने के लिए चल पड़े। ग्यारह बजे तक वैद्य जी से मिले। इसके बाद शीशमहल देखने गये। यहाँ भगवान् बुद्ध की मूर्ति देखने योग्य है। २॥ बजे दिन को मोटर से उज्जैन के लिए रवाना हुए व शाम को ६ बजे "कल्प वृक्ष" सम्पादक माननीय डाक्टर दुर्गाशंकर नागर के यहाँ मुक़ाम किया।

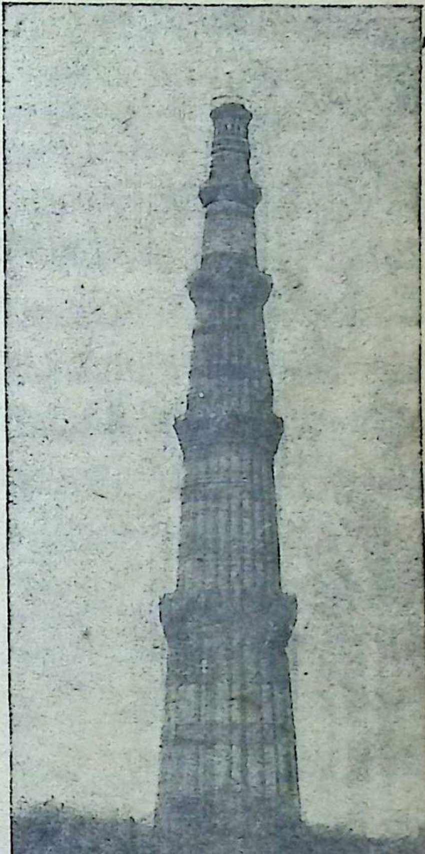
कुतुबमीनार

डा० नागर जी के व्यक्तित्व से यहाँ का वातावरण ऋषि-आश्रम के समान जान पड़ता

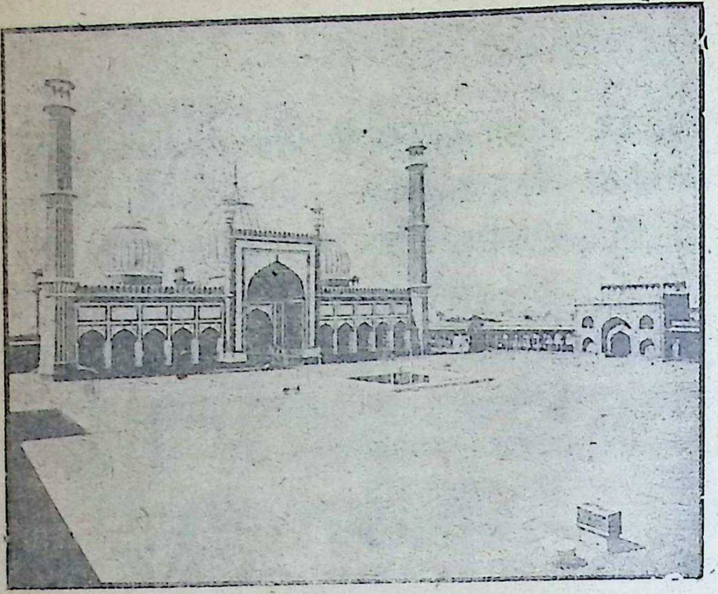

जामा मसजिद दिल्ली

है। यहाँ सदैव ही ईश्वर-चिन्तन व आध्यात्मिक विद्या की महिमा गाई जाती है। हम लोग भी संध्या की प्रार्थना में शामिल थे। यहाँ एक विचित्र प्रकार की शान्ति का अनुभव होता है। यहीं पर यौगिक व्यायाम के आचार्य स्वामी ओंकारानन्द जी से साक्षात्कार हुआ।

ता० २७-१२-४० को उज्जैन से भोपाल आये। यहाँ क़ाज़ी अब्दुल हलीम के यहाँ मुक़ाम किया। ये बड़े मिलनसार व्यक्ति हैं।

आज भोपाल के दर्शनीय स्थान देखते रहे। ता० २८-१२-४० को हम ८ बजे देहली पहुँच गये। वहाँ फ़तेहपुरी धर्मशाला में ठहरे। देहली में निम्नांकित स्थान दर्शनीय हैं।

जुम्मा मसजिद

यह मसजिद शाहजहाँ नामक मुग़ल बादशाह की बनवाई हुई है। यह इमारत बहुत ही भव्य तथा कलापूर्ण है। इसकी सुन्दर-सुन्दर मीनारें तथा गुम्बज देखने योग्य हैं। लोगों का कहना है कि पाँच हज़ार लोगों ने ६ वर्ष काम करके यह मीनार बनाई थी। जुम्मा मसजिद देखने के पश्चात् हम पुराना क़िला देखने गये। इसकी दशा अब बहुत खराब है। जगह जगह दीवाल खड़ी है। बग़ीचे की दशा अब भी बहुत अच्छी है। यहीं एक अशोक की लाट है। उसके ऊपरी भाग पर एक मूर्ति बनी थी। यह मूर्ति तोड़कर कलकत्ता के अजायबघर में पहुँचाई गई है। अशोक की लाट के पास एक सुरंग बनी है; जो कि आगरा तक गई है। पास में

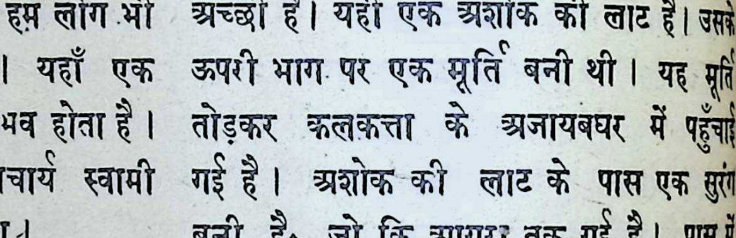

दिल्ली का कौंसिल चैम्बर

पृथ्वीराज के आराम करने की जगह बनी है जहाँ चीनी मिट्टी के पाइप लगे हैं और बीच में एक फ़व्वारा बना है। अब ये सब टूट गये हैं। देहली से १२ मील की दूरी पर कुतुबमीनार है। इस मीनार को बने कई सौ साल हो गये पर यह अब भी नई-सी दिखती है। यह मीनार गोल घेरे में है। नीचे का घेरा लगभग १२० हाथ है। पूरी मीनार लगभग १६५ हाथ ऊँची है। इसमें कुल खुली छतें हैं। पूरी मीनार सफ़ेद और लाल पत्थर की बनी है। उस पर अरबी और फ़ारसी भाषा के अक्षर खुदे हैं। इस मीनार को क़ुतुबुद्दीन ऐबक बादशाह ने बनवाई है। इस मीनार के पाँचवें खण्ड पर चढ़कर देखने से सारी देहली दिखाई देती है। नीचे के आदमियों को देखने से मालूम पड़ता है मानों छोटे-छोटे लुढ़क रहे हैं।

एक घंटा देखने के पश्चात् हम वापस चले। रास्ते में हमको विलिङ्गडन एयर स्टेशन मिला जिसमें दो-तीन हवाई जहाज़ हमको उड़ते हुए दिखाई पड़े। शाम हो जाने के कारण हम वापस लौटे। रास्ते में हमको वाइसराय का व कौन्सिल चैम्बर ये दो विशाल इमारतें नई देहली में देखने को मिलीं। न्यू देहली में रात्रि को जिस समय विद्युत्-प्रकाश होता है; तब ऐसा जान पड़ता है मानो असंख्य दीपमालायें एक साथ ही प्रज्वलित हो उठी हों।

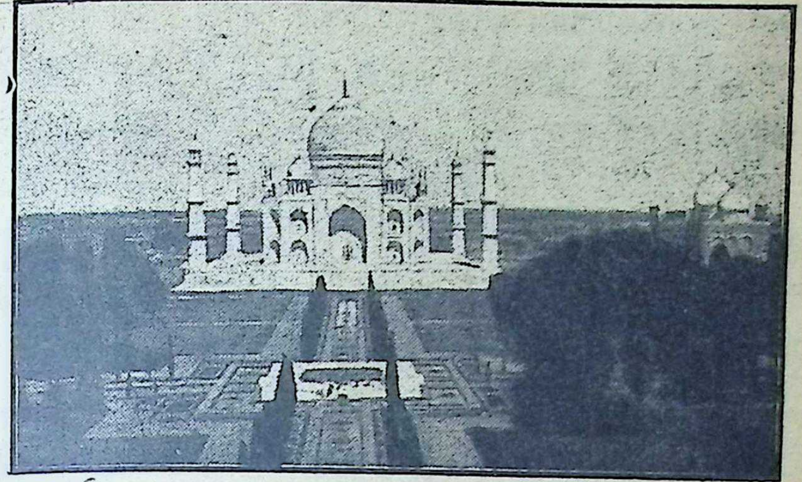

ताजमहल

वे गगनचुम्बी प्रासाद, विस्तीर्ण सड़कें व उन पर नियमानुकूल चलनेवाली सवारियाँ, सजी हुई भव्य दूकानें एवं सारा दृश्य वर्णनातीत ही है।

ता० २९-१२-४० को हम छूटे हुए स्थान देखने गये। सबके पहले हम बिड़ला मन्दिर देखने गये। यह मन्दिर बहुत बड़ा है। पूरा मन्दिर संगमर्मर का बना है। जगह जगह सारे मन्दिर में वेद की ऋचायें मोहक ढंग से लिखी गई हैं। तथा उसी के स्पष्टीकरण के निमित्त कलापूर्ण सुन्दर तैल-चित्र का भी चयन किया गया है। इसके एक तरफ़ सराय व दूसरी तरफ़ बौद्ध-धर्मावलम्बियों का मन्दिर है। यहाँ से जन्त्र-मन्त्र देखने गये। यहाँ धूपघड़ी है। जन्त्र-मन्त्र देखकर २ बजे वापस लौटे। व चार बजे की ट्रेन से मथुरा के लिए रवाना हुए। रात भर चलने के पश्चात् ८ बजे मथुरा पहुँचे। मथुरा में सुख-संचारक कम्पनी व मुख्य-मुख्य मन्दिर देखकर वापस लौटे।

ता० ३१-१२-४० को मोटर के द्वारा

आगरा के लिए रवाना हुए। क़रीब ९ बजे आगरा पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर ताजमहल देखने के लिए प्रस्थानित हुए।

ताजमहल

ताजमहल आगरा में यमुना के किनारे बना हुआ है। इसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्यारी बेगम मुमताज़ महल की यादगार में बनवाया था। इसे बने यद्यपि सैकड़ों साल हो गये हैं तथापि इसे देखने से ऐसा मालूम होता है मानों आज ही बनकर तैयार हुआ हो। पूरा महल संगमर्मर, संगमूसा, फ़ीरोजा आदि बहुमूल्य पत्थरों का बना है। ये पत्थर दूर दूर देशों से मँगवाये गये थे। चतुर से चतुर कारीगर इस देश से व दूसरे दूसरे देश से बुलवाये गये थे। ताजमहल के कोनों पर जो चार मीनारें हैं इतनी ऊँची हैं कि उन पर चढ़कर यदि पैसा फेंका जाय तो टेढ़ा हो जाता है। यह इमार आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई। इसे बनवा में चार करोड़ रुपया खर्च हुआ और बीस हज़ा आदमी लगे रहे। इस सुन्दर और विचित्र इमार को देखने के लिए दूर दूर के देशों से यात्र आया करते हैं। ताजमहल देखकर हम वाप लौटे। रास्ते में हमको क़िला पड़ा। यह क़िल पत्थर का बना हुआ है। यह क़रीब क़रीब एक मील के घेरे में है। क़िला देखकर हम वापस लौटे। सबेरे की ग्रांड ट्रंक में बैठकर तारी १-१-४१ को आमला आगये।

कितने दिन में ?

लेखक, श्रीयुत शंकरलाल अग्रवाल

सघन पेड़ की कुछ शाखों पर।
बीन-बान के तिनके लाकर॥
रच-रच रुचिर घोंसला बना।
चिड़ियों ने अंडों को जना॥
कहीं नज़र बिल्ली की कड़ी।
उन अंडों पर जाकर पड़ी॥
मुँह में पानी भर-भर आया।
उसका जी रह-रह ललचाया॥

गड़ा-गड़ाकर पंजे अपने।
बिल्ली लगी पेड़ पर चढ़ने॥
निशि में १२ .फ़ुट चढ़ जाती।
दिन में फ़िसल ८ .फ़ुट आती॥
मगर नहीं हिम्मत वह हारी।
करती रही परिश्रम भारी॥
आख़िर ३६ .फ़ुट वह चढ़ के।
अंडों तक पहुँची गिर-पड़ के॥

बालक चतुर, विचारो मन में।
बिल्ली पहुँची कितने दिन में ?

मोतियों का भुट्टा

लेखिका, श्रीमती कृष्णकुमारी कपूर

एक बार किसी शहर में एक बड़े प्रतापी चतुर राजा राज्य करते थे। उनका प्रधान त्री भी उन्हीं की भाँति विद्वान् था। इस नी की तीन लड़कियाँ थीं। सबसे बड़ी का म था फूलवती, दूसरी का कलावती और सबसे टी जो सबसे सुन्दर थी उसका नाम था वती। यह अपनी दोनों बहनों से अधिक र थी। एक दिन ये तीनों बहनें अपने वन में बैठी आपस में कुछ बातें कर रही थीं। वती ने कहा—"क्या ही बात होती यदि राजा को खाना बनाकर खिला सकती।" यह कर उसने एक लम्बी साँस ली और कुछ चने लगी; इतने में ही कलावती बोली—मैं अपने को धन्य मानती यदि मुझे राजा को दर-सुन्दर कपड़े सीकर पहनाने का सौभाग्य प्त होता।" रूपवती अभी तक चुप थी, कुछ चकर वह भी बोली—"मेरी इच्छा तो थी कि मैं अपने राजा की रानी बनती।"

भाग्यवश उधर से राजा साहब जङ्गल की ओर शिकार खेलने जा रहे थे। उन्होंने इन कुमारियों की सब बातें सुन लीं और वे चार-धारा में गोते लगाने लगे। उनका जङ्गल में जाकर शिकार खेलने को भी मन नहीं हुआ। चते-सोचते उन्होंने यही फ़ैसला किया कि छ भी क्यों न हो जाय वे अवश्य उन लड़कियों की अभिलाषाओं को पूर्ण करेंगे।

अगले दिन उन्होंने मंत्री को अपने पास वा भेजा। जब मंत्री आगया तो उससे कहा कि वह शीघ्र अपनी तीनों पुत्रियों को उपस्थित करे। मन्त्री बेचारा अवाक् रह गया कि आख़िर मामला क्या है? वह मन ही मन सोचने लगा कि मेरी लड़कियों ने ऐसा कौन-सा अपराध किया है जो राजा जी उनको बुलाते हैं। ऐसा ही सोचता-सोचता वह लड़कियों को बुलाने गया और लाकर राजा साहब के सामने खड़ा कर दिया। तीनों बहनें भय के मारे पीली पड़ी जाती थीं। रह-रहकर उनके मन में विचार आते थे और सागर की तरङ्गों की भाँति बह जाते थे। राजा ने उन तीनों तथा (मंत्री जो अभी वहीं खड़ा था) की विचार-धारा को भंग करते हुए कहा—"सुकुमारियो, तुम्हें क्या वे शब्द स्मरण हैं जो तुम्हारे मुख से कल सायंकाल को उपवन में निकले थे?" यह सुनकर तीनों और भी भयभीत हो गईं और सोचने लगीं यदि हम न कहतीं तो कैसा अच्छा था। इतने में फिर राजा बोले—"यदि न हो तो लो सुनो मुझे याद है और उन्होंने सारी बातें उन्हें कह सुनाईं और यह भी कह दिया कि वे उनकी आशाओं को निराशा में न बदलकर पूर्ण करेंगे।" अब तो मन्त्री की प्रसन्नता का ठिकाना न था, शहर में ख़ूब ख़ुशियाँ मनाई गईं। हर स्थान पर रौनक़ थी।

पर अधिक दिन इसी प्रकार हँसी-ख़ुशी में न कट सके। क्योंकि फूल तथा कला, रूप से ईर्ष्या करने लग गई थीं। कारण, वे थीं खाना बनानेवाली और कपड़ा सीनेवाली दासियाँ और यह थी रानी! वे चाहती थीं कि राजा

रानी को छोड़ दे। इन्होंने अनेक उपाय सोचे। अन्त में उन्हें एक जम गया। उन्होंने सोचा कि जब रानी के कोई सन्तान होगी तो हम उसके स्थान पर कोई पिल्ला आदि रख देंगे। राजा सोचेंगे कि रानी तो जानवर के बच्चे को जन्म देती है तो इसे निकाल देंगे। फिर हमारी चैन की बंसी बजेगी। जब रानी के लड़का हुआ तो उन्होंने एक पिल्ला रखकर लड़के को उठा लिया और उसे एक पिटारी में बन्द करके नदी में छोड़ दिया। राजा को जब मालूम हुआ तो उन्हें यक़ीन नहीं आया। जब इन लड़कियों ने बहुत कहा तो वे मान गये। पर केवल इतना ही कहा कि एक बार और देख लो। अगली बार फिर वैसा ही हुआ। तब भी राजा ने कुछ नहीं कहा। तीसरी बार एक सुन्दर लड़की हुई। उसकी जगह पर एक बिल्ली का बच्चा रख दिया गया। अब की बार राजा से न रहा गया और उन्होंने रानी को एक पिञ्जरे के भीतर बन्द करके महल के सामने लटकवा दिया और नगरवासियों को आज्ञा दी कि जो कोई इधर से निकलकर जाय तो रानी पर थूकता जाय। रानी बहुत रोती थी पर कोई उसके ऊपर दया करनेवाला न था।

इधर वे बच्चे पानी के थपेड़े खाते-खाते नदी के पार पहुँचे। वहाँ एक निःसन्तान सेठ-सेठानी रहा करते थे। उन्होंने इनको पाला। और जब ये काफ़ी बड़े हो गये तो एक दिन सेठ जी का स्वर्गवास हो गया। सेठानी भी अधिक दिन तक न जी सकी। पति-वियोग के कारण वह भी अगले वर्ष चल बसी।

अब ये तीनों बहन-भाई अकेले रहते एक दिन दोनों भाई जङ्गल में शिकार खे गये। वहाँ राजा भी आये हुए थे। ये बा शिकार खेलने में बड़े निपुण थे, यह देख राजा बड़े प्रसन्न हुए और उनका परिचय पू उन्हें अपने यहाँ खाने का न्यौता दिया। औ दिन दोनों भाई राजा के महल में खाना ख गये। दोनों भाइयों को आया देख फूल औ कला तो जलकर राख हो गईं और उन्हों सोचा कि आज वे खाने में किसी दूसरे के हा से विष डलाकर इन्हें समाप्त कर देंगी। फि भी ऐसा ही गया। तीनों के थाल अलग-अल तीनों के सामने रक्खे गये। थोड़ी इधर-उ की बातों के बाद राजा ने खाना शुरू किया औ उन भाइयों से भी कहा कि शुरू करो। इस पर बालक बोले, महाराज इस मोतीचूर के लड् को निकलवा दीजिए। राजा ने कारण पूछा उन्होंने उत्तर दिया कि हे राजन्! आपके था में जो लड्डू रक्खा है उस पर कितनी मक्खिय टूटी पड़ती हैं पर हमारे लड्डू पर एक भी न आती। इसका यही कारण मालूम होता है इसमें विष मिला हुआ है। राजा इनकी चतु पर हैरान रह गया और उन लड्डुओं थाल से निकाल ले जाने की आज्ञा दी। अ क्या था—बेचारी, दुष्ट! फूल और कला आशाओं पर पानी फिर गया।

एक बार फिर वे दोनों भाई शिकार खेलने गये। राह में उन्हें एक साधु मिला। उसने उनसे कहा कि यदि तुम अपने उपवन में एक सोने का

ओ और एक सोने का पिंजरा जिसमें मनुष्य-बोलनेवाली चिड़िया बन्द करके अपने घर और एक लोटा सोने का पानी लाकर तो तुम्हारे घर, उपवन आदि की शोभा हो जाय। इन बालकों ने इन वस्तुओं को झरने का स्थान पूछा तो उस साधु ने कहा ाँ से कोई पाँच कोस दूर एक तालाब है, पानी सोने का है। उसके पास एक पेड़ ह सोने का पेड़ है और उसकी डाली पर एक ा लटक रहा है उसमें वह अनोखी चिड़िया और उसने यह भी बताया कि वहाँ पर तुम्हें गालियाँ सुनाई देंगी पर यदि तुम पीछे मुड़कर ोगे तो पत्थर बन जाओगे। दोनों बालक साधु महात्मा को प्रणाम करके चले गये।

अगले दिन बड़ा भाई जाने को तैयार —और अपने घोड़े पर सवार होकर उस न को चल दिया। राह में उसे गालियाँ ई दीं। उससे न रहा गया। उसने पीछे कर देख लिया और पत्थर बन गया। यही दूसरे भाई के साथ हुआ। अब उनकी न गई। उसने पीछे मुड़कर न देखा और चीज़ें र लौटने लगी। राह में वह साधु के कहने अनुसार पानी छिड़कती गई। सब आदमी पत्थर बने पड़े थे फिर से खड़े हो गये। उसमें के भाई भी थे। ये तीनों अब राज़ी-ख़ुशी पहुँचे। घर पहुँचकर वह अनोखी चिड़िया ा कि ऐ बालको! तुम्हें राजा ने न्योता था तुम उसको दो। और उनकी बहन हा कि वह एक मोतियों का भुट्टा बनाकर राजा के थाल में रक्खे। राजा को न्योता दिया गया। वे आये। थोड़ी देर के आराम के बाद उनके लिए खाना परोसा गया। राजा थाली में मोतियों का भुट्टा देखकर अचम्भे में पड़ गये और बोले—"कहीं मोतियों का भी भुट्टा होता है?" इस पर चिड़िया बोली—राजन्! कहीं रानी के भी कुत्ते-पिल्ले होते हैं? राजा, चिड़िया को इस प्रकार बोलते देख बहुत हैरान हुआ। चिड़िया ने राजा को बोलने का अवसर नहीं दिया और सारी सच्ची-सच्ची घटना वर्णन कर दी। उसने राजा को यक़ीन दिलाया कि ये बच्चे उसी के हैं। पर वे नहीं माने। इस पर चिड़िया बोली कि तुम जङ्गल की ओर जाओ वहाँ एक साधु महात्मा बैठे हैं। उनसे तुम तीन फूलों के हार माँगना। एक-एक हार तीनों बच्चों के गले में डाल देना और इनकी माता को इनके सामने खड़ा करना। यदि बच्चे उसी के होंगे तो तीनों बच्चों के हार उसके (रानी) के पैरों के पास गिर जायँगे नहीं तो गले में ही रह जायँगे और सूखकर झड़ जायँगे। राजा उन तीनों को ले गया और वैसा ही किया। सचमुच में वैसा ही हुआ जैसा चिड़िया ने कहा था। राजा-रानी तथा बच्चों ने ख़ूब प्रेम के आँसू बहाये। फिर से सारे शहर में ख़ुशियाँ मनाई गईं। राजा जो अब बूढ़े हो चले थे उन्होंने अपनी राजगद्दी बड़े राजकुमार को सौंप दी। उधर दुष्ट, फूल और कला की पोल खुल जाने पर उन्हें मरवा दिया गया।

सत्य है ईर्ष्या बुरी चीज़ है।

"काँच के टुकड़े एवं केले का छिलका"

लेखक, श्रीयुत रतनचन्द्र "देव" राँका

हमारे आगे-पीछे, इधर-उधर सदा ऐसी-ऐसी घटनायें घटती रहती हैं जिनको सुनकर हृदय फड़फड़ाने लगता है, हाथ-पाँव काँपने लगते हैं, आँखों में आँसुओं की गंगा बहने लग जाती है, सारा बदन प्राण-शून्य हो जाता है।

केले का छिलका

देखिए, केला देखने में जितना सुन्दर है उतना ही मनमोहक एवं खाने में स्वादिष्ठ होता है। इसे सभी बहुत चाहते हैं। चाहे बूढ़ा हो, चाहे नवजवान हो, चाहे बालक हो, सभी केला बड़े प्रेम से खाते हैं। केले के पेड़ का प्रत्येक अंग हमारे काम में आता है। इस पेड़ का एक भी अंग व्यर्थ नहीं जाता।

केले के पत्ते पर लोग भोजन करते हैं। केले के डंठल का, केले के फूलों का एवं कच्चे केले का शाक बनता है जो खाने में बड़ा मज़ेदार होता है। पक्का केला खाने के काम आता है। जो अपने शरीर के लिए बड़ा हितकारी एवं गुणवर्द्धक होता है। केला खाने से भोजन जल्दी पच जाता है। केले के पेड़ की छाल, फूल आदि बाँधने के काम में आती है। केले का छिलका पशुओं के खाद्य-पदार्थों का एक भाग बन गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि केले का प्रत्येक भाग कुछ न कुछ काम में ज़रूर आता है और भी केले से कई लाभ हैं। लाभ के साथ ही साथ दो-एक हानियाँ भी हैं। एक तो लोग केला खा करके उसका छिलका सड़क पर ही डाल देते हैं। जिससे बालक ही नहीं नवज एवं पशु तक फिसलकर गिर जाते हैं। कई को गिरते ही मृत्यु हो जाती है और किसी-कि की हड्डी-पसली टूट जाती है, जो जीवनप ठीक नहीं हो सकती। बालक ही नहीं, नवज तक कच्चा केला खा जाते हैं जो जा उनके गले में फँस जाता है। इससे बहुत त लीफ़ होती है।

काँच के टुकड़े

यही बात काँच की भी है। काँच भी ह बड़े काम की चीज़ है। काँच की बनी हुई बो गिलासें, तश्तरियाँ एवं अन्य छोटे-मोटे सा हमारे नित्य के कार्यों में बहुत ही काम आते खाद्य-पदार्थ एवं दवाइयाँ काँच के बने हुए ब में ही रक्खी जाती हैं। मकानों की खिड़कि में, अँधेरे घरों में उजाला करने के लिए काँच ही काम आता है। आजकल विश्व एक कोने से दूसरे कोने तक काँच का बाला है।

काँच से भी कई हानियाँ हैं। कोई का बर्तन टूट गया और हाथ में काँच गड़ तो इससे पीड़ा होती है। कहीं सड़क पर काँच का टुकड़ा पड़ा हो अनजान से उसके पाँव रख दिया और काँच का टुकड़ा पाँ घुस गया तो बस प्राणों को संकट आगया

अब मैं आपकी सेवा में चार-पाँच घटनाओं का उल्लेख करता हूँ। जिन्हें

ही सोचें कि केले का छिलका एवं काँच टुकड़ा, इन दोनों से सावधान न रहने पर कितनी हानि उठानी पड़ती है।

कहानियाँ नहीं सच्ची घटनायें

(१) एक सेठ के दो पुत्र थे। छोटा बेटा लालची था। वह दूसरों की बढ़ती देखकर जला करता था। जब सेठ की मृत्यु हुई दोनों भाइयों में लड़ाई हो गई और उन्होंने पिता के माल-असबाब को आधा-आधा लिया। दोनों को पचीस-पचीस हज़ार मिले। छोटा भाई तो लालची था ही, सोचा कि यदि मैं अपने भाई और भाभी मार डालूँ तो पचास हज़ार का मालिक बन जाऊँगा। यह सोचकर एक दिन वह एक बोतल टुकड़े कर उसे बारीक पीसकर साथ ले अपने के यहाँ गया। उस समय उसकी भाभी भात पका रही थी। उसने अच्छा मौक़ा जान-कर भाभी से कहा कि "भाभी तुम्हें कोई बाहर बुला रहे हैं।" ज्यों ही भाभी बाहर गई तो उसने सारा चूर्ण चावलों में डाल दिया। भाग्य-वश भाई और भाभी दोनों ही को कम दिखता था। इसलिए दोनों ने काँच-सहित चावल खा लिये और चावलों का माड़ अपने कुत्ते को पिला दिया। हमेशा की भाँति दोनों सो गये। चूर्ण ने ऐसा काम किया कि उन तीनों के की नसों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। सुबह देखा तो तीनों की मृत्यु हो गई। उसके धन अधिकारी सरकार बन गई। लालची की ऐसी हालत होती है।

(२) एक बार एक बड़ा पदाधिकारी कहीं जा रहा था। उसके पाँव नंगे थे। एकाएक एक काँच का टुकड़ा उसके पाँव में घुस गया। यह उसे मालूम होते ही उसने कई इलाज किये, चीर-फाड़ भी कराई। लेकिन सब निष्फल हुए। जब उसे किसी तरह का कष्ट न मालूम होने लगा तब उसने यों ही छोड़ दिया। पाँव में घुसा हुआ काँच गलकर टुकड़े-टुकड़े हो सारे शरीर में फैल गया था। और उस काँच के फैलने से उस व्यक्ति की वही हालत हुई जो पहली घटना के पात्रों की हुई थी।

(३) एक बार मैं मोटर में बैठकर अपनी बहन से मिलने जा रहा था। उसी मोटर में एक ब्राह्मण बैठा हुआ था। जब "बस स्टापिंग प्लेस" यानी मोटर ठहरने की जगह आई तो मोटर ठहरी। वह ब्राह्मण वहीं उतर गया। थोड़ी दूर पैदल गया और उसे किसी ने पुकारा। ज्यों ही पीछे फिरते हुए एक क़दम आगे बढ़ाया था ही कि उसका पाँव एक केले के छिलके से फिसल गया और वह छाती के बल गिर पड़ा। उसे झट अस्पताल ले गये। वहाँ पहुँचने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

(४) मेरे घर के पास एक नायकर रहता था। जो फल-फूल ख़ूब खाया करता था। केले से उसे विशेष प्रेम था। वह केला खाकर उसका छिलका वहीं सड़क पर फेंक देता था। मुझे उस व्यक्ति पर बहुत ग़ुस्सा आता था। मैं उसे कई बार समझाया कि केले का छिलका सड़क पर मत डालो। लेकिन वह मेरी बात पर

तनिक भी ध्यान नहीं देता था। एक दिन उसने केला खा करके उसका छिलका वहीं सड़क पर डाल दिया। फल खा कुछ माल ख़रीदने के लिए बाज़ार गया। माल ख़रीद लेने के पश्चात् जब वह घर लौट रहा था कि अकस्मात् उसका पाँव उसी छिलके से फिसल गया। पास ही एक लड़का जा रहा था। एकाएक वह नायकर उस लड़के के ऊपर गिर पड़ा। बालक डर गया। ज्यों ही घर जाकर सोया बस उसकी वही हालत हुई यानी मर गया। उस नायकर के पाँव में गहरी चोट लग गई, जो अभी तक एक निशानी बतलाती है।

पाठक देखिए, ऐसी-ऐसी घटनाओं को सुनकर किसका हृदय नहीं पसीजेगा। जब ये चीज़ें हानिकर हैं तो हमें इनसे बहुत सावधान रहना चाहिए।

मैं आप सब पाठकों से नम्र निवेदन करता हूँ कि आप अपने घर के पास, गली में, गाँव, शहर में, सड़क पर, जहाँ कहीं भी केले छिलका एवं काँच का टुकड़ा पावें तो उठाकर एक तरफ़ डाल दें, जहाँ किसी का आना-जाना न हो। इसमें आप यह न समझें कि बड़ा सेठ का पुत्र हूँ। मैं ऐसा काम नहीं सकता। हम पैदा हुए तो किसी न किसी भला ज़रूर करना चाहिए। यदि आप उन्हें तरफ़ डाल देंगे तो अवश्य किसी न किसी प्राणी का प्राण बचायेंगे। मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी इस बात पर अवश्य ध्यान देंगे। किसी कवि ने कहा है कि—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः
परोपकाराय सताम् विभूतयः॥

हमें भी इतना परोपकार तो अवश्य ही करना चाहिए।

गाय

लेखक, श्रीयुत शंकठाप्रसाद वाजपेयी 'साहित्यरत्न'

गाय हमारी भोली-भाली।
दाना-घास खिला के पाली॥१॥
सीधी-सादी चुपके आती।
जो कुछ पाती सो खा जाती॥२॥
कैसी धौरी लगती प्यारी।
सभी काम की गाय हमारी॥३॥
दूध हमें देती वह ताज़ा।
मा कहती तू पी जा राजा॥४॥
कैसे अच्छे बछड़े होते।
हल में भी वे जाते जोते॥५॥
काम हमारे कैसे आते।
भर के ग़ल्ला भी ले जाते॥६॥
जीने में भी सुख आराम।
मर जाने में आवें काम॥७॥

"उस रात की बात"

लेखक, श्रीयुत सूर्यप्रकाश पंडेलिया

किसी गाँव में एक संस्कृत पाठशाला में गुरुभक्त, ग़रीब विद्यार्थी पढ़ते थे। जिनके व पुस्तकों का इन्तज़ाम नगर के दानी ों पर निर्भर था। एक दिन गुरु जी अपने र्थियों को कुछ शकुन व अपशकुन की बातें रहे थे। जिनको कुछ विद्यार्थी ईश्वरी समझकर हृदय में धारण कर रहे थे।

इतने में खेमू नामक नाई ने आकर गुरु जी णाम किया और कहने लगा—"गुरु जी ज! आज सेठ भागमल के यहाँ आप विद्या- ों-सहित निमन्त्रित किये गये हैं। क्योंकि ी लड़की ज्ञानू का विवाह आज रात को होगा।"

लड़के आपस में, "लड्डू मिलेंगे" कह- ख़ुशी के मारे कूदने लगे। गुरु जी ने चलते- े बच्चों को बतलाया कि कहीं जाते समय साँप रास्ता काट जाय तो बना हुआ काम बिगड़ जाय। काना, ख़ाली घड़े, दूध पिलाती , मुर्दा इत्यादि का हाल बताते हुए श्यामा ड़िया का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि यात्री श्यामा चिड़िया को देखकर उसकी ी ओर से चक्कर लगाकर जावे तो अवश्य ति होगा। बस इतने में शाम हो गई और जी ने चलते हुए विद्यार्थियों को यह कह- छोड़ दिया कि तुम लोग आगे चलो, मैं आता हूँ। देखो रास्ते में लड़ना-झगड़ना । लड़के "जी नहीं गुरु जी" कहकर आगे । बेतवा नदी कुसमय वर्षा हो जाने के कारण ारों को तोड़ती हुई बह रही थी। और उसके सहायक बड़े-बड़े नाले सड़क के दोनों ओर घर्राटे ले रहे थे। पुल के पास पहुँचने से पहले नाले के दूसरी ओर श्यामा चिड़िया दीख पड़ी। सब लड़के देखकर बड़े ख़ुश हुए। पर नाले को पार करना हँसी-खेल न था। इसलिए भीखा जो कि अनाथ था और जिसका गुरु के वचनों पर भरोसा था, को छोड़कर सब विद्यार्थी लड्डुओं के लालच से सेठ के यहाँ गये और भर पेट मिठाई खाकर लौट आये।

इधर भीखा अपने प्राणों को हथेली पर रखकर नाले में कूद पड़ा और बहता-बहता बहुत दूर किनारे पर लगा। फिर वह श्यामा का चक्कर लगाने को नंगे पैर जंगल में दौड़ा और किसी तरह चक्कर लगा भी लिया। परन्तु इसी बीच रात हो गई। जाड़े का समय, भीगा हुआ बदन, थरथर काँपता हुआ, रात के ९ बजे जब सेठ के यहाँ बारात आ रही थी, पहुँचा। परन्तु नगाड़खाने में तूती की आवाज़, भला उस बेचारे की कौन सुनता। लाचार एक हलवाई की दूकान पर भट्ठी के सहारे आग पाकर भूखा ही सो गया।

× × ×

दैवयोग से बारात में दूल्हा काना था। इसकी चकचक बराती करने लगे और कहा कि सेठ जी तुम दूसरा लड़का दिखाकर काने का ब्याह करना चाहते हो। कहीं ऐसा न हो कि हम सबके भी सर टूटें। अन्त में यह तय हुआ कि शहर से कोई ग़रीब लड़का एक दिन के लिए

किराये पर लाया जाय और उसी के संग ब्याह हो। ऐसा ही हुआ। बारह बजे रात को भीखा जगाया गया। उसको किराये पर एक दिन के लिए रख लिया गया। भीखा दूल्हा बन गया। नाना प्रकार के वस्त्र-आभूषण पहना दिये गये। पर इस बेचारे को किसी ने दो पूड़ी के लिए भी नहीं पूछा।

ब्याह हो गया। नगर भर में सेठ जी के दामाद की प्रशंसा होने लगी। अन्त में पुरानी रूढ़ि के अनुसार वर-वधू को एक कोठरी में बन्द कर दिया गया ताकि एक-दूसरे से परिचय हो जाय।

दोनों कुछ देर तक तो चुप रहे अन्त में लड़की से न रहा गया और वह पूछ बैठी कहिए! तबीअत तो ठीक है! भीखा जो भूख से व्याकुल हो रहा था—बोला, "और तो सब ठीक है पर दो दिन से तबीअत खराब होने के कारण कुछ नहीं खाया। इसलिए कुछ भूख प्रतीत होती है।

लड़की ने सोचा कि इस समय क्या उपाय करूँ। अन्त में उसे एक बात सूझी। उसने गोदी में पड़े हुए चावल व बताशों को एक लोटे में जो पास ही पानी से भरा रखा था, डाल दिया और उस लोटे को दो ईंटों पर रखा और लकड़ी का काम अपनी बहुमूल्य साड़ी से लिया। (साड़ियाँ पास के सन्दूक़ में रखी थीं।)

भात बन गया। भीखा ने पेट भर खाया और दोनों बाहर निकले। इनकी अन्तिम भेंट यही थी। भीखा को बारातियों ने एक रुपया व कुरता-टोपी देकर बिदा किया और बहू ससुराल को बिदा हो गई।

ज्ञानू जब नये घर पहुँची तो अपना प काना पाकर बहुत दुःखी हुई। उसने क यह काना मेरा पति नहीं है।

उसने एक रथ मँगाया और वापस अप पिता के घर चली गई और पिता को सारा हा कह सुनाया। पिता ने दरियाफ़्त किया तो प चला कि लड़का किराये पर पकड़ा गया था इससे सारे शहर में सन्नाटा छा गया और स बारातियों को कोसने लगे। बहुत तलाश के बा लड़की ने यह ढिँढोरा पिटवा दिया कि जो को मेरे प्रश्न का जवाब देगा उसी के साथ मैं शा करूँगी। अन्त में बड़े-बड़े विद्वान् आने लगे औ कोई भी "बताओ उस रात की बात" क जवाब न दे पाया।

अन्त में एक दिन गुरु जी के साथ व विद्यार्थी भी बहाना करके किसी तरह वहाँ गया और बेचारा दरवाज़े पर रोक दिया गया। बहु धींगड़ मस्ती के बाद भीतर जा पाया। पंडित के बाद उसे भी जवाब देने का नंबर मिला।

× × × ×

उसने जब प्रश्न सुना तो नाचने लगा औ बोला क्या सचमुच बता दूँ? पडितों ने उ मूर्ख, पागल समझा पर घरवालों ने आशा क दृष्टि से देखा।

अन्त में उसने कहा कि मुझे भूख लगी। साड़ी जलाकर चावल पकाये। मैंने खाये।

× × × ×

यह सुनते ही लड़की उठी और उसके पैरों में गिर पड़ी। शहर में दिवाली का-सा उत्सव मनाया गया। भीखा अब कई लाख का असामी हो गया। उसने गुरु जी व विद्यार्थियों को बहुत धन दिया फिर बड़े सुख से वधू-सहित रहने लगा। यह गुरु-आज्ञापालन का ही फल था।

बच्चों की लड़ाई

लेखक, श्रीयुत "पुष्पा"

विमला और कमला एक ही उमर की थीं। पाठशाला में पढ़ती थीं और एक ही गली ती थीं। एक दिन दोनों अच्छे-अच्छे पहनकर बड़ी सजावट से मदरसे गईं। उस दोपहर के समय पानी बरसने लगा। इस- गली और कूचे से छोटे-छोटे गाड़ पर पानी । लड़कियाँ पाठशाला खतम होने के बाद, करके घर आईं। तब विमला ने खेल में पत्थर उठाकर गाड़ पर फेंका। इससे कमला कपड़ा खराब हो गया। फ़ौरन कमला ला को मारने के लिए दौड़ी। तब कमला की सामने आई और कमला की दशा देखकर उठी—"अरी कपड़ों पर मिट्टी कैसे आई?" ला ने मा से विमला की शिकायत की और कर रोने लगी। तुरंत कमला की मा ने ला को पकड़कर गाल पर तीन-चार चपतें दीं। चपत खाते ही विमला बड़ी ज़ोर से लगी। चिल्लाना सुनकर विमला की मा घर बाहर आई और बेटी के रोने को देखकर —"किसने मारा, क्यों रोती हो?" आँखों निकलते हुए आँसू को पोंछकर कमला की मा की ओर इशारा किया। इसे सुनते ही दोनों की माताओं से लड़ाई शुरू हुई। गालियों के बाद थप्पड़ चले। गली में भीड़ बढ़ने लगी।

झगड़ा समाप्त होते ही विमला ने घर जाकर किताबें मेज़ पर रखीं। वहाँ काग़ज़ का जहाज़ उसकी नज़र में पड़ा। वह उसे लेकर बाहर आई। तब कमला भी घर जाकर लौटी। विमला यह देखो जहाज़। कमला—यह कल मैंने ही बनाया है न? यह कहकर दोनों फिर दोस्त हुईं। कमला विमला के गले में हाथ डालकर पास में बहते हुए नाले में जहाज़ छोड़कर ख़ुशी मनाने लगी। एक तरफ़ खेल और एक तरफ़ युद्ध हो रहा था। ये सब बातें जाननेवाली एक बुढ़िया युद्ध होनेवाली जगह में आकर बोली—अरी तुम लोग क्यों ऐसी लड़ाई करती हो। उन लड़कियों को देखो और अपनी हालत देखो। इतना कहकर पास में खेलती हुई लड़कियों को दिखलाती है। यह देखकर दोनों की मातायें शरम के मारे सिर नीचे रखकर अपने-अपने घर में घुस गईं।

पूँछ किस काम आती है?

लेखक, श्रीयुत हरिश्चन्द्र गुप्त

हम नित्य ही जानवरों की पूँछें देखा करते हैं और मन में प्रायः यह प्रश्न उठा करता है कि ईश्वर ने न जाने यह बेकार का बोझ इन बेचारों के ऊपर क्यों लाद दिया है? पर यदि कोई उनकी उपयोगिता पर ध्यान दे तो उसे ज्ञात होगा कि पूँछ भी उतनी ही आवश्यक है जितने कि शरीर के और अंग। ऐसे जीवों को हम तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं—जलचर, थलचर और नभचर अर्थात् आकाश में उड़नेवाले।

जल में विचरण करनेवाले जितने भी 'जीव होते हैं, प्रायः उन सभी के पूँछ हुआ करती है। उनकी आकृतियाँ अवश्य ही भिन्न-भिन्न होती हैं। वे इसी की सहायता से सुगमता के साथ तैरते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान में फिरा करते हैं। ह्वेल मछली तथा दरियाई घोड़े जो कि जल के सबसे बड़े जीव माने जाते हैं, वे भी अपनी पूँछ की शक्ति पर बहुत बड़ा भरोसा रखते हैं।

मछलियों तथा जल के अन्य जीवों की पूँछें प्रायः बीच से चिरी हुआ करती हैं; और वे निरन्तर नाव की पतवार के समान इधर-उधर घूमती रहती हैं। इससे उन्हें जल में पानी की धार को ज़ोर के साथ सीधे काटकर जाने में बहुत ही सुविधा रहती है। आपत्ति के समय वे पूँछ के द्वारा ही पानी को थपथपा कर अपने अन्य साथियों को विपत्ति की सूचना भी दिया करते हैं।

पृथ्वी पर रहनेवाले जीवों में पूँछ प्रयोग छिपकली में बहुत प्राचीन समय से जाता है। इसके पश्चात् अफ़्रीकन भालू अन्य जीवों का नम्बर आता है। अपने शत्रु से रक्षा करने में पूँछ ने इन्हें बहुत ही सहाय पहुँचाई है। अब भी यह उनके शस्त्र का देती है। लक्खू बन्दर को ज़रा छेड़ दीजि और फिर देखिए कि कैसा मज़ा आता है।

कुछ जीवों की पूँछें बड़ी ही प्यारी लग हैं। अपने 'पपी' को पूँछ हिलाते हुए पैर के लिटाकर दुलार करने में भला किसे आन नहीं आता? इन कुत्तों के लिए तो यह पूँ कुर्सी का भी काम देती है। साथ ही और ऐसे बहुत-से जीव होते हैं जो कि अपनी पूँ का इस प्रकार उपयोग करते हैं। कंगारू ना का एक जानवर आस्ट्रेलिया के वन-प्रदेश पाया जाता है। उसकी विशेषता यह है कि भागते समय अपने पेट की थैली में बच्चों भी रख लेता है और यदि दूसरे साथी से लड़ने की आवश्यकता हुई तो पूँछ पर ही पूरी शक्ति लगाकर तब पैर से प्रहार करता है। बड़े- बालोंवाले बन्दर और भी मज़े के साथ पूँ का उपयोग करते हैं। पहले वे उसकी एक गुड़ी- सी बना लेते हैं और फिर शेष भाग खूब क करके बड़ी ही शान के साथ अकड़कर उस प बैठते हैं। यह दृश्य तब और भी मज़ेदार दिखा देता है जब कि आस-पास दूसरे बन्दरों

र लगा हो और आप बीच में सिंहासन पर साहब की तरह विराज रहे हों।

चौपायों में यही पूँछ उनके शरीर की याँ उड़ाने का काम देती है। प्रायः उनकी का अन्दाज़ भी हमें इसी से लग जाया है। उदाहरण के लिए गाय और बिल्ली ूँछ देखने से अन्तर स्पष्ट प्रकट हो जाता दि यही पूँछ बालदार हो, जैसे कि गिल-ी तो इससे सोने के समय शाल का काम िया जाता है। छोटे-छोटे जीव तो अपनी से फाटक का भी काम लेते हैं। जब चाहा, लगाकर आने-जानेवालों का रास्ता रोक है। नेता बनने के समय यह पूँछ ही उन्हें अधिक सहायता पहुँचाती है। मोर आदि रंगे जानवरों में यही पूँछ हमारे आकर्षक का कारण भी हुआ करती है। कहीं-कहीं तो इसका बड़ा ही विचित्र उपयोग देखने में आता है। किसी चूहे के बिल के आस-पास तेल की खुली हुई बोतल छोड़ दीजिए और यदि उसकी कृपा हो गई तो आप सारी की सारी ही बोतल खाली पायेंगे। अपनी पूँछ डालकर बड़ी ही युक्ति से वे तेल खींच लिया करते हैं।

आकाश में उड़नेवाले जीवों में तो यह पूँछ उनके जीवन का प्रधान अंग ही है। यदि यह न हो तो केवल पंखों के आधार पर उनका उड़ना ही कठिन हो जाय। इसी सिद्धान्त के अनुसार हमारे वायुयान भी बने हैं और उनमें भी इसी लिए पंखों के अतिरिक्त पूँछ का होना अनिवार्य है।

"मिथ्याभिमान"

लेखक, श्रीयुत महेन्द्रकुमार बख्शी

अँधेरे में एक दीप जला।
मानो वह कहता अपने को,
कि हूँ मैं सचमुच उजियाला।
"दिनकर" से भी मैं बढ़कर हूँ,
यह आई उसमें एक बला॥

जीवन था मेरा अँधियारा,
जो हुआ अभी वह उजियाला।
दिखता हूँ मैं अब नवीन,
मेरे जीवन का कष्ट टला॥
अँधेरे में एक दीप जला।

सर सर सर करती चली हवा,
मानो वह लाई काल बुला।
हवा बही और चली गई,
पर मेरे "मैं मैं" पल में जला॥
अँधेरे में एक दीप जला।

"चुटकी से बातचीत"

लेखक, श्रीयुत विद्याधर शर्मा

गत जून मास के 'बाल-सखा' अङ्क में श्रीमती शारदा शर्मा संगरिया का, "चुटकी से बातचीत" शीर्षक एक लेख छपा है जो कि अत्यन्त उपयोगी है। इस बतलाये गये प्रकार से ध्वनि के साधन जितने भी (नगाड़ा, तारडेमी आदि) हैं उन सभी के द्वारा बात-चीत की जा सकती है।

लेखिका को इस प्रकार में स्वर-रहित व्यञ्जन-अक्षरों का और अनुस्वार का ज्ञान अपेक्षित है। एतदर्थ मैं उपाय बतलाता हूँ। स्वर-राहित्य द्योतन के लिए १३ चुटकियाँ और स्वानुस्वरता ज्ञान के लिए १४ चुटकियाँ बजाओ। अर्थात् स्वर-रहित अक्षर-ज्ञान के लिए मात्रा-ज्ञान की जगह १३ चुटकियाँ बजानी चाहिएँ तब श्रोता समझ जायगा कि मात्रिक अक्षर तो १२ ही रखे गये हैं और यहाँ मात्रा-ज्ञान के लिए १३ चुटकियाँ बजाई हैं इसलिए यह अक्षर स्वर-रहित है।

अनुस्वार ज्ञान के लिए मात्रा-ज्ञान के अनन्तर १४ चुटकियाँ बजाने से अनुस्वार का ज्ञान कराया जा सकता है। इस प्रकार स्वर-रहित अक्षर का ज्ञान कराने के लिए पहले वर्ग-ज्ञान फिर अक्षर-ज्ञान और फिर १३ चुटकियों से स्वरराहित्य का ज्ञान होने से वह स्वर-रहित अक्षर जाना जाता है। अनुस्वार-ज्ञान के लिए पहले वर्ग-ज्ञान फिर अक्षर-ज्ञान फिर मात्रा-ज्ञान और फिर १४ चुटकियों से अनुस्वार ज्ञान होने से सानुस्वार अक्षर जाना जाता है।

इतने पर भी यदि किसी पाठक की समझ में न आवे तो नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें, उदाहरण आदि से पूरी तरह समझा दिया जायेगा।

—विद्याधर शर्मा,
c/o रामप्रताप जी वैद्य शास्त्री,
हनूमानगढ़, (बीकानेर)

कैसे ?

लेखक, श्रीयुत कृष्ण सांडल

बादल गरजे, बिजली चमके,
सखा-सहेली आयें कैसे ?
घटाघूम घनघोर घमाघम,
अभी घूमने जायें कैसे ?
बरसते धड़ाधड़ हैं पतंगे,
खाने को हम खायें कैसे ?

पवन के संग आये पानी,
हवा तनिक हम पायें कैसे?
टर्र टर अति मेढक मचाते,
स्वप्न-लोक में जायें कैसे ?
बैठे अकेले बन्द कमरे,
चैन "सन्तोष" पायें कैसे ?

साहसी राजकुमार

लेखक, श्रीयुत ज़फ़रुल-इस्लाम

किसी समय, एक राजकुमार शिकार खेलने ा। जंगल में उसने एक हिरन का पीछा । हिरन का पीछा करते-करते वह अपने ों से दूर निकल गया। अंत में हिरन भी या और राजकुमार थककर बैठ गया। जहाँ ार बैठा था, वहाँ एक सुन्दर फूलों का था। राजकुमार को फूल बहुत अच्छा और उसने फूल तोड़ लिया। वह फूल का ादू का था और उसे एक जादूगरनी ने खा था। राजकुमार के फूल तोड़ते ही दूगरनी वहाँ प्रकट हुई और ग़ुस्से से कहने "अरे छोकरे! तूने मेरे लगाये हुए पौधे ल क्यों तोड़ा?" राजकुमार ने काँपते हुए "महारानी जी! मुझे ये बातें नहीं मालूम हीं तो फूल तोड़ने का साहस न करता।" रनी ने कहा, "ठहर, मैं तुझे इस बात की देती हूँ।" इतना कहकर उस दुष्ट ने मन्त्र और राजकुमार लोमड़ी बन गया। अब ोमड़ी के रूप में उस वन में काल यापन लगा।

कुछ दिनों के बाद, उस जंगल में एक ी पधारे। लोमड़ी को देखकर वे समझ कि यह मनुष्य है और जादू से लोमड़ी गया है। उन्होंने अपने हाथ में पानी । उस पर कुछ मन्त्र पढ़कर फूँका, फिर पर वह जल छिड़क दिया। जल के ते ही राजकुमार अपने असली रूप में आगया। राजकुमार ने साधु जी को प्रणाम किया और सहायता की प्रार्थना की। साधु ने कहा, "हे राजकुमार! तुम यहाँ से पूर्व की ओर चले जाओ। दो महीने के रास्ते पर एक पहाड़ है। उस पहाड़ के ऊपर एक सुन्दर सोने का महल है। महल के आस-पास एक बग़ीचा है। वह सब जादू का है। बग़ीचे में एक चबूतरे पर एक धनुष और तीन बाण रक्खे हैं। एक पेड़ पर एक कबूतर बैठा है। उसमें जादूगरनी की जान है। तुम उन बाणों से उस कबूतर को मार डालना। यदि तुम्हारे बाण चूकेंगे, तो तुम पत्थर के हो जाओगे। अच्छा जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा।" राजकुमार साधु जी को प्रणाम कर चल दिया।

वह दिन भर चलता, भूख लगने पर जंगली फल खाता और रात को किसी वृक्ष पर सो जाता। दो महीने के बाद वह पहाड़ के पास पहुँचा। रात को जंगली फल खाकर एक झाड़ पर सो गया। सुबह जादूगरनी भोजन की खोज में बाहर गई। राजकुमार पहाड़ पर चढ़ा और बग़ीचे में गया। उसने धनुष-बाण लेकर कबूतर को मारा। उसका पहला बाण चूक गया और वह घुटनों तक पत्थर का हो गया। उसका दूसरा बाण भी चूक गया और वह कमर तक पत्थर का हो गया। राजकुमार घबरा गया। उसने तीसरा बाण बहुत सावधानी से मारा। वह बाण कबूतर के लग गया। बाण के लगते ही बड़े ज़ोर की

आवाज़ आई और पहाड़ हिलने लगा। थोड़ी देर के बाद राजकुमार ने देखा कि वहाँ का महल ग़ायब हो गया। वह ज्यों का त्यों हो गया, अपने आपको पहाड़ की चोटी पर पाया और जादूगरनी को मरा हुआ देखा। यह सब देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। पहाड़ से उतरकर अपने राज्य में आगया। राजा उसे देख बहुत प्रसन्न हुआ। राजकुमार अब फिर मज़े रहने लगा।

राजकुमारी का सपना

लेखिका, श्रीमती विभाकुमारी

एक राजा था। उसके केवल एक लड़की थी, उसका नाम कुसुम था। राजा उसको बहुत प्यार करता था एक रात कुसुम को सपना दिखाई पड़ा कि एक पेड़ में ताँबे की जड़ें हैं, और चाँदी के गुद्दे हैं तथा सोने की पत्तियाँ हैं उनमें हीरा जवाहिरात के गुच्छे लटक रहे हैं। सुबह उठकर राजकुमारी ने वह सपना राजा को बताया और कहा कि जो मनुष्य मेरा सपना पूरा कर देगा उसके साथ मैं अपनी शादी करूँगी। राजा ने डुग्गी पिटवा दी कि जो राजकुमारी का सपना पूरा कर देगा उसके साथ मैं अपनी लड़की की शादी कर दूँगा। जब प्रजा ने यह सुना तो किसी की हिम्मत न हुई। केवल दो जवान लड़के आये। उनमें से एक का नाम विजयकुमार तथा दूसरे का नाम मोहन था। मोहन एक ग़रीब का लड़का था पर विजयकुमार एक अमीर आदमी का था। दोनों ने आकर कहा कि हम राजकुमारी का सपना पूरा सकते हैं और दोनों यह कहकर साथ-साथ चले सन्ध्या होने पर दोनों एक कुएँ पर लेट गये

विजयकुमार मोहन से जलने लगा था कि यह न सपना पूरा कर दे और कुसुम का विवा इसके साथ न हो जाय। यह सोचकर उस मोहन को कुएँ में ढकेल दिया। मोहन ने कुएँ जाकर देखा कि वहाँ पर एक महल है। वहाँ एक परी खड़ी थी। मोहन चुपचाप खड़ा रहा परी ने मोहन को चुपचाप खड़ा देखकर उस उसका हाल पूछा। मोहन ने सब हाल दिया। परी ने एक डंडा दिया और कहा जब तुम इसे ज़मीन पर मारोगे तब यही पेड़ हो जायगा। मोहन ने राजा को जाकर यह दिखा दिया और उसका विवाह कुसुम के हो गया।

"निराली झाँकी"

लेखिका, श्रीमती राधारानी श्रीवास्तव

कैसी बनी निराली झाँकी।
मन को हरनेवाली झाँकी ॥
कैसे सुन्दर खम्भे इसके।
मानो हैं सोने से दमके ॥
कैसी - कैसी घटायें छाईं।
पानी को हैं भर भर लाईं ॥
चम-चम चम-चम बिजली चमके।
दम-दम पर है दामिन दमके ॥
कैसी ईश तेरी है माया।
अंधकार है जग में छाया ॥
किन्तु, जगमगा रही है झाँकी।
मन को लुभा रही है झाँकी ॥
कहीं पै छुप-छुप चीर चुराते।
कहीं पै मुरली मधुर बजाते ॥
कहीं सारथी रथ है बनाया।
कहीं द्रौपदी चीर बढ़ाया ॥
कृष्ण-जन्म होने को आया।
समय बड़ा सुहावना भाया ॥
कर लो दर्शन सब जी भर के।
पञ्चामृत लो कर भर-भर के ॥
सखियाँ मंगल गाय रही हैं।
"राधा" निरख निहार रही हैं॥

बादल

लेखिका, श्रीमती कमला दीक्षित

नन्हीं-नन्हीं जल की बूँदें,
जब लेकर आता बादल।

बेला की नव पंखड़ियों में,
मोती बिखराता बादल ॥

कुछ झुक कर
कुछ हँस-हँसकर

कुछ सिहर-सिहर
कुछ मचल-मचल

चम्पे की कलियाँ—
—खिल उठतीं

नव जल से—
सुरभित हो होकर

झर-झर झरते तुषार के कण,
स्वर्ण-रश्मि से स्वर्ण मुकुट बन।

इन्द्रधनुष-सी रेखा बनकर,
आभामय हो उठता उपवन ॥

अगणित जल के कण पहने,
जब हरी घास मखमल बनती ॥

परियों की शहज़ादी आकर,
मोती से अंचल भरती ॥

"केहि बिधि छूटे प्रान"

लेखक, श्रीयुत रामचन्द्र त्रिपाठी

किसी जंगल में एक भेड़िये का जोड़ा निवास करता था। उन दोनों में बड़ी घनिष्टता थी। दोनों जहाँ जाते साथ-साथ जाते। एक दिन जब वे शिकार की टोह में निकले तो उन्हें कोई शिकार मिलता दिखाई न पड़ा। आख़िरकार जब एक घटा दिन रह गया और उन्हें कोई शिकार न मिला तो वे गाँव की तरफ़ बढ़े। गर्मी का मौसम था, चाँदनी चारों ओर सफ़ेद वस्त्र की तरह फैली हुई थी। मन्द-मन्द गति से वायु चल रही थी, जब वे गाँव में पहुँचे सारा गाँव निद्रादेवी की गोद में जा चुका था। दोनों एक गड़रिये के घर में घुस गये। नर भेड़िये ने एक बकरी को उठा लिया और मादा ने एक लड़की को जो पास ही एक छोटी-सी खाट पर सोई हुई थी और भाग खड़े हुए।

हवा की मन्द-मन्द गति ने सबको नींद में इतना मतवाला बना दिया कि कुत्तों की दौड़-धूप और भूँकने की आवाज़ तक का पता उन्हें न लग सका। जिन्हें लगा भी वे अपनी मीठी निद्रा से छुटकारा न पा सके। अतः रात भर गाँव में उसी तरह अमन क़ायम रहा। सुबह होते ही गाँव में एक कोहराम-सा मच गया। लोग लड़की की टोह में चारों ओर निकल पड़े। पर कहीं पता न चला। घूमते-घूमते जब वे नाले में उतरे तो उन्हें बकरी की हड्डियाँ और चमड़ा मिला। वहीं पर लड़की का बिस्तर भी दिखाई पड़ा जिस पर वह लेटी हुई थी। सब निराश होकर घर लौट आये। लड़की के मा-बाप ने रो गाकर संतोष कर लिया।

इधर नर भेड़िया लड़की को भी खा जाना चाहता था पर मादा उसको ऐसा करने से मना करती थी। उसने यहाँ तक कह डाला कि अगर तुम इसको किसी तरह की हानि पहुँचाने की कोशिश करोगे तो मैं जान दे दूँगी। अतः विवश होकर उसे भी उसकी बात माननी पड़ी। दोनों ने उसे ले जाकर अपनी माँद में रक्खा और उसकी अच्छी तरह देख-भाल करने लगे। लड़की धीरे-धीरे सयानी होने लगी। एक दिन जब कि तीनों बैठे हुए थे, मादा भेड़िये ने नर से कहा कि लड़की काफ़ी सयानी हो गई है, अब इसकी कहीं शादी कर देनी चाहिए नहीं तो अगर किसी की निगाह पड़ी तो वह उसे उठा ले जायगा।

नर भेड़िये ने कहा अभी चिन्ता की क्या बात है। अभी तो यह बिलकुल बच्ची ही है। चिन्ता काहे की। बड़ी होने पर शादी कर ही दूँगा।

एक दिन का ज़िक्र है कि दोनों शिकार करने गये हुए थे। जाड़े के दिन थे। अतः लड़की माँद से बाहर निकलकर घाम ले रही थी। उसी समय एक राजा की, जो जंगल में शिकार खेलने गया था, निगाह लड़की पर पड़ी। उस जंगली लड़की को, जिसकी उम्र अभी १२ ही साल की थी, देखकर राजा को तरस

और उसे अपने महल में ले जाने की
। वह घोड़े पर से उतरकर पेड़ों की आड़
हुआ, धीरे-धीरे लड़की के पीछे पहुँच
और दोनों हाथों से कसकर उस लड़की
ड़ लिया। इसके बाद दूर पर खड़े हुए
भी वहाँ आ पहुँचे और लड़की को पकड़-
ल में ले गये। महल में पहुँचकर राजा
की के नाखून कटवाये तथा कपड़े पह-
धीरे-धीरे वह एक सुशील लड़की बनती
राजा के कोई कन्या न थी। अतः रानी
पुत्री-तुल्य माना और उसे सभ्य बनाने
बँटाया और उसका ब्याह भी एक राज-
में करा दिया।

× × ×

शाम को जब दोनों लौटे और लड़की को
न देखा तो बेचैन हो उठे। दोनों ने अपनी
के आस-पास चारों तरफ़ ज़र्रा-ज़र्रा छान
पर कहीं पता न लगा। सारी रात ढूँढ़ते
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे जंगल से काफ़ी दूर एक
ान में पहुँच गये। प्यास के मारे दोनों के
निकलना चाहते थे कि इतने में उन्हें एक
एक छोटे-से गढ़े में एक लोटे के क़रीब
दिखाई पड़ा। उसको देखकर मादा भेड़िये ने नर से कहा कि अच्छा हो आप पीकर अपनी प्यास बुझाइए, और नर मादा को पीने के लिए कहता। दोनों में यही वाद-विवाद चलता रहा। बोलते-बोलते मुँह और सूखने लगा तथा प्यास की मात्रा बढ़ती गई पर उनकी यही ज़िद जारी रही। अन्त में प्यास के मारे दोनों गिर पड़े और तड़प-तड़पकर मरने लगे।

जिस समय वे दोनों मर रहे थे, दो बटोही वहाँ पहुँचे। उनकी यह दशा देखकर एक ने दूसरे से उनके इस तरह मरने का कारण जानना चाहा। इस पर दूसरे बटोही ने उनके प्रेम का वर्णन जिन शब्दों में किया था वह निम्नांकित है—

प्रीति घनेरी जल थोड़ा,
लगे बिरह के बान।
तू पिय तू पिय कह रहे,
यहि बिधि छूटे मान॥

बटोहियों को उनकी इस दशा पर तरस आई। अतः गढ़े का पानी लोटे में भरकर दोनों के मुँह में छोड़ने लगे। पर पानी अन्दर जाने के बजाय बाहर ही ज़मीन पर गिरकर बालू में विलीन होने लगा। उनके प्राण-पखेरू निकल चुके थे।

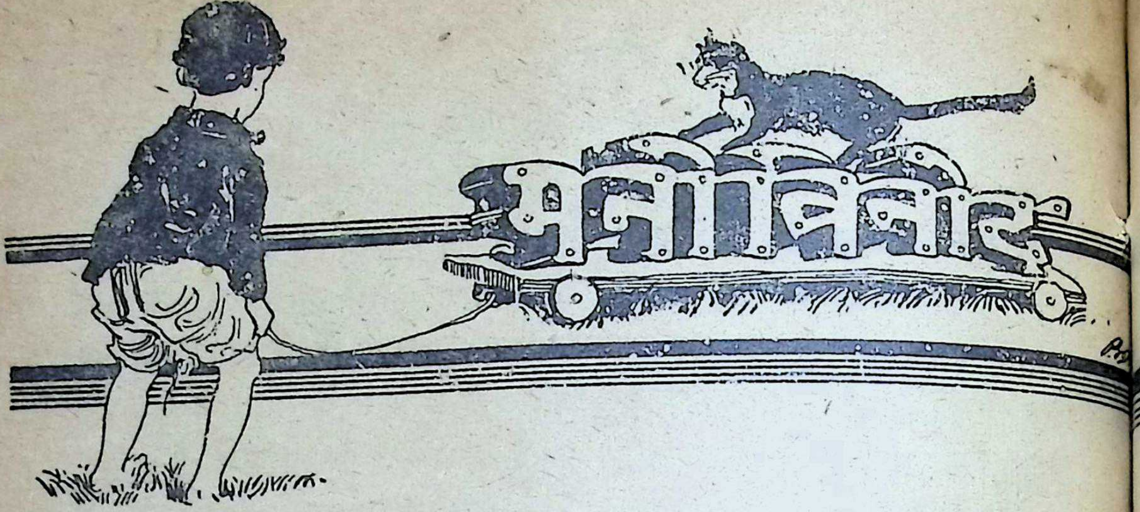

(१)

गप्पी मल्लाह—मैं सारी दुनिया का पाँच बार चक्कर लगा चुका हूँ।

स्त्री—तब तो आप भूगोल के बारे में काफ़ी जानते होंगे।

गप्पी मल्लाह—भूगोल ? हाँ, वहाँ तो मैं तीन बार जा चुका हूँ पर वहाँ की आबहवा बहुत गर्म है।

(२)

नौकर—प्रोफ़ेसर साहब ! आपसे मिलने के लिए बाहर एक डाक्टर आये हैं।

प्रोफ़ेसर—मैं उनसे नहीं मिलना चाहता इसलिए उनसे कह दो कि मैं बीमार हूँ।

(३)

पहली स्त्री—तुम्हारा बुरा लड़का क्यों रो रहा है ?

दूसरी स्त्री—आपके अच्छे लड़के ने उसके सिर में पत्थर से मार दिया है।

—श्री सुदर्शनलाल शाह

(१)

कमला से रमेश ने गाकर कहा कि बताओ कौन गा रहा है।

तो कमला ने उत्तर दिया जो कि धोबी के पास रहता है।

(२)

मा ने कहा कि मैं मोटी हो गई हूँ घड़ी की चैन छोटी हो गई है।

तो उनकी लड़की शशिबाला बोली पाँव में बाँध लो। —श्री भगोदेवी शा

(१)

"ये झाड़ मेरे आजा ने लगाये थे, जब वे बच्चे थे।"

"अरे बुद्धू ! एक बच्चा इतना बड़ा कैसे लगा सका होगा।"

(२)

बच्चा—"मा तुम्हारी नज़रों में मेरी क़ीमत है ?"

मा—"बेटा ! तू मेरे लिए करोड़ों का है।"

बेटा—"तो मा मुझे १ रुपया दे दो।"

(३)

दो मित्रों में आपस में विवाद हो रहा अंत में एक मित्र ने दूसरे से चिढ़कर र भी "मैं तुम सरीखे बेवक़ूफ़ों से नहीं बो दूसरे ने कहा—"मैं तो बोलता हूँ भी बोल रहा हूँ।"

—नारायणराव पौनीकर

(१)

मुँह छोटे एक मुँह बड़ा,
आधा मानुष लीले खड़ा।
चोबीच लगावे फाँसी,
अथ बतावे आवे हाँसी ॥
(पायजामा)

(२)

की बात, ठठोली की ठठोली।
की गाँठ औरत ने खोली ॥
(ताला-ताली)

(३)

समा है नहीं ना बादल,
कैसी यह हस्ती है।
फिर भी दो तारे दिखते हैं,
और बरसता पानी ॥
(रोतीहुई आँखें)

—श्री सावित्रदेवी बंसल

(१)

नौ पाई का हूँ मैं पाजी,
रखता हूँ मैं सबको राजी।
भेजो जहाँ वहीं मैं जाऊँ,
जाकर सब सन्देश सुनाऊँ ॥
(पोष्टकार्ड)

(२)

बिन सीखे सब गावें राग।
(ग्रामोफ़ोन)

—श्री दिनकर भास्कर राजिमवाले

(१)

आदि कटै दन्त रहत, मध्य कटे ध्वनि होत;
अन्त कटै अबला रहत, सब मिल के मुनि होत।
("नारद" मुनि)

(२)

एक गोरी, एक काली नार।
जिससे प्रेम करत संसार ॥
एक छोटी जो महँगी आवे।
दूजी बड़ी जो सस्ती आवे ॥
(इलायची)

—श्री निखिलेशकुमार सिंह "लाल"

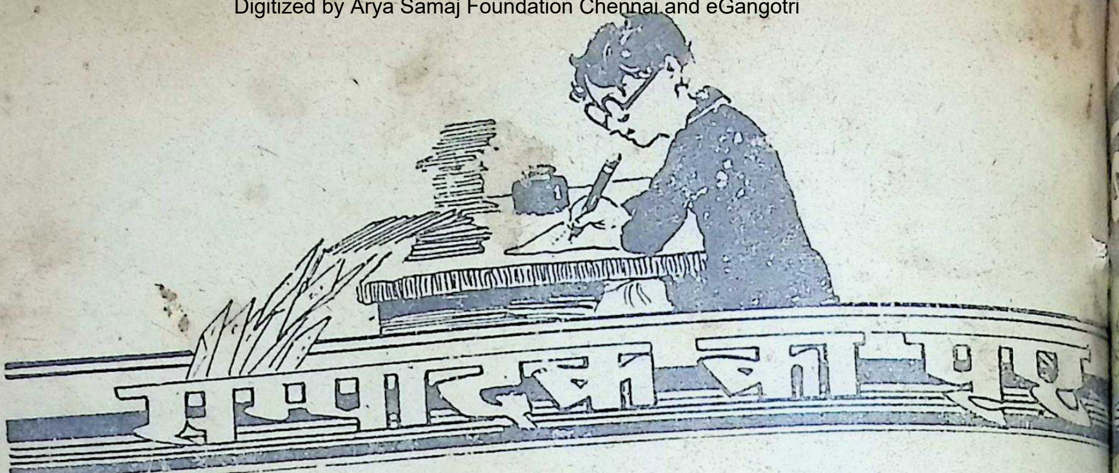

स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि

सर सी० वाई० चिन्तामणि की मृत्यु एक दुःखद घटना है। वे 'लीडर' के सम्पादक तथा एक पूज्य नेता थे। उनके विषय में एक लेख 'बाल-सखा' के इस अंक में अन्यत्र प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है, पाठक उस लेख को ध्यान से पढ़ेंगे।

चुटकी से बातचीत

जून सन् १९४१ के 'बाल-सखा' में एक लेख 'चुटकी से बातचीत' शीर्षक छपा था। उस लेख के अन्त में एक नोट लगाया गया था जिसके विषय में पाठकों से कोई उपाय पूछा गया था। 'बाल-सखा' के इस अंक में हम उस नोट का उत्तर छाप रहे हैं। जिन पाठकों को इस लेख से दिलचस्पी हो वे इस लेख को पढ़कर आनन्द उठा सकते हैं।

युद्ध और पशु-पक्षी

आज चारों तरफ़ युद्ध का ज़ोर शोर है। युद्ध में तरह-तरह के हथियारों और अन्य साधनों का प्रयोग किया जाता है। हथियारों के अलावा कुछ जानवर और पक्षी भी युद्ध के काम में लाये जाते हैं। इस सम्बन्ध का एक लेख हम 'बाल-सखा' में अन्यत्र छाप रहे हैं। आशा है, पाठक इस लेख को दिलचस्पी के साथ पढ़ेंगे।

श्री देवेश्वर झा का पत्र

जुलाई के 'बाल-सखा' में 'तुलसीदास' शीर्षक
के बारे में श्री प्यारेलाल टहनगुरिया का एक प
था। उसके विषय में श्री देवेश्वर झा लिखते हैं :

श्रीयुत सम्पादक जी !

गत जुलाई अंक के बाल-सखा में प्यारेलाल
तुलसीदास शीर्षक कविता का प्रतिकार
कराया है, वह भी निराधार और प्रमाणरहित

क्या उनके कथन-मात्र से ही कविता
गई? कैसा घृणित व्यवहार है। मिथ्या गर्व से
की प्राप्ति नहीं होती।

तुलसीदास नामक कविता अप्रकाशित
प्यारेलाल को दिखाई गई थी क्योंकि वे
विद्वान् सज्जन-से प्रतीत होते थे।

"सिंह के वेष में शृगाल!"

क्या उनके एक लक्ष्य से ही वह कविता
हो गई? चुल्लू भर पानी में डूब मरना
प्यारेलाल अपने प्रतिकार को वापस
कविता देवी से क्षमा-याचना करें, अन्यथा
परिणाम बुरा होगा।

भवदीय—
देवेश्वर झा "

Printed and published by K. Mittra at The Indian Press Ltd., Allahabad.

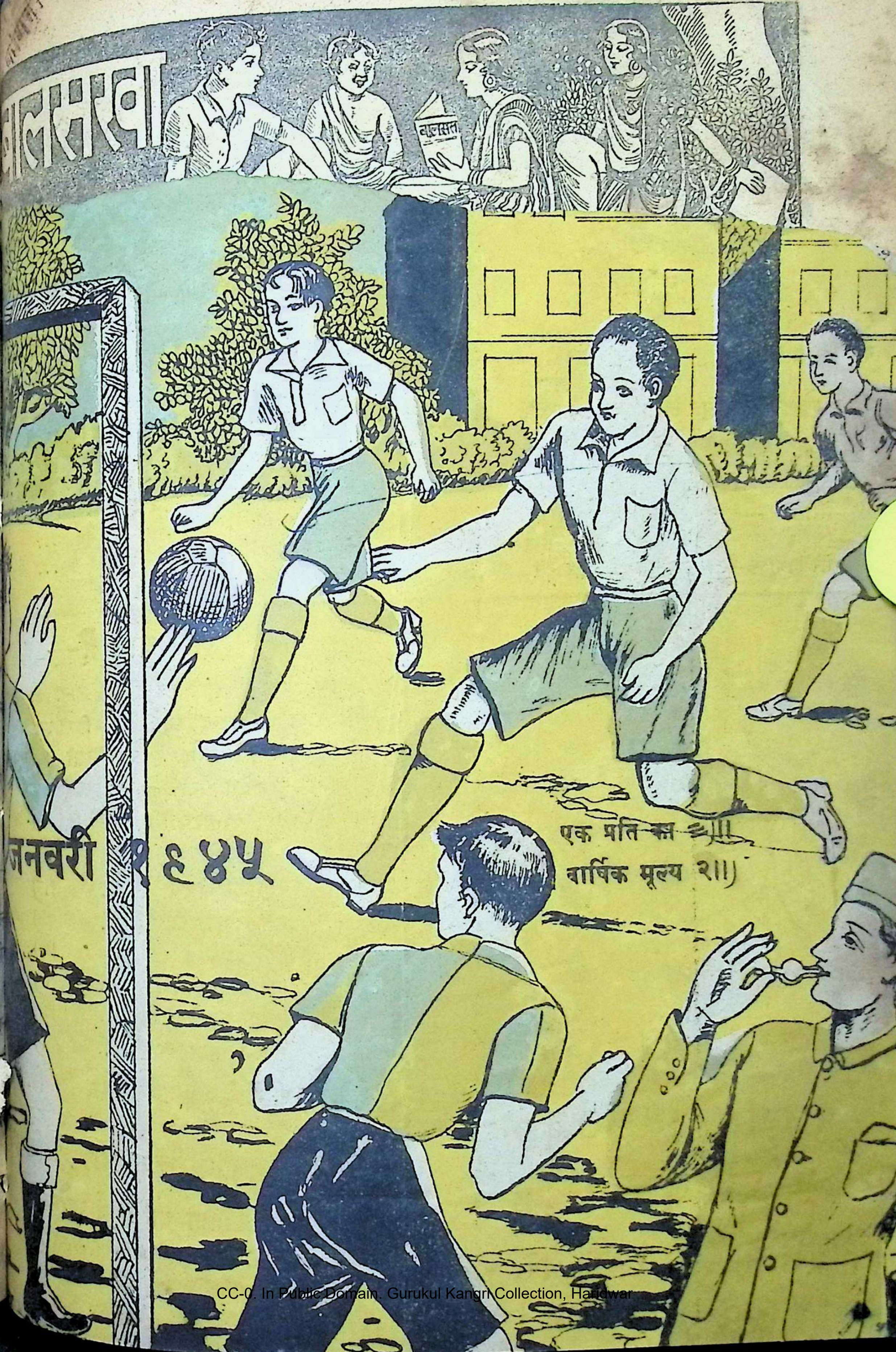

ालसखा

जनवरी १९४५

एक प्रति का ≡)॥
वार्षिक मूल्य २॥)

[illegible] २३
—कमल—श्रीयुत यशोविमलानन्द वर्मा २४

कविता

१—नव-वर्ष—श्रीमती प्रेमलता वर्मा १
२—राष्ट्रीय गीत—श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल् एल० बी० ... ... १
३—मब्बू-नब्बू—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ... ५
४—मकान—श्रीयुत श्याममोहन श्रीवास्तव ... ७
५—क्यों—श्रीयुत देवकीनन्दन माथुर ७
६—गीत—श्रीयुत 'भ्रमर' १२
७—मेरा तोता—श्रीयुत सुरेशकुमार 'सुमन' ... १६
८—चिर-हँसमुख माँ, मुझे बना दे—कुमारी उर्मिला देसाई १६
९—मेरे हाथों के खेल—श्रीयुत हरिशङ्कर खरे ... २२

श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद गुरु ... ...

फुटकर

१—तुममें कितनी बुद्धि है—श्रीयुत रामेश्वर ...
२—दिसम्बर महीने में छपे प्रश्नों के उत्तर ...
३—पाठकों के पत्र ... ...
४—अच्छी बातों का बगीचा ... ...
५—कुछ इधर-उधर की ... ...
६—छोटे बच्चों के लिए— ...
बिल्ली—श्रीयुत विनोदकुमार सिनहा
मकड़ी का जाला श्रीयुत रवीन्द्रशङ्कर वर्मा ...
तस्वीरोंवाली किताब—कुमारी कमलादेवी ...
मेरी गैया—श्री गिनियाँबाई नेमानी ...
७—प्रश्न-पहेली ... ...
८—मनोविनोद ... ...
९—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

कमज़ोर और कृश बच्चे

डोंगरे बालामृत

के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

सच बात है—

कि बहुत ही छोटे बच्चों को खाना और खेलना की चीज़ें बहुत ही पसन्द आती हैं। किन्तु इसके बाद कोई उन्हें प्रिय लगती है तो वह है रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाली कहानी की पुस्तकें। नीचे हम छः पुस्तकों के नाम लिख इनमें से प्रत्येक पुस्तक इतनी मज़ेदार है कि बच्चे उन्हें प्रसन्नता से लोटपोट हो जायँगे।

सद्गुणी बालक ... १।~)
मज़ेदार ख़ज़ाना ... ॥)
सोने का पेड़ ... ॥≡)
अनोखी कहानियाँ ... ।~)
लकड़ी का घोड़ा ... ॥≡)
बाल-कवितामाला ... ॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बालक-बालिकाओं के लिए

कविता का अपूर्व झरना

पं० रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं को [illegible] पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह उसी की रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

सम्पादक { लल्लीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

२] जनवरी १९४५—माघ २००१ [संख्या १

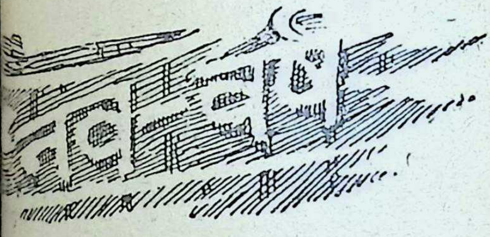

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता वर्मा

नववर्ष आज है आया।
उत्साह उमङ्गें लाया॥

यह साल पुराना, बीती बातों को लेकर;
में मिल जायें सब वैर-भाव बिसराकर।
यही ले आया। नव-वर्ष आज है आया॥
नई आशायें, जन-जन के मन में जागें;
कुविचार पुराने, जन-जन के मन से भागें;
है उपजाया। नव-वर्ष आज है आया॥
में मेल बढ़ायें, मिल-जुलकर क़दम बढ़ायें;
अपने दुख सारे दुनिया के दुःख मिटायें।
का तम छाया। नव-वर्ष आज है आया॥
रवि की नव-किरणें, धरती पर आशा बनकर;
सन्देश सुनातीं सुन लो सँदेश नव मुस्काकर,
उत्साह समाया। नव-वर्ष आज है आया॥

राष्ट्रीय गीत

रचयिता, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी०

हिमगिरि मेरा, गङ्गा मेरी,
मेरी ही यमुना प्यारी।
काशी और अयोध्या मेरी,
मेरी ही मथुरा न्यारी॥
मेरे राम, कृष्ण भी मेरे,
मेरी ही जननी सीता।
मेरे वेद-पुराण शास्त्र हैं,
मेरी ही भगवद्गीता॥
ज्यों-ज्यों मुझको अपने प्यारे,
भारत का होता है ध्यान।
त्यों-त्यों होता जाता हूँ मैं,
लघु होकर भी नित्य महान्॥

कञ्जड़

लेखक, श्रीयुत उमेशचन्द्र मिश्र

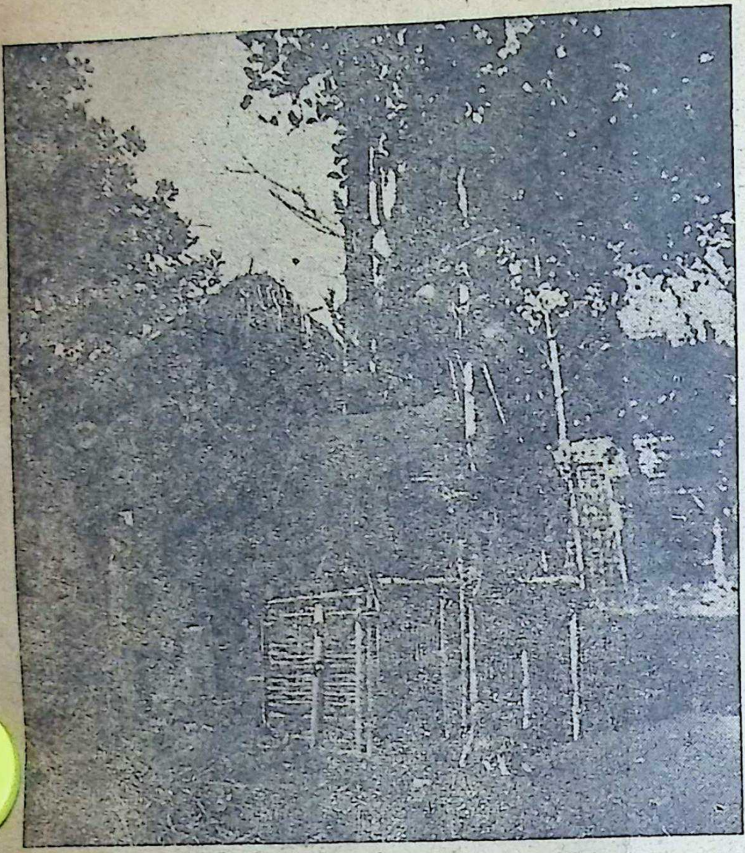

कञ्जड़ों का एक न्सुदर डेरा

लगभग पचास लाख कञ्जड़ संसार भर के देशों में छितराये हुए हैं। शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ ये लोग अपनी गृहस्थी लिये हुए सफ़र करते न दिखाई दें। इनसे अधिक घुमक्कड़ जाति दुनिया में दूसरी नहीं। एशिया और योरप के कञ्जड़ यद्यपि आपको कुछ भिन्न दिखाई पड़ेंगे, परन्तु उनका रहन-सहन और रीति-रवाज प्रायः एक से ही होते हैं।

घोड़ों, खच्चरों या गदहों पर अपनी सारी गृहस्थी लादे कर ये लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को आते जाते रहते हैं। कहीं-क ये ठहर जाते हैं तब देखते-देखते एक पूरा सा आबाद हो जाता है। फलाँगों की कथड़ी-गुदड़ीदार डेरे तन जाते हैं; चलने लगती हैं, रसोईं बनने लगती राग-रङ्ग और नाच-कूद भी दिखाई देने ल है। ब्याह-शादी भी हो जाती है।

इनका कोई अपना देश नहीं पर ज होते हैं वहीं के कहलाते हैं। इनकी उत्प बारे में भी अजीब-अजीब बातें कही जा कुछ लोग इन्हें आदि-निवासी कहते हैं दूसरे लोगों का कहना है कि ये किसी जाति में से हैं जो दूसरी जातियों की ख़ानाबदोश हो गई हैं। कुछ विद्वानों का है कि कञ्जड़ मिस्र के निवासी हैं। कुछ पहले उन्होंने योरप में पहुँचना शुरू कि अठारहवीं शताब्दी में तो योरपवाले कञ्ज बहुत परेशान हो गये थे। जर्मनी तो कञ्ज

से निकाल बाहर करने पर ही तैयार हो कञ्जड़ दुनिया से नेस्तनाबूद न हो सके। दुनिया पर उनका पहले सा ही अधिकार है।

ड़ लोगों की आँख बहुत तेज़ होती है। सा मालूम होता है जैसे वह सदा किसी न ज़ को लेकर भागने में रहता है। इसी धारण तौर से लोग रहते हैं। योरप के से पता चलता है कि रों और बन्दूक़ों के दि बनाने का काम ये करते थे पर जब से मशीनों से होने लगा नका यह व्यापार छिन ये लोग दस्तकारी में नहीं होते, खेल और के भी बहुत-से नये न्होंने खोज निकाले थे। के लिए ताश का ले लीजिए। इसे ञ्जड़ों ने ही शुरू किया बाद में सभ्य लोगों अपना लिया और दुनिया का ऐसा देश नहीं जहाँ ताश का प्रचार न हो। बनानेवाले भी ये ही ।

नी रोज़ी कमाने के लिए ये लोग अनेक हैं। हाथ की रेखायें देखकर भविष्य-फल छुरी-चाक़ू इत्यादि बनाकर बेचना आदि पेशे हैं। यद्यपि कञ्जड लोग चोर-लुटेरे समझे जाते हैं पर व्यवहार में ये बड़े सहृदय होते हैं। इनमें मेल बहुत होता है। सारे दल का एक मुखिया होता है। वही समय पड़ने पर पुलीस से बचने आदि की योजना बनाता है। सबसे अधिक उम्रवाली स्त्री ही टोली की सब स्त्रियों पर हुकूमत करती है। सब स्त्रियाँ उसकी बहुत इज्ज़त करती हैं। आपस के झगड़ों को तय करने के लिए इन्हें कभी अदालत में नहीं जाना पड़ता। इनकी अपनी पञ्चायत होती है जो सारे मामलों को तय कर लेती है और पञ्चायत के फैसले को हर कञ्जड़ उसी तरह मानता है

एक सँपेरा कञ्जड़ी

स्पेन के कञ्जड़ों का एक विवाहोत्सव

इँगलैंड के कञ्जड़

एक बलगेरियन कञ्जड़ी और उस

रह हम लोग अदालत के फ़ैसले को
।

ड़ बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। अक्सर
से बच्चों को चुरा ले जाते हैं और उन्हें बड़े
पालते हैं। कञ्जड़ जाति के औरत-मर्द और
भी बड़े मेहनती होते हैं। वे रात-दिन मेहनत
। औरतें घर का सारा काम करती हैं और
वे हुए समय में वे अपने घरवालों के काम
ाती हैं।

सदा घूमते रहने के कारण इन लोगों में सहने की शक्ति भी अधिक होती है। धूप, ठण्ड या वर्षा का असर इनपर जल्दी नहीं पड़ता। छुआछूत के रोगों के शिकार भी ये लोग बहुत कम होते हैं। इन लोगों का जीवन बड़ा विचित्र होता है। इतना कठिन जीवन बिताते हुए भी ये लोग हमेशा ख़ुश रहते हैं। इसी से इनको कष्ट बहुत कम खलते हैं।

झब्बू-नब्बू

लेखक, श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

(१)
के निकट कहीं पर दो मुर्ग़े रहते थे।
सुख-दुख की बातें आपस में कहते थे॥

(२)
र्ग़ों के बच्चे मिल ख़ुश हो गाना गाते।
करके एक-दूसरे पर थे प्यार दिखाते॥

(३)
दोनों मुर्ग़े साथ-साथ जाते थे।
जाकर वे जङ्गल से कुछ दाना लाते थे॥

(४)
कुछ बड़ा उम्र में नब्बू था कुछ छोटा।
दुनिया में अक्सर होता है अति खोटा॥

(५)
दोनों जङ्गल में पहुँचे दाना लाने।
धिक दाना झब्बू का नब्बू लगा रिसाने—

(६)
! इतना ज़्यादा तुमने मुझसे दाना पाया।
आधा दो मुझको" कह नब्बू इतराया॥

(७)
आलसी हो तुम नब्बू" इतना झब्बू बोला।
आगे नहीं ज़रा भी उसने था मुँह खोला॥

(८)
नब्बू बोला—"ओ बे पाजी! दे दे मुझको आधा;
वर्ना तेरे सब कामों में डालूँगा मैं बाधा॥

(९)
अगर नहीं देगा आधा तो तुझे मार डालूँगा।
और सभी तेरे बच्चों को घर जाकर खा लूँगा॥"

(१०)
इतना कहकर टूट पड़ा वह झब्बू को दे पटका।
उसका सारा दाना उससे फिर नब्बू ने झटका॥

(११)
बूढ़ा झब्बू बड़ा दुखी हो फिर रोया-चिल्लाया।
अपने मन में फिर ईश्वर को उसने बहुत मनाया॥

(१२)
एक बड़े-से अजगर ने फन इतने में दिखलाया।
झब्बू देख भगा पीछे को नब्बू भाग न पाया॥

(१३)
नब्बू को पकड़ा अजगर ने बड़े मज़े से खाया।
उसकी काली करतूतों का ऐसा मज़ा चखाया॥

नया खेल

लेखक, श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

'मेरे पीछे-पीछे चलो।' कमला ने कहा। आज वह स्कूल से एक नया खेल सीख आई थी। उसकी गुरुजी ने कहा था कि इस खेल को 'नेता खेल' कहते हैं। इसमें एक खेलनेवाला नेता बनता है। वह जैसा करता है वैसा ही उसके पीछे और सब बच्चे भी करते हैं। नेता यदि कोई ग़लत काम करता है तो उसकी ग़लती पकड़नेवाला उसकी जगह नेता बन जाता है।

विमला और सरला उसके पीछे-पीछे घर भर में चारों ओर घूमती रहीं।

छोटा बच्चा भी उनके पास आ गया। सरला ने कहा—यह भी खेलना चाहता है।

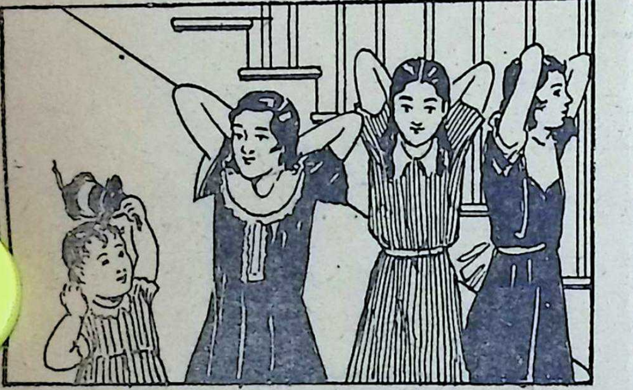

बच्चा भी उसी तरह चलने लगा।

कमला ने बच्चे की ओर देखा और बोली—अच्छा, तुम भी वैसा ही करो, जैसा मैं करू। यही खेलने का ढङ्ग है।

छोटे बच्चे ने एक बार ध्यान के साथ सबको देखा और फिर उसी तरह वह भी उनके पीछे-पीछे नक़ल करता हुआ चलने लगा। सब लोग बच्चे की नक़ल को देखकर हँस पड़े। विमला ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा- तू बहुत अच्छा खेलता है।

जब शाम होने लगी तो माँ ने कमला को पुकारकर कहा - कमला, अब खेलना बन्द करके यहाँ आओ। रात में बाहर नहीं खेलते।

सब बच्चे कमरे में पहुँचे। छोटा बच्चा भी उनके पीछे-पीछे वहाँ गया।

माँ ने कहा—कमला अपने खिलौने उठाकर आलमारी में रख दो, नहीं तो टूट जायँगे।

'अभी रख दूँगी माँ।' कमला ने कहा और बैठकर एक किताब पढ़ने लगी।

छोटे बच्चे ने तुरन्त ही मेज़ पर से तसवीरों एक किताब उठा ली और पढ़ने लगा। विमला सरला देखकर हँसीं और माँ के पास भाग गईं। बच्चा बड़ी बहन की भाँति गम्भीर बना हुआ पुस्तक पढ़ता वह इस प्रकार अपने होठ हिला रहा था मानों सचमुच पढ़ रहा हो।

माँ ने फिर पुकारा—चलो कमला।

कमला ने किताब बन्द कर दी। वह उठ खड़ी बच्चा भी उसी तरह उठ खड़ा हुआ। कमला ने चारपाई पर फेंक दी। बच्चे ने भी अपनी किताब फेंक दी। तस्वीर की किताब के पन्ने-पन्ने अलग हो गये

'जो मैं करूँ वह तुम न करो।' कमला ने डाँटा जैसे छोटे बच्चे ने उसकी बात ही न सुनी हो।

कमला अपने खिलौने उठाकर आलमारी में फेंकने बच्चे ने क्षण भर तो उसे ध्यान से देखा फिर वह भी एक खिलौना उठाकर आलमारी में फेंकने लगा। एक खिलौना जाकर कपड़े के हाथी को लगा। बड़ी वाला बन्दर, हाथी, किताबें एक के बाद एक नीचे लगे। एक किताब गिरकर कमला के सिर पर लगी।

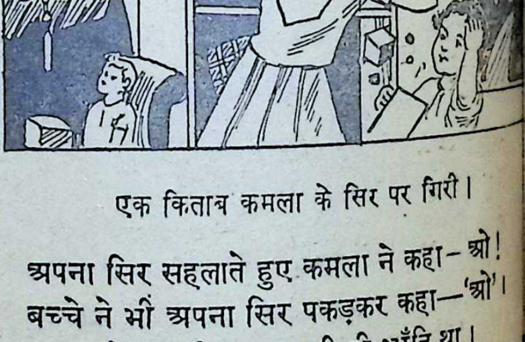

एक किताब कमला के सिर पर गिरी।

अपना सिर सहलाते हुए कमला ने कहा- ओ!

बच्चे ने भी अपना सिर पकड़कर कहा—'ओ'।

उसका चेहरा भी कमला की ही भाँति था।

एकाएक आँसू-भरी आँखों से वह खिलखिलाकर पड़ी। माँ को पुकारकर उसने कहा—माँ, देखो यह भी 'नेता खेल' खेल रहा है। कैसा पगला है।

माँ ने हँसकर कहा—हाँ, यह समझता है कि किसी नक़ल करना एक मज़ेदार खेल है, इसलिए जो तुम

ह करता है। पर वह बुरी आदत सीख रहा है।
ी आदतों का खेल क्यों नहीं खेलतीं जिससे
े बच्चे तुम्हारी नक़ल करके लाभ उठायें ?
ी बात है। अब मैं इसे अच्छी आदतें सिखा-
कमला ने कहा—'पहले इसे ख़ुश होना सिखा-
देखो न, यह कैसा रुआसा दीख रहा है।'
, माँ ने कहा।
ा मुस्कराई; बच्चा भी मुस्कराया।
ा ने कहा—अब हम लोग खिलौनों और किताबों
े से रक्खेंगे।
े ने कमला की नक़ल करते हुए सब सामान ठीक
िया।
फिर अपने नेता की नक़ल करो।' कमला ने कहा और नल के पास पहुँची। बच्चा भी वहाँ पहुँचा। कमला ने मुँह-हाथ धोये; बच्चे ने भी उसी प्रकार किया।

उसके बाद कमला चौके में आकर खाने बैठ गई। बच्चा भी बैठ गया। जिस प्रकार कमला खाती थी उसी प्रकार बच्चा भी खाता था। कमला ख़ूब चबा-चबाकर खा रही थी। बच्चा भी भोजन को उसी तरह ख़ूब चबाता था।

खा चुकने के बाद कमला ने हाथ-मुँह धोये। बच्चे ने भी वैसा ही किया। कमला ने कहा—यह खेल कितना मज़ेदार है मुन्ना ?

छोटा बच्चा ख़ुशी से बोला—बहुत बढ़िया। अब हम रोज़ यह खेल खेलेंगे।

मकान

लेखक, श्रीयुत श्याममोहन श्रीवास्तव

मकान में रहता रामू।
देख ललचाता श्यामू॥
ू का मकान है पक्का।
में रहते उसके कक्का॥

इसके पीछे कुआँ बना है।
जहाँ नहाना सख़्त मना है॥
कोई इसमें नहीं नहाता।
रामू इससे जल ले जाता॥

मकान का बाग़ देख लो।
की सुन्दरता भी लख लो॥
अच्छे गमले भाई।
ये रामू को सुखदाई॥

जब पुष्पों पर तितली आतीं।
रामू के मन को हर्षातीं॥
रामू का मकान है ऐसा।
बाबू का बँगला हो जैसा॥

क्यों

लेखक, श्रीयुत देवकीनन्दन माथुर

वीर बहादुर बालक हूँ मैं
नहीं कभी मच्छड़ से डरता;
खटमल को कुछ नहीं समझता
चींटी से तो रहता लड़ता।

नक़ली ही बन्दूक़ उठाकर
मकड़ी को धमकाता हूँ मैं;
पा मौक़ा उसके बच्चों को
अच्छी तरह सताता हूँ मैं।

वीर बालकों की सेना ले
ताल किनारे जाता हूँ मैं;
मार मेढकों को जल में बस
उनका ढेर लगाता हूँ मैं।

फिर भी मुझको बड़ा बहादुर
कोई कभी नहीं कहता है;
कैसे बनूँ बहादुर फिर मैं—
इसी सोच में मन रहता है।

सूरज-मुखी

लेखक, श्रीयुत ज्योतिभद्र दीक्षित

बहुत दिनों की बात है जब लोग दुनिया की हर वस्तु से परिचित नहीं थे। मनुष्य यह नहीं जानता था कि पहाड़, फल-फूल, नदी इत्यादि किस तरह बने हैं। जिस किसी वस्तु को वह नहीं समझ पाता उसको यह कहकर अपने मन को समझा लेता कि यह तो परियों या देवताओं का काम है। इसको कौन जान सकता है?

उसी समय एक फूल के बारे में कही गई कहानी बड़ी सुन्दर है।

कहते हैं कि एक समुद्र के पास, पहाड़ियों में बहुत-सी खोहें थीं, जिनमें परियाँ रहा करती थीं। वे भी बहुत अधिक होने के कारण बड़ी प्रसन्न रहती थीं; क्योंकि उनको आपस में खेलने-कूदने की सुविधा थी। वे बहुत ही सुन्दर थीं। उनके सुनहरे बाल और भी सुन्दर मालूम होते थे। उनकी छोटी-छोटी खोहें भी बड़ी अच्छी लगती थीं। उनकी दीवारों में सीपों के टुकड़े जड़े हुए थे। वे ऐसे मालूम पड़ते थे मानो सङ्गमरमर पत्थर हों। उनका फ़र्श साफ़ सफ़ेद बालू से बना था जो सोने में सुहागा का काम कर रहा था।

हर एक परी के पास एक-एक छोटी-सी बग्घी थी जो घोंघों की बनी हुई थी। उसमें मुलायम सिवार बिछी रहती थी जिससे कि बैठने में कोई कष्ट न हो। घोड़ों की जगह मछलियाँ उस बग्घी को खींचती थीं। इस बग्घी से परियाँ जहाँ चाहतीं, जातीं और वापस आ जाती थीं। उनका खेल रातभर छोटी मछलियाँ पकड़ना था।

वे शाम होते ही अपनी-अपनी बग्घी पर सवार होकर टहलने निकल जाती थीं और शाम को फिर आ जातीं। एक बात बड़ी ही अजीब थी कि उन लोगों ने सूरज कभी नहीं देखा था; क्योंकि वे सूरज उगने के पहले अपनी-अपनी खोहों में सोने चली जाती थीं। उनकी आदत हम लोगों से
थी। जब दिन को हम लोग अपना-अपना काम
हैं तब वे सोती थीं और जब हम लोग सोते
वे खेलती-कूदती थीं।

एक दिन क्या हुआ कि सब परियाँ तो आ
अपनी खोहों में चली आईं; लेकिन एक परी
नाम था 'शिली' अपनी बग्घी में सोती समुद्र के
तैरती रह गई। जिस समय वह नींद से जागी
समय लाल-लाल सूरज का उदय हो रहा था।

उसको देखकर शिली ताज्जुब में पड़
वह सोच रही थी कि यह कौन-सी वस्तु है।
लोग रात में पेड़ देखकर उसको भूत समझ
वैसे शिली भी सोच रही थी। वह सोच
थी कि यह किसी राजकुमार की बग्घी है और
घोड़े जुते हुए हैं। उस पर यह राजकुमार बै
शिली यह सोच ही रही थी कि सूरज थोड़ा
ऊपर उठ आया। अब शिली और आगे सोचने
कि शायद राजकुमार ने मुझको देख लिया है,
लिए निकट बढ़ता चला आ रहा है। यह सो
शिली अपनी बग्घी से उतरकर एक बर्फ़ की
पर बैठकर सूरज के आने की राह देखने
ज्यों-ज्यों सूरज ऊपर उठता त्यों-त्यों शिली का
प्रसन्न हो रहा था। मगर जब सूरज डूबने लगा
वह निराश हो गई। वह उठने लगी तो उसके
का ठिकाना न रहा, क्योंकि वह उठ नहीं सकती
उसका सब शरीर बर्फ़ से ढक गया था। वह
ऊपर मुँह करके सूरज की बाट देखने लगी।

लोग कहते हैं, वह परी उसी जगह
और उसकी जगह एक सुन्दर पेड़ उग आया
फूल लगा। जब सूरज निकलता है तभी वह
है और जब सूरज डूबता है तो वह बन्द हो जाता
वह पेड़ अब भी मौजूद है। उस फूल का
"सूरजमुखी।"

तुममें कितनी बुद्धि है?

लेखक, श्रीयुत रामेश्वर

वे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर निकालो और फ़रवरी के महीने में छपनेवाले इन उत्तरों से अपने उत्तर मिलाओ। देखो तुम्हारा साधारण ज्ञान कितना है।

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९ इन अङ्कों को लिखो कि जोड़ने पर सब का योग १०० हो।

ड़ी में कब मिनिट की सूई (बड़ी सूई) घण्टे की टी सूई) से नहीं मिल पाती ?

किन देशों के साथ निम्नलिखित नामों को जोड़

त सेन, बिस्मार्क, अब्राहम लिंकन, नेपोलियन, और गैरीबाल्डी।

कौन-सा भारी जहाज़ अपनी पहली जल-यात्रा ही कर पाया ?

निम्नलिखित महान् साहित्यिकों की एक-एक प्रसिद्ध का नाम लिखो -

दास, शेक्सपियर, कालिदास, विक्टर ह्यूगो, दान्ते, रवीन्द्रनाथ, प्रेमचन्द।

यदि तुम्हें एटलस दिया जावे तो निम्नलिखित दुनिया के नक़्शे में कहाँ खोजोगे—

न का द्वीप, सेनार बाँध, हवाना, लीमा, ओमस्क,

"१९४१ का यह नया वर्ष अपने देश की सबसे य का अग्रदूत है"—यह वाक्य किसने कहा था— सोलिनी, हिटलर, गोरिंग ?

कौन-सी हवाई जहाज़ की उड़ान लम्बी होगी— बर्लिन या लन्दन से नेपल्स ?

इन व्यक्तियों को किन लड़ाइयों के साथ सम्बन्धित

जुद्दौला, तानाजी, मीर क़ासिम, सर आयर कूट, दाराशिकोह।

—भारतवर्ष में आने के पहले ब्रह्मपुत्र नदी किस पुकारी जाती है ?

दिसम्बर महीने में छपे प्रश्नों के उत्तर

१—यद्यपि रोशनी के सम्बन्ध में बहुत पहले से हमें मालूम है परन्तु यह किस चीज़ की बनी है, इस सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने अभी थोड़े दिन पहले ही पता लगाया है। उनका कहना है कि वायुमण्डल में किसी चीज़ के बहुत-से छोटे-छोटे कण उड़ते रहते हैं। इन्हीं से रोशनी बनती है।

२—इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर है कि हम जीवित होने का क्या अर्थ समझते हैं। पशुओं और वनस्पतियों के बहुत-से काम पत्थर नहीं कर सकते। पत्थर बढ़ते हैं पर साँस नहीं लेते। इसलिए हम कह सकते हैं कि पत्थर जीवित नहीं होते।

३ यह प्रश्न देखने में तो आसान मालूम होता है पर है बहुत कठिन। हमें इस बात का पता नहीं है कि जब पानी से गरमी निकल जाती है तब यह ठोस में क्यों बदल जाता है। यह जानने के लिए हमें बर्फ़ की प्रकृति का अध्ययन करना होगा।

४—हाँ, मक्खी एक ही समय में चारों ओर देख सकती है।

५—पानी का रङ्ग सफ़ेद होता है अतएव जब यह जम जाता है तो बर्फ़ भी सफ़ेद रङ्ग की होती है।

६—श्याम ९। बजे स्कूल पहुँचेगा।

७—श्याम और मोहन पहले नदी पार करेंगे। फिर एक उनमें से नाव लेकर लौट आवेगा तब पिता या डाकिया नदी पार करेगा। फिर दूसरा लड़का नाव लेकर लौट आवेगा। इस बार दोनों लड़के नदी पार हो जायँगे। तब एक लड़का फिर लौट आवेगा। इस बार डाकिया या पिता जो बचा होगा, नाव लेकर नदी पार करेगा और उस पार खड़ा लड़का नाव लेकर इस पार से दूसरे लड़के को नदी पार ले जायगा। इस तरह सब लोग नदी पार कर लेंगे।

८—सब से पहले संसार का चक्कर लगानेवाला फ़र्डीनेंड मैगलेन था।

हंसिनी

लेखक, श्रीयुत महावीरप्रसाद श्रीवास्तव

एक बूढ़ी औरत थी। वह बहुत ग़रीब थी। ह इतनी दुबली हो गई थी कि उसका चमड़ा लटकने लगा था।

एक दिन ज़ोर की आँधी आई। इससे उसकी झोपड़ी खड़खड़ाने और हिलने-डुलने लगी। बुढ़िया हुत घबड़ा रही थी कि कहीं झोपड़ी गिर न जाय। तने ही में एक अजनबी उसके दरवाज़े पर आया। सके हाथ में एक हंसिनी थी। उसने वह हंसिनी ुढ़िया को दे दी और कहा—"यह हंसिनी तो। आज बड़ी सर्दी है इससे तुम अपने को गरम र सकोगी।"

बुढ़िया को बहुत ताज्जुब हुआ। उसने हंसिनी ो पैरों के बीच छिपा लिया। तभी ज़ोर की ावाज़ के साथ उस पक्षी ने एक सुनहरा अण्डा दिया।

बुढ़िया ने हंसिनी को गोद से उतार दिया, ण्डा उठाया और अपना सौभाग्य जताने के लिए ह पड़ोसियों के पास दौड़ी गई।

वह अण्डा सबसे पहला था। हंसिनी ने और ी बहुत से अण्डे दिये। बुढ़िया अमीर हो गई। ब उसे अपने कामों से फ़ुर्सत मिल गई। वह ख़ूब टी हो गई और आराम के साथ रहने लगी। गाँव आदमी उसकी इज़्ज़त करने लगे।

इस पर वह दिन पर दिन घमण्डिन होती ई। उसने बहुत से नौकर-चाकर रख लिये।

बुढ़िया को एक बात से बड़ी चिढ़ थी। वह ा हँसिनी का शोर। हर बार जब वह अण्डा देती ी, वह इस पर और ज़्यादा घमण्ड करती थी और हले से अधिक शोर करती थी। आख़िरकार ढ़िया इस शोर से पागल-सी हो गई।

बुढ़िया इसे अधिक न सह सकती और जो उसके हाथ में आ जाता था उसी को हंसिनी फेंककर मारती थी।

हंसिनी चारों तरफ़ भागी-भागी फिरती और चिल्लाहट से घर को भर देती थी।

एक दिन ग़ुस्से में आकर बुढ़िया ने नौ को पुकारा और हंसिनी को पकड़कर उसका ग मरोड़ने का हुक्म दिया। नौकर उसको पकड़ने कोशिश करने लगे। अपनी स्वामिनी के हुक्म बजा लाने के प्रयत्न में वे एक दूसरे के ऊपर लद गिरने लगे। सब फ़र्श पर गिर गये और चि लगे। कुत्ते कराहने लगे और बिल्ली ज़ोर-ज़ोर शब्द करने लगी। घर के बाहर भयानक आँधी लगातार होनेवाली आवाज़ें बढ़ाने लगी।

अचानक, इसी बीच, दरवाज़ा खुला और अजनबी जो हंसिनी लाया था, दिखलाई दिया। उ हंसिनी को उठा लिया। यह उसने बहुत आसानी कर डाला और बुढ़िया की ओर घूरकर उस नीचता पर थूकता हुआ चला गया।

अजनबी के जाते ही सारी खिड़कियाँ अन्दर ओर खुल गईं और हवा ने आग लगा दी। खाने के कमरे के चारों तरफ़ लग गई और सा खाना नष्ट हो गया। दूसरी मंज़िल के कमरे धा धायँ जलने लगे।

बुढ़िया की टोपी उड़ गई और उसके हवा में चक्कर काटने लगे। नौकर उस जगह भाग गये। कुछ ही मिनटों में बुढ़िया ने अपने आप उसी ग़रीबी की हालत में पाया जो हंसिनी के आ से पहले थी।

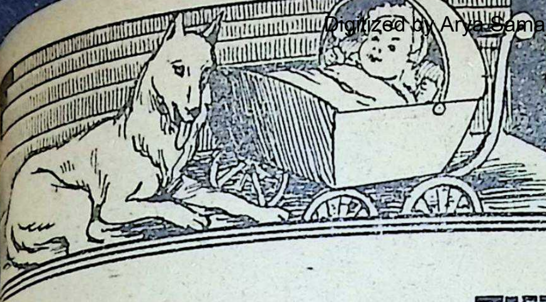

बड़े लोगों का बचपन

हाप्सन

लेखक, श्रीयुत रासविहारी चौधरी

भग १६८० ई० की बात है। एक दिन एक अँगरेज़ वाइट' द्वीप के बानचर्च नगर की एक दर्ज़ी की र बैठा काम कर रहा था। उसका मालिक कहीं ला गया था। बालक ही तो था; सूई-तागा छोड़कर ूर तक लहराते हुए समुद्र की शोभा बड़ी ललक से गा।

बालक बिना माँ-बाप का अनाथ था। पादरियों ने ला-पोसा था। उन्हीं ने उसे दर्ज़ी की दुकान पर सीखने को भर्ती कर दिया था; किन्तु वह सूई-तागे ड़ना पसन्द नहीं करता था। नील समुद्र में पहले दिखाई पड़े; फिर जङ्गी जहाज़ों का एक झुण्ड समुद्र ज़ों को कुचलता मस्तानी चाल से चलता, उसकी के सामने आया। बालक दुकान से उठकर दौड़ता मुद्र के किनारे पर आया। वहाँ एक छोटी सी नाव ड़कर वह उसपर चढ़ गया। बहादुर बालक अपनी से नाव खेता हुआ जल-सेनापति के सामने पहुँचा। मय लड़ाकू जहाज़ों पर रहना बड़ा ख़तरनाक समझा था। जल्दी कोई उनमें भर्ती होना नहीं चाहता था। ने के लिए लड़के के बार-बार आग्रह करने पर कोई नहीं कर सका।

रे ही दिन उसकी परीक्षा का समय आया। उस फ़्रांस और इँगलैंड में बड़ी दुश्मनी थी। दिन निकलने थ ही फ़्रांसीसी लड़ाकू जहाज़ों से इन जहाज़ों का ना हो गया। यद्यपि बालक जहाज़ पर नया ही नया था, इसके पहले उसने लड़ाई कभी नहीं देखी थी, वह नहीं घबड़ाया। अपने अफ़सर के हुक्म के र वह दौड़-दौड़कर काम करता रहा। उत्तेजना के भी विचलित नहीं हुआ। बहुत देर तक लड़ाई होती बालक ने ऊबकर एक जहाज़ी साथी से पूछा—लोगों को कैसे मालूम होगा कि हमारे दुश्मन अब हार जहाज़ी ने शत्रु के जहाज़ के मस्तूल पर फहराती हुई पताका की ओर उँगली उठाकर कहा—"देखो, जब वह पताका नीचे उतार ली जायगी तब हम लोग समझेंगे कि दुश्मन हार गये, हमारी जीत हुई।" 'बस, इतने ही से'—यह कहता हुआ बालक वहाँ से तेज़ी से चल पड़ा।

उस समय दोनों ओर के जहाज़ बहुत निकट होकर लड़ते थे। एक पक्ष के जहाज़ दूसरे पक्ष के जहाज़ पर चक्कर काटते हुए, गोली-गोले बरसाते थे। एक के सैनिक दूसरे के जहाज़ पर ज़बर्दस्ती चढ़कर क़ब्ज़ा करने की कोशिश करते थे। फ़्रांसीसी सेनापति का जहाज़ बालकवाले जहाज़ के पास ही था। बालक निधड़क कूदकर उसपर चढ़ गया फिर चुपके-चुपके दोनों ओर की गोलियों की कुछ परवा न कर रस्से की सीढ़ी के सहारे मस्तूल पर जा पहुँचा औ पताका उतारकर वह बिल्ली-सा पैर दबाता अपने जहाज़ में आ गया। किसी ने भी उसे आते-जाते न देखा।

अँगरेज़ी सैनिकों ने शत्रु जहाज़ पर पताका न देखी त वे फूले नहीं समाये। समझा दुश्मन ने हार मान ली।

एक बार ही उत्साह और उमङ्ग में आकर वे शत्रु जहाज़ पर कूद पड़े। उनके इस अचानक धावे से शत्रु की सेना भौंचक रह गई। उनके गोलंदाज़ दुम दबाकर भा गये। थोड़ी देर में ही फ़्रांसीसी जहाज़ों पर अँगरेज़ों क क़ब्ज़ा हो गया। हम लोग जीत गये—यह जानकर आन में उछलता वह बालक आगे आया। उसके हाथ में फ़्रांसीस पताका थी। सब लोग देखकर आश्चर्य-चकित हो रहे।

इस घटना की ख़बर अँगरेज़ी सेनापति को मिली उन्होंने बालक को बुलाया और सारी कहानी सुनी। ख़ु होकर उसे छाती से लगाया, पीठ ठोंकी, बहुत कुछ इन दिया और ऊँचे पद पर तरक़्क़ी कर दी। साहस औ वीरता के कारण उसकी तरक़्क़ी का सिलसिला जारी र यहाँ तक कि एक दिन वह अँगरेज़ी जल-सेना के सबसे पद पर जा पहुँचा। अँगरेज़ी इतिहास में "जल-सेनाप हाप्सन" का नाम सोने के अक्षरों में लिखा मिलता है।

माँ मारेंगी तो नहीं ?

लेखक, श्रीयुत उमाशङ्कर शुक्ल

बहुत दिनों की बात है। एक लड़का था। छोटा सा क़रीब सात साल का। उसका नाम गोविन्द था। वह मनिकापुर गाँव में रहता था। हीं पढ़ता था। वहीं खेलता था। वहीं उसके मित्र और वहीं माँ बाप थे। दादा-दादी थे। सब कुछ था।

छोटा-सा गाँव था। गाँव में मदरसा था। लवाई की दूकान थी। बाज़ार लगता था। हरे-हरे खेत थे। ठण्ढ के दिन थे। नहर थी। छोटे और बड़े तालाब थे।

एक दिन लड़का तालाब के किनारे पहुँचा। आसपास झाड़ी और पीपल, नीम, बरगद, गूलर, जामुन, आम और करौंदे के पेड़ थे। उस तालाब धोबी कपड़े धोते थे। जानवर पानी पीते थे। ड़ियाँ नहाती थीं। बालक तैरते थे। किसान पना खेती का काम करते थे।

गोविन्द तालाब के किनारे खड़ा था। उसमें ढक थे, मछलियाँ थीं और कछुए थे। बगुले, बतक था सारस हमेशा उस तालाब में तैरा करते थे।

अचानक ही गोविन्द का पैर फिसल गया र वह तालाब में गिर पड़ा। तालाब गहरा था। विन्द घबड़ाया कि अरे बाप रे मरा अब तो। तालाब के किनारे घास थी। कहते हैं कि 'डूबते तिनके का सहारा'। वही बात गोविन्द की वहाँ कोई न था। गोविन्द डूब रहा था। वह कि की घास पकड़ता था पर वह हाथ में ही चली थी। फिर पकड़ता किन्तु बेकार। वह चिल्ला था, ज़ोर से नहीं धीरे-धीरे। अब छाती पानी आ गया था। वह धीरे-धीरे डूब रहा यह लो, गले तक पानी आ गया। उसके डूबने बस थोड़ी-सी ही कसर रह गई। उसने आशा दी। बच्चा जो ठहरा। इतने में ही उसका पड़ो शिवप्रसाद आ गया। वह जवान और हट्टा-कट्टा परोपकारी और स्काउट था। उसने झट से गोवि का हाथ खींच लिया। गोविन्द तालाब के बा आ गया। शिवप्रसाद को मानों गोविन्द की र करने के लिए भगवान् ने ही भेजा था। गोवि कपड़े पहने था। शिवप्रसाद ने कहा कि आओ चलें। कपड़े बदला दें। आज तुम बच गये। तालाब के किनारे अकेले न आया करो। गोवि ने रोते हुए कहा कि कपड़े भीग गये हैं। मा मारें तो नहीं।

शिवप्रसाद ने हँसते हुए कहा कि यदि मर जाते तो फिर माँ किसे मारतीं ?

गीत

लेखक, श्रीयुत 'अमर'

इ-मह महक रही फुलवारी, फूल निराले कलियाँ न्यारी।
ली-डाली है मतवारी, सुन्दर-सुन्दर प्यारी-प्यारी॥
गुलाब फूलों का राजा, मुझे बुलाता 'आ जा-आ जा'।
ाता हूँ मैं चम्पा रानी, नहीं करूँगा आना-कानी॥
गिस मुझसे है शरमाती, झाँक-झाँककर मुझे बुलाती।
दन नीची किये चमेली, खोज रही है सखा सहेली॥
देखो जङ्गल के ढोर, मेरे लिए मचाते शोर।

लाठी लिये हुए चरवाहा, चिल्लाता है आहा-आहा
नाव खड़ी है नदी-किनारे, शायद मेरी बाट निहारे
रङ्ग-बिरङ्गे बादल सारे, मुझको कितने लगते प्यारे
चूँ-चूँ-चूँ-चूँ चिड़ियाँ गातीं, कल-कल नदियाँ बहती जातीं,
पङ्ख लगाकर मैं उड़ जाऊँ, चिड़ियों के सँग शोर मचाऊँ
डूबा सूरज निकले तारे, नील गगन से कौन पुकारे
चाँद सुनहला रथ ले आया, "ओ रथवाले! ठहरो, आया"

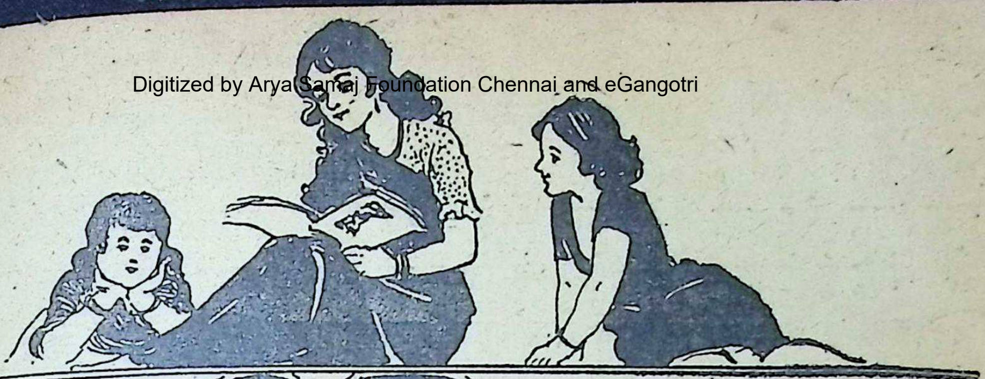

सहेली

अञ्जनी

लेखक, श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य

सी शहर में एक मालदार सेठ रहता सके एक लड़का था। उसका नाम था । मधुसूदन अभी छोटा ही था पर उसकी ड़ी तेज़ थी। वह पिता के कामों को बहुत मझ लेता और बहुधा उनकी सहायता भी रता। पिता कहते—मेरा मधुसूदन बड़ा हुत अच्छा व्यापारी होगा; बहुत धन पैदा करेगा।

दिन सेठजी अपने कमरे में बैठे हुए थे। भी उन्हीं के पास बैठा हुआ था। सेठजी भाई भी उनके पीछे बैठा हुआ था। मधु- ी माँ भी कमरे में आ गई और बातें होने इतने में नौकर ने आकर बताया कि बाहर जी आये हुए हैं। सेठजी साधु-महात्माओं सम्मान करते थे। उन्होंने नौकर से साधु लाने लिए कहा। सेठजी की पत्नी भीतर तो बाबाजी कमरे में आये। वे अपना बिछाकर बैठ गये।

सूदन था तो छोटा ही पर अपने पिता की साधु-महात्माओं का बहुत सम्मान करता सने उठकर साधु के पैर छुए तो वे बहुत । उन्होंने आशीर्वाद दिया।

तब साधु ने कहा—"सेठजी, तुम्हारा यह पुत्र बहुत भाग्यवान् है परन्तु—" साधु कुछ रुके।

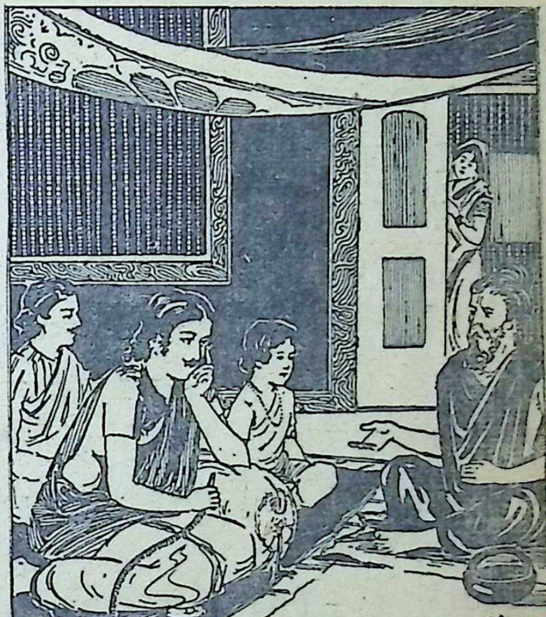

साधु ने कहा—सेठजी, आपके लड़के की आयु कम है।

सेठजी ने तुरन्त पूछा—'परन्तु' क्या महाराज आप रुके क्यों?

साधु ने धीरे से कहा—बात यह है कि इसकी आयु कम है।

सेठजी घबड़ाकर रोने लगे और साधु के पै

पकड़कर बोले—बाबाजी, कोई उपाय बताइए। यह मेरा अकेला लड़का है।

साधु कुछ देर चुप रहे फिर बोले—एक उपाय है। मैं मृत्यु के बाद भी इसके प्राण को इसके शरीर में यज्ञ द्वारा बारह महीने तक रोके रह सकता हूँ। इस बीच में इसके मृतक शरीर को जङ्गल में किसी ऐसी जगह रखना जहाँ कोई न जाता हो; न सूरज की रोशनी ही पहुँचती हो। एक वर्ष के भीतर यदि कोई कुमारी-लड़की वहाँ पहुँच जायगी और तीन महीने तक इसके शरीर की देख-भाल करती रहेगी तो यह फिर जीवित हो जायगा।

साधु ने यज्ञ किया और मन्त्र फूँककर एक अँगूठी लड़के को पहना दी। उसके बाद वे चले गये।

दिन बीतने लगे। जब मधुसूदन पन्द्रह वर्ष का हुआ तो एक दिन वह एकाएक बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। सेठजी ने साधु के कहे अनुसार एक घने जङ्गल में एक मकान बनवाया और उसके अन्दर लड़के की लाश को लिटा दिया।

उस वन से थोड़ी दूर पर एक बड़ा क़स्बा था। उसमें एक और सेठ रहता था। उसके एक लड़की ी जिसका नाम अञ्जनी था। अकेली सन्तान होने के कारण वह मा-बाप की बड़ी दुलारी थी। अञ्जनी को घूमना-फिरना बहुत पसन्द था। अक्सर वह घर से निकलकर जङ्गल में घूमने चली जाती। उसके पास एक नाव थी जिस पर बैठकर वह नदी में दूर-दूर तक सैर करती।

एक दिन वह नाव लेकर शाम को सैर करने निकली तो काफ़ी दूर तक चली गई। रात हो रही थी। उसने नाव एक स्थान पर रोक दी। आस-पास ार जङ्गल था। वह नाव से उतरकर जङ्गल में घूमने लगी। घूमते-घूमते वह जङ्गल के बीच में पहुँची उसे एक मकान दिखाई दिया। मकान की ओर देखकर उसे आश्चर्य हुआ। यहाँ कौन रहता होगा? यह सोचकर वह जैसे ही दरवाज़े पर पहुँची, द अपने आप खुल गया। वह भीतर चली गई।

भीतर उसे कोई न दिखाई दिया। कमरे वह खोजने लगी। एक कमरे में उसे कुछ दिखाई दी। वहाँ जाकर उसने देखा कि एक जल रहा है और एक नवयुवक सुन्दर चारपा इस तरह पड़ा सो रहा है जैसे उसमें जान ही न

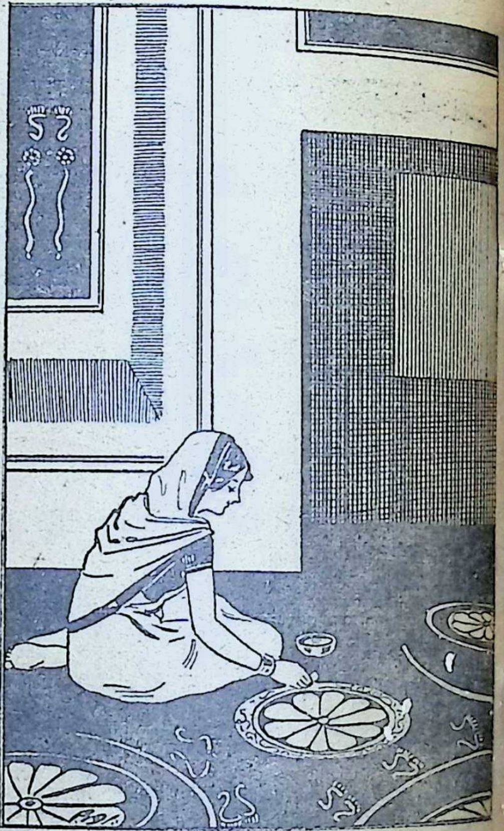

वह धरती पर ऐपन से चित्र बनाया करती

अञ्जनी ने उस आदमी को जगाने की कोशि की पर जब वह न जागा तो वह बहुत डरी घर लौट चलने के लिए मकान के बाहरी दर पर आई लेकिन दरवाज़ा बन्द था। अञ्जनी बहुत फटाई। मकान से बाहर निकलने के लिए बहुत चिल्लाई पर उस जङ्गल में उसकी पुकार कौन सुनत अन्त में वह हारकर बैठ गई। मकान में ही खाने-पीने की चीज़ें मिल गईं और वह रहने लगी।

हले तो अञ्जनी उस कमरे में नहीं जाती थी वह आदमी सो रहा था पर जब उसे मकान में ई महीने हो गये तब उसका डर जाता रहा। स कमरे में जाने लगी और उस सोते हुए की सेवा करने लगी। उसे सोते हुए युवक दया आती। वह सोचती, यह आदमी कब रहा है! इसकी नींद क्यों नहीं खुलती? सारे वह साफ़-सुथरा रखती।

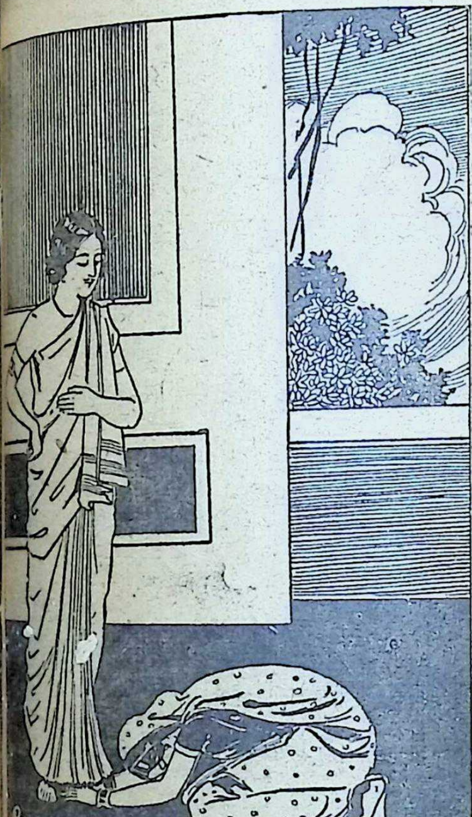

अञ्जनी ने उसके पैरों पर माथा रक्खा

अञ्जनी को चित्रकारी से बहुत प्रेम था। वह ने घर में थी तो तस्वीरें बनाया करती थी। में अकेले रहने के कारण उसके पास कोई नहीं था इसलिए उसने अपना मन बहलाने चित्रकारी का सहारा लिया। वहाँ काग़ज़ तो था नहीं इसलिए वह चावलों को पीसकर न से ज़मीन पर चित्र बनाया करती।

अञ्जनी को उस घर में रहते कई महीने बीत गये। अब उसे उस सोते हुए नवयुवक से प्रेम हो गया। एक दिन उसने उस सोते हुए युवक के हाथ में एक अँगूठी देखी। उसने वह अँगूठी उतार ली और अपनी अँगूठी उतारकर उसे पहना दी। उसके बाद उसने सोचा कि नहा-धोकर लौटने पर नव युवक की अँगूठी को मैं स्वयं पहन लूँगी। यह सोच कर वह मकान के दूसरे हिस्से में नहाने-धोने के लि चली गई।

नहा-धोकर जैसे उसने अँगूठी अपनी उँगली पहनी वैसे ही कमरे में सोता हुआ युवक जाग उठ

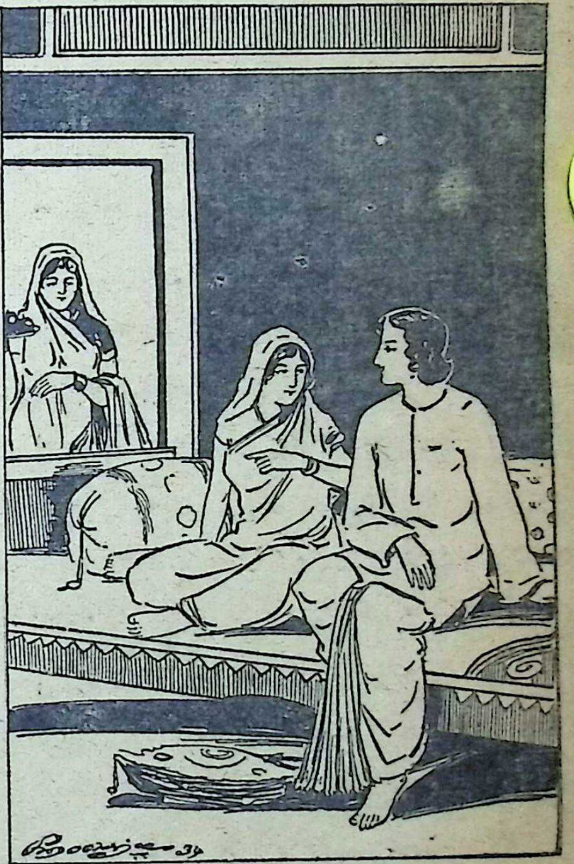

अञ्जनी ने और मधुसूदन

और उठकर चारों ओर देखने लगा। उसे आश्च हो रहा था कि मैं कहाँ हूँ। पलँग से उठकर यह देखने के लिए घूमने लगा कि यहाँ कोई औ है या नहीं।

अञ्जनी उधर से आ रही थी। सोते हुए युवक

गकर घूमते देख वह बहुत .खुश हुई। वह ड़कर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

यह युवक मधुसूदन था। उसे सब पुरानी बातें द आ गईं। उसने तुरन्त अञ्जनी को उठा लिया।

मधुसूदन अञ्जनी को लेकर अपने घर आया। अञ्जनी के पिता को भी सब समाचार मालूम हु दोनों के पिता बहुत .खुश हुए और उनका वि कर दिया। वे सुख के साथ रहने लगे।

मेरा तोता

लेखक, श्रीयुत सुरेशकुमार 'सुमन'

मेरा तोता, मेरा तोता।

जब तू मीठी तान सुनाता,
मेरा रोम-रोम हर्षाता।
मैं तब सारी सुध-बुध खोता,
मेरा तोता, मेरा तोता॥

तेरी सुन्दर चोंच देखकर,
तेरे मनहर पङ्ख देखकर।
उमड़ा पड़ता नवरस सोता,
मेरा तोता, मेरा तोता॥

फुर-फुर फिरता डाली-डाली,
जामुन खाता काली-काली।
मेरे सुख का साधन होता,
मेरा तोता, मेरा तोता॥

पल-पल कहता 'राम-राम' रे,
'चित्रकुटी' औ 'सियाराम' रे।
सब कुछ है पौरुष से होता,
मेरा तोता, मेरा तोता॥

सीखो बच्चो! मेहनत करना,
विपदा में भी हँस-हँस रहना।
यही नियम जग का दुख धोता,
यही सिखाता मेरा तोता॥

चिर-हँसमुख माँ, मुझे बना दे

लेखिका, कुमारी उर्मिला देसाई

चिरहँसमुख माँ मुझे बना दे।
देख फूल का यह मुस्काना,
मेरा मानस मुस्काता है।
देख कली का मृदु खिल जाना,
मेरा अन्तर खिल जाता है॥
स्वच्छ चाँदनी में जब चन्दा,
हँसता औ' इठलाता है।
मैं भी मुस्का देती हूँ तब,
मन मेरा हर्षाता है॥
प्रातः पूरब में जब सूरज
आता, ले रथ, मुस्काता।
दिखलाई देता जग हँसता,
हृदय कमल तब खिल जाता॥
अन्य कुसुम भी हैं खिल जाते,
हैं सुगन्ध निज फैलाते।
उनका रस पीने को भौंरे,
आते हैं गुन-गुन गाते॥
भौंरों का गाना सुन-सुनकर,
खिल-खिल मैं हँस पड़ती हूँ।
पुष्पों की शेखी लख करके,
मन में मैं मुस्का देती हूँ॥
माँ, मुझको भी कुसुम बना तू।
चिरहँसमुख माँ, मुझे बना तू॥

हीरों का द्वीप

धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र

कहानी

[सुरेश ने अपने मित्र के पत्र से उत्साहित होकर प्रशान्त महासागर में हीरों के टापू को खोजने और हीरे बटोर लाने का या। उसने इस विषय की एक किताब मँगाई। उसे पढ़ते-पढ़ते रात हो गई। तभी उसका वर्षों का खोया मित्र । रतन ने एक विद्या सीख ली थी जिससे वह अपने शरीर को अदृश्य बना लेता था। रतन ने बताया कि यह विद्या ओं से सीखी है। इसके लिए उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ा है। सुरेश और भी बातें सुनना चाहता था पर रतन को नींद ो इसलिए अधिक बातें न हो सकीं। दूसरे दिन रतन ने क्या बताया यह पढ़िए।]

(४)

होने पर सुरेश और रतन सोकर उठे। वे दोनों कामों से फ़ारिग़ होने के लिए चले गये और घण्टे र फिर बैठक में आये और आमने-सामने बैठ रा के नौकर ने अब तक चाय बना ली थी। सुरेश खाने का भी शौक़ था। वह बढ़िया से बढ़िया बिस्कुट ख़रीदकर काफ़ी तादाद में रक्खा करता वह सवेरे चाय के साथ बिस्कुट ज़रूर खाता से नौकर ने एक-एक प्याला चाय और एक-एक बिस्कुट उन दोनों के सामने रख दिये। इस प्रकार के साथ ही बात-चीत आरम्भ हुई।

कल दोपहर से ही प्रशान्त महासागर के द्वीपों खोजने के लिए विलायत से आई हुई पुस्तक के आँख जमाये हुए था। उस समय उसके हृदय में एक चिन्ता थी कि किस प्रकार इन द्वीपों के बारे हीरों के द्वीप पर चढ़ाई करने का सरल से सरल निकाले। यह चिन्ता इतनी प्रबल थी कि सुरेश को न तो खाने-पीने की याद थी और आँखों पर नींद का ही किसी प्रकार का प्रभाव पड़ इससे दो पहर को डाकिया ने जिस समय वह थी, उस समय से वह आराम-कुर्सी पर से टस से हो सका। परन्तु रतन ने आकर उसकी उस चिन्ता समय के लिए दबा दिया। अब सुरेश के मन में सब प्रबल इच्छा थी रतन की तिब्बत की यात्रा का हाल ें।

रात में रतन ने अपनी इस यात्रा का प्रारम्भ का हुआ था इस बात से कि रतन किस तरह अपने को दूसरों की आँखों से छिपा लेता है, सामने ही बैठा हुआ आदमी उसे देख नहीं पाता। पूछने पर रतन ने सुरेश से बतलाया था कि मैं तन्त्रशास्त्र की किताबों की खोज करने और उस शास्त्र को पढ़ने के विचार से तिब्बत में लामाओं के पास गया था। पर वहाँ उन सबने मुझे एक गुफा में क़ैद कर लिया। उसी गुफा में एक सन्थाल भी क़ैद था। उसी ने यह गोली दी थी। रतन ने यह नहीं बतलाया था कि मेरी यह यात्रा कहाँ से आरम्भ हुई और लौटकर अपने देश में कैसे आया। इसलिए आज चाय के समय वह बातचीत फिर छिड़ी।

रतन ने कहा—जब तन्त्रशास्त्र की खोज करने की धुन मेरे ऊपर सवार हुई और पढ़ना-लिखना छोड़कर मैं संन्यासी हो गया तब सीधे पहुँचा गारो पहाड़ पर। वहाँ मैं एक सिंह का शिकार होते-होते बचा। सिंह मुझे मुँह में लेकर एक घने जङ्गल में भाग गया। वहाँ वह निश्चिन्त होकर मुझे खाना चाहता था। मैंने भी समझ लिया था कि तन्त्रशास्त्र की खोज करने की साध लिये हुए मुझे सिंह के पेट में जाना पड़ेगा। पर एकाएक दो पहाड़ी वहाँ आ पहुँचे। मानो भगवान् ने मेरी जान बचाने के ही लिए उन्हें भेजा था। सिंह को भगाकर वे दोनों मुझे अपने अड्डे पर ले गये।

पहाड़ियों ने मेरी बड़ी सहायता की। उनके यहाँ कई दिनों तक रहकर मैंने अपना शरीर सुधार लिया। तब उनसे बिदा लेकर मैं हिमालय पहाड़ की ओर चला। घोर जङ्गलों के बीच से होकर कँकरीले-पथरीले रास्ते से चलना पड़ता था। कहीं सैकड़ों हाथ की चढ़ाई थी तो कहीं उससे भी अधिक उतार था। रास्ते में बाघ, सिंह आदि शिकारी

अजगर भी बहुत मिलते थे और उन्हें देखने पर ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो ये निगल ही जाना चाहते हैं। इससे कभी-कभी तो इतनी घबराहट होती थी कि इन सब से अपने आपको बचा रखना कठिन है। पर कहावत है कि "जाको राखै साइयाँ मारि सकै नहिं कोय।" भगवान् के भरोसे मैं इन सभी की नज़र से बचता हुआ बराबर बढ़ता चला जा रहा था।

जिन पहाड़ी लोगों ने सिंह से मेरे प्राण बचाये थे उनके अड्डे पर से विदा होने के बाद एक पखवारा मैं बराबर चलता रहा। उसके बाद हिमालय पर्वत पर पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर मैंने पर्वतराज की बड़ी स्तुति की। हाथ जोड़कर भक्ति से भरे हुए स्वर में मैंने कहा - हे महाराज, पर्वतों के राजा! सब प्रकार के विघ्नों का नाश करनेवाले गणेशजी की माता गौरी तुम्हारी ही कन्या हैं। कितने देवता और मुनि तुम्हारे आश्रय में रह चुके हैं। हमारी मातृभूमि भारतवर्ष को तुमने सदा से अपने चरणों के समीप स्थान दे रक्खा है। उसी भारतभूमि की एक अधम सन्तान मैं भी हूँ। अपनी गोद में मुझे भी स्थान देने की कृपा करो। हे महाराज, हमारे देश की अमूल्य निधि 'तन्त्रशास्त्र' बौद्ध भिक्षु लामा लोग उठा लाये हैं और वे उसे तुम्हारी आकाश को चूमनेवाली चोटी की आड़ में छिपाये हुए हैं। मुझे ऐसा रास्ता दिखा दो कि मैं सीधे उस गुप्त भाण्डार में पहुँच जाऊँ और अपने देश का धन देश में ले जाकर भारतवासियों का उपकार करूँ।

इस तरह पर्वतराज से प्रार्थना करके मैं ऊपर की ओर चढ़ने लगा। हज़ारों फ़ुट की ऊँचाई में तह के तह पत्थर जमे हुए हैं। वह भी दो-चार मील की दूरी में नहीं। उस सिलसिले का कहीं ओर-छोर नहीं मालूम पड़ता। पत्थरों के ऊपर एक से एक बड़े-बड़े वृक्ष हैं, जो हज़ारों वर्ष के पुराने मालूम पड़ते हैं। वे वृक्ष भी दूर-दूर नहीं हैं। वे आपस में इस तरह मिल गये हैं कि उनके बीच से निकल जाना मनुष्य के लिए मुमकिन नहीं। साथ ही बहुत-सी लताएँ भी उगकर उन वृक्षों से लिपट गई हैं। भूमि पर कितने ही छोटे-छोटे पौधे भी निकलकर अपने आस-पास फैले होते हैं। इस कारण सारा पर्वत घने जङ्गलों तथा झाड़-झंखाड़ से ढका हुआ है। ऊँचे-ऊँचे वृक्षों के कारण हर जगह सूर्य्य की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं; इससे अँधेरा भी बहुत रहता है।

मैंने निश्चय कर लिया था कि या तो तिब्बत पहुँचकर किसी न किसी तरह अपना कार्य्य सिद्ध कर लूँगा या इस हिमालय पर्वत पर ही प्राण दे दूँगा। इस तरह भीष्म की सी प्रतिज्ञा करके मैं पर्वत पर चढ़ने लगा। नीचे पैरों में

छिल जायँगे। ऊपर लताओं के बीच से सिर ही निकल पाता था। न तो कहीं धूप देखने को मिलती न उजाला ही दिखाई पड़ता। ऐसे समय जब झोंका आता और वृक्षों की डालियाँ मड़मड़ाने लगतीं डर के मारे सारा शरीर काँप उठता। पहले कहीं-कहीं एक याक या चमरी गायें दिखाई पड़ीं। बाद को पहाड़ी बकरियाँ भी दिखाई पड़ने लगीं। वे कितनी फ़ुर्ती से नीचे पर्वत पर दौड़ रही थीं। एकाएक बाइसन भयानक जीव का सामना हो गया। उसकी ज़ोर की कार सुनते ही कलेजा काँप उठा। मुझे ऐसा लगा अपने सींगों में फँसाकर मेरे प्राण लिये बिना न पर भगवान् ने झटपट मुझे चौकन्ना कर दिया। मैं करके समीप ही के एक वृक्ष पर चढ़ गया। इस बच गया।

यों तरह-तरह के विघ्नों का सामना करते हुए मैं दिनों में लगभग दस हज़ार फ़ुट तक पर्वत पर चढ़ जिस स्थान से मैंने चढ़ना आरम्भ किया था, उसकी ओर ब्रह्मपुत्र नद है। उसकी धारा इतने ज़ोर से गरज कर नीचे उतरती है कि आकाश तक गूँज उठता है। यदि इतना वेग न होता तो क्या ब्रह्मपुत्र हिमालय पर्वत तोड़-फोड़कर नीचे गिरने के लिए जगह बना पाता?

ब्रह्मपुत्र के गर्जन-तर्जन से मेरे कानों के पर्दे फटे थे। लगातार बीस दिन तक उसका यह अत्याचार सहना पड़ा। उसके बाद मैंने उसे पीछे छोड़ दिया तिब्बत की सीमा के भीतर पैर रक्खे। अब मेरी प्र का ठिकाना न रहा। मैंने सोचा कि इतने घोर स बचकर तिब्बत में पहुँच गया हूँ तो मेरा उद्देश्य सि में अब अधिक सन्देह नहीं है। पर तिब्बत में रहने जङ्गली जातियों से पाला पड़ने पर मेरे ये विचार ह गये। जङ्गली लोगों ने इस तरह का भाव दिखला वे मेरे जैसे विदेशी आदमी को एक मिनट भी अपने दे नहीं रहने देना चाहते।

मुझे इस बात का विश्वास था कि संन्यासी के वे देखकर तिब्बत के लोग मेरा बड़ा आदर करेंगे। पर सत्कार की बात तो दूर रही, यहाँ शान्ति से पैर रखन लिए कठिन हो गया। जङ्गली लोग मुझे तरह-तरह परेशान करने लगे और इस बात का उद्योग करने ल मैं कुछ खाने-पीने को न पा सकूँ, जिससे भूख-प्यास व्याकुल होकर भाग जाऊँ, आगे की ओर पैर बढ़ाने हिम्मत न कर सकूँ।

तिब्बत के जङ्गली बड़ी मुस्तैदी के साथ मेरी नि खाने-पीने नहीं देना

एक क़दम आगे भी मुझे नहीं बढ़ने देना चाहते मैं बड़े सङ्कट में पड़ गया। एक तो पहाड़ की कारण मेरा शरीर यों ही बहुत निर्बल हो गया था, जङ्गलियों के मारे अन्न-जल मिलने की कोई आशा थी। यहाँ तक कि तीन-तीन दिन मुझे उपवास जाना पड़ा। इन तीन दिनों में एक बूँद पानी डालने को नहीं मिल सका। इससे मुझे बड़ी ऐसा मालूम पड़ा कि अब यहीं मेरा जीवन जायगा। अन्त में एक दिन मुझे ऐसा गया कि मैं जङ्गलियों की नज़र बचाकर गया।

भागते ही जङ्गलियों में खलबली मच गई। वे धनुष-बाण आदि लेकर मुझे खोजने के लिए मैं चुपके से पर्वत की एक गुफा में छिप गया। दिन में निकलना मेरे लिए असम्भव हो गया। मैं किसी गुफा में या झाड़ी में छिपा रहता और टटोल-टटोलकर आगे बढ़ता। वहाँ सड़कें तो हैं अँधेरे में भी चलने में कठिनाई न हो। ऊँची-मि में कभी तो मैं ठोकर खाकर गिर पड़ता और गिरते सँभल जाता। इस तरह रात भर भटकने बड़ी कठिनाई से मैं मील भर का रास्ता तय कर उजाला होने से पहले ही जङ्गलियों के डर के मारे की किसी गुफा या झाड़ी में छिप जाना पड़ता। भूख-प्यास मिटाने के लिए मैं बहुधा पेड़ों की पत्तियाँ नरम लताओं की फुनगियाँ चबा लिया करता था। गिरते-पड़ते और भूख-प्यास सहते हुए मैं लामाओं ओर बढ़ता जा रहा था।

लामाओं से दयापूर्ण व्यवहार की बड़ी आशा समझता था कि लामा लोग महात्मा बुद्ध के मत हैं और महात्मा बुद्ध ने जीव-मात्र के साथ प्रेम का व्यवहार करने का उपदेश दिया है। इससे था कि मठ में पहुँच जाने पर मेरे सारे सङ्कट जायँगे। वहाँ लामा लोग मुझे आदर से रक्खेंगे जिस उत्तम उद्देश्य से आया हूँ, उसे पूर्ण करने में सहायता करेंगे। परन्तु उन्होंने जिस तरह मेरा किया, उसका हाल मैं तुम्हें कल ही बतला चुका हूँ। गुफा में मेरे साथ जो सन्थाल क़ैद था उसने, समय, अपने आपको दूसरों से छिपा रखनेवाली मुझे न दे दी होती तो शायद मुझे भी उस गुफा सारा जीवन बिता देना पड़ता।

म प्रदेश के एक कोने में स्थित गारो पर्वत पर मैं गया था, उस दिन से अच्छा भोजन मुझे तब तक नहीं मिल सका, जब तक तिब्बत से लौटकर फिर आसाम के एक गाँव में नहीं आ गया। गारो पहाड़ पर के पहाड़ियों के अड्डे से चलकर हिमालय पहाड़ पर जब तक मैं चढ़ता रहा तब तक पेट भरने के लिए कहीं न कहीं पहाड़ी वृक्षों के फल मिल जाया करते थे। तिब्बत में पहुँचने पर वहाँ की जङ्गली जातियों के लोगों के डर से जब मुझे केवल रात के अँधेरे में ही टटोल-टटोलकर चलने-फिरने की सुविधा रह गई, तब फल मिलने में भी कठिनाई होने लगी। दिन भर किसी कन्दरा या झाड़ी में छिपे रहने की हालत में ज़्यादातर पत्तियाँ चबाकर ही मैं अपनी भूख मिटा लिया करता था। अन्त में जब लामाओं ने मुझे पर्वत की गुफा में क़ैद कर लिया, तब रोज़ दोपहर को एक मोटी-सी रोटी और थोड़ा-सा भुना हुआ मांस मिलने लगा। चौबीस घण्टों के भीतर केवल एक बार गुफा का दरवाज़ा खुलता था और एक आदमी आकर मेरे और मेरे साथी के लिए रोटी, मांस और पानी रखकर चला जाता था।

लामाओं की कृपा से मुझे जो मोटी रोटी मिला करती थी, उसे मुँह में डालने की इच्छा पहले नहीं होती थी। पर पेट भरने के लिए उसे खाना ही पड़ता। धीरे-धीरे मांस खाने की भी आदत पड़ गई, क्योंकि रोटी इतनी नहीं होती थी कि उसे ही खाकर अपनी भूख मिटा लेता। कुछ ही दिनों में यही रूखा और रद्दी भोजन मेरे लिए अमृत-सा हो उठा। मैं बराबर उसकी आशा से गुफा के द्वार की ओर ताकता रहता। बात यह थी कि जो भोजन मुझे और मेरे साथी सन्थाल को दिया जाता था, उससे हम दोनों का पेट नहीं भरता था। इससे हम दोनों रात-दिन इसी चिन्ता में रहते थे कि किस समय गुफा का द्वार खुले और लामाओं की कृपा का दान मिले।

रूखा-सूखा आधा पेट खाकर इस छोटी-सी गुफा में रहते-रहते मेरे साथी का शरीर बिलकुल ही शिथिल हो गया। अब उसे जीने की आशा नहीं रह गई। अन्त में अपना यह अमूल्य धन, दूसरों से अपने को छिपा रखने की गोली, देकर जिस दिन वह सदा के लिए सो गया, उसी दिन मेरा भी मन अधीर हो उठा। गोली हाथ में लेकर मैंने उसके अद्भुत गुणों पर विचार किया; फिर भगवान् से अपने साथी की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की। अन्त में निश्चय किया कि आज जब गुफा का द्वार खुलेगा तब यह गोली मुँह में रखकर निकल भागूँगा।

दोपहर होने से पहले ही मैं हाथ में वह गोली लिये हुए गुफा के द्वार पर बैठा था। सदा की भाँति उस दिन भी लामाओं का आदमी मांस और रोटी लेकर आया। लोहे का सींकचा खोलकर जैसे ही उसने भीतर पैर रक्खा

ही भूखे बाघ की तरह मैं उसपर टूट पड़ा और उसे धड़ाम से नीचे पटककर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। मैंने उसका ाला पकड़कर ख़ूब ज़ोर से दबाया। तिब्बती जङ्गली ने भी मुझसे अपने आपको छुड़ाने के लिए बहुत हाथ-पैर चलाये पर उस समय मेरे शरीर में न जाने कहाँ से इतना बल आ गया कि मुझसे वह किसी प्रकार छुटकारा नहीं पा सका। अन्त में वह बेहोश-सा होकर पड़ा रह गया।

मैं उस समय बड़े जोश में था। मेरे शरीर की नस-नस फड़क उठी और धमनी-धमनी में गरम ख़ून की धारा नाचने लगी। अपने साथी की दी हुई यह गोली मुख में रखकर मैं गुफा से निकल पड़ा और एक साँस में भागकर घने जङ्गल में छिप गया।

अब तिब्बत में एक मिनट भी रहने की इच्छा मुझे नहीं थी। वहाँ के क्रूर लामाओं और असभ्य जङ्गलियों की आँख बचाकर अपने देश को लौट आने में ही मैं अपना भला समझता था। इससे सन्थाल की दी हुई गोली मुँह में रखकर मैं तेज़ी से पैर बढ़ाने लगा। रास्ते में दल के दल लामा और तिब्बत के जङ्गली मिलने लगे। उन लोगों का रङ्ग-ढङ्ग देखने पर मुझे ऐसा मालूम पड़ता था कि उन्हें गुफा से मेरे निकल भागने की ख़बर है और वे सावधानी से मेरी खोज कर रहे हैं। इससे मुझे बहुत डर मालूम पड़ने लगा। ऐसा लगा कि यदि कहीं इस बार मैं पकड़ा गया तो फिर जीता न बचूँगा। लामा लोग मेरे प्राण लिये बिना शान्त न होंगे। पर मेरे भाग्य अच्छे थे, इससे मुझे कोई देख नहीं सका।

लगभग एक घण्टा दौड़ लगाने के बाद मैं एक ऐसे ़थान पर पहुँचा, जहाँ से पहाड़ बिलकुल ढालू हो गया था। क्रम से ढालू होते-होते वह पहाड़ किस पातालपुरी में पहुँच ाया है, इसका अनुमान मैं न कर सका। मैं वहाँ खड़े-खड़े चारों ओर अपनी दृष्टि दौड़ा ही रहा था, इतने में कुछ लामाओं के ऊँचे गले की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। ो लोग चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे—दौड़ो, दौड़ो, पकड़ो, ाकड़ो। उन लोगों के साथ कई पहाड़ी कुत्ते भी थे जो ोर-ज़ोर से भौं-भौं कर रहे थे। उस समय बड़े ज़ोर का कोलाहल हुआ। मुझे ऐसा जान पड़ने लगा, मानो इस कोलाहल के कारण सारा जङ्गल ही काँप उठेगा।

अब मुझे गोली की शक्ति पर सन्देह मालूम पड़ने लगा। ़रे मन में आया—कहीं ऐसा न हो कि बच-बचाकर फिर लामाओं की पकड़ में आ जाऊँ। इससे भगवान् का लेकर मैं देह ढीली करके लेट गया और पर्वत की ढा लुढ़कने लगा। वह पहाड़ इतना अधिक ढालू था कि बार ऊपर से लुढ़क पड़ने पर बीच में कहीं रुके सम्भावना नहीं थी। बीच में कोई ऐसी चीज़ भी नहीं जिसका सहारा लिया जा सकता। इससे लुढ़कते-लु मैं बिलकुल पातालपुरी की ओर चला जा रहा था। जाकर रुकूँगा और किस चीज़ पर गिरूँगा, इसका मुझे न था। ऊबड़-खाबड़ पत्थरों और पहाड़ पर इधर-उ बिखरे हुए कङ्कड़ों से मेरा शरीर जगह-जगह कट गया ख़ून बहने लगा। अन्त में भगवान् ने मेरी रक्षा पहाड़ के नीचे मैं जहाँ गिरा, वहाँ पर ख़ूब नरम-नरम घा उगी हुई थी। साथ ही कुछ लतायें भी फैली हुई थीं। तरह वह जगह मोटे गलीचे से भी अधिक मुलायम हो थी। इससे तीन हज़ार फ़ुट के ऊपर से गिरने पर मुझे किसी तरह की चोट नहीं आई। पर इतनी ऊँ से लुढ़कते-लुढ़कते मेरा शरीर इतना शिथिल हो गया कि लगभग आध घण्टे तक मुझमें उठने की शक्ति आ सकी।

भगवान् ने मेरे लिए जो मुलायम गलीचा बिछा रख था, उसपर आध घण्टा विश्राम करने के बाद मैं सामने एक पगडण्डी थी। उसी के सहारे फिर ते आगे बढ़ने लगा। ज़रा दूर तक चलने के बाद मुझे झरना दिखाई पड़ा। उसका शीतल जल पीने और स्नान करने के बाद मेरे शरीर में बल आ गया। तिब्बत के जङ्गलियों और लामाओं का डर मुझे नहीं इससे गोली हाथ में लिये हुए निश्चिन्त होकर चलने ल रास्ते में खाने के लिए कुछ जङ्गली वृक्षों के पके-पके फल मिल गये। पीने के लिए पानी की भी कमी नहीं इससे तिब्बत के पहाड़ी रास्ते की तरह यहाँ भूख-प्यास व्याकुल होकर चलने की ज़रूरत नहीं रह गई।

जङ्गल में भटकते-भटकते और जङ्गली जानवरों से अ प्राणों की रक्षा करते-करते मैं थोड़े ही दिनों में आ पहुँच गया। वहाँ गाँव के बाहर एक वृक्ष के नीचे धूनी रमा दी। गाँव के लोगों ने मेरी बड़ी सेवा महीने भर में ही मैं तगड़ा हो गया। अन्त में एक रात में चुपके से वहाँ से चलता हुआ और रेलगाड़ी आज ही यहाँ आया हूँ।

जङ्गल की घटना

लेखक, श्रीयुत एम० एल० पाण्डेय

बार स्कूल के कुछ लड़कों और लड़कियों टोली कर्छना के जङ्गल में घूमने गई। जङ्गल हँसी और बातचीत से गूँज उठा। चारों ड़-दौड़कर उन लोगों ने फूल तोड़कर जमा कर दिया। कुछ देर में यह टोली तीन बँट गई। कुछ तो फूल चुनने के लिए गये, कुछ चिड़ियाँ पकड़ने की धुन में एक चल दिये। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो खेलों में लग गये। जिसके मन में जो ही करने लगा। अलग होते समय एक ही से चुन लिया गया था। यहीं वे के लिए इकट्ठा होने को थे। दोपहर में वहीं होना था। उनकी आवाज़ें धीरे-धीरे गईं। कभी एक-आध बार किसी की ज़ोर की आवाज़ सुनाई पड़ जाती। कभी किसी डाल टूटने की चरमराहट सुनाई दे जाती। शोर कम होता गया। ऐसा मालूम मानो जङ्गल में कोई आया ही न था। एकाएक किसी के घबराकर चिल्लाने की सुनाई दी। इस आवाज़ से जङ्गल की शान्ति

में ऐसी घबराहट भरी हुई थी कि जिसने चीख़ सुनी, घबरा उठा। जो जहाँ पर था वहीं स्थान की ओर भागा जिधर से चीख़ सुनाई जङ्गल के बीच में एक कुञ्ज के पास उन देखा कि उनका एक साथी अपना एक हाथ से दबाये खड़ा था। वह बहुत घबराया था। उसके मुँह से किसी तरह की आवाज़ पा रही थी।

हुआ" पहले आनेवाले लड़के ने पूछा। प्रश्न हर एक ने दुहराया। ठीक इसी समय झाड़ियों में सरसराहट सुनाई दी। सरसराहट सुनकर श्याम ने उस ओर देखा और जल्दी से बोल उठा—"वह देखो"। श्याम ज़ोर से चिल्लाया—"इसी साँप ने मुझे काटा है। मैं इस झाड़ी में एक जड़ी खोज रहा था। जैसे ही मैंने घास में हाथ डाला वैसे ही इसने मेरे हाथ में काट लिया।" एकाएक सबके मुँह से चीख़ निकल गई। बच्चे चिल्लाकर इधर-उधर भागने लगे। कुछ साहसी लड़के झाड़ियों में घुस गये। उन्होंने ढूँढ़कर उस साँप को मार डाला। जब ये लोग झाड़ियों से निकलकर बाहर आ रहे थे, उसी समय उनके साथ की एक लड़की वहाँ गई। यह लड़की उन सब में उम्र में बड़ी थी और खेलती हुई अधिक दूर निकल गई थी, इसी लिए वह सबके बाद वहाँ पहुँची। इस लड़की का नाम रमा था।

"श्याम, अपना कोट तो जल्दी से उतार दो।" रमा ने कहा। डरते-डरते श्याम ने अपना कोट उतारकर दे दिया।

रमा ने अपने दाँतों से श्याम के कमीज़ की आस्तीन फाड़ डाली। न तो उसने चाक़ू माँगा और न क़ैंची ही के लिए रुकी। श्याम की कुहनी के ऊपर साँप के दाँतों के दो छोटे-छोटे लाल निशान थे। उन निशानों को देखकर रमा तो बिलकुल न घबराई, किन्तु दूसरी लड़कियाँ चिल्ला उठीं।

"तुम क्या करना चाहती हो, रमा?" एक लड़की ने सिसकते हुए पूछा।

"चुपचाप खड़ी रहो और देखो। चिल्लाओ मत। चुप रहो या यहाँ से भाग जाओ।" रमा ने उत्तर दिया। वह समय को बरबाद करना नहीं चाहती थी।

झुककर उसने एक रूमाल से श्याम की बाँह कसकर बाँध दी। जिस जगह साँप ने काटा था

उस स्थान को उसने अपने मुँह से दाब लिया। थोड़ी देर में चूसकर उसने सारा ज़हर खींच लिया। रमा तो इधर यह कर रही थी उधर कुछ लड़के दौड़कर तहसील के अस्पताल में पहुँच गये।

डाक्टर साहब उन लोगों की बात सुनते ही तुरन्त उनके साथ हो लिये। उधर रमा ने सब ज़हर खींचकर थूक दिया और कहा—अब डरने की कोई बात नहीं। देर भी हो रही है। चलो घर चलें।

लड़कों ने सब सामान उठाया और चल पड़े। जङ्गल से बाहर वे निकले ही थे कि दूसरे के साथ डाक्टर साहब आते दिखाई पड़े। साहब ने सब बातें सुनकर रमा की पीठ ठोंकते कहा—"रमा, श्याम की जान बचाने की तुम अपनी जान के लिए खतरा मोल ले रहीं खैर, अब डरने की ज़रूरत नहीं। मैं दवा तुम्हें ठीक कर लूँगा।"

"मैं नहीं डरती, डाक्टर साहब।" रमा ने "श्याम के लिए तुरन्त इलाज की ज़रूरत थी, लिए मैंने ऐसा किया।"

मेरे हाथों के खेल

लेखक, श्रीयुत हरिशङ्कर खरे

पिताजी, बात खरी है
मेरी—नहीं तनिक भी मेल।
दुनिया के काम बड़े सब हैं
मेरे हाथों के खेल॥
पास न आते थे कल 'झबरू'
बड़ा लगा था मेला।
कैसा नीचा सिर किया देखिए,
जब से मैंने खेला॥
नहीं समझते थे इनके ही,
हाथों में बिक जाऊँगा।
अभी देखिए इनको जाकर,
कल फिर से बतलाऊँगा॥
बड़े आज़ाद बने थे, मेरी
अलमारी है इनकी जेल।
दुनियाँ के काम बड़े सब हैं,
मेरे हाथों के खेल॥
भीड़ अचानक पाकर मोटर-
वाला है घबरा जाता।
तभी सिपाही की बन आती,
हाथ उठाकर राह बताता॥
मैं नहीं पिताजी, इक्कावाला,
'टिक-टिक' करता जो चलता है।
उसकी है बस तीन सवारी,
मेरी भारत की जनता है॥
सिगनल हैं क्या? झुक जायेंगे,
छूटूँगा बन तूफ़ान मेल।
दुनिया के काम बड़े सब हैं,
मेरे हाथों के खेल॥

चार बच्चे

लेखक, श्रीयुत श्र

बच्चे थे—सलिला, प्रतिभा, सुरेश और रमेश। में बड़ी थी। प्रतिभा अभी छोटी थी इसलिए वह जाती थी। शेष तीनों बच्चे स्कूल जाते थे।

ों की लम्बी छुट्टियों में वे अपनी चाची के यहाँ की चाची एक दूसरे शहर में रहती थी। इसलिए वहाँ पहुँचाकर लौट आये।

ने बच्चों को दिखाकर हँसते हुए कहा—ओह इस में मुझे बहुत काम रहेगा। चार और बच्चों को खिलाना और उनके बिस्तरे ठीक करना।

की ओर देखते हुए चाची ने कहा – देखो बच्चो, काम में मेरी मदद करना!

ने खुशी के साथ उत्तर दिया—हाँ-हाँ, हम लोग मदद करेंगे। हम स्वयं रोज़ नहा लेंगे और अपने रक्खेंगे।

दिन ही बच्चों का सारा समय नई-नई चीज़ों को बीत गया और वे अपनी प्रतिज्ञा भूल गये।

खुलते ही वे चटपट बिस्तर छोड़कर उठ खड़े हुए, ड़ों को उतारकर वहीं फेंक दिया; दूसरे कपड़े नल पर पहुँच गये। जल्दी से शौच आदि के धोया और रसोई के कमरे में पहुँचे। चाची ने र कर रक्खा था। जल्दी से नाश्ता करके बच्चे लिए बाहर भाग गये। किसी को यह याद न पहले दिन चाची से क्या प्रतिज्ञा की थी।

में भी यही बात हुई। कपड़े उतारकर उन्होंने फेंक दिये। फ़र्श पर मैले कपड़ों का ढेर लग गया। वे अपने-अपने बिछौने पर जा लेटे। दिन भर थे इसलिए नींद भी जल्दी आ गई।

दिन सुबह ही चाची कमरे में आईं। कमरे को न्होंने आश्चर्य के साथ कहा।—हे भगवान्! तुम लड़के हो!

करें हम?'

पर तो हम बहुत साफ़-सुथरे रहते थे। रोज़ नहाते प्रतिभा ने कहा।

खाने के पहले हम अपने हाथ-मुँह धोते थे। सोने भी हम हाथ-पैर, मुँह और गर्दन जाड़े के दिनों में थे।' सुरेश बोला।

हम अपने दाँत साफ़ करते थे। कपड़े भी खूँटी थे।' रमेश ने कहा।

पर यह सब करना तो आसान था क्योंकि वहाँ पर के लिए कपड़े टाँगने की अलग-अलग खूँटियाँ थीं, नहाने के लिए अलग-अलग टब थे।' सलिला ने कहा।

'हाँ, वहाँ हम लोग सब काम एक ही साथ कर लेते थे; इसलिए सब लोग साथ ही साथ खेलने जा सकते थे।' सुरेश बोला।

चाची ने कहा–तो तुम सब के लिए अलग-अलग तौलिया चाहिए, अलग-अलग बाल्टी चाहिए जिसमें पानी भरा रहे; कपड़े टाँगने के लिए अलग-अलग खूँटी होनी चाहिए।

शाम को चाची ने सब सामान मँगवा दिया। नहाने के कमरे में चार बाल्टियाँ रख दी गईं, चार तौलिया लटका दी गईं, सोने के कमरे में कपड़े टाँगने के लिए हर बच्चे के लिए खूँटियाँ थीं।

शाम को जब बच्चे आये तो चाची ने कहा—'पहले तुम लोग नहा लो।' बच्चे नहाने के कमरे में दौड़ गये। चार बाल्टियाँ भरी रक्खी थीं। बच्चों ने नहाया और साफ़ तौलिये से अपने-अपने शरीर को रगड़कर पोंछा।

भोजन के बाद चाची ने बच्चों से कहा—अब तुम सोने जा सकते हो।

'अभी नहीं' सलिला ने कहा – हम लोग एक काम करने जा रहे हैं जिससे हम फिर बुरे बच्चे न समझे जायँ। चाची आप सुबह देखिएगा।

चाची चली गईं। थोड़ी देर बाद बच्चे भी सो गये।

दूसरे दिन चाची बच्चों के कमरे में गईं तो देखा कमरा साफ़-सुथरा है; बिस्तर ठीक से समेटकर रक्खे हुए हैं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह सब किसने किया। तभी उनकी नज़र चारपाइयों के सामने दीवाल पर टँगे हुए एक काग़ज़ पर पड़ी। चाची ने पास जाकर पढ़ा। सलिला ने बच्चों के लिए कुछ नियम बनाकर टाँग दिये थे।

सुबह के नियम

१—अपने बिस्तर ठीक-ठीक समेटकर रख दो। २—रात के कपड़े खूँटी पर टाँग दो। ३—शौच आदि के बाद नहाकर साफ़ कपड़े पहनो। ४—दाँत साफ़ करना न भूलो।

रात के नियम

१—दिन के कपड़े खूँटी पर टाँग दो। २—नहाकर साफ़ तौलिये से बदन पोंछो। ३—खाना खाने के बाद मुँह और दाँतों को अच्छी तरह साफ़ करो। ४—सोने के पहले सोचो कि तुमने आज कोई बुरा काम तो नहीं किया।

चाची के होठों पर मुस्कराहट खेल गई। उन्होंने नियमों के नीचे मोटे अक्षरों में लिख दिया—

सभी नियमों का पालन करनेवाले बच्चे को हर हफ्ते मिठाई मिलेगी।

कमल

लेखक, श्रीयुत यशोविमलानन्द वर्मा

दिवाकर एक निर्धन आदमी था। उसकी स्त्री का नाम रजनी था। उनके कोई सन्तान न थी। थोड़े दिन बाद रजनी के एक लड़का हुआ।

बालक की सूरत कमल से मिलती-जुलती होने के कारण उसका नाम कमल रक्खा गया। कमल बहुत ही सुन्दर लड़का था। उसे देखकर रजनी और दिवाकर दोनों को बड़ी प्रसन्नता होती थी। कमल धीरे-धीरे बढ़ने लगा। जो लोग देखते वही उसकी प्रशंसा करते थे।

जिस प्रकार एक बीज धीरे-धीरे बढ़कर एक छोटे पौधे का रूप धारण कर लेता है उसी प्रकार कमल के मुख के अन्दर मोतियों जैसे सुन्दर छोटे-छोटे दाँत निकल आये। वह घुटनों के बल चलने लगा।

माता-पिता पुत्र को घुटनों के बल चलता देख प्रसन्नता से झूम उठते। बालक भी किलकारियाँ भर-भरकर प्रसन्नता प्रकट करता। जब वह तुतलाकर माँ, बापू कहता तो रजनी और दिवाकर के हृदय में प्रसन्नता की नदी उमड़ पड़ती।

जाड़े की भयङ्कर रात थी। चारों ओर सन्नाटा छाया था। वायु सन-सन करती हुई बड़े वेग से बह रही थी। दिवाकर इधर कई दिनों से बीमार था। उसे बुख़ार आ रहा था। दिवाकर को रजाई पर रजाई ओढ़े रहने पर भी जाड़ा लग रहा था। उसके दाँत एक दूसरे से लड़-लड़कर कट-कट शब्द कर रहे थे। बुख़ार तेज़ था। निर्धनता के कारण दवा-दारू का ठीक प्रबन्ध न था।

एकाएक दाँतों का कट-कट शब्द बन्द हो सारा शरीर बर्फ़ के समान ठण्डा हो गया था। बजा। दवा का समय हो गया था। रजनी शीशी से गिलास में दवा ढालकर अपने पति पिलाने के लिए गई किन्तु पति तो सदा के सो गया था।

अब रजनी को सन्देह हुआ। उसने हिला डुलाया पर कुछ फल न निकला। रजनी समझ में आ गया कि उसका पति इस लोक में बल्कि दूसरे लोक को चला गया। वह एक मारकर ज़मीन पर गिर पड़ी और अचेत हो गई

जिस समय दिवाकर की मृत्यु हुई उस कमल निरा बच्चा था। वह कुल चार वर्ष था। परन्तु पिता की मृत्यु का उसके हृदय बहुत प्रभाव पड़ा। वह धीरे-धीरे बढ़ने माँ ने किसी प्रकार उसके पढ़ने का प्रबन्ध कर दि कमल पढ़ने में बहुत तेज़ था। स्कूल के अध्या उसे बहुत मानने लगे। अपनी कक्षा में वह अधिक नम्बर पाता था।

पढ़-लिखकर कमल जब एक बड़ा हुआ, उसे अपने पिता की मृत्यु का हाल याद उसने बहुत-सा रुपया इकट्ठा करके ग़रीबों का करने के लिए एक बड़ा अस्पताल खोला। नाम दूर-दूर तक फैल गया। ग़रीबों का इलाज मुफ़्त करता था।

विचित्र कमल

ताल-तलैयों में कमल के फूल सभी ने देखे होंगे। सूरत, खुशबू और आकार में कोई फूल कमल को नहीं पाता। इसका पत्ता भी सुन्दर और बड़ा होता है। देश-देश के कमल का गुण भी अलग-अलग होता है। अमरीका के संयुक्त राज्य का कमल बेजोड़ होता है। 'विक्टोरिया रिजिया नाम का कमल संसार भर में अपनी विचित्रता के लिए प्रसिद्ध है। इस कमल के पत्ते ऐसे बड़े थाल के होते हैं जिसके किनारे ऊँचे हों। आठ-दस हाथ लकड़ी इस पर आ जाती है। पत्ते का डण्ठल रहने पर भी इतना मज़बूत होता है कि बच्चा पत्ते बैठकर खेल सकता है। संसार में ऐसा फूल और नहीं होता।

पाठकों के पत्र

सिक्के और टिकट

कजी,

सिक्के और टिकट इकट्ठा करने का शौक़ है। जो सिक्के और टिकट नये सिक्कों से बदलना चाहें बदल सकते हैं। मैं हृदय से उनका आभारी हूँगा।

आपका—महावीरप्रसाद नारसरिया
रामगढ़ (जयपुर)

सिक्के और टिकट बदलने के लिए प्यारे बाल-सखा रसरियाजी से पत्र-व्यवहार करें।—सं०]

टिकट बदलिए

कजी,

पास बहुत-से देशी-विदेशी टिकट जमा हैं। मुझे ट्ठा करने का शौक़ है और अब तक मेरे पास काफ़ी में टिकट इकट्ठे हो गये हैं। मेरी ही तरह बहुत-सखाओं को टिकट इकट्ठा करने का शौक़ होगा। पत्र-व्यवहार करके अपने टिकट बदलना चाहता हूँ। अपने पृष्ठ में यह बात प्रकाशित कर दीजिए। टिकट बदलना चाहें, वे निम्नलिखित पते पर पत्र-र करें।

मदनमोहन सांख्यधर,
सेठों की गली, सम्भल, यू० पी०

बाल-सखा टिकट बदलना चाहें वे श्रीयुत सांख्य-त्र-व्यवहार करें।—सं०]

बाल-सखा में नाटक

सम्पादकजी,

सखा' आजकल बहुत अच्छा निकल रहा है। ों को उसमें पढ़ने के योग्य काफ़ी सामग्री मिलती है। समें एक कमी खटकती है। वह है नाटकों की। प ऐसे छोटे-छोटे नाटक प्रकाशित करेंगे जिन्हें हम ने यहाँ खेल सकें?

आपका—ओम्प्रकाश विद्यार्थी

पका सुझाव बहुत ठीक है। बाल-सखाओं से है कि वे छोटे-छोटे नाटक भेजें।—सं०]

अच्छी बातों का बगीचा

सबसे बड़ी बुद्धिमानी ठीक समय पर ठीक काम करना है। ठीक समय पर ठीक काम न करना ही बेवक़ूफ़ी है।

× × ×

ख़तरे के समय साहस और धैर्य से काम लेना चाहिए।

× × ×

शक्ति रहने पर जो आदमी अच्छे काम नही करता उसे, शक्ति चली जाने पर, कष्ट उठाना पड़ता है

× × ×

जीवन की सबसे बड़ी समस्या अवकाश वे समय का उचित रीति से उपयोग करना है।

× × ×

क्रोध बुद्धि का सबसे बड़ा शत्रु है।

× × ×

योग्यता और सफलता दोनों का घनिष्ट सम्बन्ध है।

× × ×

गर्व अभाव से भी बड़ा भिखारी है जो चिल्ला चिल्लाकर अपनी घोषणा करता है।

× × ×

यदि आपके मित्र आपके विरोधी हो जाते हैं तं इसमें आपका ही दोष है।

× × ×

अपनी बुराइयों को सुधारने की कोशि कीजिए। दूसरों की बुराई मत खोजिए।

× × ×

दूसरों के सम्मान का ध्यान रखिए तो दूस भी आपका सम्मान करेंगे।

कुछ इधर उधर के
SUDHIR

बुड्ढा बालक

चार्ल्स चार्ल्सवर्थ नामक एक लड़का १४ मार्च १८२९ में इँगलैंड के स्टेफ़ोर्डशायर नामक स्थान में पैदा हुआ। वह सात बरस की उम्र में बुड्ढा होकर मर गया। कहने का मतलब यह कि उसके बाल सफ़ेद हो गये थे। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। वह लाठी टेककर चलता था। दाँत टूट गये थे। यों बुड्ढों में जितनी भी बातें होती हैं वे सब उसमें थीं।

उल्लू की सी आँखें

जियोवानी गैलनटी नामक एक १६ वर्ष के लड़के में यह ख़ास बात थी कि उसकी आँखें उल्लू की सी थीं। वह रात में देख सकता था पर दिन में उसे नहीं दिखाई देता था।

इसी के आधार पर जर्मनीवालों ने एक इंजेक्शन निकाला है जिसको बिल्ली की आँख का इंजेक्शन कहते हैं। इसके द्वारा रात में भी दिखाई देता है। इस इंजेक्शन का असर एक हफ़्ते तक रहता है। जर्मनीवाले यह इंजेक्शन अपने उड़ाकों को देते हैं।

दर्द क्या है?

"दर्द क्या है?" यह आपको नीचे लिखे एक पत्र से मालूम हो जायगा जो रिप्ले नाम के एक आदमी को लिखा गया था। दर्द नसों के उत्तेजित होने से उतना नहीं होता जितना कि शरीर में कुछ रासायनिक पदार्थों के न होने से होता है। वह पत्र इस तरह है—

महोदय,

तुम अजीब किताबें लिखते हो। तुम अजब हो। मैं भी अजब हूँ। मैं आग में खेलता हूँ, नहाता हूँ और खा भी सकता हूँ। मैं गैसलीन पी लेता हूँ। गरम जस्ता पी सकता हूँ। मैं जब सोता हूँ तब मेरे ऊपर १ टन वज़न रख दीजिए, मेरी नींद नहीं खुलेगी।

मैं सात मंज़िल से कूद सकता हूँ। एक दफ़े हड्डी टूट गई लेकिन मुझे दर्द नहीं मालूम हुआ। रासायनिक पदार्थ हर एक के शरीर में रहते हैं। वे नहीं हैं, इसलिए मुझे दर्द नहीं मालूम होता।

मैं हूँ दुनिया का सब से बेहोश आदमी मेक्सिकन वाका सेगुएल मेक्सिको-निवासी।

—रमेशचन्द्र

मिस्र का बाँध

मिस्र में नील नाम की एक नदी है। इस नदी की ओर ६०० मील पर असोअन डैम नाम का एक बड़ा बाँध है। इसमें इतना अधिक पानी जमा रहता यदि वह सारा पानी काम में लाया जाय तो सारा देश गुलाब की भाँति हरा-भरा बन जाय। इतना ही इस बाँध में लगे पत्थरों की संख्या भी बहुत अधिक है

× × ×

सीधे चलना

सीध में चलना! बात तो यह बहुत आसान होती है पर यदि आपसे अपनी नाक की सीध में को कहा जाय तो शायद आप सफल न हों। इसमें यह ज़रूरी है कि चलने के पहले अपनी सीध में किसी को देख लो और फिर उसी को बराबर आँख के रखकर चलो।

× × ×

गेंद का व्यास नापना

गेंद का व्यास नापना आपको कठिन मालूम होता है वह बहुत आसान। दो वर्गाकार टुकड़ों के बीच में को इस तरह रख दे कि गेंद दोनों टुकड़ों के बीच में रहे। अब दोनों टुकड़ों के बीच की दूरी ऊपर से नाप यही गेंद का व्यास होगा।

—रविप्रता

तारे

लेखक, श्रीयुत कमलेशकुमार गुप्त

झिलमिल-झिलमिल करते तारे,
कितने सुन्दर, कितने प्यारे।
रङ्ग-विरङ्ग चमक रहे हैं,
ये मोती से दमक रहे हैं॥

कितनी अगणित इनकी लड़ियाँ,
मानों छूट रहीं फुलझड़ियाँ।
अँधियारी रातों में तारे,
पथवालों के एक सहारे॥

चमक-चमककर निशि में ता
जग के दुख हरते हैं सारे
सान्ध्य समय हैं ये नित आ
पर प्रभात में हैं छिप जाते

फूल का कीड़ा

लेखक, श्रीयुत उपेन्द्रप्रसाद वर्मा

को थी प्रिय फुलवाड़ी ।
खिले थे क्यारी-क्यारी ॥

लाल गुलाब खिला था सुन्दर ।
मधु का कोष छिपाये अन्दर ॥

सुगन्ध से खूब सना था ।
में निज ग़ज़ब तना था ॥

रहा बड़प्पन पर वह फूला ।
झूल रहा था हँस-हँस झूला ॥

उसे मोहन ललचाया ।
को फिर हाथ बढ़ाया ॥

नन्हा कीट फूल में पैठा ।
मधु पीता था उसमें बैठा ॥

ता, इसकी नियत बुरी है ।
ता रहा यह स्वार्थ-छुरी है ॥

बोला—‘भैया ! क्या करते हो ।
सुख औरों का क्यों हरते हो ?

नाहक़ पर को कभी सताना ।
अपने हित उसे मिटाना ॥

भला नहीं है, कहना मानो ।
अपने सा सबका जी जानो ॥’

ला मोहन—‘चुप रह पाजी !
बना है फ़ाज़िल क़ाज़ी ॥

छोटे मुँह हैं बातें करता ।
मरने से क्या ज़रा न डरता ॥’

खला यों निज कड़ा रुआब ।
लिया चट तोड़ गुलाब ॥

लगा सूँघने मन में फूला ।
उस कीड़े की सुध-बुध भूला ॥

सारी मस्ती, जीवन खोकर ।
मिटा गुलाब पलक में रोकर ॥

ठेस लगी कीड़े के मन में ।
आग लगी फिर उसके तन में ॥

छोटा समझ मुझे अभिमानी ।
बात न उसने मेरी मानी ॥

उपकारी का बदला लूँगा ।
अच्छी सीख इसे मैं दूँगा ॥

घुसा नाक में ऐसा ठाने ।
मोहन को वह लगा सताने ॥

नाक रगड़ता, सिर धुनता था ।
उछल-उछल अब वह गिरता था ॥

‘बोलो अब तो, कौन बड़ा है ।
किससे, किसको, काम पड़ा है ?

मिटा और को जो हँसता है ।
इसी तरह वह ख़ुद फँसता है ॥’

बोला मोहन—‘माफ़ करो अब ।
कीट ! कहा है तुमने सच सब ॥’

‘ख़ैर ! क्षमा कर, मैं जाता हूँ ।
रहे याद जो कह जाता हूँ ॥

नाहक़ पर को कभी सताना ।
अपने को है आप मिटाना ॥’

कीट नाक से निकल चला घर ।
मोहन को यों पाठ पढ़ाकर ॥

प्यारे बच्चो ! भूल न जाना ।
मोहन से शिक्षा तुम पाना ॥

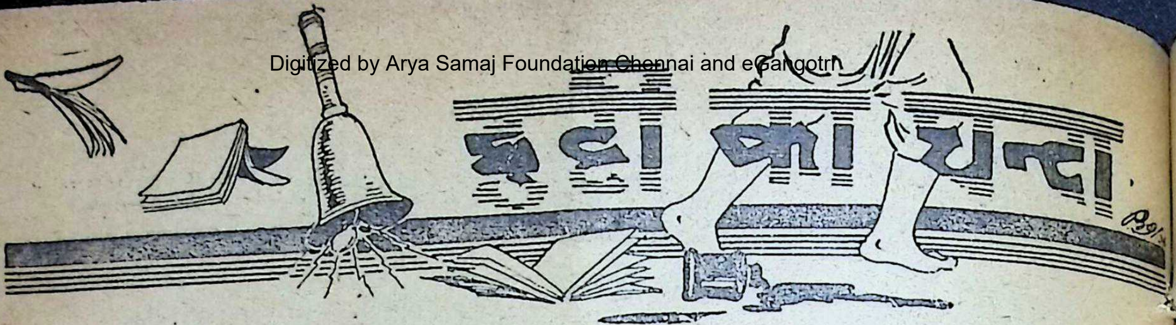

ताशों से भूगोल और इतिहास का ज्ञान

लेखक, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद गुरु

ताश के खेलों से मनोरञ्जन होता है, यह तो सभी जानते हैं और अवकाश के समय खेलकर मन बहला लेते हैं किन्तु यदि मनोरञ्जन के साथ-साथ ताश का कोई खेल ज्ञान बढ़ावे तो बच्चे उस खेल को ज़्यादा पसन्द करेंगे। भूगोल के खेल के लिए ताश-साइज़ के कोरे कार्ड लिये जा सकते हैं। १०४ कार्ड हों तो खेल अच्छी तरह चल सकता है। ५२ कार्डों पर तो शहर, राजधानी या बन्दरगाह का नाम लिखा जावे और बाक़ी ५२ कार्डों पर उन देशों के नाम जिनमें ये शहर और बन्दरगाह हैं अथवा जिन देशों के ये शहर राजधानियाँ हैं। इस तरह ये एक सौ चार कार्ड तीन-चार खिलाड़ियों में १०-१० की संख्या में बाँट दिये जायँ, बाक़ी गड्डी बीच में रक्खी रहती है।

पहला खिलाड़ी अपने कार्डों में से जोड़ी मिलाता है। यदि कोई सच्ची जोड़ी मिल गई तो वह नीचे उतारकर दूसरों के देखने के लिए रख देता है। दिखाने के पहले वह गड्डी में से एक कार्ड निकालता है। दिखाने के बाद वह अपने कार्डों में से कोई भी अनावश्यक एक कार्ड ज़मीन पर फेंक देता है। उसके बादवाला खिलाड़ी चाहे तो इस फेंके हुए कार्ड को उठा ले या चाहे गड्डी में से एक। इस तरह इन ग्यारह कार्डों में उसे शहर और देश को जोड़ी मिलाना चाहिए। जो जोड़ियाँ मिल जावें उन्हें नीचे उतार दे और फिर हाथ में लिये हुए कार्डों में से कोई भी एक कार्ड जो खिलाड़ी अनावश्यक समझता है, नीचे फेंक देता है। तो खिलाड़ी यदि इस फेंके हुए कार्ड को उपयोगी झता है तो इसे उठा सकता है नहीं तो गड्डी निकाल सकता है।

यह खेल तब तक चलता रहेगा जब तक भी एक खिलाड़ी के दसों कार्ड पाँच जोड़ि नीचे नहीं उतर आते। जब कोई खिलाड़ी अपने कार्ड नीचे उतार देने की घोषणा कर देता है बाक़ी के खिलाड़ी कार्डों के कोने पर लिखे को जोड़कर अपनी-अपनी हार लिख लेते हैं। तरह कई बार यह खेल खेला जा सकता है। के अन्त में जिस खिलाड़ी के सबसे ज़्यादा अङ्क वही 'भूगोल-मूर्ख-शिरोमणि' घोषित होगा।

ठीक इसी तरह इन १०४ कार्डों को इति का रूप दिया जा सकता है। ५२ कार्डों पर व्यक्ति के नाम (सम्राट्, महारानियाँ, सेनापति, मन्त्री इतिहास में प्रसिद्धि पा चुके हैं) और बाक़ी ५२ का पर उन देशों के नाम जिनमें ये वीर पैदा हुए लिखे रहेंगे और खेल भूगोल-ताश के समान होगा जिसके अन्त में सबसे ज़्यादा नम्बर होंगे वह 'इतिहास-मूर्ख-शिरोमणि' होगा।

इन कार्डों में एक जोकर कार्ड रहता है चाहे जो शहर या देश बनाया जा सकता है। इस से मनोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञान भी काफ़ी बढ़ और इसी लिए बच्चों में इसका प्रचार अधिक होना चाहिए।

बिल्ली

लेखक, श्रीयुत विनोदकुमार सिनहा

सुबह शाम आया करती है
मेरे घर में काली बिल्ली ।
चूहे औ घर वाले डरते,
ऐसी है वह बड़ी चिबिल्ली ।
नज़र चूकते ही वह, मेरा
सारा दूध हड़प कर जाती ।
बिल से निकला कोई चूहा,
चटपट उसे पकड़ ले जाती ।
माँ से मैं तक डर जाता हूँ,
पर वह उससे कभी न डरती ।
माँ की रक्खी चीज़ों पर भी
हाथ साफ़ वह अपना करती ।
माँ कहती यह बड़ी बुरी है,
पर है उसको मार न पाती ।
डण्डा लेकर दौड़ाती पर
हाथ नहीं वह उनके आती ।
नहीं मुझे भी पा सकती माँ
यदि मैं बिल्ली-सा बन जाऊँ ।
नज़र बचाकर मैं भी माँ की,
दूध-मिठाई चट कर जाऊँ ।

मकड़ी का जाला

लेखक, श्रीयुत रवीन्द्रशङ्कर वर्मा

मेरे कमरे के कोने में
लगा हुआ मकड़ी का जाला ।
मक्खी, कीड़े और मकोड़े
सब उसमें फँस जाते लाला ।
आज कहूँगा मैं मकड़ी से
मुझको ऐसा जाल बना दे ।
रङ्ग-बिरङ्गी तितली प्यारी
मकड़ी रानी मुझे फँसा दे ।

तस्वीरोंवाली किताब

लेखिका, कुमारी कमलादेवी

बाबू के कमरे में देखी
मैंने एक किताब निराली;
नाम न मालुम उसका मुझको
पर है वह तस्वीरोंवाली ।
चले जायँगे जब बाबूजी,
उसे उठाकर मैं लाऊँगी,
चुन्नू-मुन्नू को तस्वीरें
रङ्ग-बिरङ्गी दिखलाऊँगी ।

मेरी गैया

लेखिका, श्री गिनियाँबाई नेमानी

बड़े काम की गाय हमारी ।
भोली-भाली कितनी प्यारी ।।
मीठा दूध पिलाती हमको ।
थर-थर ख़ूब कँपाती थन को ।।
नित्य सवेरे सोकर उठते ।
मुन्नू-चुन्नू दोनों रुठते ।।
मैं भी दूध पिऊँगा मैया ।
मेरी गैया मेरी गैया ।।
श्यामा ख़ूब चराती गैया ।
कूद-फाँदकर आती गैया ।।
जग में सब से न्यारी गैया ।
मुरलीधर की प्यारी गैया ।।

प्रश्न-पहेली

देखा एक अजब चमगादर,
लटका रहता है खूँटी पर।
जब बाबूजी दफ्तर जाते,
मस्तक पर उसको बैठाते।—(टोप)

× × ×

छोटी डिबिया डब-डब करे,
मानिक-मोती झर-झर झरे।—(आँख)

× × ×

मुन्ने ने एक चिड़िया पाली,
पेट में उसके रस्सी डाली।
रस्सी खींची चढ़ गई ऊपर,
ढील दिया तो आई भू पर।—(पतङ्ग)

—देवेन्द्रमोहन माथुर

× × ×

एक अनोखा ऐसा दीया।
रूप नये-नये पेखा कीया॥
उसमें तेल जले ना बाती।
छूते ही वो गुल बल जाती॥—(बिजली)

× × ×

आदि कटे पै सन्त कहाऊँ।
अन्त कटे पै बस कहलाऊँ॥
मध्य कटे होती बत बात।
'पुत्रचन्द्र' सबको हुलसात॥—(बसंत)

—ताराचन्द्र मिश्र

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आती हूँ खाने के काम॥
आदि कटे कपड़ा बन जाता।
अन्त कटे मैं बाज कहाता॥—(बाजरी)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आता हूँ रहने के काम॥
आदि कटे मैं अङ्ग कहाता।
मध्य कटे से मन बन जाता॥—(मकान)

—ओमप्रकाश मोहता

हर घर में रह सकती हूँ।
चाहो जब चल सकती हूँ॥
जितना दो खा सकती हूँ।
नहीं कभी हट सकती हूँ॥
या तो मेरा नाम बताओ।
नहीं तो रोटी बिन रह जाओ॥—(चक्की)

× × ×

सबसे बड़ा पशु हूँ मैं,
सवारी के भी आता काम।
राजाओं के रहता पास,
तो बतलाओ मेरा नाम।—(हाथी

—महावीरप्रसाद नारसरि

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम।
सिर पर बढ़ना मेरा काम॥—(चोटी)

× × ×

कट-कट होता सिर बिना,
टिट-टिट-टिट धड़हीन।
पैर बिना टिक-टिक करूँ,
अक्षर पूरे तीन॥—(टिकट

× × ×

लखा रात में तम्बू एक।
जिसमें लटके दिये अनेक॥—(आसम

—शिरीषकु

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आता हूँ मैं सबके काम॥
मध्य कटे से कम हो जाता।
अन्त कटे से कल कहाता॥—(कलम)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
मध्य कटे से बरी बनूँ मैं॥
अन्त कटे से बनूँ बक।
बताओ भाई मेरा नाम॥—(बकरी)

—मदनमोहन गु

मनोविनोद

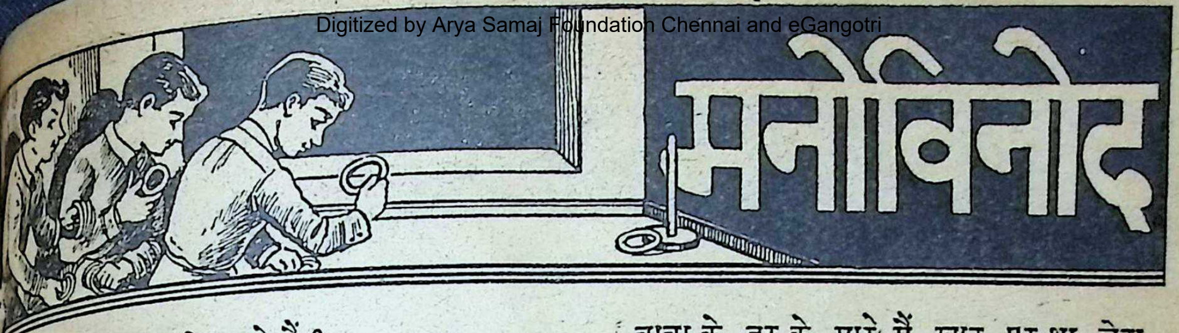

—मोहन, बेसिन किसे कहते हैं ?

—बेसिन चने का वह आटा है जो पकौड़ियाँ बनाने के काम आता है।

× × ×

—कृष्ण, महाभारत का हाल संक्षेप में कहो।

—कौरव और पाण्डव मनुष्य थे, लड़ाई हुई,

—ओम्प्रकाश विद्यार्थी

× × ×

—तूने मुझे चपत क्यों लगाई ?

—क्योंकि तेरे शरीर पर मच्छर बैठा हुआ था।

× × ×

नुष्य—क्यों जी, तुम्हारा नाम क्या है ?

—मेरा नाम ? मूर्ख है।

नुष्य—मूर्ख नाम कैसे हो सकता है ?

—लोग तो मुझे मूर्ख कहते हैं। आपको यह न जँचे कोई दूसरा नाम रख लें।

—ओम्प्रकाश मोहता

× × ×

—देखो बेटा, गुरुजी की मार के कारण मैं आज के प्रधान जज के पद पर हूँ।

—पिताजी, मैं तो स्कूल में सारे दिन पीटा जाता मैं आपसे चौगुना ओहदा पाऊँगा।

× × ×

—(क्लास में) मास्टरजी, सोहन ने जूते को ज़ोर है।

—नहीं मास्टर साहब, सोहन ने अपने पैर से मारा जिससे जूता आगे से फट गया।

× × ×

रोज़ शम्भु क्लास में सो गया। उस समय मास्टर का पाठ पढ़ा रहे थे। मास्टर ने शम्भु को जगा- —सो क्यों रहे हो ? शम्भु ने जवाब दिया—मैं की तरह भक्ति में लीन हो गया।

—महावीरप्रसाद मारसरिया

× × ×

बाबा के डर के मारे मैं खाट पर था लेटा,
आँखें मिची हुई थीं और नींद थी न दारद।
चिमनी की रोशनी के नीचे जो पढ़ने बैठा,
बत्ती तो जल रही थी पर रोशनी न दारद।
साइकिल पर चढ़कर मैं जब दफ़्तर को जा रहा था,
साइकिल तो चल रही थी पर पहिये थे न दारद।

—शिवनन्द मेहरा

× × × ×

होटल के मैनेजर ने एक मौलाना से पूछा—कहिए, आप चाय पियेंगे या काफ़ी ?

मौलाना ने जवाब दिया—मुझे चाय ही काफ़ी है।

× × × ×

मास्टर साहब ने लड़कों को सबक़ देते हुए कहा—इसको 'कल' कर लाना, मैं देखूँगा।

दूसरे दिन मास्टर ने पूछा—"क्यों सबक़ कर लाये ?"

एक लड़का—नहीं।

मास्टर—क्यों ?

लड़का—आपने कल के लिए कहा था।

× × × ×

मास्टर साहब ने समझाया कि वक़्त पर सब काम करना ठीक होता है।

एक दिन मास्टर साहब के पढ़ाने में छुट्टी की घण्टी बज गई। लड़कों ने पुस्तकें बन्द करके बस्तों में रख लीं।

मास्टर साहब ने पूछा—क्यों, पुस्तकें बन्द क्यों कीं ?

लड़कों ने जवाब दिया—वक़्त पर सब काम करना ठीक होता है।

—पु० भि० देव

× × × ×

एक दिन मास्टर साहब ने क्लास में पढ़ाते हुए एक लड़के से पूछा—"यह कापी किसकी है ?" जिस लड़के की कापी थी वह एकदम खड़ा होकर बोला—"काग़ज़ की।"

"किस काग़ज़ की?" मास्टर साहब ने ग़ुस्से में भरकर पूछा।

"जिसकी यह कापी है।" लड़के ने तुरन्त उत्तर दिया।

यह सुनकर सब लड़के हँस पड़े और मास्टर साहब झेंपकर क्लास से चले गये।

—मदनमोहन सांख्यधर

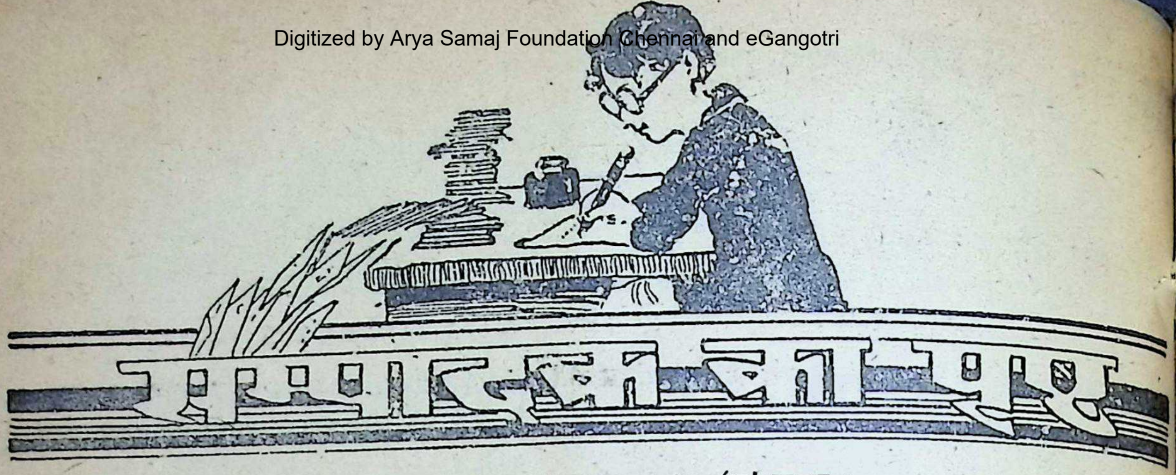

सम्पादक का पृष्ठ

नया साल

इस संख्या से 'बाल-सखा' अपने उन्तीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पिछले साल उसने प्यारे बाल-सखाओं के लिए अधिक से अधिक मनोरञ्जक पाठ्य-सामग्री देने का प्रयत्न किया था। प्रसन्नता की बात है कि पाठकों ने इस प्रयत्न को बहुत पसन्द किया। उनके सुझाव भी प्राप्त होते रहे हैं। 'बाल-सखा' अपने पाठकों तथा प्रेमियों को यह विश्वास दिलाता है कि आगे भी इसी प्रकार मनोरञ्जक और उपयोगी पाठ्य-सामग्री देने का प्रयत्न किया जायगा।

× × ×

'बाल-सखा' को प्यारे बाल-सखाओं के अतिरिक्त अन्य नामी लेखकों और कवियों का सहयोग मिला है। इसके लिए उन्हें धन्यवाद है। आशा है, उनका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

× × ×

एक बाल-सखा ने पूछा है कि हमें नये वर्ष क्या करना चाहिए। निवेदन है कि हमें अपने पुराने वैर-भाव, द्वेष और लड़ाई-झगड़े भूलकर मेल-जोल के साथ नये वर्ष का स्वागत करना चाहिए। यह प्रण करना चाहिए कि इस वर्ष हम किसी से वैर-विरोध नहीं करेंगे।

× × ×

इनामी पहेलियाँ

दिसम्बर महीने में छपी पहेलियों के बहुत-से उत्तर हमारे पास आये हैं जिनमें सर्वप्रथम सही उत्तर श्री जगतनारायण पालीवाल और द्वितीय श्री रमेशचन्द्र वर्मा का प्राप्त हुआ है। इनाम की पुस्तकें जनवरी मास के अन्त तक भेज दी जायँगी।

१—'स' अक्षर।
२—नारियल।
३—तुम अपने पथ पर बढ़ो-बढ़ो।

इनामी पहेलियों का उत्तर भेजनेवालों का ना

सर्वश्री जबरचन्द्र जैन, सुरेन्द्रकुमार जैन, सुरेश भाटिया, गौरीशङ्कर पटवारी, श्रीकृष्ण, त्रिलोकीनाथ, एम० चौहान, श्रीशचन्द्र पाण्डेय, केशरसिंह, सत्गु बालचन्द भण्डारी, गोविन्ददास काबरा, रतनबाई जै रमाशङ्कर त्रिपाठी, लक्ष्मीनिवास काबरा, यादराम तेजपाल गांधी, केशवप्रसाद, सरनकुमारी, गोपीवल्लभ रमेशचन्द्र, हरद्वारीमल, किशोरीदास, मालती बैजल, कुमारी, आनन्दचन्द्र पांडेय, कैलाशनाथ नेमानी, पुष्पा, रामनिरञ्जन बजाज, श्रीकृष्ण बिलैया, शरद वी कुमार, श्यामसुन्दर सुल्लेरे, चमनलाल दत्त, स्वरूपवि महावीरप्रसाद नारसरिया, अन्नपूर्णादेवी ठाकुर, राज रानीवाला, गोवरधनदास छगनलाल अग्रवाल, कृष्ण वर्मा, प्रसादीलाल, वीरेन्द्रकुमार नागपाल, हरिश्चन्द्र महेन्द्रकुमार रस्तोगी, हरिश्चन्द्र, तिलककुमार सिसौदि गोविन्दप्रसाद, बिशुनदयाल गोवर्धनदास, मूलचन्द सच्चिदानन्द गनेडीवाला, सरलादेवी, नाथूलाल, विहारीलाल गुप्त, ज्वालाप्रसाद खेतान, वनवारीलाल हरीलाल अग्रवाल, विनोदचन्द्र दुबे, हनुमानप्रसाद के अशोककुमार गुप्त, आशालता अवस्थी, अनुराधा विमलादेवी, सत्यनारायण अग्रवाल, परमानन्द पटो कमलारानी वैश्य, मुंशीराम गुप्त, पुरुषोत्तमदत्त, अजय मिश्र, नन्दकिशोर वनवारीलाल सर्राफ़, विजय वर्मा, दि गोपाल लघाटे, वासुदेव श्रीधर सुमन्त, पुष्पलता अग्रव कृष्णकुमार जोशी, प्रतिभाकुमारी, एम० ए० केलकर, न कुमार, जगवन्तसिंह यादव, हनुमानप्रसाद केडिया, रवरीदत्त छिम्लवाण, विनोदचन्द्र गुप्त।

र्षिक 'बाल-सखा'

बच्चों को प्रसन्न रखिए

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को हमेशा प्रसन्न देखना चाहते हैं। इसका कारण केवल यही है कि खिलखिलाते हुए बच्चों को देखकर वे स्वयं प्रसन्न होते हैं। अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, खेलने के लिए पर्याप्त समय उन्हें अवश्य प्रसन्न रख सकता है। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। बच्चों की बौद्धिक जिज्ञासा जब तक तृप्त नहीं होती, तब तक उनकी वास्तविक प्रसन्नता की आशा दुर्लभ है।

अनोखा प्रकाशन

आगामी जनवरी में वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन हम इतनी सज-धज और सुन्दरता के साथ कर रहे हैं कि कोई भी बालक उसे पढ़कर फूला न समायेगा। बच्चों के मनोविज्ञान पर पर्याप्त अधिकार रखनेवाले प्रसिद्ध विद्वानों की सहायता से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। इस 'बाल-सखा' की छपाई और कवर ही सुन्दर न होगा बल्कि इसके ३०० पृष्ठों में कहानी, कविता तथा ज्ञान-विज्ञान की मनोरंजक और सरल सामग्री दी जायगी जिसे बच्चे एक वर्ष तक पढ़ते रहेंगे। दूसरी पुस्तकें ख़रीदने की आवश्यकता न होगी। १५० पृष्ठ केवल बालकोपयोगी सुन्दर मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियों के लिए ही सुरक्षित हैं। ५० पृष्ठों में कवितायें तथा १०० पृष्ठों में ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी मनोरंजक तथा सरल लेख दिये जायँगे। रंगीन और सादे चित्र भी पर्याप्त संख्या में दिये जा रहे हैं। सारांश यह कि इस वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन अपने ढंग का अनूठा और अनोखा होगा।

अपूर्व अवसर

इतना सुन्दर, आकर्षक और उपयोगी 'बाल-सखा' कितने शीघ्र हाथों-हाथ बिक जायगा यह आपको बताने की आवश्यकता नहीं है। काग़ज़ की महँगी तथा उसके कम परिमाण में मिलने के कारण हम इसे केवल ५००० की संख्या में निकाल रहे हैं। यदि आप अपने वार्षिक 'बाल-सखा' की प्रति शीघ्र आर्डर भेजकर रिज़र्व नहीं करा लेंगे तो अत्यन्त खेद के साथ बाद में आये हुए आपके आर्डर को हमें लौटा देना पड़ेगा। हमें आशा है कि आप इस अपूर्व अवसर को न खोकर अपना आर्डर हमें शीघ्र भेज देंगे।

—मूल्य दो रुपये

मैनेजर :—

'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अच्छी पुस्तकें मनुष्य को जितना ऊँचा सकती हैं बुरी पुस्तकें उतना ही नीचे गिरा सकती अपने बच्चों को चरित्र की दृष्टि से ऊँचा उठाने के पुस्तकों का चुनाव करते समय अत्यन्त सावधानी र की आवश्यकता है।

मूल्य सवा रुपया

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी-कृत बच्चों की कविताओं का यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक हैं, यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत ही कमनीय है।

शिशु भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही रचनाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल कवितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके।

मूल्य एक रुपया

अन्वेषण-यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य स्थान लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना भी सम्भव नहीं था। वास्को डि गामा आदि कुछ अपूर्व साहसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर यात्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है।

मूल्य तेरह आने

जान जोखिम की कहानियाँ—इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। कतिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षकता और बढ़ गई है।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का एक प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। इसमें ध्रुवों में निवास करनेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल लिखा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, साथ ही मनोरञ्जन भी होगा।

मेरे देश की कथा भारतीय इतिहास के कई और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं पढ़ाये इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आ बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक उस को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र क कराती है।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों की करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइयाँ यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है।

बालनीतिमाला—संस्कृत के नीतिविषयक ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद है। नीति का ध्यान यदि बचपन से हो जाय तो ज़िन्दगी बड़े आनन्द से कट सकती है।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस ताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जिसे बच्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न सम

मूल्य ग्यारह आने

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ—इस छोटी-सी पु में आठ मज़ेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। कहानी जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। के लिए यह बहुत ही मज़ेदार है।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता है पुस्तक कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहानी समय वही मज़ा आता है जो दूध और मलाई खाते सम

मूल्य आठ आने

लन्दन की एक झलक—बालकों को लन्दन शहर संक्षेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी गई

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और हुई है।

—इस पुस्तक में फ्रांस देश का वर्णन किया गया है। ही सरल और मनोरञ्जक है।

ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्रात करने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो वश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात है।

रीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए।

नी—जर्मनी अपने भयङ्कर कारनामों के कारण आज हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं, विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाला

देश का हाल—भारत का चीन से प्राचीनतर सम्बन्ध चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया गया है। बच्चों तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

देश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षिप्त परिचय है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पुस्तक के नोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी।

—देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना महत्त्वपूर्ण लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद रूप से किया गया है।

ओं के देश तिब्बत में—तिब्बत के रास्ते में क्या-ई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस पुस्तक में है।

—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने पाया ने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्रतिदिन बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी गई हैं न्हें पढ़कर उछल पड़ेंगे।

गोपाल तथा अन्य कहानियाँ—बच्चों की रुचि का अध्ययन करके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक है।

मूल्य पाँच आने

च्यांग काई शेक—इस पुस्तक में च्यांग काई शेक का जीवन-चरित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के राष्ट्रीय जीवन में नया जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी बच्चों को अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।–) पाँच आने।

तुर्की के वीर—इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवाले कमाल अतातुर्क के जीवन-चरित्र का संक्षेप में वर्णन है। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मिस्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्टन चर्चिल का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीव होगा। बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ को भनभनाकर जाते हुए देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जहाज़ की उत्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह संक्षेप में लिखा गया है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए बड़े ही मज़े की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के साथ गद्य और पद्य भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ लेते हैं।

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के लिए यह परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें लगभग ४८ चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना की गई है।

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों में ऐसे महापुरुषों के जीवन-चरित्र संक्षेप में दिये गये हैं जो अपने महान् कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। उल्लिखित मूल्य प्रति भाग का है।

जोसेफ़ स्टालिन—अत्यन्त कठिन परिस्थिति में भी साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष ने जीवन-दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रोचक प्रतीत होगी।

वाल्मीकि—रामायण महाकाव्य की रचना करनेवाले आदि-कवि वाल्मीकि का यह जीवनवृत्तान्त है। भाषा अत्यन्त सरल और रोचक है।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य सात कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि बच्चे पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा आकर्षक है।

———

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

HAMĀM

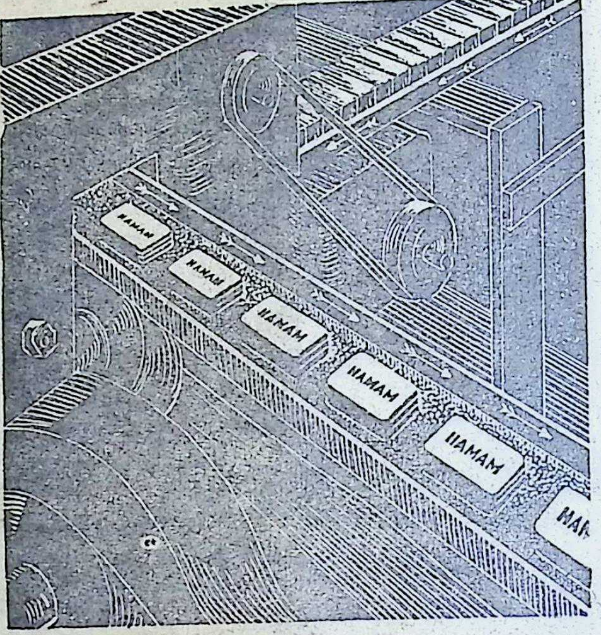

हमारा
हमाम

मशीन का चमत्कार

हमारी भूमि से तेल, सागर से रासायनिक द्रव्य और वन-उपवन एवं पर्वतों से सुगन्धि एकत्र कर हमाम के निर्माण के लिए भेजी जाती हैं। किन्तु यह आधुनिक भारत में अब तक सबसे आधुनिक मशीन का ही चमत्कार है कि हमाम भारत के कोने-कोने में आपके लिए सुलभ है।

खौलाने के लिए तेल एवं रासायनिक द्रव्यों की मिलावट, सुगन्धि का मिश्रण, सुखाना, छाप लगाना आदि हमाम जैसे सुन्दर साबुन के निर्माण में जितने भी प्रयोग होते हैं, मशीनों द्वारा ही होते हैं। तेज़ से तेज़ टाइपिस्ट जितनी शीघ्रता से एक शब्द छाप सकता है उससे दुगुनी शीघ्रता से ये मशीनें हमाम की बट्टियों पर छाप लगाती हैं।

मशीनों की सहायता से साबुन के उपद्रव्य—ग्लिसरीन के उपयोगी बनने में भी सहायता मिलती है, जो कपड़े, अस्त्र शस्त्र, तम्बाकू एवं अन्य उद्योगों के लिए अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। ग्लिसरीन का अर्क औषधि उद्योग के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार कोचीन रियासत स्थित टाटापुरम् में एवं बम्
सिवरी स्थित अपने दो कारख़ानों से हम भारत की साबु
बढ़ती हुई आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और इससे स्व
स्वच्छ देश बनाने में सहायक रहते हैं।

४ इस कूपन को काटकर अपने पास सम्हालकर रखें
जब यह योजनापूर्ण हो जाय तो हमें सब कूपन भेज दें। ह
आपको बदले में एक उपयोगी चीज़ भेज देंगे।
कूपन अलग-अलग न भेजें।

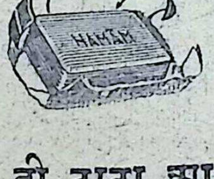

A TATA PRODUCT

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०
जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

संसार की तीन प्रसिद्ध मीनारें

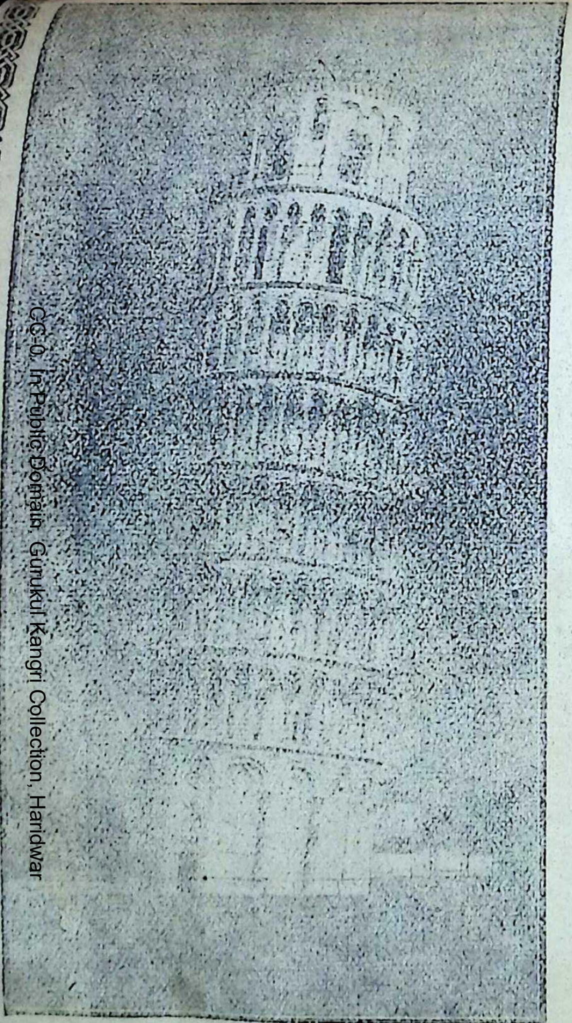

पीसा की टेढ़ी मीनार

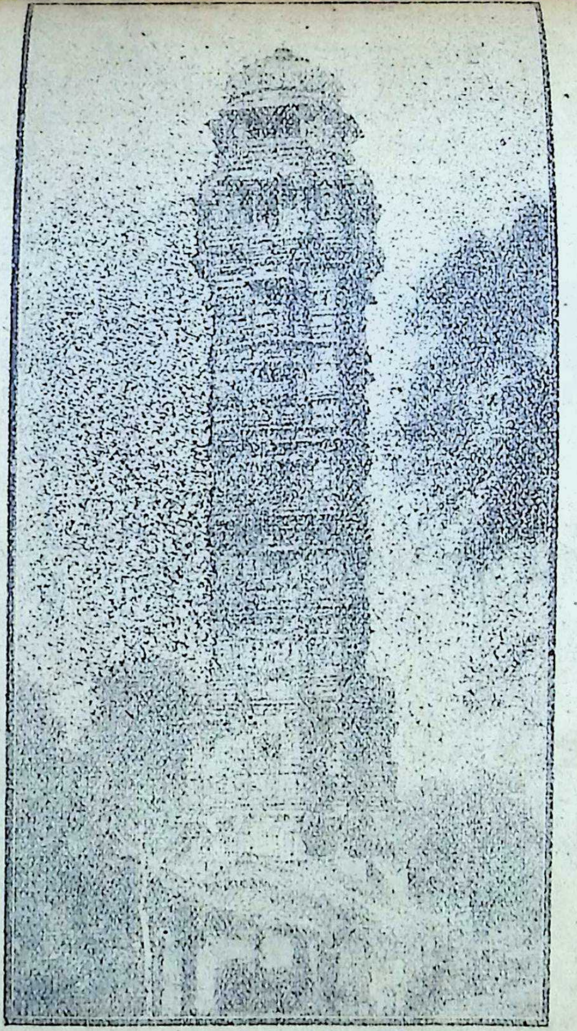

विजय-स्तम्भ, चित्तौर

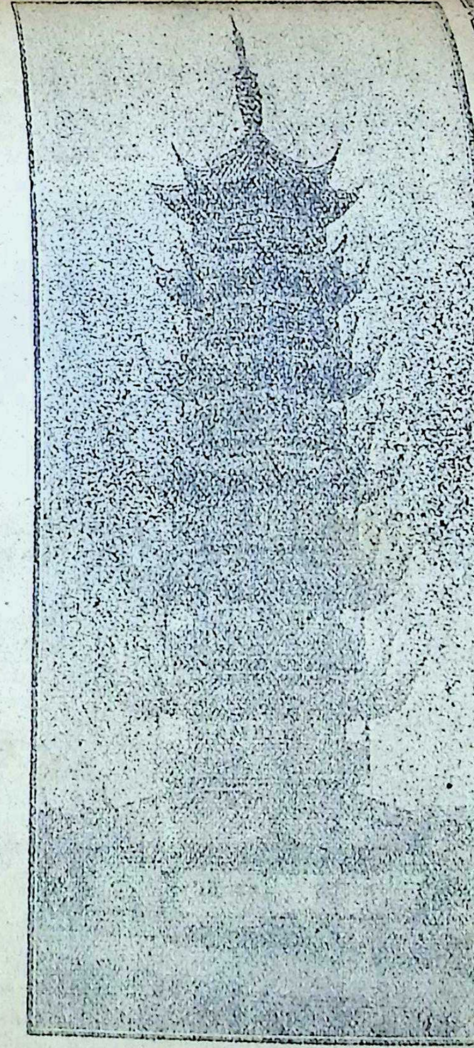

लांग-हुआ पगोडा, शंघाई

हमेशा किसी न-किसी पशुका आडम्बर करता रहता है!

क्या आप कृतज्ञ नहीं है कि वह "मैलके खतरे" से सुरक्षित है

वह किसी-न-किसी पालतू चीजके विना कभी नही रहता। कोई भी जात हो—यह लडका जानवरों के पीछे पागल रहता है। और चाहे ये जानवर कितना भी धूलमें लोटके आये हों फिर भी उन्हें उतनाही प्यार करेगा। वास्तवमें यह सौभाग्य की बात है कि इसने लाइफ़बॉयके इस्तेमाल की आदत डाल ली है, क्योंकि ईश्वर ही जानता है कि किस तरह वह मैल-और-किटाणुओंको लपेट लेता है। बहुत ही माताएं चिन्तासे दुःखी होतीं, यदि लाइफ़बॉय मैलके खतरे से रक्षा न करता। हम सभी जानते हैं कि मैलमें कीटाणु होते हैं—ऐसे कीटाणु जो बच्चों के लिये बहुत ही खतरनाक होते हैं, जो बीमारी पैदा कर सकते हैं और संक्रामक फैला सकते हैं। लेकिन यदि बच्चे हररोज लाइफ़बॉय साबुनसे स्नान करें—तो चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। लाइफ़बॉय एक एण्टीसेप्टीक साबुन है—इसमें एक विशेष स्वास्थ्य-रक्षक तत्व है, जिसने इसको विश्वविख्यात बना दिया है। भारत के दूसरे किसी भी साबुनसे यह फायदा नहीं होता।

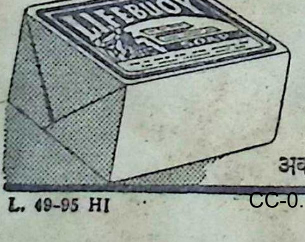

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक जरूरी आदत है

अब मोम लगे कागजके रैपरमें बेचा जाता है

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

टाल्सटाय का जग

यह संसार के सर्वश्रे

१—वरदान दो (कविता)—[श्रीयुत शिवनन्दन कपूर १०५
२—हवाई जहाज़ों की लड़ाई—[श्रीयुत चन्द्रवलीसिंह, बी० ए० ... १०६
३—कुत्ते का चोर—[श्रीयुत विजयेन्द्रनाथ वंद्योपाध्याय; अनुवादक, नन्दलाल शारदा, दारजिलिंग १११
४—दादा से—[श्री 'निरक्षर' ... ११४
५—नाख़ून और बाल—[श्रीयुत हरीस्वरूप, बी० ए० ... ... ११५
६—जाने क्यों? (कविता)—[श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ११८
७—नटखट नन्दू—[श्रीयुत दयाशंकर मिश्र, अध्यापक राजस्थान, बालिका-विद्यालय, वनस्थली ११९
८—चाचा विलियम—[श्रीयुत नानकचन्द्र टंडन, मूललेखक, केनेथ ग्राहम १२२
९—महान् व्यक्तियाँ—[श्री० पुरुषोत्तमदास टंडन, बी० ए०, एल-एल० बी० ... १२६
१०—स्वर्ग की सैर—[श्रीयुत आत्माराम देवकर १२८
११—हिन्दुस्तान (कविता)—[श्रीयुत सिद्धनाथ दीक्षित १३०

किसी न-किसी

मास्टर, म्यु० हाई स्कूल, सागर
१३—मेरा घोड़ा (कविता)—[श्रीयुत रामनारायण लाल शर्मा, ताल जावरा स्टेट ... ...
१४—कल और आज—[श्रीमती सरस्वती देवी ..
१५—गुरु सब से बड़ा है—[श्री ज़हूरबख़्श ...
१६—मन्नो रानी (कविता)—[कुमारी शान्ती कपूर, कानपुर ... ...
१७—भिखारी (कविता)—[श्री जगदीश पाण्डेय
१८—'वन की चिड़िया' (कहानी)—[श्रीयुत बाल० गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव ... ...
१९—आयु-अंक-चक्र—[श्रीयुत शम्भूनाथ वाज० पेयी ... ...
२०—वसन्त (कविता)—[श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र 'कवि-हृदय' ... ...
२१—चिट्ठी-पत्री ... ...
२२—प्रश्न-पहेली ... ...
२३—मनोविनोद ... ...
२४—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

चित्र-सूची

१—दुश्यन्त और शकुन्तला (रंगीन) मुखपृष्ठ
२-७—हवाई जहाज़ों की लड़ाई-सम्बन्धी ६ चित्र १०६-११०
८-९—नाखून और बाल-सम्बन्धी २ चित्र ... ११५-११६
१०-१३—महान् व्यक्तियों-सम्बन्धी ४ चित्र.. १२६-१२७
१४—ब्राडकास्टिङ्ग-सम्बन्धी १ चित्र ... १३२
१५—भिखारी-सम्बन्धी १ चित्र ... १३६
१६—वन की चिड़िया-सम्बन्धी, १ चित्र ... १३७

टाल्सटाय का जगत्प्रसिद्ध उपन्यास

यह संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक काउण्ट लियो टाल्सटाय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस ी, अन्य राष्ट्रों की खींच-तान का वर्णन बड़े सुन्दर ढङ्ग से किया है। प्रिन्स एण्ड्रयू और नटाशा की प्रेम- ा, नटाशा का पतित अनातोले से प्रेम करना, प्रिन्स एण्ड्रयू का संसार से विरक्त होना आदि घटनाओं ी वर्णनशैली इतनी मज़ेदार है कि पुस्तक पढ़ना आरम्भ करके बिना पूरी पढ़े हुए हाथ से नहीं छूटती।

इसके सम्बन्ध में निम्न सम्मतियाँ हैं—

युद्ध और शान्ति

मूल्य ४)

"...अनुवादक महोदय निस्संदेह विद्वान् हैं। उन्हें इस योग्यता पर बधाई।"
—(स्वर्गीय) गणेशशङ्कर विद्यार्थी

"......इससे अच्छा अनुवादक अन्यत्र न मिलेगा......।"
—(स्वर्गीय) प्रेमचंद

"......बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस महान् पुस्तक का अनुवाद हो गया। अनुवाद की भाषा अत्यन्त सरल और मुहाविरेदार है। आशा है, इस पुस्तक का हिन्दी में समुचित आदर होगा......।"
—"माधुरी"

अनुवादक
श्री रुद्रनारायण
अग्रवाल

जर्मनी का आक्रमण नार्वे पर

लेखक, पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र, विद्यावाचस्पति

वर्तमान योरपीय युद्ध पर यह पहली पुस्तक है। इसमें नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क का पूरा परिचय देते हुए जर्मनी के उन देशों पर आक्रमण करने का वर्णन बड़े रोचक ढङ्ग से किया गया है। समय-समय पर दिये गये प्रधान व्यक्तियों के वक्तव्य भी संगृहीत हैं। सचित्र पुस्तक का मूल्य।=) छः आने।

मैनेजर (बुकडिपो,) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारी तीन बिलकुल नई पुस्तकें

बारह कहानियाँ

(हिन्दी की चुनी हुई श्रेष्ठ कहानियाँ)

संकलनकर्ता
श्रीयुत श्रीराम गर्ग, एम० ए०,
साहित्यरत्न

इस कहानी-संग्रह में हिन्दी के श्रेष्ठ कहानी-लेखकों की बारह कहानियाँ संगृहीत हैं। इन कहानियों का संग्रह इस उत्तम ढङ्ग से हुआ है कि इस छोटे से संग्रह में ही हिन्दी की भिन्न-भिन्न प्रकार की श्रेष्ठ कहानियाँ आ गई हैं। हर कहानी में विषय और शैली की अपनी विशेषता है। हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कहानी-लेखकों की श्रेष्ठ कहानियाँ पढ़ने की इच्छा रखनेवालों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मूल्य ॥) बारह आने।

卐

गल्प-तरङ्गिणी

संग्रहकर्ता एवं सम्पादक
श्री संतराम, बी० ए०

इस कहानी-संग्रह में तेरह कहानियाँ संगृहीत हैं। यह पुस्तक विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। इसलिए इसमें बहुत आसान और मज़ेदार कहानियाँ संगृहीत हैं। ये कहानियाँ विद्यार्थियों को पुरुषार्थ, देश-प्रेम, त्याग, दया, क्षमा इत्यादि के पाठ पढ़ाती हैं और इतनी चित्ताकर्षक हैं कि विद्यार्थी उन्हें एक बार पढ़ना आरंभ कर देने पर बिना समाप्त किये नहीं छोड़ेंगे। मूल्य १) एक रुपया।

सीताराम-संग्रह

अर्थात्
रायबहादुर लाला सीतारामजी के समग्र काव्यों और नाटकों का सरस संग्रह

लेखक, श्रीयुत हरदयालु सिंह

रायबहादुर लाला सीताराम जी ने संस्कृत की कितनी ही सुन्दर रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी-साहित्य का भाण्डार भरा है। इन अनुवादों में मौलिक भावों की पूर्ण रूप से रक्षा हुई है। इसी से उन्हें पढ़ते समय मौलिक ग्रंथों का-सा मज़ा आता है। अधिकांश अनुवाद अवधी में ही हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लाला जी के समग्र काव्यों और नाटकों के अनुवादों का सरस संग्रह है। पुस्तक के आरम्भ में लालाजी का परिचय और उनकी रचनाओं की आलोचना दी गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

'सरस्वती'-सम्पादक पण्डित देवीदत्त शुक्ल जी-द्वारा लिखित बालकोपयोगी पुस्तकें—

जापान का हाल

जापान अपने ढङ्ग का निराला और बड़ा भाग्यशाली देश है। उद्योग-धन्धे और व्यापार में एशिया के अन्य समस्त देशों से तो यह बढ़ा-चढ़ा है ही साथ ही योरप तथा अमेरिका के भी उन्नत देशों से टक्कर लेने के लिए यह सदा तैयार रहता है। इसके इस अभ्युदय का एक-मात्र कारण है वहाँ के निवासियों की अनुपम देश-भक्ति और दृढ़ तथा अपरिमित अध्यवसाय। अभी देखते-देखते साठ वर्ष के अल्पकाल में इसने जो आशातीत उन्नति कर ली है उसे देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। इस पुस्तक में वहाँ की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक अवस्था पर भली भाँति प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। युवकों, विशेष कर स्कूलों के विद्यार्थियों, के लिए यह बड़े काम की है। सचित्र पुस्तक का मूल्य ।।) आठ आने।

जापानी कारीगरी

बाल-कविता-माला

श्री पण्डित देवीदत्त शुक्ल बच्चों की रुचि को खूब पहचानते हैं; क्योंकि वर्षों आप 'बाल-सखा' के सम्पादक रह चुके हैं। इस पुस्तक में आपने ऐसी बढ़िया-बढ़िया कवितायें लिखी हैं, जिन्हें पढ़ते ही हँसी रोके नहीं रुकती। पुस्तक सचित्र और बच्चों के लिए लाजवाब है। मूल्य केवल ।=) छः आने। पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

उत्कृष्ट कविताओं के दो सरस संग्रह

मानवी

लेखक, ठाकुर गोपालशरणसिंह

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। ठाकुर साहब और उनकी कृति 'मानवी' की प्रशंसा हम स्वयं करना नहीं चाहते। उसे नीचे के उद्धरणों में पढ़िए :—

"ठाकुर गोपालशरणसिंह हिंदी के उन थोड़े से कवियों में हैं, जिनके ऊपर हिंदी भाषा गर्व कर सकती है। ठाकुर साहब की कविता में एक प्रकार का दिशा-निर्देश मिलता है। उनकी कविता में, उनके भावों का विकाश भी अपूर्व ढंग से हुआ है।...... ठाकुर साहब की 'मानवी' हमें उसकी (नारी) की व्यथा समझाने में सफल हुई और हम कह सकते हैं कि उनकी यह रचना हिंदी में अपने निरालेपन के कारण विशिष्ट स्थान की अधिकारिणी है।"

—साहित्य-सन्देश

".. Untroubled by any aspirations for the infinite, Thakur Saheb sets himself apart from a score of modern poets by his simplicity of language, his depth and sincerity of thought and an attempt to understand the various tangled problems of which Michael Madhusudan Dutt himself, handicapped by the limited character of his theme, was able only to touch the fringe....... 'Manavi' is a delineation of the various aspects of womanhood; it is not social propaganda."

—लीडर

पृष्ठ-संख्या १०९, छपाई और गेटअप बहुत सुंदर, मूल्य सिर्फ़ १॥।), एक रुपये बारह आने।

वेणुकी

लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डेय

प्रत्येक कविता में कवयित्री की भावुकता, सहृदयता और वेदना झलकती है। कविताओं की भाषा सरल और सुबोध है। पुस्तक भर में प्रासाद गुण भरा हुआ है। पुस्तक की अच्छाई के बारे में निम्नलिखित सम्मतियाँ अवश्य पढ़िए :—

"इन कविताओं के पढ़ने से ऐसा ज्ञात हुआ जैसे वह लेखिका के मानसिक जीवन की स्पष्ट रूप-रेखा हो। वह उस जीवन की एक करुण कहानी है, जिसने अपने हृदय की कोमल भावनाओं को संगीत के साथ साकार रूप प्रदान कर विश्व के कोने-कोने में बिखेर दिया हो।"

—साहित्य-संदेश।

"श्रीमती तारा पांडेय के गीतों में भाषा की सरलता और स्वाभाविकता है, यही उनकी कविता का सबसे सुंदर अंग है, यही उनकी खूबी है। उन्होंने अपने गीतों में जो कुछ भी कहा है वह साफ़ है, और जो कुछ बैकग्राउण्ड में है वह भी अपनी झलक काफ़ी स्पष्ट दे जाता है।"

—वीर अर्जुन

"श्रीमती तारा पांडेय के गीत सरल हैं, उनमें कल्पना की ऐसी ऊँची उड़ान नहीं है जो छुई न जा सके। यौवन-संधि तथा मातृ-सुलभ राग की स्वाभाविक अभिव्यंजना है।"

—स्वराज्य।

"काव्य-विषय का चित्रण सहृदयतापूर्वक हुआ है।"

—मनोहर (मराठी)

"... In the poems collected in Venuki, Shrimati Pandey has amply succeeded in depicting tender and delicate emotions in a style which is marked with transparent simplicity and sincerity."......

—हिन्दुस्तान रिव्यू

पृष्ठ-संख्या ६६, छपाई और गेटअप बहुत सुंदर। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी के प्रसिद्ध ले० श्रीयुत सन्तराम बी० ए०-लिखित पुस्तकें

लोक-व्यवहार

साढ़े चार सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रुपया।

यह पुस्तक प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक श्री डेल कारनेगी की 'हाऊ टू विन फ्रेण्डज़ एण्ड इन्फ्लूएन्स पीपुल' नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। ३ वर्ष में मूल अँगरेज़ी पुस्तक की १२ लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। इससे पुस्तक की उपयोगिता और लोकप्रियता का अनुमान हो सकता है। पुस्तक की उपयोगिता का पता नीचे लिखे हुए कामों से लगाया जा सकता है जो यह पुस्तक आपके लिए करेगी—

यह आपको शीघ्र और सहज में मित्र बनाने में और जनता को प्रभावित करने में समर्थ करेगी। यह लोगों को अपने विचारों का बनाने में सहायता करेगी। यह आपकी कमाने की शक्ति को बढ़ायेगी। शिकायतों को निपटाने, विवाद से बचने, दूसरे मनुष्यों के साथ अपने सम्पर्क को स्निग्ध एवं मधुरम् रखने में आपको सहायता देगी। यह आपको वार्तालाप निपुण बना देगी।

इत्सिंग की भारत यात्रा २॥)
सुन्दरी सुबोध १॥)
जान जोखम की कहानियाँ ॥=)
स्वदेश-विदेश यात्रा १)

निरोग कन्या १)
सुशील कन्या ॥)
दयानन्द ॥।)
बालसद्बोध ॥)

रसीली कहानियाँ ॥।)
विश्व की विभूतियाँ १॥)
मानसिक आकर्षण द्वारा व्यापारिक सफलता ।)

श्रीयुत शान्तिप्रिय द्विवेदी-लिखित पुस्तकें

युग और साहित्य

यह पुस्तक वर्तमान हिन्दी-साहित्य का बिलकुल नये ढङ्ग से लिखा हुआ इतिहास है। आज के जीवन और साहित्य में जो-जो समस्यायें चल रही हैं, नवीन युग जिन साधनों से उन समस्याओं का हल करेगा, वे सभी बातें इस पुस्तक में बड़ी रोचकता से चित्रवत् दिखलाई गई हैं। इसे पढ़कर नई पीढ़ी के साहित्यक नवयुवकों का मानसिक क्षितिज बिलकुल बदल जायगा। पृष्ठ-संख्या प्रायः ४००, मूल्य सजिल्द केवल २)

कवि और काव्य

इस पुस्तक में काव्य-सम्बन्धी गम्भीर से गम्भीर विचार भी भावपूर्ण भाषा में बड़ी रोचकता से वर्णन किये गये हैं। साहित्य-प्रेमियों के मनन की वस्तु है। मूल्य केवल १)

संचारिणी

इस पुस्तक में भक्तिकाल से लेकर संक्रान्तिकाल तक का हिन्दी-साहित्य का इतिहास बड़े ही रोचक ढङ्ग से लिखा गया है। एक स्वच्छ साहित्यिक दर्पण-सा बन गया है। पृष्ठ-संख्या २५० से अधिक। मूल्य केवल १॥)

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हिन्दी-जगत् में चित्रकला की अनोखी तथा पहली पुस्तक

भारतीय चित्रकला-पद्धति

लेखक, श्रीयुत शैलेन्द्रनाथ दे, वायस प्रिंसिपल महाराजाज़ स्कूल, ऑफ़ आर्ट्स, जयपुर

इस पुस्तक के लेखक चित्रकला के विशेषज्ञ और स्वयं एक प्रख्यात शिल्पी हैं। इसमें चित्रों के सम्बन्ध में सभी आवश्यक बातें दे दी गई हैं। विषय ऐसा समझाकर लिखा गया है कि इसकी सहायता से एक नौसिखिया भी अच्छे चित्र बनाने में सफल हो सकता है। आवश्यकतानुसार स्थान-स्थान पर कई रंगीन, सादे चित्र भी दे दिये गये हैं।

मूल्य बारह आने

इसके सम्बन्ध में—

शिल्पगुरु श्री अवनीन्द्रनाथ टागौर लिखते हैं :—

"इसे पढ़कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। पुस्तक सरल भाषा में लिखी गई है। हमें विश्वास है कि हिन्दी-जगत् में इस पुस्तक का बहुत मान होगा। शिल्प-कला के विद्यार्थियों के आरम्भकाल के लिए बड़े काम की चीज़ है।"

अनेक बंगला और अँगरेजी पुस्तकों के प्रणेता श्री महेन्द्रनाथ दत्त लिखते हैं :—"इस पुस्तक को पढ़कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। रंग में रंग मिलाना, हाथीदाँत पर चित्र खींचना आदि कामों का ढंग बहुत उत्तम रीति से लिखा गया है। यह पुस्तक शिल्प-कला के विद्यार्थियों का बड़ा उपकार करेगी। मेरी समझ से हिन्दी में यह अपने विषय की पहली पुस्तक है।"

बंगला के प्रसिद्ध आर्टिस्ट श्री अर्द्धेन्दुकुमार गंगोपाध्याय चिट्ठी लिखते हैं :—"भारतीय चित्रकला मिली। नं० ९ की ड्राइंग डिजाइन बहुत अच्छी है। पेड़ों की रंगीन डिजाइन भी बहुत सुन्दर है।"

शरद्-ग्रंथावली

श्रीयुत शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यासों का संग्रह

छुटकारा	१)	लेन-देन	२॥)
परिणीता	१)	पंडितजी	१॥)
बड़ी दीदो	१)	स्वामी	॥)
गृहदाह मूल्य	२॥)		
देहाती समाज	२)		
अरक्षणीया "	१)		
नव-विधान "	१)		
मँझली दीदी	॥।)		
ब्राह्मण की बेटी	१)		

मैनेजर
(बुकडिपो),
इंडियन
प्रेस, लि०,
प्रयाग

श्रीकान्त
(दो भागों में)
अनुवादक
श्री रूपनारायण
पाण्डेय

'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसका कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। कुछ लेखकों का विश्वास है कि शरद् बाबू ने श्रीकान्त के रूप में अपना आत्म-चरित ही लिखा है। इस उपन्यास में शरद् बाबू की अमर लेखनी ने पात्रों का स्वाभाविक चरित्र अंकित किया है। भाषा-शैली इतनी रोचक है कि पुस्तक एक बार उठा लेने पर बिना समाप्त किये छोड़ने को जी नहीं चाहता। इसका अनुवाद दो भागों में प्रकाशित हुआ है।

प्रत्येक भाग का मूल्य १॥)

बालक-बालिकाओं के उपयोग की

तीन नई पुस्तकें

कालिदास की कहानी

सम्पादक, पं० ठाकुरदत्त मिश्र

इस पुस्तक में महाकवि कालिदास की जीवन-कथा बड़ी सरल भाषा और आकर्षक शैली में लिखी गई है, जिसे पढ़ने से कालिदास के सम्बन्ध की सभी आवश्यक बातें ज्ञात हो जाती हैं और हृदय में उनके ग्रन्थों के पढ़ने का चाव उत्पन्न होता है। मूल्य ।)

बालद्विवेदी

लेखक, पण्डित देवीदत्त शुक्ल,
'सरस्वती'-सम्पादक

इस पुस्तक में हिन्दी-साहित्य के युग-प्रवर्तक स्वर्गीय आचार्य्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी का संक्षिप्त परिचय लिखा गया है। शुक्ल जी आचार्य्य द्विवेदी जी को बहुत क़रीब से जानते हैं और उन्होंने उनके सम्बन्ध की सभी ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डाला है। मूल्य ।)

卐 पौराणिक कहानियाँ 卐

इस पुस्तक में भागवत्, विष्णुपुराण तथा ब्रह्मपुराण आदि से छाँट कर आठ कहानियाँ लिखी गई हैं और ऐसी शैली में लिखी गई हैं कि बच्चे इन्हें चाव से पढ़ सकें। कहानियों के नाम इस प्रकार हैं:—समुद्र-मन्थन, राजा पृथु, दैत्यराज बलि और वामन, राजा इल, महात्मा जड़भरत, पारिजात-हरण, उषा और अनिरुद्ध, नक़ली कृष्ण। मूल्य ।)

मिलने का पता—
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड,
इलाहाबाद

लड़को ! तुम स्वस्थ और ताक़तवर रहना चाहते हो तो
आज ही से पियो—

यह पीने में बड़ा स्वादिष्ट है।

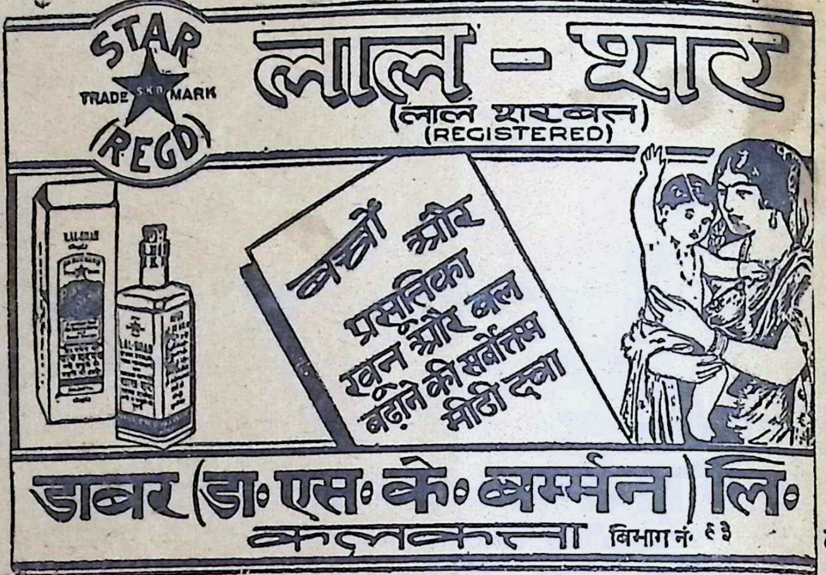
STAR
TRADE MARK
REGD
लाल-शार
(लाल शरबत)
(REGISTERED)
बच्चों और प्रसूतिका खून और बल बढ़ाने की सर्वोत्तम मीठी दवा
डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰
कलकत्ता विभाग नं॰ ६३

इसके पीने से भोजन शीघ्र हज़म होकर अंग लगता है।

यह ४ औंस, २ औंस और ½ औंस की शीशियों में बिकता है।
अपने स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए !

बाल-शब्द-सागर

स॰ रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी॰ ए॰

यह कोष एक प्रकार से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ एवं सुबृहत् कोष 'शब्द-सागर' का बालकोपयोगी संस्करण है। मूल शब्द-सागर की भाँति इसमें किसी शब्द के पर्य्यायवाची शब्दों, मुहाविरों तथा उदाहरणों की अधिकता तो नहीं है; किन्तु आवश्यक शब्दों का सन्निवेश ज्यों का त्यों रहने दिया गया है। यह कोष केवल विद्यार्थियों के ही नहीं; बल्कि अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण सभी के काम का है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

द्विवेदी जी-लिखित अनुपम पुस्तक

विदेशी विद्वान्

मूल्य १)

इस पुस्तक में विदेशी विद्वानों के चरित्र हैं। उक्त महापुरुषों की जीवनियों से उनकी जाति सेवा, व्यवसाय-निपुणता, नूतन धर्मस्थापना आदि का खासा परिचय मिलता है और अनेक उपयोगी बातें मालूम होती हैं। पुस्तक प्रत्येक पुरुष के पढ़ने लायक है।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस,
लिमिटड, प्रयाग

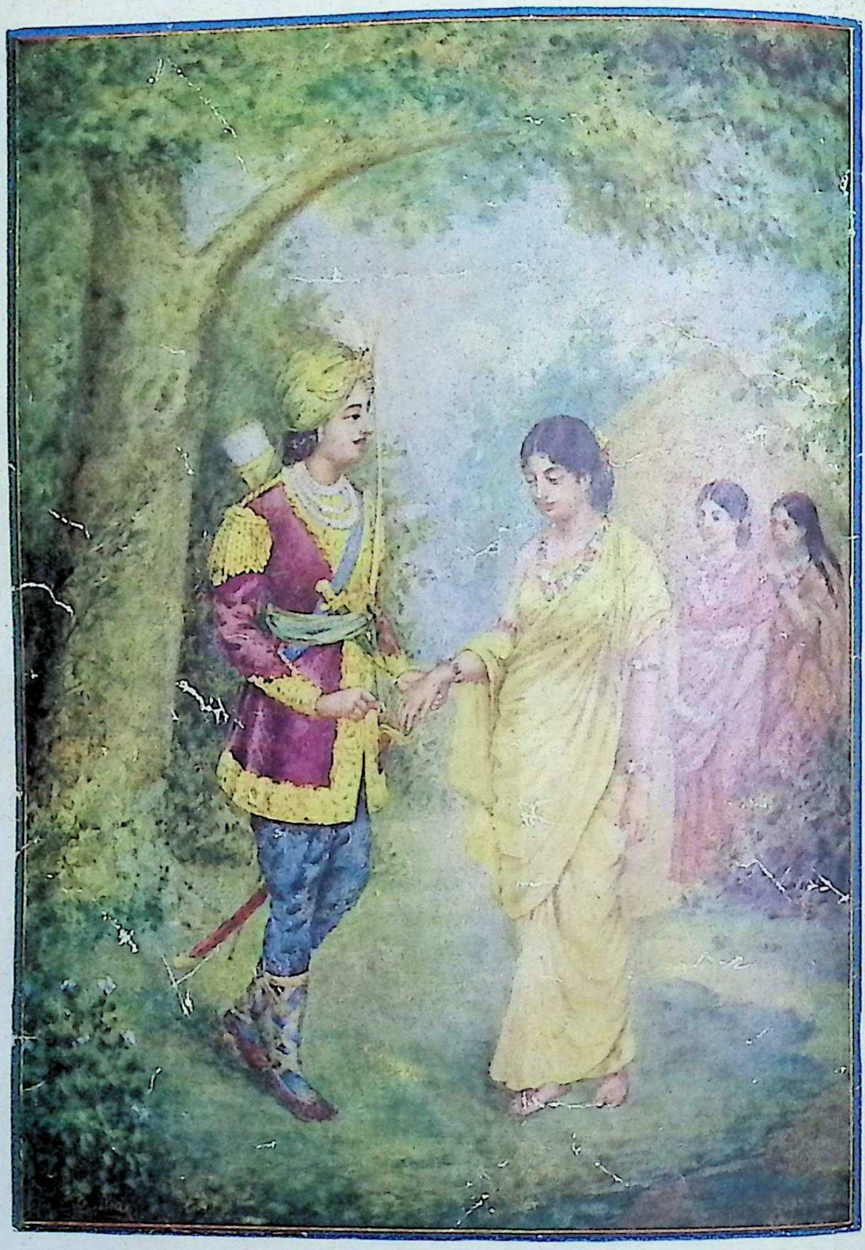

दुश्यन्त और शकुन्तला

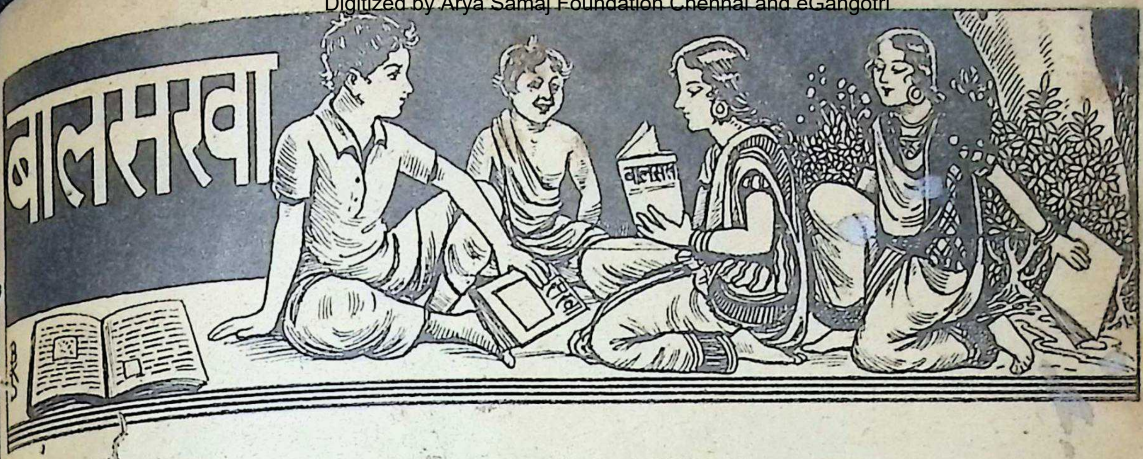

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

सहायक सं०—देवदत्त द्विवेदी, बी० ए०

र्ष २५] मार्च १९४१—फाल्गुन १९९७ [संख्या ३

वरदान दो

लेखक, श्रीयुत शिवनन्दन कपूर

भीम-सा बल दो प्रभो, औ'
कर्ण-सी दो दान-क्षमता।
भक्त-उर बजरङ्ग-सा दो,
भरत-सी दो भ्रातृ-ममता॥

बुद्ध-सी समभावना दो,
गांधी-सी देश-ममता।
ज्ञान-गरिमा जनक-सी दो,
और शिव-सी न्याय-क्षमता॥

टेक बाबा भीष्म-सी दो,
औ' विदुर-सी नीति-गुरुता।
दो जवाहर-सी लगन प्रभु,
मालवीय-सी वाक्य-पटुता॥

सत्य की तलवार दे दो,
औ' अहिंसा त्राण दो।
देश पर हँस-हँस कटा दें,—
शीश यह वरदान दो॥

हवाई जहाज़ों की लड़ाई

लेखक,
श्रीयुत चन्द्रवलीसिंह,
बी० ए०

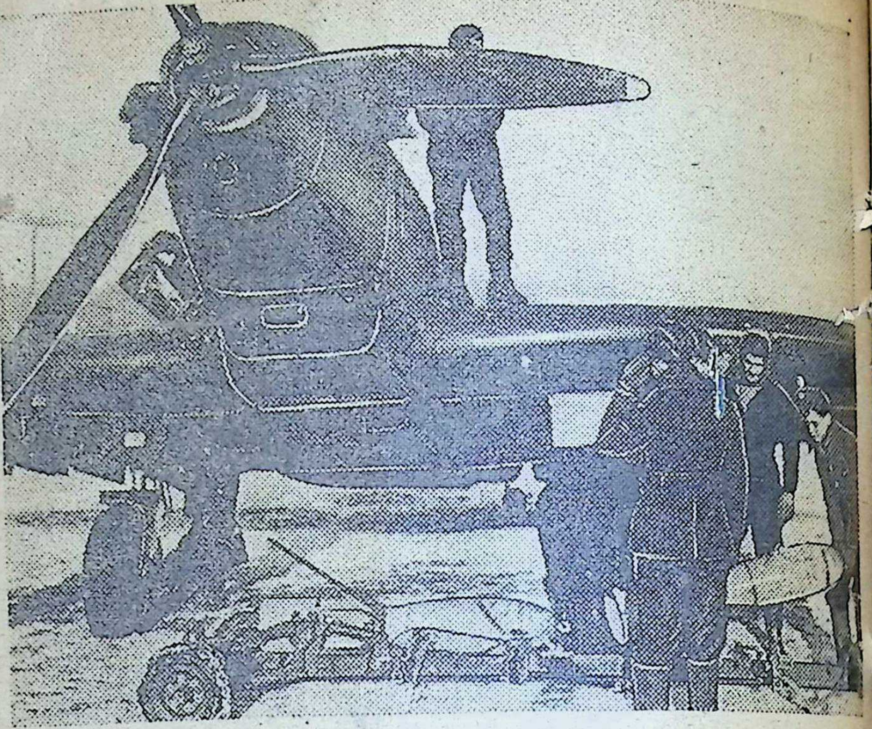

बम-वर्षक वायुयान

दिनेश—अरे भाई रमेश, कुछ लड़ाई की ख़बर तो बताओ। आज-कल क्या हो रहा है?

रमेश—क्या कहना है! विलायत पर तो हवाई जहाज़ों का बड़ा भारी हमला हुआ है। कितने घर और अस्पताल साफ़ हो गये।

रामू—बाबू जी, हवाई जहाज़ कैसे बम गिराते हैं? हमने तो बुलबुल और बटेर की लड़ाई देखी थी। तसवीरों में हाथियों की भी लड़ाई देखी थी। लेकिन बाबू यह तो बताइए कि हवाई जहाज़ कैसे लड़ते हैं?

रमेश—सुनो रामू! हवाई जहाज़ों की लड़ाई इस ज़माने की एक नई लड़ाई है। इससे बम क्या, बड़े-बड़े बम गिराये जा सकते हैं। यहाँ तक कि हाल में एक हवाई जहाज़ ने क़रीब ५०० पौंड का बम गिराया था!

"अरे! ५०० पौंड तो बहुत वज़न होता है। बाबू, ५०० पौंड के तो क़रीब पाँच या छः मन होंगे?"

"हाँ रामू! अच्छा अब सुनो, मैं तुम्हें हवाई जहाज़ों की लड़ाई का हाल बताता हूँ। लेकिन इसके पहले कि तुम यह समझो, तुम्हें यह समझना ज़रूरी है कि हवाई जहाज़ कितनी तरह के होते हैं?"

"क्या हवाई जहाज़ कई तरह के होते हैं?"

"हाँ, एक तो बड़े हवाई जहाज़, जो सिर्फ़ डाक ले जाने का काम करते हैं और दूसरे वे जो सामान ले जाते हैं, और तीसरे वे जो कि लड़ाई करते हैं। लड़ाई करनेवाले जहाज़ भी कई तरह के होते हैं। यह देखो, इन्हें बम फेकनेवाले हवाई जहाज़ या बाम्बर कहते हैं। इन छोटे

जहाज़ों को फ़ाइटर यानी लड़नेवाले जहाज़ कहते हैं।"

रामू—लड़नेवाले जहाज़ किसे कहते हैं और बाम्बर किसे कहते हैं?

"बाम्बर या बम बरसानेवाले जहाज़ काफ़ी बड़े होते हैं और ये सिर्फ़ बम ले जाकर शत्रु के ऊपर गिराकर लौट आते हैं। इनमें एक पाइलेट और बम मारनेवाले होते हैं?"

"बाबू, पाइलेट किसे कहते हैं?"

"जो आदमी जहाज़ को चलाते हैं उन्हें पाइलेट कहते हैं।"

"ठीक, अब मैं समझ रहा हूँ। अब बताइए फ़ाइटर जहाज़ किसे कहते हैं?"

"रामू, फ़ाइटर हवाई जहाज़ों में सिर्फ़ एक पाइलेट होता है। यह जहाज़ बहुत छोटा होता है और तेज़ी से भाग सकता है। ये जहाज़ दुश्मन के आक्रमण करनेवाले हवाई जहाज़ों से जाकर लड़ जाते हैं। ख़ाली मार-पीट और शोर-गुल होता है। कुछ फ़ाइटर और कुछ शत्रु के वायुयान गिर जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं। फ़ाइटर आपस में भी लड़ते हैं; लेकिन उनका ख़ास काम यह है कि बम बरसानेवाले जहाज़ों से जाकर लड़ें।"

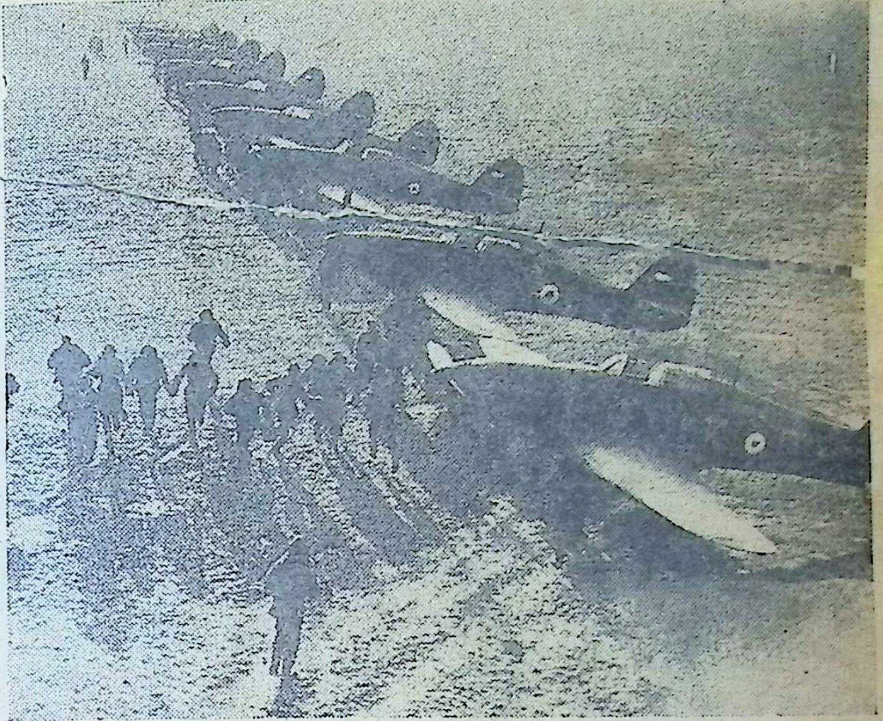
फ़ाइटर या लड़ाके वायुयान

रामू—क्या मज़ा आता होगा?

"हाँ, कभी-कभी तो पूरी आँखमिचौनी का खेल आसमान में हो जाता है। कभी एक दुश्मन के जहाज़ मारकर एकदम लापता हो जाते हैं और कभी दूसरे दुश्मन के जहाज़ मारकर लापता हो जाते हैं। जिन शहरों में यह युद्ध होता है, लोग दूर से इस खेल का मज़ा भी ख़ूब लेते हैं।"

रामू—बाबू, वे लोग डरते होंगे या तमाशा देखते होंगे?

रमेश—देखते-देखते वे इसके आदी हो जाते हैं। उनके लिए यह लड़ाई ऐसे ही है रामू, जैसे तुम्हारे लिए बुलबुल की लड़ाई।

हँसते हुए रामू ने कहा—हवाई लड़ाई में और क्या होता है?

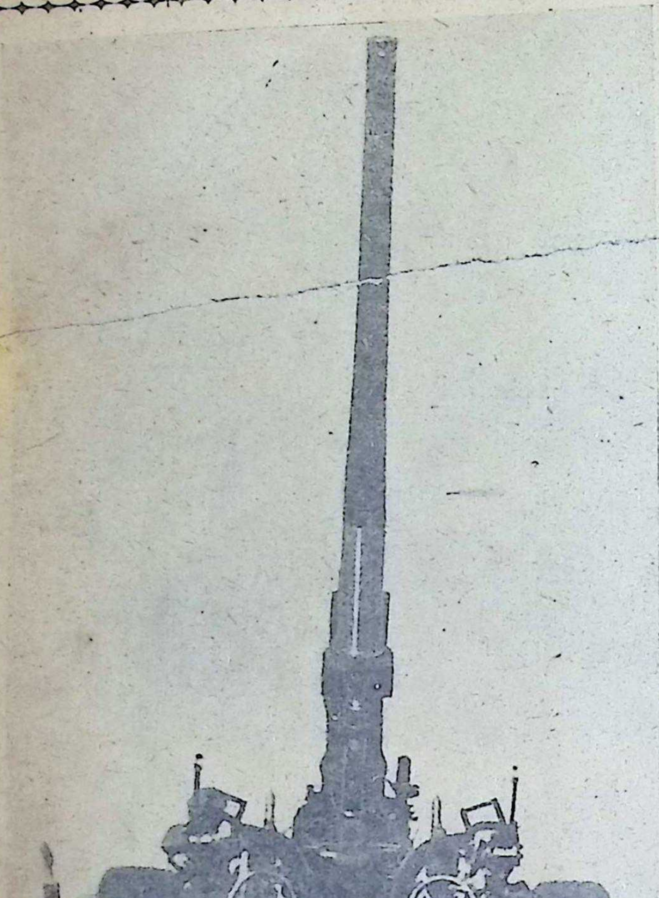

हवाई जहाज़ गिरानेवाली तोप

रमेश—ये जहाज़ कभी-कभी तो पहले ऐसा बम गिराते हैं जिससे चारों तरफ़ रंगीन रोशनी फैल जाती है और तब वे हमला करते हैं और काफ़ी नुक़सान करते हैं।

"क्या इन हमलों से बचने का कोई उपाय नहीं है?"

"है क्यों नहीं। पहले तो बहुत-से तहख़ाने बने हुए हैं। जब हवाई जहाज़ हमला करने के लिए आते हैं उसी वक़्त एक एलार्म बेल बजाई जाती है और सब लोग काम-धाम छोड़कर इन तहख़ानों में घुस जाते हैं।"

"ये तहख़ाने कैसे होते हैं?"

"ये क़रीब ४० या ६० फ़ीट गहरे होते हैं और घर के समान बने होते हैं। लोग बड़े आराम से इनमें बैठकर काम करते हैं।"

रामू—क्या इसके अलावा भी कोई उपाय है?

रमेश बाबू ने कहा—हाँ, एक तरह की तोप बनाई गई है जो हवाई जहाज़ों को मारकर गिरा देती है। इसे एण्टी एयर क्रैफ्ट गन कहते हैं। इसकी नली बड़ी-सी होती है और उड़ते हुए हवाई जहाज़ का निशाना बनाकर यह गोला फेंकती है और अगर निशाना सच्चा हुआ तो हवाई जहाज़ मय पाइलेट के बटेर की तरह ज़मीन पर गिर पड़ता है। उसके पाइलेट या तो मर जाते हैं या ज़िन्दा रहने पर पकड़ लिये जाते हैं। इन तोपों से धुआँ भी होता है जिससे शत्रु के जहाज़ों को हमला करने में कठिनाई होती है।

"ठीक बाबू, अब मैं समझ गया कि हवाई जहाज़ों की लड़ाई कैसे होती है। लेकिन क्या ये जहाज़ दिन में हमला करते हैं या रात में?"

तहख़ाने के भीतर निर्भय काम कर रहे हैं

बम गिरने के बाद का दृश्य

“पहले तो दिन में मला शुरू हुआ; किन उसमें काफ़ी फलता न देखकर मनों ने रात को ी हमला करना शुरू या और इस हमले बहुत नुक़सान आ। इसके अलावा ला करने के तरीक़े ी बदलते जा रहे । कभी तो बड़े र बम-वर्षा करते । कभी वे १० या २० की संख्या में र कभी १०० या २०० अथवा ५०० की संख्या में टिड्डी दलों की तरह हमला करते हैं।”

“बाबू, तब तो बड़ी भयानक लड़ाई होती होगी?”

“हाँ राम! यह एक भयानक और नाशकारी युद्ध होता है!”

“क्या दूर से ये जहाज़ आते समय नहीं दिखाई देते हैं?”

“हाँ, दिखाई देते हैं। वाचरर्स यानी ताक में रहनेवाले सिपाही इनको देखकर ख़बर करते

हैं तभी तो बेल बजाई जाती है और हवाई जहाज़ों को गिरानेवाली तोपें छोड़ी जाती हैं। लेकिन जर्मनी ने एक नया जहाज़ बनाया है जो ऐसे पदार्थों का बना है कि २४ हज़ार फ़ीट ऊपर जाने पर वह बिलकुल नहीं दिखाई देता है। अब इन्हीं हवाई जहाज़ों से आक्रमण की सम्भावना की जाती है।"

"तो ये जहाज़ बहुत तेज़ भी चलते होंगे?"

"इनकी चाल बहुत है। क़रीब २४५ मील या लगभग तीन सौ मील प्रति-घंटा है।"

"बाबू, इतने तेज़ और न दिखाई देनेवाले जहाज़ों से कैसे लड़ाई होगी?"

"रामू, अब भविष्य में २४ सौ या २५ सौ फ़ीट ऊपर आसमान में ही घमासान युद्ध होगा। हवाई जहाज़ का जवाब हवाई जहाज़ ही देंगे।"

GERMAN
AIRCRAFT

शत्रु के जहाज़ों का अध्ययन

"बाबू, अब मैं बिलकुल समझ गया हूँ।"

"अच्छा, तो खाना खाओ और स्कूल रवाना हो जाओ।"

"बाबू, अब यह रामू मदरसे जायेगा और अपने मित्रों को सब हाल सुनायेगा।"

ह ह ह ह ह ....!

कुत्ते का चोर

मूललेखक, श्रीयुत विजयेन्द्रनाथ वंद्योपाध्याय; अनुवादक, नन्दलाल शारदा, दार्जिलिंग

दिल्ली शहर के सेठ, लाला बनवारीलाल पुत्री का विवाह होनेवाला था। सुबह से ही धूमधाम हो रही थी; क्योंकि अमृतसर से ात आनेवाली थी। क्या बच्चे, क्या बूढ़े सभी ात देखने के लिए उत्सुक हो रहे थे।

डाक्टर सेन का एक पुत्र भी, जिसकी ु ८ वर्ष की थी, अपनी दसवर्षीया बड़ी न के साथ जल्दी-जल्दी, बारात देखने के ए, बड़े रास्ता की ओर जा रहा था। उसका था जितू तथा बहन का नाम था गीता। लोगों के साथ था उनका प्रिय कुत्ता ा' जो मुस्कराते हुए चल रहा था।

उसी रास्ते पर एक लम्बी-लम्बी डाढ़ी- ा मनुष्य उनकी ओर घूर-घूरकर देख रहा । ज्यों ही जितू और गीता उस आदमी के पास गुज़रे त्यों ही वह आदमी बोल उठा—"यह ा तो बड़ा सुन्दर मालूम देता है।" जितू र गीता यह सुनकर वहीं ठहर गये। अगर ं उनके कुत्ते की प्रशंसा करे तो वे गर्व से उठते थे। अतः जितू ने गर्व के साथ उत्तर ा—"अवश्य ही! इसका दाम बहुत है। आप इसका नाम जानते हैं? इसका नाम -'शेरा'!" वह मनुष्य बोला—"ठीक! कुत्ता है वैसा ही नाम भी है।"

अच्छा बतलाओ तो क्या तुम यह कुत्ता दोगे? कितना दाम लोगे? जितू ा—"बड़े मज़े के आदमी हैं आप तो, जानो हम सचमुच ही 'शेरा' को बेचने जा रहे हैं! इसके बहुत-बहुत दाम हैं!" और इतना कहकर गीता के विशेष आग्रह करने पर वे चले गये। वह आदमी भी इनकी ओर ताककर मुस्कराते हुए दूसरी ओर चला गया।

इन लोगों ने लाला बनवारीलाल के बग़ीचे के पास आकर देखा कि दर्शकों की भीड़ बहुत ज़्यादा है। अतः गीता को बड़ा भय हुआ कि कहीं उन्हें जगह भी मिलेगी या नहीं। परन्तु इसी समय एक बालचर ने आकर उन्हें कहा कि इधर आइए, यहाँ छोटे बालक-बालिकाओं के लिए विशेष प्रबन्ध है। गीता ने उसे नम्रभाव से धन्यवाद दिया। जितू ने कहा—"बहन, 'शेरा' को यहाँ रेलिंग से बाँध देता हूँ; क्योंकि ऐसा करने से मुझे बार-बार उसकी जंज़ीर पकडकर चलना नहीं पड़ेगा" और इतना कहकर उसने 'शेरा' को वहीं बाँध दिया।

उसी समय रास्ते के ऊपर एक मनुष्य एक स्टूल के ऊपर कैमरा लिये हुए खड़ा था। अतः तमाम दर्शकों को बतलाने के लिए भीड़ में से एक आदमी बोलने लगा—"यह बाइस्कोप का आदमी, बारात के जुलूस की तसवीर उतारेगा!"

इसके बाद न जाने कितने हाथी, कितने ऊँट-घोड़े और कितनी-कितनी मोटरें—एक के बाद एक जाने लगीं; जिनकी कोई संख्या ही न थी। जितू और गीता भी अवाक् होकर ये सब दृश्य

देखने लगे और जब यह जुलूस समाप्त हुआ तब एकाएक जितू के मुख से निकल पड़ा—“क्यों बहन, यह सब कितना सुन्दर दृश्य था।” गीता ने भी प्रसन्न होकर कहा—“हाँ भाई! सचमुच ही दृश्य बड़ा सुन्दर था, ज़रा भीड़ को कम होने दो तब हम लोग घर चलेंगे।”

थोड़ी देर पर ज्यों ही जितू ने रेलिंग पर दृष्टिपात किया त्यों ही उसका मुख एकदम सूख गया; क्योंकि वहाँ पर उसका कुत्ता 'शेरा' नहीं था। गीता ने रोष में आकर कहा—“तू बड़ा पाजी है, ज़रूर तूने चेन अच्छी तरह से नहीं बाँधी थी।” जितू ने दृढ़ होकर कहा—“ना बहन, सच बोलता हूँ—मैंने चेन बड़ी अच्छी तरह से बाँधी थी।” गीता फिर बोल उठी—“जैसे भी हो, उसे खोज बाहर करो, नहीं तो पीठ की खाल बाक़ी न रहेगी। बाबा को जानते हो न?”

जितू पार्क के दूसरी ओर जाकर उसके भीतर घुसा और भीड़ में लोगों से दीनता के साथ पूछने लगा—“मेरा कुत्ता खो गया है। क्या आपने देखा है?” परन्तु अन्त में पूछते-पूछते जितू हाँफ गया और हारकर वापस गीता के पास आकर रोते-रोते बोला—“कहीं भी उसका पता न लगा, अब क्या होगा बहन?”

ये लोग बड़े दुखित हुए। बारात देखकर जो आनन्द मिला था, वह सब उड़ गया। कोई भी उपाय न देखकर आखिर उन्हें घर लौटना पड़ा। उनके माता-पिता भी बड़े दुखित हुए; परन्तु फिर भी उन्होंने इन बालकों को मारा-पीटा नहीं। इसी रात को जितू के बाबा ने पुलिस में ख़बर दे दी।

कुछ दिन पश्चात् जितू के साथ फिर उसी लम्बी डाढ़ीवाले आदमी की भेंट हुई जिसने जुलूस देखने जाते समय 'शेरा' का दाम पूछा था। वह आदमी एक छोटे-से गंदे घर से बाहर निकल रहा था। जितू उसके पास दौड़ा गया और नम्रता से बोला—“आप तो हमारे 'शेरा' को पहचानते हैं न, वह बेचारा खो गया है!” इस पर वह आदमी बोला—“हैं! क्या सच कहते हो? ओफ ऐसा सुन्दर कुत्ता खो गया! मैं उसको ढूँढ़ने की कोशिश करूँगा। कहीं देखने पर तुम्हें कह दूँगा। तुम ज़रा अपना ठिकाना तो बतलाते जाओ।”

जितू ने उसे धन्यवाद दिया और उसे अपने घर का ठिकाना भी बतला दिया।

× × ×

वह दिन रविवार का था। दिन में ३ बजे से छोटे बालक-बालिकाओं के लिए सिनेमा होनेवाला था। बालक-बालिकाओं के छोटे-छोटे दल आपस में हाथ पकड़े हुए, हँसते हुए, सिनेमा-हाउस की ओर जाने लगे। गीता और जितू भी उस दिन सिनेमा देखने गये।

कई एक तसवीर देखने के पश्चात् लड़के-लड़कियों ने ताली पीटनी शुरू की। उस छोटी मंडली को क्या आनन्द मिल रहा था! इसके बाद अब वे उस दिनवाले विवाह को बारात-जुलूस का सिनेमा देखेंगे।

सिनेमा देखते-देखते जितू बोल उठा—

बहन ! यह रहा मैं—अहा ! 'शेरा' बेचारा कैसे खड़ा हुआ है। (चौंककर) यह देखो, वही लम्बी दाढ़ीवाला आदमी चेन खोल रहा है। देखो-देखो, 'शेरा' को खोलकर वह आदमी लिये जा रहा है, वह भाग रहा है। पकड़ो-पकड़ो....सिनेमा को ठहराओ।"

सब बालक-बालिकायें अवाक् होकर जितू की ओर ताकने लगे—"इसको क्या हुआ ?" परन्तु सिनेमा नहीं रुका। तत्पश्चात् परदे के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों-द्वारा बतलाया जाने लगा कि अब आगे कौन-सा खेल होनेवाला है।

जितू बोला—"बहन, मैं उस आदमी को पहचानता हूँ और उसका घर भी जानता हूँ। अब हम लोग सिनेमा नहीं देखेंगे—बाहर चलो।"

ये लोग सिनेमा-घर से बाहर आगये। जितू कहने लगा—"बहन, तुम बाबा को ख़बर दो, मैं ज़रा उस आदमी के घर जाता हूँ। गीता घर को चली गई और जितू दूसरी ओर मुड़ा। तीन-चार मिनट में ही वह कुत्ते के चोर के घर में पहुँच गया। उस घर के दरवाज़े तक पहुँचते ही उसे एक प्रकार की आवाज़ सुनाई दी, मानो 'शेरा' की ही आवाज़ हो। वह आवाज़ घर के भीतर से आ रही थी।

ख़ूब आहिस्ते-आहिस्ते जितू कूदकर भीतर गया और तत्पश्चात् पैरों से बिना शब्द किये जँगले तक पहुँचा। उसको देखते ही एक कुत्ता 'घेऊ-घेऊ' कहकर चिल्लाने लगा। यह शब्द सुनकर जितू समझ गया कि यही 'शेरा' है और उसका रहा-सहा सन्देह भी जाता रहा। 'शेरा' भी उस समय ख़ूब ज़ोर से 'घेऊ-घेऊ-घन-घन' करने लगा। इसी समय जितू ने देखा कि वही लम्बी डाढ़ीवाला मनुष्य आ रहा है। पकड़ने पर ख़ैरियत न होगी, इसलिए जितू जल्दी से वहीं छिप गया।

वह आदमी आकर 'शेरा' को ख़ूब ज़ोर से पीटने लगा। 'शेरा' कुछ देर तक तो पीड़ा से 'केंऊँ-केंऊँ' करने लगा; परन्तु बाद में पीड़ित होकर चुप हो गया। इस बार जितू को पता लगा कि वह आदमी चला गया।

अब जितू धीरे-धीरे पाँव रखते हुए उसी ओर चलने लगा और सावधानी के साथ दरवाज़ा खोला। भीतर 'शेरा' बँधा हुआ खड़ा था। जितू ने उसे आदेश दिया—"चुप, आवाज़ मत कर।"

शेरा मानो सब समझ गया। वह चुप होकर खड़ा रहा और जलपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर ताकने लगा। जितू ने धीरे-धीरे चेन खोली। उसी घर में एक बाक्स पड़ा था। जितू उस पर चढ़ गया और दीवाल को लाँघकर गली में कूद पड़ा। उसके पीछे-पीछे शेरा भी उछलकर गली में कूद पड़ा। इसके बाद दोनों ही बड़े रास्ते की ओर भाग उठे।

सड़क के दो-एक घर पार करते ही जितू ने देखा कि वही आदमी उन लोगों के पीछे ज़ोर से दौड़ा आ रहा है। गली में कोई आदमी न था। जितू का शरीर काँपने लगा। भय से वह अधमरा-सा हो गया था, परन्तु शेरा को इतने दिन के बाद जितू के साथ दौड़ने का सौभाग्य

पाकर बड़ा आनन्द हो रहा था। जितू प्राणों को लेकर दौड़ रहा था और शेरा आनन्द में मग्न होकर। और उनके पीछे-पीछे नाक-भौं सिकोड़कर तथा गर्जन करते हुए भागा जा रहा था वह लम्बी-लम्बी डाढ़ीवाला मनुष्य! ऐसी दौड़ किसी ने कभी न देखी थी।

इतने में ही बड़ा रास्ता दिखलाई पड़ा। जितू के प्राण में प्राण आया। उसकी दौड़ने की शक्ति बढ़ गई। भागते-भागते वह एक बूढ़े के घर में घुस गया। बूढ़ा बोला—"ऐ लड़के! रास्ता देखकर चलना था।" "देखिए न! वह मुझे पकड़ने आ रहा है।" इतना कहकर जितू ने गली की ओर हाथ दिखाया। परन्तु वह चोर तो एकदम ग़ायब! पथ पर उसका कोई चिह्न भी नहीं था।

कुछ देर बाद जितू के पिता भी आ पहुँचे। उन्होंने सब बातें सुनीं और तत्पश्चात् चोर के घर की ओर गये; परन्तु चोर का वहाँ कोई पता न था।

जितू के कुत्ते की चोरी तथा उसके वापिस पा जाने की खबर तमाम शहर में फैल गई।

सिनेमा में ख़ूब भीड़ हुई। लोगों के दल के दल "कुत्ते की चोरी" देखने गये। सिनेमावालों को भी ख़ूब लाभ हुआ। मैनेजर ने ख़ुश होकर जितू को एक छोटी-सी साइकिल (बाइसिकिल) उपहार में दी। इसके अलावा जितू के लिए एक और बड़े मज़े की बात हुई। अब वह प्रत्येक बाइस्कोप देखने के लिए पैसे पाने लगा।

दादा से—

लेखक, श्री 'निरद्वर'

दादा! अब मत मुझको मारो!!

नहीं आज से झूठ कहूँगा,
ध्यान लगाकर ख़ूब पढ़ूँगा।
कल्लू, मोहन बड़े बुरे हैं,
उनका साथ न कभी करूँगा।
सच्ची-सच्ची मैं कहता हूँ,
दादा! झूठ न इसे विचारो।

सूर्य्योदय से पहले उठकर,
अपना हाथ और मुँह धोकर।
पढ़ने रोज़ चला जाऊँगा,
जो अम्मा देंगी खा-पीकर।

बड़ी चोट लगती है दादा!
कुछ तो दया हृदय में धारो!!

सदा बड़ों का कहा करूँगा,
बुरे काम से बहुत डरूँगा।
जो-जो आप कह रहे दादा!
उसी राह से चला करूँगा।

अपना सारा ग़ुस्सा दादा!
मुझ पर ही मत आज उतारो,
दादा! अब मत मुझको मारो।

नाखून और बाल

लेखक, हरीस्वरूप, बी० ए०

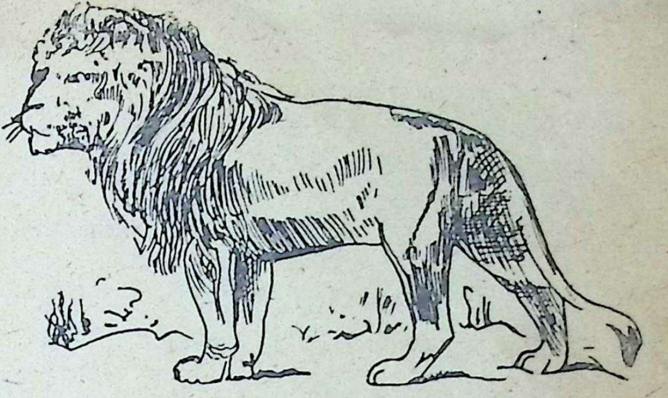

शेर

यह तो तुम्हें मालूम ही है कि हमारे बदन की खाल के कुछ अंश ऐसे भी होते हैं जो कि अपने में से कुछ न कुछ बाहर निकाला ही करते हैं। हाँ, जानवरों के बराबर तो नहीं ही निकालते हैं। फिर भी दो प्रकार की उभड़न तो सब ही के होती है—नाखून और बाल। बिल्ली, भालू, चीता वगैरह सभी जानवरों के पंजों के हथियार हैं। घोड़े के नाखून उसके खुर बन जाते हैं उसका खुर असल में उसकी बीचवाली उँगली का नाखून ही होता है उसकी और सब चार उँगलियाँ पहले से ही गिर चुकी हैं।

बहुत-से जानवरों के लिए तो नाखून बड़े ही लाभदायक होते हैं। कोई तो उससे नोचता है और अपने शिकार को फाड़ता है और कोई उन्हीं से सहारा लेकर पेड़ पर चढ़ता है। घोड़ा, गायें तो उन्हीं से चलते हैं। हम मनुष्यों ने उन्हें इस्तेमाल करना छोड़ दिया है। ये हमारे किसी भी काम नहीं आते। इसी लिए हम लोगों के नाखून इतने कमज़ोर हैं और हम उन्हें काटकर फेंक भी देते हैं। पर फिर वे बढ़ आते हैं, वे तो सदा ही नीचे से निकला करते हैं। अगर हम चाहें तो पूरे का पूरा निकाल दे सकते हैं। तुमने देखा होगा कि कभी, खेलते में या और किसी तरह, नाखून पर चोट लग जाती है, तो वह नीला पड़ जाता है। जिसके माने यह होते हैं कि किसी ख़ून की कोठरी में चोट लग गई है और नाखून के नीचे ख़ून बहा है। थोड़े दिन बाद यह नाखून अपने आप ही गिर पड़ता है। और अगर नाखून बनानेवाली कोठरियों को कोई हानि नहीं पहुँचती है तो नया नाखून पहले की जगह पर निकल आता है मगर जो उस नाखून बननेवाले कोष्ठ के ही चोट लग जाती है तो फिर दूसरा नाखून निकलना असम्भव हो जाता है। बच्चों के नाखून बड़ों से जल्दी बढ़ते हैं पूरे नाखून के नये सिरे से बदलने में जाड़ों में १३२ और गर्मी में ११६ दिन लगते हैं बायें हाथ के नाखून बढ़ने में दाहिने हाथ से १० दिन ज़्यादा लगते हैं।

तुमने शायद देखा हो कि कभी-कभी नाखूनों पर सफ़ेद निशान पड़ जाते हैं, जिन्हें तुम खेल में कहते हो कि बगुला कौड़ियाँ दे गया है। बीमारी में ये निशान सब नाखूनों पर बन सकते हैं और लगभग एक ही उँचाई पर। ये निशान ख़ून का बहाव ठीक न होने से बन

बिल्ली अपने बालों को फुलाये हुए है। अपने नाखून उसने छिपा रक्खे हैं

जाते हैं। बीमारी हो जाने से नाखून बनानेवाले कोष्ठों को जब ठीक से ख़ून नहीं मिलता है, तो उनके काम में बाधा पड़ती है। जिससे यह ख़राबी नाखून पर आ जाती है। फिर जैसे-जैसे नाखून बढ़ते जाते हैं ये निशान भी छोर पर आकर बाहर निकल जाते हैं। अगर तुम किसी के नाखून पर ऐसे निशान देख लो, तो समझ लो कि अभी हाल ही में उसकी तबीअत ख़राब हो चुकी होगी। इस तरकीब से तुम ज्योतिषी बन सकते हो!

खाल पर के कोष्ठों की दूसरी उभड़न बाल है। ये बाल क़रीब-क़रीब उसी चीज़ के बने होते हैं जिसकी हमारी ऊपरी खाल है। नाखून भी एक वैसी ही चीज़ के बने होते हैं। बाल बहुत ही काम की चीज़ है, बिल्ली, भालू, भेड़, वग़ैरह को अपने लम्बे-लम्बे बालों की ही वजह से जाड़ों में कपड़े नहीं पहनने पड़ते। उनके बाल उन्हें गर्मी पहुँचाते रहते हैं। भेड़ और ऊँट के बालों से तो तुम अपने भी गरम कपड़े बनवाते हो। तुमने बहुत-सी लड़कियों को देखा होगा जो लोमड़ी या और किसी बालवाले जानवर की खाल को गले में लपेटे रहती हैं, जिससे उन्हें सर्दी नहीं लगती। बाल के ब्रुश वग़ैरह तो तुम्हारे पास भी होंगे। पर हम लोगों की खाल के बाल तो अब किसी काम नहीं आते। सिर को छोड़कर और सारे शरीर पर तो बाल होते भी बहुत कम हैं। पर यह हमें याद दिलाते रहते हैं कि भूतकाल में हम भी और जानवरों की तरह ही थे। हथेली और तलवों को छोड़कर बाल सारी खाल पर होते हैं। किसी की उँगलियों के आख़िरी जोड़ पर तुमने कभी बाल नहीं देखे होंगे। हमारे भौं और पलकों के बाल ही हमारे काम आते हैं। वे हमारी आँखों के पहरेदार हैं और किसी भी बाहरी चीज़ को उनमें घुसने से रोकते हैं। शायद उनका मतलब आँखों की सुन्दरता बढ़ाना भी हो। नाक के अन्दर के छोटे-छोटे बाल भी यही काम करते हैं। वे धूल या कीड़ों को नाक के अन्दर घुसने से रोकते हैं। पर क्या तुम बतला सकते हो कि आदमियों के मुँह पर डाढ़ी क्यों निकलती है? वह तो सिर्फ़ छोटे बच्चों को डराने के लिए ही होती है।

अगर तुम अपने बदन के सब बालों को देखो तो वे सब एक ही तरफ़ मुड़े हुए न होंगे।

सब इस प्रकार से मुड़े रहते हैं कि अगर हम हाथ-पैर सिकोड़कर बैठें और हमारे ऊपर पानी पड़े तो वह आसानी से बह जाय। इसी लिए बाँह पर के सब बाल कोहनी की तरफ़ को मुड़े रहते हैं, और टाँग के परिया के उल्टी ओर को। क्योंकि हम लोग सदा कपड़े पहने रहते हैं हमें इनके इस्तेमाल की ज़रूरत नहीं पड़ती । पर और जानवरों को ये मुड़े हुए बाल वर्षा में बहुत काम देते हैं।

हर एक बाल का एक छोटा-सा घर होता है और उसी कोष्ठ में से वह निकलता है। ये नन्हें-नन्हें घर खाल में हर जगह पर होते हैं। अगर यह खाल जब मर जाती है, तो ये घर भी नहीं रहते । तुमने देखा होगा कि घाव या फुड़िया के अच्छे हो जाने के बाद कभी-कभी खाल पर एक चिकना-सा दाग़ पड़ जाता है। वहाँ पर असली खाल तो रहती ही नहीं, और इसी से वहाँ पर बाल भी नहीं जमते और जब गर्मी में सारे बदन से पसीना चूता है तो भी ये दाग़ सूखे ही बने रहते हैं। उनमें से पसीना नहीं निकलता। बाल सुई की तरह एक चीज़ नहीं होते बल्कि उनमें प्याज़ की तरह पर्त होते हैं। ये पर्त एक पर एक लपटे रहते हैं, और कुछ [illegible] होते हैं। बालों को मुलायम रखने के लिए हर एक बाल की जड़ में दो तेल-मिलें लगी रहती हैं जो बाल को सदा तेल देती रहती हैं। अगर ऐसा न हो, तो बाल रूखे और कड़े होकर टूट जायँ। हर एक बाल के साथ एक मांस की पेशी भी रहती है, जिसे कड़ा कर लेने से बाल सीधा खड़ा हो सकता है। तुमने कहानी में पढ़ा होगा कि डर के मारे किसी के रोंगटे खड़े हो गये, तो वे इन्हीं मांस-पेशियों के खड़े कर देने से हो सकते हैं। हालाँकि वे अक्सर नहीं होते।

अगर तुम्हारे पास बिल्ली है तो तुमने देखा होगा कि कभी-कभी वह अपने बाल खड़े कर लेती है। वह भी इन्हीं मांसपेशियों से ही करती है। हम लोग तो अब इनको इस्तेमाल करना ही भूल गये हैं। बिल्ली अपने बाल खड़े करके अपनी सफ़ाई आसानी से कर लेती है। जब वह अपने बाल फुला लेती है तो वह बड़ी और डरावनी भी बहुत लगने लगती है और छोटे जानवर उससे डर जाते हैं।

बुड्ढों के बाल ख़रगोश की तरह सफ़ेद इसलिए हो जाते हैं कि उनके बालों के बीच में गैस भर जाती है। यही गैस के बुलबुले जब चमकते हैं, तो बाल सफ़ेद दिखलाई देते हैं। सफ़ेद बालों का कोई रंग ही नहीं होता। सबके सिरों के भी बाल एक तरह के नहीं होते। हर एक जाति के सिर के बाल हर तरह के होते हैं। हम लोगों के सिर के बाल लम्बे, सीधे और रेशम की तरह मुलायम होते हैं, मगर अफ़्रीका में रहनेवाले नीग्रो के बाल छोटे, घुँघराले और ऊन की तरह होते हैं। अगर उन्हें बीच से काटकर लघुदर्शक से देखो तो उनकी बनावट भी और तरह की होगी। मनुष्यों की जाति उनके बाल देखकर पहचानी जा सकती है।

जाने क्यों ?

लेखक, श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

लोहे के पिँजड़े में रहता,
हरा-हरा वह सुग्गा प्यारा ।
अम्मा रोज़ खिलाती उसको,
दूध-भात का भोजन न्यारा ॥

यों यह सुग्गा टें-टें करता,
मुझे सुनाता कभी न गाना ।
लेकिन दूध-भात जब मिलता,
गाने लगता मीठा गाना ॥

'दूध-भात मैं खाऊँ अम्मा,
राम-राम का गाना गाऊँ ।
भूखा रहे न कोई जग में,
सबका ही मैं भला मनाऊँ ॥'

लेकिन जब मैं कहता उससे,
'सबका भला मनानेवाले ।
तुम भी हो क्या सुखी बताओ,
इस पिँजड़े में रहनेवाले ?'

'देखो हरी-भरी वह बग़िया,
कितने सुग्गे उस पर आते ।
उड़ते-फिरते और चहकते,
जब जी चाहे, तब उड़ जाते ॥

'इस पिँजड़े के क़ैदी सुग्गे,
दूध-भात के खानेवाले !
तुम हो सुख में, अथवा वे हैं,
झाड़-पेड़ पर उड़नेवाले ?'

बड़े ध्यान से मेरी बातें,
सुग्गा गुपचुप सुनता रहता ।
लेकिन अपने दिल की बातें,
कभी न मुझसे वह कुछ कहता ॥

सोचा मैंने अपने मन में,
सुग्गे पर क्यों आफ़त आई ?
कुछ दिन देखा इसी तरह जब,
एक बात तब मन में आई—

मैं अपना जो हरा-हरा सा,
खेला करता सुग्गा प्यारा ।
इस पिँजड़े में रख दूँ उसको,
और इसे मैं दूँ छुटकारा ॥

अम्मा की बस आँख चुराकर,
जब मैंने यह सब कर डाला ।
भूखा रख तब मा ने मुझको
तङ्ग न जाने क्यों कर डाला ?

नटखट नन्दू

लेखक, दयाशंकर मिश्र, अध्यापक राजस्थान, बालिका-विद्यालय, वनस्थली

मैं तो हैरान हो गया। जितना ही उसे ीटता उतना ही वह नटखट होता जाता। गवान् जानें दुनिया का नटखटपन उसी में र दिया था। आज दस रुपया का क़लम मेज़ रगड़-रगड़कर तोड़ डाला, कल पाँच रुपया ा जूता चाक़ू से काट डाला। ज़रा ज़ोर से ावाज़ दूँ 'नन्दू! यहाँ तो आना' तो ऐसा छिपेगा कि भगवान् भी खोजते-खोजते थक ायँ और पता न पावें। कभी आप बिस्तरों में, नाज की कोठी में, बड़े बक्स में और कभी ाट की बोरी में छिप जाते।

आज परीक्षा है। कालेज का समय हो या। नन्दू ने कहीं जूता ही छिपा दिया। ता-झींकता नंगे पैर कालेज गया। जब ापिस आया तब सोच रहा था कि आज इस न्दू की हड्डी-पसली तोड़कर रख दूँगा। क्या रूँ? इस नन्दू ने तो मेरी नाक में दम र दिया। घर के दरवाज़े में जैसे ही पैर खा कि किसी ने आवाज़ दी 'बेटा ज़रा ुनना इस बुढ़िया को लूट लिया' मैंने हैरान ोकर पीछे घूमकर देखा—एक बुढ़िया कमर ुकाये एक टेढ़े-मेढ़े डंडे के सहारे रोती-चिल्लाती ली आ रही है। मेरे पास आकर हाँफती-हाँफती सिर पर अपने दोनों हाथ रखकर बैठ ई। मैंने पूछा, क्या है बुढ़िया? किसने तुझे ूट लिया? "नन्दू ने बेटा! और कौन है ऐसा नटखट इस मुहल्ले में।" मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैंने पूछा, 'बुढ़िया! तू इतनी बड़ी और नन्दू इतना छोटा कैसे लूटा उसने तुझे?'

वह मुँह बनाकर, हाथ नचा-नचाकर कहने लगी—"अरे बेटा! उसके छोटे से पेट में जाने कितनी होशियारी भर दी है भगवान् ने। मैं बैठी फल बेच रही थी, तो आकर मेरे पास बैठ गया। बड़े प्यार से बोला, 'माँ जी! यह छेब के कितने पैछे लोगी? औल नाछपाती हैं तुम्हाले पाछ?' कहते कहते एकदम चीख पड़ा—'माँ जी! वह देख बन्दल आया!!' मैं चौंक पड़ी और लगी इधर-उधर झाँकने। इतने में उसे मौक़ा मिला और एक दर्जन केले ले भागा—मैंने देखा—बन्दर की जगह नन्दू भाग रहा था। ले गया!....ले गया!!....मेरे केले ले गया!!! चिल्लाती-पुकारती मैं उसके पीछे दौड़ी लेकिन बेटा! वह तो थोड़ी ही देर में जाने कहाँ छिप गया। मैं तो लुट गई बेटा" ग़ुस्सा तो मुझे आ ही रहा था। यह क़िस्सा सुनकर मैं और अधिक ग़ुस्से में भर गया। मैंने कोट की जेब से तीन आने निकाले और उस बुढ़िया को देकर बिदा किया।

मैं सीधा नन्दू के कमरे में गया। वहाँ देखा—वह अपने दो साथियों के साथ 'घोड़ी मर गई साठ की, परवाह नहीं है लाट की' केले खाते-खाते लाठियों के घोड़े पर बैठे-बैठे, दौड़-दौड़कर गा रहे थे। ऐसे मस्त थे अपने खेल में कि मैं उसके बिलकुल पास पहुँच

गया लेकिन नन्दू मुझे देख न सका। जैसे ही उसने मुझे देखा—बेचारे के प्राण सूख गये। वह गुलाबी चेहरा पीला पड़ गया। मुँह का केला मुँह में और बाहर का बाहर रह गया। मैं कान पकड़ घसीटता-घसीटता उसे अपने कमरे में लाया। कमरा बन्द कर उसे यहाँ तक पीटा कि नन्दू चीख़-चीखकर बेहोश हो गया।

× × × ×

चार दिन हो गये। नन्दू की सूरत न दिखलाई पड़ी और न उसने कोई शैतानी की। अपनी इस सफलता के घमंड में आकर मैंने मा को भी ख़ूब खरी-खरी सुनाई। मैंने मा से कहा, "मा! तू कहा करती थी पीटने से बच्चे उलटे बिगड़ जाते हैं उसकी शैतानी पीटने से नहीं जायगी लेकिन देखा तूने मार से बन्दर तक इशारे पर नाचता है। उस दिन से नन्दू सब नटखटपन भूल गया।" इसी तरह कुर्सी पर बैठा बैठा मेज़ पर सिर रखे हुए नन्दू के बारे में सोच रहा था। सोचते-सोचते मुझे झपकी-सी आ गई थी तब तक किसी ने मेरे सिर पर कुछ दे मारा। मैं चौंक पड़ा। इधर-उधर देखा लेकिन कुछ न दिखाई पड़ा। सोचा शायद स्वप्न देख रहा था। फिर आँखें बन्द कर उसी तरह सोने की कोशिश करने लगा। एकाएक फिर किसी ने मेरे सिर पर कुछ दे मारा। मैं उछलकर उठ खड़ा हुआ, इधर-उधर देखा लेकिन कुछ न दिख पड़ा। बड़ा हैरान था। थोड़ी देर में मैं सब मामला समझ गया कि नन्दू मेरे सिर पर चपत लगा-लगाकर मेज़ के नीचे छिप जाता है। यह समझ में आते ही मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला उठा, "निकल मेज़ से! निकल!! निकल!!! अभी ठीक कर दूँगा शैतान कहीं का" मेज़-कुर्सी सब उठाकर लौट-पलटकर देखा लेकिन वहाँ तो कोई भी नज़र न आया। मैं हैरान था। इधर-उधर कोई भी नहीं फिर ये बार-बार कौन मेरे सिर पर क्या मार रहा है? मैं भूत प्रेतों को नहीं मानता था। लेकिन इस घटना से कुछ-कुछ विश्वास होने लगा। मेरा सारा शरीर भय से काँप रहा था। एक बार मैंने फिर हिम्मत की अपना सारा साहस बटोरकर पहले की तरह ही आँख बन्द कर झपकी लेने का बहाना करने लगा। मन में तय कर लिया था जैसे ही कोई चीज़ सिर पर लगेगी उसे झट पकड़ लूँगा।

एक-दो मिनट बीता था फिर वही चपत! हाथ तो तैयार थे ही झट पकड़ लिया—देखा तो हाथ में बिल्ली के दो पंजे। मैंने सुन रक्खा था कि भूत-प्रेत अपना रूप बदल लेते हैं यह याद आते ही मैं चीख़ उठा—"भूत! भूत!! सारा शरीर पसीने से लथ-पथ हो रहा था। मैं काँप रहा था।

चीख़ के साथ ही बिल्ली मेरे हाथ से निकलकर ऊपर आकाश की तरफ़ जाने की कोशिश करने लगी। मैंने ऊपर की तरफ़ मुँह फाड़े बड़ी हैरानी से देखा—जो कुछ देखा उसे देखकर डर तो सब भाग गया। ग़ुस्से से मेरा चेहरा तमतमा उठा।

नन्दू ने एक बिल्ली के बच्चे को डोरी से बाँध रक्खा था। उसी को छत पर खड़े-खड़े मेरे सिर

बार-बार पटक देता था। मैं ग़ुस्से से पागल उठा; नाक फूलने लगी, होंठ फड़कने लगे र आँखें सुर्ख़ हो उठीं। आव गिना न ताव, ल्ली से बँधी उस डोर को झटक दिया। डोर झटकते ही नन्दू छत से ज़मीन पर 'धम्म' से र पड़ा सिर से ख़ून की धार बह निकली।

× × × ×

तीन दिन हो गये। नन्दू ने न आँखें लीं न कुछ बोला ही। डाक्टर ने कहा, "बच्चे मन पर चोट लगते ही भय छा गया था। लत ख़तरनाक है" सारे घर और मुहल्ले में दासी छा गई। सब आते हैं और नटखट नन्दू बेहोश पड़ा देख-देखकर आँखों में आँसू पाये चले जाते हैं। वह फलवाली बुढ़िया भी ई, रोते रोते बेचारी की हिचकी बँध गई। ती थी—"भगवान् मेरे नन्दू को अच्छा कर तो उसे भर पेट केले खिलाऊँगी।"

नन्दू की हालत गिरती जा रही थी। मैं ना-पीना छोड़कर उसी की चारपाई के पास रहता। उसके नटखटपन और अपने पीटने बातें याद कर कर ख़ूब रोना आता। जी हता कि हूक-हूककर रो लूँ लेकिन नन्दू की मारी की वजह से चुपचाप बैठा-बैठा आँसू या करता।

आधीरात का समय था। मेरी मा और बड़ी दीदी जगते-जगते सो गई थीं। मैं चुपचाप बैठा उसके नन्हे नन्हे हाथों को लिये आँसू बहा रहा था। नन्दू बड़बड़ा उठा, "भैया! छोर दो मुझे !! भैया मल जाऊँगा मैं !!! यह सुनकर मैंने अपने गले की आवाज़ को बहुत रोकना चाहा लेकिन रोक न सका। ज़ोर से रो पड़ा। उसे उठाकर अपनी गोदी में लिटा लिया। रोते-रोते मैंने कहा 'मेरे नन्दू भैया! अब तुझे कोई न पीटेगा। तू अच्छा हो जा' धीरे-धीरे उसने आँखें खोल दीं किन्तु मुझे देखते ही वह फिर चीख़ पड़ा, "भैया! मुझे पीतने आये हो! मत पीतो मुझे !! छोड़...." वह बड़बड़ा रहा था मैं रो-रोकर उसे समझा रहा था। थोड़ी देर में उसने अपना मुँह सिसकते हुए मेरी गोदी में छिपा लिया।

× × × ×

नन्दू अच्छा हो गया है। अब मैं अपने नन्दू को ख़ूब प्यार करता हूँ। वह मुझे तङ्ग तो नहीं करता लेकिन कभी मुसकाते-मुसकाते चिढ़ा उठता है, "भैया! अब मुझे पीता, तो वह बिल्ली का बच्चा छिर छे पतक दूँगा" फिर दौड़कर मेरे गले से चिपट जाता है।

चाचा विलियम

अनुवादक—नानकचंद्र टंडन, मूललेखक—केनेथ ग्राहम

शहर से हमारे मझले चाचा आनेवाले थे, हम लोगों की छोटी ज़िंदगी में यह कोई मामूली बात न थी। इसके पहले दो चाचा आ चुके थे; पर दोनों में कितनी ही कमियाँ पाई गई थीं। चाचा टामस तो शुरू से ही गावदी निकले। इसके अर्थ यह नहीं कि उनकी आदतें अच्छी न थीं या वे अच्छी सोसाइटी में भाग लेने लायक़ न थे; पर यह बात पता नहीं कैसे उनके दिल में बैठ गई थी कि बच्चे होते ही इसलिए हैं कि बड़े उन पर बेमतलब फब्तियाँ कसा करें—जोकि उनके ख़्याल से अच्छे मज़ाक़ होते थे। हम लोग चाहते थे कि उन्हें पूरा मौक़ा दिया जाय, अपनी अच्छी प्रकृति दिखाने का। पर हमें पता चला—वे किसी काम लायक़ न थे; उनमें सच्चे मज़ाक़ की बू तक न थी। हम लोगों ने उन्हें एक बेवक़ूफ़ चाचा समझकर अपने ख़याल से निकाल दिया।

× × ×

छोटे चाचा जार्ज से हम लोगों को अधिक आशा थी। वे हम लोगों के साथ-साथ हमारे घर भर में घूमे, हम लोगों ने उन्हें अपनी हर एक गाय से मिलाया। जार्ज ने भी हमारे सुअर से दोस्ती करने के लिए हाथ बढ़ाया और यहाँ तक कहा कि शहर से हमारे पास गुलाबी आँखवाले ख़रगोश किसी दिन आ जायँगे।

हम सोच ही रहे थे कि इस अच्छे मौक़े पर कबूतरों या हिरन पर विचार प्रकट करने से कहीं वे भी शहर से आ जायँ कि उसी समय हमारी आया वहाँ आईं। चाचा जार्ज का बर्ताव एकदम बदल गया। हम लोगों को उन पर कम क्रोध न आया। हमारी समझदारी की बातों में वे जो मज़ा ले रहे थे वह थोड़ी ही देर में काफ़ूर हो गया और यद्यपि आया मिस स्मिडले, हमारी बहन सेलिना को पढ़ने के लिए बुलाने आई थीं, तो भी मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि सेलिना ने सुबह हमारे साथ ही बिताई, जब कि मिस स्मिडले चाचा जार्ज के साथ घंटों इधर से उधर घूमती रहीं।

चाचा जार्ज के इस काम को हमने नापसंद किया; पर हम जल्दबाज़ी में कोई निर्णय न करते थे। उनकी इस ग़लती पर हम लोगों ने ख़ूब बहस की और तय किया कि उन्हें छोटी सोसाइटी में रहने का रोग है। क्योंकि हम लोग तो मिस स्मिडले के साथ सदा रहते ही थे और उनको उसी भाँति जानते थे जिस भाँति कोई कक्षा की पढ़ी किताब को जानता है—फिर हमसे भला मिस स्मिडले की कोई ख़ूबी छिपी रह सकती थी। हम अच्छी तरह जानते थे कि मिस स्मिडले में न तो कोई सुन्दरता थी और न उनके बातचीत करने के ढंग में कोई ख़ास ख़ूबी। फिर वह क्रोधी और झगड़ालू थीं, यह भी हमसे छिपा न था।

यह ठीक था कि वे इतिहास की हर एक तारीख़ें याद रखती थीं, पर चाचा जार्ज तो

महात्मा गांधी

सिकन्दर महान्

ुष्य की सबसे बड़ी बेइज़्ज़ती है। क्या तुमने ना नहीं कि गांधी जी देवताओं की तरह ुम्हारे बड़े-बूढ़ों का नेतृत्व इसलिए कर रहे हैं तुम्हारा प्यारा भारतवर्ष स्वतन्त्र हो जाय। भारत की ग़ुलामी को उखाड़कर फेंक देने लिए लड़ रहे हैं। तुमने हिटलर, मुसोलिनी ार चर्चिल का नाम भी सुना होगा। ये लोग ी तुम्हारे समकालीन हैं और ये सब महान् यक्ति हैं। इतिहास लगातार इन लोगों के हाथों न रहा है और पिछला इतिहास बदल रहा है। ब तुम बड़े हो जाओगे तो इनको वैसे ही ाश्चर्य के साथ देखोगे जैसे हम आज नैपोलियन आदि को देखते हैं। इसलिए कभी यह त सोचो कि तुम्हारे ज़माने में महान् व्यक्ति नहीं हैं। तुम चारों तरफ़ महान् व्यक्तियों से घिरे हो। यह तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम इन सब लोगों को भरसक देखो और समझो। कुछ काल बाद जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हें भी किसी का पक्ष लेना पड़ेगा और कई निश्चय करने पड़ेंगे ताकि तुम अन्याय का सामना कर सको और वीरता के साथ सत्य-मार्ग पर चल सको। तुम्हारा अपनी मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य है और अपने देश, जिसमें तुम ख़ुशी से अपना बचपन बिता रहे हो, भारतवर्ष का क़र्ज़ अदा करना है। जब तुम बड़े हो जाओगे तो मातृभूमि तुमसे बहुत आशायें करेगी। अतः अभी से तय्यारी शुरू कर दो। यथाशक्ति किताबों और अपने से बड़ों से ज्ञान प्राप्त करो। रेडियो को सुनो, अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ो और बड़ों से बातें समझने की कोशिश करो। ऐसा करते-करते तुम भी एक दिन महान् पुरुष बन जाओगे और देश को तुम पर गर्व होगा।

स्वर्ग की सैर

लेखक, श्रीयुत आत्माराम देवकर

बरजोर मज़दूरी करता था। उसके घर सब कुछ—न था। एक हलवाई की दुकान पर सो रहता था। वह बड़ा सावधान मनुष्य था। ज़रा-सी आहट पाकर जाग उठता और चारों ओर चक्कर लगा आता था। हलवाई बड़ा प्रसन्न था। उसे बिना वेतन का नौकर मिल गया था।

बरजोर परियों की कहानियाँ ख़ूब जानता था। ऐसी कहानियों को लड़के बड़े प्रेम से सुनते हैं। वह ज्योंही दुकान पर आकर बिछौना बिछाता त्योंही पूरे मुहल्ले के लड़के आकर उसे घेर लेते। बेचारे का नाकों दम था। जिस दिन वह उन्हें क़िस्सा नहीं सुनाता था, उस दिन वे उसे ख़ूब तंग करते थे। उसके चारों ओर बैठकर शोर मचाते और बेर के काँटे उसके पैर में चुभा देते। वह उन्हें बहुत मना करता और डाँटता-डपटता; पर वे उसका पिंड नहीं छोड़ते थे। लाचार होकर बेचारे को एकाध कहानी सुनानी ही पड़ती थी।

एक दिन लड़कों के चले जाने पर जब वह सो गया तब एक परी आकर उसके सिरहाने की ओर खड़ी हो गई। चूड़ियों की आहट से बरजोर की निद्रा भंग हो गई। वह उठकर बैठ गया और बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखकर बोला—"तुम कौन हो?" परी ने उत्तर दिया—"जिसकी कहानियाँ तुम नित्य सुनाया करते हो।" बरजोर अकचकाकर बोला—"ऐं! तुम परी हो, मनुष्यों से तुम्हारा क्या वास्ता है?" परी ने हँसकर कहा—"वास्ता तो कोई नहीं है, तुम्हारी भक्ति से सन्तुष्ट होकर मैं दर्शन देने के लिए चली आई हूँ।" बरजोर प्रसन्न होकर बोला—"तुम कहाँ रहती हो?" परी ने उत्तर दिया—"मैं स्वर्ग की रहनेवाली अप्सरा हूँ।" बरजोर ने बड़े तपाक से उसकी ओर देखकर कहा—"तुम अपना स्वर्ग मुझे दिखला सकती हो?" परी ने उत्तर दिया—"दिखला तो सकती हूँ; पर तुम्हें मेरी आज्ञा के अनुसार काम करना होगा।" बरजोर ने कहा—"तुम जैसा कहोगी वैसा ही करूँगा।" परी ने सोच-समझकर कहा—"मैं कल अपनी राजकुमारी को विमान पर बिठलाकर यहाँ लाऊँगी। वह थोड़ी देर यहाँ-वहाँ टहलकर स्वर्ग वापस चली जायगी। जब वह जाने लगे तब तुम विमान का पाया पकड़कर लटक जाना। मार्ग के दृश्य तुम्हारे मन में भय का संचार करेंगे और संभव है कि तुम उन्हें देखकर चिल्ला उठो अथवा पाया छोड़कर नीचे गिर पड़ो; इससे मैं तुम्हारी आँखों में पट्टी बाँध दूँगी। ज्योंही विमान खड़ा हो त्योंही तुम पाया छोड़कर कहीं छिप रहना। राजकुमारी के चले जाने पर मैं तुम्हें स्वर्ग का सुन्दर दृश्य दिखाऊँगी।" बरजोर राज़ी हो गया।

दूसरे दिन वह परी राजकुमारी को विमान पर बिठलाकर ले आई। उसके सौन्दर्य को देखकर बरजोर आश्चर्य के समुद्र में डूब गया।

ज के अफ़सर थे। उन्हें इन तारीखों से क्या लब हो सकता था? अपनी तीर और कमान ने उन्हें दे थी; पर चाचा जार्ज का सिपाही ते हुए भी उनमें ज़रा देर के लिए भी मन लगा। नहीं, चाचा जार्ज हम लोगों की गाहों में गिर गये और हमसे प्रत्येक इस बात सहमत थे कि वे किसी काम लायक़ नहीं। र बहुत दिनों तक हिमालय के खरगोश भी आये। इससे चाचा जार्ज की बदनामी पूरी हो । उन दिनों दो चाचाओं से हम सीख ले थे और हमारा खयाल हो चला था कि क़फ़ लोग ही चाचा होते हैं। तब भी हम गों ने सोचा कि हिन्दोस्तान से चाचा लियम आनेवाले हैं और उनके बारे में भी न्याय किया जाय।

× × ×

सेलिना ने मेरी ठुड्डी में एक मुक्का मार या था—जब मुझसे उससे घुस्सम-घुस्सा —और मैं अपनी ठुड्डी सहला ही रहा था मैंने देखा कि चाचा विलियम सेलिना से नाते हुए हाथ मिला रहे हैं। वे एक बड़ी खोंवाले अधेड़ पुरुष थे और उन्होंने एक-एक के हम सबसे हाथ मिलाया। फिर कहा— हो, तुम लोग अच्छी तरह से तो हो? प्रसन्न मुझे देखकर, क्यों?" हम लोग कहते ही , एक दूसरे की ओर ताकने लगे। इससे ी को कुछ परेशानी-सी लगी और वह परे- ी जब तक चाचा विलियम हमारे यहाँ रहे न हुई। बाद में किसी ने एक बार कहा कि कभी चाचा विलियम ने कोई नीच कार्य किया होगा; पर मुझे विश्वास न होता था कि यह आदमी देखने में दुःखी लगता हुआ भी सचमुच किसी खास क़सूर के लिए ज़िम्मेदार है; क्योंकि मैंने कई बार उसे दयालुता से अपनी ओर ताकते देखा। पर जब हमारी आँखें मिल जातीं तो वे लजाकर दूसरी ओर मुँह फेर लेते।

× × ×

आखिरकार जब वे चले गये तो हम लोग तहखाने में इकट्ठा हुए—हम सब—केवल हेराल्ड वहाँ न था; क्योंकि वह चाचा को स्टेशन तक पहुँचाने गया था और हम लोगों का खयाल था कि विलियम भी किसी काम के चाचा न निकले। सेलिना ने तो खुल्लम-खुल्ला उन्हें जानवर कह दिया; क्योंकि उन्होंने हमें आधे दिन की भी पढ़ने से छुट्टी नहीं दिलाई। ऐसा लग रहा था कि बेचारे विलियम के पक्ष में किसी को कुछ नहीं कहना है। हम लोग प्रस्ताव पर वोट लेने ही वाले थे कि हेराल्ड दौड़ा हुआ आया—लाल मुँह—गोल बड़ी-बड़ी आँखें—अजीब सूरत उसकी लगती थी! जैसे कोई बड़ी खबर लाया हो। चुपचाप कुछ देर तक वह खड़ा रहा; फिर अपने जेब में हाथ डालकर उसने अपनी गन्दी हथेलियों पर दिखाये—दो-तीन-चार हाफ़ क्राउन! हम लोग देखते ही रह गये—टकटकी बाँधे सन्न होकर। हम लोगों ने कभी इतनी रक़म एक साथ देखी न थी। तब हेराल्ड ने सब बातें बताईं—

मैं चाचा साहब के साथ स्टेशन तक गया। रास्ते में मैंने उन्हें बताया—सब कुछ, स्टेशन मास्टर के कुटुम्ब के सम्बन्ध में—कि किस भाँति मैंने एक क़ुली को अपने यहां की दासी का चुम्बन करते देखा था, कितनी अच्छी तरह से चाचा ने पूरा बयान सुना और भी कितनी ही बातें जो मैंने समझीं वह सुनना चाहते होंगे मैंने उन्हें सुनाईं; पर उन्होंने ज़्यादा ध्यान मेरी बातों पर न दिया। सिगार पर कश पर कश खींचते हुए वे सुनते रहे। अन्त में मुझे ऐसा लगा—देखो मैं कह रहा हूँ केवल कि ऐसा लगा—कि उन्होंने कहा—"अच्छा हुआ, इसकी बकवाद तो ख़त्म हुई।"

जब हम स्टेशन पहुँचे तो उन्होंने कहा—"देखो वे हाफ़ क्राउन तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के लिए हैं जो चाहो तुम इनका करो। केवल बड़े लोगों को यह बात मालूम न होने देना कि मैंने तुम्हें कुछ दिया है।" कुछ डर कर उन्होंने मुझसे यह कहा और उसके बाद मैं घर चला आया।

सब लोग चुप थे। थोड़ी देर बाद छोटी कारलोटी ने कहा—"मैं नहीं जानती थी कि दुनिया में ऐसे अच्छे आदमी भी हैं। ईश्वर करे आज ही मर जावें जिससे उन्हें सीधे स्वर्ग मिले!" सेलिना रोने लगी और किसी तरह उसके आँसू ही न रुकते थे; क्योंकि उसने जल्दी में अपने अच्छे चाचा को जानवर कह दिया था।

× × ×

ऐसे मौक़ों पर हल ढूँढ़ निकालनेवाला एडवर्ड वहीं था। उसने कहा—"मैं बताऊँगा कि हमें क्या करना चाहिए। अभी जो गंजा सुअर का बच्चा पैदा हुआ है उसका कोई नाम नहीं है। हम उसका नाम विलियम रख देंगे जिससे हमारी ग़लती के लिए हमारा शोक लोगों को मालूम हो जाय।"

"मैंने तो आज ही उसका नाम रख दिया है"। हेराल्ड ने अपनी ग़लती मानते हुए कहा मुझे बड़ा शोक है मैंने पादरी के नाम पर उसका नाम रखा है। उसने मेरी जगह रात में गेंद फेंकी थी। जब तुम लोग सोने चले गये थे और मैं लाचार था वैसा करने के लिए।

"अरे, इससे कोई मतलब नहीं"—एडवर्ड ने जल्दी से कहा, "क्योंकि हम सब वहाँ न थे। हम लोग उस नाम को हटा लेंगे और उसे चाचा विलियम का नाम देंगे। तुम पादरी का नाम दूसरे किसी बच्चे के लिए रख छोड़ो।"

इस बात को सभी ने मंज़ूर किया। उसके बाद हम लोग सोचने लगे कि किस भाँति इतने अधिक धन को काम में लावें।

बढ़े चलो, बढ़े चलो !

[प्रयाण-गीत]

लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०

न हाथ एक शस्त्र हो,
न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,

हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

रहे समक्ष हिमशिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,

झुको नहीं,
रुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूँट हो,

जिये चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,

अड़ो वहीं,
गड़ो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
डरो नहीं,
मरो नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

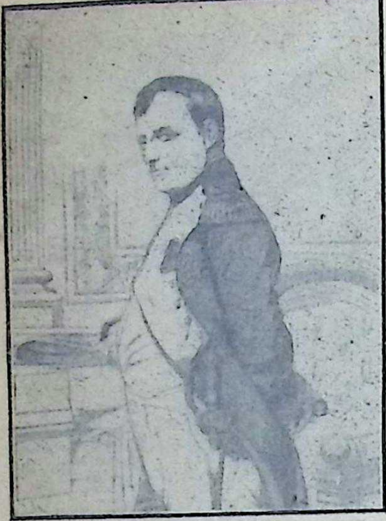

नेपोलियन

महान् व्यक्तियाँ

लेखक,
श्री० पुरुषोतमदास टंडन,
बी० ए०, एल-एल० बी०

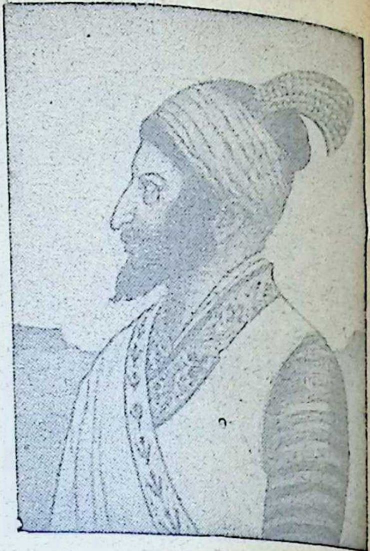

शिवाजी

जब तुम बड़े हो जाओगे तब तुम्हें मालूम पड़ेगा कि इस दुनिया में कितनी बातें हो गई हैं। उस समय तुम्हारा संसार बहुत आगे बढ़ चलेगा। इतिहास पढ़कर तुम जानोगे कि कई महान् व्यक्तियों के जीवन-चरित्र रोमाञ्चकारी और अद्भुत घटनापूर्ण थे। कई बार बैठे-बैठे जब तुम कहानी सुन रहे थे, तो घर के बड़े-बूढ़ों ने तुम्हें शूरवीर योद्धाओं के साहस, कौशल के क़िस्से बतलाये होंगे। उन्हें सुनकर तुम्हें बड़ा अचम्भा हुआ होगा। परन्तु ऐसा क्रम संसार में सदा से जारी रहा है। महान् व्यक्ति पैदा होते हैं, वे बड़े-बड़े कार्य करते हैं; उनका प्रभाव उनके समकालीन और आगामी मनुष्यों पर पड़ता है। प्यारे बच्चो, तुम्हें कभी यह खेद नहीं करना चाहिए कि तुम सिकन्दर के समय में पैदा नहीं हुए जब कि उसने साम्राज्य विजय की या जब नैपोलियन ने लोगों की कल्पनाओं पर इतना प्रभाव डाला कि वे उसे ईश्वर की तरह पूजने लगे। शिवाजी का नाम आज तुम सब जानते हो और संसार के कई महान् व्यक्तियों का आदर करते हो। परन्तु वे सब तब के हैं जब तुम पैदा नहीं हुए थे। परन्तु यह मत भूलो कि तुम लोग भी ऐसे युग में रहते हो जब कि कई महान् व्यक्ति जीवित हैं और कभी मौक़ा पड़ने पर तुम उन्हें देख सकते हो। इन लोगों को तुम्हारी आनेवाली सन्तान उसी इज़्ज़त के साथ याद करेगी जिसके साथ तुम गौतम बुद्ध आदि दूसरे ऐतिहासिक महात्माओं को याद करते हो। तुम्हारे गांधी बाबा आज संसार के सबसे बड़े व्यक्ति हैं। वे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। वे एक बहुत बड़े वीर हैं। पर वे हराने के लिए किसी अस्त्र को काम में नहीं लाते। वे अधिक खर्च नहीं करते और न अधिक कपड़ा ही पहनते हैं। वे एक किसान की तरह दीखते हैं और कहा करते हैं कि उनका जीवन किसानों, युवकों और पराधीनों की सेवा के लिए है। क्या तुमने कभी सुना है कि पराधीन किसे कहते हैं? जब तुम बड़े होगे तो समझने लगोगे कि परतन्त्रता

के नेत्र राजकुमारी की मोहिनी मूर्ति में अटक । उसका शरीर निश्चल-निश्चेष्ट हो गया। थोड़ी देर में राजकुमारी विमान पर बैठकर को जाने लगी। परी ने बरजोर का कान ठकर कहा—"तुम निरे काठ के उल्लू हो! बढ़िया सुयोग हाथ से खोये देते हो! ी उठकर पाया पकड़ो और स्वर्ग का न्द लूटो।" बरजोर चौंककर उठ खड़ा हुआ पाये से लटक गया। परी ने चट उसकी ों पर पट्टी बाँध दी।

बरजोर स्वर्ग में पहुँचा। विमान के खड़े होते परी ने पट्टी खोल दी। बरजोर भौंचक्का-सा र इधर-उधर देखने लगा। स्वर्ग की सुन्दरता उसे एकदम मुग्ध कर डाला। उसने उसे स्वप्न झ लिया और वह वहीं खड़ा होकर ज़ोर नेत्र मलने लगा। परी ने खिसियाकर उसके पर एक चपत जमाई। वह डरकर वहाँ भागा और एक मोटे पेड़ के पीछे छिप गया।

बरजोर स्वर्ग में रहकर वहाँ का विचित्र देखने लगा। वहाँ के सभी जीव बड़े र, सुकुमार और विलासी थे। दिन-रात -तान और नाच-रंग में मग्न रहते थे। बर- र उन्हें पुण्यात्मा समझ प्रणाम करने लगा । एक दिन उसने परी से पूछा कि शाम को कहाँ चली जाती हो? परी ने उत्तर दिया मुझे राजा इन्द्र की सभा में नाचने के लिए ना पड़ता है। बरजोर ने उत्कंठित होकर —"मुझे भी राजा इन्द्र की सभा दिखओ।" परी ने कहा—"अच्छा, आज ही चलो। यदि राजा इन्द्र तुम्हें देख लें और पूछने लगें कि तुम कौन हो तो तुम उन्हें यही उत्तर देना कि महाराज मैं आपका सेवक हूँ।" बरजोर राज़ी हो गया।

रात्रि के समय परी उसे अपने साथ लिवा ले गई। राजा इन्द्र का महल बहुत बड़ा और ऊँचा था। उसके कई खंड थे। इन्द्र सबसे ऊपर के खण्ड में अपने सभासदों के साथ बैठे थे। ऊपर जाने के लिए संगमरमर की सीढ़ियाँ बनी थीं। बरजोर चढ़ तो गया; पर उतरते समय पैर फ़िसल जाने से लुढ़कता हुआ एक परी के पैरों के पास जा गिरा। परी चौंककर पीछे हट गई। इन्द्र ने पूछा—"तू कौन है?" बरजोर घबराकर इधर-उधर देखने लगा। उसकी जीभ तालू से सट गई। बड़ी कठिनाई से बोला—"मैं महाराज.......!" इन्द्र ने पूछा—तुम कौन महाराज हो?" बरजोर जीभ सँभाल कर बोला—"मैं सेवक महाराज.......।"

इन्द्र ने झुँझलाकर कहा—"इस पापी को यहाँ से निकाल दो।" आज्ञा पाते ही एक विशालकाय देव ने धक्का देकर बरजोर को नीचे गिरा दिया। वह गिरते ही मूर्च्छित हो गया। चेतना आने पर उसने नेत्र खोलकर देखा तो अपने को उसी हलवाई की दूकान पर पड़ा पाया।

दूसरे दिन से वह यह क़िस्सा सब लड़कों को सुनाने लगा। लड़के उसे बड़े प्रेम से सुनते और बरजोर के मुँह की ओर देखकर हँसने लगते थे।

हिन्दुस्तान

(खेल)

लेखक, श्रीयुत सिद्धनाथ दीक्षित

आओ भाई खेलें खेल।
जिससे बढ़े परस्पर मेल॥

खेल-कूदकर मन बहलावें।
अपना अपना ज्ञान बढ़ावें॥

देश हमारा हिन्दुस्तान।
हमको जिसका है अभिमान॥

मुकुट हिमालय का शिर धार।
सागर चरण रहा है पखार॥

दायें अरब बिलूचिस्तान।
बायें श्याम चीन जापान॥

दोनों दिशि से सेवक बनकर।
करते सेवा हैं चित धरकर॥

काश्मीर पंजाब निराला।
फल मेवों का देनेवाला॥

राजपूत रजपूती बाना।
देखो सिन्ध राजपूताना॥

युक्त-प्रान्त बंगाल बिहार।
राजनीति के हैं भण्डार॥

मध्यदेश आसाम बरार।
रेशम रुई करें तैयार॥

भाँति-भाँति के जिनसे वस्त्र।
बनते रहते हैं सर्वत्र॥

बम्बई मदरास महान।
हैं प्रान्तों में ऊँचा थान॥

वाणिज्य शिल्प कला विज्ञान।
होता है इनसे उत्थान॥

सतलज व्यासा रावी चिनाब।
झेलम सींच रहो पंजाब॥

गंगा यमुना सरयू धार।
युक्त देश बंगाल बिहार॥

बहता है अति पावन नीर।
बसे तीर्थ हैं जिनके तीर॥

ब्रह्मपुत्र नर्मदा किनारे।
घाट मनोहर हैं अति प्यारे॥

विन्ध्याचल सतपुड़ा पहार।
देश हृदय में रक्खे धार॥

प्रान्त देश के सब अभिराम।
राम, कृष्ण के हैं ये धाम॥

हम सब हैं इनकी सन्तान।
यही हमारा हिन्दुस्तान॥

“ब्राड-कॉस्टिंग”

लेखक, ‘साहित्यरत्न’ पंडित बाबूलाल भार्गव, बी० ए०, बी० टी०, एम० आर० ए० एस० (लंदन)
‘साहित्याचार्य’ हेडमास्टर म्यू० हाई स्कूल, सागर (मध्यप्रांत)

ब्राड-कॉस्टिंग का अर्थ है छितराना या राना। परन्तु आजकल जिस अर्थ में इस का प्रयोग किया जाता है वह है—एक स्थान सरे स्थान को समाचार, संगीत या भाषणों भेजना।

यदि तुम किसी तालाब में एक पत्थर तो तुम देखोगे कि जिस स्थान पर वह है उसके चारों ओर चक्कर में लहरें ती हुई दिखाई देती हैं। ज्यों-ज्यों वे लहरें बढ़ती जाती हैं त्यों-त्यों वे फैलती चली हैं; किन्तु फैलने के साथ ही साथ ये भी होती जाती हैं। यदि किनारा दूर तो ये लहरें उस तक पहुँचने के पहले ही हो जाती हैं। जितना बड़ा पत्थर हो या ने दूर से वह फेंका जाय उसके ही मुताबिक़ लहरें छोटी या बड़ी होती हैं।

इसी प्रकार यदि तुम एक कमरे में खड़े बोलो तो कमरे के सब लोग उसे सुन हैं। इसका कारण यह है कि आवाज़ एक दिशा में जाने के बदले सभी दिशाओं जाती है।

यह आवाज़ भी तालाब के पानी की लहरों के रूप में चारों ओर फैलती है और कारण है कि वह एक ओर के बदले सभी सुनाई देती है। आवाज़ की लहरें भी ज्यों- दूर चलती जाती हैं त्यों-त्यों वे कमज़ोर होती जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति हमारे बहुत दूर खड़ा होता है तो वह हमारी आवाज़ नहीं सुन सकता। आवाज़ की लहरें यद्यपि उस व्यक्ति तक पहुँचती ज़रूर हैं; पर वे इतनी छोटी होती हैं कि उसके कान उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते।

अब प्रश्न यह उठता है कि दूर के स्थानों की ख़बर हमें ब्राड-कॉस्टिंग द्वारा कैसे सुनाई देती है।

मान लो कोई एक संगीतज्ञ अपना गाना ब्राड-कॉस्ट करना चाहता है तो वह एक यंत्र (जिसे माइक्रोफ़ोन कहते हैं) के सामने बैठकर गाना शुरू करता है। माइक्रोफ़ोन एक ऐसा यंत्र है जो कि आवाज़ को बढ़ाने के काम में आता है। देखने में वह एक साधारण टेलीग्राफ़ के बोलने के चुंगे के समान दिखता है। सिर्फ़ अंतर इतना रहता है कि माइक्रोफ़ोन आवाज़ भेजनेवाले के क़रीब एक-दो फ़ुट की दूरी पर रखा जाता है। यह यंत्र पहले बोलनेवाले की आवाज़ को पकड़ता है, फिर वह उसे बिजली की लहरों में परिवर्तित कर देता है और उन्हें सब दिशाओं में फैला देता है। हम इन बिजली की लहरों को देख नहीं सकते। इनकी चाल भी बहुत ज़्यादा होती है। बिजली की ये लहरें एक सेकिंड में एक लाख सोलह हज़ार मील चल सकती हैं, अर्थात् ये एक सेकिंड में

ब्राँडकास्टिङ्ग

पृथ्वी के सात-आठ चक्कर लगा सकती हैं। यदि हमारे पास एक अच्छा वायरलेस सेट रहता है तो वह इन लहरों को पकड़ लेता है और उन्हें आवाज़ में परिवर्तित कर देता है। लाउड-स्पीकर के द्वारा यही आवाज़ हमें फिर सुना देती है।

यह सब इतनी शीघ्रता से होता है कि यदि बोलनेवाला हज़ारों मील की दूरी पर ही क्यों न हो, उसकी वे बातें हमें प्रायः उसी समय सुन पड़ती हैं जिस समय कि वह बोलना प्रारंभ करता है।

यदि आवाज़ हज़ारों मील की दूरी से सुनना हो तो बहुत ही शक्तिशाली विद्युद्धार की आवश्यकता होती है। थोड़ी दूर तक खब भेजने के लिए साधारण विद्युद्धारा से भी काम चल सकता है।

कुछ वायरलेस सेट केवल बड़ी लहरों को ही ग्रहण कर सकते हैं; किन्तु जो सेट अच्छे होते हैं वे बहुत दूर से आई हुई छोटी लहरों को भी ग्रहण कर सकते हैं।

बालको! उपरोक्त कथन से तुम्हें विदि होगया होगा कि ब्राड-कॉस्टिंग एक कैसा आश्चर्य जनक आविष्कार है।

मेरा घोड़ा

लेखक, श्रीयुत रामनारायनलाल शर्मा, तालजावरा स्टेट

अम्मा मेरा घोड़ा कैसा, अम्मा मेरा कोड़ा कैसा।
घोड़े पर मैं करूँ सवारी, कोड़ा मारूँ उसके भारी।
तब मेरा घोड़ा दौड़ेगा, चाल अनोखी वह छोड़ेगा।
खटपट-खटपट कैसा आया, मैंने उसको ख़ूब भगाया।
मेरा घोड़ा मेरा घोड़ा, कैसा दौड़ा कैसा दौड़ा।

कल और आज

लेखिका, सरस्वती देवी

(१)

किसका भाग्य किसके साथ युक्त है इसे तो कोइ जानता। यह क्या कम अचरज की बात है कि के साथ हम वर्षों रहे वह तो अपरिचित बना पर जिसे हमने देखा भी नहीं वही सहसा हमारे में ऐसा स्थान बना लेता है कि उसका सुख-हमारा सुख-दुख हो जाता है। मुझे अच्छी तरह है कि अपने बचपन में ही मैं अपने पड़ोस की लड़की सुशीला को अपना स्नेहपात्र समझकर छोटी-से-छोटी इच्छा की पूर्ति के लिए यत्न था। हम लोग एक साथ खेलते थे और ज़रूरत पर मैं अपने घर से फल वग़ैरह चुराकर उसे देता वह भी अपने बाप का हुक़्क़ा छिपाकर मुझे पीने के ला देती थी। इसी तरह मेरे जीवन के छः वर्ष उसी कटे। जब वह ग्यारह वर्ष की थी तब वह कन्या-ाला में पढ़ने जाया करती थी। एक बार उसी की एक दूसरी लड़की मालती से उसका झगड़ा ा। मैंने उसका पक्ष लेकर मालती को पीटा। वह हुई अपने घर चली गई। उसी वर्ष मेरे पिता उस को छोड़कर दूसरे गाँव को चले गये। मैं भी पढ़ने ए बनारस चला गया। चार वर्ष के बाद जब मैं ए० पासकर घर लौटा तब न मुझे मालती का रहा, न सुशीला का।

(२)

कालेज में रहकर कितने ही लोगों से मेरा परिचय ा था। सहसा मेरे विवाह की चर्चा चली। मालूम हुआ कि रायगढ़ के नायब दीवान की लड़की से मेरा विवाह निश्चय हुआ। कुछ दिन के बाद विवाह होगया। विवाह हो जाने के बाद हम लोग रायगढ़ से राजनाँदगाँव का आ रहे थे। उस समय गाड़ी में बड़ी भीड़ होने के कारण हम लोगों को बैठने में कुछ तकलीफ़ हुई। एक व्यक्ति ने अपनी स्त्री को पूरी बेंच पर सुला रक्खा था। बात ही बात में उससे कुछ झगड़ा भी हुआ, अन्त में उसने अपनी स्त्री को उठाया और उसी के पास मेरी स्त्री जाकर बैठ गई। और लोग यहाँ-वहाँ बैठ गये। मैं एक दूसरे डिब्बे में ही बैठा रहा। जब हम लोग घर पहुँचे और स्त्री से पहली बार मेरा साक्षात्कार हुआ तब उसने मुझसे पूछा—क्या तुम मुझको भूल गये? मैंने ध्यानपूर्वक उसे देखा, और तब मैंने उसे पहचान लिया। वह वही मालती थी। मैंने उससे पूछा—तुम्हारे पिता तो स्कूल के मास्टर थे, वे रायगढ़ के नायब दीवान कैसे हुए? मालती ने कहा—उनका भाग्य! इसके बाद उसने कहा—उस दिन तुमने रेल के डिब्बे में उस बेचारे के साथ कितना झगड़ा किया! तुम जानते हो कि उसकी स्त्री बीमार थी। मैंने कहा—स्त्री बीमार थी तो पहले दर्जे में बैठता। दूसरे मुसाफ़िरों को कष्ट देने का कोई अधिकार उसे नहीं था। मालती ने फिर कहा—और वह स्त्री तुम्हारी वही सुशीला थी जिसके कारण मुझे मार पड़ी थी। याद है? मैं चुप रह गया। कुछ उत्तर न दे सका। यही सोचा कि आज कुछ है तो कल कुछ और है।

गुरु सबसे बड़ा है

लेखक, श्री ज़हूरबख्श

एक साफ़-सुथरे कमरे में मौलवी साहब गद्दी पर बैठे हुए थे। उनके सामने फ़र्श पर दो छोटे-छोटे ख़ूबसूरत बालक मौजूद थे। मौलवी साहब दोनों बालकों को बड़े प्रेम से पढ़ा रहे थे और दोनों बालक बड़े ध्यान से पढ़ रहे थे। थोड़ी देर बाद मौलवी साहब खड़े हो गये और बोले—"भई, मेरी जूतियाँ उठा लाओ ज़रा बाहर जाऊँगा।"

दोनों बालक फ़ौरन जूतियाँ उठाने दौड़े। दोनों एक साथ जूतियों के पास पहुँचे। अब उनमें इस बात पर झगड़ा होने लगा कि हम दोनों में से जूतियाँ कौन उठावे? एक बालक ज़रा बड़ा था, उसने समझदारी से काम लिया और छोटे बालक से कहा—"भई हमें आपस में लड़ने-झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। मेरी बात मानो। एक जूती तुम उठा लो, दूसरी जूती मैं उठा लूँ।"

छोटे बालक ने यह बात मान ली। बस, दोनों ने एक-एक जूती उठा ली और जाकर मौलवी साहब के सामने रख दी।

इन मौलवी साहब का नाम उस्ताद फ़र्राह था और ये दोनों बालक—जो सगे भाई थे, बग़दाद के ख़लीफ़ा मामूँरशीद के बेटे थे। उन दिनों ख़लीफ़ा मामूँरशीद मुसलमानों के सबसे बड़े बादशाह थे। इसी तरह उन दिनों उस्ताद फ़र्राह का नाम भी बहुत मशहूर था। वे ख़लीफ़ा मामूँरशीद के इन दोनों बेटों को—दोनों शाहज़ादों को—पढ़ना-लिखना सिखा करते थे।

जब ख़लीफ़ा को मालूम हुआ कि आ मौलवी साहब ने दोनों शाहज़ादों से अप जूतियाँ उठवाई हैं तो उन्होंने फ़ौरन मौल साहब को बुला भेजा। मौलवी साहब डरते-डर ख़लीफ़ा के सामने पहुँचे। परन्तु ख़लीफ़ा उनको बड़े प्रेम से अपने पास बिठाया। फि उनसे पूछा—"मौलवी साहब, आज दुनिया सबसे बड़ा कौन है और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त किसकी है?"

मौलवी साहब ने जवाब दिया—"आ दुनिया में सबसे बड़े आप हैं, और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त भी आपही की है; क्योंकि आ सब मुसलमानों के ख़लीफ़ा हैं—बादशाह हैं।"

ख़लीफ़ा ने कहा—"नहीं, आज दुनि में उस्ताद फ़र्राह सबसे बड़े हैं, इज़्ज़त उस्ताद फ़र्राह ही की सबसे ज़्यादा है; क्यों ख़लीफ़ा के प्यारे बेटे उनकी जूतियाँ उठाते हैं।"

मौलवी साहब मारे डर के पसीने-पसी हो गये और हाथ जोड़कर बोले—"हुज़ूर बड़ी ग़लती की जो शाहज़ादों से जूति उठवाईं। मेहरबानी कर मेरा क़ुसूर मा कीजिए।"

ख़लीफ़ा ने हँसकर कहा—"आप ड क्यों हैं जनाब! मैंने कोई झूठ बात नहीं कही आप मेरे बच्चों के उस्ताद हैं। इसलिए सचमु

या में आप ही सबसे बड़े हैं, और इज़्ज़त आपही की सबसे ज़्यादा है। सच मानिये, बात से मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आप मेरे बच्चों पनी ख़िदमत कराते हैं, और वे भी ख़ुशी-ी आपकी ख़िदमत करते हैं। उस्ताद, मा-और बादशाह की ख़िदमत करने से हमेशा त बढ़ती है। आज मेरे बच्चों ने आपकी जो ख़िदमत की है, उससे उनकी और मेरी भी इज़्ज़त बढ़ी है।"

इसके बाद ख़लीफ़ा ने उस्ताद फ़र्राह और दोनों शाहज़ादों को दस-दस हज़ार दरहम* इनाम में दिया।

---

*चार आने की क़ीमतवाला एक सिक्का।

मन्नो रानी

लेखिका, कुमारी शान्ती कपूर, कानपुर

मेरी बिब्बी मन्नो रानी, आदर्श कुमारि कहाती हैं।
बड़ी चिबिल्ली, बड़ी मसख़री, नहीं किसी से डराती हैं॥
जीजी जब पढ़ने बैठे, पुस्तक पर चढ़ जाती हैं।
क़लम तोड़ दावात उलटकर, मुँह सारा रँग लेती हैं॥
हरदम घर में उधम मचाती, पलँग कभी चढ़ जाती हैं।
चढ़ अलमारी ऊपर फ़ौरन चीज़ें सभी बहाती हैं॥
भड़भड़ भड़भड़ चीज़ें गिरतीं, माता दौड़ी आती हैं।
पकड़ हाथ औ' खींच कान, ग़ुस्से में फ़रमाती हैं—
"बिब्बी तुमने नाक में दम, अब मेरी कर डाली है।
कहाँ पै रक्खूँ चीज़ें सारी इतनी ऊँची अलमारी है॥
दुष्ट कहीं की चढ़ तू जाती, चीज़ें सभी बहाती है।
फेंक-फाँक औ तोड़-फाड़, तू दिन भर यही मचाती है॥
चिबिल्ली सारी निकलेगी, अब झूला एक मँगाती हूँ।
उसी पै नानों! दिन भर तुमको कुंडी में टँगवाती हूँ॥"
हार गये जब बाबू जी तो, झुनझुनू एक ख़रीद लाये।
बिब्बी रानी चढ़ीं ढुलकतीं, सब कमरा रह सजा सजाये॥
बच्चो कभी उधम मत करना, नहिं जाओगे टाँगे तुम भी।
बिब्बी रानी के समान ही, बदमाशी भूलोगे सब ही॥

भिखारी

लेखक, श्री जगदीश पाण्डेय

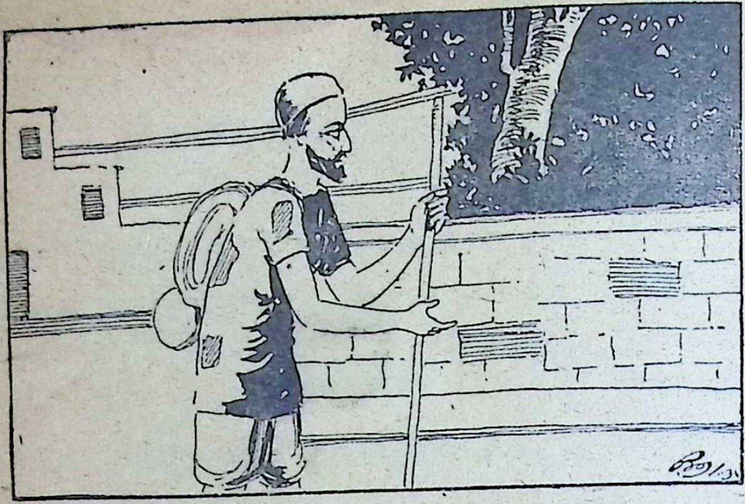

भिखारी

भिक्षा की झोली लेकर,

वृद्ध भिखारी आता है,
माँ-माँ कह चिल्लाता है,
माँ से भिक्षा पाता है,
आशीष मधुर दे-देकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

टल-मल-डगमग आता है,
गा-गा मधु बरसाता है,
द्वार-द्वार रुक जाता है,
मधुमय मृदु टेर लगाकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

आशा लेकर आता है,
लिये निराशा जाता है,
वह आशा को सेता है,
गरल निराशा का पीकर।
भिक्षा की झोली लेकर।

वज्रों का पुतला बनता है—
कटु डाँटें सहता है,
आहानिल में चलता है,
लघु जीवन-दीप जलाकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

सिटपिट हो फटकारों से,
सिमट-सिमट झटकारों से,
गड़ निर्मम व्यवहारों से,
वह रुकता है बढ़-बढ़कर,
भिक्षा की झोली लेकर।

पग-पग पर ठोकर खाकर,
भूखे कुत्तों से भिड़कर,
चिथड़ों में गुथकर—
जीता है मरते प्राण बचाकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

मानव-पग से पिस-पिसकर,
कुटिल वचन से छिद-छिदकर,
दीवारों से घिस-घिसकर,
भाग रहा है डर-डरकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

ओढ़े बस्ता की चादर,
घोर अँधेरे में छुपकर,
टल-मल-डगमग कर—
जाता शून्य सदन में छुप-छुपकर,
भिक्षा की झोली लेकर।

'बन की चिड़िया'

लेखक, श्रीयुत बालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव

किसी समय में एक राजा राज्य करते थे। ी प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था, सुखी थे। राजा का स्वभाव बड़ा उदार था। कुछ होते हुए भी वे दुखी रहा करते थे। का एकमात्र कारण था कि उन्हें कोई ान न थी। रानी भी इसी ण सदा दुखी रहा करती थी।

राजा को शिकार से बड़ा था। वे अपने हृदय का हलका करने के लिए में शिकार खेलने चले करते थे।

एक बार जब वे शिकार लौट रहे थे तो मार्ग में एक के नीचे विश्राम करने के रुक गये। उस समय वे बहुत थक गये दूर पर, किसी के बाँसुरी बजाने की ध्वनि के कानों में पड़ी। राजा मुग्ध हो गये उस तरफ़ बढ़े, जिधर से ध्वनि आ रही राजा ने देखा कि एक लड़का पेड़ पर र बाँसुरी बजा रहा है, नीचे गायें चर रही उस बाँसुरी की सुरीली आवाज़ से जंगल ंगल संगीतमय हो रहा था।

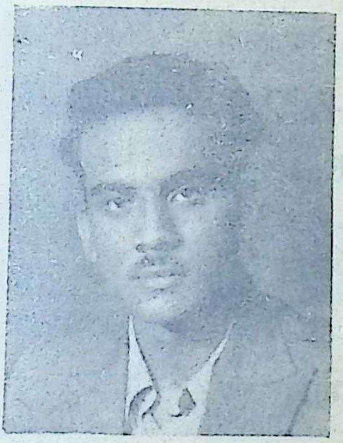

इस लेख के लेखक

राजा ने लड़के को अपने पास बुलाया कहा—"बेटा, तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें अच्छे-अच्छे कपड़े दूँगा, अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दूँगा और अपने साथ तुम्हें राजमहल में रक्खूँगा।"

लड़का तैयार हो गया। राजा ने उसका नाम रख दिया रणवीरसिंह। जब राजा महल में गये तो इस लड़के को देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके कपड़े आदि बदल दिये गये। रानी को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने रणवीरसिंह को अपने पुत्र के समान समझकर प्यार किया और रणवीरसिंह की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। वह बड़ी तीव्रबुद्धि का था, जो कुछ उसे बताया जाता उसे तुरन्त याद हो जाता था।

इसी बीच में रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राज्य में बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गईं।

इधर रणवीरसिंह अब बड़ा हो गया था। राजा ने उसे अपने यहाँ सेनापति बना लिया। उन्हें रणवीरसिंह पर इतना विश्वास था कि राजकोष की कुञ्जी भी उसे ही सौंप दी थी।

दस वर्ष बीत गये। रणवीरसिंह ने कई बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में विजय प्राप्त की। राज्य में सर्वत्र उसका नाम हो गया। राजा की कृपा

का पात्र था। रणवीरसिंह अपने कर्त्तव्य को भलीभाँति समझता था। बहुत से लोग इसके शत्रु भी हो गये।

राजा के मरने पर राजकुमार जब राजगद्दी पर बैठे तो नये राजा का लोगों ने कान भरना शुरू किया कि सारा गाँव सेनापति के अत्याचार से पीड़ित है। यदि इसी प्रकार अन्याय होता रहा तो राज-विद्रोह हो जायगा। इसके अतिरिक्त राजकोष से बहुत-सा धन हड़प कर लिया है।

राजा को विश्वास नहीं हुआ, वे स्वयं भेष बदलकर गाँव में गये। वहाँ लोगों से सेनापति के विषय में पूछा। सब ने कहा—"भाई, वे तो पूरे देवता हैं। सदा हमारे दुख-सुख में काम आते हैं।"

राजा को विश्वास हो गया कि लोग रणवीरसिंह की झूठी शिकायत करते हैं।

एक दिन राजा ने कहा—"रणवीरसिंह, आप राजकोष का हिसाब ठीक कर लें। मैं चार दिन बाद जाँच करूँगा।"

उसने कहा—"महाराज, यह चाबी लीजिए, आपका जब जी चाहे जाँच लीजिए, मेरा हिसाब सदा ठीक रहता है।"

राजा ने हिसाब देखा। पाई-पाई का हिसाब मिल गया। तब वे बड़े प्रसन्न हुए और उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

एक दिन राजा ने कहा—"सेनापति जी, मैं आपके घर चलूँगा।"

"सहर्ष महाराज!"—रणवीरसिंह ने कहा।

महाराज रणवीरसिंह के घर गये। वहाँ अच्छी तरह उनका स्वागत हुआ। चलते समय राजा ने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर चिड़िया पिंजड़े में रक्खी हुई है।

राजा ने कहा—"यह चिड़िया बड़ी सुन्दर है।"

रणवीरसिंह ने उत्तर दिया—"महाराज, यह बन की चिड़िया है। इसे देखकर मुझे अपना पुराना जीवन याद पड़ जाता है। ऊँचे पद को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को घमण्ड हो जाता है। घमण्ड के मद में वह पाप करने लगता है। यह चिड़िया मुझे सदा पाप से बचाती है। मेरे जीवन तक ही यह भी जीवित रहेगी।"

राजा रणवीरसिंह के इस विचार पर बड़े प्रसन्न हुए और उसे राजमंत्री बना लिया।

आयु-अंक-चक्र

लेखक, श्रीयुत शम्भूनाथ वाजपेयी

आज हम अपने पाठकों के सामने एक ुत चक्र उपस्थित करते हैं। कोई मनुष्य २४ तक के भीतर की आयु का हो तो इस -द्वारा उसकी आयु बतलाई जा सकती है।

रीति :—

नीचे लिखे हुए अंकों को किसी मनुष्य दिखलाओ और उससे पूछो कि किस ी लाइन में उसकी आयु के अंक पाये जाते जिन-जिन लाइनों में वह बतावे उन सबके र के अंकों को जोड़ लो। यही योगफल ड़) उसकी आयु की वर्षों में संख्या होगी।

उदाहरण :—

किसी की आयु १, २, ३ और ५ वीं ी लाइन में पाई गइ हो तो इन सबके ऊपर के १+२+४+१६ को जोड़ने से उसकी ु २३ साल की हुई।

(अंक-चक्र)

१	२	४	८	१६
३	३	५	९	१७
५	०	६	१०	१८
७	६	७	११	१९
९	७	१२	१२	२०
११	१०	१३	१३	२१
०	११	१४	१४	२२
१३	१४	१५	१५	२३
१५	१५	२०	२४	२४
०	१८	२१	०	०
१७	१९	२२	०	०
१९	२२	२३	०	०
२१	२३	०	०	०
२३	०	०	०	०
[illegible]	०	०	०	०

वसन्त !

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्र 'कवि-हृदय'

समय हुआ जाड़े का अंत ! आया प्रिय ऋतुराज वसन्त !
कोयल कूक रही डालों में ! भौंरे गूँज रहे तालों में !
बागों के पेड़ों के पात ! झरते रहते हैं दिन-रात !
वायु वेग से घूम रही है ! फूलों के मुख चूम रही है !
टेसू फूल रहा वन-वन में ! फूल खिले हैं नये चमन में !
फूल रहा आमों में बौर ! सुरभित होते हैं सब ठौर !
भौंरा फूलों से जीता है ! मीठा-मीठा रस पीता है !
पेड़ों ने कोपल नव धारे ! लोगों ने पहने पट प्यारे !
कलियाँ चटख रही हैं प्यारी ! ख़ुशबू क्या देती हैं न्यारी !
चिड़ियाँ फुदक-फुदक इठलातीं ! झाड़ों से यों बोल सुनातीं !
"यह वसन्त ऋतु मोददायिनी ! चार दिवस की चटक चाँदनी !
फिर आना अँधियारी रात ! दुखदाई गर्मी की बात !
काम करो, जिसको जो भावे ! गया वक़्त फिर हाथ न आवे !"

चिट्ठी-पत्री

सेवा में

श्री सम्पादक, "बालसखा"

प्रयाग

कृपया यह पत्र "बालसखा" में छापकर अनुगृहीत करें। मेरे पास देश-विदेश के पुराने और नये टिकट हैं। जो भाई या बहन वह बदलना अथवा मोल लेना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—वेदप्रकाश अग्रवाल

C/O

ला० आत्माराम चन्द्रभान अग्रवाल

२२३६ बीयन स्ट्रीट रावलपिण्डी

(पंजाब)

पूज्य सम्पादक जी

"बाल-सखा"

सादर नमस्ते!

मुझे बच्चों के चित्र इकट्ठे करने का अत्यन्त प्रेम है। अतः जो पाठक या फ़ोटोग्राफ़र, जिनके पास बच्चों के अच्छे चित्र हों, मुझसे पत्र-व्यवहार करें।

आपका—

सुबोधकुमार अग्रवाल

चूरू, (बीकानेर)

श्रीमान् सम्पादक जी सादर नमस्ते,

मुझे टिकट एकत्र करने का शौक़ है औ मेरे पास जगह-जगह के टिकट हैं। जो बाल-सख गण मुझसे टिकट बदलना चाहें, वे निम्नलिखि पते से अपने टिकटों को बदल सकते हैं।

आपका,

प्रेमनाथ अग्रवाल

आगरा

टिकट बदलिए

मुझे देश-विदेश के टिकट संग्रह करने क अत्यन्त प्रबल इच्छा है। मेरे पास इँग्लैण्ड, चीन जापान, अमेरिका, जर्मन, फ़्रांस, अबीसीनि और आस्ट्रेलिया इत्यादि के टिकट मौजूद हैं।

जो "बाल-सखा" के पाठक मुझसे टिक अदल-बदल करना चाहें वे नीचे लिखे पते प पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

पता—

सी० एल० पोद्दार

मारवाड़ी पाड़ा

सम्बलपुर

बी० एन० आर०

प्रश्न पहेली

(१)

स्वरमाला के प्रथम अक्षर,
छोड़ बनत है हीर।
जोड़ जात बनत है,
बतलाओ तुम वीर ॥
(अहीर)

(२)

सूखल लकड़ी सूखल फूल।
कभी कली कभी फूल ॥
(छाता)

—वीरेन्द्र कुमार "नव वर्ष" मनेर

(१)

साँकर कुइयाँ, सोंक न जाय।
हिरना पानी पी-पी जाय ॥
(गाय का थन)

(२)

दि कटे से दर बनें, मध्य कटे से कर।
त कटे से कद बनें, रहती हूँ मैं सबके घर ॥
(कदर)

—देवराम गूँगा (मारवाड़)

एक अचरज देखो चल।
सूखी लकड़ी लागा फल ॥
(बरछी)

—चन्द्रबली सिंह

मेरा है छोटा-सा जंगल,
लाखों पेड़ उगाता है।
एक टोकरा ढँक देने से,
सब जंगल ढँक जाता है ॥
(सिर)

—शिवकुमार माथुर
सलूम्बर

(१)

मेरा नाम तीन अक्षर का है। मेरा पहला अक्षर काट देने से मैं धूल बन जाता हूँ। आखिरी शब्द काटने से देवता बन जाता हूँ, बताओ मैं क्या हूँ ?

(सूरज)

(२)

अन्धा घोड़ा किस चीज़ को कहते हैं

(साइकिल)

(३)

लाल मुकुट मुर्ग़ा नहीं,
सब्ज़ रंग नहिं मोर।
दुम लम्बी बन्दर नहीं,
चार चरण नहिं घोड़।
(चारपाई)

भूरालाल भैरवलाल जैन, ए० ह्वी० स्कूल, गरोठ

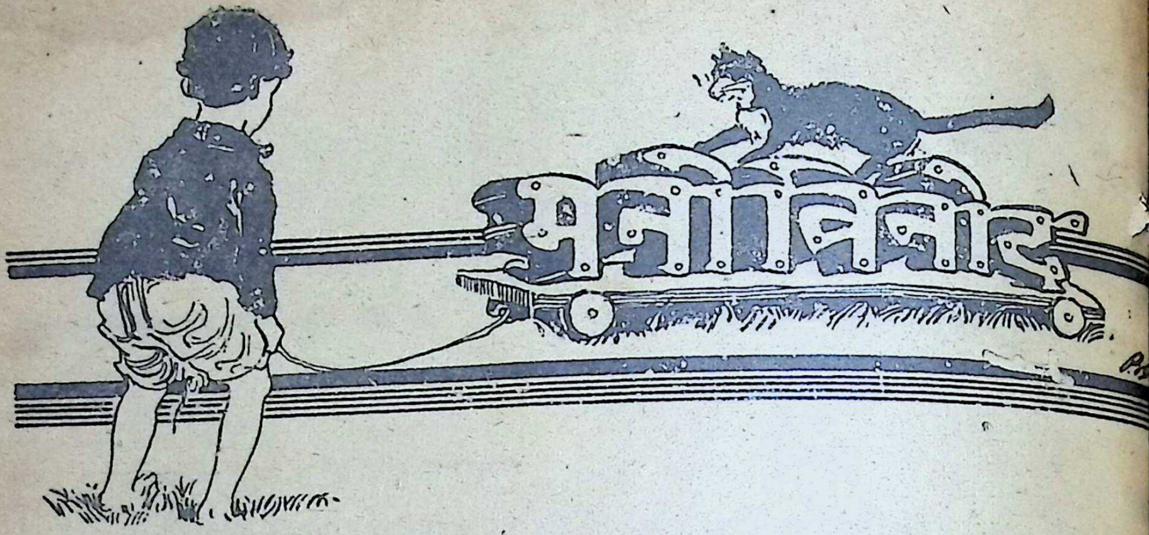

(१)

अध्यापक—(बिगड़कर) तुम बड़े गधे हो। तुम्हारी अक़्ल में पत्थर पड़े हैं। जब जार्ज वाशिङ्गटन तुम्हारी उम्र का था तो अपनी कक्षा में पढ़ने में सर्वप्रथम था।

छात्र—ठीक है, और वह जब आपकी उम्र का था तो अमेरिका का प्रेसीडेण्ट था।

(२)

मालकिन—तूने यह नोटिस कब पाई?

नौकरानी—जब मैं झाड़ू दे रही थी।

मालकिन—यह मैं नहीं पूछती, तुमने किस दिन पाई?

नौकरानी—जिस दिन ख़ूब बारिश हो रही थी।

(३)

अध्यापक (छात्र से)—तुमने तैरना कहाँ सीखा?

छात्र—पानी में।

(४)

नौकर—सरकार क्या कहूँ, जब मैं कोट ब्रुश से झाड़ रहा था तो हाथ से छूटकर खि से नीचे गिर पड़ा।

अफ़सर—(जो दूसरे ख़याल में लीन अच्छा हुआ, मैं नहीं पहने था; नहीं तो मैं गिर जाता।

(५)

अफ़सर—इस महीने में तूने इतने च के बर्तन तोड़े हैं कि तेरे पूरे वेतन से उ चौथाई मूल्य भी वसूल नहीं हो सकता। बतला क्या करूँ?

नौकर—तो वेतन बढ़ा दीजिए।

(६)

राम (अपने मित्र हरि से)—आप कल बेकार क्यों हैं?

हरि—इसलिए कि मेरी 'कार' ड्राइ गया है।

(७)

'आग क्यों नहीं जलाई'
'लकड़ी नहीं है'
'पहले क्यों नहीं कहा'
'पहले थी'

(८)

महेन्द्र (अपने मित्र श्याम से)—मेरे नेत्रों नी दूर देखने की शक्ति है कि मैं ढाई मील तक देख सकता हूँ।

श्याम—सर्वथा असम्भव, ऐसा नहीं हो ।

महेन्द्र—तो क्या चन्द्रमा इतनी दूर भी है ?

—बल्लभदास बिन्नानी, 'ब्रजेश', मिर्ज़ापुर,

(१)

एक समय एक लड़का एक हलवाई गया। उसने एक मिठाई की तरफ़ उँगली पूछा—"यह कौन-सी मिठाई है ?" हल- बोला—"खाजा !" लड़का कई बार —"खाजा ?" हलवाई—"हाँ !" लड़का उठाकर खा गया और घर जाने लगा ! ई—"हाँ, हाँ, कहाँ चले ? पहले पैसा दो ?" —"पैसा कहाँ का ! तुमने कहा खाजा; हम ये!" हलवाई चुप हो गया।

(२)

मोहन—अरे यार ! इधर-उधर की बात चलो हवा खाने चलें।

राम—क्या घर में रोटी नहीं मिली जो खाने जाते हो ?

(३)

रामू—क्यों, तुम्हारी आँखें आई हैं ?

श्यामू—अरे ! तो तुम्हारी आँखें कहाँ गई हैं !

—भोलासिंह क्षत्री, 'शिव' रायपुर

(१)

मालिक (नौकर से)—तुम तो अर्ज़ब गधे हो !

नौकर—जी सरकार, पहले मैं ऐसा नहीं था। जबसे आपके पास आया तभी से मेरी आदत बिगड़ गई।

(२)

मौलवी साहब—चपकन पायजामा इन दोनों की धुलाई क्या लोगे ?

धोबी—हुज़ूर, चपकन की धुलाई में पायजामा और पायजामे की धुलाई में चपकन लूँगा।

(३)

खरीदार (हलवाई से)—क्यों जी हलवाई, मैंने दो पैसे का दूध लिया उसमें भी मक्खी पड़ी है ?

हलवाई—बाबू जी, भला बताइए तो सही, दो पैसे के दूध में हाथी कहाँ से गिरा दूँ।

—गोविन्दराम मिण्डा, दार्जिलिङ्ग

(१)

जज—तुमने अपने अफ़सर के गोली मार दी, फिर....?

अभियुक्त—हाँ, फिर मैं बेतहाशा भागा।

जज—इसके बाद क्या....?

अभियुक्त—इसके बाद हुज़ूर, मेरी आँख खुल गई। सामने मेरे मित्र बैठे थे; उन्हें अपने सपने की चर्चा सुना रहा था कि पुलिस मुझे गिरफ़्तार करके ले आई।

—भूरालाल मेखला

सम्पादक का पत्र

श्री अवधेशनरायन दीक्षित लिखते हैं कि 'बाल-सखा' में ऐसी कहानियाँ छपती हैं जैसी कई बार छप चुकी हैं। उनका कहना है—'यद्यपि वे बिलकुल वैसी ही नहीं होतीं जैसे पहले छपी होती हैं।' हमारे पास ऐसी कहानियाँ लेखक भेजते हैं और वे 'बाल-सखा' में छप जाती हैं। 'बाल-सखा' के लेखकों से यह अनुरोध किया जाता है कि वे लेख भेजते समय यह ध्यान रखें कि वह लेख 'बाल-सखा' की किसी प्रति में न छपा हो। ऐसा करने से यह शिकायत दूर हो जायेगी।

× × × ×

'बाल-सखा' के ५९ पृष्ठ पर 'आश्चर्य की बातें' शीर्षक लेख छपा है जिसके लेखक श्री जसवन्तसिंह हैं। ग़लती से उनका नाम नहीं छपा है। पाठकगण कृपया उसको ठीक कर लें।

× × × ×

मालूम होता है मास्टर करीमबख़्स लड्डू के बड़े प्रेमी हैं; लेकिन 'बाल-सखा' हाथ में पहुँचते ही वे लड्डू भूल जाते हैं। इस विषय पर उन्होंने एक कविता भेजी है। जिसे हम 'बाल-सखा' के पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं:—

लड्डू में क्या रक्खा!

आया मेरा 'बाल-सखा',
रंग-बिरंगा 'बाल-सखा'।

लड्डू पेड़े दूध मलाई—
रसगुल्ले हैं नानखताई।
सूरज चन्दा और सितारे,
जगमग-जगमग करते न्यारे।
खेल-तमाशे उसमें अच्छे,
सारी दुनिया के भी बच्चे।

बड़े अनोखे क़िस्से भी हैं,
तरह-तरह के घिस्से भी हैं।

देखो! बैठे हैं भगवान्,
बालक करते उनका ध्यान।

कविताएँ भी हैं सुन्दर,
रीछ मदारी हैं बन्दर।

देखो तुम जो 'बाल-सखा',
फिर लड्डू में क्या रक्खा!!

× × × ×

नहीं छपेंगे—मेरी दारजिलिंग यात्रा—श्री छोटेल गुप्त। पाप और पुण्य का फल—श्री भोलासिंह। माता हृदय—श्री सुन्दरमल विद्यार्थी। हिन्दुस्तान और जा की हवा—श्री अवधेश नरायन। मनोविनोद—श्री जसवन् सिंह। हमारे बाबा जी—श्री बलवन्तराज। कहानी- शङ्करलाल साहु। रावर्ट ब्रूस की असाधारण वीरतायें औ दो जुड़वें भाई—श्री सुन्दरमल पातेसरिया। सेठ कहानी—श्री केदारदास गुप्ता गूगाँ। मूर्ख मित्र से विद्वा शत्रु ज्यादा अच्छा है—श्री सूरजनारायण। कहाँ गये दिन?—श्री नानकचन्द अग्रवाल। मौलवी साहब—श्री गं राम गूगाँ। सुनार—श्री रामस्वरूप गूगाँ। मुर्झाया हु फूल—श्री सोहनलाल माथुर। ब्राह्मण का भाग्य- सीताराम साधु। माँ—श्री पशुपति। बिल्ली और लोमड़ी- श्री विष्णुप्रसाद व्यास। बुलबुल से—श्री टोडरमल अवधिया

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press Ltd., Allahabad.

मज़ेदार कहानियों की कुछ नई पुस्तकें

अद्भुत कहानियाँ

इस पुस्तक में नौ कहानियाँ दी गई हैं। सभी कहानियाँ ऐतिहासिक काल की हैं, जिनमें एक-से-एक अद्भुत बातों का ज़िक्र है। इन कहानियों को पढ़कर बालक-बालिकाएँ आश्चर्य करेंगे, हँसते-हँसते लोट-पोट हो जायँगे। साथ ही उन्हें अपने देश के पुराने गौरव का हाल भी मालूम होगा। ये सभी कहानियाँ सचित्र हैं। पुस्तक बड़े आकार में और दो रंगों में छापी गई है। पुस्तक सजिल्द है। मूल्य ।।) आठ आने।

शंकर का दिग्विजय

इस पुस्तक में शंकर नामक एक नटखट किन्तु साहसी और मिहनती लड़के की सफलता की कहानी लिखी गई है। इस पुस्तक को पढ़कर बच्चे ख़ुश तो होंगे ही, साथ ही साहस करने के लिए उन्हें उत्साह प्राप्त होगा। मूल्य ।) चार आने।

लाल बौना

लेखक, पं० देवीदत्त शुक्ल, *'सरस्वती'*-संपादक

इस पुस्तक में शुक्ल जी ने कई रोचक कहानियाँ लिखी हैं, जिन्हें बच्चे बड़े चाव से पढ़ेंगे और ख़ुश होंगे। पुस्तक की एक प्रति बालकों के हाथ में अवश्य दीजिए। मू० ।) चार आने।

बाघ-सिंह के मुँह में

इस पुस्तक में अफ़्रीका महाद्वीप के घने जंगलों, बड़ी-बड़ी नदियों, उनमें रहनेवाले जलचरों और वनचरों का वर्णन किया गया है। इसमें दिखलाया गया है कि यात्रियों ने अपनी यात्रा में किस धैर्य और साहस के साथ काम लिया और कैसे उन्होंने बाघ-सिंह आदि आदमियों को खानेवाले पशुओं के मुँह में जाते-जाते अपने को बचा लिया। पुस्तक बड़े आकार की, सजिल्द और सचित्र है। पृष्ठ-संख्या ७० के लगभग; मूल्य ।=) छः आने।

बाघ और भालू की कहानी

इस पुस्तक में दो रोचक कहानियाँ दी गई हैं। एक बाघ की और दूसरी भालू की, जिन्हें पढ़कर बच्चे ख़ुश हो जायँगे। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। गेटअप सुंदर, मूल्य ।) चार आने।

दो मित्र

लेखक, पं० देवीदत्त शुक्ल, *'सरस्वती'*-संपादक

इसमें ७ कहानियों का संग्रह किया गया है। शुक्ल जी बालक-बालिकाओं की रुचि जानने में चतुर हैं। उन्होंने इस संग्रह में ऐसी सरल और रोचक कहानियाँ दी हैं जिन्हें बच्चे शौक़ से पढ़ेंगे। मूल्य ।=) छः आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवियों के काव्य-ग्रन्थ

श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह की कृतियाँ

माधवी—इस पुस्तक में लगभग साढ़े तीन सौ कवित्त तथा सवैये हैं। सभी एक से एक बढ़ कर हैं। प्रत्येक छन्द में कवित्व है और वह अपने निरालेपन की छाप रखता है। मूल्य १।) रु०।

❀ ❀ ❀

कादम्बिनी—ठाकुर साहब ने इसे बिलकुल नये ढङ्ग से, बहुत ही ओजपूर्ण भाषा तथा आकर्षक शैली में लिखा है। इसकी एक-एक पंक्ति कवित्वमय है। मूल्य १॥) रु०।

❀ ❀ ❀

मानवी—इसमें ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य १॥।) रु०।

❀ ❀ ❀

ज्योतिष्मती—यह अनुपम काव्य-ग्रन्थ ठाकुर साहब की ४६ भावपूर्ण तथा सरस रचनाओं का संग्रह है। यों तो इसकी सभी रचनायें हृदय में घर कर लेनेवाली हैं, किन्तु इसमें जो छोटे छोटे गीत संग्रहीत किये गये हैं, उनमें पीड़ित-आत्माओं का आर्तनाद सुनकर प्रभावित हुए बिना पाठक न रह सकेंगे। मूल्य १॥।) रु०।

श्रीयुत बालकृष्ण राव, आई० सी० एस० लिखित

कौमुदी—संग्रहीत कवितायें यद्यपि छोटी हैं पर हृदय में चुभनेवाली हैं। एक ओर व्रजभाषा के मुक्तकों में हमें पदावली की मँजी हुई प्रौढ़ता मिलती है, दूसरी ओर खड़ी बोली की नये ढङ्ग की कविताओं में कोमल और मधुर भावनाओं के अनुरूप भाषा की सहज स्वच्छन्द गति। दण्डक, सवैया आदि हिन्दी के पुराने छन्दों के प्रवाह में खड़ी बोली के पद्य उसी माधुर्य्य के साथ ढले हैं जिसे हमारे कान अच्छी तरह पहचानते हैं। मूल्य ॥) आने।

श्रीयुत पण्डित उदयशङ्कर भट्ट लिखित

तक्षशिला काव्य—यह काव्य भारत के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन करने के लिए लिखा गया है। इस परमोत्तम काव्य में जहाँ ऐतिहासिक तथ्यों को सुरक्षित रखने की चेष्टा की गई है, वहाँ ओज, प्रासाद तथा माधुय्य आदि काव्योचित गुणों का भी समुचित रूप से समावेश किया गया है। यह काव्य बहुत ही सरस, मधुर और हृदयग्राही है। मूल्य २।) रु०।

श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त की कृतियाँ

पल्लव—हिन्दी के काव्य-जगत् में युगान्तर उत्पन्न वाले लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीसुमित्रानन्दन पन्त की कविताओं का संग्रह है। इसमें संगृहीत कविताओं उत्तमता के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्य्याप्त है केवल इन्हीं कविताओं के बल पर हिन्दी-साहित्य अमर हो गये हैं। मूल्य १॥) रु०।

❀ ❀ ❀

ग्रन्थि—यह भी पन्त जी की कमनीय कविताओं संग्रह है। इसका कथाभाग बहुत ही संक्षिप्त है कवि ने अपनी अनोखी कल्पना के द्वारा इसे इतना विस्तृत कर दिया है कि पढ़कर चमत्कृत हो जाना है। मूल्य ॥।) आने।

❀ ❀ ❀

वीणा—इस पुस्तक में कविताओं की उत्तमता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि ये कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ की गीताञ्जलि की कविताओं के साथ मिलाकर गाई जा हैं। परन्तु मजाल नहीं कि इस संग्रह की एक कविता में रवीन्द्र बाबू की छाया का आभास मिल सके। मूल्य

❀ ❀ ❀

लेखिका, श्रीमती महादेवी वर्मा

इस संग्रह की प्रत्येक कविता में हिन्दी की लब्ध - प्रतिष्ठ लेखिका श्रीमती महादेवी जी वर्मा ने हृदय के अमूर्त भावों को भी नव नव उपमाओं एवं रूपकों - द्वारा बड़ी सुघड़ता के साथ सजीव रूप प्रदान किया है। मूल्य १) रु०

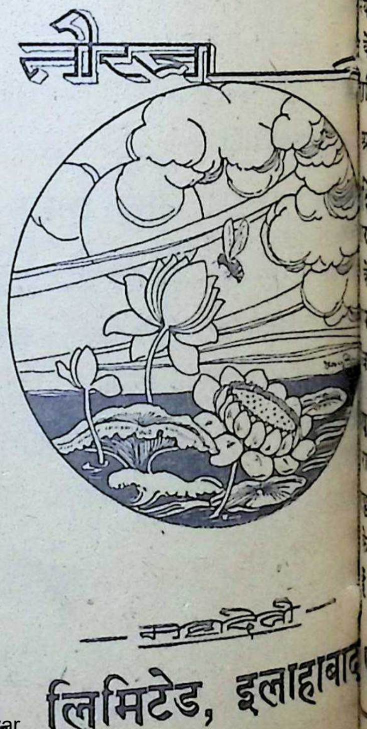

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मारी कुछ बहुत ही चुनी हुई पुस्तकें

अनुवादक—श्रीयुत इक़बाल वर्मा सेहर

की **रुबाइयाँ**—इस पुस्तक में अमर ख़ैयाम की
रुबाइयों का मूल ग्रन्थ से अनुवाद करके चित्र-
की डिज़ाइनों के भीतर दो रङ्गों में छापकर प्रका-
या गया है। भाव-पूर्ण और नयनाभिराम तिरंगे
युक्त पुस्तक की उत्तमता के सम्बन्ध में—
कवि पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने
—मैंने उमर की रुबाइयों के कई हिन्दी-अनुवाद
परन्तु जो प्रासाद, गुण और सौन्दर्य्य आपके
में है वह अन्यों में नहीं। आपके अनुवाद में कवि
की वास्तविकता वास्तविक रूप में सुरक्षित की गई
केवल ४) चार रुपये।

, श्रीयुत डाक्टर गोरखप्रसाद, डी० एस-सी०

फ़ी—सफल फ़ोटोग्राफ़र बनने के लिए जिन जिन
जानना आवश्यक है, वे सभी इस पुस्तक में दी
मूल्य ७) सात रुपये।

लेखक, श्रीयुत हरिनारायण मुकर्जी

स्वर-लिपि—इस पुस्तक में १७० से अधिक राग-
की सरल व्याख्या की गई है, साथ ही भारतीय
नवाभ्यासियों तथा उच्चकोटि के गायकों के लिए
रिक विधि बतलाई गई है। मूल्य केवल चार रुपये।

अनुवादक—पण्डित रूपनारायण पाण्डेय

ण—यह पुस्तक श्रीयुत चन्द्रशेखर सेन बैरिस्टर
के भिन्न भिन्न देशों में भ्रमण करके और हर एक
देखकर बड़े परिश्रम से लिखा है। इसे पढ़
घर बैठे संसार का भ्रमण कर सकते हैं। मूल्य
रुपये।

त्रा में छः मास—इस पुस्तक के लेखक—
मनारायण मिश्र, बी० ए०, पी० ई०एस० तथा बाबू
प्रसाद, बी० ए० एल-एल० बी० ने अपनी योरप की
अनुभव इस पुस्तक में बड़ी ही आकर्षक शैली में
। मूल्य ३) तीन रुपये।

विदेश की बात—पटना-कालेज के प्रोफ़ेसर पंडित कृपानाथ मिश्र के योरप-प्रवास की यह कथा पढ़कर बहुत-सी ज्ञातव्य बातें मालूम की जा सकती हैं। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

लेखक, पण्डित श्रीनारायण जी चतुर्वेदी

सम्राट पञ्चम जार्ज—संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-प्रसार-आफ़िसर श्री चतुर्वेदी जी द्वारा लिखित इस पुस्तक में सम्राट् पञ्चम जार्ज के जीवन तथा उनके समय की ब्रिटिश-साम्राज्य की अवस्था का चित्रण बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपया।

टीकाकार—रायबहादुर चम्पाराम मिश्र, बी० ए०,
एम० ए०, एस० बी०

कवितावली—यह गोस्वामी जी की कवितावली का ऐसा संस्करण है जिसकी टीका जनता और विद्यार्थी दोनों के काम की है। इस टीका में कथायें भी अधिक दी गई हैं और ऐसी अनुक्रमणिका लगाई गई है जिससे प्रत्येक छन्द का आसानी से पता लग सकता है। मूल्य १।।।) एक रुपया बारह आने।

लेखक, लाला लाजपतराय

दुखी भारत—इसे लाला जी ने मिस मेयो नामक अमेरिकन महिला की लिखी हुई मदर इंडिया के जवाब में लिखा था और उस अमेरिकन महिला ने भारतवासियों को कलङ्कित करने के लिए अपनी पुस्तक में जो बहुत ही मिथ्या और घृणित आरोप किये थे, लाला जी ने उनमें से एक एक बात का मुँह तोड़ जवाब दिया है। सजिल्द और सचित्र पुस्तक का मूल्य ५) पाँच रुपये।

लेखक, श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज

ज्ञानेश्वरी गीता—श्री स्वामी शङ्कराचार्य के मतानुसार श्रीमद्भगवद्गीता का मर्म समझाने के लिए ज्ञानेश्वरी नामक विशद टीका लिखी गई है। इस टीका में गीता के प्रत्येक श्लोक का भाव देखकर शांकर मत के अनुसार शुद्धाद्वैत मानते हुए भक्ति और ज्ञान का अत्यन्त सरस एवं हृदयग्राही निरूपण किया गया है। मूल्य ४) चार रुपये।

पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अध्यात्म-जगत् के चार अनमोल रत्न

संक्षिप्त कर्मयोग

इस पुस्तक में गीता के तत्त्वों का बहुत ही सरल और सूक्ष्म विवेचन किया गया है और जो कुछ लिखा गया है वह बहुत ही मनन और अनुभव के बाद लिखा गया है। मूल पुस्तक महाराष्ट्र के एक सुप्रसिद्ध दार्शनिक की कृति है और 'श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य के लेखक' प्रातःस्मरणीय तिलक ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। मूल्य केवल ।।) बारह आने।

⁂

गुरु-शिष्य-संवाद

यह पुस्तक अध्यात्म-विषयक है इसमें जीवात्मा-परमात्मा-सम्बन्धी ऐसे अनेक विषयों का विवेचन किया गया है, जिनका मनन करने से मनुष्य के हृदय में भगवान् के चरणों में अनुराग उत्पन्न होता है और मोक्ष-प्राप्ति का मार्ग उसके लिए बहुत कुछ सुलभ हो जाता है। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

⁂

ज्ञानेश्वरी गीता

महाराष्ट्र-प्रदेश के प्रमुख सन्त श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज ने श्री स्वामी शङ्कराचार्य्य के मत के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता का मत इस टीका के द्वारा विशद रूप से समझाया है। टीका की शैली इतनी सरल और रोचक है कि पुस्तक का इतना गहन विषय भी साधारण से साधारण पाठक के लिए भी बोधगम्य हो गया है। मूल्य ४) चार रुपये।

⁂

मनुष्य-विचार

यह पुस्तक अँगरेजी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक लेखक मिस्टर जेम्स एलन की पुस्तक का अनुवाद है इसमें जिन जिन बातों का समावेश किया गया है उसका मनन करके मनुष्य अपने जीवन को सुखमय तथा शान्तिमय बना सकता है। बुरी वासनाएँ तो उसके समीप आ ही नहीं सकतीं। मूल्य ।) चार आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बाल-गीता

गीता जैसे गम्भीर और कठिन ग्रन्थ का सारांश सरल और रोचक भाषा तथा आकर्षक शैली में लिखने में इस पुस्तक के लेखक ने कमाल हासिल किया है। इसे पढ़कर छोटे-छोटे बच्चे भी श्रीकृष्ण के गूढ़ उपदेशों का रसास्वादन करके कर्मक्षेत्र में उत्साह-पूर्वक अग्रसर होने के लिए प्रवृत्त होते हैं

मूल्य ।॥) बारह आने।

बाल-भागवत

(पहला भाग)

यह पुस्तक भागवत जैसे कठिन और शाल ग्रन्थ का सारांश है। भाषा भी की इतनी सरल और मधुर है कि बच्चे एक साँस में पढ़ जाते हैं। इसके द्वारा भक्ति से भरी हुई रोचक कथायें तो होती ही हैं, साथ ही वेदव्यास की ठी उक्तियों से उन्हें बहुत-सी शिक्षायें मिलती हैं।

मूल्य केवल ॥=) दस आने।

बाल-भागवत

(दूसरा भाग)

यह पुस्तक एक प्रकार से भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के जीवनचरित का सारांश है। इसमें उनके जीवन को आदि से अन्त तक की सभी घटनायें बहुत ही रोचक और सरल भाषा में लिखी गई हैं। इस पुस्तक को पढ़कर बालक जहाँ प्रसन्न होंगे, वहीं वे स्वयं भी बड़े बड़े काम करने के लिए उत्साहित होंगे। इसकी एक एक प्रति सभी हिन्दू बालक-बालिकाओं के हाथ में अवश्य होनी चाहिए।

मूल्य केवल ।॥) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परीदेश

लेखक, श्रीयुत श्रीनाथसिंह

मूल्य केवल ।=) छः आने।

यह पुस्तक छोटी अवस्था के बालक-बालिकाओं के लिए ख़ास तौर से लिखी गई है। यही कारण है कि इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने पाया, जिसके समझने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्रतिदिन के व्यवहार की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी गई हैं कि बच्चे उन्हें पढ़कर ख़ुशी के मारे उछल पड़ेंगे। पुस्तक बड़े आकार में है और रंग-बिरंगे चित्रों तथा फूल-पत्तियों की डिज़ाइनों से सुशोभित हैं। दो रङ्ग की स्याही में आदि से अन्त तक छपी होने के कारण यह और भी नयनाभिराम हो गई है।

मनोरञ्जक कहानियाँ

(पहला और दूसरा भाग)

सम्पादक, पण्डित देवीदत्त शुक्ल

मूल्य ।) चार आने प्रत्येक भाग का।

इस पुस्तक में बहुत-सी मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद कहानियाँ प्रकाशित की गई हैं। इन कहानियों के पढ़ने से बालकों का भाषा-सम्बन्धी ज्ञान तो बढ़ता ही है, साथ ही उनमें लौकिकता भी आती है।

सिकन्दर

लेखक, शम्भूदयाल सक्सेना

मूल्य ।=) छः आने।

इस पुस्तक में वीरवर सिकन्दर की जीवन-घटनाओं तथा उसके स्वभाव और चरित्र का वर्णन है। सिकन्दर किस किस देश में किस प्रकार गया, कहाँ उसने किस प्रकार विजय प्राप्त की और उसके स्वभाव का उसके जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ा, ये सभी बातें इसमें बहुत ही रोचक भाषा में विस्तारपूर्वक लिखी गई हैं।

अनजान देश में

(पहला और दूसरा भाग)

सम्पादक, पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र

मूल्य ।=) छः आने प्रतिभाग।

इस पुस्तक में एक ऐसे बुद्धिमान तथा साहसी आदमी की कहानी लिखी गई है, जो अत्यन्त ही शीतल, अन्धकारमय तथा निर्जन प्रदेश में भी अपने आपको जीवित रख सका और अन्त में एक देश का सर्वेसर्वा बन बैठा। इस कहानी को पढ़ने से सुकुमारमति बालकों को यह अनुभव करने का अवसर मिलेगा कि प्रतिकूल परिस्थिति में पड़कर भी मनुष्य यदि धैर्य्य का अवलम्बन कर सके तो किसी न किसी दिन उसका मार्ग अवश्य ही सुगम हो जायगा। पुस्तक बहुत ही रोचक है।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारे तीन ऐतिहासिक ग्रन्थ

मौर्य्यसाम्राज्य का इतिहास

लेखक, श्रीयुत सत्यकेतु विद्यालङ्कार

मौर्य्यकालीन भारत का यह बहुत ही प्रामाणिक और क्रमबद्ध इतिहास संस्कृत, पाली, प्राकृतिक तथा अँगरेज़ी आदि भाषाओं के कितने ही प्रामाणिक ग्रन्थों का मन्थन करके लिखा गया है। इसकी उत्तमता और मौलिकता का यही एक सबसे बड़ा प्रमाण है कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने इसके लिए लेखक को १२००) का मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया है।

मूल्य ५) पाँच रुपये।

योरप का इतिहास

लेखक, भाई परमानन्द, एम० ए०

योरप का यह इतिहास बहुत ही प्राञ्जल और ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया है। इसमें रोम, यूनान आदि देशों के उत्थान-पतन का हाल पढ़कर पाठक जहाँ चकित होते हैं, वहाँ योरप के सभी देशों में धीरे-धीरे राजा की निरङ्कुशता का अन्त होते तथा प्रजा को सामूहिक शक्ति का प्रभाव बढ़ते देखकर प्रसन्न भी होते हैं। अमेरिका के स्वातन्त्र्य युद्ध का विवरण पढ़ने से तो पराधीन जातियों में स्फूर्ति आ जाती है।

मूल्य ४) चार रुपये।

फ्रांस का इतिहास

फ्रांस का इतिहास कितनी रहस्यमयी घटनाओं से पूर्ण है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। वहाँ की राज्यक्रांति में अत्याचार-पीड़ित जनता ने जो उग्र रूप दिखाया था, उसका विवरण पढ़कर विस्मयाभिभूत हो जाना पड़ता है। मूल्य ३) तीन रुपये।

ता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रभात बाबू के उपन्यास और कहानियाँ

यदि आप ग्राम्य और नागरिक दोनों ही प्रकार के जीवन के सजीव चित्र देखना चाहते हैं तो बँगला के सुप्रसिद्ध कहानी और उपन्यास-लेखक प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की रचनायें अवश्य पढ़िए।

(कहानियाँ) २॥)

(कहानियाँ) २॥)

(कहानियाँ) १)

नव-कथा
(कहानियाँ) १॥)

नवीन संन्यासी
(उपन्यास) ३॥)

पञ्चपल्लव
(कहानियाँ) १॥)

पत्रपुष्प
(कहानियाँ) १॥)

रत्नदीप
(उपन्यास) २

षोडशी
(कहानियाँ) २

सिरीज़ का प्रकाशन पहली जनवरी से आरम्भ

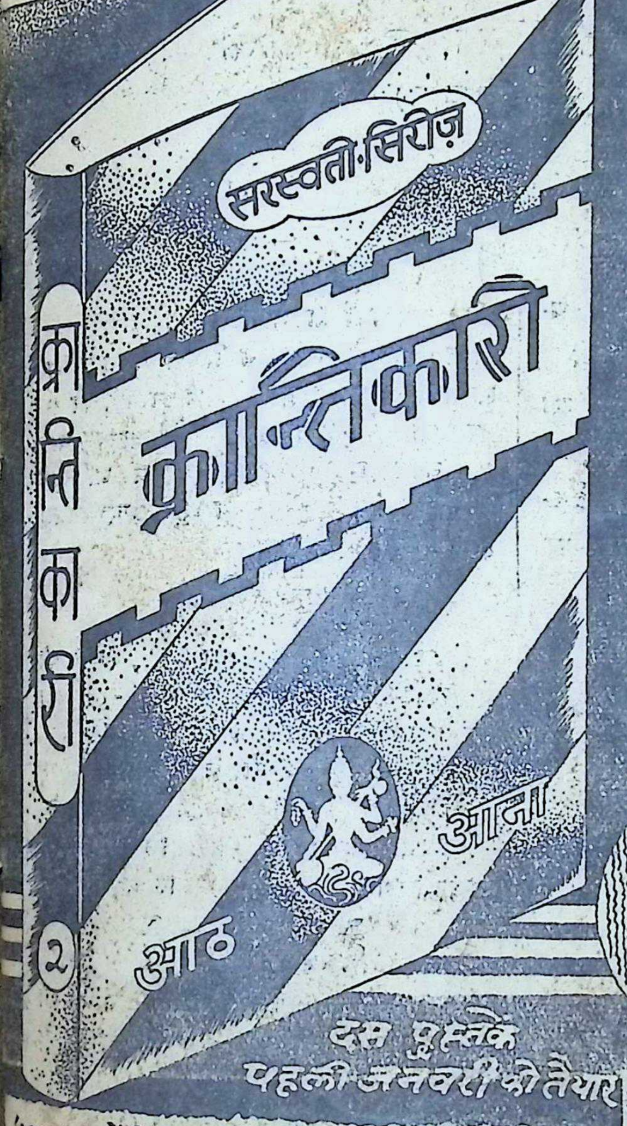

हमारी प्रथम योजना १०० पुस्तकें प्रतिवर्ष के हिसाब से ५ वर्ष में ५०० पुस्तकें निकालने की है। ये पुस्तकें सभी मुख्य-मुख्य विषयों पर होंगी और इनसे एक सुन्दर

घरेलू-पुस्तकालय

बन जायगा। प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ-संख्या २००-२५०, गेट-अप सुन्दर और मूल्य ।=) आठ आना होगा।

ग्राहक बनने के नियम

प्रत्येक पाठक (क) सिरीज़ की कुल पुस्तकों के लिए, (ख) कुछ विभागों की कुल पुस्तकों के लिए या (ग) चुनी हुई किन्हीं २० पुस्तकों के लिए ग्राहक बन सकता है।

पेशगी चंदा १०) है।

२० पुस्तकें मिल जाने के बाद यह फिर से जमा होगा। पोस्टेज-पैकिंग माफ़ रहेगा। चुनने के लिए पूरी पुस्तकों की सूची फ़ार्म भर कर आने पर भेज दी जायगी।

निम्नलिखित १० पुस्तकें पहली जनवरी को तैयार हो जायँगी।

१ दैनिक जीवन और मनोविज्ञान २ क्रान्तिकारी ३ समरकंद की सुन्दरी ४ चक्रभेद ५ रूसी कहानी-संग्रह ६ सूर-संदर्भ ७ रामकृष्ण चरितामृत ८ आधुनिक जापान ९ पृथ्वी का इतिहास १० मेरा संघर्ष (हिटलर)

सरस्वती-सिरीज़, इंडियन प्रेस, लि॰ प्रयाग

५०० पुस्तकें निम्न प्रकार से १० विभागों में निकलेंगी—

विचारधारा	५०	विश्व उपन्यास	५०	आधुनिक उपन्यास और नाटक	५०
कहानी-संग्रह	५०	रहस्य-रोमांच	१००	ऐतिहासिक विचित्र कथा	५०
विज्ञान	३०	जीवनचरित्र	२०	हिन्दी-साहित्य	६०
		धर्मग्रन्थ	४०		

मेरा नाम पूरी सिरीज़ के / विभाग के / २० पुस्तकों के ग्राहकों में लिख लीजिए।

चन्दा वी॰ पी॰ भेजकर वसूल कर लीजिए। / मनीआर्डर से भेज रहा हूँ।

नाम ____________________

पता ____________________

हमारी एक
महत्त्वपूर्ण
नई
पुस्तकमाला

बङ्किम-ग्रंथावली

(उपन्यास-सम्राट् श्री बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय के
सर्वोत्कृष्ट उपन्यास)

हिन्दी-
उपन्यास
साहित्य
उथल-पुथ

अनुवादक, श्री सूर्य्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'

चन्द्रशेखर

यह उपन्यास बंकिम बाबू की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से है। इसमें दो युवक-युवतियों के सच्चे प्रेम की कहानी के साथ-साथ बंगाल के उस समय की दशा का चित्रण किया गया है, जब वहाँ के अन्तिम नवाब मीरक़ासिम और ईस्ट-इंडिया कंपनी में संघर्ष चल रहा था। मूल्य केवल १) एक रुपया।

कृष्णकान्त का विल

इस उपन्यास में एक हिन्दू-महिला का बड़ा ही करुणापूर्ण चित्रण है। हिन्दू-महिला मरते दम तक अपने पति को अपना सर्वस्व समझती है, यह इस उपन्यास में बड़ी ख़ूबी से चित्रित किया गया है। मूल्य केवल ॥।) बारह आने।

कपाल-कुण्डला

कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोक-प्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं। कपाल-कुण्डला के अभी तक जितने अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर है। मूल्य ॥।) बारह आने।

आनन्दमठ

मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने के लिए बंगाल में वैष्णवों और सन्तानों ने जो विद्रोह किया था उसी का इस उपन्यास में बहुत रोचक वर्णन है। इस उपन्यास को पढ़कर मातृभूमि के उद्धार के लिए जी फड़क उठता है। इसमें देश-प्रेम का बहुत सुन्दर चित्रण है। मूल्य १) एक रुपया।

रजनी

इस उपन्यास की नायिका रजनी, माली की एक अंधी लड़की है। उसके गुप्त जन्म-रहस्य को आगे चलकर अमरनाथ नामक एक व्यक्ति प्रकट कर देता है। वह रजनी से आंतरिक प्रेम भी करता है। परन्तु रजनी उसे नहीं चाहती। अंत में अमरनाथ उसके लिए एक महान् त्याग करके साधु हो जाता है। मूल्य ॥) आठ आने।

देवी चौधरानी

इस उपन्यास में बङ्किम बाबू ने बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। 'कुलीन प्रथा' के कारण ब्राह्मण-बालिकाओं को किस प्रकार की दुर्दशा भोगनी पड़ती थी, उसकी भी एक झाँकी इस उपन्यास में दिखाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

शीघ्र ही बङ्किम-ग्रंथावली की ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखवाइए या वी० पी० मँगाइए।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

दिसम्बर १९४४
फरवरी १९४२

हमारी एक महत्त्वपूर्ण

ची

... ६५
—भगदड़—[परिडत मोहनलाल नेहरू ... ६६
—वरदान ! (कविता)—[श्रीयुत सुन्दरलाल वर्मा, "लाल" ६७
—पहले और आज के युद्ध—अस्त्र-शस्त्र—[श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी, 'व्रजेश', मिर्ज़ापुर ... ६८
—जाड़े की जड़ता (कविता)—[श्रीयुत बाबूराम द्विवेदी 'वारिद', कानपुर ७२
—पाँच भाई—[श्री तारा वहन मोड़क—अनु०, श्रीयुत काशीनाथ त्रिवेदी ७३
—फूल हमेशा मुस्काता (कविता)—[श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी ७६
-ऐवटईटर—[श्रीयुत प्रह्लादनारायण रायज़ादा, एम० ए०, बी टी ७७
-मृत्यु की पुकार—[श्रीयुत विद्यार्थी सूर्यदेव कक्कड़ ७८
मेरी कश्मीर-यात्रा —[सौ सुश्री शशिकला देवी ८०
राजकुमारी और नमक—[श्रीयुत वसन्त-कुमार तिवारी ८५
चन्दा मामा (कविता)—[श्रीयुत लक्ष्मण भट्ट, गोपाल ८६
१३—संख्याओं का चमत्कार—[श्रीयुत वंशीधर मिश्र, एम० एल० ए० ... ... ८७
१ —मेरी मिठाई (कविता)—[श्रीयुत ज्ञानचन्द्र जी मिश्र ८८
१५—"मैं"—[श्री पुष्पलता हूजा "विदुषी" ... ८९
१६—मन से (कविता)—[श्रीयुत बलदेवप्रसाद श्रीवास्तव 'शेष' ९०
१७—नंगा भूत—[कुमारी निर्मला माथुर ... ९१
१८—सवेरा (कविता)—[श्रीयुत मदन नोपनीवाल ९२
१ —"कुम्हार का लड़का"—[श्रीयुत श्रीपालसिंह ९३
२०—भावी आशा (कविता)—[श्री शकुन्तला सिरोठिया ९५
२१—सबसे बड़ा कौन ?—[श्रीमती सूर्यकुमारी जैन, खैरागढ़ ९६
२२—समय का फेर फार—[कुमारी ऊषा (गाय-तोण्डे) कैमोर ९८
२३—चिट्ठी-पत्री १००
२४—मनोविनोद १०१
२५—पुस्तक-परिचय १०२
२६— प्रश्न-पहेली १०३
२७— सम्पादक का पृष्ठ १०४

चित्र-सूची

१—रंगीन चित्र... ... ... मुखपृष्ठ
२—पहले और आज के युद्ध—अस्त्र-शस्त्र-सम्बन्धी ५ चित्र ६८-७२
३—मेरी कश्मीर-यात्रा-सम्बन्धी ३ चित्र ... ८१-८४
४—"कुम्हार का लड़का"-सम्बन्धी १ चित्र ... ९३

ालसखा

दिसम्बर १९४४

वार्षिक मूल्य २॥)
एक प्रति का =)॥

विषय-सूची

कहानी

१—प्यारी पतङ्ग—श्रीयुत 'विद्यार्थी' ३६१
२—चींटियों के शहर में बाढ़—श्रीयुत गोपालकृष्ण सिंघानिया ३६३
३—हीरों का द्वीप—श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ३६५
४—लेखा-जोखा—श्रीयुत जगदेवनारायण ... ३७१
५—'हीरो' की बात—श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए० ३७३
६—राजकुमार और उसके साथी—श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश" ३७७
७ - वनशोभा और नागराज—श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव 'प्रकाश' ३८०

कविता

१—बाल-विनय—श्रीयुत रामसिंहासनसहाय 'मधुर' ३५५
२—मेरा भैया—श्री लीलावती ३६२
३—मेरी रेल—श्रीयुत 'सुधीर', बी० ए० ... ३६४
४—भालूवाला—श्री अशोक, बी० ए० ... ३७२
५—बकरी की आदत—श्रीयुत 'विभूति' ... ३७४
६—गीत—श्रीयुत सुरेशकुमारदेव 'सुमन' ... ३७६
७—मेरा भण्डार—श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर' ... ३७८
८—छुट्टी का घण्टा—जाड़े की ठंडी हवा—श्रीमती प्रेमलता वर्मा ३७९

लेख

१—प्राचीन काल के जीवजन्तु—श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य
२—अद्भुत जीव-जन्तु—श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश' ... ...

फुटकर

१—अच्छी बातों का बग़ीचा ... ..
२ - उत्तर दो इनाम लो ... ...
३—क्या तुम जानते हो ... ...
४—पाठकों के पत्र ... ...
५—तुममें कितनी बुद्धि है ... ...
६—छोटे बच्चों के लिए
चन्दा—श्रीयुत जयन्त वर्मा ... ...
रेल का खेल—श्रीयुत धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया ...
कबड्डी—श्रीयुत सत्यनारायण शर्मा ...
७—मनोविनोद ... ...
८—प्रश्न-पहेली ... ...
९—सम्पादक का पृष्ठ ... ...

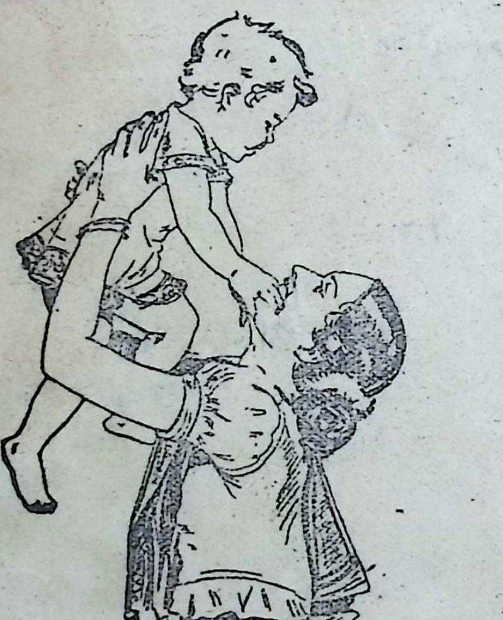

कमज़ोर और कृश बच्चे

डोंगरे बालामृत

के इस्तेमाल से ताकतवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

सच बात है—

कि बहुत ही छोटे बच्चों को खाना और खेलना ये
चीज़ें बहुत ही पसन्द आती हैं। किन्तु इसके बाद कोई
उन्हें प्रिय लगती है तो वह है रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाली कवि
कहानी की पुस्तकें। नीचे हम छः पुस्तकों के नाम लिख रहे
इनमें से प्रत्येक पुस्तक इतनी मज़ेदार है कि बच्चे उन्हें पढ़
प्रसन्नता से लोटपोट हो जायँगे।

सद्गुणी बालक ... १।-)
मज़ेदार ख़ज़ाना ... ॥)
सोने का पेड़ ... ॥≡)
अनोखी कहानियाँ ... ।-)
लकड़ी का घोड़ा ... ॥≡)
बाल-कवितामाला ... ॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बालक-बालिकाओं के लिए

कविता का अपूर्व झरना

पं० रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं को
बड़े शौक़ से पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह उसी
की रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सम्पादक { लल्लीप्रसाद पाण्डेय
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

२८] दिसम्बर १९४४—पौष २००१ [संख्या १२

बाल-विनय

लेखक, श्रीयुत रामसिंहासनसहाय 'मधुर'

ूरज चाँद सितारे चमचम—
चमक रहा है प्यार तुम्हारा।
क किरन हमको मिल जाये,
चमक उठे संसार हमारा॥
ैसे सूरज चाँद सितारे,
चढ़कर नील गगन में चमकें;
ैसे हम बचपन में चमकें,
जीवन के मधुवन में चमकें॥
न में चमकें, वन में चमकें,
मिलता रहे दुलार तुम्हारा।
ूरज चाँद सितारे चमचम—
चमक रहा है प्यार तुम्हारा॥

ख़ूब बनाया अचल हिमालय,
वैसे ही हम धीर बनेंगे।
सात समुन्दर जितने गहरे,
उतने हम गम्भीर बनेंगे॥
यह जीवन प्रतिदिन महान् हो,
ऐसा हो वरदान तुम्हारा।
एक-एक अपने बच्चे से,
चमके हिन्दुस्तान हमारा॥
हम हैं राजकुमार तुम्हारे,
ऐसा हो शृङ्गार हमारा।
सूरज चाँद सितारे चमचम—
चमक रहा है प्यार तुम्हारा॥

प्राचीन काल के जीव-जन्तु

लेखक, श्रीयुत भवानीचरण भट्टाचार्य

मनुष्य के पहले पृथ्वी पर जीव-जन्तु पैदा हुए। स तरह पृथ्वी पर अनेक तरह के जीव-जन्तु रहते उसी तरह हवा और पानी में भी हज़ारों तरह के व-जन्तु रहते हैं। बहुत समय हुआ, जब हम लोग ने सभ्य नहीं हुए थे तब लोग जङ्गलों में रहते और जानवरों को मारकर खाते थे। धीरे-धीरे वे घर ाकर रहने लगे, खेती करके खाने की चीज़ें पैदा ने लगे। ज्यों-ज्यों मनुष्य सभ्य होने लगे, उन्होंने उन जानवरों को मारना शुरू किया ! इस तरह उनक वंश नष्ट होने लगा। उस समय के जीव-जन्तुओं औ आज के जीव-जन्तुओं में बहुत अन्तर हो गया है प्राचीन काल के जीव-जन्तु बहुत बड़े होते थे। ज जीव पहले ताड़-से लम्बे थे अब वही बहुत छो आकार के पाये जाते हैं। प्राचीन काल के जीव जन्तुओं की जो हड्डियाँ पाई गई हैं उन्हें देख कर आज हमें बहुत अचरज होता है। दरिया घोड़े का शरीर बहुत विशाल होता है। प्राची काल के दरियाई घोड़े का शरीर तो और भ विशाल होता था। यह ज़मीन और पानी दोन में रहता है।

मनुष्य जीव-जन्तुओं का वंश-लोप कर रहे हैं।

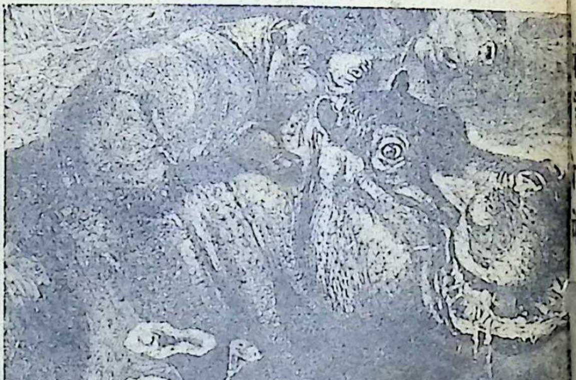

दरियाई घोड़ा

रेंगनेवाले जानवर जैसे साँप, छिपकल आदि, जिन्हें आज हम बहुत छोटे-छोटे देखते है पहले बहुत बड़े आकार के होते थे। ये जानवर हाथी के आकार के होते थे। उनके दाँत बहुत तेज़ होते थे। वे ज़मीन पर रेंगते थे, पानी मे तैर सकते थे और हवा में भी उड़ सकते थे उनमें जो ज़मीन पर रहने लगे वे रेंगने के कारण लम्बे आकार के हो गये, जैसे साँप, गिरगिट, छिपकली हवा में उड़नेवाले इस जाति के जीवों का नाम आर्क्योपोट्रिस था। ये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जा

थे। इनके दाँत भी होते थे। इसी तरह केरो-त नाम का भी एक जीव था। यह बड़ा विचित्र था किसी ने देखा है इसमें सन्देह है। इसकी हड्डियाँ देश में मिली थीं। इसमें उड़ने की शक्ति थी।

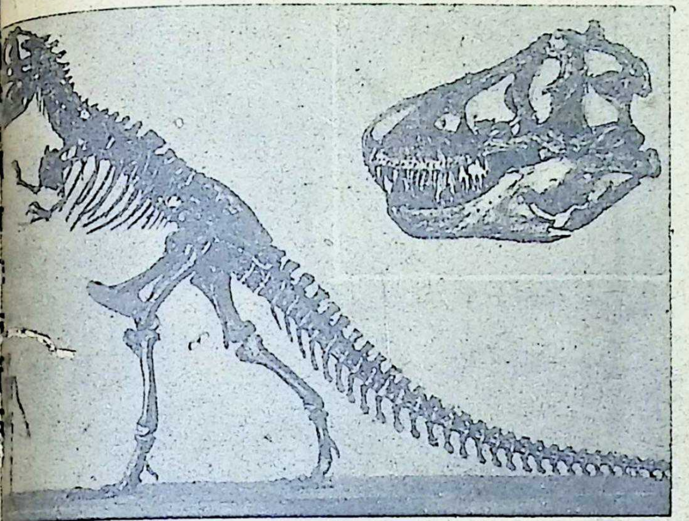

टिरानोसेरस और आदमी का ढाँचा

इस जानवर की हड्डियाँ देखकर आप समझ हैं कि इसका रूप पक्षियों की भाँति था पर इसके इसलिए यह पक्षी नहीं कहा जा सकता। इसके बाल नहीं थे। अमरीका और इँगलैण्ड में भी इस

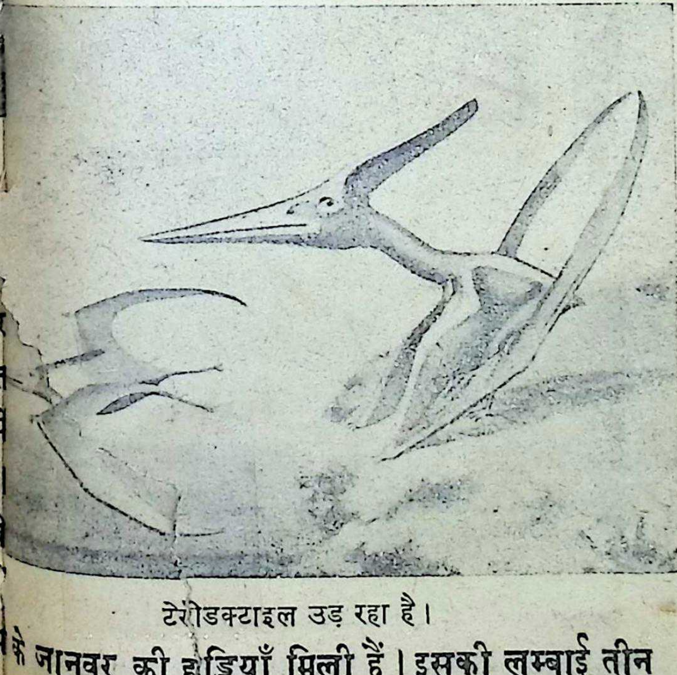

टेरोडक्टाइल उड़ रहा है।

के जानवर की हड्डियाँ मिली हैं। इसकी लम्बाई तीन थी। पङ्ख भी लम्बे थे। ये मांसभोजी थे। इस तरह के नहीं पाये जाते।

लन्दन के अजायबघर में एक प्रकार के जानवर की हड्डियाँ हैं जिसे टोरो कहते थे। ये मारीशस द्वीप में पाये जाते थे। इनके पङ्ख छोटे थे इसलिए ये उड़ नहीं सकते थे। न्यूज़ीलैंड में मोआ जाति का एक पक्षी था, जिसकी उँचाई आदमी के बराबर थी। आजकल भी एपटीरिक्स और जीऊई नामक पक्षी पाये

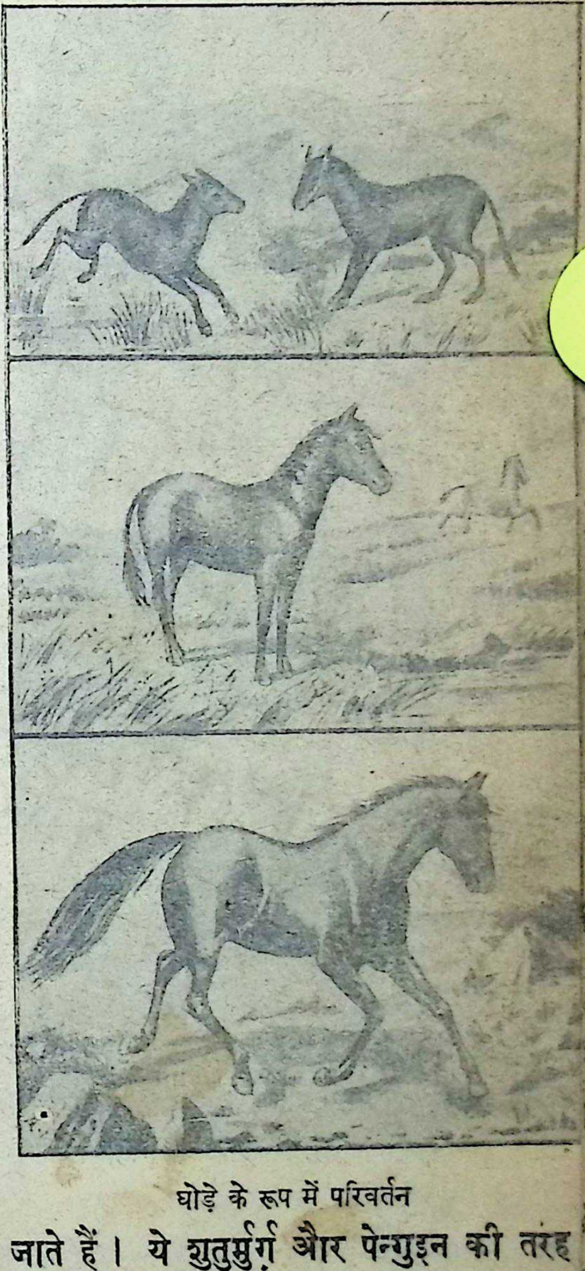

घोड़े के रूप में परिवर्तन

जाते हैं। ये शुतुर्मुर्ग़ और पेन्गुइन की तरह उड़ नहीं सकते। मोआ पक्षी की तुलना में ये छोटे थे। ओक न्यूज़ीलैंड में हज़ारों की

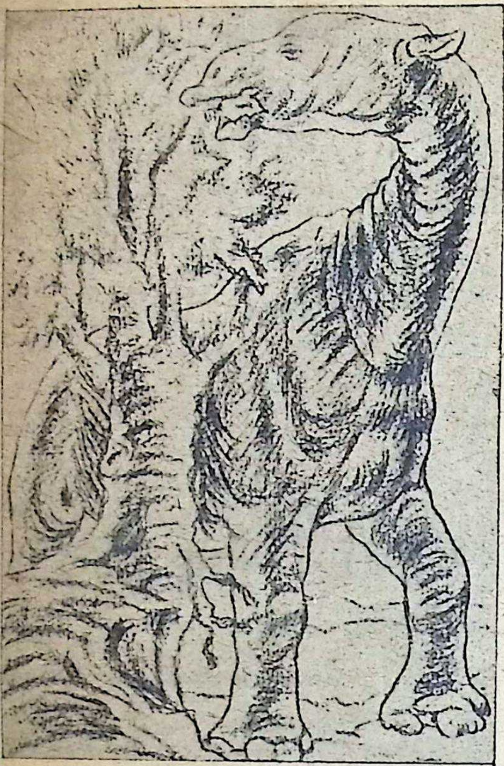

डायना सारस जाति का जीव

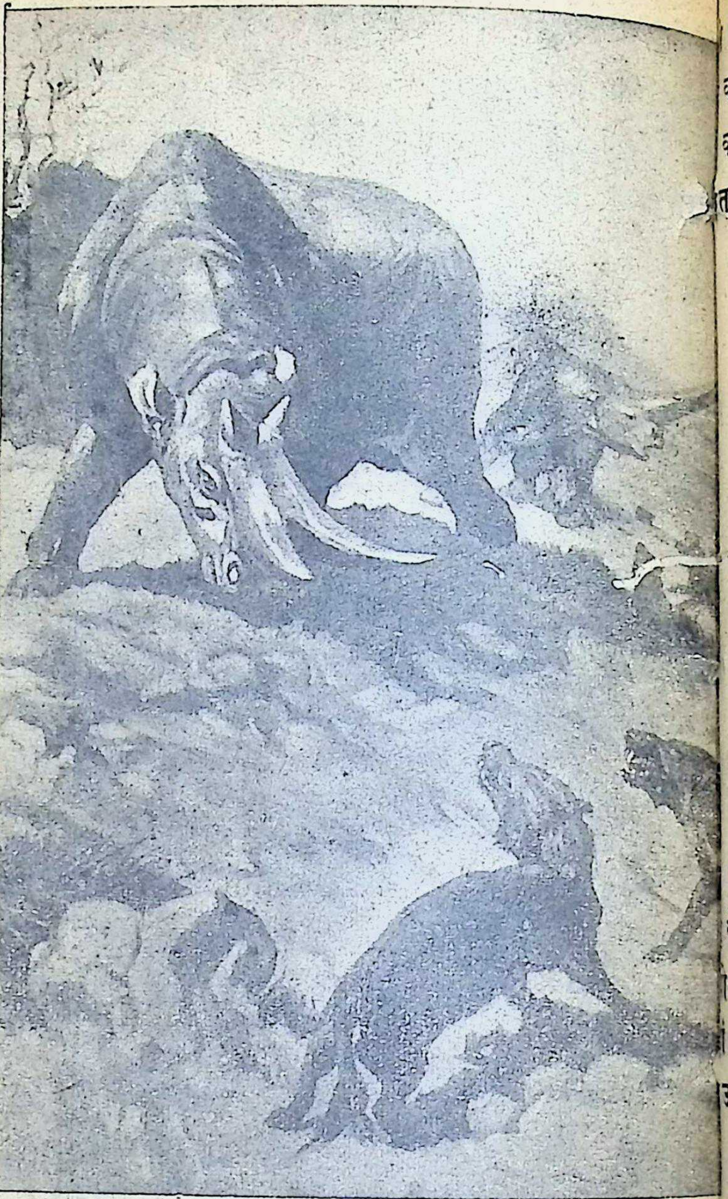

अर्सीनोहथीरियन

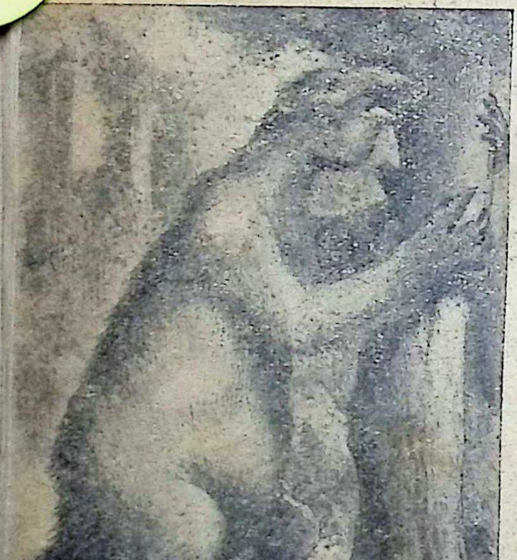

पुराने समय का स्लाथ

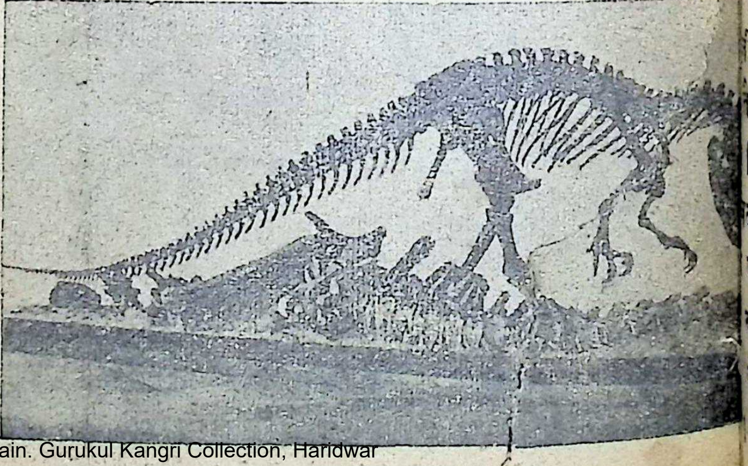

अल्लाशरस का ढांचा

। उनका अंडा मिला है। एक-एक का दाम हज़ारों रुपया है। अोक के की तरह और भी जानवरों का अंडा ता है।

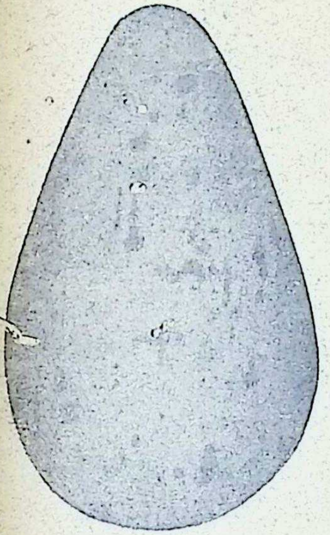

अोक पक्षी का अंडा

घोड़ा हम सभी ने देखा है। वह कई के काम में आता है। प्राचीन काल ड़ा गीदड़ की भाँति था। चित्र में की तस्वीरें देखकर समझ सकोगे उनमें अब कितना अन्तर हो गया है।

पूगुअन डोन नाम का भी एक जीव जाता था जो आकार में बहुत बड़ा हुए भी मांसभोजी नहीं था। शाक- खाकर ही वह जीवित रहता था। र सकता था। उसके दो पैर थे पर यह बिल्कुल बदल गया। इसके पैर पङ्ख दल गये। मेघासालरस नाम का भी जीव होता था जिसकी हड्डियाँ मिली यह ४० से ५० फ़ुट तक लम्बा होता और घास-पात खाकर गुज़र करता रेंगनेवाले जीव ७० फ़ुट लम्बे थे। एटलांटासोरस की लम्बाई

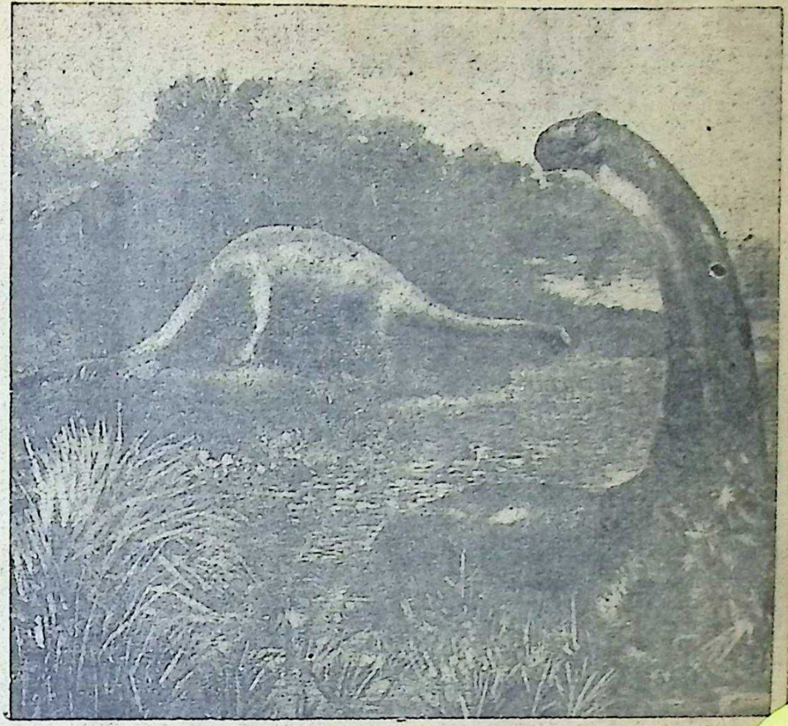

घास-पात खानेवाले ब्रांटोसारस

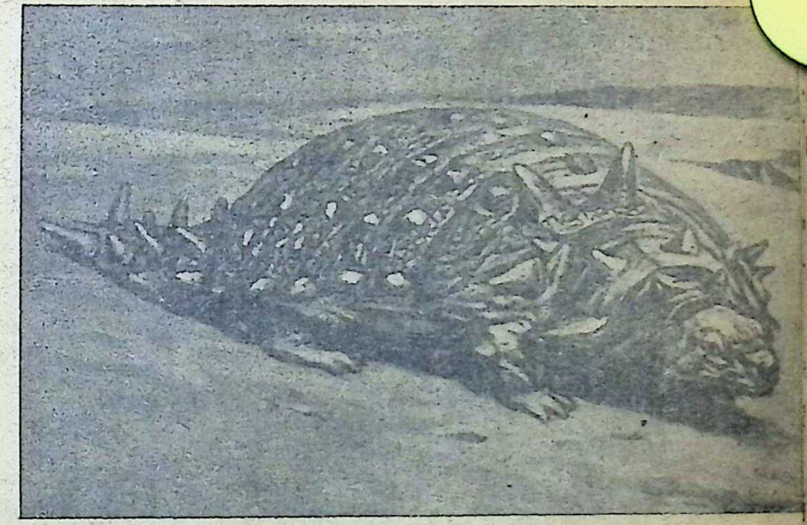

क्लिपटोडोन, कछुआ जाति का जीव

हता था। अल्लासोरस का शरीर इतना बड़ा नहीं होता था।
स जाति के और भी बहुत जानवर होते थे। ग्लिपटोडन भी
सी जाति का था। यह कछुए की तरह होता था।

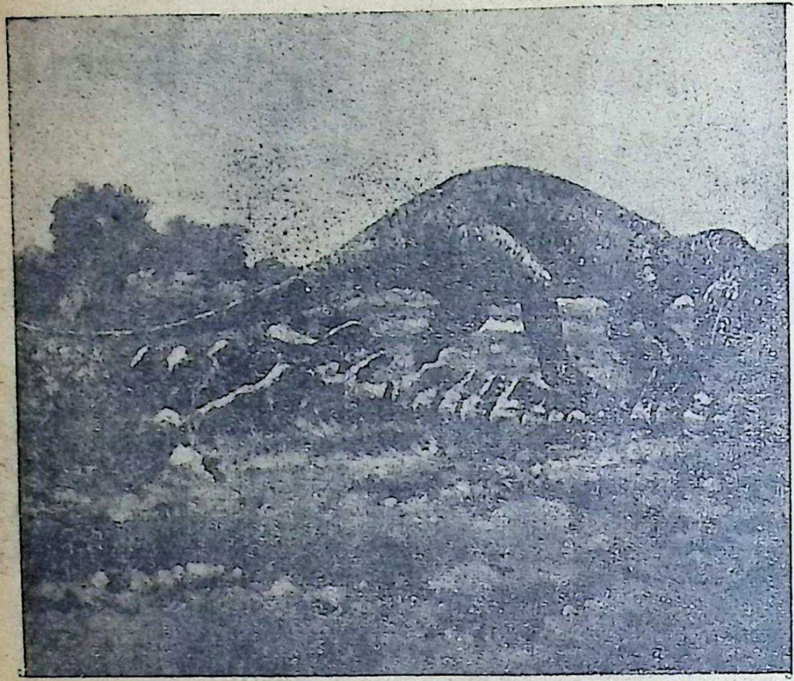

अल्लासारस

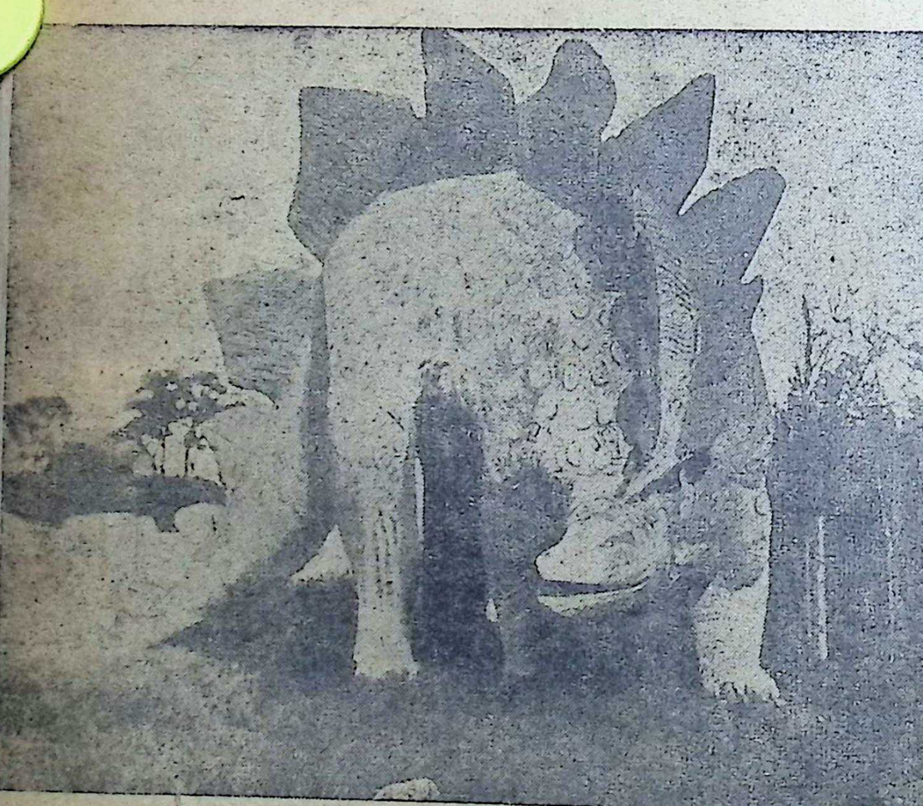

स्टीगोसारस

[illegible] विचित्र जानवर था।

यह पेड़ों पर रहता था। पूँ
छोटी और पीछे के पैर लम्
होते थे। यह ज़मीन पर न
चल पाता था। इसके पू
बहुत बड़े होते थे। ये पे
को उखाड़कर फेंक देते थे
इसी की भाँति माइलोडो
नामक एक जानवर था
उसकी हड्डियाँ पेटागोनि
में पाई गई हैं। जान पड़
है, यह जानवर भी घास-पा
खाता था। यह पेड़ पर न
चढ़ सकता था।

जैसे समुद्र में तर
तरह के जीव रहते थे वै
ही किनारे पर भी कई तर
के जीव रहते थे। परन
इनमें से अधिकांश जानवर
के चिह्न नहीं मिलते। बहु
से जानवरों के ढाँचे व
के नीचे या ज़मीन के नी
पाये जाते हैं। इन ढाँच
को देखकर हम अनुमान क
सकते हैं कि पहले कैसे-कै
जीव रहते थे। दुनिया
रहनेवाले जीव-जन्तुओं
बराबर परिवर्तन होते रह
हैं। आज जिन जानवरों क
हम देखते हैं, कुछ हज़ार व
बाद पृथ्वी पर उनका निश
भी न मिलेगा और नये-न
जीव धरती पर पैदा हो जायँगे

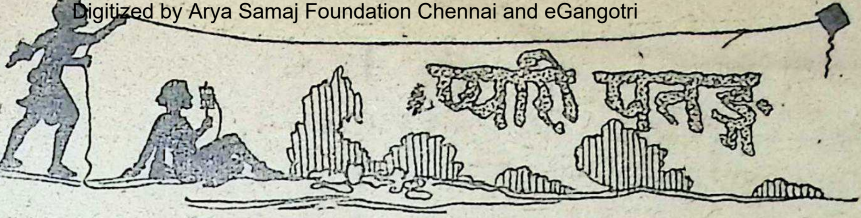

प्यारी पतङ्ग

लेखक, श्रीयुत 'विद्यार्थी'

रविवार को मोहन और कमला बहुत सवेरे ही जग। वे रोज़ से आज अधिक ख़ुश दिखाई पड़ रहे थे। यह थी कि वे अपने बड़े भाई से बहुत दिन से एक लाने के लिए कह रहे थे। बड़े भैया किसी दफ़्तर में र थे। उन्हें बहुत कम छुट्टी मिलती थी। अक्सर जब म को घर पहुँचते तो बच्चे सो गये होते। शनिवार उन्हें जल्दी छुट्टी मिल गई। घर आते समय उन्होंने मे एक सुन्दर-सी पतङ्ग और डोरी ख़रीद ली।

मोहन और कमला पतङ्ग को देखकर बहुत ख़ुश हुए। भैया ने कहा—रङ्गीन पतला काग़ज़, क़ैंची और गोंद आओ तो मैं तुम्हारी इस पतङ्ग को और भी ख़ूबसूरत दूँ।

बच्चे तुरन्त दौड़ गये और देखते-देखते सब सामान भैया की मेज़ पर आ गया। बड़े भैया ने पतले रङ्गीन ज़ को काटकर एक विचित्र शक्ल का आदमी बनाया फिर उसे पतङ्ग के बीचों बीच चिपका दिया। अब नई पतङ्ग और भी सुन्दर हो गई। दूसरे दिन रविवार इसलिए बच्चों ने सोचा कि दिन भर हम अपनी पतङ्ग येंगे। ऐसी पतङ्ग उनके किसी साथी की नहीं है। उनकी देखकर सब साथी आश्चर्य करेंगे।

सवेरे नींद खुलते ही बच्चे पतङ्ग के पास पहुँचे परन्तु डाँट दिया कि चाय पीने के पहले कोई बाहर न जा ा। कमला और मोहन को लाचार होकर नहा-धोकर के लिए बैठक में आने की जल्दी तैयारी करनी पड़ी।

चाय पी चुकने के बाद बच्चे पतङ्ग-डोर लेकर कमरे बाहर निकलने लगे तो बड़े भैया ने कहा—देखो पतङ्ग में ही उड़ाना, क्योंकि सड़क पर मोटर, गाड़ी आदि से जाने का डर है।

मोहन और कमला अपने घर के सामने छोटी-सी या में पतङ्ग उड़ा रहे थे कि उनका साथी सुनील दौड़ा ा। इस अजीब पतङ्ग को देखकर वह बहुत ही प्रसन्न । उसने कहा—मोहन, तुम बड़े विचित्र हो। कहीं ग़ में पतङ्ग उड़ाने में मज़ा आ सकता है। सड़क आओ। खुली जगह में पतङ्ग उड़ाने का मज़ा है।

मोहन ने कहा—यह तो ठीक है, लेकिन सड़क पर गा मोटर से दब जाने का डर है।

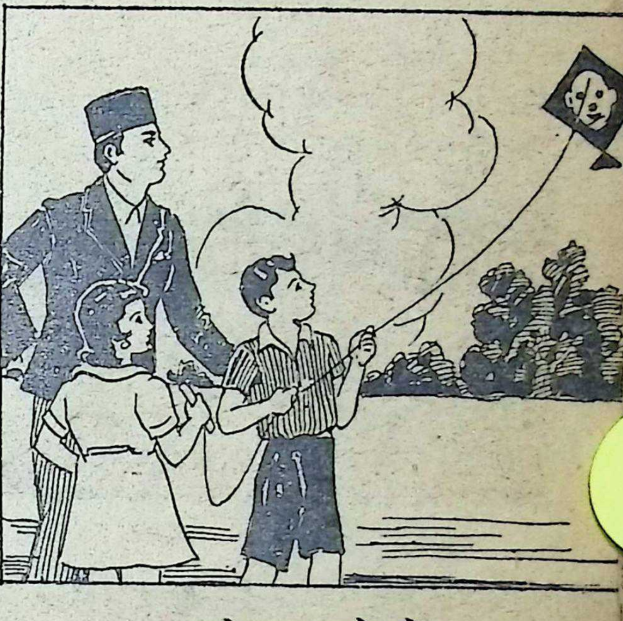

बच्चे पतङ्ग उड़ाने लगे।

'कहीं नहीं। जाने कितने लड़के तो देखो वह सड़क ही खेल रहे हैं। हम लोग सड़क के किनारे ही रहेंगे। व दबने का कहाँ डर है?' सुनील ने कहा।

मोहन ने कमला की ओर देखा। कमला अपनी प सबको दिखाना चाहती थी। इसलिए बोली—हाँ-हाँ, ह लोग सड़क के किनारे पतङ्ग उड़ायेंगे।

खुली जगह में पतङ्ग ऊपर उठने लगी। मोहन अ कमला को इसमें बड़ा आनन्द आ रहा था। इसलिए यह भूल गये कि सड़क पर पतङ्ग उड़ा रहे हैं। तभी अ पीछे बहुत पास पों-पों की आवाज़ सुनकर मोहन चौ उठा। पतङ्ग की डोर उसके हाथ से छूट गई। उसके प एक मोटर आकर रुक गई थी। अरे, तो वह मोटर दबते-दबते बच गया।

मोटर पर बैठे हुए सज्जन नीचे उतरे। उन्होंने मोह का हाथ पकड़ लिया। मोहन ने घबड़ाकर कहा—जी, मैं, ज़रा पतङ्ग उड़ा रहा था। मैंने मोटर की ओर न देखा था।

'तुमने नहीं देखा था, मोटर चलानेवाला कितनी देर से ोंपू दे रहा है और तुम सुनते ही नहीं! अभी दब जाते ो?' मोटर के मालिक ने डाँट बताई।

'क्षमा कीजिए महाशय!' मोहन ने उत्तर दिया।

'अच्छी बात है पर आज से कभी सड़क पर मत लना।' कहते हुए वे मोटर में बैठ गये।

मोटर चली ही थी कि मोहन ने चारों ओर आँख ड़ाई। उसकी पतङ्ग कहाँ गई? उसने देखा कि कमला ड़क के बीच में पतङ्ग उड़ाने की कोशिश कर रही है पर तङ्ग गिरती जा रही है। वह उसे बुलाने ही वाला था कि ने में एक मोटर कमला के सामने से आती हुई दिखाई । मोहन जोर से चिल्लाया पर कमला तो पतङ्ग उड़ाने भूली थी। उसने न तो मोटर का भोंपू सुना और न हन की पुकार ही सुनी।

मोटर आकर बिलकुल उसके सामने खड़ी हो गई। दबते-दबते बची। घबड़ाहट में उसके हाथ से पतङ्ग डोरी छूट गई और पतङ्ग आसमान में बढ़ते हुए गिरने ी। ड्राइवर ने डाँटते हुए कहा—अपने आँगन में पतङ्ग ते नहीं बनता। सड़क पतङ्ग उड़ाने की जगह नहीं है।

कमला अपना-सा मुँह लेकर रह गई।

कमला के हाथ से छूटकर पतङ्ग उड़ती हुई एक पेड़ से जा अटकी। कमला और मोहन दोनों दौड़कर उस पेड़ के नीचे पहुँचे। पेड़ था बहुत ऊँचा और पतङ्ग पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर जाकर अटकी था।

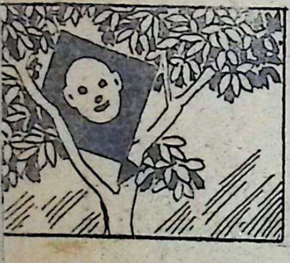

ङ्ग पेड़ में अटक गई।

कमला ने दुःख प्रकट करते हुए कहा—मेरी भूल हमारी पतङ्ग चली गई।

'नहीं हम दोनों की भूल थी। हमें सड़क पर पत उड़ाने नहीं आना चाहिए था। देखो, हम दोनों दब दबते बचे और हमारी पतङ्ग भी जाती रही।' मोह गम्भीर भाव से उत्तर दिया।

'हाँ, तुम ठीक कहते हो। बड़े भैया ने इसी लिए रो था।' कमला ने कहा।

'हाँ।' मोहन ने उत्तर दिया।

'पर अब यह पतङ्ग कैसे निकाली जाय?' कमला पतङ्ग को देखते हुए कहा।

मोहन उसी तरह फिर बोला—पेड़ बहुत ऊँचा है औ इस पर चढ़ना भी कठिन है। फिर हमारी पतङ्ग फुन पर जा अटकी है। परन्तु इससे एक लाभ है।

'क्या?' कमला ने आश्चर्य से पूछा।

'यही कि हम लोग इसे जब-जब देखेंगे तब-तब हमें बात की याद आयेगी कि 'सड़क पर न खेलना चाहिए।' मोहन ने उत्तर दिया।

कमला चुप रही। क्षण भर बाद मोहन ने कहा—हम बड़े भैया से दूसरी पतङ्ग मँगवा लेंगे। यदि हम उनसे वादा कर देंगे कि अब सड़क पर कभी न खेलेंगे तो वे अवश्य हमारे लिए दूसरी पतङ्ग ला देंगे।

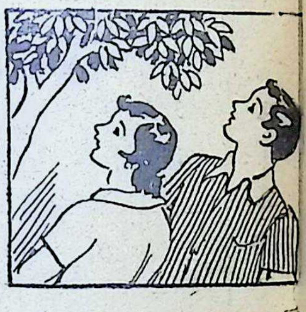

पतङ्ग को देखने पर उन्हें उ दिन की घटना याद आ जाती है

मेरा भैया

लेखिका, श्री लीलावती

मेरा भैया बड़ा निराला।
सारे घर का है उजियाला॥
सूरत उसकी भोली-भाली।
बोली जैसे मिसरी डाली॥
पर दिन भर शैतानी करता।
नहीं किसी से है वह डरता॥

बाबूजी हैं जब आ जाते।
कान पकड़ उठ-बैठ कराते॥
जब भोली सूरत दिखलाकर।
बोली कुछ बोले तुतलाकर—
मन सबका हर लेता है।
फिर दङ्गा करने लगता है॥

हम सबकी आँखों का तारा।
नाम सुशील रखा है प्यारा॥

चींटियों के शहर में बाढ़

लेखक, श्रीयुत गोपालकृष्ण सिंघानिया

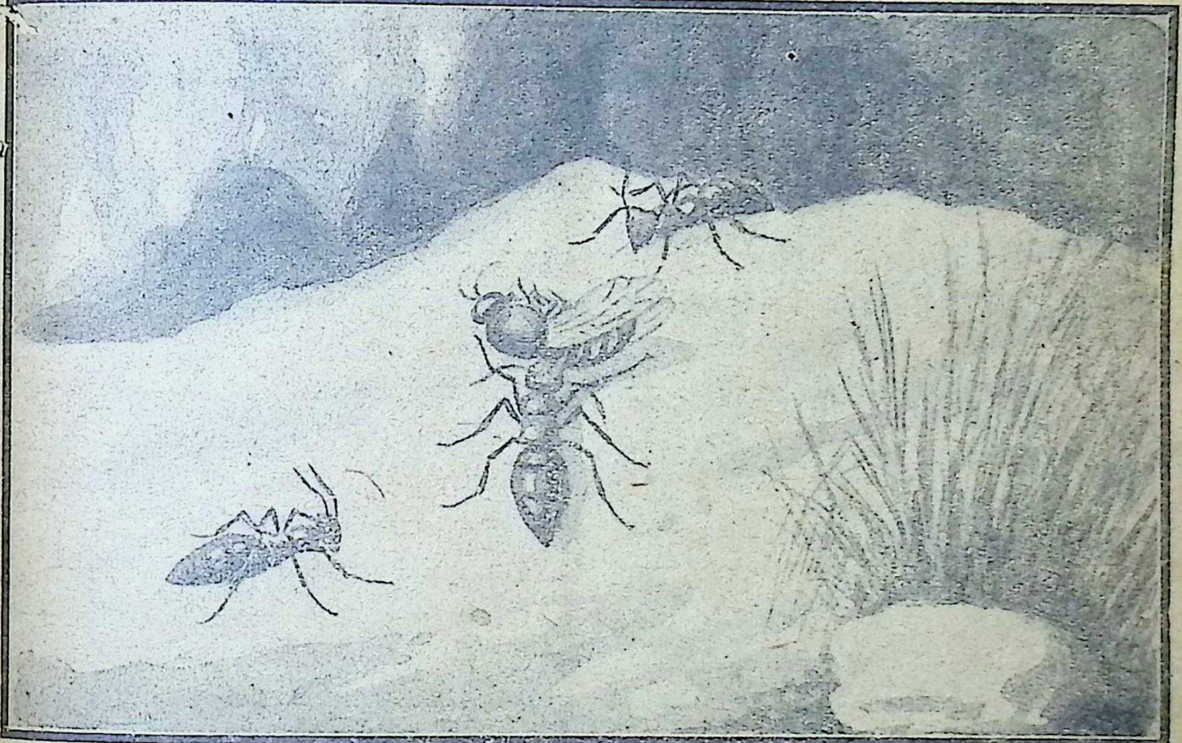

चींटियाँ अपने घर की ओर जा रही हैं।

मेरे बाग़ में कुछ पालतू मोर हैं। उनके के लिए बाग़ में एक जगह एक जालीदार घर दिया गया है। वे दिन भर तो इधर-उधर फिरते हैं और रात में उसी घर में बसेरा लेने ाते हैं। उनके खाने-पीने के लिए उस जालीदार ें कुछ चावल और पानी रक्खा रहता है। एक मैंने देखा कि मोरवाले घर के अन्दर चावल के ुए जो दाने बिखरे पड़े रहते हैं, उन्हें मुँह में झुण्ड की झुण्ड चींटियाँ कहीं लिये चली जा हैं। मेरे मन में आया कि देखूँ ये जा कहाँ रही में उनकी क़तार को देखता हुआ चला तो क्या ा हूँ कि वह समाप्त ही नहीं होने आती और ेढ़ी पगडण्डी की तरह चली गई है। वह कहीं के बीच से होकर और कहीं बाग़ की क्यारियों नारे जो ईंटें लगी हुई थीं उनके पास से होकर गई थी। आदमियों के चलने से जैसे खेतों या बाग़ के बीच में पगडण्डी बन जाती है, वैसे ही इन चींटिये के चलने से महीन धारी की तरह पगडण्डी बनी हु थी और उस पर चींटियों का ताँता लगा हुआ था जब वे घास के बीच में से होकर चलती थीं त ऐसा मालूम होता था कि वे किसी घने जङ्गल होकर जा रही हैं। वे सब अपने चावल ढोने काम में उसी तरह लगी हुई थीं जैसे आजकल फ़ौजी लारियाँ झुण्ड की झुण्ड चलती दिखला पड़ती हैं। मैंने देखा कि चींटियों की पगडण्डी मो के घर से बहुत दूर एक ऊँची जगह में जाकर समा हुई थी। वहाँ चारों तरफ़ साफ़-सुथरी ज़मीन थी कई सूराख़ थे। उनके बाहर चावल के दाने ही दा बिखरे पड़े थे। चींटियों ने उन्हें ला-लाकर जम किया था। अन्दर से मालूम होता था कि स

राख़ जाकर एक में मिले हुए थे, क्योंकि कुछ टियाँ एक सूराख़ से जाकर दूसरे से बहुत जल्दी कल आती थीं।

चींटियों का काम लगातार जारी था। उनके म में कोई गड़बड़ी न होने पाती थी। हज़ारों टियाँ क़तार बाँधे चलती थीं। पगडण्डी में पैर जाने पर थोड़ी देर के लिए उस जगह गड़बड़ी जाती थी, लेकिन ज़रा देर के बाद फिर सब काम ही होने लगता था। दूसरे दिन मैंने देखा कि ों के ऊपर जमा किया हुआ चावल ग़ायब है। लूम होता था, वह चींटियों की बस्ती में पहुँच गया। ोग से एक दिन ख़ूब ज़ोरों से वर्षा हुई और कई दिनों तक होती रही। चारों तरफ़ नी ही पानी भरने लगा। चींटियों की पगडण्डी डूब गई। उनका घर पहले तो बचा रहा क्योंकि ऊँची जगह पर था, लेकिन बाद में वहाँ तक भी पानी पहुँच गया। इससे चींटियों की बस्ती में बड़ सङ्कट आ गया।

वर्षा समाप्त होने पर मैंने देखा कि चींटियों की बस्ती के बाहर चावल के दाने ही दाने बिख पड़े थे। मैं समझ गया कि चींटियों के शहर में ब आ गई है। इसी लिए चावल के दाने बाहर बिख पड़े हैं। जहाँ हज़ारों चींटियों की भीड़-भाड़ रहत थी, वहाँ थोड़ी-सी चींटियाँ अपने अंडों को ले जात हुई दिखलाई पड़ीं। बाक़ी मालूम होता था बाढ़ इधर-उधर हो गईं। लेकिन कुछ घण्टों के बाद वह न जाने कहाँ से चींटियाँ ही चींटियाँ पहुँच ग और सब मिलकर बिखरा हुआ सामान ढोने लगीं मालूम होता था कि बाढ़ की ख़बर पाकर दूस नगरों की चींटियाँ उन्हें मदद पहुँचाने आ गई थीं चींटियों की इस एकता और एक दूसरे की मदद क काम बिल्कुल मनुष्यों की तरह का मालूम होता था

मेरी रेल

लेखक, श्रीयुत सुधीर, बी० ए०

छूटी मेरी रेल।
रे बाबू, छूटी मेरी रेल।

हट जाओ, हट जाओ भैया!
बच जाओ, बच जाओ भैया!
मैं ना जानूँ फिर कुछ भैया!
टकरा जाये रेल।

धक-धक्, धक्-धक्, धू-धू, धू-धू।
-भक्, भक्-भक्, भू-भू, भू-भू।
छक्-छक्, छक्-छक्, छू-छू, छू-छू।
करती आई रेल।

एञ्जिन इसका भारी-भरकम।
बढ़ता जाता गमगम गमगम।
धमधम धमधम, धमधम धमधम।
करता ठेलम ठेल।

सुनो गार्ड ने दे दी सीटी।
टिकट देखता फिरता टीटी।
सटी हुई बीटी से बीटी।
करती पेलम-पेल।

छूटी मेरी रेल।

हीरों का द्वीप

धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र

ली कहानी

[सुरेश फिलीपाइन द्वीपों की जानकारी के लिए एक पुस्तक लगातार कई घंटे तक पढ़ता रहा। अपनी धुन में लगे रह रात का भोजन करने तक की सुधि न रही। दो बजे रात को किसी की बातें सुनने से सुरेश चौंका, पर कोई दिखाई न दिया हैरानी के बाद मालूम हुआ कि उसका पुराना मित्र रतन आया है जिसे सब ने मरा हुआ समझ लिया था। आग्रह करने पर रत प्रकट हो गया। रतन का अब तक का क़िस्सा सुनने से सुरेश को बड़ा अचरज हुआ। उसने बड़ी ख़ुशी से अपने मित्र त-सत्कार किया।

(३)

रतन का ख़याल था कि सुरेश इतनी रात में मेरे खाने-पीने लए कोई अच्छा प्रबन्ध न कर सकेगा। सुरेश के मन पहले-पहल यही बात आई। वह सोचने लगा कि र सो रहे हैं और दूकानें भी बन्द हैं। ऐसे समय क्या प्रबन्ध करूँ कि रतन को जल्दी से जल्दी कुछ को मिल जाय। पर एकाएक कमरे के एक कोने में पर रक्खी हुई थाली पर नज़र पड़ते ही उसकी यह ता जाती रही।

सुरेश का रसोइया साँझ को ही पूड़ी-कचौड़ी, हलुआ, र तरकारी एक थाली में उसके कमरे में रख गया था। ने सुरेश से उसी समय खाने के लिए कहा था, लेकिन को तो उस समय खाने-पीने का ध्यान था नहीं। तो प्रशान्त महासागर के द्वीपों का हाल जानकर हीरों द्वीप पर चढ़ाई करने का उपाय सोचने की धुन में था। लिए उसने रसोइया से कह दिया कि तुम मेरा भोजन ढककर रख दो, मैं काम से फ़ुर्सत मिलने पर खा । इससे रसोइया स्टूल पर थाली रखकर चला गया र सुरेश ने फिर किताब के पन्नों में अपनी आँखें जमा अन्त में इस थाली की ओर उसका ध्यान तब गया उसे इस बात की चिन्ता हुई कि इतनी रात में रतन खाने का क्या प्रबन्ध करूँ। अब सुरेश को इस बात की आई कि मैंने आज भोजन नहीं किया और रसोइया खाने के लिए साँझ को जो कुछ रख गया था वह ज्यों त्यों ढका हुआ है।

सुरेश ख़ुशी-ख़ुशी जाकर वह थाली उठा लाया और रतन सामने रखकर आदर के साथ बोला—भाई, रूखा-सूखा जो कुछ तैयार है, उसे मैं तुम्हारे सामने हाज़िर कर रहा हूँ जिस तरह भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदामा के चावलों को च से ग्रहण किया था, आशा है कि उसी तरह तुम भी इसे के साथ खाओगे।

रतन को इस तरह का स्वादिष्ट भोजन पाने की तनि भी आशा नहीं थी। वह तो समझता था कि इतनी रात सुरेश मुझे सूखी रोटियाँ भी न खिला सकेगा, लेकिन उसके सामने एकाएक हलुआ-पूड़ी आ गई तब वह ब ख़ुश हुआ। कमरे के दूसरे कोने में एक स्टूल पर सुर में ठण्डा पानी और गिलास रक्खा था। इससे सुरेश झटपट एक गिलास जल भी लाकर सामने रख दिय रतन ने देर न की। तुरन्त ही हाथ-मुँह धोकर ख आरम्भ कर दिया।

सुरेश सामने ही कुर्सी पर बैठा हुआ अपने साथी ओर देख रहा था। उस समय उसके मन में बार-बार य बात आ रही थी कि रतन ने ऐसी कौन-सी तरकीब की कि वह मेरे सामने ही कुर्सी पर बैठा रहा और मैं उसे नहीं सका। क्या उसने कोई मन्त्र-यन्त्र या जादू स रक्खा है, जिसके प्रभाव से मेरी आँखों के सामने पड़ गया था और मैं सामने ही बैठे हुए आदमी को नहीं सका!

मन्त्र-तन्त्र और जादू-टोने में सुरेश को कभी कि प्रकार का विश्वास नहीं था। वह कभी ऐसी किसी ब पर विश्वास नहीं करता था, जो इतनी अद्भुत हो कि मनु के दिमाग़ को चक्कर में डाल दे। उसका ख़याल कि दुनिया का हर एक काम मनुष्य के लिए आसान सकता है अगर वह बुद्धि और मेहनत से काम ले। पर

ाज उसने जो कुछ अपनी आँखों से देखा उसे सच मानने सिवा वह और कर ही क्या सकता था। सुरेश को यह ानना ही पड़ा कि रतन ने ज़रूर कोई ऐसी विद्या सीख ख्खी है, जिसके द्वारा वह अपने आपको दूसरों की आँखों ओझल रख सकता है। परन्तु वह कौनसी विद्या हो कती है, यह बात किसी तरह उसकी समझ में नहीं ा रही थी।

सुरेश का दिमाग़ जहाँ रतन की इस अनोखी करामात कारण चक्कर में पड़ा हुआ था, वहाँ रतन उसकी दी ई पूड़ियाँ, कचौड़ियाँ और हलुआ खा-खाकर ख़ुश हो ा था। तरकारी और चटनी भी बहुत ही बढ़िया और ादिष्ट थी। सच पूछा जाय तो इतना उत्तम भोजन रतन ो बहुत दिनों के बाद मिला था।

रतन जब खा-पी चुका तब हाथ-मुँह धोकर सुरेश के मने बैठा। उसने कहा—'सुरेश, तुम्हारे मुँह का भाव खने से यह बात भली भाँति मालूम पड़ रही है कि तुम स समय बहुत परेशान हो। शायद यह बात तुम्हारी मझ में नहीं आ रही है कि इतना मोटा-ताज़ा आदमी सने बैठा रहे और उसे मै देख न सकूँ। यह बिलकुल नहोनी बात है। परन्तु तुम्हें यह विश्वास करना ही ड़ेगा कि मैंने एक ऐसी शक्ति प्राप्त की है, जिसकी सहायता किसी समय भी मैं अपने आपको दूसरों की आँखों से झल रख सकता हूँ। इच्छा करने पर मैं कहीं भी जा कता हूँ। दूसरे लोग मेरी छाया तक न देख पावेंगे, चाहे तने ही आदमी क्यों न बैठे रहें।

इसके उत्तर में सुरेश मुँह खोलने की हिम्मत नहीं कर का। वह हक्का-बक्का होकर चुपचाप बैठे-बैठे रतन का ह ताकता रहा।

रतन ने कहा—सुरेश, शायद तुम्हें यह मालूम नहीं कि दुनिया में ऐसी कितनी ही वस्तुयें हैं, जिनके प्रभाव ऐसे-ऐसे अनोखे काम हो जाते हैं, जिनकी सचाई के रे में साधारण तौर से लोगों को विश्वास नहीं होता।

अब रतन ज़रा देर के लिए रुक गया। लेकिन सुरेश ह बोला नहीं। वह इस तरह शान्त होकर रतन का मुँह क रहा था, मानो एकदम नासमझ है। उसे इस तरह कते देखकर रतन ने कहा—इस तरह तुम्हारी आँखों के मने से ओझल रहकर मैंने जो तुम्हें एकदम हक्का-क्का कर दिया है उसका कारण यह है कि मेरे पास एक ी वस्तु है, जिसे मुँह में डाल लेने पर हर एक आदमी आँखों से अपने आपको ओझल कर सकता हूँ। मैं मने ही बैठा रहूँ लेकिन मुझे कोई देख न सके, यहाँ

यह अद्भुत बात सुनकर सुरेश को जहाँ बहुत अधि आश्चर्य हुआ, वहाँ उसका कौतूहल भी बहुत बढ़ गया उसने कहा—सच-मुच ? क्या तुम्हारे पास कोई ऐ अनोखी वस्तु है ? परन्तु विज्ञान में तो मुझे ऐसी कि भी वस्तु का हाल पढ़ने को नहीं मिला। तुम्हें यह मा ही पड़ेगा कि कालेज में पढ़ते समय मैं अच्छे विद्यार्थि में था। कालेज की पढ़ाई समाप्त करने के बाद भी का दिनों तक विज्ञान की कितनी ही बातों की खोज़ करके उन बारे में प्रयोग करने में मैंने अपना बहुत-सा समय लगा है और जो लोग इस विषय के जानकार हैं, उन्होंने मे काम को काफ़ी पसंद भी किया है। लेकिन इतने दिनों परिश्रम के बाद भी मुझे किसी ऐसी वस्तु का पता क भी नहीं चला।

सुरेश की यह बात सुनकर रतन ठहाका मारकर हँ पड़ा। उसने कहा—तुमने अपनी सारी शक्ति लगाई विदेशी विद्याओं के पढ़ने में। यह सच है कि योरप औ अमरीका में विज्ञान के बहुत से बड़े-बड़े विद्वान् हुए और उन्होंने जो खोज की है, ज्ञान की जो सामग्री अप परिश्रम से इकट्ठी की है, उसके कारण मनुष्य जाति का बहु लाभ हुआ है। परन्तु हमारे देश के ऋषि-मुनि ज्ञान क जो भण्डार संग्रह कर गये हैं, उसका ज़रा-सा किनक भी अभी तक उन देशों के विद्वानों को नहीं मिला। हमा ऋषि-मुनि तीनों काल की बात जाननेवाले होते थे। उनक भूत, वर्त्तमान और भविष्य तीनों ही कालों का ज्ञान होत था और अपनी तपस्या तथा ज्ञान के बल पर वे पल भ में क्या से क्या कर देते थे।

सुरेश के ऊपर पश्चिमी सभ्यता का इतना अधिक प्रभाव था कि देश की पुरानी बातों पर उसे ज़रा भी विश्वास नहीं था। पुराणों की कथाओं को वह निरी मनगढ़न्त सम झता था। उसने कहा—परन्तु क्या तुम तर्क की कसौटी पर कसकर कोई ऐसी बात सिद्ध कर सकते हो जिससे मालूम पड़े कि ऋषियों ने अथवा देश के प्राचीन विद्वानों ने मनुष्यजाति के कल्याण के लिए कोई उत्तम वस्तु बनाई है, कोई नया आविष्कार किया है।

रतन ने कहा—हमारे देश के ऋषियों में कैसी शक्ति थी और देशवासियों के लिए वे ज्ञानरूपी कैसी सम्पत्ति छोड़ गये हैं, इस बात का ज्ञान तुम्हें नहीं हो सकता, क्योंकि तुम्हें इस देश की पुरानी सभ्यता का पता नहीं है हमारे पुराने ग्रन्थों को पढ़ने से मालूम होता है कि किसी समय हमारा देश ज्ञान, विद्या, धन और सभ्यता में दुनिया के सभी देशों से बढ़ा-चढ़ा था। दूसरे देशों के

आते थे। शास्त्रों की बात जाने दो, हमारे देश का तन्त्रशास्त्र ही—

सुरेश तपाक से बोल उठा—तन्त्रशास्त्र में क्या रक्खा वह तो बेकार चीज़ है?

"क्या कहा तुमने? तन्त्रशास्त्र बेकार चीज़ है? इस की मूर्खों की-सी बात मुँह से निकालने की हिम्मत ए हो रही है कि तुमको तन्त्रशास्त्र के विषय में किसी की जानकारी नहीं है। इसी शास्त्र की बदौलत पहले देश के लोग एक से एक बढ़कर अद्भुत काम कर ते थे। जिन दिनों यहाँ बौद्ध धर्म का प्रभाव बहुत बढ़ा था, उन दिनों तिब्बत के लामा लोग यहाँ धर्म क्षा प्राप्त करने के लिए आये थे और वे यहाँ की उपयोगी विद्या तन्त्रशास्त्र उड़ा ले गये। उसी के बल मा लोग आज कैसे कैसे चमत्कार दिखा रहे हैं। इस पर अधिकार करके अपने देश में इसका प्रचार करने री बड़ी इच्छा थी। इसी लिए पढ़ना-लिखना छोड़- संन्यासी बना और तिब्बत में जाकर तरह तरह के का सामना किया, पर भाग्य अच्छे नहीं थे, इससे ही हाथ लौटना पड़ा। केवल यही एक वस्तु मुझे सकी है, जिसका चमत्कार आज तुमने देखा है।"

सुरेश रतन की यह बात सुनकर चकित हो गया। र्य के साथ उसने कहा—क्यों भाई, तो तुम तिब्बत गये थे? लामाओं के देश में? लामा लोग तो मा बुद्ध को मानते हैं। वे बड़े दयालु होते होंगे। उन्होंने री बड़ी ख़ातिर की होगी। तुम्हारी यात्रा का हाल की मुझे बड़ी इच्छा हो रही है। लेकिन सब से मैं यही जानना चाहता हूँ कि इस तरह की अद्भुत तुम्हें किस तरह मिली, जिसकी सहायता से तुम की आँखों से ओझल हो जाते हो?

रतन ने कहा—भाई, मैं इस समय बहुत थका हूँ। नींद रों की आ रही है। साथ ही मेरी इस यात्रा की भी इतनी लम्बी है कि वह काफ़ी समय लेगी। इस- उसे मैं तुम्हें कल सुनाऊँगा। पर तुम्हारा यह कहना मा लोग बौद्ध होने की वजह से बहुत दयालु होते हैं, ल गलत है। लामाओं ने मेरी इस तरह की ख़ातिर कि अगर यह अद्भुत चीज़ मुझे न मिल गई होती मुझे उनके क़ैदख़ाने में ही सड़ते-सड़ते ज़िन्दगी से ोने पड़ते।

ब सुरेश का कौतूहल और अधिक बढ़ गया। उसने क्यों रतन, तुमने ऐसा कौन सा अपराध किया था, कारण तुम्हें लामाओं के क़ैदख़ाने की हवा खानी पड़ी? इसके सिवा क़ैदख़ाने में तुम्हें इस तरह की अद्भु चीज़ कैसे मिल गई?

रतन ने कहा—यह भी एक लम्बी कहानी है। मेर अपराध इतना ही था कि मैं लामाओं के देश का नहीं था तो भी वहाँ चला गया था और गया था तन्त्र को खोजक भारतवर्ष में लाने के इरादे से। मैं चाहता था कि लामाओं के बीच में रहकर उनसे तन्त्रशास्त्र पढ़ूँ और इस शा की अच्छी-अच्छी किताबों को वहाँ से लाकर अपने देश उनका प्रचार करूँ। पहले-पहल जिस लामा से मेरी मुल क़ात हुई, उससे मैंने अपनी इस इच्छा का हाल बतलाय और इस काम में उसकी सहायता माँगी। इस पर मु पकड़कर वह दूसरे लामाओं के पास ले गया और उन स की राय से मैं एक अँधेरी गुफा में क़ैद कर लिया गया।

रतन दिन भर का भूखा था। साथ ही उसे पैदल ह बहुत-सा रास्ता तय करना पड़ा था, इससे जहाँ उसे ब ज़ोर की भूख लगी थी वहीं वह बहुत थक गया था। अन में दो बजे रात को जब उसे भोजन मिला तब उसे बड़े ज़ो की नींद आने लगी। वह चाहता था कि अब सो जावे सुरेश को सबेरे तिब्बत का हाल बतलावे, पर सुरेश सा बातें मालूम किये बिना उसका पिण्ड छोड़ने को तैया नहीं था। उसने पूछा—तो क्या लामा लोग हमारे देश के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते?

रतन ने कहा—मेरा तो जिन लामाओं से पाला प था उनमें मुझे दया नाम को भी नहीं मिली। पहले-पह जिस लामा से मेरी मुलाक़ात हुई थी, वह मेरी बातें सुन ही इस तरह लाल-लाल आँखें निकालकर मुझे घूरने लगा, मानो कोई भूखा बाघ है जो शिकार पर झपट्टा मारने क मौक़ा देख रहा है। बाद को जब वह पकड़कर मुझे दूस लामाओं के पास ले गया तब वे सब त्यौरियाँ बदल-बदल मुझे डाँटने लगे। उनका विकट चेहरा और लम्बी-लम्ब दाढ़ी-मूँछ देखकर ही मैं दङ्ग हो गया था। साथ ही बा की-सी आँखें निकाल-निकालकर वे लोग तड़पने ल तब तो डर के मारे मेरी घिग्घी बँध गई। लामाओं के सामने मैं बहुत रोया-गिड़गिड़ाया, लेकिन उनका हृदय पत्थर से भी कड़ा था। वह किसी तरह भी नहीं पिघल सका। अन्त में उन लोगों ने एक पर्वत की गुफा में ले जाकर मुझे क़ैद कर लिया।

इतना कहकर रतन रुक गया। पर सुरेश उसे किसी तरह चुप होने नहीं देना चाहता था। इससे रतन को फिर मुँह खोलना पड़ा। उसने कहा—गुफा बड़ी भयानक थी। उसमें

ड़ती। चारों ही ओर पत्थर की दीवार थी, केवल सामने
ो ओर एक दरवाजा था, जिसमें लोहे के सीकचे लगे हुए
। इससे दिन को गुफा के भीतर थोड़ा बहुत उजाला
ा जाता था। मैं जिस समय उस गुफा में डाला गया था,
स समय साँझ हो रही थी। इससे कुछ देख नहीं सका।
र दूसरे दिन जब गुफा में उजाला आया तब मैंने देखा
क इस गुफा में एक क़ैदी और है। वह एक कोने में चुप-
ाप बैठा था। उसे देखने पर पहले तो मैं डर गया।

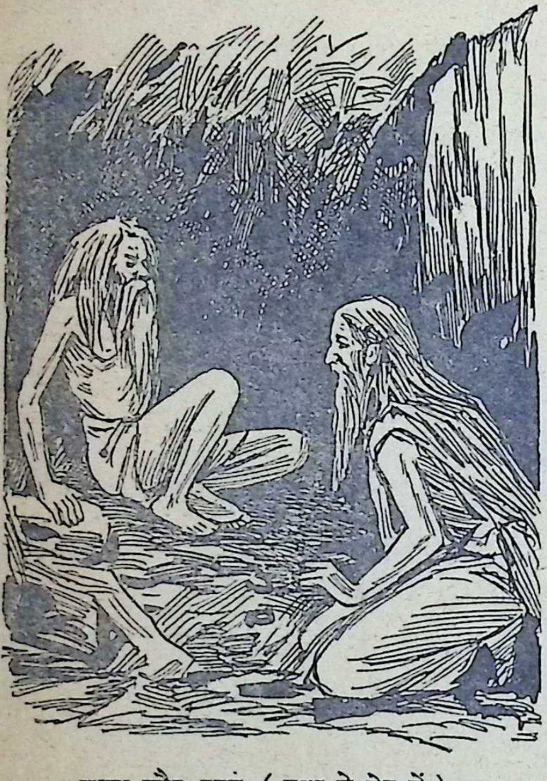

लामा और रतन (साधु के वेष में)

ुझे ऐसा मालूम पड़ा मानों यह भूत है। आदमी का सा
सका चेहरा ही नहीं था। उसका शरीर बिलकुल सूख
ाया था और उसका रङ्ग कोयले की तरह काला था। सिर
र लम्बे-लम्बे और रूखे बाल थे। वे बाल उसकी पीठ
र तथा गालों के नीचे तक लटके हुए थे। उन्हीं बालों के
ीच से वह घूर-घूरकर मेरी ओर ताक रहा था। थोड़ी
र के बाद एक असभ्य आया और हम दोनों ही के लिए
क-एक मोटी-मोटी रोटी, एक-एक टुकड़ा भुना हुआ मांस
और एक बर्तन में पानी रखकर चला गया। यह रो
और मांस लेने के लिए दूसरा क़ैदी उठा। तब मैंने उ
अच्छी तरह देखा और मुझे मालूम हुआ कि यह भूत न
है, बल्कि मेरी ही तरह का एक अभागा क़ैदी है। उस
बड़े-बड़े नाख़ून और लम्बे लम्बे बाल देखकर मैंने यह
मालूम कर लिया कि यह आदमी बहुत दिनों से इस गु
में क़ैद है।

सुरेश ने पूछा—क्या दूसरा क़ैदी भी भारतव
का ही था?

रतन ने कहा—हाँ, वह जाति का सन्थाल था
मेरी ही तरह वह भी तन्त्रशास्त्र की खोज में तिब्बत ग
था। वह मुझसे पन्द्रह वर्ष पहले तिब्बत पहुँचा था। भे
बदलकर वह बहुत दिनों तक लामाओं के साथ रहा अ
तन्त्रशास्त्र की बहुत-सी बातें उसने सीख भी लीं, पर ब
को भेद खुल गया। इससे उसे उस गुफा में जाकर क़ैद हो
पड़ा। मेरे क़ैद होकर गुफा में पहुँचने से पहले वह अके
ही उसमें रहा करता था। एक तो वह जाति का सन्थ
होने के कारण आज-कल की सभ्यता से दूर था, दूसरे लग
तार बहुत दिनों तक उस गुफा में अकेले रहते-रहते उस
स्वभाव पशु का-सा हो गया था। गुफा में रहते-रहते उस
मेरा मेल तो जरूर हो गया पर वह बोलता बहुत कम थ
मेरी बातें उसकी समझ में आती थीं या नहीं, यह भी मु
मालूम नहीं हो सका; क्योंकि वह मेरी बातें चुपचाप सु
लिया करता था, कभी किसी बात का उत्तर नहीं देता थ
चार वर्ष कुछ महीनों तक मेरे साथ रहने के बाद वह
दिन एकाएक उसी गुफा में मर गया। मरने से पहले उस
मुझे एक गोली दी जिसे मुँह में रख लेने पर दूसरे लो
मुझे देख नहीं पाते। उसी गोली की बदौलत मैं उस गु
से निकलकर तुम्हारे पास तक आ सका हूँ, नहीं
शायद मेरा भी वही हाल होता जो उस सन्थाल का हुआ।

इतना कहकर रतन चुप हो गया। सुरेश उसे फि
छेड़ना चाहता था, पर उसने कहा कि अब ज़रा देर सो ले
दो। अपनी तिब्बत की यात्रा का हाल कल विस्तार
साथ बतलाऊँगा।

—क्रमश

अच्छी बातों का बगीचा

दया की भाँति अपनी उन्नति घर से ही शुरू करो।

× × ×

बिना बन्धन की स्वतन्त्रता का कोई महत्त्व होता। स्वतन्त्रता के साथ कर्तव्य-पालन का ज़रूरी है।

× × ×

प्रत्येक अच्छे काम और अच्छे विचार से की सुन्दरता बढ़ती है।

× × ×

पुस्तकें ही मनुष्य की सबसे सच्ची मित्र हैं।

× × ×

क्रोध और चिन्ता से मनुष्य का स्वास्थ्य ही नष्ट हो जाता बल्कि बहुधा वे मृत्यु का कारण हैं।

× × ×

सत्य से बड़ा और कोई अस्त्र नहीं है।

× × ×

जिस बात को तुम ठीक समझते हो उसे बिना भी भय या सङ्कोच के कह दो।

× × ×

अन्धविश्वास आदमी के हृदय को कमज़ोर कर उसे कायर बना देता है।

× × ×

धन से चरित्र अधिक मूल्यवान् है।

× × ×

दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा अपने साथ किये जाने की इच्छा रखते हो।

उत्तर दो इनाम लो

नीचे कुछ पहेलियाँ और प्रश्न दिये जाते हैं। इनके सही उत्तर मालूम करने की कोशिश कीजिए। सब प्रश्नों के सही उत्तर भेजनेवाले प्रथम बाल-सखा को दो रुपये की पुस्तकें और दूसरे एक बाल-सखा को एक रुपये की पुस्तकें इनाम में दी जायँगी उत्तर बन्द लिफ़ाफ़े में सम्पादक 'बाल-सखा' इंडियन प्रेस, प्रयाग के पते से आना चाहिए और उन पर साफ़ अक्षरों में 'इनामी पहेलियाँ' लिखा रहना चाहिए। उत्तरों के नीचे साफ़ अक्षरों में अपना पता और ग्राहक-नम्बर होना ज़रूरी है। ग्राहक नम्बर न होने से आपका उत्तर प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जायगा। सभी उत्तर ३० दिसम्बर तक कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए।

× × ×

वह क्या है जो सप्ताह में एक बार आता और साल में भी एक ही बार आता है? = 6

× × ×

बताइए क्या है?—

मेरी ऐसी लम्बी दाढ़ी,
आँखें तक छिप जातीं;
पानी भर-भर पेट फुलाता;
बुद्धि देख भरमाती। = नारि

× × ×

नीचे के अक्षरों को पढ़ने की कोशिश कीजिए इस पंक्ति को तुमने ज़रूर कहीं पढ़ा होगा। बताओ तो

म अ थ प तु ब ढ़ो ने व र प ढ़ो प।

अब तुम पथ पर बढ़ो व पढ़ो

क्या तुम जानते हो?

क़ानून बन गया है कि अमरीका की राजधानी ाशिंगटन में प्रेसिडेंट के रहने के स्थान 'ह्वाइट ाउस' के ऊपर से हवाई जहाज़ नहीं जा सकता।

× × ×

अमरीका में इतने हवाई अड्डे हैं कि हवाई ड्डों की औसत दूरी केवल साढ़े तेरह मील है।

× × ×

शीशे के कपड़े बन चुके हैं। वे सस्ते और अच्छे ोते हैं। अमरीका में लड़ाई आरम्भ होने के पहले ाढ़े तीन लाख मील लम्बा और बहुत महीन ऐसा पड़ा बन चुका था। शीशे के सूत, बाल के १५वें ाग के बराबर मोटे बनाये जाते हैं।

× × ×

कानपुर संयुक्त प्रान्त का सब से घना बसा ुआ नगर है। व्यावसायिक केन्द्र होने के कारण ह उत्तरी भारत का लङ्काशायर कहा जाता है। ुल प्रान्त की १/६ फ़ैक्ट्रियाँ कानपुर में हैं।

× × ×

युक्तप्रान्त का क्षेत्रफल ११२,११९ वर्गमील । हमारा प्रान्त ब्रिटिश द्वीप-समूह से थोड़ा ही ोटा है।

× × ×

औसतन् एक वर्गमील में ४४२ मनुष्य युक्त-ान्त में रहते हैं।

× × ×

'लखनऊ' नाम का जन्म बड़ा मज़ेदार है। सबसे ाहले लक्ष्मणपुर ही इस ऐतिहासिक नगर का नाम ा। बाद में लखनपुर और फिर लखनऊ नाम से ाह नगर प्रसिद्ध हुआ।

—देवेन्द्रकुमार

पाठकों के पत्र

टिकट बदलिए

श्रीमान् सम्पादकजी,

मुझे टिकट संग्रह करने का बहुत शौक़ है। परन्तु मु खेद है कि मेरे निकट ऐसा कोई लड़का नहीं रहता जो टि संग्रह करता हो। मेरे पास पुराने टिकट भी काफ़ी हैं जि मुख्य 'महारानी विक्टोरिया' के अलग-अलग तरह के ह और कई विदेशों के भी हैं। अगर 'बाल-सखा' के पाठक टिकट अदल-बदल करने में दिलचस्पी रखते हों नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—गोकुलदास राठी, कृष्ण मिल्स, लिमिटेड, ब्याव

सपने नहीं दिखाई देते

श्रीयुत सम्पादकजी,

आपने पिछले अङ्क में लिखा था कि जो सब से अच सपना आपके पास लिख भेजेगा वह बाल-सखा में छ दिया जायगा। मैंने कई दिन यह कोशिश की कि मु कोई सपना दिखाई दे जाय पर मुझे तो अब तक कोई सपन नहीं दिखाई दिया। लोगों ने सपने दिखाई देने की जो तरकीबें मुझे बताईं उन सब को मैंने किया पर फल कुछ हुआ। आज तक मुझे कोई सपना नहीं दिखाई पड़ा क्या आप कोई ऐसी तरकीब बतायेंगे कि मुझे सपने दिख पड़ने लगें? बतायें तो मैं आपको सब से अच्छा सप लिखकर भेजूँ।

—नरेन्द्रकुमार माथुर, कानपुर

[सपने दिखाई देने की हमें तो कोई तरकीब नहीं मालूम यदि किसी बाल-सखा को मालूम हो तो वह श्री नरेन्द्रकुम को बताये।—सं०]

टोरी की शैतानी

श्रीमान् सम्पादकजी,

टोरी मेरा छोटा भाई है। नाम उसका सुरेशनाराय जौहरी है पर हम सब उसे टोरी ही कहते हैं। वह ब नटखट है। जब मैं स्कूल चली जाती हूँ तो वह बक्स मेरी गुड़ियाँ निकाल लाता और उनको गन्दी कर डालता मैं उसे रोज मना करती हूँ पर वह मानता ही नहीं। बता मैं क्या करूँ।

—दमयन्ती देवी, जयपुर

[आप उसके लिए अच्छी-अच्छी गुड़ियाँ मँगवा द वह आपकी गुड़ियों को ख़राब न करेगा।—सं०]

लेखा-जोखा

लेखक, श्रीयुत जगदेवनारायण

[अक्तूबर महीने की प्रतियोगिता में आठ कहानियों में इस कहानी पर पुरस्कार मिला है।—सं०]

एक लम्बी चहारदिवारी के भीतर एक सुन्दर है। कहीं सुन्दर-सुन्दर फूल हैं और कहीं आम के छोटे-छोटे पेड़ों पर आम लटक रहे हैं। नन्हा-सा बच्चा ही इस बाग़ की शोभा बढ़ाने- था। वह कभी फूल तोड़ता और कभी पके-पके खाता। एक नौकर उसकी सेवा में सदा तैयार। वह बालक आज़ादी से घूमना-फिरना चाहता लेकिन नौकरों पर माँ-बाप की कड़ी निगरानी थी उनके लाड़ले को कोई कष्ट न हो। नंगे पाँव ही उसपर डाँट पड़ती। बेचारा डर से सिट- जाता। पढ़ाने के लिए एक शिक्षक भी थे। रोज़ पाठशाला पढ़ने जाता। किन्तु जेब उसके हते। शायद वह कुछ चुराकर ले जाता पर पता क्या।

× × × ×

"कल्लू ! क्या भोजन किया है ?"

"मत बोलो, गुरुजी सुन लेंगे।" जब लल्लू न के विषय में पूछ बैठता तो कल्लू को बड़ा न होता था। कभी वह चबैना ही चबाकर स्कूल कभी कुछ रूखा-सूखा खा लेता। आज उसे भोजन नसीब न हुआ था। गुरुजी सुन लेंगे, यह तो बहाना था। कैसे कहता, मैंने कुछ नहीं खाया दर्जे में या बुद्धि में लल्लू से तो कम न था; उसके कपड़े-लत्ते लल्लू की बराबरी नहीं कर । फिर भी बालक-हृदय अपने को दूसरे से ही समझता है। अतः वह लल्लू को बड़ा होने आदर की दृष्टि से न देखता था।

छुट्टी हुई, कल्लू घर जाने लगा।

लल्लू ने कहा—"मैं भी चलूँगा।"

"तुम कहाँ जाओगे ?"

"कहीं भी, मैं भी चलता हूँ।"

कल्लू घर पहुँचा, देखा किवाड़ बन्द थे। माँ का कहीं पता न था। किसके-किसके घर खोजता। फिर पाठशाला देर करके पहुँचता तो गुरुजी की मार पड़ती। उसकी आँखों में आँसू भर आये। किससे कहे—माँ, भोजन ! घर की दीवारें भी मौन रह गईं। वह उल्टे पाँव पाठशाला लौटने लगा।

लल्लू—माँ को खोज लाओ कल्लू ! अभी घंटी नहीं बजेगी।

"किसके यहाँ है, कुछ पता नहीं।"

"तो एक काम करो। मेरे कन्धे पर चढ़कर ज़ंजीर खोल लो।"

"किन्तु ताला लगा है।"

"ओ, मैंने देखा ही नहीं। अच्छा, ताला तोड़ डाला जाय।"

"नहीं, माँ मारेगी।" कल्लू जानता था, हिलाने से भी कभी-कभी ताला खुल जाता है। वैसे ही वह खोल सकता था पर भीतर घर में कुछ खाने को हो तब तो। लल्लू के सामने अपमानित होना पड़ता जिससे वह कहता है, मेरे यहाँ सभी तरह का चबैना मिलेगा। माँ कहती है, बालकों को चबैना ख़ूब चबाना चाहिए। दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

दोनों पाठशाला लौटने लगे। लल्लू ने जेब से किशमिश निकालकर कल्लू की ओर बढ़ाई। कल्लू ने लेने से इन्कार कर दिया। भीतर से मन ललचा रहा था। उसे ज़ोरों की भूख लगी थी। माँ ने उसे सिखाया था, 'कोई कुछ दे तो न लिया कर बेटा। अतः हाथ बढ़ाने पर जब माँ की बात याद पड़ती तो चौंक उठता। कहीं माँ देख तो नहीं रही है। पर बालकों का मन जो ठहरा। कब तक अड़ा रहे। आखिर दोनों खाते-पीते-खेलते-कूदते पाठशाला पहुँचे।

× × × ×

कल्लू के घर पर छाजन भी न थी। उसकी माँ बूढ़ी हो गई थी। आँखों से कम सूझता था। दिन भर बेचारी कुटिया-पिसिया करती। रात को भोजन कल्लू ही बनाता। दिनों-दिन बेचारी दुर्बल हुई जा रही है। इस महँगी में बड़ा काम मिलता है, छोटा नहीं। छोटे-छोटे काम लोग स्वयं कर लेते हैं। बुढ़िया को अब लड़के खेलाने पर कोई नहीं रखता। गेहूँ भी लोग कल ही में पिसवा लेते हैं। जब कई साँझ भूखे ही रहना पड़ा, तो कल्लू ने नौकरी की तलाश की।

अब कल्लू नौकरी करता है। अपने हिस्से का भोजन माँ को खिलाता है और थाली के बचे-खुचे पर अपना निर्वाह करता है। पाठशाला के लड़कों को देखते ही आँखें बचाकर भाग निकलता है। एकाएक लल्लू से एक दिन भेंट हो गई। लल्लू ने कहा—पढ़ने क्यों नहीं आते!

"मैं दूसरी पाठशाला में पढ़ता हूँ।"

"क्यों?"

"तुम्हारी पाठशाला में गुरुजी ठीक नहीं पढ़ाते, इसलिए।" इतना कहकर वह जाने लगा।

लल्लू—सुनो, सुनो। मैं भी तुम्हारी पाठशाला में पढ़ने चलूँगा। सचमुच गुरुजी तो कुर्सी पर सोते रहते हैं। ठहरना, मैं कल तुम्हारे साथ चलूँगा।

× × × ×

कल्लू सूर्योदय के पहले ही उठकर काम चला जाता है। लल्लू को आने में देर हो ग कल्लू की माँ से पूछने पर पता चला कि वह दारो जी के यहाँ गया है। वहाँ पहुँचने पर उसने कि कल्लू जूठा बर्तन माँज रहा है।

लल्लू—कल्लू! यह क्या करते हो?

"भैया! अब मैं यही पढ़ता हूँ। तुम्हारे जै भाग्यशाली नहीं हूँ। काम न करूँ तो भूखों मरूँ

"नहीं, कल्लू यह काम न करो। पढ़ने चलो।"

"पढ़ूँगा तो पर क्या हवा पीकर? फिर माँ भी तो भोजन चाहिए।"

"चलो, तुम मेरे यहाँ रहना।"

"तुम्हारे पिता मुझे रक्खेंगे?"

"हाँ।"

× × × ×

कल्लू अब लल्लू का नौकर है। उसकी कित ठीक से रखने के लिए, पाठशाला पहुँचाने के लि जब लल्लू को पाठशाला पहुँचाकर कल्लू लौ लगता है तब लल्लू उसे रोक लेता है। दोनों स ही लौटते हैं। उसके माँ-बाप समझते हैं, कल्लू ल का नौकर है। कल्लू की माँ लल्लू के छोटे भाई खेलाने के लिए रख ली गई है। पर लल्लू और व दो शरीर एक प्राण हैं।

भालूवाला

लेखिका, श्री अशोक, बी० ए०

देखो भालूवाला आया,
अपने सँग में भालू लाया।
काँधे पर है भारी झोला,
देखो उसने उसको खोला।
झटपट पुङ्गी एक निकाली,
छोटी है पर अजब निराली।
ज़ोर-ज़ोर से उसे बजाया,
भालू पर फिर उसे घुमाया।

भालू लगा नाचने झटपट,
लगा बजाने दाँत कटाकट।
बच्चों की तब आई टोली,
भालूवाले से यह बोली—
"भालूवाले, खेल दिखाओ,
भालू का तुम नाच दिखाओ।
खेल दिखाओगे यदि सुन्दर,
पैसे देंगे हम सब हँसकर।"

भालूवाला बोला हँसकर—
"अभी दिखाता नाच मनोहर।"
उसने भालू को पुचकारा,
बड़े प्रेम से उसे दुलारा।
भालू ने तब नाच दिखाया,
तरह-तरह से ख़ूब रिझाया।
पैसे मिले बहुत-से उसको,
चला गया ख़ुश होकर घर को।

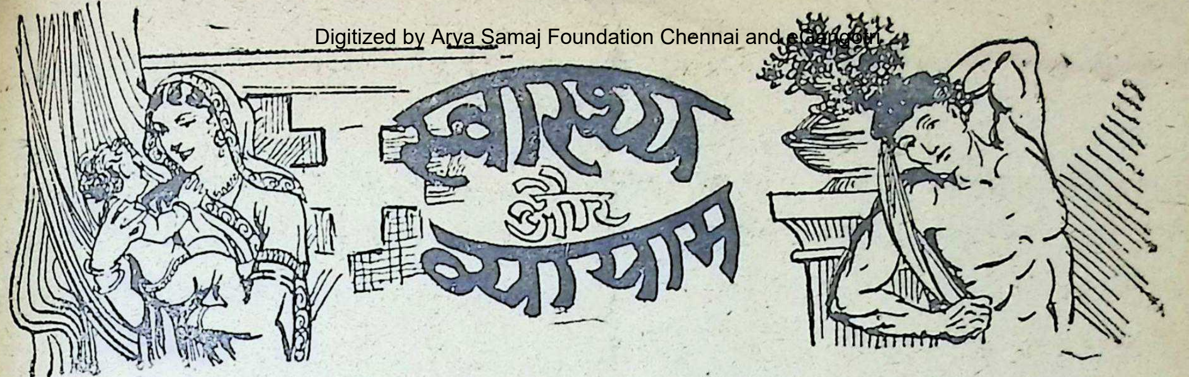

'हीरो' की बात

लेखक, श्रीयुत अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

निल के पिता जब हीरो को लाये थे तब वह बहुत था। लम्बे-लम्बे बाल और भोला-सा चेहरा हीरो र भी सुन्दर बना रहा था। पिता ने डोलची छोटी र रख दी तो एक छोटा-सा कुत्ते का पिल्ला सिर बाहर कर झाँकने लगा। अनिल दौड़कर डोलची के पास और हीरो को अपनी गोद में ले लिया। हीरो भी गोद में इस तरह छिप गया जैसे वह उसे वर्षों से नता हो।

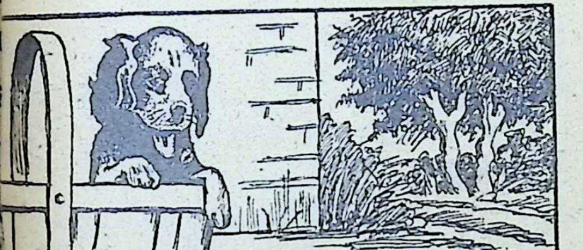

पिता ने डोलची छोटी मेज़ पर रख दी। हीरो अपना सिर बाहर निकालकर झाँक रहा था।

पिता ने कहा—देखो अनिल, यह हीरो तुम्हारा है। े तुम्हारे लिए लाया हूँ। लेकिन तुम्हें इसका बराबर ल रखना होगा। कुत्ते भी हमारी ही तरह होते हैं, इस- इसे ठीक समय पर और ठीक चीज़ें ही तुम खिलाना। अनिल पिता की बात का बराबर ध्यान रखता। हीरो ह बहुत चाहता था। जहाँ कहीं वह जाता, उसे अपने जरूर ले जाता। पिता ने हीरो को खिलाने का जो ा बताया था उसी तरह अनिल उसे खिलाता। कोई सी चीज़ वह हीरो को खाने के लिए न देता जो उसको सान पहुँचानेवाली होती। कभी-कभी उसके पिता भी की देख-भाल कर लिया करते थे।

ठीक तरह का और ठीक समय पर खाना पाने के कारण जल्दी बढ़ने लगा। वह खूब मोटा-ताज़ा था। साथ ही उसकी आदत भी और कुत्तों की-सी नहीं थी। वह पड़ोसियों के यहाँ खाने की खोज में न घूमा करता। अनिल के साथ वह बाग़ में दिन भर खेलता। महल्ले के और कुत्तों से वह कहीं तेज़ और तगड़ा था। अनिल को इससे बड़ी प्रसन्नता होती और वह अक्सर लोगों से अपने हीरो की तारीफ़ किया करता।

हीरो दो वर्ष का हो गया। इस बीच में न तो वह कभी बीमार पड़ा और न उसकी तन्दुरुस्ती ही खराब हुई परन्तु अब उसमें एक बुरी बात अनिल को दिखाई पड़ने लगी। वह सुस्त रहने लगा था। पहले की तरह वह दिन भर दौड़-धूप नहीं करता था बल्कि दरवाज़े के पास य कमरे के किसी कोने में पड़ा हुआ सोया करता था। अनिल को उसकी यह आदत बहुत बुरी लगती थी।

एक दिन उसने अपने पिता से कहा—पिताजी, आजकल हीरो को न जाने क्या हो गया है। वह बहुत सुस्त रहत है। दिन भर पड़ा सोया करता है। बहुधा वह खाना भ नहीं खाता। जान पड़ता है उसे भूख नहीं लगती।

'तो क्या तुम उसे, जैसा मैंने तुम्हें समझा दिया था उसी तरह खाना खिला रहे हो?' पिता ने अनिल से पूछा

'हाँ।' अनिल ने उत्तर दिया।

'तुम्हें इसके कारण का पता लगाना होगा। जान पड़त है, हीरो मेहनत कम करता है। कुत्ते को व्यायाम क करने को मिलता है।' पिता ने कहा।

'व्यायाम? पर पिताजी, कसरत तो वह पहले भी नह करता था।' अनिल ने आश्चर्य के साथ कहा।

'कुत्तों का व्यायाम उनका दिन भर दौड़ना-धूपना ही है तुम पता लगाओ कि हीरो कहीं जाता तो नहीं।'

अनिल ने दूसरे दिन हीरो का पीछा किया। ही अपनी जगह से उठकर सड़क पर आया। अनिल क आश्चर्य हो रहा था कि वह कहाँ जा रहा है। अनिल

पड़ोस में एक बाबू साहब रहते हैं। उनकी अनिल के पिता से मित्रता है। हीरो जाकर उन्हीं के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। एक बार उसने सड़क के चारों ओर देखा फिर पिछवाड़े की ओर आँगन की खिड़की की तरफ़ चल पड़ा। अनिल बाहर खड़ा हुआ झाँकता रहा। हीरो जाकर पीछे के दरवाज़े की सीढ़ी के पास बैठ गया।

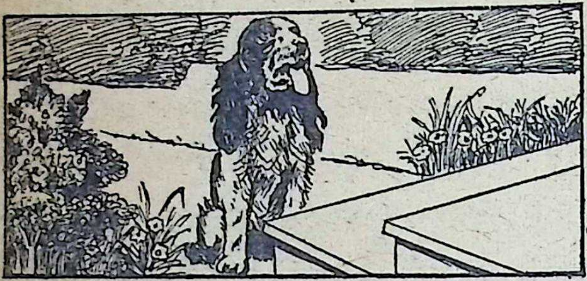

हीरो दरवाज़े की सीढ़ी के पास जाकर बैठ गया।

'भों-भों!' तुरन्त ही दरवाज़ा खुला। अनिल ने देखा कि बाबू साहब की पत्नी बाहर निकलीं। उन्होंने हीरो के सामने रोटी का एक टुकड़ा फेंकते हुए कहा—हीरो, तू आ गया; ले खा।

हीरो खाने लगा। अनिल ने देखा, रोटी शायद बासी होकर सूख गई है क्योंकि हीरो उसे कड़-कड़ करके चबा रहा है।

रोटी का टुकड़ा खा चुकने के बाद वह वहाँ से उठा और दूसरे दरवाज़े पर पहुँचा।

'भों-भों!' वहाँ भी उसने किया। मकान की मालकिन बाहर आई और हीरो को सड़ा-गला भोजन मिल गया। फिर वह दूसरे दरवाज़े पर पहुँचा।

अनिल यह सब देखता रहा, फिर घर चला आया। उसने समझ लिया कि हीरो को भूख न लगने सुस्त रहने का कारण यही है।

शाम को जब पिता दफ़्तर से आये तो अनि सब बातें बताईं उन्होंने कहा—अनिल, यह तो के लिए बहुत बुरी बात है। इसको तुम्हें रोकना हो

लेकिन उपाय क्या है?' अनिल ने चिन्ता के साथ

पिता ने उत्तर दिया—तुम पड़ोसियों के पास ज और उनसे कहो कि हीरो को कुछ भी खाने को न दें, क्य उसकी तन्दुरुस्ती तभी अच्छी रह सकती है जब उसे समय पर और ठीक प्रकार का खाना मिले। दिन और अनियमित तरीक़े से खाने से तन्दुरुस्ती कभी नहीं रहती। मैं समझता हूँ कि यदि तुम उन लोगो इस तरह कहोगे तो वे अवश्य समझ जायँगे और फिर को खाने को न दिया करेंगे।

अनिल ने ऐसा ही किया। अपने पड़ोसियों के जाकर उसने सब हाल कहा। पड़ोसियों ने अनिल को दिया कि अब हीरो को कभी खाने को न देंगे। वे हीरो को बहुत पसन्द करते थे और जब उन्हें मालूम कि सड़ी-गली और बासी चीज़ें खिलाने से उसकी तन्दुरु ख़राब हो रही है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ।

जल्द ही हीरो फिर पहले की तरह फुर्तीला और तेज़ गया। अब वह खाना भी मन से और समय पर खाने लग

अनिल ने कहा—अब हमारे पड़ोसी हीरो को कुछ खिलाते इसलिए हीरो भी अब उन्हें उतना नहीं चाहता।

'हीरो कुत्ता है, उसे यह समझ नहीं है कि हमारे पड़े अब उस पर पहले से अधिक दया करते हैं।' पिता उत्तर दिया।

* * *

बकरी की आदत

लेखक, श्रीयुत 'विभूति'

मेरी बकरी मिमी रात दिन,
जो कुछ पाती खाती;
रोटी, पत्ती, घास और है
कागज़ तक खा जाती।
मैं भी इसी तरह पहले जो
पाता उसे चबाता;
पेंसिल, डोरी और किताबें,
उँगली के नख खाता।
लेकिन अब मैं समझ गया हूँ,
बहुत बुरी यह आदत;
नहीं चाहिए बकरी की-सी,
रखनी मुझको आदत।

अद्भुत जीव-जन्तु

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश', मिरज़ापुर

संसार में ऐसे बहुत-से जीव-जन्तु होते हैं जो चित्र होते हैं। हमारे बाल-सखाओं ने बहुत भुत जीव-जन्तु देखे होंगे। इस लेख में कुछ जीव-जन्तुओं के बारे में बताऊँगा। केकड़े सबने देखा ही होगा। वह अपनी टूटी हुई ो बड़ी चतुराई से ठीक कर लेता है। इस वह बहुत होशियार होता है। जीव-जन्तुओं आदमियों में भी तुमने ऐसा सुना है।

अब एक दूसरे जानवर का हाल सुनो। इसे में पेटू कहते हैं। यह होता तो है बहुत छोटे पर भोजन करने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध ह हफ्ते में अपनी तौल से २०००० गुना भोजन कर डालता है। दुनिया में शायद ही सा जीव होगा जो इतना भोजन करता हो। आज-कल की लड़ाइयों में विषैली गैसों को लाया जाता है। एक ऐसा कीड़ा होता है जो ी गैस निकाला करता है। उसका भी हाल इसे धुएँबाज़ कीड़ा कहते हैं। जब कोई इस पर हमला करता है तो यह अपने मुँह से रह का बदबूदार धुआँ छोड़ता है जिससे करनेवाला बेचैन हो उठता है और यह मौक़ा नौ दो ग्यारह हो जाता है। इसी तरह एक और होता है जो बदबू छोड़ता है। एक समुद्री कीड़ा तोप आग उगलता है। इसे अँगरेज़ी में जेलीफिस हैं। इसके शरीर में पानी का एक बड़ा भाग हता है जो छूने से तत्काल गर्म हो उठता है। देश में एक ऐसा कीड़ा पाया जाता है जिसके से तेल निकलता रहता है। यह तेल अगर के शरीर में लग जाय तो सारे शरीर में ही फफोले पड़ जाते हैं।

समुद्रों में तारा नामक एक मछली पाई जाती गर तुम उसके शरीर का एक हिस्सा काट दो तो वह कटा हुआ भाग ही एक दूसरी तारा मछली बन जाता है। एक और ऐसा जीव समुद्रों में पाया जाता है जिसकी आँखें फोड़ने से उसे फिर आँखें मिल जाती हैं बिजली की। पेड़ों और पानी पर घोंसला बनाकर रहनेवाली मछलियों का हाल तो हमारे बाल-सखा जानते ही हैं। और भी इसी तरह के कई जीव गहरे समुद्रों में पाये जाते हैं जिनके शरीर से हमेशा एक तरह की रोशनी निकलती रहती है। एक और मछली होती है जो समुद्र की सतह से सौ-सौ गज़ ऊपर उड़ा करती है। इसी सिलसिले में दो और मछलियों का वर्णन करना हम अनुचित नहीं समझते। इनमें से एक को हाँगर और दूसरी को लम्बे मुँहवाली मछली कहते हैं। इसकी लम्बाई क़रीब ३०-३२ फ़ुट होती है और ५-६ लम्बे दाँतों के अलावा इसके ५—६ फ़ुट लम्बी भयङ्कर पूँछ होती है जिससे यह मनुष्यों और जीव-जन्तुओं को मारती है। लम्बे मुँह वाली के, जैसा कि नाम से प्रकट है, कान के पास एक लम्बा, तलवार-सा, मुँह होता है जिसके दोनों ओर बहुत ही नुकीले दाँत होते हैं। यह भी प्रायः २४-२५ फ़ुट लम्बी होती है। यह बहुत हिंसक होती है और आनन-फ़ानन में बड़े-बड़े मज़बूत और भारी जहाज़ों को तोड़-फोड़ देती है। और भी बहुत-सी विचित्र मछलियाँ होती हैं।

अब साँपों का हाल सुनिए। एक प्रसिद्ध अँगरेज़ी लेखक ने एक ऐसे सामुद्रिक साँप का वर्णन किया है जिसकी लम्बाई १५० हाथ और मोटाई २० हाथ के लगभग थी। एक जर्मन लेखक ने ५०० हाथ लम्बे साँप का ज़िक्र किया है। यह एक द्वीप में ५-६ बार देखा गया था। हाल ही में दो पूँछवाले बन्दरों का स्याम में पता चला है।

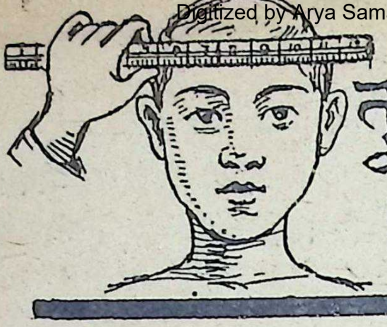

तुममें कितनी बुद्धि है?

नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके उत्तर निकालकर अगले अंक में प्रकाशित होनेवाले उत्तरों से मिलाइए। देखिए आपका साधारण ज्ञान कितना है।

१—रोशनी किस चीज़ की होती है?

२—क्या पत्थर भी जीवित होता है?

३—पानी जमता क्यों है?

४—क्या मक्खी एक ही समय सब ओर देख सकती है?

५—बर्फ़ सफ़ेद क्यों होती है?

६—श्याम का स्कूल काफ़ी दूर है। जब वह मन्दिर के पास पहुँचा तो एक चौथाई रास्ता तै कर चुका था और साढ़े आठ बजे थे। जब वह स्टेशन के पास पहुँचा तो एक तिहाई रास्ता तै कर चुका था और नौ बजने में २५ मिनट थे। वह किस समय स्कूल पहुँचता है?

७—श्याम, मोहन अपने पिता और डाकिये के साथ नदी पार करने को खड़े थे। श्याम और मोहन का अलग अलग वज़न ३०-३० सेर है और पिता तथा डाकिये का अलग-अलग वज़न ६०-६० सेर। नाव में केवल ६० सेर वज़न जा सकता है। बताओ उन्होंने नदी कैसे पार की।

८—संसार का चक्कर लगानेवाला पहला आदमी कौन था?

नवम्बर महीने में छपे प्रश्नों के उत्तर

१—घड़ी को बारह बजाने में ६६ सेकंड लगेंगे। पहले घंटे और छठे घंटे के बीच पाँच बार अवकाश होगा। हर एक अवकाश ५ सेकंड का होगा। पहले और व घंटे में ११ बार अवकाश होगा। हर एक ५ सेकंड का हो इसलिए ६६ सेकंड लगेगा।

२—आख़िरी लड़के के लिए मिठाई मेज़ पर रह ग

३—चोर मकान के चारों ओर ४० सेकंड में लगाता है और मकानवाला ३० सेकंड में। जितनी में चोर मकान के तीन चक्कर लगाता है उतनी दे मकानवाला चार चक्कर लगाता है अर्थात् घरवाला चक्करों में चोर से एक चक्कर बढ़ जाता है। चूँकि चोर आधे चक्कर आगे था इसलिए घरवाला दो चक्करों के उसे पकड़ लेगा।

४—नील नदी की खोज।

५—एवरेस्ट पर्वत, गाडविन आस्टिन, काञ्चनजङ्गा, पर्वत, कामट और एलम्पू संसार के ६ सबसे ऊँचे पहा

६—हाँ, पर अमरीका का पता लगानेवाला को ही माना जाता है।

७—जाड़े में पुरानी पत्तियाँ सूख जाती हैं और स्थान पर फिर नई पत्तियाँ निकलती हैं इसलिए वे पेड़ से जाती हैं।

८—आसमान का कोई रङ्ग नहीं है। वायुमण्डल प्र रङ्ग को अपने से अलग करके केवल नीला रङ्ग ग्रहण क है इसलिए आसमान नीला दिखाई देता है।

गीत

लेखक, श्रीयुत सुरेशकुमार 'सुमन'

ये जगमग जलते तारे सिखलाते हैं मुस्काना।
ये मस्त झूमते पौधे बतलाते हैं इठलाना॥
ये रवि, चन्दा की किरणें, सिखलाती हैं चमकाना।
ये प्रिय फूलों की टोली, सिखलाती मन बहलाना॥

ये झर-झर झरते झरने, सिखलाते काम जुटाना।
ये कल-कल करती नदियाँ, बतलातीं दुख में गाना।
ये सदा खड़े चुप पर्वत, सिखलाते हैं डट जाना।
यह बढ़ती हवा हमें है बतलाती बढ़ते जाना॥

राजकुमार और उसके साथी

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश', मिरजापुर

एक बड़ी मज़ेदार और अच्छी कहानी है। किसी
क राजा था जिसके एक लड़की थी। रानी ने यह
की थी कि जो कोई मेरे कामों को पूरा करेगा उसी के
अपनी लड़की का विवाह करूँगी और जो आकर न
गा उसका सर काट दिया जायगा। सैकड़ों राज-
प्राये पर किसी
नहीं हुआ
बने अपनी
ा दी।

ख़िरकार एक
र, जो बहुत
में रहता था,
भाग्य आज़-
ा। जाते-जाते
बड़े जङ्गल में
उसने कुछ दूर
बड़ा भारी
देखा और
उसके पास
मालूम हुआ
जानवर नहीं,
हाड़-सा बहुत
दमी है। जब
राजकुमार को
चिल्लाया—
जकुमार, मुझे
ने साथ ले

तुम्हें ले चल-
करूँगा ? तुम
भारी हो कि
काम नहीं, आ
।"—राजकुमार
।

मोटा हूँ तो तुम्हारा तो कुछ नुक़सान नहीं
।" वह बोला।

जकुमार ने यह सोचकर कि चलो रास्ते में मनोरञ्जन
उसे अपने साथ ले लिया। अब वे दोनों चले।
र जाने के बाद उन्हें एक ऐसा आदमी मिला जो
जेठ की दोपहरी में एक जलते पत्थर पर लेटा था और उसे कुछ भी आँच नहीं लगती थी।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"—राजकुमार ने पूछा।

"मुझे बहुत ठण्ड लग रही है, इसलिए मैं यहाँ लेटा हूँ कि मेरी ठण्ड दूर हो जाय। मुझे भी अपने साथ ले चलो।"—उसने कहा।

राजकुमार ने उसे भी अपने साथ ले लिया। अब वे तीनों चले। कुछ दिनों बाद वे उसी नगर में पहुँचे जहाँ वह राजकुमारी रहती थी। राजकुमार ने रानी के पास जाकर कहा—शर्तें बतलाइए। मैं काम करने आया हूँ।

रानी ने कहा—पहली शर्त तो यह है कि उस झील के भीतर मेरी अँगूठी गिर पड़ी है उसे लाओ।

राजकुमार ने अपने दोनों मित्रों के पास जाकर रानी की शर्त सुना दी। पहाड़-से बड़े शरीरवाले मनुष्य ने कहा कि यह कौन-सी बड़ी बात है। मैं अभी उस झील का पानी पी लेता हूँ तब अँगूठी अपने आप दिखलाई पड़ जायगी। बस, उसने झील का सारा पानी पी डाला। तुरन्त ही अँगूठी मिल गई। उसने अँगूठी राजकुमार को दी और राजकुमार ने रानी को। अँगूठी देखकर ही रानी बहुत चकित हुई।

अब राजकुमार ने रानी से दूसरी शर्त पूछी। रानी ने कहा—उस कोठे में २०२० पीपे घी के हैं। इन सब को पी

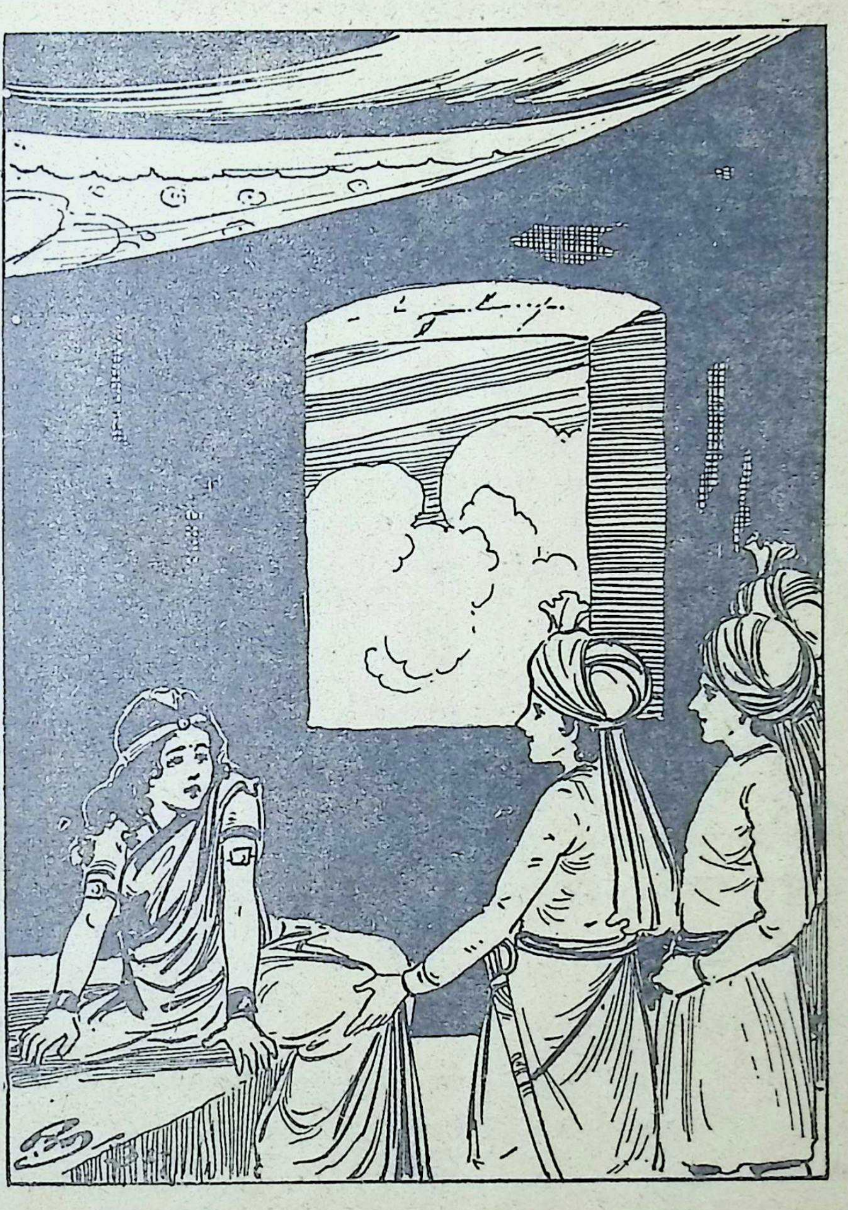

राजकुमार ने रानी से शर्तें पूछीं।

जाना है। राजकुमार ने आकर अपने मित्र की शर्त सुना दी। तब वह बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि आज अहोभाग्य है कि मुझे भर पेट भोजन मिल रहा है। वह तुरन्त कोठे में गया और सब घी चट कर गया। अब राजकुमार रानी के पास गया और कहा कि आपकी दूसरी शर्त पूरी हो गई। रानी ने जाकर देखा तो बात सही थी। घी के सब पीपे खाली पड़े थे। अब राजकुमार ने रानी से तीसरी शर्त पूछी। रानी ने कहा कि एक तेल से भरी खौलती कड़ाही में एक घंटा रहना।

रानी मन ही मन बहुत प्रसन्न हुई कि इस बार ये अवश्य चूकेंगे। पर उसका यह ख़याल ग़लत निकला।

इधर राजकुमार अपने दोस्त के पास गया और शर्त कही। वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि अच्छी बात है। इससे मेरी सर्दी दूर हो जायगी। वह तुरन्त रानी के सामने एक तेल के खौलते कड़ाह में पड़ा (जिसे रानी ने पहले से तैयार कर रक्खा था) लगा उसमें ख़ूब नहाने। वह उसमें इतना प्रफुल्लित लाई पड़ा जितना ख़ुश वह कभी नहीं दिखलाई पड़ा। कहने लगा यह तो कुछ गर्म नहीं है। यह देख लोग बड़ा ताजुब हुआ एक घंटे की जगह दो घंटे वह रहा। रानी की तीनों शर्तें पूरी हो गईं और धूमधा राजकुमारी का विवाह राजकुमार के साथ हो गया।

मेरा भण्डार

लेखक, श्रीयुत स्वर्णसहोदर

मेरा अलबेला भण्डार।
चीज़ें भरीं हज़ार-हज़ार॥

[१]

ताक पटौंटी, बस्ते, खीसे, पेटी और न जाने,
घर में जगह-जगह हैं अपने कितने खुले ख़ज़ाने।
मुश्किल पाना पारावार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[२]

मैया जोड़े सूपा, दौरी, चूल्हा, चक्की, कुँड़िया,
मैं जोड़ूँ चमकीले कङ्कड़, टूटे शीशे, गुड़िया।
अपना यह ही है संसार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[३]

बहन सहेजे कङ्घी, चूड़ी, माला, गुरिया, छूटे,
खड़िया, गौरापान, गेंद मैं जोड़ूँ लाई, फूटे।
मेरा अटपट कारोबार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[४]

भरी किताबों से रहती है भैया की अलमारी,
इधर सीप, गुल्ली, डण्डों से भरी दुरौंधें सारी।
कोई चीज़ें नहीं बेकार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[५]

दादी पेटी में रखतीं हैं कठले, ईंगुर, बिन्दी,
मैं धरता हूँ ढूँढ़-ढूँढ़ रद्दी काग़ज़ की चिन्दी।
उनमें मिलता मज़ा अपार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[६]

दादा बटुवा भरें सुपारी, लौंग, खैर, सुरती से,
कौड़ी, गोली, पेंसिल से मैं भरूँ लबालब खीसे।
मेरे ये ही हैं आधार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[७]

पिता तिजोरी में भर रखते रुपये, चाँदी, सोना,
मैं भरता अपनी चीज़ों से घर का कोना-कोना।
मेरा है उन सब पर प्यार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[८]

भरता आसमान तारों से, फूलों से फुलवारी,
दुनिया भर की चीज़ों से, भरती सन्दूक़ हमारी।
रखता रोज़ सँवार-सँवार,
मेरा अलबेला भण्डार।

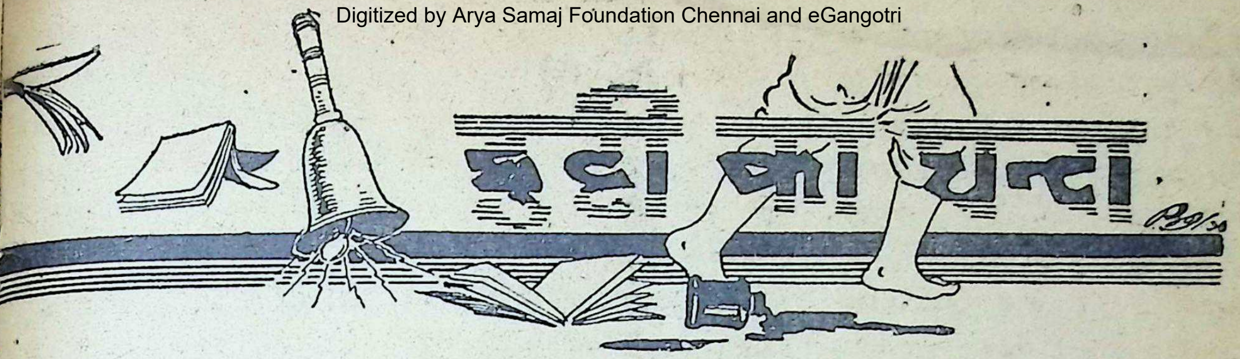

जाड़े की ठंडी हवा

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता वर्मा

"जाड़े की ठण्डी हवा सुखद
मुझको है बुला रही बाहर।
बाहर खेलूँगा, कूदूँगा
क्या धरा हुआ घर के भीतर।"
—यह कह मुन्नू बाहर निकला
तलुवे उसके हो गये लाल
तब ठिठुर उँगलियाँ बोल उठीं—
"क्यों कष्ट दे रहे हो कराल।"
"हम गली जा रहीं।" रो बोलीं
चट सभी उँगलियाँ नवा माथ;
"हम हुए सुन्न।" बोले चुपके
दो बड़े अँगूठे साथ-साथ।
"जाड़े के मारे तो मेरा
हो रहा अभी से बुरा हाल;"
बोले मुन्नू के कान तुरत
जाड़े के कारण हुए लाल।
सरदी से ठिठुर नाक बोली,—
"क्यों मुझे कर रहे परेशान ?
चलकर फ़ौरन घर में बैठो
क्यों देने को जा रहे जान।"
हाथों की उँगली मुट्ठी बन
पहुँचीं तब कपड़ों के नीचे
कुछ गरमाकर, कुछ समझाकर
बोलीं वे यों आँखें मींचे—
"हम नहीं साथ में खेलेंगी
मुन्नू जाड़े में जा बाहर;
हमको तो अच्छा लगता है
बस अपने कमरे के भीतर।"
किट-किट कर दाँत सभी बोले—
"मुन्नू, मत जा घर के बाहर।
हम टूट जायँगे आपस में
जाड़े के मारे यों लड़कर।"
पर मुन्नू उनकी सुन न सका,
झट दौड़ आ गया उपवन में;
उसको सर्दी का क्या भय था
उत्साह भरा था जब मन में।
वह लगा खेलने फूलों से
घासों के मोती बिखराये,
छोटी चिड़ियाँ, तितली, भौंरे
थे सभी खेलने सँग आये।
मुन्नू सर्दी को भूल गया
गर्मी उसके तन में आई;
वह लगा खेलने ख़ुश होकर
चिल्लाकर "अब गर्मी आई।"
मुन्नू बोला मैं जान गया—
"जाड़े से डर का नहीं काम;
खेलो, कूदो, गर्मी आये
फिर जाड़े का है कहाँ नाम।"

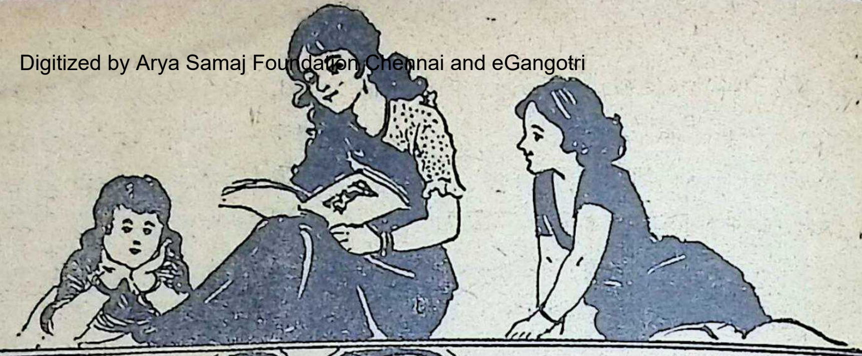

सहेली

कहानी

वनशोभा और नागराज

लेखक, श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव 'प्रकाश'

बहुत दिनों की बात है, श्रीपुर नगर में एक ठाकुर रहता था। उसका नाम अग्निकुमार और उसकी स्त्री का जया था। उनका घर घास-फूस का बना हुआ था। उनके पास दो गौएँ और कुछ बकरियाँ थीं जिन्हें उनकी लड़की विमला चराया करती थी। विमला बड़ी सुन्दर थी। वह दूसरों की सहायता खूब करती।

जिस समय विमला की माँ की मृत्यु हो गई उस समय वह ६ वर्ष की थी। विमला सवेरे उठकर घर को झाड़ती-बुहारती; फिर रसोई बनाती और पिता को भोजन कराती। गौओं और बकरियों को लेकर वह धूप में चराने जाती और साँझ होने पर आती।

एक दिन विमला जल्दी ही अपनी बकरियाँ और गौएँ लेकर चराने चली गई। दोपहर होने पर वह एक बहुत छोटे पेड़ के नीचे घास पर बैठ गई। इतने में खड़-खड़ का शब्द हुआ। वह चौंक उठी। उसने देखा कि एक काला लम्बा साँप उसकी ओर आ रहा है।

वह काँप गई। उससे भागते न बना, वह चुपचाप बैठी रही। इतने में साँप मनुष्य की बोली में बोला—"मैं इस समय सङ्कट में हूँ। मुझे कहीं छिपा लो। शिकारी दौड़े आ रहे हैं। वे मुझे बन्द कर लेंगे।"

विमला को दया आ गई। उसने साँप को अपनी साड़ी के आँचल में छिपा लिया। फिर बैठकर आँख मलने लगी। इतने में झोला, बाँसुरी और जड़ी-बूटी लिये शिकारी आ गये। एक ने पूछा—"क्यों लड़की, तूने इधर से एक काले साँप को जाते देखा है ?"

"नहीं, मैं तो अभी सोकर उठी हूँ।" लड़की ने आँख मलते हुए कहा। शिकारियों को उस पर विश्वास हो गया। वे साँप की तलाश में आगे बढ़ गये। जब शिकारी दूर निकल गये तो लड़की ने साँप को बाहर निकालकर व
"सर्प देवता, शिकारी चले गये। तुम भी भाग जाओ।

वह इतना ही कह पाई थी कि साँप एक राजकु
रूप में बदल गया। विमला अकचका गई। उसने सो
यही हमारी नानी की कहानियों के नागदेव हैं क्या ?
उनके चरण छूने उठी थी कि कुमार ने कहा—"यह तु
सत्कर्मों का फल है। जो वरदान चाहो, माँग लो।"

विमला ने सोचकर कहा—"जब मैं बकरियाँ चराने
हूँ तो बड़ी धूप लगती है। कृपा कर आम का ऐसा पेड़
दीजिए जो मुझपर छाँह किये रहा करे और जहाँ-जह
जाऊँ, वह भी साथ साथ जाय।"

नागराज ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। विमला
एक आम का पेड़ उग आया। उसमें सुन्दर फल लग
इसके बाद राजकुमार ग़ायब हो गया। विमला जह
जाती, वह आम का वृक्ष साथ-साथ जाता।

एक दिन की बात है। कड़ाके की गर्मी पड़ रही
विमला अपनी गाय और बकरियाँ लेकर चराने गई।
थककर उसी आम के वृक्ष के नीचे सो गई। उस दिन
ओर से मगध के राजा यशवन्तसिंह जा रहे थे। हाथी
घोड़ों की चिग्घाड़ों से बकरियाँ तितर-बितर हो गईं। वि
उन्हें इकट्ठा करने को दौड़ी तो उसके साथ आम का
भी गया। मन्त्री ने यह आश्चर्य से देखा। उसने
से कहा। राजा तो ठगा-सा रह गया। उसने आज्ञा द
लड़की पकड़कर लाई जाय।

लड़की लाई गई। राजा उसपर मोहित हो गया।
मन्त्री से कहा कि हम इससे व्याह करना चाहते हैं।
ने लड़की से कहा—"हमारे राजा तुमसे शादी करना च
हैं।" "मैं क्या कह सकती हूँ। पास के गाँव में ठ

ार रहते हैं। उनसे जाकर पूछिए। मैं उनकी ।” विमला ने उत्तर दिया।

सेना श्रीपुर नगर में पहुँची। मन्त्री ने ठाकुर ुँचकर उनसे अपने राजा की इच्छा प्रकट की। में उन दोनों की शादी हो गई। राजा ने गाँव भर दी। फिर राजा विमला को—जिसका नाम उसने ा रक्खा—लेकर मगध चला गया। वनशोभा के का आम का वृक्ष भी गया।

ोभा के चले जाने के बाद उसके पिता ने दूसरा किया। इस स्त्री से उसके एक लड़की हुई।

दिन अग्निकुमार को ख़बर मिली कि वनशोभा के होनेवाली है। अग्निकुमार की नई पत्नी वनशोभा से ती थी। इसलिए उसने पति से कहा—“यदि मैं प्यारी को कुछ भेंट कर सकती तो अच्छा होता।” अग्नि- कहा—“हम भला विमला को क्या भेंट कर सकते हैं?” ट तो चाहे टके की हो चाहे लाख रुपये की, बर है।” स्त्री ने कहा।

कुमार राज़ी हो गया। उसने विमला के लिए एक मिठाइयाँ भर दीं, जिनमें उसने ज़हर मिलाया था। न पति को देकर उसने कहा—ये मिठाइयाँ विमला ा और कहना कि इन्हें अकेले ही खाय। हाँ, उसको होनेवाली है तो उसे लिवाते आना।

कुमार उस मिठाई की पोटली को हाथ में लटकाकर या। रास्ते में एक बरगद के पेड़ के नीचे पहुँचा। ी था ही, पोटली को सिरहाने रखकर सो गया। उस पेड़ से वही साँप उतरा। उसने मिठाई की खोली और सारा विष खींचकर उसमें कुछ सुगन्धित ला दिया। फिर वह ऊपर चढ़ गया। थोड़ी देर कुमार उठा। अपनी पोटली उठाकर वह चल दिया। े दिन वह मगध जा पहुँचा। वहाँ उसने पोटली ा को दी। वनशोभा उसे लेकर राजा के पास गई। मिठाइयाँ खाईं और बड़ी तारीफ़ की।

नकुमार वहाँ कई दिन तक रहा। चलते समय उसने कहा—सरकार, वनशोभा गर्भवती है इससे वह हमारे घर। ठाकुरों में पहली सन्तान पिता के घर पर होती है। ा राज़ी न होते थे। पर मन्त्री ने समझाया। अन्त राज़ी हुआ। वनशोभा अपने पिता अग्निकुमार आम के वृक्ष के साथ रवाना हुई। दो-तीन दिन ोभा दास-दासियों और पिता के साथ पालकी पर घर पहुँची। विमाता ने उसका बड़ा स्वागत कुछ दिनों में वनशोभा को एक पुत्र हुआ।

सैर करने गई। सुनसान में एक कुआँ देख वनशोभा ने पूछा—“माँजी, यह कुआँ किसने बनवाया है?” माँ ने कहा—“बेटी, मैंने इसे तुम्हारे ही नाम पर बनवाया है, ज़रा देखो तो कितना सुन्दर है।” वनशोभा उसे देखने के लिए गई तो विमाता उसे ढकेलकर घर लौट आई।

नागराज उसी कुएँ में रहता था। उसने वनशोभा को ले जाकर अपने महल में रक्खा। उसका आम का पेड़ भी उसके साथ-साथ वहाँ गया। कभी-कभी नागराज वनशोभा की विमाता को मज़ा देने की सोचता पर वनशोभा रोक देती।

इधर सौतेली माता तुलसी की पुत्री राजरानी बन बैठी। वह बच्चा भी उसी का हो गया। परन्तु उसका स्वभाव और रूप वनशोभा का-सा नहीं था। एक दिन राजा ने अपने विश्वासपात्र मन्त्री को रानी को बुला लाने के लिए भेजा। रानी राजा के यहाँ आई। लेकिन आम का वृक्ष उसके साथ न था। यह रानी-तुलसी की बेटी मुनिया थी।

एक दिन राजा ने रानी से कहा—“तुम इतनी बदसूरत कैसे हो गईं? तुम्हारा आम का वृक्ष कहाँ है?”

“मैं अभी बीमारी से उठी हूँ। वृक्ष को तो जब चाहूँगी बुला लूँगी।” इस पर राजा को सन्तोष न हुआ। इधर पृथ्वी के नीचेवाले महल में वनशोभा रहती थी। एक दिन उसने अपने पुत्र को देखना चाहा। उसने नागराज से कहा—“नागकुमार! क्या आप मुझे पुत्र को देखने की आज्ञा देंगे?”

“हाँ हाँ, परन्तु तुम सवेरे तक चली आना, नहीं तो हमारा-तुम्हारा नाता नहीं रह जायगा।”

“अच्छा” वनशोभा ने कहा। वह गुप्त द्वार से राजमहल में गई। वहाँ अपने पुत्र को प्यार करके वह चली आई। परन्तु आम के वृक्ष के कुछ पत्ते वहीं रह गये। सवेरे राजा ने रानी से पूछा—“ये पत्ते कैसे?”

“मैंने आज आम के वृक्ष को बुलाया था।” उसने उत्तर दिया। “फिर उसको बुलाओ” राजा ने कहा। “नहीं, वह रात ही में आता है।” रानी ने उत्तर दिया।

राजा का सन्देह और बढ़ गया। रात को राजा साहब उस कमरे में छिपकर बैठ गये। थोड़ी देर में वनशोभा आई। उसने बच्चे को उठाकर प्यार किया, फिर जाने लगी तो राजा ने झपटकर उसको पकड़ लिया।

“मुझे धोखा देकर कहाँ छिपी थीं?” राजा ठहाका मारकर बोले। “अरे मुझे छोड़ दो। मैं यह कहानी कल बताऊँगी।” “नहीं आज ही सुनाओ।” राजा ने कहा।

कहानी कहते-कहते सवेरा हो गया फिर वनशोभा न जा सकी। दूसरे दिन वनशोभा ने जब बाल काढ़े तो उसमें से एक मरा हुआ साँप निकला। उसको यह जानकर दुःख हुआ

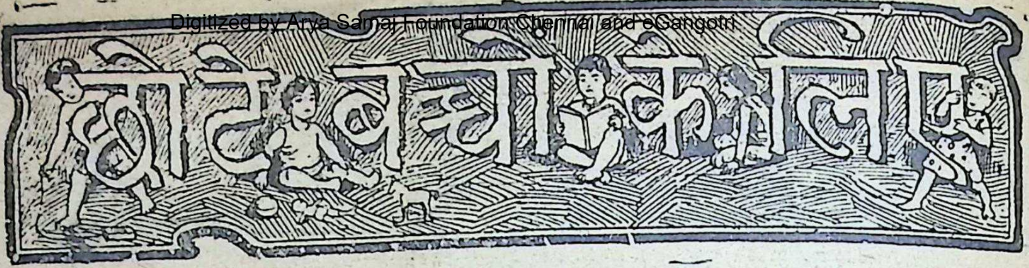

चन्दा

लेखक, श्रीयुत जयन्त वर्मा

माँ, तुम चन्दा को तो देखो
मुझे देख क्यों हँसता है;
जब मैं इसको पास बुलाता
बादल में छिप जाता है।

इसके भीतर चरखेवाली
बुढ़िया बैठी रहती कौन?
बिठा वहाँ इसको आया है
माँ, मुझको बतलाओ, कौन।

बैठी सदा कातती चरखा
कभी नहीं क्या थकती है!
नहीं भूख क्या इसको लगती
नहीं कभी जो उठती है।

एक बात है और बताओ
माँ क्यों यह चलता रहता!
सारी रात घूमने को है,
कौन बता इसको कहता।

माँ, यदि चन्दा कहीं हमारी
इस धरती पर आ जाये;
तो हम इसको पकड़ बिठायें
कभी न यह जाने पाये।

और कहीं यदि उस बुढ़िया ने
मुझको चरखे से मारा;
तो मैं छीन सदा को लूँगा,
बुढ़िया से चन्दा प्यारा।

रेल का खेल

लेखक, श्रीयुत धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया

साथी हुए इकट्ठे चार।
सब ने मन में किया विचार॥
आओ भाई खेलें खेल।
आज बनावें अपनी रेल॥

बना भवानी चटपट इञ्जन।
डिब्बे बन गये राघव रञ्जन॥
बना किशोरी तब फिर गार्ड।
सबने मिल की रेल स्टार्ड॥

अब देखो स्टेशन आई।
उतरो उतरो भागो भाई॥

कबड्डी

लेखक, श्रीयुत सत्यनारायण शर्मा

आओ आओ खेल कबड्डी
हुड्ड-डुड्ड का खेलें खेल;
खड़े हुए क्यों बाल-सखा तुम
आपस में हो रहे झमेल।

आओ मिलकर सभी बनावें,
मोहन सोहन एक क़तार;
दो दल में फिर बँट करके हम
हुए खेलने को तैयार।

साँस टूट जाने के कारण
अटपट सिंह तो बैठ गये;
उन्हें खड़ा फिर करना होगा
यहीं मर भी तुरत जिये।

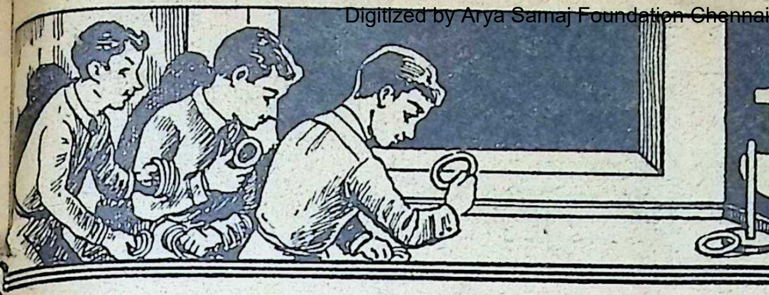

मनोविनोद

रज़ी ने जब कपड़े की नाप ले ली तो आदमी ने नम्रता-
उससे कहा—लेकिन देखिए, मैं आपकी सिलाई तीन
तक न दे सकूँगा।

ोई हर्ज नहीं; तीन महीने बाद ही दीजिएगा।' दरज़ी
त उत्तर दिया।

ाप बहुत भले आदमी हैं।' ग्राहक ने कहा—'और
कब तक सिल जायगा?'

ीन महीने बाद।' दरज़ी ने उत्तर दिया।

× × × ×

ूल के लड़के ड्रिल कर रहे थे। मास्टर ने कहा—दो
ागे बढ़कर तेज़ क़दम चलो।

 नया विद्यार्थी खड़ा हुआ यह सब देख रहा था।
ास खड़े हुए एक दूसरे लड़के से कहा—यह मास्टर
ना आलसी है। दो क़दम ख़ुद आगे बढ़कर लड़कों
 पहुँचने के बजाय इतने लड़कों को ही आगे
ो कह रहा है।

× × × ×

ा—(माँ से) माँ, हमारा छोटा भैया रोता क्यों है?

ाँ—दाँत निकल रहे हैं।

ा—क्यों, क्या वह दाँत नहीं चाहता?

—निरङ्कारनाथ अग्रवाल

× × × ×

 बहरा आदमी अपने बीमार मित्र से मिलने गया।
मित्र से पूछा—कहो क्या हाल है?

ीमार—मरने के क़रीब हूँ।

रा मित्र—(ठीक हूँ समझकर) बड़ी ख़ुशी की
। क्या खाते हो?

ीमार—(बिगड़कर) पत्थर।

त्र—(खिचड़ी समझकर) बड़ा अच्छा भोजन है।
ं को ज़रूर खाना चाहिए। इलाज किसका है?

ीमार—(अधिक बिगड़कर) यमराज का।

मित्र—(किसी प्रसिद्ध डाक्टर को समझकर) बड़ा
 डाक्टर है। जल्द ही रोग से पीछा छुड़ाता है।

× × × ×

 तरकारीवाला मटर बेच रहा था। किसी आदमी
—क्या बेच रहे हो?

मटरवाला—यही जी, मटर-सटर।

आदमी ने पैसा निकालकर कहा—अधेले की मटर दे दो, अधेले की सटर।

मटरवाला—कहीं ...?

आदमी—अधेले की कहीं...दे दो।

मटरवाला—अररररर.........

आदमी—अधेले की 'अररररर' दे दो।

बेचारा मटरवाला सकपकाकर चला गया।

—कुसुमकुमारी माथुर

× × × ×

पुराने ज़माने में किसी गाँव के ठाकुर शराब के नशे में चूर थे कि उन्हें सामने एक मोर उड़ता दिखाई दिया। उन्होंने अपने मित्र से पूछा कि क्या हम भी इस तरह उड़ सकते हैं। मित्र ने जवाब दिया—जी हाँ, आप भी उड़ सकते हैं। साथ ही उन्होंने तरकीब भी इस तरह बता दी कि आप अपने दोनों कन्धों में दो सूप बाँधकर और छत पर जाकर अपने हाथ हिलाते हुए कूदें तो इसी प्रकार उड़ सकते हैं। यह तरकीब ठाकुर साहब को जँच गई। उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योंही आप कूदे कि एक धड़ाम की आवाज़ के साथ सदा के लिए उड़ गये।

× × × ×

सुशीला ने अपनी सहेली से पूछा कि क्या तुम्हारे पास, 'माडर्न इँगलिश' किताब की कुञ्जी है? सहेली लीला ने जवाब दिया कि अफ़सोस, मेरे पास ऐसी कुञ्जी नहीं है जिससे मैं किताब खोलूँ।

× × × ×

ज्योंही मैं एक गली में घुसा कि एक लड़के भगवानदास की कमान में क़रीब बारह लड़के लम्बी-लम्बी लकड़ियाँ लिये एक छेद की तरफ़ देख रहे थे। गोपाल नाम के लड़के से पूछने पर पता चला कि थोड़ी देर पहले एक चूहा उस छेद में घुसा था और वे बारह लड़के उसी को मारने के लिए खड़े थे।

—गोकुलदास राठी, ब्यावर

× × × ×

ड्राइंग मास्टर ने भुवन की दी हुई ड्राइंग-कापी देखकर कहा—भुवन, तूने क्या बनाया है?

भुवन—चूहा।

ड्रा० मास्टर—कहाँ है? मुझे तो दिखाई नहीं देता।

भुवन ने जवाब दिया—वह अपने बिल के अन्दर चला गया होगा।

—वीरेन्द्रकुमार वैद्य

प्रश्न-पहेली

एक गाँव में आग लगी है,
एक गाँव में धुँआ;
एक गाँव में बाँस गड़ा है,
एक गाँव में कुँआ।—(हुक्का)

—रामचरण

× × ×

तीन अत्तरों का है नाम,
मैं आता लिखने में काम।
आदि कटे बनता मैं वात,
मध्य कटे बन जाता दात।—(दावात)

—जुगुलकिशोरप्रसाद

× × ×

तीन अत्तरों का मम नाम,
आता हूँ मैं सबके काम;
पड़ा पलँग पर सोया करता,
लोगों के हूँ सिर से दबता।—(तकिया)

× × ×

तीन वर्ण का मेरा नाम,
अन्त कटे प्याला बन जाऊँ;
काटो आदि पड़ा रह जाऊँ,
मध्य निकालो कड़ा कहाऊँ।—(कपड़ा)

—के० के० गुप्त

× × ×

लाल-लाल पहाड़ पर
सफ़ेद भेड़ें चरतीं;
भोजन चबाकर पेट-
दूसरे का भरतीं।—(दाँत)

—जयकृष्ण वर्मा

× × ×

तीन अत्तर का मेरा नाम,
गड़-गड़ करना मेरा काम;
आदि कटे तो दल बन जाता,
कटे मध्य तो बाल कहाता।—(बादल)

—जगन्नाथ गुप्त, जैतो

× × ×

तीन अत्तर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान;
आदि कटे से ख़त बन जाता,
अन्त कटे तो तख़ बन जाता।—(तख़त)

—ओम्प्रकाश, जैतो

× × ×

चार अत्तरों का नगर,
प्रथम अन्त ब स होता है।
और मध्य नारी का बोधक,
सुरधुनि तट पर सोता है।—(बनारस

—पञ्चानन पेमाजी का

× × ×

तीन अत्तर का मेरा नाम,
बन-बन फिरना मेरा काम।
आदि कटे हो जाये कारी,
हिंसा करती जाति हमारी।—(शिकारी

× × ×

आदि कटे तो गज बनै,
अन्त कटे तो कौआ।
मध्य कटे तो काज बनेगा,
मत समझो ये हौआ।—(कागज)

—श्यामनारायण व

× × ×

मध्य कटे तो बनता आम,
आदि कटे तो मैं हूँ राम।
अन्त कटे तो बनता आरा,
शीघ्र बता जगदीश कुमारा।—(आराम

—वल्लभदास बिन्ना

× × ×

तीन अत्तरों का है नाम,
पढ़ने में आता मैं काम।
आदि कटे तो नीर कहाता,
अन्त कटे तो द्विप बन जाता।—(गजल)

—मदनला

× × ×

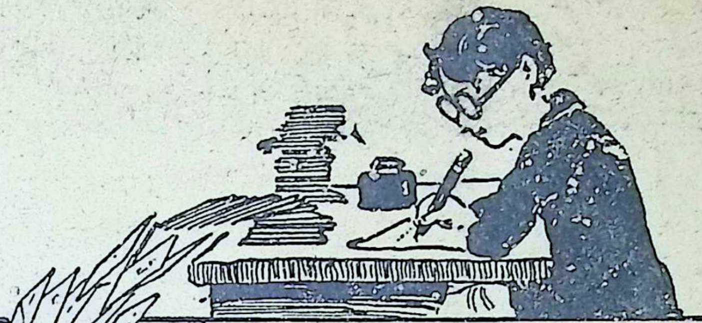

सम्पादक का पत्र

ाल-सखा' के जीवन का यह अट्ठाईसवाँ वष पूर्ण हो रहा
स आनंन्द के अवसर पर हम अपने सभी सहयोगी
ों को बधाई देते हैं और सबसे इसी प्रकार सहयोग देते
। अनुरोध करते हैं। 'बाल-सखा' के जन्म के आरम्भिक
जो लोग हर महीने अपने 'सखा' की बाट बड़ी उत्कण्ठा
करते थे उनके घर ईश्वर की दया से अब 'बाल-सखा'
गये हैं और इस रूप में बाल-सखा के पाठकों की
बढ़ती जा रही है। इधर युद्ध की कठिनाइयों ने
सखा' की भी कठिनाइयाँ बढ़ाई हैं, पर वह अपने
की सेवा करने की चेष्टा यथाशक्ति करता जा रहा है।
४५ के आरम्भ में एक नया उद्योग हो रहा है वार्षिक
निकालने का। इसमें जो सामग्री दी जायगी उसका
विज्ञापन में देखिए और अपना तथा अपने साथियों
म ग्राहकों में लिखाइए।

× × × ×

न्दी कुमार-साहित्य-सम्मेलन का पहला अधिवेशन
में अक्तूबर महीने के अन्तिम सप्ताह में बड़ी धूमधाम
। इस अधिवेशन के सभापति बाल-सखाओं के
वि श्री सोहनलाल द्विवेदी थे। सम्मेलन का कार्यक्रम
ही उपयोगी था। सम्मेलन ने अगले साल के लिए
काम निश्चित किया है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात
धिवेशन के अवसर पर दिया गया सभापति का भाषण
सुन्दर था; उसे प्रत्येक बाल-सखा को पढ़ना चाहिए।
कुमार-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना तथा उसके प्रथम
वेशन को सफल बनाने का श्रेय श्री वीरेन्द्रकुमार
ा को है। सभी कुमार लेखक-लेखिकायें इस सम्मेलन
ना पूरा सहयोग दकर एक स्थायी संस्था बना दें।

× × × ×

इनामी पहेलियाँ

अक्तूबर महीने में छपी इनामी पहेलियों के बहुत-से उत्तर हमारे पास आये हैं। इनामी कहानियाँ भी बहुत-सी आई हैं जिनमें से सर्वश्रेष्ठ कहानी इस अङ्क में छापी गई है। इसके लेखक श्री जगदेवनारायण ग्रा० नं० ६५५५। बी० मार्फ़त श्री रामेश्वरशरण देवकुटीर, मोहननगर, छपरा (बिहार) हैं।

पहेलियों के उत्तर इस प्रकार हैं—

१—मोहन को १० टिकट, श्याम को ५ टिकट, मुन्नी को ३ टिकट।

२—ईंट की तौल ६ सेर है।

३—वानर।

पहेलियों का सर्वप्रथम सही उत्तर श्री नारायणलाल खेमका ग्रा० नं० ५६६५। बी० मार्फ़त हेडमास्टर एम० ई० स्कूल साहबगञ्ज (सन्थाल परगना) का प्राप्त हुआ है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह तक इनाम भेज दिये जायँगे।

इनामी पहेलियाँ भेजनेवालों के नाम

सर्वश्री रामनाथ, त्रिलोकीनाथ भार्गव, कुमारी पद्मादेवी, रूपकिशोर सेठ, श्रीकृष्ण सेठ, राजेन्द्रकुमार, व्रजेश्वरसिंह, सन्तोषनारायण टण्डन, कैलाशविहारी माथुर, कुमारी इंदिरा मलिक, राजेन्द्रकुमार मित्तल, वेदप्रकाश, रामविहारी दीक्षित, शङ्करलाल 'सुमनेश', नारायणलाल खेमका, रमाकान्त बर्नवाल, केशवदेव बजाज़, आनन्दप्रकाश गुप्त, व्रजेन्द्रकुमार खन्ना, गोविन्दप्रसाद, मैनादेवी सेठ, राजकुमार रानीवाला जैन, राजेन्द्रकुमार, बाबूलाल सोमानी, ललनकुमार जायसवाल, तेजपाल गांधी, श्रीकृष्ण अग्रवाल,

113481

श्रीकृष्णप्रसाद, जगवन्तसिंह यादव, कमलादेवी अग्रवाल, विहारीशरण माथुर, अजयकुमार भल्ला, विश्वनाथ गुप्त, सरनकुमारी गुप्त, राजेन्द्रकुमार जैन, नीलिमा चक्रवर्ती, रामरिछपाल रामजीपाल, देवेश्वरप्रसादसिंह चौहान, देवेश्वरसिंह चौहान, मैथिलीशरणसिंह, उगमसिंह सेल, धर्मेन्द्रकुमार काँकरिया, सत्यनारायण अग्रवाल, जयश्रीदेव शर्मा, सुभाषचन्द्र मलिक, पुरुषोत्तमदास, कृष्णमुरारी गुरहा, हरनन्दनसहाय, मुकुन्दजी मेहता, शारदादेवी शर्मा, जगदेवनारायण, सुगनचन्दजी तापडिया, कृष्णकुमार पाण्डेय, लक्ष्मीनाथ सक्सेना, सुरेशचन्द्र, महेश्वर रावत, राजेन्द्रकुमार अग्रवाल, सावित्रीदेवी भट्ट, केशवप्रसाद अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण तिवारी, सूरजभान, कुसुमकुमारी बहुगुना, व्रजभूषणसिंह, राजेन्द्रमोहन माथुर, बी० के० अग्रवाल, कमलादेवी श्रीवास्तव, विश्वम्भरदयाल, पूनमचन्द नाहटा, अजितकुमार, स्नेहलतादेवी, दिनेशचन्द्र, अनुरूपा जायसवाल, पन्नालाल सेठी, रघुवीरनारायण, सुशीलकुमार पटेरिया, प्रेमप्रकाश, सत्यप्रकाश माथुर, हरिश्चन्द्र 'सुशील', सुल्तानसिंह जैन, गोविन्ददास कबरा, विनोदचन्द्र शर्मा, प्रेमसरन, गोवर्धन हरनाथ जोशी, छुन्नू बाबू, सरला भल्ला, श्रीराम अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण रामभाऊ जी त्रिवेदी, शङ्करप्रसाद तिवारी, जगदीशनारायण अग्रवाल, उमरावचन्द, गणेशदत्त कपिलाश्रमी, केशवप्रसाद, विहारीलाल, देवीप्रसाद साहू, नीलिमा और उमा, शैलेन्द्रप्रताप सिनहा, सत्येन्द्रप्रकाश केला, नटवरलाल अग्रवाल, गिरेन्द्रप्रताप सिंह, दिनकर गोपाल लघाटे, सत्यानन्द महथा, शिवनारायणलाल, कोशलेश भारद्वाज, सुरोत्तम जोशी, हनुमानप्रसाद केडिया, एम० एस० यादव, एस० के० तिवारी, नरेन्द्रकुमार रस्तोगी, रामनिरञ्जन, नारायणकिशोर, मोहनविहारी, ओम्प्रकाश मोहता, चन्द्रभानु विद्यार्थी, वासुदेव, देवीचन्द्र, एच० एन० जोशी, द्वारिकाप्रसाद शर्मा, ओम्प्रकाश वंशल, निर्मलादेवी, पुरुषोत्तमदास आर्य, कुमारी स्नेहलता, जी० शङ्कर, ओ
शङ्कर विद्यार्थी, चम्पादेवी, राधेश्याम, बाबूलाल, गिरे
प्रतापसिंह, रघुवरदयाल बाबूराम, कृष्णचन्द्र अग्रव
रासविहारी चौधरी, रामकुमारीदेवी गुप्त, माधवीलता चौ
सत्यदेव गुप्त विद्यार्थी, हरप्रसाद, पुरुषोत्तमदास सच्चि
गनेडीवाल, कुँवर नरेन्द्रसिंह नरेन्द्र, हरिश्चन्द्र, रामा
दुबे, हरिश्चन्द्र जैन, नन्दकिशोर अड़किया, मालती
सक्सेना, राजेन्द्रकिशोर सिनहा, सरस्वतीसुन्दरम्, कुसुम
शर्मा, सुरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव, श्रीनाथ अग्रवाल, मदनम
गुप्त, रामेश्वरीदेवी, रमेशदत्त, कुमारी कमलादेवी, लक्ष्मी
ज्वालाप्रसाद खेतान, नाथमल एस० अग्रवाल, मदन तो
वाल, वीरेन्द्रकुमार, अशोककुमार जैन, पुरुषोत्तमदास, श
मोहन खरे, योगेश्वरप्रसाद भरतलाल गुप्त, शची भ
वनवारीलाल सर्राफ़, गुरुदयालसिंह, विपिनविहारी, ब्र
गोविन्दप्रसाद केडिया, श्यामसुन्दर झुँझनूवाला, कुशल
सिंह, हरीलाल अग्रवाल, कुसुमकुमारी माथुर, ओम्प्रक
कु० कौशल्यादेवी, शान्तिकुमारी, कुमार भावन्डीया,
प्रकाश, हस्तीमल सागरमल, लक्ष्मीदत्त विष्ट, केशवप्रसाद
व्रजेन्द्रदत्त आर्य, धर्मेन्द्र, राजदुलारीदेवी, स्नेहलतादेवी
वाल, मन्सूरअली, गोविन्दप्रसाद केडिया, नन्दलाल मण
शशिकुमार रोहतगी, नलिनचन्द्र, मेनका बनर्जी, छोटेल
चकेश जैन, लेशदत्त पाठक, राजेन्द्रमोहन माथुर, हर
यण श्रीवास्तव, विष्णुप्रसाद तिवारी, सैयद जहानत
अनिला, रामदत्त शर्मा, छोटेसिंह चौहान, सञ्जय
बाँठिया, दिनेश्वरप्रसाद, हरिकृष्ण गुप्त, सुरेन्द्रप्रसाद न
साही—भगवन्तराय जैन, राधेलाल पाटोदिया, किशोरी
पाटोदिया, ओम्प्रकाश ओयल, पन्नालाल गुप्त, जगतनारा
जैन, लाल राजकिशोरनाथ।

नहीं छपेंगी

स्थानाभाव के कारण नीचे लिखी रचनायें 'बाल-सखा' में नहीं छप सकेंगी। प्रेषकगण क्षमा करें—

कहानियाँ—सर्वश्री सैयद ग़फ़ूरअली, अखिलेश्वरनाथ, ईश्वरानन्द सारस्वत, कुमारी माणिक हरिद
राजकुमारसिंह, केशवदेव बज़ाज़, हरिश्चन्द्र जैन 'कालका', कमलाशङ्कर शर्मा, सुमेरसिंह जैन, द्वारकादास, चन्द्रप्र
श्रीवास्तव और सरोजिनीदेवी सेठ की।

कवितायें—सर्वश्री शङ्करलाल जालान, चंन्द्रकान्त तिवारी, वीरभद्रप्रसाद बर्नवाल, दुर्गादत्त सोनी, मदनमे
सिंहल, 'महेश', नन्दकिशोर विद्यार्थी, श्यामसुन्दर सुल्लेरे 'सुमन', चन्द्रशेखरदत्त जोशी, विपिनविहारी वाजपेयी,
पीर्ति वेङ्कट्राम शास्त्री, शम्भूराम गुप्त, विश्वनाथ गुप्त, गुलाबसिंह राना और जयप्रकाश की।

फुटकर—सर्वश्री मोतीलाल विद्यार्थी, सैयद ग़फ़ूरअली, रासविहारी चौधरी, रामानुग्रहप्रसाद सिंह, जुग
राजेन्द्रप्रसाद माथुर, मैथिलीशरण सिंह, हरिशङ्कर भारद्वाज, श्यामसुन्दर देवड़ा, विपिनविहारी वाजपेयी

र्षिक 'बाल-सखा'

बच्चों को प्रसन्न रखिए

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को हमेशा प्रसन्न देखना चाहते हैं। इसका कारण केवल यही है कि खिलखिलाते हुए बच्चों को देखकर वे स्वयं प्रसन्न होते हैं। अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, खेलने के लिए पर्याप्त समय उन्हें अवश्य प्रसन्न रख सकता है। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। बच्चों की बौद्धिक जिज्ञासा जब तक तृप्त नहीं होती, तब तक उनकी वास्तविक प्रसन्नता की आशा दुर्लभ है।

अनोखा प्रकाशन

आगामी जनवरी में वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन हम इतनी सज-धज और सुन्दरता के साथ कर रहे हैं कि कोई भी बालक उसे पढ़कर फूला न समायेगा। बच्चों के मनोविज्ञान पर पर्याप्त अधिकार रखनेवाले प्रसिद्ध विद्वानों की सहायता से इसे प्रकाशित किया जा रहा है। इस 'बाल-सखा' की छपाई और कवर ही सुन्दर न होगा बल्कि इसके ३०० पृष्ठों में कहानी, कविता तथा ज्ञान-विज्ञान की मनोरंजक और सरल सामग्री दी जायगी जिसे बच्चे एक वर्ष तक पढ़ते रहेंगे। दूसरी पुस्तकें ख़रीदने की आवश्यकता न होगी। १५० पृष्ठ केवल बालकोपयोगी सुन्दर मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियों के लिए ही सुरक्षित हैं। ५० पृष्ठों में कवितायें तथा १०० पृष्ठों में ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी मनोरंजक तथा सरल लेख दिये जायँगे। रंगीन और सादे चित्र भी पर्याप्त संख्या में दिये जा रहे हैं। सारांश यह कि इस वार्षिक 'बाल-सखा' का प्रकाशन अपने ढंग का अनूठा और अनोखा होगा।

अपूर्व अवसर

इतना सुन्दर, आकर्षक और उपयोगी 'बाल-सखा' कितने शीघ्र हाथों-हाथ बिक जायगा यह आपको बताने की आवश्यकता नहीं है। काग़ज़ की महँगी तथा उसके कम परिमाण में मिलने के कारण हम इसे केवल ५००० की संख्या में निकाल रहे हैं। यदि आप अपने वार्षिक 'बाल-सखा' की प्रति शीघ्र आर्डर भेजकर रिज़र्व नहीं करा लेंगे तो अत्यन्त खेद के साथ बाद में आये हुए आपके आर्डर को हमें लौटा देना पड़ेगा। हमें आशा है कि आप इस अपूर्व अवसर को न खोकर अपना आर्डर हमें शीघ्र भेज देंगे।

—मूल्य दो रुपये

मैनेजर :—

'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अच्छी पुस्तकें मनुष्य को जितना ऊँचा उठ सकती हैं बुरी पुस्तकें उतना ही नीचे गिरा सकती हैं अपने बच्चों को चरित्र की दृष्टि से ऊँचा उठाने के लि पुस्तकों का चुनाव करते समय अत्यन्त सावधानी रख की आवश्यकता है।

मूल्य सवा रुपया

बाँसुरी—पं० सोहनलाल द्विवेदी-कृत बच्चों की कविताओं का यह संग्रह है। कवितायें कितनी आकर्षक और मनोरञ्जक हैं, यह पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा। इसकी जिल्द भी बहुत ही कमनीय है।

शिशु भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी की ही रचनाओं का संग्रह है। कवि बच्चों के लिए सुन्दर और सरल कवितायें लिखने में इतना सफल हुआ है कि देश के प्रसिद्ध नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भी उसकी प्रशंसा किये बग़ैर न रह सके।

मूल्य एक रुपया

अन्वेषण-यात्री—पहले संसार के कितने ही मुख्य-मुख्य स्थान लोगों को मालूम नहीं थे। एक देश से दूसरे देश में जाना भी सम्भव नहीं था। वास्को डि गामा आदि कुछ अपूर्व साहसी तथा अध्यवसायशील व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर देशान्वेषण का काम किया। इस पुस्तक में उन्हीं वीर यात्रियों की कथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है

मूल्य तेरह आने

जान जोखिम की कहानियाँ इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी तेरह कहानियों में सत्य घटनाओं का वर्णन है। कतिपय दृश्यों के चित्र देने से पुस्तक की आकर्षकता और बढ़ गई है।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का एक प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। इसमें ध्रुवों में निवास करनेवाले जीव-जन्तुओं तथा वहाँ की वनस्पति आदि का हाल लिखा है। इसके पढ़ने से ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, साथ ही मनोरञ्जन भी होगा।

मेरे देश की कथा—भारतीय इतिहास के कई और गौरवमय अध्याय, स्वदेश का सच्चा इतिहास जान लिए जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं पढ़ाये ज इसी से हमारे देश के युवक विदेशी चरित्रों को अपना आदर्श बैठते हैं। यह छोटी-सी किन्तु अत्यन्त रोचक पुस्तक उसी को दूर करती है और स्वदेश के गौरवमय चरित्र का द कराती है।

देशान्वेषण की सरल कथायें—नये-नये देशों की करने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने क्या कठिनाइयाँ सह यही इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है।

बालनीतिमाला—संस्कृत के नीतिविषयक ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद है। नीति का ध्यान यदि बचपन से ही रख जाय तो ज़िन्दगी बड़े आनन्द से कट सकती है।

लाल खिलौना—इसमें छोटे बच्चे लायक़ बत्तीस ताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता ऐसी है कि जिसे पढ़ बच्चे नाच उठेंगे और मनोहर चित्र देख वे फूले न समायें

मूल्य ग्यारह आने

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ—इस छोटी-सी पुस में आठ मज़ेदार कहानियों का संग्रह किया गया है। प्रत्ये कहानी जानवरों की बातों को लक्ष्य कर लिखी गई है। बाल के लिए यह बहुत ही मज़ेदार है।

दूध-मलाई—पुस्तक के नाम से ही पता चलता है पुस्तक कितनी सुन्दर होगी। सुन्दर कविता तथा कहानी प समय वही मज़ा आता है जो दूध और मलाई खाते सम

मूल्य आठ आने

लन्दन की एक झलक—बालकों को लन्दन शहर संक्षेप में परिचय कराने के लिए यह पुस्तक लिखी गई

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

113548

बच्चे यह पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। पुस्तक रूप में लिखी होने के कारण और भी आकर्षक और ञ्जक हुई है।

फ़ांस—इस पुस्तक में फ़ांस देश का वर्णन किया गया है। बहुत ही सरल और मनोरञ्जक है।

आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया का परिचय प्राप्त करने के लिए कों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसमें न तो अनावश्यक बात कही गई है और न कोई आवश्यक बात पाई है।

अमरीका का परिचय—अमरीका का नाम कौन नहीं ता। उसी का संक्षेप में परिचय कराने को यह पुस्तक लिखी है। अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य दीजिए।

जर्मनी जर्मनी अपने भयङ्कर कारनामों के कारण आज युद्ध हो रहा है। वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं, की क्या विशेषता है आदि बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाला है।

चीन देश का हाल—भारत का चीन से प्राचीनतर ध है। उसी चीन का इसमें संक्षेप में वर्णन किया गया है। को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

ध्रुवप्रदेश—ध्रुवप्रदेश का इस पुस्तक में संक्षिप्त परिचय गया है। भाषा बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पुस्तक के से मनोरञ्जन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होगी।

रूस देखते ही देखते रूस ने संसार में अपना महत्त्वपूर्ण बना लिया है। उसी रूस का संक्षेप में संवाद रूप से वर्णन किया गया है।

लामाओं के देश तिब्बत में –तिब्बत के रास्ते में क्या-कठिनाई होती है इसका मनोरञ्जक वर्णन इस पुस्तक में गया है।

परीदेश—इसमें एक भी ऐसा विषय नहीं आने पाया समझने में ज़रा भी बुद्धि को क्लेश देना पड़े। प्रतिदिन वहार की बातें ऐसी मनोरञ्जक शैली में लिखी गई हैं च्चे उन्हें पढ़कर उछल पड़ेंगे।

बालगोपाल तथा अन्य कहानियाँ—बच्चों की रुचि का भाँति अध्ययनकरके ये कहानियाँ बहुत ही सरल और भाषा में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ मनोरञ्जक शिक्षाप्रद हैं।

मूल्य पाँच आने

च्यांग काई शेक—इस पुस्तक में च्यांग काई शेक का जीवन चरित्र संक्षेप में वर्णन किया गया है। चीन के राष्ट्रीय जीव में नया जादू फूँकनेवाले इस महापुरुष की जीवनी बच्चों क अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।–) पाँच आने।

तुर्की के वीर—इसमें तुर्की के जीवन में क्रान्ति करनेवा कमाल अतातुर्क के जीवन-चरित्र का संक्षेप में वर्णन है। बच्च ो यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

मिस्टर चर्चिल—ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्ट चर्चिल का यह चरित्र बालकों के लिए आदर्श प्रतीत होगा बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

वायु-विजय—हम प्रतिदिन आकाश में हवाई जहाज़ क भनभनाकर जाते हुए देखते हैं। इस पुस्तक में हवाई जहा की उत्पत्ति तथा उसका विकास कैसे हुआ यह संक्षेप में लिख गया है। प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए

खेल-तमाशा—हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए बड़े म मज़े की किताब है। इसमें सुन्दर तसवीरों के साथ गद्य और प भाषा लिखी गई है। इसे बालक बड़े चाव से पढ़ लेते हैं

लड़कों के खेल—बालकों के पढ़ने-लिखने के लिए य परमोपयोगी और नये ढङ्ग की पुस्तक है। इसमें लगभग ४ चित्र हैं और वर्णमाला के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रत्ये वर्ण आदि में रखकर सरल और सरस पद्यों की रचना की गई है

अमर जीवन—(दो भाग) इसके दोनों भागों में ऐ महापुरुषों के जीवन-चरित्र संक्षेप में दिये गये हैं जो अपने महा कार्यों के कारण संसार में अमर हो गये हैं। उल्लिखित मूल प्रति भाग का है।

जोसेफ़ स्टालिन– अत्यन्त कठिन परिस्थिति में भ साहस और उत्साह का बल है रूस को जिस महापुरुष ने जीवन दान दिया उसकी यह जीवनी आपको अवश्य रोचक प्रतीत होगी

वाल्मीकि—रामायण महाकाव्य की रचना करनेवाले आदि कवि वाल्मीकि का यह जीवनवृत्तान्त है। भाषा अत्यन्त सरल और रोचक है।

लाल बौना—इस पुस्तक में लाल बौना तथा अन्य सा कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ इतनी सुन्दर हैं कि बच्चे पढ़ते-पढ़ते लोट-पोट हो जाते हैं। भाषा सरल तथा आकर्षक है

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

HAMARĀ

HAMĀM

हमारा
हमाम

चुने हुए फूलों की मधुर सुगन्ध

सुगन्ध सुवासित तेलों, आवश्यक तेल एवं एरोमेटिक केमिकल्स नामक रासायनिक द्रव्यों—जो मधुर सुगन्धिवाले पौदों, वृक्षों एवं बूटियों से निचोड़े जाते हैं, से कौशलपूर्ण ढंग से प्राप्त होती है। इतिहास बताता है कि भारतीय सुगन्धि का वर्णन संस्कृत, पाली एवं इस्लामी ग्रन्थों में आया है एवं हज़ारों वर्ष पूर्व भारतवर्ष मेडिटरेनियन के आस-पास के देशों से व्यापार भी करता था।

दुर्भाग्यवश अशिक्षा, वैज्ञानिक ज्ञान की कमी एवं उपेक्षा के कारण यह उद्योग धीरे-धीरे नष्ट हो गया। १९३८ में भारत और सीलोन में कुल १२०० टन उपयोगी तेल का उत्पादन जिसकी क़ीमत ५४ लाख रुपये होती है जब कि इस दिशा में समस्त संसार का उत्पादन १४,००० टन हुआ जिसकी क़ीमत १० करोड़ रुपये होती है। इस पर भी इसके लिए १८००० टन कच्चा माल भारत से ही भेजा गया जिसका उपयोग इसी देश में होता यदि आज हमारा सुगन्धि-उद्योग कुछ भी उन्नत रहा होता।

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

लेकिन दुःख की बात है कि भारत के उद्योगीकरण के सा
साथ साबुन, श्रृङ्गार-सामग्री, एवं अन्य उपयोगों के लिए सुग
एवं आवश्यक तेल की माँग बढ़ती ही जायगी। किसानों को
इससे लाभ होगा क्योंकि वे सुगन्ध-पौदे एवं बूटियाँ ख़ाली दि
में उपजा सकेंगे।

इस प्रकार हमाम ८९ प्रतिशत सुगन्धि भारतीय कच्चे मा
से प्राप्त कर अपनी उन्नति की तीसरी श्रेणी पर पहुँच गया है।

इस कूपन को काटकर अपने पास सम्हालकर रक्खें। जब यह योजना पूर्ण हो जाय तो हमें सब कूपन भेज दें। हम आपको बदले में एक उपयोगी चीज भेजेंगे।

कूपन अलग-अलग न भेजें।

A TATA PRODUCT

भूल-सुधार—अक्तूबर के अङ्क में तेल पर लिखे गये ले
में १५ लाख टन मूँगफली के स्थान पर ५ लाख टन मूँगफ
होना चाहिए।

Benares Branch, Benares

हमारी चित्रावली

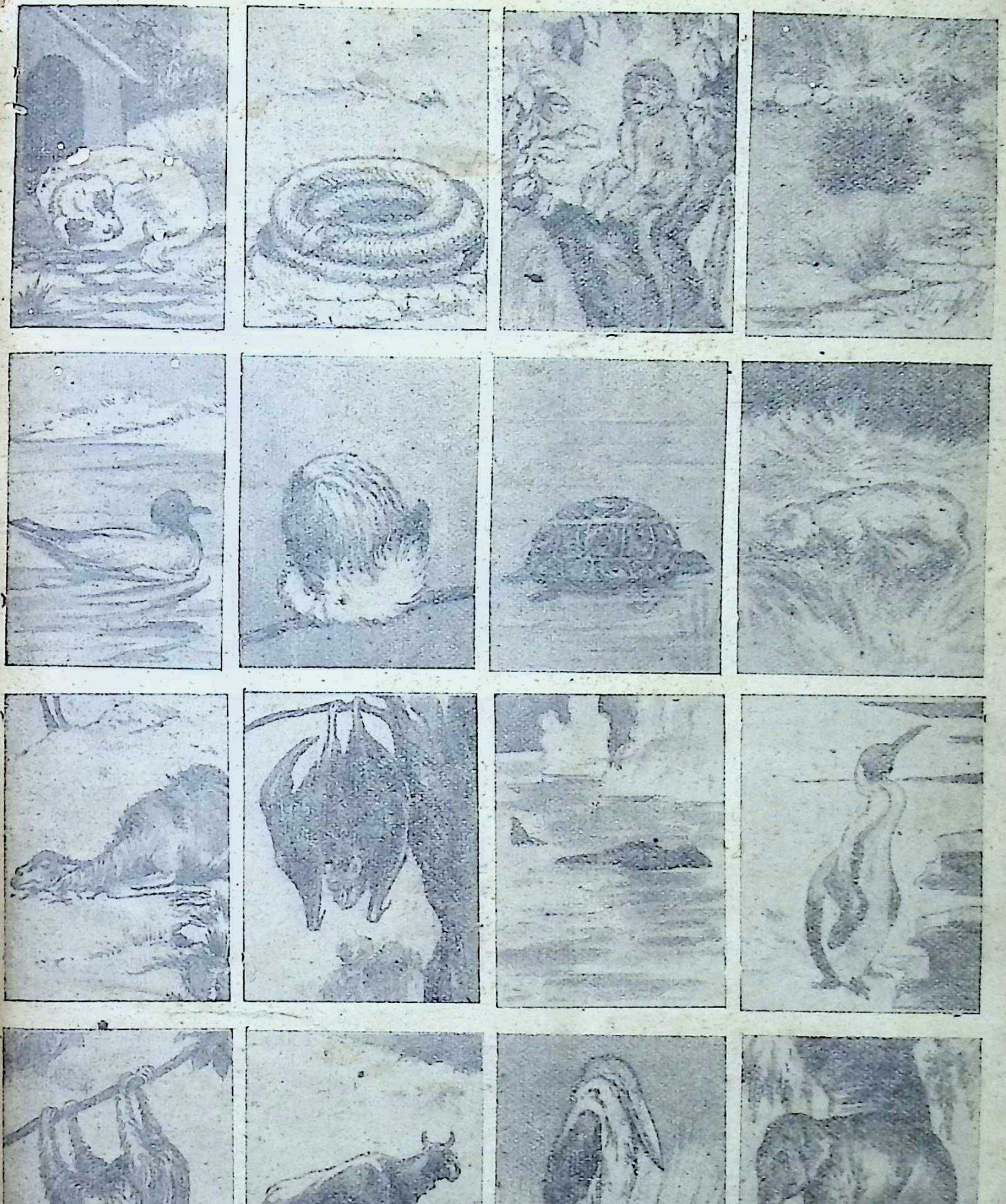

BALSAKHA—Registered No. A 311.

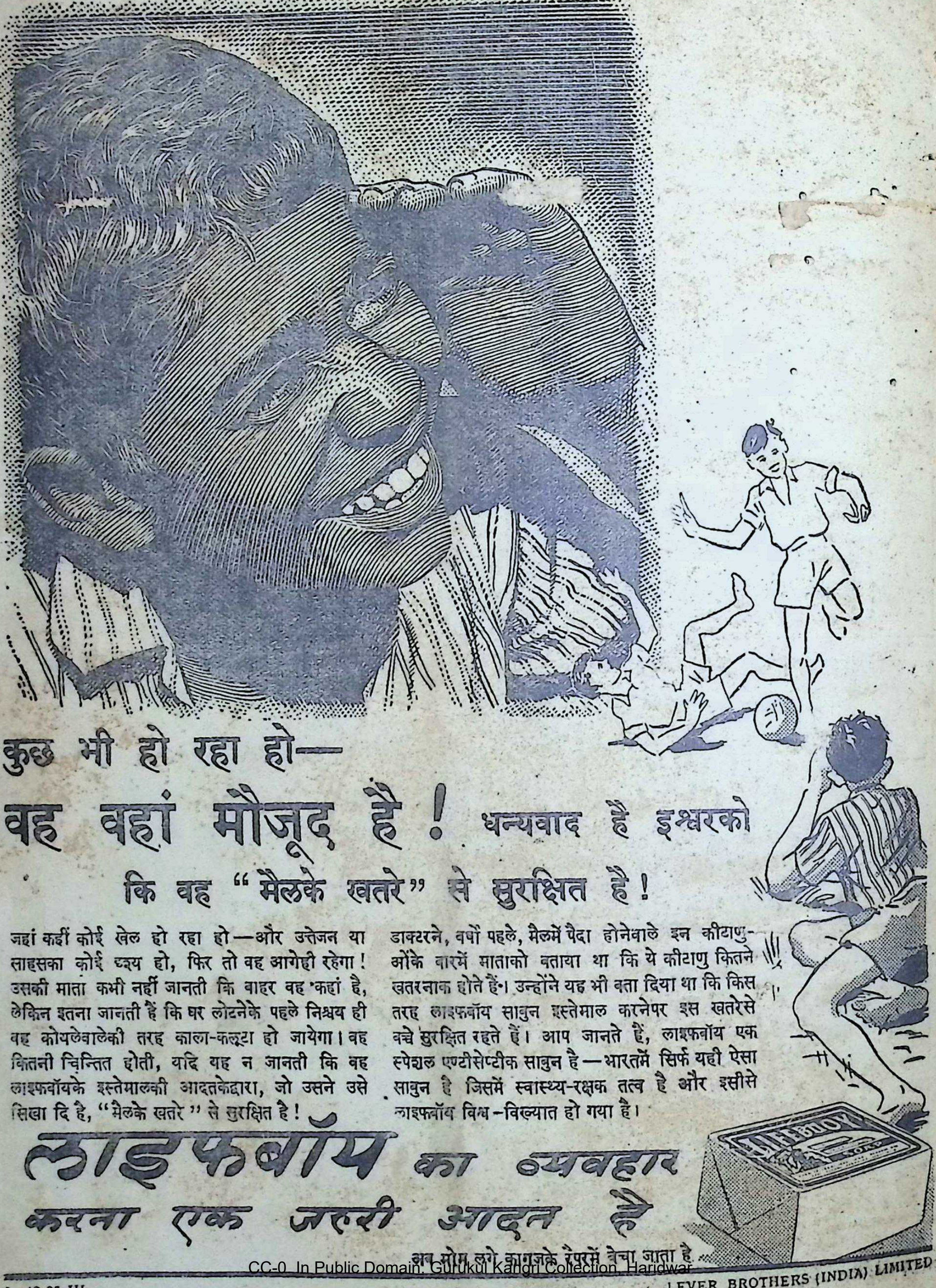

कुछ भी हो रहा हो—

वह वहां मौजूद है! धन्यवाद है इश्वरको

कि वह "मैलके खतरे" से सुरक्षित है!

जहां कहीं कोई खेल हो रहा हो—और उत्तेजन या साहसका कोई दृश्य हो, फिर तो वह आगेही रहेगा! उसकी माता कभी नहीं जानती कि बाहर वह कहां है, लेकिन इतना जानती हैं कि घर लोटनेके पहले निश्चय ही वह कोयलेवालेकी तरह काला-कलूटा हो जायेगा। वह कितनी चिन्तित होती, यदि यह न जानती कि वह लाइफबॉयके इस्तेमालकी आदतकेद्वारा, जो उसने उसे सिखा दि है, "मैलके खतरे" से सुरक्षित है!

डाक्टरने, वर्षों पहले, मैलमें पैदा होनेवाले इन कीटाणुओंके बारमें माताको बताया था कि ये कीटाणु कितने खतरनाक होते हैं। उन्होंने यह भी बता दिया था कि किस तरह लाइफबॉय साबुन इस्तेमाल करनेपर इस खतरेसे बच्चे सुरक्षित रहते हैं। आप जानते हैं, लाइफबॉय एक स्पेशल एण्टीसेप्टीक साबुन है—भारतमें सिर्फ यही ऐसा साबुन है जिसमें स्वास्थ्य-रक्षक तत्व है और इसीसे लाइफबॉय विश्व-विख्यात हो गया है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक जरूरी आदत है

अब मोम लगे कागजके रैपरमें बेचा जाता है

L. 48-95 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

Diamond Book Binding House
Moh Karachh B.H.E.L. Road Jawalapur

Compiled
1999-2000